श्रीमद्विधिपक्षगच्छ श्रावकनां दैवसिकादिक पांचे प्रतिक्रमण सूत्र.

अर्थ सहित.

बीजी पण केटलीक अवश्य खपमां आववा योग्याबदो सहित.

ए पुस्तक यथामति शोधीने

श्रीविधिपक्षगच्छशृंगार पूज्य भट्टारक विद्यमान श्रीविवेकसागरसूरीश्वजी महाराजना

तथा

एतद्गच्छीय श्रावकजनोना आश्रयथी

श्रीमोहमयी पत्तनमध्यें.

श्रावक. भीमासिंह माणकें.

निर्णयसागर नामक मुद्रालययंत्रमध्ये मुद्रित कराव्युं.

संवत् १९४५——सने १८८

श्री अचल गच्छाधिराज पूज्य भट्टारक श्री विवेक सागर सूरीश्वर जी महाराज



(चि. तो. मे. मुं.)

श्री अचल गच्छाधिराज पूज्य भट्टारक श्री विवेकसागर सूरीश्वरजी महाराज.



(चि. जे. प्रे. मुं.)

प्रस्तावना.

आ पुस्तक बापी प्रसिद्धिमां मूकतां हुं विवेकी वांचनारा साहेबोनें प्रार्थना करुं बुं, के आ पुस्तकमां श्रीविधिपक्षगछीय श्रावक संबंधी दैवसिकादिक पांचे पडिक्कमणानां सर्व सूत्रो अर्थसहित जेवा अनुक्रमें क्रिया करती वखतें कहेवाय छे, तेवाज अनुक्रमें आ पुस्तकमां यथायोग्य महारी मत्यनुसारें शुद्ध करीने बाप्यां छे, अने तेनी वचमां वली स्थानके स्थानके काउसग्ग प्रमुख जे जे क्रियाउ करवी पडे छे, ते संबंधिनो विधि पण ते ते स्थानकें लखेलो छे, के जेथकी जणनार वाचनारने कोइरीतें कोइ सूत्रो आगल पाछल जोवां पडे नही.

आद्यमां नवकारनो अर्थ मात्र सामान्यथीज लखेलो छे, परंतु विशेष विस्तारवालो अर्थ लख्यो नथी, ते एटला माटे के नवीन जणनारा उने अर्थ शीखतां तरत आवडी शके.

इरियावहियादि सूत्रोना अर्थ यद्यपि घणाज विस्तारपूर्वक करवाने बदले मध्यस्थ करेला छे. तथापि नवकारना अर्थनी पेठे अल्प अर्थवाला नथी, परंतु अनेक स्थलें शंका समाधान करतां स्पष्ट अर्थ समजाय तेवा प्रकारना खोलासापूर्वक बाप्या छे, तथा वली प्रसंगागत बीजा पण जे जे विषय दर्शाववा जोइयें ते पण दर्शाव्या छे.

वली श्रावकना पाक्षिकादि पडिक्कमणमां कहेवाता महोटा अतिचारो यद्यपि अर्थरूपज छे, माटे 'पिष्टस्य पेषणं नास्ति' ए न्यायें एना अर्थ दाखल करवानी कशी जरूर न हती, तथापि अतिचारोना शब्दोमां संकोच करेला अर्थने विस्तारी समजाववा माटे तथा वली एमां श्रावकना बारे व्रतोनी उपर जूदी जूदी कथाउ दाखल करवानी हती, माटे जो सूत्रानुं कांइक अर्थ लखेलो होय तो तिहां ते कथानो संबंध पण बराबर वाचकजनना ध्यानमां आवे एम जाणीने अर्थ लखेलो छे.

तथा अतिचारनी बांधणी पूर्वे कोइ देशविशेषनी जाषामां होवाथी ते मांहेला कोइ कोइ शब्दना अर्थ चालती गुर्जरजाषामां अप्रसिद्ध होवाथी अमें तेना अर्थ तो लखेला छे. तथापि कोइ कोइ शब्दो शंकित होवाथी

तेना अर्थ बराबर लखाया नथी. ते फरी शोध मलवाथी द्वितीयादि आवृत्तिमां यथातथ्य छापवानी आशा राखुं छुं.

बार व्रतो उपर दृष्टांतिक कथाउ दाखल करेली छे ते वांचवाथी व्रती श्रावकने पोताना अंगीकार करेला व्रतने विषे रखेने कोइ अतिचार लागी जाय. एवी काळजी तेना मनमां अवश्य रहे एवा तादृश बोधनी करनारी, क्रियामां तन्मय ध्यान करावनारी तथा प्रत्येक व्रतने अतिचार रहित पालवा माटे प्रीति उपजावनारी, व्रतजिज्ञासुजनोना अंतःकरणने निर्मल करनारी अने राग द्वेष रूप बे शत्रुनो नाश करनारी एवी घणीज उपयोगी छे.

तीर्थमाला तथा सज्झाय अने नवस्मरण मांहेला नमिऊणादिकना मागधी पदोनां प्रथम संस्कृत जाषामां पदीया करीने पछी वली संस्कृतमांथी प्राकृत गुर्जरजाषा करेली छे. जेथी शिखनारने मागधीमांथी संस्कृत करवानी पद्धति शीखवानुं सहेज बनी शकशे. वली ए ग्रंथोना अर्थोमां कोइ कोइ स्थानकें तीर्थमालामां कहेला तीर्थोनी उत्पत्ति संबंधि कथाउ पण आवेलीउ छे. तथा नंदीसूत्रनी महोटी बे सज्झायोमां महोटा आचार्योनी कथाउ पण कोइ कोइ स्थलें संक्षेपथी आवेलीउ छे. ते पण वाचनाराउने अनेक प्रकारना चमत्कारने उपजावती बोध आपनारी छे अने ज्ञान वैराग्यनी प्राप्ति करावनारी एवी आश्चर्यकारक छे.

तेमज आ पुस्तकमां मासनो अर्द्ध जे पक्ष ते पूरे छते करवा केहेलुं जे पाक्षिक पडिक्कमण ते कया दिवसें करवुं, अने पर्युषणादि पर्व कया दिवसें करवां. तेमज पडिक्कमणादि क्रिया उत्तरासंगथी करवी किंवा मुहपत्ति.चरवलादिकथी करवी. इत्यादिक अनेक वातो शंकासमाधानपूर्वक श्रीजिनजाषित वचनोने अनुसारे निर्धार करी लखेली छे; ते पण जरूर धारवा योग्य छे.

श्रीगौतमस्वामीनो रास, केवलनाणी जे महोटुं चैत्यवंदन कहेवाय छे. ते तथा एवाज बीजा जे जे पडिक्कमण पोसह प्रमुखमां अवश्य खपमां आवे तेवा सर्व लघु ग्रंथोनो आ पुस्तकमां समावेश करलो छे.

शिवाय स्वरूपचंदजी तथा नित्यलाजादि महाराज कृत चोवीशी आदिकनां अनेक स्तवनो, चैत्यवंदनो तेमज पडिक्कमणमां कहेवा योग्य निर्युक्ति आदिकनी सज्झायो पण यथायोग्य दाखल करेली छे.

तेमज श्रीसुधर्मस्वामीथी मांमीने विद्यमान श्रीविवेकसागरसूरीजी महा

राज पर्यंत जे कांइ श्रीवीरपट्टधरादि महान् आचार्यो थया छे, तेमना अ पूर्व चमत्कारिक चरित्रो पण संक्षेपथी आ पुस्तकमां मुद्रित कर्यां छे, जेना वांचवाथी वाचनारने अपूर्व आनंदनो लाभ थया विना रहेशेज नही.

छेवटमां श्रीविधिपक्षगछना साधुउं संबंधि दैवसिकादिक पांचे पडिक्कमणां पण मूल सूत्र रूपें आ पुस्तकमां मुद्रित करेला छे. किंबहुना आ पुस्तकमां बीजापण अनेक प्रकारना बोल चाल संबंधि जे कोइ अज्ञातजनोने शंकाउं छे, ते सर्वना खोलासा पूर्वक समाधान करेलां छे.

श्रीविधिपक्षगछना आचार्योयें तथा साधुउंए मली जेम संस्कृत तथा मागध्यादि भाषाउंमां हजारो महोटा ग्रंथोनी रचनाउं करेली छे. तेम छूटक चोवीशीयो, स्तवनो, सज्झायो, छंद, महोटां ढालबंध स्तवनो, रासो, चोढालीयां, छढालीयां, पचवीशीयो, छत्रीशीयो, पंचाशीयो, सत्तरियो आदिक छूटा छूटा अनेक ग्रन्थो तथा स्तोत्रो पण अपरिमित रचेलां छे. जेमाना हाल महारा एकलानी पासें पण संग्रहमां पडेला हजारो ग्रंथो छे. ते मांहेला एक हजारमा भाग जेटला पण आ पडिक्कमणामां दाखल करवानी मारी इछा हती, परंतु बारे व्रतोनी कथाउं दाखल करवाथी ग्रंथगौरव थवाने लीधे ते मांहेलो कांइ पण भाग दाखल थइ शक्यो नथी. तैथी हुं दिलगीर थयो छुं; तो पण श्रीवीतरागभाषित हाबेहुब पडिक्कमणक्रियारूप शुद्ध साधु श्रावकना मार्गने प्रदर्शित करनारुं एवुं मात्र एक पडिक्कमणज छापीने में प्रसिद्ध कर्युं. तेथी अमृतक्रियाप्राप्त मनुष्यनी पेठें मने कोइ एवो अपूर्व आनंद प्राप्त थयो छे के, जे आनंद महारा हृदयमां समातो नथी, अने तेनी केहेणी महारे होठें आवती नथी.

आ पुस्तकमां जे पट्टावली दाखल करेली छे, ते वांचवाथी वाचक जनने समजवामां आवशे के, शासन अधिष्ठायिका श्रीचक्रेश्वरी देवतायें सीमंधरस्वामीने पूछ्युं के, हे भगवन् ! सांप्रत समयने विषे श्रीभरतक्षेत्रमां शुद्धमार्गें चालनारो एवो कोण हशे? जे उपरथी श्रीआर्यरक्षितजी यथातथ्य शुद्धमार्गें प्रवर्त्तनारा छे, एवुं भगवाने देवीने कहेवाथी देवीयें आवी आचार्यने नमस्कार करीने प्रथम नाणकगछ एवुं नाम हतुं तेने बदले खरेखरा विधिनोज जेणे पक्ष ग्रहण करेलो छे, माटे विधिपक्षगछ एवुं नाम स्थापन कर्युं; पछी कुमारपालना पूछवाथी हेमाचार्यजीयें पण शुद्ध

क्रियानो आराधक विधिपक्षगछ छे, एम कहेवाथी कुमारपाले अंचलगछ एवुं नाम आप्युं. तथा ते पछे ए गछ कोइ काले चलायमान न थाउ एवा आशीर्वादथी फरी अचलगछ एवुं नाम थाप्युं. माटे ए गछना त्रणे नाम सार्थक छे. एनो विस्तारार्थ ए पुस्तकमां अमे जे पट्टावली दाखल करेली छे, तेमां आवेला श्रीआर्यरक्षित सूरीजीना चरित्र उपरथी जाणवो.

जगत्मां सर्वश्रेष्ठत्वनुं मुख्य साधन बल छे. ते बल बे प्रकारनुं छे. तेमां एक शारीरिक बल अने बीजुं मानसिक बल. तिहां वनसंबंधि सर्व जातिना पशुउमां जे सिंहने श्रेष्ठत्व प्राप्त थयेलुं छे. ते तेना शारीरिक बलनुं फल छे, अने आ पृथ्वीपरना सर्व प्राणिमात्रमां जे मनुष्योने श्रेष्ठत्व प्राप्त थयेलुं छे. ते तेमना मानसिक बलनुं फल छे. तेम श्रीसीमंधर स्वामीयें स्वमुखें चक्रेश्वरी देवीनी आगल जे विधिपक्षगछने शुद्धमार्गे वर्त्तवानुं श्रेष्ठत्व आप्युं. तथा श्रीहेमाचार्यादिकना कहेवाथी कुमारपालराजायें जे श्रेष्ठत्व आप्युं,ते श्रीआर्यरक्षित सूरिजीयें ग्रहण करेली शुद्ध परंपरा अने शुद्ध क्रिया रूपजे मानसिक बल तेनुं फल छे. एटलुं लखी प्रस्तावना संपूर्ण करुं छुं.

विज्ञापना

आ पुस्तक छापतां म्हारी स्वल्प बुद्धिना योगें करी तेमज वर्त्तमान समयमां प्रस्तुत क्षेत्रने विषे श्रीविधिपक्ष गछीय श्रावक समाचारीना जाणकारोनो समागम म्हारी साथे न होवाथी जे कांइ आ पुस्तकने विषे पूर्वाचार्यें चलावेली समाचारीथी विपरीत न्यूनाधिक लखायुं होय, तेमज ग्रंथ छापतां तपासणी करतां सूत्रोमां अर्थमां अक्षर कानो मात्रा, मींडी, पद प्रमुख भूलथी रही गयेला होय,तथा आगल पाछल लखाया होय,उछा अधिका लखाया होय,ते शिवाय बीजो कोइ पण प्रकारनो अशुद्धता संबंधि दोष आ पुस्तक वांचता सुज्ञोनें दीठामां आवे, ते सर्व वाचक जनोये म्हारी उपर क्षमा राखीने सुधारी वांचवो,तथा जणवो. यद्यपि 'संत्यज्य सकलान् दोषान्,गुणान् गण्हंति साधवः' ए श्लोकमां कह्याप्रमाणे गुणज्ञ पुरुषोनी एवी टेवज होय छे के,तेउ मात्र पारकाना गुणज ग्रहण करे छे; पण अवगुणने ग्रहण करता नथी. तथापि म्हारो भूल चुक रूप अपराध क्षमा करावता मने

नम्रतापूर्वक प्रार्थना करवी योग्य छे,माटे म्हारी तरफथी जे कांइ आ ग्रंथ मुद्रित करतां अशुध्धता रहेली होय तत्संबंधि जे म्हारुं पाप ते पापनुं हुं सर्व वाचक वर्गनी समक्ष मिछामि डुक्कड देउं छुं. अलमति विस्तरेण शुभमस्तु.

प्रशंसा पत्रक

म्हारी गरीब अवस्था छतां आवां पुस्तको छपवाने माटें आगलथी पुस्तको खरीदीने आश्रय आपनारा साहेबोयें म्हारी गरीबी हालतपर कृपामृतरूप दृष्टिकरी आवा महान् पुस्तको छपवाने माटे मने उद्युक्त कर्यो के, जेना सहायथी हुं आ पुस्तक छापी प्रसिध्ध करवा रूप समुद्रनो पार पाम्यो. लेवा नव्य पुरुषोना नामनुं स्मरण सर्वकोइना हृदयमां चिरकाल पर्यंत रहे एटला वास्ते ते सज्जनोनां नाम हुं नीचे लखी जणावुं छुं.

प्रथम तो हालना विद्यमान श्रीविवेक सागरसूरी महाराज जेनी एक हावेहुब तसबीर आ पुस्तकनी साथेज गोठवी छे, जे आजना समयमां शील, क्षमा, मार्दव, निर्लोभता, धैर्य, औदार्य अने शांतमुद्रा धारक जनोनी पंक्तिमां प्रथम गणवा योग्य छे. ए प्रमाणे तेमने प्राप्त थयेला उत्तम गुणोना समूहने,जे साहेबोनो हालमां एमनी साथे प्रसंगछे,अने जे एमने उलखे छे ते साहेबो सारी पेठें जाणे छे अने समजे छे.कारणके उक्त गुणो सर्व हालएमनामां प्रत्यक्ष दीठामां आवे छे,माटे ते विषे वधारे लखवानी कशी जरुर नथी.ए साहेबने ज्ञानवृध्धि करवी, नवीन पुस्तको लखाववां पुस्तकोना जीर्णोध्धार करवा ते संबंधिनी हरहेमश घणीज उत्कंठा रहे छे. तेउयें आ पुस्तकमां आगलथी बशो चोपडीउ राखवाने कबुल करी म्हारा उत्सहमां वृध्धिकरवा मने मदत आपी, माटे एमनो उपकार हुं जेटलो मानुं तेटलो थोडोज छे.

त्यार पछी जेमणें देवलोकमां निवास कर्यो छे. जे सर्व पंमितोमां शिरोमणी हता. जेणे अनेकजनोने प्रतिबोध आपी सम्यक्त्व पमाडी जैनमार्गें प्रवर्त्ताव्या. तथा नव नव प्रकारना अभिग्रह सहित छठ अठमादिक विचित्र तप कर्यां. वली अनेक तीर्थयात्राउ करी कृतकृत्य थयेला,अने शीलादि अनेक प्रकारना शुभगुणेंकरी शोभित एवा वणारसी विनयसागरजी महाराजना विद्यमान शिष्य मुनि महिमासागरजी तथा सुमतिसागरजी जेमणें प्रथम प्रकरणरत्ना

कर नामना पुस्तकना चार जाग. गपती वखतें पण महोटी उदारता पूर्वक रु० १२५०नी रकम आपीने महारा ज्ञानवृद्धिना उत्साहमां वधारो कर्यो हतो. तेमना सुशिष्य विद्यमान मुनिन्यायसागरजी एमनुं उपनाम नानचंदजी छे. ते पण 'यथाराजा तथा प्रजा' ए दृष्टांते पोताना गुरुना जेवाज ज्ञानवृद्धि करवामां उत्साही छे. तेउयें आगलथी एकशो पुस्तक राखवाने कबुल कर्यां. तेथी वली दूधना जोजनमां साकर, प्रमुख नाखी तयार करवा जेवुं करीने मने ग्रंथ गपवाने तत्पर कर्यो. माटे एमनो जेटलो उपकार मानुं तेटलो थोडो छे. एमनुं नाम स्मरणार्थे आ पुस्तकमां मुद्रित करुं छुं.

तेवार पछी गामश्री परजाउना रहेवासी शा. वरसिंघ देवसिंह जे हालमां श्रावक वर्गमां महोटा पुण्यात्मा, दयालु थका वर्षो वर्ष हजारो रुपैया धर्मादा वापरता हता, ते गया संवत् १९४४ ना फाल्गुनशुदि एकमने वार रवेउना दिवसें ४७ वर्षनी स्वल्प अवस्थामां स्वर्गे गया; पछी एमना विद्यमान सुपुत्र शा. देवजी वरसिंघ, ते पण पोताना पिताना जेवाज निष्कपटी, परोपकारी, जद्रिक परिणामी, पुण्यात्मा अने कृपालु सुकोमलहृदयवाला छे. तेउपण अगाउथी पच्चाश पुस्तक राखवाने मुंजुरीयात आपी महारा उत्साहमां वृद्धि करता थया, माटे एमनुं नाम महोटा उल्लास पूर्वक आ पुस्तकमां मुद्रित करुं छुं.

वली आ पुस्तक गपवानी आगाउ मुनि क्षमावर्द्धनजी जेमनुं उपनाम मुनि खेतसिंहजी एवुं सर्व कोइ प्रसिद्धिमां लखे छे तेमणें आ ग्रंथ गपाववा माटे महोटी रुची धारण करीने पोते जातें मेहेनत करी कोइनी पासेथी पांच, कोइनी पासेथी दश, कोइनी पासेथी बे, कोइनी पासेथी एक एम आगलथी पुस्तको लेवा माटे घणा श्रावको पासेथी कबुलात लीधी. जेमनां. नाम पुस्तकनां अंक सूधां आ ग्रथमां दाखल थयेलां छे. ते उपकार सर्व एमणेंज कर्यो छे, एटलुंज नही; परंतु ए पुस्तक गपतां वखतो वखत कोइ पण प्रयोजन पडवाथी जे कांइ शंका संशय पूछवो पडतो हतो, तेनुं पण समाधान करवाने हरहमेश एज सलाह आपता हता. एवी रीतनो एमनो उपकार मानीने नाम स्मरणार्थे मुद्रित करुं छुं.

बीजा पण यथोचित आश्रय आपनार साहेबोनो उपकार मानीने सर्वेनां नाम नीचे मुद्रित कर्यां छे. श्रीरस्तु. कल्याणमस्तु, शुजंजवतु. मंगलम् ॥

श्रावक. जीमसिंह माणक.

आ पुस्तकने आगलथी आश्रय आपनार ज्ञानवृद्धिक साहेबोनां नामो ग्रंथनी आद्यमां मुद्रित करुं छुं.

पुस्तकोनी संख्या.	आश्रय आपनार साहेबोनां नाम.
२०१)	सकलाचार्य शिरोमणी श्रीविधिपक्षगच्छाधिराज जंगमयुगप्रधान पूज्य भट्टारक विद्यमान श्रीविवेकसागर सूरीश्वरजी महाराजनी तरफथी.
१०१)	वणारसी विनयसागरजी महाराजना सुशिष्य मुनि महिमासागरजी तथा मुनि सुमतिसागरजी महाराज तेमना सुशिष्य मुनि न्यायसागरजी उपनाम मुनिभान चंदजी महाराजनी तरफथी.
५१)	शा. वरसिंघ देवसी कच्छ देश मध्ये गामश्री परजाउना रहेवासी तेमना सुपुत्र शा. देवजी वरसिंघनी तरफथी.

११ शा. सामजी जीवराज कच्छ अरखा०
११ शा. जीवराज टोकरसी मुंबइ.
५ शा. शेजपाल हीरजी कच्छ कोठारा.
५ शा. रतनसी दामजी कच्छ सांयरा.
५ शेठ. बुधा दोशा कच्छ तेरा.
५ शा. लालजी हीरजी.
२ शा. ठाकरसी डुंगरसी नाणपुर.
२ मुनि. गुलाबसुंदरजी रामजी.

कच्छ जखौ.

२ शा. ठाकरसी भीयसी.
२ मुनि गौतमलाभजी. कुशललाभ
१ शा. भाणजी पुनसी.
१ शा. चतुरभुज भोजराज.
१ शा. भारमल नरसी.
१ शा. शिवजी केसवजी.
१ शा. पासु हंसराज.
१ शा. वेरसी वसाइया.
१ शा. केशवजी देरु.

कच्छ नलिया.

२ बाइ जेतबाइ.
२ शा. ठाकरसी देवराज.
१ शा. देवजी पुनसी.
१ शा. मेघराज हरपाल.
१ शा. देरु पत्रामल.
१ शा. थोभण आसपाल.
१ शा. चतुरभुज लध्धा.
१ शा. शिवजी हीरजी.
१ शा. तेजसी भीमसी.
१ शा. खीमजी पुमसी.
१ शा. सामजी खीमजी.
१ शा. विदास देरु.
१ शा. राघवजी लालजी.

कच्छ बांम्धीया.

१ शा. लीलाधर पेथराज.
१ शा. कानजी केसवजी.
१ शा. चांपसी गंगाजल बायट.

कछतेरा.

२ शा. देवजी खेतसी.
१ शा. खीमजी मुलजी.
१ शा. आसारीया पुनसी.
१ शा. रतनसी लधा.
१ शा. पुनसी लालजी.
१ शा. चांपसी हीरजी रापुर.
१ हरपाल कानजी कछरवा.
१ शा. देवजी माइयाणी खावडी.
१ शा. नरसी पासु.
१ शा. पदमसी मुलजी गोधरा.

कछपरजाउ.

१ शा. गोविंदा करशन.
१ शा. लालजी खीमजी.

कछकोठारा.

१ शा. जेठा आणंदजी.
१ शा. मेघजी गेलाभाइ.
१ शा. जीवराज पेथा.
१ शा. पासु तेजसी.
१ शा. नागसी गंगाजल.

कछसुथरी.

१ शा. दोसा खीयसी.
१ शा. लधा पेथराज.
१ शा. उभाइया थोभण.
१ शा. केशवजी मूलजी.

कछसूजापुर.

२ शा. वेरसी पुंजा.
१ शा. देसर कानजी.
१ शा. रतनसी कुरसी.

कछसांधाण.

१ शा. हीरजी रामजी.

कछलाला.

१ शा. कचरा गोविंदजी.
१ शा. वेलजी करपाल.
१ शा. खीयसी देरु.

कछवलसर.

१ शा. नरसी भीमसी.

कछमांडवी.

१ शा. रणछोड करमचंद.

कछडुमरा.

१ शा. मणसी देसल.
१ शा. कोरसी मालसी.

कछवाराপधर.

२ शा. भाणजी हरपाल.
२ शा. देवसी राघव.
२ शा. देवजी लाडण.
१ शा. कानजी रतनसी.
१ शा. रतनसी पासु.

कछसांयरा.

२शा. देवसी धारसी.
१ शा. कुरसी खेतसी.

कछवांकु.

१ शा. नेणसी राजपाल.

कछमंजलरेलडीया.

१ शा. रतनसी माणक.
१ शा. लधा गंगाजल.
१ शा. खीमजी खीयसी.
१ शा. केशव मणसी.

अस्य ग्रंथस्यानुक्रमणिकाप्रारंभः ॥

इत्यनुक्रमणिका समाप्त ॥

श्रीमन्माहाप्राभाविक श्रीआर्यरक्षितसूरीश्वरसद्गुरुभ्यो नमोनमः

॥ अथ ॥

॥ श्रीविधिपक्षगच्छीय श्रावकस्य पंच प्रतिक्रमणादि सूत्राणि सार्थानि प्रारभ्यंते ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम दैवसिक प्रतिक्रमण विधिर्लिख्यंते ॥

॥ मंगलाचरणम् ॥

जिनावलीपुंगवमेकवंद्यं, प्रणम्य वीरं जितमारवीरं ॥ उपा सकानामुपकारहेतो, वंक्ष्याम्यनुष्ठानविधिं सुबोधिम् ॥१॥

अर्थः— जेमणें कामदेवरूप वीरयोधानें जीतेलो छे. अर्थात् जेने काम देव कांइ पण बाध करी शकतो नथी, तथा केवलीमां प्रधान एवा महावीरस्वामीने अर्थात् अष्ट कर्मने जीतवाथी वीर एवा नामनें धारण कर नारा प्रभुने प्रणाम करीने उपासना करनाराने अर्थात् श्रावकना उपकारने माटे जलदी समजाय एवो जे पडिक्कमणानो विधि, तेने हुं कहुं छुं.

जेम श्रीसिद्धांतमां कह्युं छे तेम गुणवंतनी भक्तिने अर्थें श्रीगुरुने खा मणां देवां, तेम श्रावकने पण पाप आलोववाने अर्थें सर्वातिचार विशुद्धि नेमाटे निश्चें सांजे सवारें एटले उभय कालें पडिक्कमणुं करवुं, तिहां सर्व प्रकारनुं क्रिया अनुष्ठान करवुं. हवे ते कोना समक्ष करवुं? तो के देव गुरु समक्ष करवुं अने जो देवगुरुनो अभाव होय तो तेना अभावें ज्ञान एज स्थापनाचार्य जाणवा, कारण के ज्ञानथी अधिक कोइ पण पदार्थ नथी, माटे स्थापनाचार्यने स्थानकें ज्ञान स्थापीने तेनी आगल सघली क्रिया करीयें. जे माटे आ दुःखमकाल जे पांचमो आरो, तद्रूप अंधकारमां बूडेला जीवोनो उद्धारक श्रीजिनशासनने विषे दीपक समान एवो श्रीविधिपक्ष गच्छ छे, तेने विषे छत्रीश गुणें करी बिराजमान श्रीआर्यरक्षितसूरीश्वरें आग मने अनुसारें शुद्ध विधि प्ररूप्यो छे, के समकितनी शुद्धि माटे गुरूने वि

रहें ज्ञानानी स्थापना करीने गुरुनो उपदेश तेना उपदर्शननें निमित्तें ते ज्ञानने मानीने गुरुनी माफक ज्ञानानी सेवा करवी, जेम श्रीतीर्थंकरने विरहें तीर्थंकरनी प्रतिमानी सेवा करीयें बैयें, ते सेवा, सफल थाय बे. तथा जेम राजाने अजावें राजाना प्रधाननी सेवा करीयें बैयें, तेम साक्षात् श्रीगुरुने अजावें स्थापनाचार्यने स्थानकें ज्ञानानी स्थापना करीनें तेनी जक्ति करवी. ए गुरु सेवा ते विनयनुं कारण जाणवुं. वली ते गुरुनी सेवा पण नवकार पूर्वक करवी माटे प्रथम आदिमां नवकार सूत्र कहीयें बैयें.

॥ अथ श्रीनवकार ॥

णमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ णमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ णमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ णमो उवज्ञायाणं ॥ ४ ॥ णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच णमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८॥ पढमं होइ मंगलं ॥ ९ ॥

अर्थः– (अरिहंताणं के०) विहरमान श्रीअरिहंत देव बार गुणें करी सहित तेमने महारो (णमो के०) नमस्कार थाउ ॥ १ ॥ (सिद्धाणं के०) सर्व सिद्ध जगवान् आठ गुणें करी बिराजमान तेमने महारो (णमो के०) नमस्कार थाउ ॥ २ ॥ (आयरियाणं के०) पंचविध आचारने पाले, एवा श्रीअचार्य प्रजु बत्रीश गुणें करी बिराजमान तेमने महारो (णमो के०) नमस्कार थाउ ॥ ३ ॥ (उवज्ञायाणं के०) पच्चीश गुणधारक एवा श्रीउपाध्याय प्रत्यें महारो (णमो के०) नमस्कार थाउ ॥ ४ ॥ (लोए के०) अढीद्वीप रूप मनुष्य लोकने विषे स्थविरकल्पादिक जेदोवाला (सव्वसाहूणं के०) सर्वसाधु सत्तावीश गुणें करी बिराजमान ते प्रत्यें महारो (णमो के०) नमस्कार थाउ ॥ ५ ॥ (एसो के०) ए जे श्रीअरिहंतादिक संबंधि (पंचणमुक्कारो के०) पांच नमस्कार बे ॥ ६ ॥ एटले ए नमस्कार पंचक जे बे, ते केहवुं बे ? तो के (सव्वपाव के०) ज्ञानावरण्यादिक सर्व पाप प्रत्यें (प्पणासणो के०) प्रकर्षे करी नाशनुं करनार बे ॥ ७ ॥ वली ए नमस्कार पंचक कहेवुं बे ? तो के (मंगलाणंचसव्वसिं के०) सर्व मंगलमांहे ॥ ८ ॥ (पढमं के०) प्रथम एटले

मुख्य (मंगलं के०) मंगल (होइ के०) छे ॥ ए ॥ एटले ए नाव मंगल छे ते मोक्ष सुखनुं आपनार छे. ए नवकार पांचपद रूप मूलमंत्र तेमां पांत्री श अक्षरो छे, अने चूलिकाना चार पदमां बत्रीश अक्षरो छे, सर्वे मली सडसठ अक्षर छे तेमां गुरु अक्षर सात छे अने लघु अक्षर शाठ छे,तथा एनां पद नव छे,तेमां विश्रामनां स्थानक रूप संपदा प्रथम सात पदनी, तो एकेका पदनी एकेक संपदा गणतां सात संपदा थइ. अने "मंगलाणं चसव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं" ए आठमुं तथा नवमुं मली बेहु पदनी एक संपदा गणतां सर्वे संपदा आठ छे. ए रीतें ए श्रीनवकारनो संक्षेपार्थ बालजीवोने समजवा माटे कह्यो. यद्यपि टीकाकारें एनो अर्थ घणो वि स्तार पूर्वक कथाउ सहित करेलो छे, तो पण इहां संक्षेपथी लख्यो छे ॥ १ ॥

हवे इरियावहि पडिक्कम्या विना चैत्यवंदन, सद्याय, सामायिक,पोसह, पडिक्कमणुं इत्यादिक महोटां अनुष्ठानो कांइ पण करवां सूजे नही जेमाटे श्रीमहानिशीथ सूत्रमां कह्युं छे के ॥ "इरिया वहियाए अपडिक्कंताए णक प्पइ किंपि चेइय वंदण सद्यायावस्सयाइं काउं" ते नणी प्रथम इरियावहि सू त्र वखाणीयें छैयें. ते इरियावहिने धुरें खमासमण आपीयें,ते आवी रीतें.

॥ अथ खमासमण ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥ २ ॥

अर्थः-(खमासमणो के०) हे क्षमाश्रमण ! एटले क्षमादिक दश विध यतिधर्मने विषे प्रधान सावधान एवा हे श्रमण तपस्वी ऋषीश्वर सा धुजी ! एवा आमंत्रणें करी गुरुने बोलावीने कहियें के, तमारा चरणक मल प्रत्यें (जावणिज्जाए के०) यापनीयया एटले शक्तिसहित एवी जे प्राणातिपातादि निवृत्ति रूप प्रयोजन छे जेनुं एवी (निसीहिआए के०) नैषेधिक्या एटले आपणी तनु जे शरीर, तेणें करी (वंदिउं के०) वंदितुं एटले वांदवाने (इच्छामि के०) इछुं छुं. हुं वांछुं छुं,एटलुं उच्चा छतांज कहियें. पलेवी, संमासा, बे जानु, ललाट, माबो हाथ अने नूमिका प्रमार्जी बे जानु, बे हाथ, अने पांचमुं ललाट, ए पंचांगें करी नूमि फरसतो थको (मत्थएण वंदामि) एवुं कहे, (मस्तकेन वंदामि के०) मस्तकें करी तमोने

हुं वांदुं छुं,सूत्रामां त्रण गुरु ने पच्चीश लघु,मली अठावीश अक्षरो छे ॥३॥
फरी उनो थइ बे हाथ जोडीने नीचें मुजब सामाचारी कहे.

॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृच्छा ॥

इच्छाकार, सुहराइ, सुहदेवसि, सुखतप, शरीरनिराबाध, सुख संजम जात्रा,निर्वहो छोजी?स्वामी छेजी शाता? तेवारें गुरु कहे देवगुरु पसायेंजी ॥ मच्छएण वंदामि ॥ इति॥३॥

अर्थः–(इच्छाकार के०) इच्छा करुं छुं. (सुहराइ के०) सुखेंरात्रि, (सुह देवसि के०) सुखें दिवस, (सुखतप के०) सुखें तपश्चर्यामां (शरीर निरा बाध के०) शरीरसंबंधी निराबाध पणामां एटले रोगरहितपणामां (सुखसं जमजात्रा के०) सुखें संयमयात्रामां (निर्वहोछोजी के०) प्रवर्त्तो छो जी, स्वामीजी शाता छेजी ॥ ३ ॥ एवी सुखशाता पूछीने पछी एमज उनो थको बे हाथ जोडी बे पगने आगले जागें चार अंगुलनुं आंतरुं अने पाछले जागें त्रण आंगुल जाजेरुं आंतरुं राखे, एवी जिनमुद्रा साचवतो तथा बे हाथनी आंगुली एकेकमां जरावी बे हाथ कमलकोशने आकारें मुख आ गल देइ बे हाथनी कोणीयो पेट उपर राखे एवी योगमुद्रा साचवतो इरि यावहियं सूत्रनो पाठ कहे, ते नीचें लखीयें छैयें.

॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छं ॥

अर्थः–(इच्छाकारेण के०) इच्छाकारि पूर्वक एटले तमारी इच्छा पूर्वक पण महारा वचनने बलात्कारें तथा दाक्षिण्य पणे नही, परंतु तमारी इच्छा होय तो (जगवन् के०) हे ज्ञानवंत, महाजाग्य, पूज्य ! (संदिस्सह के०) आदेश आपो आज्ञा करो, तो (इरियावहियं के०) चालवानो मार्ग तथा साधु श्रावकनो मार्ग, जे सर्वविरति देशविरतिरूप, तेने विषे थइ हो य जे जीवबाधादिक सपापक्रिया तथा अतिचाररूप मलिनता, ते पाप थकी निवृत्तवानो जे साधु तथा श्रावकनो आचार छे, ते प्रमाणे हुं (प डिक्कमामि के०) प्रतिक्रमुं, निवृत्तुं, पाछो वलुं? तेवारें गुरु कहे (पडिक्क मह) एटले निवृत्तो, पाप टालो. तेवारें शिष्य कहे, (इच्छं के०) प्रमाण

छे. एटले जेम तमें आज्ञा दीधी,तेमज हुं तमारो आदेश अंगीकार करुं छुं, मस्तकें चढावुं छुं. ए आदेश मागवाना सूत्रामां त्रण गुरु अक्षर अने त्रेवीश लघु अक्षर छे सर्व मली छवीश अक्षरो छे ॥

॥ इछामि पडिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥

अर्थः– हुं पण एटलुंज (इछामि के०) अभिलषामि एटले वांछुं छुं जे (इरियावहियाए विराहणाए के०) इरिया पथिक्या विराधनया एटले गमन छे प्रधान जेमां एवो जे मार्ग,तेने इरियापथ कहियें अने ते मार्गने विषे थती एवी जे जंतुउनी विराधना एटले मार्गें चालतां जीवो हणाय, पीडा पामे तेने ऐर्यापथिकी विराधना कहियें. अथवा ऐर्यापथिक ते साधु तथा श्राव कनो आचार एटले ध्यान मौनादिक जे भिक्षुनुं व्रत तेना अभावथी थ येली जे नदी उतरवे करी तथा शयन प्रमुखें करी जीवहिंसादिक आचाराति क्रमरूप बाधा तेने ऐर्यापथिकी विराधना कहियें, तेनेज सपाप क्रिया कहियें. ते थकी (पडिक्कमिउं के०) प्रतिक्रमितुं एटले प्रतिक्रमवाने निवृत्तवाने हुं वां छुं छुं, इछुं छुं. अहींयां पडिक्कमवाने अत्यंत उजमाल थयो, ए संबंधें पहेला बे पदनी अभ्युपगम नामें प्रथम संपदा थइ. जे आलोचना लक्षण रूप कार्यनुं अंगीकार करवुं ते अभ्युपगम संपदा जाणवी. एमां लघु अक्षर छ तथा गुरु बे मली आठ अक्षर छे अने बीजी इरियावहियादिक बे पदनी निमित्त संपदा कही,ते अंगीकारकृत वस्तुने उपजवानां कारण रूप छे माटे एनुं नि मित्त एवुं नाम छे एमां पण बे पद छे, अने लघु अक्षर बार छे ॥ २ ॥

हवे ते विराधनारूप सपापक्रिया शुं करवाथी थाय ? ते कहे छे.

॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥

अर्थः–(गमणागमणे के०) गमनागमने एटले पोताना स्थानक थकी परस्थानकें जवुं, तेने गमन कहियें अने परस्थानकथकी पोताने स्थानकें आववुं, तेने आगमन कहियें, तेने विषे जे जीवोनी विराधना थइ होय. अहीं विशेष न कह्युं माटे ए सामान्य प्रकारें प्रायश्चित्त उपजाववा रूप एक पदनी त्रीजी उघ ते सामान्यहेतु संपदा जाणवी. केम के जीवहिंसा उपजाववानीजे सामान्य हेतु ते गमनागमन छे,एमां लघु अक्षर छ छे ॥३॥

हवे त्यां परस्थानकें जतां अने स्वस्थानकें आववाने
विषे विराधना केम थाय ? ते कहे छे.

**पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, उसा उत्तिंग
पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे ॥ ४ ॥**

अर्थः—(पाणक्कमणे के०) प्राणाक्रमणे एटले बेंद्रिय, तेंद्रिय अने चौरिंद्रिय जे जीवोतेने प्राण कहियें, ते जीवोने आक्रमण एटले पगें करी चांपवाथी.

तथा (बीयक्कमणे के०) बीजाक्रमणे बीज एटले शालि, गोधूम, यव, सरशवादिक सर्व जातिनां धान्य प्रमुख जे वाव्यां छतां उगी आवे,ते बीज जाणवां, तेनें आक्रमण एटले पगें चांपवाथकी.

तथा (हरियक्कमणे के०) हरिताक्रमणे, हरित एटले नीलवर्णवाली एवी मूलकंदादिक दश प्रकारनी वनस्पति, तेने आक्रमण एटले पगें करी चांपवा थकी. एमां बीयक्कमणे तथा हरियक्कमणे ए बे पदें करी सर्व बीज सर्व वनस्पतिने विषे जीवपणुं कह्युं, जे माटे जीवनां सर्व लक्षण, एउमां संपूर्ण दीठामां आवे छे, ते आ प्रमाणेः—मनुष्यना शरीरनी पेठे वनस्पतिनुं शरीर पण बाल, कोमल, तरुण तथा वृद्धता प्रमुखें करी सहित दीठामां आवे छे तथा जेम हाथ तथा पगादिक अवयवोयें करी मनुष्यनो देह वृद्धिने पामे छे, तेम शाखादिक अवयवोयें करी वृक्षनी वृद्धि पण थाय छे. तथा जेम मनुष्यादिक प्राणीयोमां जागृत् तथा निद्रा अवस्था दीठामां आवे छे तेम पुआड तथा आमली प्रमुख वृक्ष, चंद्रविकासिक तथा सूर्यविकासिकादिक कमल,अने अंबाडी पुष्पादिकमां निद्रा तथा जागृतादिक अवस्था दीठामां आवे छे. तथा लोज, हर्ष, लज्जा, जय, मैथुन, क्रोध, मान, माया, लोज, आहार, उघसंज्ञा, इत्यादिक सर्व विकार, वृक्षोनें पण मनुष्यनी पेठें थता दीठामां आवे छे. जेम के, श्वेत आकडानुं वृक्ष तथा बील पलाशादिक वृक्ष, जूमिगत निधानने पोताना मूलनी जडें करी वींटी लिये छे, ते लोजनो जाव जाणवो, वर्षाकालने विषे मेघनी गर्जना सांजलीने शीतल वायुना फरसें करी अंकुर उत्पन्न थाय छे, ते हर्षनो जाव जाणवो. लज्जालु वेलि, मनुष्यना हाथ वगेरे अंगना स्पर्शथकी संकोचाई जाय छे, ए लज्जा तथा जयनो जाव कहे

वाय; अशोकवृक्ष, बकुलवृक्ष तथा तिलकवृक्षादिक नवयौवनस्वरूप सालं कार कामिनीना पगनी पानीने प्रहारें करी, तेना मुखनो तांबूलरस छांट वाथी, तेना करेला सस्नेहालिंगन वडे तथा तेना करेला हावजाव कटा क्षविक्षेपें करी तत्काल फलता दीसे छे;ए मैथुनसंज्ञानो जाव जाणवो. कोक नद वृक्षनो कंद, मनुष्यनो पग लाग्याथी हुंकारा मूके छे; ए क्रोधनो जाव जाणवो. रुदंती वेल, अहो हुं छतां आ लोको दुःखी कां थाय छे? एवा अहंकारें करी निरंतर अश्रुपात करे छे, केम के, तेना योगथी सुवर्णनी सिद्धि थाय छे; माटे ए माननो जाव जाणवो. प्रायें घणुं करीने बधी वे लीयो पोत पोतानां फलोने पांदडायें करी ढांकी लिये छे. ए माननो जाव जाणवो. तथा जूमिका जलादिक आहारना योगें वृक्षोनी वृद्धि थाय छे; अने ते विना दिवसें दिवसें कुमलाई जाय छे. मनुष्यनी पेठें नागरवेलि प्रमुखने तिलवटी गोमय तथा दुग्धादिकना दोहला उपजे छे. ते परिपूर्ण थया पछी पत्र, फल, फूल, तथा रसनी वृद्धि थाय छे; ए पण आहारसं ज्ञानो जाव जाणवो. वृक्षने पांडू, गांठ, उदरवृद्धि सोजो तथा दुर्बलपणुं प्रमुख रोगें करी फूल, फल, पान, त्वचाने विकार दीसे छे तथा सर्व वन स्पतिना आउखां पोत पोतानां नियतज होय छे; इष्ट तथा अनिष्ट आ हारनी प्राप्तियें करी वृक्षो पुष्ट तथा अपुष्ट थाय छे; वेलीउ मार्गने मूकीने वृक्षनी उपरज चढे छे;ए उघसंज्ञानो जाव जाणवो. इत्यादिक युक्तियें करी श्री आचारांगना पहेला श्रुतस्कंधना पहेला अध्ययनमां सविस्तर जीव पणुं थाप्युं छे. अहीं कोइ पूछे के, जो वनस्पति जीवरूप होय, तो छेदन तथा जेदन प्रमुख करतां कां रुदन करती नथी? अथवा नाशी जाती न थी? एनो उत्तर ए छे के, मनुष्यनी पेठें ववस्पतिने मुख, पग, तथा हाथ प्रमुख अवयवोनो अजाव छे अने स्थावर कर्मना उदयथी नासवाने ब नतुं नथी. तो पण तेउने अव्यक्त वेदना होयज छे. जेम कोइ एक आंध लो, बहेरो, बोबडो, तुंगो, पांगलो अने विषम वायुना विकारें करी थंजा णो थको सर्व अंगोपांगना व्यापाररहित पुरुष होय, तेने कोइ ताड न प्रमुख करे, तो तेथी ते सहन थाय नही पण मुखादिकना अजावें रोइ तथा नाशी शके नही तथापि तेने वेदना तो थायज छे. ते माटे कोइ मो होटा अवश्य प्रयोजन विना वनस्पतिनी विराधना करवी नही.

तथा (उंसा के०) अवश्याय एटले गार, एथी आकाशथकी जे सूक्ष्म अप्काय पडे, तेनुं ग्रहण करवुं, ए सूक्ष्म अप्कायनी विराधना आकरी पापहेतु छे, एम जणावे छे. उक्तं च श्री आगमे " एगंमि उदगबिंदुमि, जे जीवा जिणवरेहिं पन्नत्ता ॥ ते जइ सरिसिव मित्ता,जंबूदीवे न मायंति

तथा (उत्तिंग के०) गर्दन्नाकार जीवो, जे नूमिने विषे वृत्ताकार घर करीने रहे, अर्थात् नूमिने विषे गोल विवरना करनार जेनुं जुईया एवुं नाम होय छे, ते अथवा उत्तिंगशब्दें करी कीडीउनां नागरां पण जाणवां.

(पणग के०) पनक एटले पांचवर्णा नील फूल जाणवां. (दगमट्टि के०) दकमृत्तिका एटले जे सचित्त नूमिकायें सचित्त पाणीने योगें करी कादव थाय,अर्थात् पगे हणाणी नूमिनो कचरो एटले जे पाणी अने माटी, ए बे नेलां मलेलां कादव कीचड जाणवा अथवा दग एटले पाणी ते अप्काय अने मट्टि एटले माटी ते पृथ्वीकाय,एम जूदा जूदा अर्थ जाणवा.

(मक्कडा के०) मर्कट एटलें कोलीआवडाला (संताणा के०) संतान एटले जाल ए कोलीआवडानी जालने मर्कटसंतान कहियें. हवे उंसाथी मांमीने ए सर्व पांच अथवा छ जातिना जीवोने केम विराध्या होय ते कहे छे.

(संकमणे के०) संक्रमणे एटले पगें करी पीड्याथकी अथवा चांप्या थकी, पगादिकें करी मसलवाथकी, मथन करवा थकी, ताडन, तर्जन करवाथकी जे कांइ विराधना थइ होय. ए विशेष पणे बीजादि आक्रमण रूप चार पदनी इत्वर एटले विशेषहेतु नामें चोथी संपदा जाणवी. एमां लघु अक्षर बत्रीश अने गुरु अक्षर छ छे,सर्व मली आडत्रीश अक्षरो छे ॥४॥

हवे घणुं शुं कहेवुं परंतु एकज पदें करी सर्व जीवोनी विराधना कहियें छैयें.

जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥

अर्थः–(जेमेजीवाविराहिया के०) ये मया जीवा विराधिताः एटले जे कोइ जीवो में विराध्या होय, दुःखमांहे पाड्या होय, एमां जीव विराध्या एम सामान्यें कह्युं पण एकेंद्रिय, बेंद्रिय, इत्यादिक विस्तारें न कह्युं माटे ए सकल जीवना परितापरूप एक पदनी पांचमी संग्रहसंपदा जाणवी. एमां सर्व लघु अक्षर आठ छे ॥ ५ ॥

हवे ते कया जीव में विराध्या एटले दुःखीया कीधा ? तें कहे छे.

॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदया, पंचिंदिया ॥ ६ ॥

अर्थः-(एगिंदिया के०) एकेंद्रियाः एटले जेनें शरीररूप एकज इंद्रिय होय ते पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु अने वनस्पतिरूप पांच प्रकारना स्थावर जीवने एकेंद्रिय जाति कहियें, ते वली पांचे स्थावरना पण एकेकना अनेक भेद छे, ते जीवस्वरूप कुलकथकी जाणवा. हवे त्रसजीव कहे छे.

(बेइंदिया के०) द्वींद्रियाः एटले जेने शरीर अने जीभ ते रसेंद्रिय एटले मुख ए बे इंद्रियोज होय, एवा कृमि, शंख, छीप, जलो, गंमोला, अलसीयां प्रमुख जेने पग न होय तेने बेंद्रिय जीव कहियें.

(तेइंदिया के०) त्रींद्रियाः एटले जेने शरीर, जीभ तथा नासिका, ए त्रणज इंद्रियो होय एवा कुंथुआ, जू, लीख, मांकड, कीडी,मकोडा प्रमुख जेने आठंधिका पग होय अथवा जेने मुखाग्रेंशिंग होय तेसर्वे त्रींद्रिय जीव.

(चउरिंदिया के०) चतुरिंद्रियाः एटले जेने शरीर, जीभ, नासिका अने आंख, ए चारज इंद्रियो होय. एवा माखी, कुती,मछर, डांस,विंछी, कोली यावडा, चांचड, भमरी, टीड प्रमुख जे जे उडनारा जीव होय, जेने छ अथवा आठ पग होय. तथा मस्तकें शिंग होय,ते सर्वे चतुरिंद्रिय जीव छे

(पंचिंदिया के०) पंचेंद्रियाः एटले जेने शरीर, जीभ, नासिका, आंख अने कान,ए पांचे इंद्रिय होय. एवा जलचर ते मत्स्य कछपादिक तथा स्थलचर ते सिंहव्याघ्रादिक अने खेचर ते हंस मयूरादिक पक्षीयो,ए तिर्यंच जीव जाणवा तथा मनुष्य, देव अने नारकी, ए सर्वे पंचेंद्रिय जीव कहियें.

ए पांच बोल मध्यें सर्वे संसारी जीव आवी गया, एमां एकेंद्रिय, बेंद्रिय, एम जीवनां नाम कह्यां,तेथी ए जीव भेद देखाडवारूप पांच पदनी जीव संपदा छठी जाणवी. एमां सर्वे मली एकवीश लघु अक्षर छे ॥६॥

हवे ए जीवोने केवी केवी रीतें विराध्या? तेना प्रकार कहे छे.

अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाउ ठाणं संकामिया, जीवियाउ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥

अर्थः-(अनिहया के०) अनिहताः तिहां अनि एटले सामा आव ताने पगें करी, हता एटले हण्या. अथवा उपाडीने परहा पटकाव्या एट ले परहा नाख्या, तेने अनिहता कहियें.

तथा (वत्तिया के०) वर्त्तिताः एटले पूंजीने एकग कीधा, एक ढगले कीधा, अथवा धूलें करी किंवा कर्दमें करी ढांक्या, तेने वर्त्तिता कहीयें.

तथा (लेसिया के०) श्लेषिताः एटले नूमियें घश्या तथा नींतादिकें लगाड्या अथवा लगारेक मसल्या तेनें लेसिया कहियें.

(संघाइया के०) संघातिताः एटले मांहो मांहे शरीरने मेलववें करी पिंमीनूत कीधा, एकग मेलव्या तेने संघातिता कहियें.

तथा (संघट्टिया के०) संघट्टिताः एटले थोडो स्पर्श करवे करी डुहव्या, लगारेक संघट्ट कीधो (परियाविया के०) परितापिताः एटले समस्त प्रका रें ताप्या, पीड्या, परिताप उपजाव्यो, तेनें परिता पितःकहियें.

(किलामिया के०) क्लामिताः एटले गाढी किलामणा ग्लानि उपजा वीने निस्तेज कीधा, निटोल कीधा, मूर्छा पमाड्या अर्थात् शेष जीव रह्यो पण हाली चाली न शके, एवा कीधा, मास्या नही पण मृतप्राय कीधा.

(उद्दविया के०) उड़ाविताः एटले उत्त्रासित त्रास पमाड्या.

तथा (गणाउ गणं संकामिया के०) स्थानात् स्थानं संक्रामिताः एटलें (गणाउ के०) एक स्थानक थकी उपाडीने (गणं के०) बीजा स्थानक प्रत्यें (संकामिया के०) संक्रामिता एटले संक्रमाव्या.

(जीवियाउववरोविया के०) जीविताद्व्यवरोपिताः मारिताः एटले (जी वियाउ के०) जीवितव्यथकी (ववरोविया के०) चूकाव्या जूदा कीधा. अथवा मास्या. ए अनिहया इत्यादिकें करी जे एकेंडियादिक जीवोनी वि राधना थइ होय (तस्स के०) ते संबंधी अतिचार लाग्या, तेने (डुक्कडं के०) डुष्कृतं, एटले पाप कहियें, ते डुष्कृत (मि के०) मे एटले माहारुं मन, वचन, कायायें करी (मिच्छा के०) मिथ्या एटले निष्फल थाउ. हवे फरीथी वली एवां पाप हुं न करुं ॥ इति नावः ॥

एमां अनिहया इत्यादिक विराधनानां नाम दीधां, माटे ए जीवादिक नेदने परितापना विराधना रूप अगीयार पदनी विराधना नामें सातमी सं पदा थइ. एमां लघु अक्षर एकावन, अने गुरु अक्षर ब सर्वाक्षर सत्तावन बे.

हवे मिछामिडुक्कडं ए पदनो अक्षरार्थ. समासें करी कहे छे. जेम केः– " मिळ मद्दव छत्ते, छत्तिय दोसाण छायणे होइ ॥ मित्तिय मेराइठिर्ज, डुत्ति डुगंछामि अप्पाणं ॥ १ ॥ कत्तिय कडमे पावं, ढत्तिय ढवेमि तं उवसमेणं ॥ एसो मिछा डुक्कड, पयरकरछो समासेण ॥ २ ॥ " अर्थः–मिळमद्दवछत्ते के०) मिकार जे छे ते तो मृडु सुकुमाल अहंकाररहित पणाने अर्थें छे. (छत्ति यदोसाणछायणे होइ के०) छकार जे छे ते, दोषना ढांकवाने अर्थें छे. (मित्तियमेराइठिर्ज के०) मिकार जे छे, ते मर्यादामां रहेवाने अर्थें छे. (डुत्तिडुगंछामिअप्पाणं के०) डुकार जे छे, ते पापकारि आत्माने डुगंछ वाने माटें छे. (कत्तियकडमेपावं के०) ककार जे छे ते में जे पाप कीधुं (ढत्तियढवेमितंउवसमेणं के०) तेने ढकारें करी दहुं छुं, उपशमावुं छुं. (एसोमिछाडुक्कड के०) ए मिछामिडुक्कडंनो (पयरकरछोसमासेणं के०) पदाक्षरार्थ, समासें करीने कह्यो.

ए इरियावहिने सम्यक् प्रकारें मन, वचन अने कायायें करी त्रिकरण शुद्धें पडिक्कमतां मिछाडुक्कडंना देनारने क्षण एकमां मृगावतीनी पेरें सर्व कर्मोनो क्षय थाय. तिहां सर्व मली पांचशें ने त्रेशठ जातिना जीवो छे, तेनी सार्थे मिछामिडुक्कडं दइयें, तेवारें अढार लाख, चोवीश हजार, एकशो ने वीश एटला मिछामिडुक्कड देवाय,ते आवी रीतेंः–तिहां प्रथम पांचशो ने त्रेशठ स्थानकें जीव उपजे छे, तें स्थानकोनुं विवरण करे छेः—

पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय तथा वाउकाय. ए चार स्थावरने सूक्ष्म तथा बादरें करतां आठ भेद थाय. अने पांचमा वनस्पतिकायना त्रण भेद छेः–एकसूक्ष्म निगोद रूप तथा बे प्रकारना बादर, एक प्रत्येक ने बीजी साधारण, ए पांच स्थावर मलीने अग्यार भेद थया; तथा बेइंद्रिय, तेइंद्रिय ने चउरिंद्रिय, ए त्रणे विकलेंद्रिय कहेवाय छे. ए संमूर्छिमज होय छे. ए त्रण पहेला अग्यारनी सार्थे मेलवीयें एटले चौद भेद थाय; ते चउद पर्याप्ता तथा चउद अपर्याप्ता मली अठावीश भेद थाय. हवे पंचेंद्रिय तिर्यंचना दश भेद कहे छेः–तेमां सर्व प्रकारना मत्स्यादिक जलचरनो एक भेद, भेद थलचरना त्रण भेद, तेमां एक घोडा प्रमुख चतुष्पाद,बीजा आशीविष प्रमुख उरःपरिसर्प, अने त्रीजा गोह प्रमुख भुजपरिसर्प ए थलचरना त्रण भेद अने चार प्रकारना खेचरनो एक भेद, ए सर्व मली पांच गर्भज अने

पांच संमूर्छिम मली दश भेद थाय. ए दशने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता गणीयें, त्यारें वीश भेद थाय. ए वीशमां पेला अठावीश मेलवीयें, त्यारें अडतालीश थाय. ए तिर्यंचना भेद जाणवा. हवे नारकीना भेद कहे छे. रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमप्रभा तथा तमस्तमःप्रभा, ए सात नरकना नारकी पर्याप्ता तथा अपर्याप्ताना मली चौद भेद थाय; तेमां पाछला अडतालीश भेद मेलवियें, त्यारें बाशठ भेद थाय. हवे मनुष्यना भेद आ प्रमाणेः—पांच भरत, पांच ऐरवत, तथा पांच महाविदेह, ए कर्मभूमिना पंदर भेद; पांच हेमवंत, पांच हिरण्यवंत, पांच हरिवर्ष, पांच रम्यक, पांच देवकुरु तथा पांच उत्तरकुरु, ए अकर्मभूमिना त्रीश भेद, अने छपन्न अंतर द्वीपो कहेवाय छे. ए छपन्ननी साथें पेला कर्मभूमिना पंदर तथा अकर्मभूमिना त्रीश मेलवीयें, त्यारें एकशो ने एक भेद मनुष्य जातिना थाय. ए गर्भज मनुष्यना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मली बशें ने बे भेद थाय अने तेनी सायें एकशो ने एक अपर्याप्ता संमूर्छिम मनुष्यना भेद मेलवीयें, त्यारें त्रणशें ने त्रण भेद थाय. अने बाशठ प्रथम तिर्यंचना कह्या, ते सर्व एकठा कर्याथी त्रणशें ने पांशठ भेद थाय.

हवे देवताना एकशो ने अठाणुं भेद कहियें छैयेंः— प्रथम परमाधामीना पंदर, दश भुवनपति, आठ व्यंतर, आठ वाणव्यंतर, दश ज्योतिषी, तेमां पांच चर ने पांच स्थिर जाणवा. त्रण किल्बिषिया, दश तिर्यक्जंभक, पांच भरत तथा पांच ऐरवत, ए दश क्षेत्रना दश वैताढ्यने विषे "अन्ने पाणे सयणे, वत्थे लेयण पुप्फ फलपुवा ॥ बहुफल अविवत्ति जुआ, जंभगा दसविहा हुंतीति जंभकाः ॥ १ ॥" नव लोकांतिक, बार देवलोकना, नव ग्रैवेयकना, पांच अनुत्तर वैमानना, ए सर्व मलीने नवाणुं थया. ते पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता ए बे भेदें करतां एकशो ने अठाणुं भेद थाय. तेने पाछला त्रण शो ने पांशठमां भेलीयें, त्यारें पांचशो ने त्रेशठ सर्व जीवोनां उत्पत्तिस्थानक थाय. तेनें 'अभिहया' इत्यादिक दश पद वडे दश गुणा करियें, त्यारें पांच हजार छशें ने त्रीश थाय; ते वली राग ने द्वेषथी बमणा करियें, त्यारें अग्यार हजार बशें ने शाठ थाय; ते मन, वचन ने कायायें करी त्रण गुणा करियें, त्यारें तेत्रीश हजार, सातशें ने एंशी थाय; ते करवा, कराववा तथा अनुमोदनथी त्रण गुणा करियें, त्यारें एक

लाख, एक हजार, त्रणशें ने चालीश थाय. ते अतीत, अनागत तथा वर्त्तमान कालें करी त्रण गुणा करियें, त्यारें त्रण लाख चार हजार ने वीश थाय. तेने अरिहंतनी साखें, सिद्धनी साखें, साधुनी साखें, देवनी साखें, गुरुनी साखें, तथा आत्मानी साखें, मिच्छामि दुक्कड देवा माटे ए छनी साथें छ गुणा करियें त्यारें अढार लाख, चोवीश हजार, एकशो ने वीश, एटला मिच्छामिदुक्कड थाय. एवी रीतें जीवने खमत खामणां कीजें, ए इरियावही शुभ ध्यानें पडिक्कमतां थकां अनेक घोर पाप विलय थाय ॥ ५ ॥ इति ॥

हवे ए आलोया पडिक्कम्या जे अतिचार, तेनुं उत्तरीकरण एटले वली विशेष शुद्धि करवाने अर्थें काउस्सग्ग करवाने वांछतो थको तस्स उत्तरीनो पाठ कहे, ते आवी रीतें:—

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥ ए ॥

अर्थः—हवे एवी रीतें आलोवतां, पडिक्कमतां पण जे कांइ पापसहित आत्मा रह्यो होय, (तस्स के०) तेनीज वली विशेष शुद्धिने अर्थें जे कांइ आगल करवुं, तेने (उत्तरीकरणेणं के०) उत्तरीकरण एटले विशेषें करी वली उपर शुद्ध करवुं तेने उत्तरीकरण कहियें, ते आगल तो हवे काउस्सग्ग करवुं छे माटे कायोत्सर्ग करवे करीने विशुद्धि करुं छुं, एटले जे अतिचारनुं आलोयण प्रमुख पूर्वें कीधुं छे, तेनी वली विशेष शुद्धिने अर्थें कायोत्सर्ग करुं छुं, वली ते कायोत्सर्ग तो (पायच्छित्तकरणेणं के०) शुद्ध प्रायश्चित्त करवे करीने होय, एटले गुरुपासें पाप आलोवीयें, पछी गुरुयें दीधुं एवुं जे आलोयणानुं तप, तेने प्रायश्चित्त कहियें. प्रायः घणुं चित्त एटले मन अथवा जीव तेने शोधे छे, तेने प्रायश्चित्त कहियें. अथवा पापने छेदे, तेने प्रायश्चित्त कहियें. ते काउस्सग्गने करवे करी पाप छेदाय, आत्मा पापरहित थाय. वली ते प्रायश्चित्त पण (विसोहीकरणेणं के०) विशेषें शोधवुं तेने विशोधीकरण कहियें, एटले आत्मानो पापरूप अंतर मल जे अतिचार, तेना टालवाथी एटले निर्मलता करवे करीने विशोधी होय.

वली ते विशोधीकरण पण विशल्य होय, तो थाय, त्यां कहे छे. (विसल्ली करणेणं के०) गयां छे मायादि त्रण शल्य जेनाथी तेने विशल्य कहियें एटले एक मायाशल्य, बीजुं नियाणशल्य, अने त्रीजुं मिथ्यात्वशल्य, ए अंतरंग त्रण शल्यनें टालवाथकी थाय. ए उत्तरीकरणादिक चार हेतुयें करी एटले ए चार निमित्तें करीने शुं करवुं छे? तो के (पावाणं कम्माणं के०) संसार हेतु जे ज्ञानावरणीयादिक पापकर्मो छे,तेउने (निग्घायणठाए के०) निर्घातनार्थाय एटले उच्छेदन करवाने अर्थें कायव्यापार त्यागरूप (काउस्सग्गं के०) कायोत्सर्ग प्रत्यें (ठामि के०) तिष्ठुं छुं, कायाने एक ठामें करुं छुं, केम के? जे स्थानकें कायानो व्यापार करवो कह्यो होय, तो ते स्थानकें जीव शुं नही करे? अर्थात् सर्व कांइ करे. ए माटें कायाना व्यापारने ठांरुं छुं. एमां तस्स उत्तरीकरणेणं इत्यादिक पडिक्कमवाना शब्दो कह्या माटे ए छ पदनी आठमी पडिक्कमण नामें संपदा जाणवी. एमां लघु अक्षर उगणचालीश, गुरु अक्षर दश, सर्वाक्षर उगणपच्चाश छे. ए बे सूत्रोना गद्य पाठ छे गाथा बंध नथी माटे ए बेहु सूत्रोमां संपदा आठ, पद बत्रीश, गुरु अक्षर चोवीश, लघु अक्षर एकशो ने पंचोतेर, सर्व मली एकशो ने नवाणुं अक्षरो छेः–

हवे ए आगल एक ठामें काउस्सग्ग करुं? ए पदें करी एवी प्रतिज्ञा करी के, कायानो व्यापार न करुं, तो हवे बीजो शरीरनो कोइ पण व्यापार करवाथी प्रतिज्ञानो भंग थाय, ते माटे काउस्सग्गमां नीचें कहेला आगार मोकलां राख्यां छे,ए आगारें करी काउस्सग्गनो भंग न थाय,ते कहे छे.

॥ अथ अन्नछ उससिएणं ॥

अन्नछ उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुछाए ॥१॥

अर्थः–(अन्नछ के०) अन्यत्र ते बीजे ठामें एटले हवे जे उछ्वासादिक आगारो आगल कहेशे, ते आगार वर्जीने बीजे स्थानकें कायानो व्यापार करवानो नियम करुं छुं. हवे ते आगारोनां नाम कहे छे.

(उससिएणं के०) उछ्वासितात् एटले मुखें तथा नासिकायें करी ऊंचो श्वास लइयें, तेने उछ्वास कहियें. ते टालीने अन्यत्र बीजो काय व्यापार

करवानो नियम छे अर्थात् उंचो श्वास लेतां म्हारो काउस्सग्ग भंग न थाय. एम आगल पण सर्व पदोने विषे जाणी लेवुं.

(नीससिएणं के०) निःश्वासितात् एटले जे मुखें तथा नासिकायें करी नीचो श्वास मूकीयें, तेने निःश्वास कहियें, ते नीचो श्वास मूकतां म्हारो काउस्सग्ग न भांगे, ए बे आगार, अशक्य परिहार भणी मोकला कीधा.

(खासिएणं के०) कासितात् एटले खांसी उधरस आवे थके (छीए णं के०) छिक्कितात् एटले छीक आवे थके (जंभाइएणं के०) जृंभितात् एटले बगासुं आवे थके एटले जेवारें खांसी, छीक अने बगासुं आवे, तेवारें, जीव रक्षा भणी मुखें हाथ देतां म्हारो काउस्सग्ग न भांगे.

(उड्डुएणं के०) उद्गारितात् एटले उड्कार आवे थके (वायनिसग्गे णं के०) वातनिसर्गात् एटले वायसंचय ते अधोद्वारें जे वायु निकले तेने वातनिसर्ग कहियें, ए जेवारें उद्गार तथा वातप्रवर्त्तन करे तेवारें जीव र क्षा भणी मुखद्वारें हाथ प्रमुख देवानी जयणा करतां काउस्सग्ग न भांजे.

(भमलिए के०) भ्रमरेः एटले भ्रमरी, चक्री, फेर अकस्मात् आवे, तेने भमलि कहियें. (पित्तमुच्छाए के०) पित्तमूर्छायाः पित्तने प्रकोपें करी मूर्छा आवें, तेने पित्त मूर्छा कहियें, एम भ्रमरी अने मूर्छा आवे थके जो नीचें न बेसे तो उभो थको पडे, तेथी आत्मविराधना तथा संयम वि राधना थाय, ते माटे भ्रमरी, मूर्छा आव्याथी तिहां बेसवुं पडे तेथी म हारो काउस्सग्ग भंग न थाय. अहीं सुधी एकेका आगारनां नाम दीधां, माटे ए नव पदनी प्रथम एकवचनांत आगार संपदा थइ. एमां लघु अ क्षर आडत्रीश, अने गुरु अक्षर छ छे, सर्व मली चुम्मालीश अक्षरो छे ॥१॥

सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसं
चालेहिं, सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं ॥ २॥

अर्थः—(सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं के०) सूक्ष्मेभ्योऽङ्गसंचारेभ्यः एटले सूक्ष्म जे अंगनो संचार ते हालवुं करे, शीतादिक वेदनायें करी रोमो त्कंपादिक उपजे तेथी शरीरनो संचार थाय ए दशमुं आगार थयुं.

(सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं के०) सूक्ष्मेभ्यः श्लेष्मसंचारेभ्यः एटले

शरीरमांहे जे सूक्ष्म श्लेष्मनो संचार थाय, मुखना थूंकनुं चालवुं थाय तथा कफनुं गलवुं थाय. तेथी महारो काउसग्ग नंग न थाय.

(सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं के०) सूक्ष्मेभ्यो दृष्टिसंचारेभ्यः एटले सूक्ष्म जे दृष्टिनो संचार मिषोन्मिषादिकें चक्षुने हलाववायकी थाय.

अहीं सुहुमेहिं प्रमुख पदमांहे बहु आगारनां नाम दीधां माटें ए त्रण पदनी बहुवचनांत आगार नामें संपदा जाणवी. एमां लघु उंगणत्रीश अने गुरु एक, मली त्रीश अक्षरो छे ॥ २ ॥

एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अ
विराहिउ, हुक्त मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥

अर्थः—(एवमाइएहिं आगारेहिं के०) एवमादिकैः आगारैः एटले एव मादिक जे पूर्वोक्त बार आगार कह्यां, ते आदें देइने आंही आदि शब्द थकी बीजां पण (आगारेहिं के०) आगार लेवां, तेनां नाम कहे छे.

एक तो वीजली अथवा दीपकादिकनी उजेहि एटले अग्निना अजवा लानो प्रकाश आपणा शरीर उपर पडे, तो उंढण वस्त्रादिक लेवुं पडे अ थवा बीजे स्थानकें जवुं पडे तेथी महारो काउस्सग्ग न नांजे.

बीजो मार्जार तथा उंदरादिक प्रमुख, आगल जतां आवतां होय, दो डतां होय, तथा मुख आगल पंचेंद्रिय जीवनुं छेदन, नेदन थतुं देखे, तो बीजे स्थानकें जवुं पडे तेथी महारो काउस्सग्ग न नांगे.

त्रीजो अकस्मात् चोरनी धाड आवी पडे, अथवा राजादिकना नय थी बीजे स्थानकें जवुं पडे आघा पाछा थवुं पडे, तेथी काउस्सग्ग न नांगे.

चोथो अग्नि लागे अथवा घरनी नीत खडहडती पडती जाणीयें तथा पोताने अने पर जे साधु आदिक तेने सर्पादिक दंख मारे अथवा सिंहा दिकना उपद्रव थता जाणे, इत्यादिक अनेरा पण जिहां विलंब करतां घणीज धर्मनी हानी थती देखीयें तो तिहां अणपूगो काउस्सग्ग पारतां थकां पण काउस्सग्ग न नांगे. ए चार आगार अपवाद मार्गे जाणवां, पण उत्सर्गे न जाणवां. एनी साथें पूर्वोक्त बार आगार मेलवीयें तेवारें शोल आगार थाय. ए सर्व शोल आगारोयें करीने काउस्सग्ग पारतां थो डीशी विराधना थतां पण ए व्यापार करतां महारो काउस्सग्ग (अनग्गो

के०) अनग्नः एटले सर्वथा अखंमित (अविराहिउ के०) अविराधितः एटले थोडोसो देशथी पण न विराध्यो, अर्थात् देशथी पण अविराधित एवो अखंमित संपूर्ण (काउस्सग्गो के०) कायोत्सर्ग ते (मे के०) म्हारे (हुज्ज के०) होजो,एमां एवमाइ एटले एवमादिक आगार कह्यां,माटे ए ब पदनी त्रीजी आगंतुक आगार एवे नामें संपदा जाणवी. एमां लघु एक वीश, अने गुरु चार, मली पच्चीश अक्षरो छे ॥ ३ ॥

हवे ए काउस्सग्गनो वखत आंके छे, एटले एवो कायो त्सर्ग केटली वार सुधी होय ? ते कहे छेः—

जाव अरिहंताणं, नगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि ॥ ४ ॥

अर्थः—(जावअरिहंताणंनगवंताणंनमुक्कारेणं के०) यावदर्हतां नगवतां नमस्कारेण एटले (जाव के०) (ज्यांलगें अरिहंताणं नगवंताणं के०) श्री अरिहंत नगवंत पूज्य तेने (नमुक्कारेणं के०) नमस्कार सहित एटले नमो अरिहंताणं एवो उच्चार करी (न पारेमि के०) न पारयामि, नही हुं पारुं, एटले कायोत्सर्गना पार प्रत्यें न पामुं समाप्त न करुं त्यांसुधी जाणवुं, एमां जावअरिहंताणं इत्यादिक पदमां काउस्सग्गनुं मान कह्युं. तेथी ए चार पदना कायोत्सर्गने अवधिमर्यादारूप कायोत्सर्गावधिनामें चोथी संपदा जाणवी. एमां लघु अक्षर वीश अने गुरु अक्षर एक, सर्व मली एकवीश अक्षरो छे ॥४॥

तावकायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

अर्थः—(तावकायं के०) तावत्कायं एटले (ताव के०) त्यांलगें (कायं के०) म्हारी कायाने शरीरने (ठाणेणं के०) स्थानेन एटले एक स्थानकें स्थिरपणे उन्नुं राखीने (मोणेणं के०) मौनेन एटले वचनने रुंधवे करीने (झाणेणं के०) ध्यानेन एटले ध्यान ते धर्मने विषे मननुं स्थिर पणुं अर्थात् नवकारादिकने विषे एकाग्रध्यान तेणें करीने (अप्पाणंवोसिरामि के०) आत्मानं व्युत्सृजामि एटले (अप्पाणं के०) पोतानी काया ते प्रत्यें (वोसिरामि के०) वोसिरावुं छुं, एटले हुं तजुं छुं. अर्थात् काउस्सग्गरहित पणाथकी अने सावद्य व्यापारपणाथकी कायाने वोसिरावुं छुं. एमां तावकायं इत्यादिकमां शरीर स्थिर राखवानुं कह्युं, माटे ए ब पदनी पांचमी स्वरूपसंपदा जाणवी. एमां लघु अक्षर उगणीश अने गुरु अक्षर एक,

सर्वे मली वीश अक्षरो छे. तथा ए काउस्सग्गने सूत्रें अन्नब्उससिएणंथी मांडीने अप्पाणं वोसिरामि लगें संपदा पांच छे,छवीश पद छे,लघु एकशो सत्तावीश अने गुरु तेर मली सर्वाक्षर एकशो चालीश छे ॥ ५ ॥

हवे ए काउस्सग्गमां उगणीश दोष टालवा, तेनां नाम लक्षणसहित कहियें छैयें. (१) घोडानी पेरें एक पगे शरीरनो जार आपी, बीजो पग वांको करी रहे, (२) वायरे हलावेली वेलडीनी परें क्षणें क्षणें अरहो परहो झोले, कंप्या करे, (३) थांजाने अथवा जींतने आधारें अटक्यो थको काउस्सग्गें रहे, (४) उपरले मालें मस्तक अटकावी रहे, (५) जेम जीलडी वस्त्र रहित थकी आगले विजागें हाथज आडो आपे, तेम, काउस्सग्ग करतो बे हाथने आगल आणी राखे, (६) नवपरणीत वधूनी पेरें नीचुं माथुं करे, (७) बेडी घाल्यानी पेरें पग पहोला करे अ थवा बे पग मेलावी जेला करे पण जिनमुद्रामां जेटलुं आंतरुं कह्युं छे, तेटलुं न करे, (८) नाजिथकी चार अंगुल नीचें अने जानु थकी चार अंगुल उपर, चोलपट पहेरवुं कह्युं छे, तेम न करे, परंतु नाजि उपर अने जानु हेठल वस्त्र पहेरी काउस्सग्ग करे, (९) झांस मशकादिकना जय थकी चोलपटादिकें करी हृदय ढांकीने काउस्सग्ग करे, (१०) गाझानी उधनी पेरें पगनी बे पानी मेलवीने आगल बे पग विस्तारी काउस्सग्ग करे, अथवा बे पगना बे अंगुठ मेलवीने पाछला पानीना जाग तरफ बेहु पग विस्तारें, (११) संयति महासतीनी पेरें बेहु स्कंध उपरें वस्त्र उढे, जे जणी काउस्सग्गमां दक्षिणस्कंध उघाडो कीधो जोइयें, ते न करे, माटें ए दोष, (१२) घोडाना चोकडानी पेरें रजोहरण, आगल आडुं आपी, काउस्सग्ग करे, (१३) वायसनी पेरें आंखना झोला कीकी अरही परही फेरवे, (१४) कोठनी पेरें पहेरवानां वस्त्रनो एकठो पिंम करी बेहु प गनी वचालें चांपे, (१५) जूतावेशनी पेरें मस्तक कंपावे, (१६) मूंगानी पेरें हुं हुं करे, (१७) नवकार लोगस्सनी संख्या करवाने अर्थें जमुह ते पापण अथवा आंगली हलावे, ते जमुहंगुली दोष जाणवो, (१८) मदि रानी पेरें बड बड करतो काउस्सग्ग करे, (१९) अपेक्षा विना अरहुं परहुं जोतो वानरनी परें होठ बे हलावतो काउस्सग्ग करे. ए काउस्स ग्गना उगणीश दोष मध्यें आठमो,नवमो तथा अगीयारमो ए त्रण दोष महा

सती साध्वीने न लागे, केम के तेनुं वस्त्रावृत शरीर होय, तेमाटे. पण एटलुं विशेष जे साध्वी प्रतिक्रमणादि क्रिया करे, तो मस्तक उघाडुं राखे, अने एमां वधू दोष जेलीयें, तेवारें चार दोष श्राविकाने न लागे, शेष पंदर दोष लागे. ए सर्व दोष टालीने काउस्सग्ग करवो. तथा श्रीसिद्धांतमां तो सर्व क्रिया साधुआश्रयी कही छे. जे माटे नाभिथी चार अंगुल नीचें चोल पटो पहेरवानुं राखे तथा बे कोणीयें चोलपटो जाली राखवी, कंदोरो बांधे. तथा जमणा हाथमां मुहपत्ती राखे तथा रजोहरण राखे. इत्यादिक अधिकार, सर्व साधु आश्रयी जाणवो अने श्रावकने तो उत्तरासंगें क्रिया करवानुं सिद्धांतमां श्रीवीर भगवानें कह्युं छे. ए कायोत्सर्गने विषे " चंदेसु निम्मलयरा " लगें, लोगस्सनां पच्चीश पद चिंतवियें, अने काउस्सग्ग पूरो थया पछी " नमो अरिहंताणं " कहीने काउस्सग्ग पारीयें ॥ इति ॥ ६ ॥

हवे ए काउस्सग्ग पार्या पछी तो " सिद्धासिद्धं " पर्यंत संपूर्ण लोगस्सनो पाठ प्रगट कहेवो जोइयें, माटे ते चउविसत्थो एटले चोवीश तीर्थंकरनी स्तवना कहे छे.

॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे ॥
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥

अर्थः—अर्हं (अरिहंते के०) अर्हतः एटले कर्मरूप शत्रुने हणवा थकी निर्दोष पणुं प्राप्त थयुं छे जेमने एवा अरिहंतने (कित्तइस्सं के०) कीर्त्तयिष्ये, एटलें नामोच्चारण पूर्वक हुं स्तुति करीश. हवे ते अरिहंत तो रांजादि अवस्थाने विषे द्रव्य अरिहंत पण होय छे, ते माटें भावार्हत्त्व प्रतिपादनने माटें (केवली के०) केवलिनः एटले उत्पन्न थयुं छे केवल ज्ञान जेमने, एवानुं कीर्त्तन करीश. अर्थात् भावार्हत्नुं कीर्त्तन करीश? आ केवल ज्ञानना पदें करीने प्रभुनो ज्ञानातिशय सूचव्यो. हवे ते तीर्थंकरोनी संख्या कहे छे. (चउवीसंपि के०) चतुर्विंशतिमपि एटले ऋषभादिक चोवीश परमेश्वनुं तो नामोच्चारण पूर्वक कीर्त्तन करीश अने अपि शब्दथकी अन्य तीर्थंकरो जे महाविदेहादिक क्षेत्रोने विषे छे, तेनुं पण कीर्त्तन करीश. ते केहवा छे ? तो के, (लोगस्सउज्जोअगरे के०) लोकस्य उद्योतकरान्

एटले जे पंचास्तिकायात्मक लोकने केवल ज्ञान रूप प्रदीपें करीने उद्योतकरणशील छे, एवानुं कीर्त्तन करीश. हवे जे अनुपकारी होय, तेने कोइ सेवे नही माटे एमना उपकारी पणाना प्रदर्शनने अर्थे कहे छे. (धम्मतित्थयरे के०) धर्मतीर्थंकरान् एटले धर्म ते उक्तस्वरूप अने तीर्थ एटले जेनाथी तराय छे ते तीर्थ कहियें, एवुं धर्म प्रधान जे तीर्थ तेने धर्मतीर्थ कहियें, ते धर्मतीर्थ करवानुं शील छे जेमनुं तेमनुं कीर्त्तन करीश. अहीयां तीर्थंकरान् एवो पाठ न कह्यो अने धर्मतीर्थंकरान् एवो पाठ कह्यो छे,ते एटला माटें के नंद्यादि शाक्यादि संबंधी जे द्रव्यतीर्थ अधर्म प्रधान छे, तेनो परिहार करवानुं छे शील जेमनुं तेमने धर्मतीर्थंकर कहियें, तेमनुं हुं कीर्त्तन करीश अर्थात् देव, मनुष्य असुरयुक्त एवी पर्षदा मांहे सर्व भाषा परिणामी एवी वाणीयें करी धर्मतीर्थने प्रवर्त्तावनारा एवा प्रभुउ छे, तेमने हुं स्तवीश. आ पदें करीने प्रभुनो पूजातिशय तथा वचनातिशय सूचव्यो. हवे चोथो अपायापगमातिशय कहे छे. (जिणे के०) जिनान् एटले रागद्वेषादिकने जीतनारा, तेमनुं कीर्त्तन करीश ॥ १ ॥ ए श्लोकमां लघु छवीश, अने गुरु छ, सर्व मली बत्रीश अक्षरो छे.

हवे कीर्त्तन करतो छतो आगली त्रण गाथायें करी चोवीशे
तीर्थंकरोनां नाम कहे छे.

उसभमजियं च वंदे,संभवमभिणंदणं च सुमइं च ॥
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥

अर्थः–(उसभं के०) श्रीरुषभदेव प्रत्यें (अजियंवंदे के०) श्री अजितनाथ प्रत्यें हुं वांडुं छुं. (च के०) वली (संभवं के०) संभवनाथ प्रत्यें, (अभिणंदणं के०) अभिनंदननाथ प्रत्यें, (च के०) वली (सुमइं के०) सुमतिनाथ प्रत्यें, (च के०) वली (पउमप्पहं के०) पद्मप्रभस्वामी प्रत्यें, (सुपासं के०) सुपार्श्वनाथ प्रत्यें, (जिणं के०) कर्म शत्रुने जीतनार एवा, (च के०) वली (चंदप्पहं के०) श्रीचंद्रप्रभ प्रत्यें, (वंदे के०) हुं वांडुं छुं ॥२॥ एमां लघु साडत्रीश,अने गुरु बे,मली उंगणचालीश अक्षरो छे.

सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥

अर्थः-(सुविहिं के०) श्रीसुविधिनाथ प्रत्यें, (च के०) वली एमनुं बीजुं नाम (पुप्फदंतं के०) पुष्पदंत छे ते प्रत्यें, (सीअल के०) श्रीशीतलनाथ प्रत्यें, (सिज्जंस के०) श्रीश्रेयांसनाथ प्रत्यें, (वासुपुज्जं के०) श्रीवासुपूज्य स्वामी ए त्रण तीर्थंकर प्रत्यें, (च के०) वली (विमलं के०) श्रीविमल नाथप्रत्यें, (अणंतं के०) श्रीअनंतनाथ प्रत्यें, (च के०) वली (जिणं के०) कर्मशत्रु प्रत्यें, जीपनार एवा (धम्मं के०) श्रीधर्मनाथ ते प्रत्यें, (च के०) वली (संतिं के०) श्रीशांतिनाथ प्रत्यें, (वंदामि के०) वांडुं छुं ॥ ३ ॥ ए गाथामां बत्रीश लघु, अने चार गुरु, मली छत्रीश अक्षरो छे.

कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥
वंदामि रिठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥

अर्थः-(कुंथुं के०) श्रीकुंथुनाथ प्रत्यें, (अरं के०) श्रीअरनाथ प्रत्यें, (च के०) वली (मल्लिं के०) श्रीमल्लिनाथ प्रत्यें, (वंदे के०) वांडुं छुं. (मुणिसुव्वयं के०) श्रीमुनिसुव्रतस्वामी प्रत्यें, (नमिजिणं के०) श्रीनमिजिन प्रत्यें, (च के०) वली (वंदामि के०) वांडुं छुं. (रिठनेमिं के०) श्री अरिष्ट नेमि प्रत्यें, (पासं के०) श्रीपार्श्वनाथ प्रत्यें, (तह के०) तथा (वद्ध माणं के०) श्रीवर्द्धमानस्वामी प्रत्यें हुं वांडुं छुं. छेल्लो चकार, पादपूरणार्थे छे ॥ ४ ॥ एमां लघु एकत्रीश, अने गुरु चार, मली पांत्रीश अक्षरो छे.

एम त्रण गाथायें करीने श्रीऋषभादिक चोवीश तीर्थंकरने वंदना करी, हवे पूर्वोक्त " उसभ मजियं च " इत्यादि त्रणे गाथाउनो समुदायार्थ तो सुगम छे परंतु पदना अर्थनुं विभंजन कराय छे, ते बे प्रकारें छे, एक सामान्यथकी अने बीजुं विशेषथकी. तेमां सामान्यथकी तो जे अर्थ बधाय तीर्थंकरोमां पामीयें जेम के (उसभं के०) ऋषभं एटले (ऋषति के०) गच्छति अर्थात् जे परमपद प्रत्यें (गच्छति के०) जाय छे,तेने ऋषभ कहियें. तथा उट्टत्वादो एणें करी उत्व करे छे, ते (उसह के०) वृषभः आ रीतें पण अर्थ करियें तो वर्षति एटले सींचे छे, देशना रूपजलें करीने दुःखाग्नियें करी ज्वलित एवा जगतनें ते ऋषभ एवा अर्थ सर्व तीर्थंकरोमां व्याप्त छे. अने जे विशेषार्थ छे ते एकज तीर्थंकरना नामनुं निमित्त छे, ते कहे छे.

१ पहेला श्रीऋषभ देवनें हुं वांडुं छुं. ते भगवानना बेहु ऊरूने विषे वृष

जनुं लांछन हतुं माटे वृषज नाम दीधुं तथा सर्व तीर्थंकरोनी माता प्रथम स्वप्नमां हस्ती देखे, अने एमनी जननीयें प्रथम स्वप्नमां वृषज दीठो,माटे वृषज कहियें.तथा धर्मनी आदिना करनार माटे बीजुं आदिनाथ नाम कहियें. एवी रीतें सर्व तीर्थंकरोनां प्रथम सामान्यार्थे अने बीजा विशेषार्थे नामो जाणवां. एमनी विनीता नगरी, नाजिराजा पिता, श्रीमरुदेवी माता, पांचशें धनुष्यप्रमाण शरीर,चोराशीलक्षपूर्वायु,सुवर्णवर्ण देह,अने वृषज लांछन.

२ बीजा श्रीअजितनाथने हुं वांडुं बुं, अजित एटले परीसहादिकें करी निर्जित तथा ते जगवाननां माता,पिता प्रथम कोइ वारें द्यूतरमण करतां हतां, तेवारें राणी बाजी हारी जतां हतां अने राजानी जीत थती हती, अने जगवान्,गर्ने आव्या पढी जगवाननी माता जीतवा लाग्यां अने राजा हारवा लाग्या. एवो गर्जनो महिमा जाणीने अजितनाथ नाम दीधुं,एमनी अयोध्या नगरी, जितशत्रु राजा पिता, विजया राणी माता, साडाचारशें धनुष्य प्रमाण शरीर,बहोंतेर लक्ष पूर्वायु,सुवर्णवर्ण देह,अने हस्तीनुं लांछन.

३ त्रीजा श्रीसंजवनाथने हुं वांडुं बुं, एटले प्रकर्षे करीने चोत्रीश अतिशयना गुणो जेने विषे बे ते माटे संजव कहियें, अथवा जे, ए प्रजुनी स्तुति करे बे, तेने (सं के०) सुख (जव के०) थाय बे ते माटे संजव कहियें, तथा जगवान् गर्जगत थये थके अधिक सस्य एटले धान्यनो संजव थयो माटे संजव कहियें एटले देशमां दौर्जिक्ष्य हतुं, ते जगवान् गर्ने आव्याथी अणचिंतव्यो मेह वूठो, धान्यना वाहाणो आव्यां, अणचिंतव्यो पृथ्वीमां धान्यनो संजव थयो, तेथी संजव नाम दीधुं. एमनी श्रावस्ती नगरी, जितारिराजा पिता, सेना राणी माता, चारशें धनुष्य प्रमाण शरीर, शाठ लाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण देह, अने अश्वनुं लांछन.

४ चोथा श्रीअजिनंदन प्रजुने हुं वांडुं बुं. एटले (च के०) वली देवेंद्रादिकोयें जेमनुं अजिनंदन थाय बे,तेथी अजिनंदन तथा प्रजु गर्ने आव्या तिहांथी आरंजीने प्रतिक्षण शक्राजिनंदन बे, एटले गर्ने आव्या पढी इंद्र माहाराज आवी स्तवी स्तवीने जता, अर्थात् इंद्रे अजिनंद्या, प्रशंस्या ते माटे अजिनंदन नाम, माता पितायें दीधुं, एमनी अयोध्या नगरी, संवरराजा पिता, सिद्धार्था राणी माता, साडात्रणशें धनुष्य प्रमाण शरीर, पच्चास लाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण देह, अने वानरनुं लांछन.

५ पांचमा श्रीसुमतिनाथने हुं वांडुं बुं. (च के०) वली शोजन ले मति जेमनी तथा प्रज्जु गर्जे आव्याथी तेमनी जननीनी सुनिश्चित जली मति थइ ले,ते आवी रीतें केः– एक वणिकनी बे स्त्रीयो हतीयो,तेमां न्हानीने पुत्र हतो अने महोटी वंध्या हती, अने ते ग्रोकरानुं प्रतिपालन बन्ने मा ताउ करती हती, एम करतां ते वणिकें अकस्मात् काल कस्यो, तेवारें महो टी स्त्री धननी लालचें कहेवा लागी जे पुत्र महारो ले, अने जेनो पुत्र, तेनुं धन थाय. एवी चाल ले, माटे धन पण महारुं ले, तेमज न्हानीनो तो दी करो हतोज तेथी तेणें कह्युं के पुत्र महारो ले अने धन पण महारुं ले. ए रीतें बन्ने शोक्योनी वढवाड थइ, ते वढती वढती दरबारमां गइ, त्यां राजाथी पण चूकादो न थयो, तेवारें गर्जना माहात्म्यथकी राणीने चूका दो करवानी जली बुद्धि उत्पन्न थइ, तेथी युक्ति करीने राणीयें कह्युं जे, बन्ने शोक्यो मलीने धन अर्द्धो अर्द्ध वेंची ल्यो, तथा ग्रोकराना पण बे जाग करी अर्द्धो अर्द्ध वेंची ल्यो,ते सांजली न्हानी स्त्री जे सगी माता हती, ते बोली के महारे इव्य जोइतुं नथी अने ग्रोकराना कांइ बे जाग थाय नही, महारे पुत्रनो तथा धननो खप नथी, एनेज सोंपो, एनो ले ते महा रोज ले, एवुं सांजली राणी बोली के,ए पुत्र न्हानी स्त्रीनो ले, केम के पुत्रनुं मृत्यु थाय त्यां सुधी पण महोटी स्त्रीथी ना कहेवाणी नही अने न्हानी स्त्रीनो पुत्र ले तेथी तेणें मारवानी मनाइ करी, माटे एने पुत्र अने धन बेहु स्वाधीन करो अने महोटी स्त्रीने घरथी बाहेर काढो. एवो न्याय क रवानी बुद्धि उपनी माटे सुमति नाम दीधुं, एमनी अयोध्या नगरी, मेघ रथ राजा पिता, सुमंगला राणी माता, त्रणशें धनुष्य प्रमाण शरीर, चा लीश लाख पूर्वनुं आयु, सुवर्णवर्ण देह, अने क्रौंचनुं लांबन.

६ ग्रहा श्रीपद्मप्रजने हुं वांडुं बुं. पद्मप्रज एटले निःकंपताने अंगीकार करीने पद्मना समूह सरखी ले, प्रजा एटले कांति जेमनी तेथी पद्मप्रज कहियें, तथा गर्जे आव्या पछी एमनी माताने पद्म एटले कमलनी शय्या यें शयन करवानो दोहोलो उपन्यो, ते देवतायें पूर्ण कस्यो, तेना महिमाथी पद्मप्रज नाम दीधुं. तथा पद्म सरखुं रक्तवर्णे जगवंतनुं शरीर हतुं माटे प द्मप्रज कहियें. एमनी कोशंबी नगरी, धरराजा पिता, सुसीमा राणी माता, अढीशें धनुष्य शरीर, त्रीश लाख पूर्वायु,सुवर्णवर्ण देह,अने पद्मनुं लांबन.

७ सातमा श्रीसुपार्श्वनाथने हुं वांडुं बुं. सुपार्श्व एटले रूडां ले पार्श्व जेमने तथा जगवान् गर्जगत थये लते तेमनी जननी पण सुपार्श्वा थइ. एटले राणीना बेहु पासां रोगें करी कोढीयां हतां, ते सुवर्णवर्णें घणा सुकुमाल थयां, माटे सुपार्श्वनाम दीधुं, एमनी वाराणसी नगरी, सुप्रतिष्ठ राजा पिता, पृथिवीराणी माता, बशें धनुष्य प्रमाण शरीर, वीश लाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण देह, अने स्वस्तिकनुं लांबन.

७ आठमा श्रीचंद्रप्रजने हुं वांडुं बुं. वली चंद्रना सरखी जेनी प्रजा ले, चंद्रसमान जेनो उज्ज्वल वर्ण ले, तथा परमेश्वर गर्जगत थये लते एमनी माताने चंद्रपान करवानो दोहलो उपन्यो, ते प्रधानें बुद्धियें करी पूर्ण कर्यो, एवो प्रजाव जाणी चंद्रप्रज एवुं नाम दीधुं. एमनी चंद्रपुरी नगरी, महसेन राजा पिता, लक्ष्मणा राणी माता, एकशो पचाश धनुष्य प्रमाण शरीर, दश लाख पूर्व आयु, श्वेतवर्ण देह, अने चंद्रनुं लांबन.

ए नवमा श्रीसुविधि नाथने हुं वांडुं बुं. एटले शोजन ले विधि जेनो अर्थात् सर्वस्थलें ले कौशल्य जेमनुं, ते सुविधि कहियें, तथा जगवान् गर्जगत लतेज तेमनां माता, पिता, जला विधियें करी धर्ममां प्रवृत्त्यां. एवो गर्जनो प्रजाव जाणी सुविधिनाथ नाम दीधुं. वली मचकुंदना फूलनी कली सरखा उज्ज्वल प्रजुना दांत हता, माटे बीजुं पुष्पदंत एवुं नाम दीधुं. एमनी काकंदी नगरी, सुग्रीवराजा पिता, रामा राणी माता, एकशो धनुष्य प्रमाण शरीर, बे लाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण देह, अने मगरमबनुं लांबन.

१० दशमा श्रीशीतलनाथने हुं वांडुं बुं. समस्त जीवोना संतापने हरण करे ले, माटे शीतलनाथ तथा जगवानना पिताने पित्तदाहरोग हतो, ते जगवान् गर्जे आव्या पबी राजाना शरीर उपर राणीयें हाथ फेरव्यो, तेथी रोग उपशांत थयो, शरीरें शीतलता थइ ते माटे शीतलनाथ नाम दीधुं. एमनुं जद्दिलपुर नगर, दृढरथ राजा पिता, नंदा राणी माता, नेवुं धनुष्य प्रमाण शरीर, एक लाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण देह, अने श्रीवत्सनुं लांबन.

११ अगीयारमा श्रीश्रेयांसजिनने हुं वांडुं बुं. सर्वजगतने श्रेय एटले हितना करनार माटे तथा सकल जगतनें अत्यंत प्रशंसा करवा पणुं ले जेमनुं ते माटे श्रेयांस कहियें, ते पृषोदरादिकनी पेठें सिद्ध थाय ले. तथा राजाना घरमां परंपरागत देव अधिष्ठित शय्यानी पूजा थती हती ते

शय्यायें जे बेसे, अथवा सुवे, तेने उपद्रव उपजे, ते भगवंत गर्भे आव्या पछी माताने ते शय्या उपर सूवानो दोहोलो उपन्यो,तेवारें विचार्यु जे देव गुरुनी प्रतिमानी पूजा थाय, परंतु शय्यानी पूजा तो क्यांहि सांभली नथी, एम चिंतवी शय्यानी रक्षा करनारें मनाइ कस्या छतां पण प्रभुनी माता, ते शय्या उपर सुतां, तेवारें गर्भना प्रभावथी अधिष्ठितदेव, शय्या मूकी जतो रह्यो. पछी राजा प्रमुखें ते शय्या, वपराशमां लीधी,ए रीतें माताने श्रेय थयुं माटे श्रेयांस नाम दीधुं. एमनुं सिंहपुर नगर, विष्णुराजा पिता, विष्णा राणी माता, एंशी धनुष्य प्रमाण शरीर, चोराशी लाख वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, अने खड्गीनुं लांछन.

१२ बारमा श्रीवासुपूज्य स्वामीने हुं वांदुं छुं. वसु जे देवता विशेष ते मने पूजवा योग्य माटें वासुपूज्य कहियें, अथवा भगवंत गर्भे आव्या पछी वसु जे हिरण्य तेणें करी इंद्र महाराज आवी राजकुलने पूजता हता माटे वासुपूज्य, अथवा वसुपूज्य राजाना पुत्र माटे वासुपूज्य नाम दीधुं छे, एमनी चंपा नगरी, वसुपूज्य राजा पिता, जया राणी माता, सित्तेर धनुष्य प्रमाण शरीर बहोंतेर लाख वर्षायु,रक्तवर्ण देह,अने महिषनुं लांछन.

१३ तेरमा श्रीविमलनाथने हुं वांदुं छुं. जेने निर्मलज्ञादिक छे ते माटें विमल कहियें अथवा कर्म मलरहित माटें विमल कहियें, तथा प्रभु गर्भे आव्याथी तेमना नगरमां कोइ स्त्री भर्त्तार, देहरे आवी उतस्यां, तेमांथी स्त्री पाणी पीवाने अन्यस्थानकें गइ एटलामां, एक व्यंतरी देवी त्यां रहेती हती, तेणें ते पुरुषनुं सुंदर रूप दीठुं,तेथी तेने कामक्रीडा करवानी अभि लाषा थइ, त्यारें तेनी स्त्रीना जेवुं पोतानुं रूप विकूर्वि, ते व्यंतरी तेनी पांसें आवी बेठी, एटलामां पोतानी खरी स्त्री पण आवी, तेवारें बन्ने स्त्रीने समान देखीने पुरुषें कह्युं जे एमां महारी स्त्री कोण छे? तेवारें पहेलीयें कह्युं के हुं ताहारी स्त्री छुं, अने बीजीयें कह्युं के हुं ताहारी स्त्री छुं, एम वढतां वढतां सर्व राजा पासें आव्यां, तेवारें राजा तथा प्रधान पण बेहु स्त्रीयोने सरखा रूपवाली देखी निवेडो करी शक्या नही, परंतु राणीयें प हेला पुरुषने एक बाजू उभो राख्यो अने बेहु स्त्रीयोने तेनाथी केटलेक दूर उभी राखीने बोली के जे स्त्री इहांथीज पोताना सत्य वचनना प्रभा वथी भर्त्तारनें स्पर्श करे, तेनो ए भरतार जाणवो,ते सांभली व्यंतरीयें देव

शक्तिने प्रभावें पोतानो हाथ लांबो करी भर्त्तारने स्पर्श कर्यो, तेवोज राणीयें तेनो हाथ पकडीने कह्युं के तुं तो व्यंतरी छे? माटे ताहारे ठेकाणे जती रहे? एवा जूदा जूदा चार न्याय करवाथी राणी विमलमती वाली कहेवाणी तथा प्रभु गर्भे आव्याथी मातानुं शरीर पण निर्मल थयुं, एवो गर्भनो प्रभाव जाणी विमलनाथ नाम दीधुं, एमनुं कांपिलपुर नगर, कृत वर्माराजा पिता, श्यामा राणी माता, साठ धनुष्य प्रमाण शरीर, साठ लाख वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, अने सुकरनुं लांछन.

१४ चौदमा श्रीअनंतनाथ प्रभुने हुं वांडुं छुं. कर्मना अनंत अंश जेणें जींत्या छे अथवा जेने ज्ञान, दर्शन पण अनंतुं छे माटे अनंतनाम सार्थ क छे. तथा गाममां आगल ताप आवतो हतो,ते प्रभु गर्भे आव्या पछी, एमनी मातायें अनंत गांठना दोरा करी बांध्या तेथी ताप निवृत्त थयो. तथा स्वप्नमध्यें जेनो अंत नही एवी महोटी रत्ननी माला दीठी, एवो गर्भनो प्रभाव जाणी अनंतनाथ नाम दीधुं, एमनी अयोध्या नगरी, सिंह सेन राजा पिता, सुयशा राणी माता, पचास धनुष्य प्रमाण शरीर, त्रीश लाख वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, अने सिंचाणानुं लांछन.

१५ पंनरमा श्रीधर्मनाथ जिनने हुं वांडुं छुं, दुर्गतियें पडता प्राणीने धरी राखे, माटे धर्मनाथ तथा प्रभु गर्भमां आव्याथी प्रभुनां मातापिता रूडी रीतें दानादि धर्मपरायण थयां,एवो गर्भनो महिमा जाणी धर्मनाथ ना म दीधुं, एमनुं रत्नपुर नगर, भानुराजा पिता, सुव्रता राणी माता, पिस्ता लीश धनुष्य प्रमाण शरीर,दश लाख वर्षायु,सुवर्णवर्ण देह,अने वज्रनुं लांछन.

१६ शोलमा श्रीशांतिनाथने हुं वांडुं छुं. स्वयमेव शांतिना करनार अथ वा शांतिना योगथी अथवा शांतिरूप होवाथी शांतिनाथ तथा ते देशमां म रकीनो उपद्रव घणो हतो, ते प्रभु गर्भे आव्या पछी राणीयें अमृतना छां टा नाख्या, तेथी मरकीनी शांति थइ. तेना प्रभावथी शांतिनाथ नाम दीधुं, एमनुं गजपुर नगर, विश्वसेन राजा पिता, अचिरा राणी माता, चालीश धनुष्य प्रमाण शरीर, एक लाख वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह,अने मृगनुं लांछन.

१७ सत्तरमा श्रीकुंथुनाथने हुं वांडुं छुं. कु केहतां पृथिवी तेने विषे स्थि त माटे कुंथु तथा भगवान् गर्भमां आवे छते, तेमनी मातायें रत्नमय कुंथु उनो राशि पृथ्वीमां दीठो अथवा परमेश्वर जनम्या पछी कुंथुआ प्रमुख

न्हाना महोटा जीवोनी जयणा देशमां प्रवृत्ती, माटे कुंथुनाथ नाम दीधुं, एमनुं हस्तिना पुर नगर, शूरराजा पिता, श्रीराणी माता, पांत्रीश धनुष्य प्रमाण शरीर, पंचाणुं हजार वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, अने ढागनुं लांढन.

१८ अढारमा श्रीअरनाथने हुं वांडुं बुं. अरिहंत जेवा सर्वोत्तम पुरुष जे कुलने विषे उपजे, अने जेनाथी कुलनी वृद्धि थाय, ते पुरुषने वृद्ध पुरुषो अर एवुं नाम कहे बे. तथा जगवान् गर्जमां आवे थके तेमनी मातायें स्वप्नमां सर्व रत्नमय अर एटले आरो तथा शुज दीगे माटे अरनाथ नाम दीधुं, एमनुं गजपुर नगर, सुदर्शनराजा पिता, देवी राणी माता, त्रीश धनुष्य प्रमाण शरीर, चोराशी हजार वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, अने नंदावर्त्तनुं लांढन.

१९ उंगणीशमा श्रीमल्लिनाथने हुं वांडुं बुं. परिसहरूप मल्ल तेनो जय करवाथकी मल्लि कहियें तथा जगवान् गर्जें आव्या पढी माताने एक ऋतुमां सर्व ऋतुनां सुरजि फूलनी शय्यायें सुवानो दोहलो उपन्यो, ते देवतायें पूर्ण कस्यो, माटे मल्लिनाथ नाम दीधुं. एमनी मिथिला नगरी, कुंज राजा पिता, प्रजावती राणी माता, पच्चीश धनुष्य प्रमाण शरीर, पच्चावन हजार वर्षायु, नीलवर्ण देह, अने कुंजनुं लांढन.

२०वीशमा श्रीमुनिसुव्रत स्वामिने हुं वांडुं बुं. जे जगतनी त्रिकालाव स्थाने जाणे, ते मुनि कहियें. वली जेने शोजन व्रत बे तेने सुव्रत कहियें तथा जगवान् गर्जें आव्या पढी एमनी जननीयें मुनि सरखां शोजन श्रावकनां व्रत पाल्यां. एवो महिमा जाणी मुनिसुव्रत नाम दीधुं, एमनुं राजगृह नगर, सुमित्रराजा पिता, पद्मा राणी माता, वीश धनुष्य प्रमाण शरीर, त्रीश हजार वर्षायु, कृष्णवर्ण देह, अने काढबानुं लांढन.

२१ एकवीशमा श्रीनमिजिनेश्वरने हुं वांडुं बुं. परिसह उपसर्गादिकने जेणें नमाव्या बे माटे नमि कहियें, तथा प्रजु गर्जें आव्या पढी सीमाडिया राजा जगवंतना पिताना शत्रु हता ते चडी आव्या,. गामने विंटी लीधुं, राजा आकुल व्याकुल थयो, निमित्तियाने पूढयुं, तेवारें निमित्तियायें कह्युं के राणी सगर्जा बे तेने गढने कोशीशें चढावी वैरीयोने दर्शन करावो, राजायें तेमज राणीने किल्ला उपर चढावीने शत्रुउने वांकी नजरें जोवराव्या,तेवारें वैरीयोथी राणीनुं तेज खमायुं नही,तेथी सर्व वैरीयो मान मूकी जगवंतनी माताने नमस्कार करीने कहेवा लाग्या जे अमोने सौम्यदृष्टियें

करी जूउं. राणीयें सौम्यदृष्टियें जोइ माथे हाथ मूक्यो,पछी सर्व राजाउ राणी ने पगे लागी आज्ञा मागी पोत पोताने नगरें गया, ए रीतें सर्वराजा नम्या, एवो गर्जनो प्रजाव जाणी नमिनाथ नाम दीधुं. एमनी मिथिला नगरी, विजयराजा पिता, वप्रा राणी माता, पन्नर धनुष्य प्रमाण शरीर, दश हजार वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, अने नीलोत्पलनुं लांछन.

२२ बावीशमा श्रीअरिष्टनेमि प्रजुने हुं वांडुं बुं. रिष्ट एटले पाप तेना नाशने विषे चक्रधारी सरखा हता माटे अरिष्टनेमि, तथा प्रजु गर्जें आव्या पछी प्रजुनी मातायें स्वप्नमां रिष्ट रत्ननी रेल दीठी. वली आकाशने विषे अरिष्ट रत्नमय नेमि एटले चक्रधारा उबलती स्वप्नमां दीठी, माटे अरिष्टनेमि नाम दीधुं, बीजुं नाम श्रीनेमिनाथ छे. एमनुं सौरीपुर नगर, समुद्रविजय राजा पिता, शिवादेवी राणी माता, दश धनुष्य प्रमाण शरीर, एक हजार वर्षायु, श्यामवर्ण देह अने शंखनुं लांछन.

२३ त्रेवीशमा श्रीपार्श्वनाथने हुं वांडुं बुं. जे समस्त जावोने स्पृशति एटले जाणे छे माटें पार्श्वनाथ तथा एमनो वैयावृत्त्यकर जे पार्श्वनामा यक्ष तेना नाथ माटे पार्श्वनाथ अथवा प्रजु गर्जें आव्या पछी अंधारी रात्रें पोतानी पासें सर्प जतो (पासइ के०) दीठो तें सर्पना जवाना मार्गनी वचमां राजानो हाथ देखी राणीयें उंचो कीधो, तेथी राजा जागी उठ्यो ने बोल्यो के शा माटे हाथ उंचो कीधो? राणीयें कह्युं के में सर्प जतो दीठो माटे तमारो हाथ उंचो कीधो छे. राजा बोल्यो,तमें जूठुं बोलो छो. पछी सेवकने तेडी दीपक मंगावीनें जोयुं, तो सर्प दीठो, तेवारें विस्मय पामी राजायें विचार्युं जे में न दीठो, अनें राणीयें दीठो, ए निश्चें गर्जनो प्रजाव छे, एम जाणी श्री पार्श्वनाथ नाम दीधुं. एमनी वाराणसी नगरी, अश्वसेन राजा पिता, वामा राणी माता,नव हाथनुं शरीर,एकशो वर्षायु,नीलवर्ण देह,अने सर्पनुं लांछन.

२४ चोवीशमा श्रीवर्द्धमान स्वामीने हुं वांडुं बुं. जन्मथकी मांमिनेंज्ञानादिकें वृद्धि पाम्या तेथी वर्द्धमान तथा प्रजु गर्जे आव्या पछी माता, पिता, धनधान्यादिकना जंमारें तथा देश, नगर, द्विपद, चतुष्पद, इत्यादि सर्व प्रकारनी रुद्धियें करी वृद्धि पाम्यां. तथा सर्व राजाउ पण तेनी आज्ञामां वर्त्तवा लाग्या. एवो गर्जनो प्रजाव जाणी वर्द्धमान नाम दीधुं तथा जगवंतें जन्मतांज मेरु पर्वत मावा पगने अंगुठे कंपाव्यो, वली देवता साथें आमल

क्रीडा करतां नगवंत आगल देवता हार्यो, नाशीने इंद्र पासें गयो, नगवंत जींत्या. एम नगवंतनुं अनंत बल जाणीने श्रीमहावीर एवुं बीजुं नाम इंद्र माहाराजें दीधुं. एमनुं क्षत्रियकुंम नगर, सिद्धार्थ राजा पिता, त्रिशला राणी माता, सात हाथनुं शरीर, बहोंतेर वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, सिंहनुं लांछन.

ए रीतें कीर्तन करीने हवे चित्तनी शुद्धिने माटे प्रणिधान कहे छे.

एवं मए अनिथुआ, विहुयरयमला पहीण जरमर णा ॥ चउवीसंपि जिणवरा, तिबयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥

अर्थः—(एवं के०) ए प्रकारें (मए के०) मया एटले महारे जीवें जे (अनि थुआ के०) अनिस्तुता एटले नामपूर्वक स्तव्या. ते चोवीशे परमेश्वर केहवा छे? तो के (विहुय के०) विधुत एटले टाल्या छे (रयमला के०) कर्म रूप रज अनें कर्मरूप मल जेणें एटले जे कर्म, इरियावहि क्रियायें करी बंधाय अथवा नवां बंधातां जे ढीलां कर्म तेने रज कहियें अने जे पूर्वे बंध चिरकालनुं संचित निकाचित गाढ कर्म अथवा सांपरायिक क्रियायें करी बंधाय तेने मल कहियें, ए बेहु प्रकारना कर्मने जेणें टाल्यां छे. वली केहवा छे? तो के (पहीण के०) प्रक्षीण एटले अतिशयें करी क्षय कर्यां छे (जरमरणा के०) जरा अने मरण जेणें एटले जे समय समय आयुष्य घटे, तेने जरा कहियें अने सर्वथा आयु घटीने प्राणनो वियोग थाय, तेने मरण कहियें. एवा जरा अने मरण, ए बेहु जेणें क्षय कर्यां छे एवा जे (चउवीसंपि के०) चतुर्विंशमपि एटले पूर्वोक्त ए चोवीशे जिनवर सांप्रत कालें थया अने अपि शब्दथकी बीजा पण तीर्थंकर पूर्वोक्त लेवा, (जिणवरा के०) श्रुतधरादिक जिनोथकी प्रधान श्रेष्ठ एवा जिनवर (तिबयरा के०) तीर्थंकरा एटले तीर्थंकरो ते (मे के०) महारी उपर (पसीयंतु के०) प्रसीदंतु एटले प्रसन्न थाउ, अर्थात् प्रसाद (कृपा) करवाने तत्पर थाउ.

यद्यपि श्रीवीतराग छे, तेथी स्तुति करनार उपर प्रसन्न थता नथी, ते मज निंदा करनार उपर अप्रसन्न पण थता नथी तथापि स्तुति करनारने स्तुतिनुं फल मले छे, अने निंदा करनारने निंदानुं फल मले छे. जेम चिंतामणि मंत्रादिकोयें करी शुजनी वांछा करनारने शुजफल

मले छे अने अशुजनी वांछा करनारने अशुज फल मले छे. यद्यपि जे न थीज प्रसन्न थता, ते शी रीतें प्रसन्न थशे? माटे वृथा प्रलापें करी जक्तिनो अतिशय थतो नथी? तथापि एम कहे छते पण दोष नथी,कारण के क्षीण क्लेश छे ते जेम प्रसन्न थता नथी तेम तेमनी स्तुति पण वृथा जती नथी कारण के तेने सर्व जावनी विशुद्धि छे ॥ ५ ॥ ए गाथामां लघु चालीश अने गुरु एक, सर्व मली एकतालीश अक्षरो छे.

किंत्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥
आरुग्ग बोहिलाजं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥

अर्थः-(कित्तिय के०) कीर्त्तित छे, एटले नामविशेषें करी जेने इंद्रादिक कीर्त्ते छे स्तवे छे. (वंदिय के०) जे वंदित छे एटले इंद्रादिक जेने विशुद्ध मन, वचन अने कायायें करी वांदे छे. पंचांग प्रणाम करे छे. (महिया के०) जे महित छे एटले इंद्रादिक जेनें प्रधान पुष्पादिकें करी अर्चे छे, पूजे छे, एवा (जे के०) जे तीर्थंकर (ए के०) ए सुतीर्थ ज्ञान दृष्टिवंत ते प्रत्यक्ष (लोगस्सउत्तमा के०) लोकने विषे उत्तम प्रधान एवा (सिद्धा के०) श्री सिद्ध जगवंत थया, एटले निष्ठितार्थ थया, एवा हे उत्तम सिद्ध जगवंत! तमें मुजने (आरुग्ग के०) द्रव्य आरोग्यता तथा जाव आरोग्यता, त्यां द्रव्य आरोग्यता ते रोगरहित पणुं अने जाव आरोग्यता ते सिद्धपणुं जाणवुं. ते सिद्धपणुं तो (बोहिलाजं के०) श्री जिन धर्मनी प्राप्तिनो लाज थाय तेवारें पमाय छे माटे श्री जिनधर्मनी प्राप्तिनो लाज थवाने अर्थे (उत्तमं के०) उत्कृष्ट अत्यंत उंची एवी (समाहिवरं के०) प्रधान समाधि ते ज्ञानादिक रत्नत्रय तेने विषे एकता परम स्थिरता ते प्रत्यें (दिंतु के०) द्यो,आपो. एटले समाधि जे छे,ते अनेक प्रकारें तारतम्यतायें अधिक न्यून छे माटे अत्युत्कृष्ट समाधि द्यो ॥६॥ आ गाथामध्यें लघु त्रीश, अने गुरु छ, सर्व मली छत्रीश अक्षरो छे.

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागर वरगंजीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ इति ॥

अर्थः- (चंदेसु के०) चंद्रसमुदायथकी (निम्मलयरा के०) निर्मल

तरा एटले अत्यंत निर्मल (आइच्चेसु के०) आदित्य एटले सूर्य समुदाय थकी पण (अहियं के०) अधिक (पयासयरा के०) प्रकाशना करनार अने (सागरवर के०) प्रधान छेलो स्वयंभूरमण नामा समुद्र, तेनी पेरें (गंभीरा के०) गुणें करी गंभीर छे. एवा जे (सिद्धा के०) अष्टकर्मरहित सिद्ध, ते (सिद्धिं के०) सिद्धि एटले मुक्ति ते (मम के०) मुजने (दिसंतु के०) द्यो, आपो ॥ ७ ॥ आ गाथामां लघु तेत्रीश, अने गुरु चार, सर्व मली साड त्रीश अक्षरो छे, अने ए चोविसछाने विषे प्रथमनो एक श्लोक अने पछ वाडेनी छ गाथा मली सातेमां पद अठावीश छे, तेमां लघु अक्षर बशें उगणत्रीश, तथा गुरु अक्षर सत्तावीश, मली बशें ने छपन्न अक्षर छे. इति चतुर्विंशति स्तव. ॥ एम प्रगट लोगस्स कहीने पछी उभा थकाज इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् गमणागमण आलोउंजी. एम कही गमणागम णनो पाठ कहीयें, ते लखीयें छैयें.

॥ अथ गमणागमण ॥

मारगने विषे जातां आवतां, पृथिवीकाय, अप्पकाय, तेउ काय, वाउकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय, नीलफूल, मा टी, पाणी, कण, कपाशीया, स्त्री आदिकतणो संघट्ट हूउ होय, ते सवि हूं, मन, वचन, कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥

ए रीतें गमणागमणनो पाठ कहीने पछी इछाकारेण संदिस्सह भगवन्! सामायिक ठावा त्रण नवकार गणुंजी. एम कही हेठा बेसीने त्रण नवका र गणवा ते गणीने पछी उभा थइने इछाकारेण संदिस्सह भगवन् ! जीव राशि खमावुंजी. एम कही जीवराशिनो पाठ कहीयें, ते लखीयें छैयें.

॥ अथ जीवराशि ॥

॥ सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्पकाय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पति काय, चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय, बे लाख बेइंद्री, बे लाख तेइंद्री, बे लाख चउरिंद्री, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्री, चउद लाख मनुष्यना

नेद. एवंकारे चउद राज चोराशी लक्ष, जीवायोनिमांहे, महारे जीवें जिको कोइ जीव दूहव्यो होय, विराध्यो होय, ते सवि, हुं, मन,वचन, कायायें करि मिछा मि डुक्कडं ॥ इति ॥

अर्थः—पृथिव्यादिक पांच जातिना स्थावर जीवो छे तेमां पृथ्वीकायिया जीवोने उपजवानी सात लाख योनियो छे,तेवीज रीतें अप्पकाय ते पाणीना जीव अने तेउकाय ते अग्निकायिया जीव तथा वायुकाय जे वायराना जीव ते प्रत्येक जातिना जीवने उपजवानी सात सात लाख योनि छे. ए रीतें चार जातिना जीवोने उपजवानी सर्व मली अठावीश लाख योनि थइ. अने पांचमी जाति वनस्पति कायनी छे, तेमां प्रत्येक वनस्पतिकायिया जीवोने उपजवानी योनि दश लाख छे अने साधारण वनस्पति कायने उपजवानी योनि चौद लाख छे, ए रीतें सर्व मली पांचे जातिना स्थावर जीवो ते एकेंद्रिय कहेवाय छे, तेमने उपजवानी योनि बावन लाख थइ अने बेंद्रिय, तेंद्रिय तथा चौरिंद्रिय ए त्रण जातिना जीवो विकलेंद्रिय कहेवाय छे. एनी एकेकी जातिने उपजवानी योनि बे बे लाख छे, तेवारें त्रण जातिनी मली छ लाख योनि थइ. तथा पंचेंद्रिय जीवो देवता, नारकी, तिर्यंच अने मनुष्य मली चार प्रकारना छे तेमां देवताने उपजवानी चार लाख योनि छे अने नारकी जीवोने उपजवानी पण चार लाख योनि छे तेमज पंचेंद्रिय तिर्यंचने उपजवानी पण चार लाख योनि छे तथा मनुष्यने उपजवानी चौद लाख योनि छे एवंकारें चौदराजमां जीवोने उपजवानी चोराशी लाख योनियो छे, ते मांहेला जे कोइ जीवने महारे जीवें डुहव्यो होय,विराध्यो होय,ते संबंधी जे डुष्कृत एटले पाप मने लाग्युं होय, ते सर्व पाप प्रत्यें मन वचन कायायें करी हुं मिथ्या करुंछुं ॥

ए रीतें जीवराशि कहीने पछी इछाकारेण संदिस्सह जगवन्!अढार पापस्थानक आलोउंजी.एम कही अढार पापस्थानक आलोइयें,तेनो पाठ लखीयें छैयें.

॥ अथ अढार पाप स्थानक ॥

पहिले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह, छठे क्रोध, सातमे मान,

आठमे माया, नवमे लोभ, दशमे राग, अगियारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे चाडी, पन्नरमे रति अरति, शोलमे परपरिवाद, सत्तरमे माया मृषावाद, अढारमे मिथ्यात्वशल्य. ए अढारे पापस्थानकमांहे जे कोई पापस्थानक, म्हारे जीवें सेव्युं होय, सेवराव्युं होय, सेवता प्रत्यें अनुमोद्युं होय, ते सवि हुं मनें, वचनें, कायायें करी मिच्छामि डुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ ३० ॥

अर्थः—परजीवना प्राणनो नाश चिंतववो ते प्रथम प्राणातिपात, जूठुं बोलवाना परिणाम, ते बीजो मृषावाद, पारकी वस्तु धणीना दीधा विना चोरी लेवानी रुचि, ते त्रीजुं अदत्तादान, विषयसुखनी वांछारूप परिणाम, ते चोथुं मैथुन, नवप्रकारें बाह्य अने चौद प्रकारें अभ्यंतर परिग्रहनी वांछा, ते पांचमो परिग्रह, कोइनी उपर आकरा तीव्र परिणामें क्रोध करवो, ते छठो क्रोध, आठ प्रकारें मद करवो, ते सातमुं मान, कपट सहित लोकने देखाडवा रूप धर्म करणी करवी, ते आठमी माया, धन, शरीर, कुटुंब, परिवार रूप संपदाने एकठी करवानी तथा राखवानी घणी वांछा, ते नवमो लोभ, पौज्ञलिक परवस्तु उपर राग धरवो, ते दशमो राग, पोतानें अणगमती वस्तु उपर अरुचिभाव, ते अगीयारमो द्वेष, कोइ पण कारणें क्लेश करवानी रुचि, ते बारमो कलह, परजीवने अणदीठुं अण सांभल्युं आल देवुं, ते तेरमुं अभ्याख्यान, पारकी चाडी करवी, ते चौदमुं पैशुन्य, सुख दुःख आवे हर्ष शोक धरवो, ते पंदरमुं रति अरतिनामा पापस्थानक कहियें. गुणी किंवा निर्गुणी जीवनी निंदा करवी, ते शोलमो परपरिवाद कहियें. अंतरमां बीजी वात होय अने बाहिर मुखथकी मीठुं बोलवुं, इत्यादिक अनेक प्रकारें छल करीने लोकोने ठगवाना परिणाम, ते सत्तरमो माया मृषावाद. पांच प्रकारें मिथ्यात्व सेववारूप परिणाम, ते अढारमुं मिथ्यात्व शल्य नामा पापस्थानक जाणवुं. ए अढार प्रकारें जे जीवने चित्तमां पाप रूपभाव उत्पन्न थाय, तेने भावपाप कहियें. अने ते भावनी चिकाशें करी जे जीवने सत्तायें कर्मनां दलीयां लागे, तेने द्रव्यपाप कहियें, ते द्रव्यपा

पनां दलियां सत्तायें बंधाणां, ते आगल जावपणे तिर्यंच नारकीना जव पामीनें व्याशी प्रकारें जोगवाय. ए अढारे पापना स्थानक मांहेलुं जे कोइ पाप स्थानक महारे जीवें सेव्युं होय अनेरा पासें सेवराव्युं होय अन्य कोइ सेवतो होय तेने अनुमोद्युं होय ते सर्व दुष्कृत एटले पाप तेने हुं महारा मन,वचन अने कायायें करी मिथ्या एटले फोक करुं बुं ॥ इति ॥

ए रीतें अढारे पाप स्थानकनी आलोचना लइ शुद्ध थइनें पढी गुरुनी स्थापना निमित्तें गुरुगुण स्तववा सारुं इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् गुरु स्थापना करुंजी, एम कहीने पंचिंदियनो पाठ कहियें, ते लखीयें ढेयें.

॥ अथ पंचिंदिय ॥

॥ पंचिंदिअ संवरणो, तह नव विह बंजचेर गुत्ति
धरो ॥ चउविह कसाय मुक्को, इअ अठारस गुणे
हिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंचमहव्वय जुत्तो, पंचविहायार
पालण समड्डो ॥ पंचसमिउ तिगुतो, डत्तीस गुणे
हिं गुरु मज्झ ॥ २ ॥ इति ॥ ए प्रथम खमासमण ॥

अर्थः-(पंचिंदिअ के०) पांचेंड्रियना शब्दादिक त्रेवीश विषय अने बशें बावन विकार प्रत्यें (संवरणो के०) संवरणहार एटले रोकनार, (तह के०) तथा (नवविह के०) नवविध एटले नव प्रकारें (बंजचेर के०) ब्रह्मचर्य एटले शीलव्रतनी (गुत्तिधरो के०) गुप्तिना धरनार, एटले शीलनी नव वाडना पालनार, (चउविह के०) चतुर्विध एटले चार प्रकारना (कसाय के०) क्रोधादिक कषायथकी (मुक्को के०) मुक्त बे, एटले मूकाणा बे (इअ के०) ए त्रण,गुरुनां विशेषणमांहे रह्या जे (अठारसगुणेहिं के०) अढारे गुण, तेणें करी (संजुत्तो के०) संयुत एटले सहित ॥ १ ॥ (पंचमहव्वयजुत्तो के०) प्राणातिपातादिक पंचाश्रवना त्रिविध त्रिविध त्यागरूप पांच महाव्रतें करी युक्त एटले सहित, (पंचविहायारपालणसमड्डो के०) ज्ञानादिक पंचविध आचार पालवाने समर्थ, सावधान (पंचसमिउ के०) ईर्यादिक पांच समितियें करी समित एटले युक्त, (तिगुतो के०) मनोगुप्त्यादिक त्रण गुप्तियें करी गुप्त, एटले गोप्यो बे, पाप

थकी आत्मा जेणें. ए सात,गुरुनां विशेषणो मांहे रह्या जे (छत्तीस गुणेहिं के०) छत्रीश गुण, तेणें करी संपन्न ते (मज्झ के०) माहारा (गुरु के०) गुरु छे, एटले स्वामी छे ॥ २ ॥ ए गुरुशब्दनो निरुक्तिथी अर्थ कहे छे. जेम के:– (गु के०) अज्ञान पाप, तेनें (रु के०) रुंधे, तेने गुरु कहियें. एमां गाथा बे, पद आठ, गुरु अक्षर दश, अने लघु अक्षर सित्तेर छे. सर्व मली अक्षर एंशी छे. इति गुरु स्थापना गाथा युगलार्थः ॥ ए प्रथम खमासमण ॥

ए रीतें गुरुनी स्थापना करीने पछी खमासमण देइ हेठ बेशीने इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्! द्रव्य, खेत्र, काल, भाव धारुंजी? गुरु कहे धारेह. एम कही द्रव्य, खेत्र, काल, भाव धारीयें, तेनो पाठ लखीयें छैयें.

॥ अथ द्रव्य खेत्र काल भाव ॥

॥ द्रव्यथकी लूगडां, लत्तां, घरेणां, गाठां, पाथरणुं, नोकरवाली, धार्या प्रमाणें मोकलां छे. खेत्रथकी उपाशराना बारणानी मांहेलीकोरें, कालथकी सामायिक निपजे तिहां सुधी, भावथकी यथाशक्तियें राग द्वेषें रहित व्रती संघातें बोलवुं, गुर्वादिक संघातें बोलवानो आगार छे. अव्रती संघातें बोलवानुं पच्चक्खाण छे. ए रीतें छ कोटीएं करी सामायिक करुं. सामायिक व्रत उच्चार करवा एक नवकारनो काउस्सग्ग करुं जी? एम कही उभा थइने एक नवकार गणीयें.

॥ ते गणीने पछी इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्! सामायिक व्रत उच्चार करावो जी? एम कहीने सामायिक व्रत उच्चरावीयें,तेनो पाठ नीचें लखीयें छैयें.

॥ अथ करेमि भंते, अथवा सामायिकनुं पच्चक्खाण ॥

॥ करेमि भंते सामाइयं,सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव निअमं पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ इति ॥

अर्थः—(जंते के०) हे नदंत,नयांत,नवांत,पूज्य,एटले सुखकारक कल्याण कारकपणाथकी नदंत कहियें तथा सात प्रकारना नयनो अंत करवाथकी नयांत कहीयें तथा चातुर्गतिक रूप संसारनो उच्छेद करवाथकी नवांत कहियें तथा पूजवा योग्य माटें पूज्य कहियें. एवी रीतें गुरुनुं आमंत्रण करीने सर्व कार्य करवां. हवे कहे छे के, तमारा समीप वर्त्तमान काल आश्रयी (सामाइयं के०) सामायिक प्रत्यें एटले (सम् के०) रूडे प्रकारें ज्ञानादिक गुण तेनो (आय के०) लान छे जेने विषे अथवा (सम के०) रागद्वेषरहित एवो जे जीव, तेनें सम्यक् ज्ञानादिक गुणनो छे (आय के०) लान जेने विषे ते रूप जे व्रत, ते सामायिक व्रत कहियें अथवा समता परिणामरूप प्रशमसुख तद्रूप सामायिक प्रत्यें (करेमि के०) हुं करुं एटले समता परिणाम आणुं ! वली अनागत काल आश्रयी तो (सावज्जं के०) सावद्यं एमां अवद्य एटले पाप, तेणें करी स एटले सहित एवा जे (जोगं के०) योग एटले मन, वचन अने कायाना व्यापार, अर्थात् पापसहित जे मन, वचन कायाना योग, ते प्रत्यें (पच्चक्खामि के०) हुं पच्चक्खुं छुं. निषेधुं छुं. एटले त्यागुं छुं. ते क्यां सुधि ? तो के (जाव के०) ज्यां सुधी (नियमं के०) सामायिक व्रतना नियम प्रत्यें (पज्जुवासामि के०) हुं पर्युपासुं एटले सेवुं, ज्यां सुधी सामायिक विषे हुं रहुं,त्यां सुधि (डुविहं के०) करवा कराववा रूप ए बे प्रकारनो जे सावद्य व्यापार, ते प्रत्यें (तिविहेणं के०) त्रिविधें करी एटले त्रण प्रकारें करी. ते त्रण प्रकारनां नाम कहे छे. एक (मणेणं के०) मनें करी, बीजो (वायाए के०) वचनें करी, त्रीजो (काएणं के०) शरीरें करीने (नकरेमि के०) नही हुं पोतें करुं, (नकारवेमि के०) हुं बीजा पासें न करावुं, (तस्स के०) ते अतीतकाल संबंधी जे सावद्य व्यापार रूप पाप, ते प्रत्यें (जंते के०) हे जगवंत ! आपनी समीप (पडिक्कमामि के०) हुं प्रतिक्रमुं छुं, एटले ते पापथकी हुं निवृत्तुं छुं. मिच्छामि डुक्कड देउं छुं. (निंदामि के०) आत्मा साखें हुं निंडुं छुं, (गरिहामि के०) गुरुनी साखें हुं गर्हुं छुं, एटले विशेषें निंडुं छुं (अप्पाणं के०) पूर्वकालसंबंधी डुष्ट क्रियाकारक एवो जे म्हारो आत्मा, तेने ते डुष्ट क्रियाथकी (वोसिरामि के०) वोसिरावुं छुं. एटले विशेषें करीने तजुं छुं ॥१॥

ए बीजुं खमासमण थयुं. इहां पहेलुं सामायिकावश्यक पूरुं थयुं. ए सामा यिक करतां थकां चारित्राचार शुद्ध थाय ॥ इति प्रथमावश्यकविधिः ॥

॥ पछी उत्कंथकांज इच्छामि खमासमणपूर्वक इच्छाकारेण संदिस्सह जग न्! बीजा आवश्यक जणी इरियावहियं पडिक्कमुं जी? गुरु कहे पडिक्कमेह. एम कही इरियावहि पडिक्कमि, तस्सुत्तरी कही पछी एक लोगस्सनो काउ स्सग्ग करी, लोगस्स प्रगट कहेवो, लोगस्स कहेतां दर्शनाचार निर्मल थाय. ए बीजुं चउविसत्थो नामाआवश्यक पूरुं थयुं, अने त्रीजुं खमासमण थयुं.

पछी त्रीजा आवश्यक माटें इच्छामि खमासमण पूर्वक हेठा बेशीने इ च्छाकारेण संदिस्सह जगवन्! छेडानुं पडिलेहण करुंजी? गुरु कहे करेह. ए म कहीने छेहेडानुं पडिलेहण करवुं. तिहां साधुनी मुहपत्तिना पच्चीश बोल तथा शरीरना पच्चीश बोल चिंतवीयें.

हवे ए गुरुवंदन नामें त्रीजुं आवश्यक जे छे, ते जघन्य, मध्यम अनें उत्कृष्ट एवा त्रण प्रकारें छे. तिहां जे प्रणाम मात्र फेटा वंदन क रीयें ते प्रथम जघन्य वंदन कहीयें अनें जे खमासमण आपी विधियें करी वांदीयें, ते थोजवंदनने मध्यम वंदन कहीयें. तथा गुणवंत गुरुनें पगें द्वाद शावर्त्त वंदन करीयें तेने उत्कृष्ट वंदन कहीयें, ते बे वार वांदणां देवे करी थाय, इहां कोइ पूछे के एक वार वांदी फरी वली बीजी वार शा कारणें वांदवुं? तेंनो उत्तर. जेम दूत पुरुष राजाने नमीने कार्य निवेदन करे, ते वली पाछो राजायें वीसर्ज्यो थको पण राजाने वंदन करीने जाय. तेम इहां गुरुवंदन ने विषे पण जाणवुं. ते उत्कृष्ट वंदनमां सर्व मली १०७ बोल साचववा जो इयें. ते मांहेला प्रथम मुहपत्ति तथा शरीरनी पडिलेहणाना पच्चाश बोल छे तें पडिलेहवा माटें उंघो तथा मुहपत्ति ए बे उपकरण साधुने जोइयें. अने श्रावकने तो उत्तरासंगें करीनेज वंदनादिक क्रिया करवी.

•जेकारणें सिद्धांतमां श्रीवीरपरमात्मायें श्रावकने पडिक्कमण देवदर्शना दि क्रिया करवी, ते सर्वे उत्तरासंगथीज करवी कहेली छे; माटे साधु मुहप त्तिथी पडिलेहण करे, अने श्रावक उत्तरासंगना छेहेडायें करी पडिलेहण करे. केटलाएक श्रावको पण हमणाने कालें मुहपत्ति चरवलो लइने पडि क्कमणादि क्रिया करे छे. ते सूत्रथी विरुद्ध छे, ते वात माह्या मनुष्योने समजवा माटे केटलाएक सूत्रोना पाठ, साक्षी रूपें इहां लखी देखाडीयें छेयें.

प्रथम श्रीउपासक सूत्रनी वृत्तिमां "अप्पमज्जिय डुप्पमज्जिय" वस्त्र प्रांतादिना" तथा वली श्रीआवश्यकनी वृहद्वृत्तिमांहे पण अप्पमज्जिय डुप्पमज्जियनो अर्थ एमज कह्यो छे, जे सर्व श्रावकोने विधिवादें पोसहमांहे वस्त्रांचलें पूंजवुं कह्युं छे, परंतु चरवलो मुहपत्ति कही नथी.

वली ज्ञाताकथांगमांहे अर्हन्नक श्रावकें अणसण क्रिया कीधी छे, तेने अधिकारें पण मुहपत्ति पडिलेहिने वांदणां देवां कह्यां नथी. तथा चरवलो पूंज्यानुं पण नाम नथी, परंतु वत्थंतेणं नूमि पमज्जइ पमज्जइत्ता जाव सागारं नत्तं पच्चरकाइ एटले इहां पण वस्त्रांचलनोज अधिकार छे.

वली अंतगडदशांगमांहे सुदर्शनशेठें अणसण क्रिया तथा काउस्सग्ग क्रिया कीधी छे त्यां पण मुहपत्ति चरवलानुं नाम नथी. परंतु वत्थंतेणं नूमि पमज्जइ एवा अक्षर छे. माटे श्रावकें उत्तरासंगेंज क्रिया करवी.

वली आवश्यकमांहे श्रावकने अधिकारें एटले श्रावक जेवारें पोताने घेर सामायिक उच्चरीने साधु समीपें आवे, तेवारें साधु कने रजोहरण मागे, तो जूउ के साधु पासें तो चरवलो नथी, अने एक साधु बीजा साधुनो उंघो पण लिये नही, अने श्रावक पोताने घेर सामायिक लइने आव्यो, एम कह्युं तो सामायिकमां जो चरवलो राखतो होय तेवारें तो ते वखत तेनी पासेंज चरवलो होवो जोइयें, तो वली पोतानी पासें चरवलो छतां साधु पासेंथी शामाटें मागे? ए उपरथीज जणाय छे, के तें श्रावक पासें चरवलो न हतो, अने घरे सामायिक लइने उपाश्रयें आवे, तेवारें साधुनी पासें रजोहरण एटले दंमासण मागे. ए वात निश्चित थाय छे. जे माटे साधु चरवलो तो राखता नथी, अने उंघो तो साधु साधुने पोत पोतामां पण आपता नथी. ते उपरथीज दंमासणुं मागवानी वात सिद्ध थाय छे. पछी साधु समीपें "पोतस्स अंतेणं" एटले पोत शब्दें वस्त्र तेनो अंत एटले छेहेडो तेणे करी पूंजे, पछी इरियावहि पडिक्कमे. एवा अक्षर श्रीआवश्यकनी चूर्णीमां छे, ते लखियें छैयें.

ताहिघरे चेव सामाइयं काऊणं इत्यादि यावत् एयाएविहीइं गंता तिविहेण णमिऊण साहूणं पच्छा साहु सक्खियं सामाइयं करेइ. करेमिनंते सामाइयं. सावज्जं जोगं पच्चरकामि. डुविहेणं, तिविहेणं, जाव साहु पज्जुवासामित्ति काऊणं जइ चेइयाइं अछि तो पढमं वंदइ साहूणं सगासाउ रयह

रणं निसिद्यं वा मगइ अह घरे तोसे उग्गहियं रयहरणं वा अत्रि तस्स अ सइ पोतस्स अंतेणं पच्चा इरिहावहियाए पडिक्कमइ ॥

ए आलावे पहेलुं सामायिक उच्चरी पढी इरियावहियं पडिक्कमे, ए विधि प्रथम सामायिक नामा आवश्यकनो कह्यो. इहां सामायिक ठाइने पढी इरियावहियं पडिक्कमवी कही, परंतु इरयावहियं पडिक्कमिने पढी सामायिक उच्चरवाना अक्षर एमां नथी.

तथा वली आवश्यक चूर्णीमांहे चैत्यने विषे जो श्रावक सामायिक करें, तिहां एवो पाठ ढे के, " जइ चेइयाइं अत्रि तो पढमं वंदइ " एटले जो देरासरे सामायिक करे, तो पहेलुं चैत्यवंदन करे, पढी इरियावही पडिक्कमे. हवे इहां देरासरमांहे तो उत्तरासंग अवश्य होयज, जो इहां उत्तरासंगनो भंग करे, तो भगवंतना चैत्यनी आशातना लागे, अने आशातनाथी मिथ्यात्ववृद्धि थाय, माटे देरासरमां सामायिक करे, तेवारें पण वस्त्रांचलेंज करे. इहां कोइ प्रतिपक्षीने बोलवानो उपायज नथी.

तथा वली जे पोसह, सामायिक,मुहपत्ति, चरवले करी करावे ढे, अने तेहीज जेवारें देरासरें देव वांदे, तेवारें उत्तरासंगें करि वंदावे ढे, तेहीज उत्तरासंग सहित तिहां देरासरमां काउस्सग्ग प्रमुख अनुष्ठान पण करावे ढे, तेवारें तेंनी सद्दहणा प्रमाणें विचारियें तो मुहपत्ति चरवलो तो तेमना श्रावको पासेंज ढे,तो तेने मूकीने उत्तरासंगथी क्रिया केम करावे ढे?वली जो पोसह सामायिकमां पण देरासरें जतां उत्तरासंग करावो गो, तो देरासरमां कोइ श्रावक पडिक्कमणुं करे, तेने उत्तरासंगें करी शा माटे नथी करावता ?

तथा वली सूत्रमांहे श्रावकने दश प्रतिमा लगें प्रवचन साहामी कह्यो ढे पण लिंग साहामी कह्यो नथी लिंग साहामी तो जेवारें अग्यारमी प्रतिमायें आवे तेवारें रजोहरण मुहपत्ति लीये, त्यार पढी लिंग साहामी कहेवाय. तो ते अग्यारमी प्रतिमाथी आगल दशमी प्रतिमा लगें रजोहरण मुहपत्ति लेवाय ढे, ते कया सिद्धांतना अक्षर जोइने लेवाय ढे ? इहां लिंग ते रजोहरण अने मुहपत्तिने कहीयें. लिंगेरयहरण मुहपत्ति इति पिंमनिर्युक्तौ॥

तथा व्यवहार भाष्यमां जिनकल्पी साधुने जो संक्षेपथी उपधि होय, तो रजोहरण अने मुहपत्ति होय ॥ यडुक्तं श्रीपंचकल्पभाष्यचूर्णौ ॥ रयहरणं मुहपत्ती, संखेवेणं तु डुविह उवहीउ ॥ एमां रजोहरण अने मुह

पत्ति ए बे उपकरण सहित जे जिनकल्पी साधु होय तेने लिंगसाहामी कह्यो,तेमज जे कोइ श्रावक, रजोहरण अने मुहपत्ति लीये, तेने अग्यारमी प्रतिमायें लिंग साह्मी कहीयें, अने दशमी प्रतिमा लगण तो श्रावकनुं लिंग जे उत्तरासंग छे, ते लिंगें करी श्रावक क्रिया करे. ए अक्षर सूधा सद्दहवा.

तथा श्रीउपमितिभवप्रपंच ग्रंथने विषे श्रावकने अधिकारें उत्तरासणे करी वांदणांयें व्रत उच्चरे, देव वांदे, गुरुने वांदे अने वांदणां प्रमुख क्रिया करे, ते अधिकार पन्नरमे सहस्त्रें सिद्ध व्याख्यानने विषे श्रावक आश्रयी कह्यो छे, ते पाठ कहीयें छेयें ॥ श्लोक ॥ छत्रं खड्ग किरीटं च, वाहनं च सचामरं॥ तत्त्कृतोत्तरासंगः, प्रविष्टःसूर्यवग्रहे ॥ १ ॥ ततोभगवतः सम्यग्, द्वादशावर्त्तवंदनं॥ दत्वा यथाक्रमं शेषान्, प्रणम्य मुनिपुंगवान् ॥२॥ एटले राजानां चिन्ह जे छत्र, खड्ग, किरीट एटले मुकुट प्रमुख. एटलां वानां मूकीने उत्तरासंग करे. पछी सूर्यावग्रह पेसे अने उत्तरासणे करी मुनीश्वरने द्वादशावर्त्त वांदणां आपे, एम देखाय छे. ए अक्षर पण सूधा सद्दहवा॥

तथा श्रीभगवती सूत्रमां तुंगीया नगरीना श्रावक, थिविरने वांदवा गया छे, तेवारें पंचाभिगम साचव्या छे ते पाठ लखीयें छेयें ॥ जेणेवपुप्फवइए चेइए तेणेव उवागच्छइ थेरे भगवए पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छंति तं जहा ॥ सचित्ताणं दव्वाणं विउस्सरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अविउस्सरणयाए, एगसाडीएणं उत्तरासंगकरणेणं चरकुफासे, अंजलिपग्गहेणं, मणसो एगत्तीकरणं, जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति तिरकुत्तो इति ॥ इहां थिविर भगवंतने वांद्या कह्या अने ते प्राहूणा आव्या माटे श्रावक प्राहूणा वांदणां दीये, एवो मार्ग छे. इहां उत्तरासण कह्युं पण मुहपत्ति चरवलानुं नाम नथी. एम तुंगीया नगरीना श्रावक मुहपत्ति चरवलो लइ वांदवा गया नथी. ते उपरथीज मुहपत्ति चरवलो लइ वांदवानी परंपरा पाछलथी थयेली छे, एवुं सिद्ध थाय छे. वली श्रीरायप्पसेणी सूत्रमां परदेशी राजा गणधर श्रीकेशीकुमारने खमाववा आव्या छे, तेवारें उत्तरासंग करीने गुरुने खमाव्या छे अने खमाववाने अधिकारें वांदणां देखाय छे माटे वांदणां दीधां छे. तिहां पण चरवलो तथा मुहपत्तिनुं नाम नथी.

वली श्रीउववाइ उपांगमां कोणिक महाराजायें पंचाभिगम पूर्वक श्री महावीरस्वामीने वांद्या छे,तिहां पण उत्तरासंग छे चरवलो मुहपत्ति नथी.

तथा उपासकदशांगमां जितशत्रु राजायें पंचाभिगमें गुरुने वांद्या छे, तिहां पण उत्तरासंगज कह्यो छे. पण चरवला मुहपत्तिनुं नाम नथी. तथा एज सूत्रमां आनंद श्रावक, प्रभुने वांदवा गया छे, वांदीने बार व्रत उच्चर्यां छे, तिहां पण मुहपत्ति चरवलानुं नाम नथी, माटे श्रावकनुं लिंग ते उत्तरासंगज छे. तथा एज सूत्रमां दशे श्रावकने अधिकारें एवाज अक्षर छे, पण मुहपत्ति चरवलानुं कोइमां नाम नथी.

वली आवश्यक चूर्णीमां श्रीकृष्ण वासुदेवें अढार हजार साधु मुनिराजोने उत्तरासंगथीज वांदणां दीधां छे,पण मुहपत्ति चरवलो लीधो नथी.

तथा श्रीवसुदेवहिंमीमांहे दृढधर्मा श्रावकें शिवकुमारने द्वादशावर्त्त वांदणां दीधां छे, तिहां पण उत्तरासंगज कह्यो छे.

तथा राजप्रश्नीय उपांगमां चित्रसारथीयें श्रीकेशी कुमारने आव्या जाणीने घरथकीज उत्तरासंगेंकरी केशीमुनिने वांद्या छे.

तथा विपाक सूत्रने विषे सुबाहु प्रमुख श्रावकें बार व्रत उच्चर्यां छे, तिहां पण मुहपत्ति चरवलानुं नाम नथी.

तथा निरियावली प्रमुख पांच उपांगने विषे निसढ प्रमुख घणा श्रावकोयें बार व्रत उच्चर्यां छे, तिहां पण मुहपत्ति चरवलानुं नाम नथी.

तथा ज्ञाताधर्म कथांगमां सेलंगराय, जित शत्रुराजा प्रमुख घणा श्रावकोयें बार व्रत उच्चर्यां छे. तिहां मुहपत्ति चरवलानुं नाम नथी.

वली निरियावली उपांगने विषे काली देवीयें पंचाभिगमन करी उभां थकांज भगवंतने वांद्या देखाय छे, तिहां पण मुहपत्ति चरवलो नथी.

तथा अंतगड सूत्रमां देवकी देवीयें पंचाभिगमन करी उभां थकांज श्रीनेमीश्वर भगवानने वांद्या, तिहां पण चरवलो मुहपत्ति लइ बेशीने वांद्या, एवा अक्षर नथी. तथा वली एज सूत्रमां पद्मावती देवीयें पंचाभिगमन करी उभां थकांज वांद्या छे, पण बेशीने चरवलो मुहपत्ति लइ वांद्या नथी, तेमज आठे अग्रमहीषीयें पण पंचाभिगमन करी उभां थकांज वांद्या छे, तिहां पण बेशीने चरवलो मुहपत्ति लीधां नथी.

तथा श्रीउववाइ उपांगमांहे कोणिक महाराजानी पटराणी पद्मावतीयें पण पंचाभिगमन करी पूर्वेली पेरें उभां थकांज वांद्या छे.

तथा भगवतीजीमां जयंती श्राविकायें पण तेमज पंचाभिगमन करी

उन्नां थकांज वांद्या छे, पण चरवलो मुहपत्तिना अक्षर क्यांय नथी. पाप नीरु हशे, तेतो सूधी सद्दहणा राखशे. परंतु नगवानें कहेली सामाचारी उबापीने हठ कदाग्रहथी पोतें चलावेली सामाचारीने स्थापन करनारने तो सद्दहणा राखवी दोहेली छे.

तथा श्रीनगवतीजीमांहे नगवान् श्रीमहावीर स्वामीनी माताजी श्री त्रिशला देवीयें पण वेयावच्चेव पज्जुवासइ ए अक्षरथी उन्नां थकांज वांद्या छे. ए अक्षरथी जे श्राविका ते उन्नां थकांज वांदे, एम ठाम ठाम सिद्धांतमां श्राविकाने उन्नां रहीनेज वांदवानो व्यवहार कह्यो छे.

तथा श्रीनगवतीजीमांहे शंख श्रावकें पोसहमां रह्यां थकांज श्रीन गवंतने वांद्या छे, तेवारें पोतें पंचानिगमन सहितज हता, पण नवा अ निगमन कस्या नथी. इहां पोसहमांहे उत्तरासंग सहितज हता, सूत्रमां पण ' संखस्स अनिगमो नत्थि ' एमज पाठ छे, अने तेनो अर्थ वृत्तिने विषे 'पूर्वकृतत्वात् कृतस्य करणं नास्ति' एटले प्रथम पोसहमां अनिगमन करेलां हतां, तेमाटे नवां न कीधां.

तथा अनुयोगद्वार सूत्रनी वृत्तिमांहे साधु, साधवी, श्रावक अने श्रा विकाने जूदां करीने चरवलो मुहपत्ति नथी वखाण्यां. तिहां साधु साध्वीने रजोहरण मुखवस्त्रिका कह्यां, अने आदि शब्दथी श्रावक श्राविकाने उत्तरासंग जाणवुं. एटले अनुयोगद्वारनी वृत्ति चूर्णी मांहे " रजोहरण मुखवस्त्रिकादीनि यथोचितव्यापाराणि " एटले इहां आदिशब्दथी गृह स्थनुं लिंग ते उत्तरासंग लेवुं, केम के, वृत्तिकर्त्ता पापनीरु हता, आज्ञारा धक हता; माटे ठामें ठामें श्रावकने अधिकारें वस्त्रांचल वखाण्यो छे, ते वृत्तिकर्त्ता केम उबापे ?

तथा उपासकसूत्रमांहे कुंमकोलिया श्रावकने अधिकारें श्रुतधर्मनी प्ररूपणा अंगीकार करतो कह्यो, पण चारित्रधर्म पोसह सामायिक रूप वृत्तिकारें न वखाण्यो, तिहां चरवलो मुहपत्ति लीधाना अक्षर नथी.

तथा महानिशीथ मांहे " जइलिंग पूइयव्वं न धारियव्वं, " एटले यतिनुं लिंग जे रजोहरण अने मुहपत्ति छे, तेने श्रावक पूजे पण धरे नही. एवा प्रगट अक्षर छे. ते पण आज्ञा आराधकने सूधा मानवा योग्य छे. एम श्रावकने उत्तरासंगें वंदन करवुं, तेना अनेक अधिकार सिद्धांतमां छे,

इहां केटला लखीयें? जे सत्यवचन शोधक हशे. तेने तो उपर जे दाख ला कही आव्या छैयें, तेज घणा छे. माटे श्रीजिनपडिमा तथा चारि त्रनां साधन जे रजोहरण अने मुखवस्त्रिका छे, तेनी सेवा नक्ति श्रावक करे, ए आज्ञा छे, पण पोसह सामायिकमां रजोहरण मुखवस्त्रिका लेइ बेसे, एवी आज्ञा श्रीजिनेश्वरें आपी नथी.

ते माटे श्रावकें उत्तरासंगज पडिलेहवो, तेमां मुहपत्ति पडिलेहण कर वाना पच्चीश बोल तथा शरीर पडिलेहण करवाना पच्चीश बोल मली पच्चास बोल चिंतवियें, तेनो पाठ तथा अर्थ लखियें छयें.

॥ अथ मुंहपत्ति तथा शरीरपडिलेहण गाथा ॥

सुत्तछ तत्तदिठी, दंसणमोह तिगं च रागतिगं ॥ देवाइतत्त तिगं, तहय अदेवाइ तत्ततिगं ॥ १ ॥ नाणाइ तिगं च तवि, राहणयं तिन्नि गुत्ति दंमतिगं ॥ इय मुहणांतग पडिले, ह णाइ कमसो वि चिंतिज्जा ॥२॥ हासो रइ अरइतिगं, नय सो गडुगंछिआ य वज्जिज्जा ॥ नुय जुयलं पेहंतो, सीसे अ पसछ लेसतिगं ॥ ३ ॥ गारवतिगं च वयणे, उयरि सल्लतिगं कसाय चउपिठे ॥ पय जुअल छ जीव वहं, तणुपेहाए विजा णमिणं ॥४॥ जइवि पडिलेहणाए, हेऊ जिय रक्खणं जिणा णा य ॥ तहवि इमं मणमक्कड, निज्जंतणछ मुणि बिंति ॥५॥

अर्थः—तिहां प्रथम मुहपत्तिनी पच्चीश पडिलेहणा कहे छे. तेमां (सु त्तछतत्त के०) सूत्र अने अर्थ एटले मुहपत्तिने पहेले पासे सूत्र अनें बीजे पासे अर्थ तेनुं तत्त्व सम्यक् प्रकारें हृदयने विषे धरुं. एम चिंतवी मुहपत्तिने उखेलीने बेहु पासां सर्वत्र दृष्टियें करी जोवां ते.(दिठी के०) प्रथम दृष्टिपडिलेहणा जाणवी. तेवार पछी मुहपत्ति फेरवी बे हाथें सा हीने नचाववा रूप त्रण त्रण उंचा पखोडा एकेका हाथें करीयें. तिहां मावे हाथे करतां समकेत मोहनी, मिश्र मोहनी अने मिथ्यात्वमोहनी ए (दंसणमोहतिगं च के०) दर्शन मोहनीयनुं त्रिक परिहरुं. तथा जमणे हाथे खंखेरतां (रागतिगं के०) कामराग, स्नेहराग अने दृष्टिराग, ए

त्रण परिहरुं, एम चिंतवीयें. ए ब खंखेरवा रूप ब पडिलेहणा थइ. तेंनी साथें पहेली दृष्टिपडिलेहणा मेलवीयें, तेवारें सर्व मली सात पडिलेहणा थइ.पबी मुहपत्तियें एक पड वालीने मुहपत्तिना त्रण वधूटक करी जमणा हाथ नी आंगलीना आंतरानी वचमां नरावीने हाथनी उपर त्रण अखोडा अने त्रण पखोडा करियें. तिहां त्रण वार मुहपत्ति उंची राखी हाथने अणलागते खंखेरीयें ते त्रण अखोडा कहेवाय. पबी त्रण वार प्रमार्ज्ज नारूप पसलीमांथी मुहपत्तिने घसी काहाडियें ते त्रण पखोडा कहेवा य. एम एकेकने अंतरें त्रण त्रण वार अखोडा अने त्रण त्रण पखो डा करीयें तेवारें सर्व मली नव अखोडा अने नव पखोडा एम अ ढार पडिलेहणा थाय, अने ब त्रिक थाय. तेमां शुं शुं चिंतवियें ते कहे बे'

प्रथम (देवाइतत्ततिगं के०) देवादिकतत्त्वत्रिक एटले देवतत्त्व, गु रुतत्त्व अने धर्मतत्त्व ए त्रण तत्त्व आदरुं. ए त्रण अखोडा हाथनी उपर हाथने अण लागते त्रण वार खंखेरियें (तहय के०) तथाच एटले तेम वली (अदेवाइतत्ततिगं के०) अदेवादिक तत्त्वत्रिक एटले कुदेव, कुगुरु अने कुधर्म ए त्रण तत्त्व परिहरुं. ए त्रण पखोडा हाथ उपर प्रमा र्जीयें, एटले हाथ उपर घसी काहाडियें ॥ १ ॥

(नाणाइतिगं के०) ज्ञानादिक त्रिक ते ज्ञान, दर्शन अने चा रित्र ए त्रणने आदरुं. ए त्रण अखोडा हाथनी उपर त्रण वार खंखेरीयें; (च के०) वली (तविराहणयं के०) तेज ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए त्रणनी विराधना परिहरुं. एम चिंतवतां त्रण पखोडा करीयें, एटले हा थमांथी मुंहपत्ति त्रण वार घसी काहाडियें पूंजीयें. तथा त्रीजी वारना त्रण अखोडामां (तिन्निगुत्ति के०) त्रण गुप्ति ते मनोगुप्ति, वचनगुप्ति अने कायगुप्ति, ए त्रण गुप्ति आदरुं. एम चिंतवतां हाथ उपर त्रण वार मुहपत्तिने खंखेरीयें, तथा त्रीजा त्रण अखोडामां (दंमतिगं के०) दंम त्रिकं ते मनोदंम, वचनदंम अने कायदंम, ए त्रण परिहरुं, बांरुं. एम चिंत वतां त्रण वार मुहपत्तिने हाथमांथी घसी काहाडीयें,प्रमार्ज्जन करीयें. ए रीतें सुदेवादिक त्रिकथी मांमीने त्रण त्रिक त्रण अखोडाना आदरवाथी अने त्रण पखोडाना त्रण त्रिक बांमवाथी अढार पडिलेहण मुहपत्तिनी थइ. तेनी साथें प्रथम कहेली सात पडिलेहण मेलवियें, तेवारें सर्व मली

पच्चीश पडिलेहण मुहपत्तिनी हाथ उपर थाय. ते (इयमुहणंतगपडिलेह णाइ के०) ए मुखानंतक एटले मुहपत्तिनी पच्चीश पडिलेहणा कही. ते (कमसो के०) पूर्वोक्त अनुक्रमें मनमांहे (विचिंतिज्ञा के०) चिंतववी ॥२॥

हवे शरीरनी पच्चीश पडिलेहण कया कया अंगने विषे केटली केटली करवी? अने त्यां शुं शुं चिंतववुं? ते कहे छेः—प्रथम (भुयभुयलं पेहंतो के०) भुजानुं युगल एटले बे भुजाउने पूंजतो एटले पडिलेहण करतो थको शुं चिंतवे? ते कहे छे. प्रथम डाबा हाथनी भुजा त्रण वार पूंजीयें. तिहां (हासो रइअरइतिगं के०) हास्य, रति अने अरति, ए त्रणने परिहरुं, एम चिंतवियें. पछी जमणा हाथनी भुजा त्रण वार पूंजीयें. तिहां (नयसोगडुगंछआयव ज्जिज्ञा के०) नय, शोक अने डुगंछा ए त्रणने परिहरुं. एम चिंतवियें. भुयभुय लं पहंतो ए छ पडिलेहण बे भुजाउनी थइ. हवे (सीसें के०) मस्तकें त्रण वार पूंजे. तिहां (अपसछलेसतिगं के०) अप्रशस्त एटले माठी एवी जे कृष्ण, नील अने कापोत ए त्रण लेश्याउ छे, तेने परिहरुं. एम चिंतवे, एवं नव थई ॥३॥

पछी (वयणे के०) वदने एटले वदन. ते मुख तेने त्रण वार पूंजे. तिहां (च के०) वली (गारवतिगं के०) त्रण गारव जे रूद्धिगारव, रसगारव अने शातागारव तेने परिहरुं. एम चिंतवे. तथा (उयरि के०) उदरे ते हृदय तेने त्रण वार पूंजे. तिहां (सल्लतिगं के०) मायाशल्य, नीयाणा शल्य अने मिथ्यात्वशल्य ए त्रण शल्य परिहरुं. एम चिंतवे. अने (पिछे के०) पूंठे बे बाजुना बे पासानी पडिलेहण करतो एकेका पासायें बे बे वार पूंजतो (कसायचउ के०) क्रोध, मान, माया अने लोन, ए चार कषायने परिहरुं, एम चिंतवे. तथा (पयजुअल के०) पदयुगल एटले बे पगनी पडिलेहणा करतो (छजीववहं के०) छकायजीवोनो वध एटले अनुक्रमें एकेका पगने त्रण त्रण वार पूंजतो थको पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय वनस्पतिकाय अने त्रसकाय एवं छकायजीवोनी विराधना परिहरुं एम चिंतवे. ए पच्चीश बोल शरीरनी पच्चीश पडिलेहणा करतां चिंतवियें. (तणुपेहाए के०) तनु प्रेक्षायै एटले शरीरनी पडिलेहणा करवाने (विजाणिमिणं के०) मनमां एम चिंतवे. (जइवि के०) यद्यपि, ए (पडिलेहणाए के०) पडिलेहणा जे छे तेनो (हेऊ जिअरकणं के०) जीवरक्षा करवानो हेतु नव्यजीवने छे, एवी (जिणाणाय के०) श्रीजिनाज्ञा छे. (तह

वि के०) तथापि एटले तोपण ए पडिलेहणा ते (मणमक्कड के०) मनरूप माकडुं तेने (निज्ञतणडं के०) नियंत्रवाने अर्थे ले. (इमं के०) ए रीतें (मुणि बिंति के०) मुनि एटले पूर्वाचार्यो कही गया ले ॥ ५ ॥

ए पच्चीश पडिलेहणा शरीरनी कही तेमांथी श्राविकानुं मस्तक ढांक्युं होय माटे माथानी त्रण तथा हृदय ढांक्युं होय माटे हृदयनी त्रण अनें बे पासां ढांक्यां होय माटे बे पासानी चार, एवं दश पडिलेहण श्राविकाने न होय. शेष पन्नर होय अने साध्वीनुं मस्तक उघाडुं होय, माटे तेंने मस्तकनी त्रण होय; शेष हृदयनी तथा बे पासानी सात न होय. तेवारें अढार पडिलेहण होय. ए पडिलेहणाधिकार थयो.

हवे वांदवाने उजमाल थयेलो एवो शिष्य विधिपूर्वक पूर्वोक्त मुहपत्ति पडिलेही वली पोतानुं शरीर पडिलेही पणठें चढावेला धनुष्यनी परें लगारेक अवनतकाय थको एटले लगारेक काय नमावतो, बे हाथे उंघो मुहपत्ति ग्रहण करीने ललाटें करसंपुट जोडी यथाजातमुद्रा एटले जन्मता बालकनी जेवी मुद्रा करीने अथवा दीक्षा अवसरें जेम चोलपट्ट मात्र उपकरण रजोहरणादिक युक्त एवी मुद्रा करीने जिनमुद्रायें पग राखीने अवग्रहथी बाहेर रह्यो थको मुखें नीचें लख्या प्रमाणें वंदनक सूत्रनो पाठ कहे ते लखियें लैयें.

॥ अथ गुरु वांदणा प्रारंभ ॥

इच्छामि, खमासमणो, वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए ॥ १ ॥

अर्थः–(खमासमणो के०) हे क्षमादिक गुणें प्रधान! अहींयां क्षमा ते सहन कहियें तथा संसारना विषयने विषे जे खिन्न ले अथवा तपश्चर्या करे ले, तेने श्रमण कहियें, एटले सहन शील जे श्रमण तेने क्षमाश्रमण कहियें, एवा हे क्षमाश्रमण! तमोने (जावणिज्जाए के०) यापनीयया एटले जेणें करी कालक्षेप करियें काल गमावियें, तेनें यापनीया कहीयें, ते शक्तियें करी सहित एवी (निसीहिआए के०) नैषेधिक्या एटले प्राणातिपातादिकथी निवृत्तिरूप प्रयोजन ले जेमां तेने निषेधिकी तनु ते शरीर कहियें. अथवा बाह्यथी सावद्य व्यापार अने अभ्यंतरथी मिथ्यात्व, अविरत्यादि अप्रशस्तयोगनी निवृत्तिरूप प्रयोजनवालुं शरीर

जाणवुं. एटले कालक्षेपरूप शक्तियें करी सहित एवुं निषेधिकी जे तनु तेवा तनु ए करी तमोने (वंदिउं के०) वंदितुं एटले वांदवाने (इछामि के०) अभिलषामि एटले हुं इछुं छुं. वांछुं छुं. एटले हे श्रमणगुणयुक्त ! हुं शक्तिसमन्वित छतो प्रतिषेध करी छे पापक्रिया जेणें एवो थको तमोने वांदवाने इछुं छुं.

एवुं प्रथम शिष्यनुं वचन सांजलीने ते वखतें जो गुरु कोइ कार्यमां विक्षेपचित्तवंत होय तो 'तिविहेणं' एवो शब्द कहे. एटले मन, वचन अने काया, एम त्रिविधें करी संक्षेपेंज वांदो. एवा अर्थवालुं गुरुनुं वचन सांजली शिष्य पण संक्षेपेंज वांदे, अने जो गुरुनुं चित्त, कोइ कार्यादिकमां विक्षेप पामेलुं न होय,तो 'छंदेण' एवो शब्द कहे,एटले म्हारे निराबाध छे सुखशाता छे माटें जेम तमारो छंद एटले अभिप्राय होय, इछा होय, तेम वांदो. ए प्रथम गुरुवचन जाणवुं. ए पांच पदनुं प्रथम स्थानक थयुं ॥ १ ॥ पछी शिष्य तिहांज उनो रह्यो थको, लगारेक नीचो नमीने नीचें प्रमाणें पाठ कहे.

अणुजाणह, मे, मिउग्गहं ॥ २ ॥

अर्थः-गुरु पांखती चारे दिशायें (मिउग्गहं के०) मित अवग्रह एटले मान करेलो एवो जे स्वदेह प्रमाण अवग्रह, एटले साडात्रण हाथ प्रमाण क्षेत्र, अने साध्वीने तेर हाथ प्रमाण क्षेत्र तेमांहे प्रवेश करवानी (मे के०) मुजने (अणुजाणह के०) अनुज्ञा आपो एटले आज्ञा आपो, ए बीजुं शिष्यनुं वचन सांजलीने गुरु कहे. (अणुजाणामि के०) अनुजानामि एटले हुं आज्ञा आपुं छुं. अनुज्ञा आपुं छुं ए बीजुं गुरुनुं वचन जाणवुं. ए त्रण पदनुं बीजुं स्थानक थयुं.

॥ हवे बार पदनुं त्रीजुं स्थानक कहे छे.

निसिही,अहो,कायं, कायसंफासं, खमणिज्जो,भे,किलामो,
अप्पकिलंताणं, बहुसुभेण, भे, दिवसो, वइक्कंतो ॥ ३ ॥

अर्थः-पछी शिष्य निसिही कहेतो थको एटले (निसिही के०) एक गुरुवांदणां विना निषेध्यो छे अन्यक्रियारूप व्यापार जेणें एवो छतो मित अवग्रहमांहे विधिपूर्वक प्रवेश करीने बे हाथ पोताना ललाटें लगाडी

गुरुनां चरण प्रत्यें स्पर्शवाने अर्थें आवी रीतनो पाठ कहे, ते कहे छे. (अहोकायं के०) अधस्कायं एटले कायाना अधःप्रदेशनो जे छेहेलो नाग तेने पग कहियें. अर्थात् हेठी काय ते गुरुना पग लक्षण जाणवी, ते तमारा पगने (काय के०) महारा हाथ अने ललाटें करी रूडी रीतें (संफासं के०) स्पर्शवुं छे. एम कहीने गुरुना चरण प्रत्यें पोताने हाथें तथा मस्तकें करी रूडी रीतें स्पर्शे, पछी ऊंचो थइ मस्तकें बे हाथ चढा वी गुरुनी सन्मुख दृष्टि राखी, "खमणिज्जो ने" इत्यादिक पद कहे,ते आवी रीतें के, हे नगवंत ! तुमारां चरण स्पर्शतां में जे कांइ आपने (किलामो के०) क्लम एटले ग्लानि उपजावी होय, खेद उपजाव्यो होय, पीडा उपजावी होय, ते (ने के०) नवद्भिः एटले तमोयें (खमणिज्जो के०) क्षमापनीयः एटले खमवा योग्य छे. एटलुं कहीने पछी वली पण शिष्य, दिवस संबंधि क्षेम कुशलनुं स्वरूप गुरुने पूछे, ते आवी रीतें:-(बहुसुनेण के०) बहुशुनेन एटले बहु शुनें करीने क्षेमकुशलें करीने अर्थात् घणा समाधिनावें करीने (ने के०) नवद्भिः एटले तमोयें (दिवसो के०) दिवस, निराबाधपणे (वइक्कंतो के०) व्यतिक्रांतः एटले वीत्यो, तमें कहेवा छो ? तो के (अप्पकिलंताणं के०) अल्प छे क्लांत एटले ग्लानिपणुं जेमने एवा, अर्थात् अल्प वेदना वाला एवा तमें छो.

अहीं रात्रिना अनुष्ठानने विषे 'राइउ वइक्कंतो' अने पाक्षिकना दिवसने विषे 'परको वइक्कंतो' तथा चौमासीना दिवसने विषे 'चउमासिउ वइक्कंतो' तेमज संवत्सरीना दिवसने विषे 'संवछरो वइक्कंतो' एवा पाठ कहेवा. ए त्रीजुं शिष्यनुं वचन थयुं. एवुं सांनलीने गुरु कहे के तहत्ति एटले तथेति अर्थात् जेम तमें पूछ्युं, तेमज अमोयें दिवस समाधिमां हेज गमाव्यों छे ॥ इति नावः ॥ ए त्रीजुं गुरुनुं वचन जाणवुं. ए बार पदनुं त्रीजुं स्थानक थयुं ॥ ३ ॥

ए रीतें शरीर संबंधि सुखशाता गुरुने पूछीने हवे वली शिष्य तप नियमादिक संयम संबंधि वार्ता गुरुने पूछवाने अर्थें, गुरुना पगने विषे पोतानुं ललाट फरसतो आवर्त्त करतो, आवी रीतें पाठ कहे, ते कहे छे.

जत्ता, भे ॥ ४ ॥

अर्थः—हे करुणासमुद्र! (जत्ता के०) तप, नियम, संयम, स्वाध्याय रूप यात्रा, ते (भे के०) भवतां एटले तमारे अव्याबाध पणें वर्त्ते छे? ए चोथुं शिष्यनुं वचन थयुं, ते सांभलीने गुरु कहे के, (तुप्भंपि वट्टए के०) तुभ्यमपि वर्त्तते एटले जेम मने वर्त्ते छे, तेम तमने पण वर्त्ते छे. ए गुरुनुं पण चोथुं वचन जाणवुं. ए बे पदनुं चोथुं स्थानक थयुं ॥ ४ ॥

जवणिज्जं, च, भे ॥ ५ ॥

अर्थः—(च के०) वली नियममां राखवा योग्य पदार्थ संबंधि वार्त्ता, शिष्य पूछे छे. (जवणिज्जं के०) यापनीयं एटले इंद्रिय अने नोइंद्रियोना उपशमादिक प्रकारें करी निराबाध शरीर, (भे के०) भवतां एटले तमारुं छे? अर्थात् इंद्रिय अने नोइंद्रियोयें पीडित नही, एवुं तमारुं शरीर छे? ए पांचमुं शिष्यनुं वचन सांभलीने गुरु कहे, (एवं के०) एमज छे, ए गुरुनुं पण पांचमुं वचन जाणवुं. ए त्रण पदनुं पांचमुं स्थानक थयुं ॥ ५ ॥

खामेमि, खमासमणो, देवसियं, वइक्कम्मं ॥ ६ ॥

अर्थः—वली शिष्य, रजोहरण उपर हाथ तथा मस्तक मूकीने कहे के, (खमासमणो के०) हे क्षमाश्रमण! (देवसियं के०) दैवसिकं एटले दिवस संबंधि (वइक्कम्मं के०) व्यतिक्रम एटले अवश्य करणीय विराधना रूप महारो अपराध, ते प्रत्यें (खामेमि के०) क्षमयामि, हुं खामुं छुं. ए छठुं शिष्यनुं वचन सांभली गुरु कहे के, (अहमवि खामेमितुप्भे के०) अहमपि क्षमयामि एटले में पण सारणा वारणादिक करवाने विषे, जे प्रमाद कीधो होय, ते हुं पण तमोने खमावुं छुं. ए गुरुनुं पण छठुं वचन थयुं, एटले छ शिष्यनां वचन प्रश्नरूपें अने छ गुरुनां वचन उत्तर रूपें थयां, ए चार पदनुं छठुं स्थानक थयुं ॥ ६ ॥ छ स्थानकनाओगणत्रीश पद थयां.

पछी शिष्य, पगे जिनमुद्रा अने हाथे योगमुद्रा साचवतो अवग्रहथी बाहेर नीकली उभो रही, वली पाछली वातनेज विशेष पणे पूछतो नीचें प्रमाणें कहे.

आवसिआए, पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि, मिछाए, मणडुक्क

डाए, वयडुक्कडाए, कायडुक्कडाए, कोहाए, माणाए, माया ए, लोनाए, सवकालिआए, सवमिछोवयाराए, सवधम्मा इक्कमणाए, आसायणाए, जो मे, (देवसिउ) (राइउ) (पक्खीउ) (चउमासिउ) (संवच्छरिउ) अइआरो, कउ, तस्स, खमासमणो, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ ७ ॥ इति ॥ २६ ॥ अहींयां बीजी वार ने वांदणे 'आवसिआए' ए पद न कहेवुं ॥

अर्थः—हवे शिष्य, रजोहरणें करी पाछली नूमिका पूंजी मित अवग्रह थी बाहेर नीकलतो 'आवसियाए पडिक्कमामि' कहेतो थको निकले,एटले (आवसिआए के०) अवश्य कर्त्तव्य जे चरणसित्तरी अने करणसित्तर रूप क्रिया पडिलेहण प्रमुख व्यापार, ते सेवतां पालतां, जे अतिचार ला ग्यो होय, मातुं आचर्युं होय, ते थकी (पडिक्कमामि के०) हुं प्रतिक्रमुं बुं, निवृत्तु बुं. (खमासमणाणं के०) क्षमाश्रमण संबंधिनी (देवसिआए के०) दिवसने विषे थइ, एवी जे (आसायणाए के०) आशातना खंमना, ते आशातनायें करीने. ते केवी आशातनायें करीने ? तो के (तित्तीसन्नयराए के०) तेत्रीश आशातना मांहेली अनेरी कोइ एक पण आशातनायें करीने, वली केवी आशातनायें करीने ? तो के (जंकिंचिमिछाए के०) जे कांइ कूडुं आलंबन लइने मिथ्यानाव वर्त्ताव्यो होय, ते किंचित् मिथ्यानावरूप आशातनायें करीने, वली बीजी पण केवी आशातनायें करीने ? ए रीतें आगल पदें पदें कहेतां जवुं, (मणडुक्कडाए के०) मनःसंबंधि जे डुष्कृत एटले पाप, ते रूप आशातनायें करी अर्थात् प्रद्वेषमनें करी तथा (वयडुक्कडाए के०) वचनसंबंधि डुष्कृत ते असत्य परुषादिक वचनें करी जे डुष्कृत एटले पाप, ते रूप आशातनायें करी, (कायडुक्कडाए के०) काया संबंधि ते आसन, गमन स्थानादिक जे डुष्कृत एटले पाप, ते रूप आशातनायें करी, (कोहाए के०) क्रोधनाव ते विनयत्रंशादिक डुष्कृत जे पाप ते रूप आशातनायें करी, (माणाए के०) मानरूप आशातनायें करी, (मायाए के०) माया एटले कपट ते रूप आशातनायें

करी, (लोत्राए के०) लोनरूप आशातनायें करी, (सवकालियाए के०) अ तीत, अनागत अने वर्त्तमानकालने विषे गुरुनां अविनयादिक जे थयां, ते रूप आशातनायें करी. अहींयां कोइ पूछे जे अनागत कालनी शी आ शातना थइ? तेने कहियें जे अनागत कालें कदापि कोइ समयें गुरुने आमं त्रणें कोइ एक प्रकारें अनिष्ट अविनयादिक थइ जाय, एवुं चिंतव्युं होय, तत्संबंधि अनागत कालनी आशातना जाणवी. (सवमिछोवयाराए के०) सर्व मिथ्या उपचाररूप एटले सर्व कूड, कपट, क्रियारूप आशातनायें करीने, (सवधम्माइक्कमणाए के०) सर्व धर्म ते आठ प्रवचनमाता रूप अथवा सर्व धर्मनी जे करणी तेने अतिक्रमवा उल्लंघवारूप आशातनायें करीने ए (आसायणाए के०) पूर्वोक्त प्रकारनी सर्व आशातनायें करी, (जो के०) जे, (मे के०) महारे जीवें, (अइआरो के०) अतिचार दोष, (कर्ज के०) कर्यो होय, सेव्यो होय, (तस्स के०) ते अतिचारने (खमास मणो के०) हे क्षमाश्रमण! तुमारी समीपें (पडिक्कमामि के०) हुं प्रति क्रमुं बुं, मिछामिडुक्कड देउं बुं. फरी तेम हुं नही करुं, (निंदामि के०) डुष्ट कर्मकारी आत्माने हुं निंडुं बुं, (गरिहामि के०) गुरुनी साखें हुं गर्हुं बुं, एटले विशेषें निंडुं बुं. (अप्पाणं के०) डुष्ट पापिष्ठ आत्मा प्रत्यें (वोसिरामि के०) हुं वोसिरावुं बुं, एटले ठांरुं बुं. अर्थात् आशातना करवी, ते कालना पाप सहित आत्माने हुं त्यागुं बुं. ए प्रथम वांदणुं थयुं. तेमज बीजुं वां दणुं पण एवीज रीतें जाणवुं. परंतु तेमां एटलुं विशेष जे, तिहां अवग्र हथी नीकलवुं नथी, माटें आवसियाए एवो पाठ न कहेवो ॥ ७ ॥

ए वांदणांना सूत्रमध्यें अठावन पद तथा पच्चीश गुरु अने बशें ने एक लघु. सर्व मली बशें ने बवीश अक्षरो छे. इति गुरुवंदनसूत्रार्थः ॥ ए रीतें जे सर्व बोल साचवतो गुरुने नाव सहित वांदणां आपे, तेनां अने क न्नवनां संच्यां कर्म,क्षय थइ जाय,परतु नाव विना अल्प फल होय. जेम श्रीकृष्ण नावसहित साधुने वांदतां क्षायिक सम्यक्त्व पाम्या, तथा सातमी नरक योग्य शिथिल आयुःकर्म उपार्जन कर्युं हतुं, ते संक्रमण करणें करी टालीने त्रीजी पृथिवी योग्य कीधुं अने वीराशालवीयें ड्व्यथी वांदणां दीधां तेमां मात्र पोताना स्वामीनी अनुवर्त्तना टाली, पण तेने बीजुं कांइ फल थयुं नही ॥ इति वंदनक सूत्रनो अर्थ समाप्त ॥ २६ ॥

श्रीसर्वज्ञ प्रणीत आचारनुं मूल विनय छे, ते विनय तो गुणवंत गुरुनी सेवा करवाथी थाय अने ते सेवा पण विधियें करी गुरुने वंदन करवाथी थाय माटे गुरुने वंदन करवुं, ते वांदणाना १९८ बोल जाणतां थकां करवाथी शुद्ध वांदणां देवाय, तेमां पच्चाश बोल पडिलेहणाना तो प्रथम गुरुवंदननी आदिमां लखी गया छैयें, शेष १४८ बोल लखीयें छैयें.

प्रथम वांदणां न देवाथी छ दोष थाय, ते कहे छे.

१ नीच गोत्र पामे. २ अविनय पणुं होय.
३ अहंकारनी वृद्धि होय. ४ निंदा पामे, जिनशासननी हेलना.
५ सम्यक्त्वनी प्राप्ति न होय. ६ संसार वृद्धि थाय.

हवे वांदणां देवाथी छ गुण थाय, ते कहे छे.

१ गुर्वादिकनो विनय थाय. २ अहंकारनो नाश थाय.
३ तीर्थंकरनी आज्ञानुं आराधन थाय. ४ गुरुजननी सेवा नक्ति थाय.
५ श्रुतधर्मनुं आराधन थाय. ६ संसारनो नाश थाय. परंपरायें मोक्ष पामे.

हवे वांदणां देतां पच्चीश आवश्यक सचवाय, तेनां नाम कहे छे.

प्रथम " इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए " एटलुं कहेतो पोतें गुरुने वांदवानी इच्छा जणावे. पछी लगारेक नीचो नमीने " अणुजाणह मे मिउग्गहं " कहे, ए नीचुं नमवारूप प्रथम आवश्यक जाणवुं, पछी शिष्य मुखथकी निसिही कहेतो रजोहरणें करी आगली नूमि पूंजतो प्रमार्जतो अवग्रहमांहे प्रवेश करे, ए अवग्रहमांहे प्रवेश करवारूप बीजुं आवश्यक जाणवुं. पछी संडासादिक पडिलेहतो अधुगडो वेशीने गुरुना चरण समीपें रजोहरण मूकी, डाबे हाथे मुहपत्ति लेइ ते मुहपत्तियें करी डाबा कर्णथी आरंनीने दक्षिण कर्ण पर्यंत ललाट पूंजी प्रमार्जी वली तेणें करीज डाबो जानु पूंजी तिहां मुंहपत्ति मूकी ' अहोकायं ' इत्यादिक कहेतो त्रण आवर्त्त करे, ते आवी रीतें के, बेहु बाहु लांबा करी, पसारी, कूर्परें साथल अणस्पर्शतो गुरुना चरण उपरें संलग्न, बेहु हाथनी दशे आंगुली लगाडतो मुखें (अ) अक्षर कहे, पछी तेमज दश आंगुली पोताने ललाटें लगाडतो (हो) अक्षर कहे, ए बेहु अक्षरें पहेलो आवर्त्त थाय. तेमज वली (का) अने (यं) ए बेहु अक्षरने उच्चारवे बीजो आवर्त्त थाय. तेमज वली (का) अने (य) ए

बे अक्षरें त्रीजो आवर्त्त थाय. पछी संफासं शब्द कहेतो गुरुने पगें मस्तक लगाडे. पछी बेहु हाथ कमलकोशने आकारें जोडी, माथे चडावी " खम णिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो " एवो पाठ कहे. पछी बेहु हाथ मस्तकथी उतारी " जत्ता भे " इत्यादि कहेतो वली पण त्रण आवर्त्त करे, ते आवी रीतें के, पूर्वेली परेंज दश आंगुली समसमी करी, गुरुने पगें हाथ लगाडतो पहेलो (ज) अक्षर मंदस्वरें कहे, बीजो (त्ता) अक्षर मध्यम स्वरें कहे. त्रीजो (भे) अक्षर ललाट फरसतो ऊंचे स्वरें कहे. ए त्रण स्थानकें त्रण अक्षर उच्चरतां प्रथम आ वर्त्त थाय. तेवी रीतेंज वली (ज) (व) (णि) ए त्रण अक्षर पूर्वोक्त त्रिविध सादें करी त्रण स्थानकें उच्चरतां बीजो आवर्त्त थाय. तेमज वली (ज्जं) (च) (भे) ए त्रण अक्षर पूर्वेली रीतें उच्चारतां त्रीजो आवर्त्त थाय. पछी बे हाथ अने मस्तक गुरुने पगें लगाडी " खामेमि खमासमणो देवसियं वइक्कम्मं " कहे, पछी उभो थइ रजोहरणें करी पाछली भूमि प्र मार्जतो मुखथकी "आवसिआए" कहेतो थको अवग्रहथी बाहेर नीकले, ए अवग्रह मध्येथी बाहेर नीकलवा रूप आवश्यक जाणवुं. पछी उभो रही बे हाथे योगमुद्रा पगे जिनमुद्रा साचवतो " पडिक्कमामि खमासम णाणं " इत्यादिक संपूर्ण छेहेडा पर्यंत सूत्रनो उच्चार करे. एमज वली बीजुं वांदणुं पूर्वेली रीतेंज करे, पण एटलुं विशेष जे बीजे वांदणे "आव सिआए " ए पद न कहे, एटले अवग्रहथी बाहेर नीकलवुं नही, स्थान केंज उभो रही " पडिक्कमामि खमासमणाणं " इत्यादिक सूत्रनो उच्चार करे. वांदणां देतां मनोगुप्ति एटले मनमांहे एक ध्यानपणुं करवुं, वचन गुप्ति एटले बे वांदणांनी वचमां बीजुं कांही बोलवुं नही, कायगुप्ति एटले शरीर आघुं पाछुं हलाववुं नही. ए त्रण गुप्तिरूप त्रण आवश्यक जाण वां. तथा "खमणिज्जो भे किलामो" इत्यादिक कहेतां जे, मस्तकें बे हाथ चडावीयें छैयें, ते जेम जन्म समयें बालक बे हाथ मस्तकें चडावीने जन्मे छे, तेम ए पण छे, ते भणी एनुं यथाजात एवुं नाम जाणवुं.

हवे ए पच्चीश आवश्यकनो शरवालो मेलवे छे. बेहु वांदणे थइ बे वार नीचुं नमवा रूप बे, बेहु वांदणांना बार आवर्त्त, गुरु चरणें चार वखत मस्तक नमाडवुं ते रूप चार, बे वार अवग्रहमां पेसतां नीचुं नमवा रूप

बे, एकवार अवग्रहथी बाहेर नीकलवा रूप, बीजे वांदणे अवग्रहथी नीकलवुं नथी माटे एकज कह्युं, त्रण गुप्ति अने एक यथाजात एवं पच्चीश आवश्यक ते अवश्य करवां माटे तेनुं आवश्यक एवुं नाम कहीयें.

हवे वांदणां देतां ढ गुरुना अने ढ शिष्यनां वचन मली बार बोल कहे छे.

१ " इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए एवुं शिष्य कहे तेवारें गुरु छंदेण कहे. ए प्रथम गुरु शिष्यनुं वचन.

२ " अणुजाणह मे मिउग्गहं एवुं शिष्य कहे, तेवारें गुरु अणुजाणह कहे.

३ " निसीहि अहो कायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहु सुभेण भे दिवसो वइक्कंतो " एम शिष्य कहे, तेवारें गुरु तहत्ती कहे.

४ " जत्ता भे " शिष्य कहे, तेवारें गुरु तुब्भंपि वट्टए कहे.

५ " जवणिज्जं च भे " एम शिष्य कहे, तेवारें गुरु एवं कहे.

६ " खामेमि खमासमणो " शिष्य कहे, तेवारें गुरु अहमवि खामेमि कहे.

हवे वांदणांना पांच नाम पर्यायरूप कहे छे.

१ वंदन कर्म ते अभिवादन एटले वखाण करवा गुण बोलवा एवी स्तुति रूप.
२ चितिकर्म ते रजोहरणादि उपकरण विधि सहित पणे कुशलकर्मनुं करवुं.
३ कृतिकर्म ते शरीर मस्तकादिकें करी अवनमन करवुं.
४ पूजाकर्म ते प्रशस्त मन, वचन अने कायानी चेष्टा रूप जाणवुं.
५ विनयकर्म ते चार प्रकारें विशेष उद्यमपणुं जाणवुं.

हवे द्रव्य अने भाव वंदनाश्रयी पांच दृष्टांतना नाम कहे छे.

१ वंदनकर्म उपर शीतलाचार्यनो दृष्टांत.
२ चितिकर्म उपर खुड्डाकाचार्यनो दृष्टांत.
३ कृतिकर्म उपर वीराशालवी अने श्रीकृष्णनो दृष्टांत.
४ पूजा कर्म उपर राजाना बे सेवकोनो दृष्टांत.
५ विनयकर्म उपर कृष्ण महाराजना पुत्र पालक अने साम्बनो दृष्टांत.

हवे पासत्थादिक पांच अवंदनीय कहे छे.

१ जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने पोतानी पासें करी मिथ्यात्वादिक पाशमां रहे ज्ञानादिकने पोतानी पासें राखे, पण सेवे नही, ते पासत्थो जाणवो.
२ जे क्रियामार्गने विषे शिथिलता करे, खेद पामे, ते उसन्नो जाणवो.
३ जेनो कुत्सित निंदनीय माठो आचार होय, ते कुशीलीयो जाणवो.

४ जे पासत्था तथा संविग्नजन जेवानी साथें मले तिहां तेवो थाय ते संसक्त.
५ जे पोतानी यथारुचियें प्रवर्त्ते, यद्वत्तद्वत् लवे, उत्सूत्र जाषे, पोताना स्वार्थनो उपदेश आपे, ते यथाछंदो ए पांचने वांदणा न देवा.

हवे निर्ज्जराने अर्थें पांच वांदवा योग्यनां नाम कहे.

१ ज्ञानादिक पांच आचारें करी युक्त जे आचार्य, ते वांदवा योग्य.
२ उपाध्यायजी जे सूत्र जणे, जणावे, आचार्यने युवराज समान.
३ जे तप संयमने विषे साधु समुदायने प्रवर्त्तावे, ते प्रवर्त्तक.
४ जे ज्ञानादिकने विषे सीदाता साधुने संयम मार्गमां स्थिर करे ते थिविर
५ जे गछने कामें शिष्य, उपधिप्रमुखना लाजार्थें विहार करे,ते रत्नाधिक.

हवे पांच स्थानकें वांदणां न देवां, ते कहे छे.

१ जेवारें गुरु विक्षिप्त चित्तें होय, धर्मकथा करवामां व्यग्र होय. तेवारें.
२ जेवारें गुरु संमुख बेठा न होय पराङ्मुख शिष्यादिकने शिक्षा देता होय.
३ संथारादिकें प्रमाद सेवता निद्रालु थका होय, तेवारें न वांदे.
४ आहार करता होय तेवारें वांदणां न देवां.
५ निहार एटले लघुनीति अथवा वडीनीति करता होय, तेवारें न वांदे.

हवे वांदणां देवानां आठ कारण कहे छे.

१ प्रतिक्रमणने विषे वांदणां देवाय. २ स्वाध्याय वांचनादिकने विषे देवाय.
३ काउस्सग्गने विषे वांदणां देवा. ४ पच्चरकाण करवाने विषे.
५ अविनयादि अपराध खमावतां. ६ प्राहुणो यति आवे तेमने.
७ आलोचना लेवाने अर्थें. ८ अंतसमयें अनशन करवा समय.

ए सर्व विधि प्रथम साधु उद्देशी कह्यो छे श्रावकने तो यथायोग्य जिहां घटे तिहां कहेवुं,तिहां पडिक्कमणामां साधु श्रावक बेहुने वांदणां छे तेमां पडिक्कमणे चार वार वांदणां देवां, 'चत्तारिपडिक्कमणे' इति वचनात् ॥

वांदणां देतां गुरुनी तेत्रीश आशातना वर्ज्जन करवी, तेनां नाम कहे छे.

ए एक कारण विना गुरुनी आगल ढूकडो हिंमे, बीजो गुरुने बे पासें ढूंकडो हिंमे, त्रीजो गुरुनी पाछल ढूकडो हिंमे, ए त्रण आशातना हिंमवा आश्रयी थइ. तेवीज रीतें एज त्रण स्थानकें उजो रहेवाथी पण त्रण थाय. तथा तेमज वली ए त्रण स्थानकें गुरुनी नजीक बेसवाथी पण त्रण आशातना थाय. एवं नव आशातना ते गुरुने मार्ग प्र

मुख देखाडवानां कारण विना जो करे, तो थाय, ते केम के ढूकडो रहेवाथी श्वास, छींक, खांसी, थूंक, श्लेष्म, उधरसादिकना बिंदुआ गुरु उपर पडे तो ते दोषरूप आशातना थाय.

१० गुरुनी साथें उच्चार भूमियें गयां थकां गुरुथी पहेलां शौच करे तो.

११ उच्चारादि दिशिथी गुर्वादिक साथें फरी आव्या पछी गुरुथी पहेला गमणागमण आलोचे, तो आशातना थाय.

१२ रात्रियें गुर्वादिक बोलावे, जे कोण सूतो छे, कोण जागे छे एवां वच न सांभलतो जागतो थको पण प्रत्युत्तर न आपे.

१३ कोइ श्रावकादिक आवे थकें गुर्वादिकथी पहेलां पोतेंज बोलावे.

१४ गोचरी लइ आव्या पछी प्रथम बीजा साधु आगल आलोइने पछी गुरु आगल जइ आलोवे तो आशातना थाय.

१५ प्रथम बीजाने अशनादि देखाडी पछी गुरुने देखाडे.

१६ अशनादिकनी प्रथम बीजा यतिने निमंत्रणा करी पछी गुरुने करे.

१७ गुरुने पूछ्या विना सरस आहार बीजा साधुने आपे.

१८ गुर्वादिक साथें जमतां सरस आहार पोतें वावरे.

१९ गुरुयें बोलाव्यो तो अण सांभलतानी परें जुवाब आपे नही.

२० गुर्वादिक साद करे, त्यारें अत्यंत कठिण वचनें जवाब आपे.

२१ गुर्वादिकें बोलाव्यो थको स्थानकें बेठो थकोज उत्तर आपे.

२२ गुर्वादिकें बोलाव्यो ते वखतें कहे के शुं छे, शुं कहो छो?

२३ गुर्वादिकें काम कह्यो थको कहे के तुंज कां नथी करतो?

२४ गुर्वादिक कहे के, तमें वृद्ध तथा ग्लाननुं वेयावच्च करो, तेवारें तेने कहे के एमां जो लाभ जाणो छो,तो तमें पोतें केम नथी करता? तथा बीजा शिष्यादिकने शुं लाभनो खप नथी, जे माटे तेनी पासे नथी करावता? इत्यादि वचनें करी गुरुनो तिरस्कार करे.

२५ गुर्वादिक धर्म कथा कहेता होय, तेवारें तेना गुणनी प्रशंसा न करे,उमनो थको कहे, के तमें गृहस्थने समजावो छो,तेवुं मने समजावता नथी?

२६ गुरु अर्थ पूछे तेवारें कहे के, तमने ए अर्थ शुं नथी सांभरतो?

२७ गुर्वादिक कथा करता होय, तेनी वचमां पोतें बोले.

२८ गुरु कथा करता होय, त्यारें कहे, के हवे भिक्षानो वखत थयो, बंध करो.

२९ गुरु कथा कही रह्या पछी सज्जाने तेज अर्थ चर्ची देखाडे.
३० गुरुने संथारे तथा शय्यायें पोताना पगनुं संघट्टन करे.
३१ गुरुनी शय्यायें संथारें तथा बेसणें पोतें बेसे, आलोटे.
३२ गुरुथी ऊंचे आसने अथवा अधिक आसनें बेसे.
३३ गुरुनी समान आसने बेसे, तथा समान वस्त्र वावरे.

ए तेत्रीश आशातना गुरुनी करवी नही. जे करे ते कुशिष्य जाणवो. ए आशातना टाले, ते शिष्य विनयवंत वांदणां देवा योग्य थाय.

हवे गुरुने वांदणां देतां बत्रीश दोष त्यजवा, ते कहे छे.

१ अनादर पणे संभ्रांत थको वांदे, ते अनादृत दोष.
२ जात्यादि मदें स्तब्ध पणुं राखतो वांदे, ते स्तब्ध दोष.
३ वांदणां देतो अरहो परहो फरे भाडुतनी परें तरत नासे, ते अपविद्ध दोष.
४ सर्व साधुने एकज वांदणे वांदे, ते परिपिंडित दोष.
५ तीडनी पेरें उछलतो वांदे, ते टोलगति दोष.
६ अंकुशनी पेरें रजोहरणने बे हाथे ग्रहीने वांदे, ते अंकुश दोष.
७ काछबानी पेरें रिंगतो रिंगतो वांदे, ते कच्छप रिंगित दोष.
८ माछलानी पेरें एकने वांदी उतावलो छुपी फरी बीजाने वांदे, ते मत्स्योद्वृत्त दोष.
९ कोइ साधुने पोताथी एकादि गुणेंकरि हीन जोइ ते दोष मनमां चिंतवतो ए हीन, अवंद्य छे, एमईर्ष्यासहित वांदे, ते मनःप्रदुष्ट दोष.
१० बे ढिचणनी उपरें हाथ राखीने अथवा बे हाथनी वचमां बे ढिंचण राखीने अथवा बे हाथनी वच्चमां एक ढिचण राखीने अथवा खोले हाथ मूकीने वांदे, ते वेदिकाबद्ध दोष.
११ कांइक मुझने विद्या मंत्रादि शीखवशे? एवी लालचथी वांदे, अथवा एने नही वांदीश तो रीष करशे? एम जाणी वांदे, ते भजंत दोष.
१२ एमने नही वांदीश, तो मुझने मांडलाथी बाहिर अथवा गच्छादिकथी बाहिर काहाडी मूकशे? अथवा शापादिक आक्रोश करशे, इत्यादिक भयें करी वांदे, ते बारमो भयदोष.
१३ जो हुं भलीरीतें वांदीश, तो सर्व लोक मुझने सामाचारीनें विषे पंडित जाणशे, एवुं चिंतवतो गर्वें करी वांदे, ते गारव दोष.

१४ म्हारे एमनी साथें पूर्वे मित्राइ छे,माटे वांदवुं जोइयें, एम मानी वांदे, पण गुरुबुद्धियें नही वांदे ते मित्रदोष.

१५ ज्ञानादिक विना बीजां वस्त्रादिक मने देशे, ए उद्देशी वांदे,ते कारणदोष.

१६ लाजतो चोरनी पेरें छानो रह्यो थको वांदे, रखे कोइ मने उलखी लेशे तो म्हारी हलकाइ थशे,पोताने गोपवतो थको वांदे,ते स्तैन्य दोष.

१७ आहारादिक वेलायें प्रत्यनीकपणे अनवसरें वांदे ते प्रत्यनीक दोष.

१८ क्रोधें धमधमतो वांदे, अथवा क्रोधांत प्रत्यें वांदे, ते रुष्ट दोष.

१९ घणीयें वार वांद्या तो पण रुषताय नथी, अने तुषताय नथी काष्ठनी पेरें देखाय छे, एम तर्जना करतो वांदे, अथवा तर्जनी अंगुल्यादिकें तर्जना देतो थको वांदे, कहे के एने रुठे शुं ? अने तुठे शुं ? ते तर्जित दोष.

२० मायादि कपटें करी वांदे, सम्यग् वांदणां दइ न जाणे, ते शठ दोष.

२१ तमने वांदवाथी शुं फल थाय,एम जात्यादि हेलना करतो वांदे ते हेलित दोष

२२ अर्धा वांदणां देइ मनमां देशादिचार विकथा मांहेली अनेरी कोइ पण विकथा करतो वांदे, ते कुत्सितचित्त दोष.

२३ अंधकारे तथा थांजा प्रमुखने आंतरे दीठुं न दीठुं वांदे ते दृष्टादृष्ट दोष.

२४ मस्तक टाली बे शृंगें वांदणां दीये, ते शृंगदोष.

२५ निर्जराने अर्थें नही पण ए गुरुनो कर दीधा विना छूटको नही, एम राजवेठनी पेरें वांदे, ते करदोष.

२६ गुरुने वांदणां दीधा विना छूटको नथी, क्यारें एनाथी छूटशुं ? एम चिंतवतो वांदे, ते मोचन दोष.

२७ आश्लिष्टाश्लिष्ट दोष चार प्रकारें छे. एक रजोहरणे अने मस्तकें स्पर्शे, ए प्रथम भंग शुद्ध छे. बीजो रजोहरणें फरसे, पण मस्तकें न फरसे, त्रीजो मस्तकें फरसे, पण रजोहरणें न फरसे, चोथो रजोहरण अने मस्तक बेहुने हाथ न लगाडे, आश्लेषे नही. ए पाछला त्रण भांगा अशुद्ध छे, एवा त्रण भांगे वंदन करे, ते आश्लिष्टाश्लिष्ट दोष.

२८ पाठ आलावा असंपूर्ण कहेतो वांदे, ते ऊण दोष.

२९ बे वांदणें वांदीने, पछी म्होटे सादें करी 'मच्छएण वंदामि' एम कहे, ते उत्तर चूलिका दोष.

३० जे मुंगानी पेरें आलावो अण उच्चरतो वांदे, ते मूकदोष.

३१ जे आलावाने अत्यंत महोटे सादें उच्चरतो वांदे, ते ढढ्ढर दोष.
३२ जे रजोहरणने ग्रही नमाडतो वांदणां आपे, ते चुडलिक दोष.

ए बत्रीश दोष मांहेलो एक पण दोषने अंगीकार करतो एवो साधु, वांदणां संबंधि निर्ज्जरानो लाभ न पामे, माटें बत्रीश दोषें परिशुद्ध थका गुरुने वांदीयें, तो स्वल्प कालमां स्वर्ग मोक्षनां सुख पामीयें. ए सर्व अनुष्ठान, सिद्धांतमां साधु उद्देशीने कह्युं छे अने श्रावकने यथायोग्य पणे ज्यां घटे, तिहां कहेवुं.

हवे भाष्यमांहे अवग्रह, बे प्रकारनां कह्यां छे. तेमां इहां १९८ बोलमां मात्र एकज प्रकार गण्यो छे. तिहां साधुथी साधुने तथा श्रावकने मांहोमांहे साडा त्रण हाथनुं वेगलुं अवग्रह होय तथा साधुथी साध्वीने तथा श्राविकाने मांहोमांहे तेर हाथनुं अवग्रह होय अने साध्वी तथा श्राविकाने मांहोमांहे साडा त्रण हाथनुं अवग्रह होय, तेटला अवग्रह मांहे गुरुनी आज्ञा लीधा विना प्रवेश करवो कल्पे नही.

ए रीतें १९८ बोल कह्या, तेनी साथें गुरुवंदन भाष्यमां कह्या प्रमाणें वांदणां देवानां चार स्थानक तथा चार जण पासें वांदणां न देवराववां. अने चार जण पासें वांदणां देवराववां तथा एक भेद गुरु स्थापनानो वली बे प्रकारनो विधि अने अवग्रहना बे भेद मांहेलो एक भेद एमां लीधो छे अने एक नथी लीधो ए शोल भेद मेलवतां २१४ भेद थाय. ते मांथी छ दोषना छ भेद, १९८ भेदमां दाखल करेला छे, ते काहाडी नाखीयें, तेवारें २०८ भेद थाय. तेनी साथें वांदणांना सूत्रानां पद. ५८ तथा अक्षर २२६ भेलवीयें,तेवारें भाष्योक्त ४९२ बोल गुरु वंदनना थाय ॥

एम गुरु समीपें वांदणां बे वार दीजें. ए वांदणां देतां ज्ञानादि त्रण निर्मल थाय. ए त्रीजुं आवश्यक पूरुं थयुं. अने चोथुं खमासमण थयुं. इहां पोताने मुखें संध्याकाल होय तो चउविहारनुं पच्चरकाण अने सवार होय तो नवकारसी पोरसी प्रमुखनुं पच्चरकाण मनने भावें धारवुं तेथी तपाचार निर्मल थाय ॥ इति तृतीयावश्यकं समाप्तं ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ प्रतिक्रमण नामक आवश्यक प्रारंभः ॥

यद्यपि ए प्रतिक्रमणादि क्रिया विधिनो व्यवहार सर्व भाव गुरुनी साक्षीयें प्रवर्त्ते अने तथाविध गुरुने अभावें प्रथम शुद्ध क्षेत्रने विषे उत्तर

दिशिथी अथवा पूर्वदिशिथी यावत्कथिक ज्ञानादिकनी स्थापना आगल क्रिया करीयें, तेने अजावें इत्वरिक पुस्तकादिकनी स्थापना करवी, हमणां तो श्रीविधिपक्ष गछने विषे ज्ञाननीज स्थापना छे माटे ज्ञान स्थापन करी तेनी आगल सर्व क्रिया करीयें, ते स्थापना क्रिया करनाराथी जघन्य पणे तो चार अंगुल उंचा खेत्रने विषे सिंहासनादिकनी उपर प्रतिष्ठित करीयें, अथवा सामाचारीने विषे त्रण नवकार गणी "पंचिंदिय संवरणो" इत्यादि बे गाथायें करी इव्य जावथी गुरु स्थापना करीयें. पछी साधु श्रावक साडा त्रण हाथ अने साधवी, श्राविका, तेर हाथ प्रमाण स्थापनाजीथी वेगलां रही प्रतिक्रमणक्रिया करे, अन्यथा तीर्थंकर अदत्त, गुरुअदत्त क्रिया करीने दाण चोरनी पेठें क्रिया चोर थाय. परिहार्य अवधि क्रिया संसारहेतु छे, माटे सार्वत्रिक अपरिहार्य सूक्ष्मावधि क्रियाने आगल करीनें पण अवधि अनुष्ठानथी अणकीधुंज सारुं. एथी जिनाज्ञा जांजे, एवुं कहीने मूलथकी क्रियानो अन्यासज जे मूकी आपे, ते प्राणी उत्सूत्रजाषी, महाप्रमादी, प्रायः बहुल संसारबंधक जाणवो ॥ ॥ जे माटे ॥ अवहिकया वरमकयं, उस्सुअ वयणं जणंति समयन्नुं ॥ जम्मा पायछित्तं, कए लहुअं अकए गुरुअं ॥ १ ॥ एम जाणी सर्व महाक्रियाना पाया रूप इरियावहियं पडिक्कमिने सामायिक लीजें ॥ इति पीठिका ॥

हवे एक जण उजो थइने इछामि खमासमण पूर्वक इछाकारेण संदिस्सह जगवन्! चोथा आवश्यक जणी लघु अतिचार आलोउंजी? गुरु कहे, आलोएह. एम कही लघु अतिचार कहे, तेनो पाठ मात्र लखीयें छैयें, पण एनो सर्व अर्थ पाक्षिकादि प्रतिक्रमण विधिमां बृहदतिचारोना अर्थमां सामान्य पणे लखाशे, तिहांथी जोइ निर्णय करी लेवो.

॥ अथ लघुअतिचार प्रारंजः ॥

॥ प्रथम नवकार कहीने, इछं अरिहंतदेव, सुसाधु गुरु, जिनप्रणितधर्म, जावतो समकित प्रतिपालुं, इव्यतो लौकिक लोकोत्तर देवगत, गुरुगत, पर्वगत, मिथ्यात्वविषे जयणा करुं. ए श्री समकिततणा पांच अतिचार शोधुं. संका, कंखा, वितिगिछा, परपासंमीपरसंसा, परपासंमी संथुउ, ए पांच अतिचारमांहे जि

को कोइ अतिचार हुउ होय, ते सवि हुं, मन, वचन, कायायें करी मिछामि दुक्कडं.

१ बार व्रतमांहे पहेलुं प्राणातिपातविरमण व्रत, स्थूल बेंदियादिक त्रस जीव निरापराध, उपेतकरण संकल्पी करी हणवा नियम, आरंभें जयणा ॥ ए पहिला प्राणातिपातविरमणव्रत तणा पांच अतिचार शोधुं. बंधे,वहे,छविछेए, अइभारे, भत्त पाणवुछेए ॥ ए पांच अतिचारमांहिजिको कोइ० ॥ १ ॥

२ बीजुं स्थूलमृषावादविरमणव्रत पंचविध. कन्नालीए, गोवालीए, भूमालीए, नासावहारे, कूड सक्खिज्जे, ए पांच मोटकां कूडां आपणने काजें, स्वजनने काजें, धर्मने काजें मूकी, पर काजें कूडुं बोलवा नियम. सूक्ष्म अलिक तणी जयणा ॥ ए बीजा० ॥ सहस्साभक्खाणे, रहस्साभक्खाणे, सदारामंतभेए, मोसोवएसे, कूडलेहकरणे ॥ ए पांच अतिचार मांहि जिको कोइ० ॥२॥

३ त्रीजुं स्थूल अदत्तादानविरमणव्रत. सचित्त, अचित्त, राजनिग्रह कारीउं. पीयारुं अणदीधुं लेवा नियम. सूक्ष्म तृण इंधण पथिपतित ववहारनियोगे, दाणचोरीजयणा ॥ ए त्रीजा० ॥ तेनाहडे, तक्करप्पउगे, विरुद्धरज्जाइक्कमे, कूड तुल्लकूडमाणे, तप्पडिरूवगववहारे ॥ ए पांच अतिचार मांहि जिको० ॥ ३ ॥

४ चोथुं शीलव्रत यथा शक्तें, स्वदारासंतोष, परदाराविवर्जनारूप ॥ ए चोथा० ॥ इत्तरपरिगहियागमणे, अपरपरिगहिया गमणे, अनंगकीडा, परविवाहकरणे,कामभोगतिव्वाभिलासे ॥ ए पांच० ॥

५ पांचमुं परिग्रहपरिमाणव्रत नवविध. खित्त, घर, हट्ट, वाडिय, कुविय, धण, धन्न, हिरण्ण, सुवण्ण, अइपरिमाण दुप्पय चउप्पय मिय, नवविह परिग्गह वयंतो ॥ ए पांचमा० खित्तवत्थुप्पमाणाइक्कमे, हिरण्णसुवण्णप्पमाणाइक्कमे, धणधन्नप्पमाणाइक्कमे, दु

प्पयचउप्पयप्पमाणाइक्कमे, कुवियप्पमाणाइक्कमे ॥ ए पांच० ॥ ५ ॥

६ बठ्ठुं दिशिव्रत त्रिविधें जाणवुं. उड्ढदिसिवए, अहोदिसिवए, तिरियदिसिवए ॥ ए बठा० ॥ उड्ढदिसिप्पमाणाइक्कमे, अहोदिसिप्पमाणाइक्कमे, तिरिय दिसिप्पमाणाइक्कमे, खित्तवुड्ढि सयंतरध्धा ॥ ए पांच० ॥

७ सातमुं नोगोपनोगव्रत, द्विविध. नोजनतः कर्मतश्च तत्र नोजनतः " सच्चित्तदव्व विगइ, उवाण तंबोल चीर कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंन दिसि न्हाण नत्तेसु ॥ १ ॥ ए सातमा० ॥ सचित्त आहारे, सचित्त पडिबध्धआहारे, अप्पोसहि नरकणया, डुप्पोसहि नरकणया, तुञ्छोसहि नरकणया ॥ ए पांच० ॥

॥ कर्मतो पन्नरे कर्मादान. इंगाल कम्मे, वण कम्मे, साडी कम्मे, नाडी कम्मे, फोडी कम्मे, दंत वाणिज्जे, लरक वाणिज्जे, रस वाणिज्जे, विस वाणिज्जे, केस वाणिज्जे, जंतपीलण कम्मे, निल्लंबण कम्मे, दवग्गिदावणया, सर दह तलाव सोसणया, असई पोसणया, ए पन्नर कर्मादान स्थूल नियम सूक्ष्म तणी जयणा ॥ ए०

८ आठमुं अनर्थदंमविरमणव्रत चतुर्विध. अवझाणायरिए, प्पमायायरिए, हिंसप्पयाणे, पावकम्मोवएसे ॥ ए आठमा० ॥ कंदप्पे, कुक्कुइए, मुहरिए, संजुत्ताअहिगरणे, उवनोग परिनोग अइरेगे ॥ ए पां०

९ नवमुं सामायिकव्रत. सामाइय नामं, सावज्जजोगपरिवज्जणं, निरवज्जजोग आसेवणं च ॥ ए नवमा० ॥ मणडुप्पणिहाणे, वंय डुप्पणिहाणे, काय डुप्पणिहाणे, सामाइयस्स अकरणया, सामाइयस्स अणवुठिअस्स करणया ॥ ए पांच अतिचार० ॥ ९ ॥

१० दशमुं देसावगाशिकव्रत. दिसिवयग्गहियस्स, दिसापरिमाणस्स, पइदिणं परिमाणकरणं ॥ ए दशमा० ॥ आणवणप्पउगे, पेसवणप्पउगे, सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ, बहियापुग्गलपरकेवे ॥ ए पांच अतिचार मांहिजिको अतिचार० ॥ १० ॥

११ इग्यारमुं पौषधव्रत, चिहुं भेदें जाणवुं. आहारपोसहे, सरीर सक्कारपोसहे, बंभचेरपोसहे, अवावार पोसहे ॥ ए इग्यारमा० ॥ अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय सिज्जासंथारे, अप्पमज्जिय डुप्पमज्जिय सिज्जासंथारे, अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय उच्चारपासवणभूमि, अप्पमज्जिअ डुप्पमज्जिअ उच्चारपासवणभूमि, पोसहोववासस्स, सम्मं अणणुपालणया ॥ ए पांच० ॥ ११ ॥

१२ बारमुं अतिथिसंविभागव्रत, अतिथिसंविभागोनाम, नाया गयाणं, कप्पणिज्जाणं, अन्नपाणाइणं, दवाणं, देस काल, सध्धा सक्कार, कम्मजोए, पराइभत्तिए, आयाणुग्गह बुध्धिए, संजयाणं दाणं ॥ ए बारमा० ॥ सचित्त निख्खेवणया, सचित्त पिहणया, कालाइक्कम दाणे, परोवएसे, मछरया ॥ ए पांच०॥ १२ ॥

॥ संलेषणा तणा पांच अतिचार शोधुं. इहलोगासंसप्पउगे, परलोगासंसप्पउगे, जीविआसंसप्पउगे, मरणासंसप्पउगे, कामभोगासंसप्पउगे ॥ ए पांच अतिचार मांहिजिको० ॥

॥ एवंकारें श्री समकित मूल बार व्रतविषे पंच्याशी अतिचार मांहे जिको कोइ अतिचार, अनाचार, अतिक्रम, व्यतिक्रम हुउ होय तथा जाणते, अजाणते, सूक्ष्म, बादर, कानो, मात्र, मिंमी, पद, अक्षर, उगे, अधिको, हलवो, भारी, आगल, पाछल कह्यो, कहेवाणो होय, ते सवि हुं, मन, वचन, कायायें करी मिच्छामि डुक्कडं॥

॥ देसावगासिअं उवभोगं परिभोगं, पच्चख्खामि अन्नछणाभोगेणं, सहस्सागारेणं, महत्तरागारेणं, सव समाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि ॥ इति लघुअतिचाराः समाप्ताः ॥ ए पडिक्कमणनामें चोथुं आवश्यक, पूरुं थयुं अने पांचमुं खमासमण थयुं.

हवे पांचमुं काउस्सग्ग नामें आवश्यक प्रारंभीयें छैयें.

पछी इछामि खमासमण पूर्वक हेठ बेशीने इछाकारेण संदिस्सह भग

वन्! चैत्यवंदन करुं जी,एम कही चैत्यवंदननो पाठ कहे ते लखीयें छैयें.

॥ अथ चैत्यवंदन प्रारंभः ॥

इछं॥ जय जय महाप्रभु,देवाधिदेव ॥ सर्वज्ञ श्री
वीतराग देव ॥ मुह दिठो परमेसर, सुंदर सोमसो
हाव ॥ भूरि भवांतर संचिउ, नठो सो सवि पाव ॥

अर्थः—हे महाप्रभु, हे देवाधिदेव, हे सर्वज्ञ हे श्रीवीतराग देव! तमें निरंतर जयवंता वर्त्तो. तमारुं (सुंदर के०) मनोहर सौम्याकृतिवाळुं (मुह के०) मुख (दिठो के०) दीठुं, तेथी महारुं (भूरि के०) घणा एवा भवांतरने विषे (सचिउ के०) संचित करेलुं एवुं जे (पाव के०) पाप (सो के०) ते (सवि के०) सर्वे (नठो के०) नष्ट थयुं ॥

जे में पाप कियां बाळा पणे, अहवा अन्नाणे अन्न भवं
तर॥ सो सो खंम जयो परमेसर, तुह मुह दिठं सिरि
पास जिणेसर॥ पास पसी पसाउ करि, वीनतडी अव
धार॥ संसारडो बीहामणो, सामी आवागमण निवार॥

अर्थः—वळी (बाळापणे के०) बाल्यावस्थानेविषे (अन्नाणे के०) अज्ञानपणामां (अहवा के०) अथवा (अन्नभवंतर के०) अन्य भवांतरोने विषे (जे के०) जे कांइ (में के०) महारे जीवें (पाप कियां के०) पाप कर्यां. (सो सो के०) ते ते (सिरिपासजिणेसर के०) हे श्रीपार्श्व जिनेश्वर! (तुहमुहदिठं के०) तहारुं मुख दीठुं, तेथी (खंम के०) खंमित थयां नाश पाम्यां. माटे हे परमेश्वर! तमें जयवंता वर्त्तो. तथा (पास के०) हे पार्श्वनाथ प्रभो! तमें (पसी के०) प्रसन्न थाउ. वळी तमें महारी उपर (पसाउ करि के०) प्रसाद करीने राग द्वेषादि चोरोयें करी बिहामणां देखाव वाळो जे आ संसार छे, तेमां नरकादिक चार गतिने विषे आवागमन एटले आववुं ने जवुं अर्थात् संसार भ्रमण तेनो (सामि के०) हे स्वामी! तुं (निवार के०) निवारण कर॥

ए प्रमाणें पोताना पापना निवारणमाटे प्रभुने स्तवीने वळी पण प्रभुनुं पूजन करवाथी पापनिवारण थाय, ते पूजन पण हाथे करीनेज थाय छे,

माटे जे हाथथी तीर्थंकरोनुं पूजन थाय, ते हाथने सुलक्षण जाणवा, तथा ते पूजन रहित हाथ, ते दुःखने प्राप्त थाय छे, ते वात आ गाथायें कहे छे.

हत्थडा ते सुलस्कणा, जे जिनवर पूजंत ॥
एके पुसें बाहिरा, सो परघर काम करंत ॥

अर्थः—वली पण स्तुतिकार कहे छे के, हे जगवन्! हुंतो एम मानुं छुं के मनुष्योना (हत्थडा के०) हाथ, (ते सुलस्कणा के०) सुष्ठुलक्षण युक्त जाणवा. ते कया हाथ सुलक्षण जाणवा? तो के (जे के०) जे हाथ, (जिनवर के०) श्रीजिनवरने (पूजंत के०) प्रतिदिन पूजे छे. त्यारें जे जिनवरने पूजता नथी, ते हाथने शुं करवुं पडे छे ? तो के जे हाथ (एकेपुसें के०) एक श्रीजिनवर पूजनरूप पुण्यें करीने (बाहिरा के०) बाहिर छे, ते (परघर के०) पारका घरनां (काम करंत के०) काम काज करे छे, अर्थात् पारकुं दासपणुंज करे छे, ते हाथने सुख मलतुं नथी, माटे सुलक्षण नथी.

कवणें वाडी वावियां, कवणें गूंथ्यां फूल ॥
कवण जिनवर चढावियां, जावसरीसां मूल ॥

अर्थः—फूलो जे छे, ते कोइकें तो वाडीमां वावी करीनें उत्पन्न कर्यां छे, वली कोइकें एटले मालीयें ते फूलोनें मालामां गुंथेलां छे, अने कोइकें ते गुंथेली माला श्रीजिनवरनी प्रतिमा उपर चढावी. ते सर्वेयें हाथे करी जिनपूजन माटे पुष्पप्रयास लीधो, परंतु ए त्रणेमां फूलनुं मूल्य तो पोताना आत्मजाव उपरज छे, कारण के जो वावणी करनारें परमेश्वरने चडाववा निमित्तें वाव्यां होय, तो तेनो जाव श्रेय छे, जो मात्र आजीविका चलाववा निमित्तें वाव्यां होय तो तेवाज जाव मुजब तेने लाज थाय. तेमज गुंथनारें पण जो परमेश्वरने चडाववा माटे माला गुंथी होय तो तेने श्रेय फल थाय, परंतु जो आजीविका चलाववा निमित्तें गुंथी होय, तो तेने तेवुंज फल थाय. तथा चडावनारने तो द्रव्यें अने जावें ए बेहु प्रकारें लाजज छे; परंतु परिपूर्ण फल तो जे आत्मजावथी पुष्प चडावे तेनेज थाय छे.

हवे जगवाननुं पूजन केवा पुष्पोयें करवुं, ते कहे छे.

वाडी वेलो महोरीयो, सोवन कूंपलिएण ॥
पास जिनेसर पूजियें, पंचे अंगुलिएण ॥

अर्थः—वाडीने विषे जे फूलोनो वेलो मोहोर्यो होय, तेनी सुवर्णना रंगसमान रंगवाली कूंपलीयें करी अर्थात् सुवर्णना रंगसमान नविन अंकुरोरूप पुष्पेंथी पांचे हाथनी आंगुलीयें करीने श्रीपार्श्वजिनेश्वरने पूजीयें.

हवे वर्त्तमान चोवीश तीर्थंकरोना शरीरवर्ण कहे छे.

दो धोला दो सामला, दो रत्तोप्पलवन्न ॥
मरगयवन्ना डुन्नि जिण, सोलस कंचनवन्न ॥

अर्थः—आठमा अने नवमा ए (दो के०) बे तीर्थंकर (धोला के०) उज्ज्वल वर्णे छे, तथा वीशमा अने बावीशमा ए (दो के०) बे तीर्थंकर (सामला के०) श्यामवर्णे छे, अर्थात् अंजनसरखा वर्णवाला छे, तथा छठा अने बारमा ए (दो के०) बे तीर्थंकर, (रत्तोप्पलवन्न के०) रक्तोत्पल वर्ण एटले राता कमल समान वर्णवाला छे, तथा उंगणीशमा अने त्रेवीशमा ए (डुन्नि के०) बे तीर्थंकर (मरगयवन्ना के०) नीलवर्णवाला छे. शेष (सोलस के०) शोल तीर्थंकर जे छे, ते (कंचनवन्न के०) कंचनवर्ण शरीरवाला छे.

नियनिय मान कराविया, भरहेस नयणानंद ॥
ते में भावें वंदिया, ए चोवीसे जिनंद ॥ १ ॥

अर्थः—ए पूर्वोक्त (चोवीसे जिनंद के०) चोवीशे तीर्थंकरना चोवीश बिंब श्रीअष्टापद पर्वतनी उपर (नियनियमान के०) निजनिज शरीरने मानें एटले जे जे तीर्थंकरना शरीरनी उंचाइनुं जेटलुं जेटलुं मान हतुं तेटलाज प्रमाण वालां बिंब (भरहेस के०) भरतेश एटले भरतेश्वरें कराविया छे, ते सर्व चोवीशे बिंब (नयणानंद के०) नयन जे चक्षु तेने आनंदनां आपनारां छे, (ते के०) ते चोवीशे जिणंदने में भावें करीने (वंदिया के०) वांद्या ॥ १ ॥

वत्थु ॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं ॥ पढम संघयणि ॥ उक्कोसयसत्तरि सय ॥ जिणवराण विहरंत लब्भइ ॥ नव कोडिहिं केवलिण ॥ कोडि सहस्स नव साहु गम्मइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि ॥ बिहु कोडिहिं वरनाण ॥ समणह कोडि सहस्स डुअ ॥ थुणिसुं निच्च विहाण ॥ २ ॥

अर्थः—(कम्मभूमिहिं के०) असि, मषी अने कृषि रूप कर्म जिहां वर्त्ते छे, एटले असि, मषी अने कृषि, ए त्रण. तेमां तरवार प्रमुख शस्त्रनी ज्यां प्रवृत्ति होय, तेने असि कहियें, अने लिखित प्रमुख ज्ञान ज्यां होय, तेने मषी कहियें तथा क्षेत्र, वाडी प्रमुखे ज्यां आजीविका होय तेने कृषि कहियें. ए त्रणें करी जिहां आजीविका चाले छे, तेने कर्मभूमिका कहियें. (कम्मभूमिहिं के०) ते कर्मभूमिनां भरतादिक पन्नर क्षेत्रने विषे (उक्कोसय के०) उत्कृष्ट पदें (जिणवराण के०) जिनवरो एटले जे तीर्थंकरो छे, (पढम संघयणि के०) प्रथम संघयण जे वज्रऋषभनाराच तेना धणी एवा (सत्तरिसय के०) सप्ततिशत एटले एकशो ने सीत्तेरनो समुदाय, (विहरंत लब्भइ के०) विचरतो लाभे, ते श्रीअजितनाथनी वारें एटला लाभे, वली (नवकोडिहिं केवलिण के०) केवलज्ञानी भगवाननी नव कोटि होय, तथा (कोडिसहस्सनव के०) नव सहस्र कोटि (साहु के०) साधु (गम्मइ के०) जिनागमथकी जाणियें, अने (संपइ के०) संप्रति एटले वर्त्तमान कालें (जिणवरवीस के०) श्रीसीमंधर स्वामी प्रमुख वीश जिनवर विचरता पामियें, तथा (मुणि बिहुं कोडिहिं के०) बे क्रोड मुनि, (वरनाण के०) प्रधान केवल ज्ञानना धरनार, एवा केवलज्ञानी वली (कोडि सहस्स दुअ के०) द्विसहस्र कोटि (समणह के०) श्रमण एटले साधु विचरे छे, ते सर्वने (थुणिसुं के०) थुणीयें स्तवियें, (निच्च विहाण के०) नित्य प्रभातें सूर्योदयें निरंतर स्तवियें ॥ २ ॥

जयउ सामी जयउ सामी ॥ रिसह सिरि सत्तुंजि ॥ उ
ज्जिंत पहु नेमि जिण ॥ जयउ वीर सच्चउरि मंमण ॥ भ
रुअच्छहिं मुणि सुव्वय ॥ मुहरि पास दुह दुरिअ खंम
ण ॥ अवर विदेहिं तिच्छयरा ॥ चिहुं दिसि विदिसि जिं
केवि ॥ तीआणागय संपइअ, वंदुं जिण सव्वेवि ॥ ३ ॥

अर्थः—हवे (सिरि सत्तुंजि के०) श्रीशत्रुंजय तीर्थ उपरें (सामीरिसह कें०) श्रीऋषभस्वामी (जयउ के०) जयवंता वर्त्तो, वली (उज्जिंत के०) श्रीगिरनारजी उपर (पहु के०) प्रभु एटले सामर्थ्यवाला एवा (नेमिजिण के०) श्रीनेमिजिनेश्वर ते (जयउसामी के०) स्वामी जयवंता वर्त्तो,

वली (वीर के०) महावीर स्वामी ते (सच्चउरि मंमण के०) सत्यपुरी एटले साचोर नगर तेना मंमण एटले आनूषण रूप ते जयवंता वर्त्तो, वली (नरुअच्छहिं मुणिसुव्वय के०) श्रीनरूच नगरने विषे मुनिसुव्रतनाथ अने (मुहरि के०) मुहरि गामना नायक, (पास के०) श्रीपार्श्वनाथ, ए जिन पंचक केहवुं छे? तो के (डुहदुरिय खंमण के०) दुःख अने दुरित जे पाप तेनुं खंमन एटले विनाश करनारुं छे, (अवर के०) अपर एटले बीजा (विदेहिं के०) पांच महाविदेहने विषे (तिच्छयरा के०) जे तीर्थंकर छे, (चिहुंदिसिविदिसि के०) पूर्वादि चार दिशि अने अग्निकोणादि चार विदिशि, ए आठने विषे (जिंकेवि के०) जे कोइ पण (तीआणागय संपइअ के०) अतीतकाल, अनागतकाल अने संप्रति जे वर्त्तमानकाल, ए त्रण काल संबंधि (जिणसव्वेवि के०) सर्वे जिनेश्वर ते प्रत्यें पण (वंदु के०) हुं वांदुं छुं ॥३॥

सत्ताणवइ सहस्सा, लरका छप्पन्न अठ कोडीउ ॥
पंचसया चउतीसा, तिअलोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥

अर्थः—हवे निरंतर स्मरणने अर्थे शाश्वतां जिनप्रासादनी संख्या कहे छे. (अठकोडीउ के०) आठ क्रोड, (लरका छप्पन्न के०) छप्पन लाख, (सत्ताणवइ सहस्सा के०) सत्ताणुहजार, (पंचसया चउतीसा के०) पांचशें ने चोत्रीश एटला (तिअलोए के०) त्रण लोकने विषे (चेइए के०) चैत्य एटले जिनप्रासाद छे, ते सर्व प्रत्यें (वंदे के०) हुं वांदुं छुं ॥ ४ ॥ इति ॥

एवी रीतें चैत्यवंदन कही रह्या पछी उना थइने उवसग्गहर स्तोत्रनो पाठ कहे, ते नीचें लखीयें छैयें.

॥ अथ उपसर्गहर स्तवनं ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥१॥

अर्थः—जेना शासनना (उवसग्गहरं के०) दुःख संकटादिक उपसर्गनो हरनार, एवो (पासं के०) पार्श्वनामें यक्ष छे, एवा श्री (पासं के०) पार्श्वनाथ स्वामीप्रत्यें (वंदामि के०) हुं वांदुं छुं. अथवा राग, द्वेष अने मोह ए त्रणना करेला जे जन्म, जरा अने मरणरूप उपसर्ग, ते

प्रत्यें प्रज्ञु पोतें हरनार छे. एवा (पासं के०) प्राशं एटले प्रशब्दें करी गइ छे, आशा शब्दें करी आशा वांछा जे थकी एवा श्रीपार्श्वनाथ ते प्रत्यें हुं वांछुं छुं. वली श्रीपार्श्वनाथ केहवा छे ? तो के, (कम्मघणमुक्कं के०) कर्मना घन एटले समूह ते थकी मुक्त छे, रहित छे; अथवा शुद्धचेतनरूप चंद्रमाने ढांकनार एवो कर्मरूप घन एटले मेघ तेथकी मुक्त छे, रहित छे. वली (विसहर के०) विषधर जे द्रव्यथी तिर्यंच सर्प, ते संबंधी जे (विस के०) विष, एटले दृष्टिविष, आशीविष, लालाविषादिक ते प्रत्यें (निन्नासं के०) निर्नाशं एटले अतिशयें करीने नाशना करनार छे. अथवा जावथी विषधर ते मिथ्यात्वी जीव संबंधी जे विष, ते मिथ्यादृष्टिपणुं जे अनादि अनंत कालनो माहामोहरूप सर्पनुं विष, ते जावथी सर्व आत्मप्रदेशें व्याप्युं छे, एवुं जे मिथ्यात्वरूप विष, तेना अतिशयें करी नाशना करनार छे. वली श्री पार्श्वनाथ केहवा छे ? तो के (मंगल के०) दुःखनो विलय, ते उपद्रवनिवृत्ति तेने मंगल कहियें, तथा (कल्लाण के०) सुखनी वृद्धि तेना (आवासं के०) आवास छे ॥ १ ॥

हवे मंत्रगर्भित एवुं जे आ स्तवन, तेनो महिमा कहे छे.

विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥
तस्स गह रोग मारी, दुठजरा जंति उवसामं ॥ २॥

अर्थः—(जो के०) जे (मणुउ के०) मनुष्य, श्रीपार्श्वनाथना नाम गर्भित एवो (विसहरफुलिंगमंतं के०) विषधर स्फुलिंगनामा अढार अक्षरनो मंत्र जे एहीज स्तोत्रमांथी निकले छे, ते मंत्रने (सया के०) सदा सदैव निरंतर (कंठे के०) कंठने विषे (धारेइ के०) धरे, स्मरे, (तस्स के०) तेहना (गह के०) सूर्यादिक ग्रह, (रोग के०) कफ कुष्ट जलोदरादिक रोग, (मारी के०) मर्की उपद्रव, (दुठजरा के०) दुष्ट दुर्जन एवा शत्रु तथा एकांतरिया प्रमुख ज्वर, ते (उवसामं के०) उपशामं एटले उपशमजाव प्रत्यें अर्थात् नाश प्रत्यें (जंति के०) पामे छे ॥ २ ॥

चिठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होई ॥
नर तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख दोहग्गं ॥ ३ ॥

अर्थः—अथवा हे नाथ ! ए ताहरो (मंतो के०) ते विषधर स्फुलिंग

नमें जे मंत्र, ते तो (दूरे के०) दूर एटले वेगळो (चिठ्ठउ के०) तिष्ठतु एटले रहो. पण (तुज्झ के०) ताहारो (पणामोवि के०) प्रणाम एटले नमस्कार करवो, ते पण (बहुफलो के०) बहुफळ एटले घणां एवा सौभाग्य, आरोग्य, धन, धान्य, कळत्र, पुत्र, द्विपद, चतुःपद, चक्रवर्त्ती अने इंद्रादिकनी पदवीना फळनो आपनार (होइ के०) छे, तेहीज कहियें छैयें. इह लोकना फळनुं तो शुं कहेवुं? पण तमोने नमस्कार करनार जे सम्यग्दृष्टि जीव छे, ते प्रायें वैमानिकदेवोमां उत्पन्न थाय छे, अने कदाचित् पूर्वबद्धायु छतां नवपरंपरायें करीने जीव, (नरतिरिएसुवि के०) नर एटले मनुष्यने विषे अथवा तिर्यंचने विषे उत्पन्न थाय छे, तो पण त्यां तेने शारीरिक तथा मानसिक दुःख अने दारिद्र प्राप्त न थाय, केम के, जो मनुष्यमां उपजे, तो रोगादिकें रहित थाय,अने समस्त हितार्थें करी संपत्तिमान् थाय माटे तेने शारीरिक अने मानसिक दुःख प्राप्त न थाय, तथा ऋद्धिसमृद्धिमान् होय पण दरिद्री पणे न होय, अने तिर्यंचमां उपजे, तो पण ते कनक, रत्न, चिंतामणि, कल्पद्रुम, पट्ट, तुरंगम,जय कुंजरादिकने विषे उपजे, तिहां ते पूजा पामे, अथवा ते मनुष्य पण केहवा ? तो के तिरिए एटले पशु समान एवा बाळ गोपाळ कृषीवलादिक तेने विषे पण कदाचित् कर्मना वशथकी उपजे. कोण उपजे ? तो के तुम प्रत्यें प्रणामना करनारा एवा (जीवा के०) जीव, ते तो तिहां पण (दुक्ख दोहग्गं के०) दुःख अने दौर्भाग्य प्रत्यें (पावंति न के०) न पामे छे ॥३॥

तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए ॥
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥

अर्थः–(चिंतामणि के०) चिंतामणिरत्नथकी अने (कप्पपायवब्भहिए के०) कल्पपादप एटले कल्पवृक्षथकी अधिक एवो (तुह के०). तमारुं (सम्मत्ते के०) सम्यक्त्व दर्शन ते (लद्धे के०) पामे छते, (अविग्घेणं के०) विघ्न रहित पणे (जीवा के०) भव्य जीव, (अयरामरं के०) अजर एटले ज्यां जरा नथी, अने अमर एटले ज्यां मरण नथी, एवुं (ठाणं के०) स्थान, ते प्रत्यें (पावंति के०) पामे छे, पण तमारुं सम्यग्दर्शन पाम्या विना कोइ जीव, मोक्ष प्रत्यें पामे नही ॥ ४ ॥

इअ संथुअ महायस, नत्तिप्नर निप्नरेण हिअएण ॥ ता
देव दिज्ज बोहिं, नवे नवे पास जिणचंद ॥५॥ इति ॥

अर्थः–(महायस के०) हे महायशः ! एटले हे त्रैलोक्यव्यापकयशः ! (नत्तिप्नर के०) नक्तिने समूहें करी (निप्नरेण के०) पूर्ण नरें एटले नक्तिना समुदायें करी परिपूर्ण नयुं एवुं, (हिअएण के०) हृदय एटले चित्त तेवा चित्तें करी में सेवकें (इअ के०) ए प्रकारें तुजने (संथुअ के०) संस्तुतः एटले स्तव्यो. (ता के०) ते कारण माटे (देव के०) हे देव ! निज स्वरूप रूपवनने विषे क्रीडाना करनार एवा (पासजिणचंद के०) हे पार्श्वजिन चंद ! एटले समीप रह्या जे श्रुतधरादिक जिन तेने विषे चंद्रमा समान एवा हे श्रीपार्श्वनाथ ! तमें मुज नणी (नवेनवे के०) जन्म जन्मने विषे एटले ज्यां सुधी हुं मुक्ति प्रत्यें नही पामुं, त्यां सुधी (बोहिं के०) बोधिं एटले जिनधर्मनी प्राप्ति ते प्रत्यें (दिज्ज के०) दीउ, एटले आपो. किं बहुना एटले घणुं शुं कहुं ? ॥ ५ ॥ इति उवसग्गहर स्तवः समाप्तः ॥

ए रीतें उवसग्गहरनो पाठ कहीने पढी उनो थकोज जं किंचि नाम तिन्नंनो पाठ कहे, ते लखियें ढैयें.

जं किंचि नामतिढं, सग्गे पायालि तिरिय लोएमि ॥
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सवाइं वंदामि ॥ १ ॥

अर्थः–(सग्गे के०) स्वर्गे एटले ऊर्ध्वलोकने विषे तथा (पायालि के०) पाताले एटले अधोलोकने विषे अने (तिरिय लोएमि के०) तीर्ज्ञा लोकने विषे (जाइंजिणबिंबाइं के०) जे श्रीजिन तीर्थंकरनां बिंब ढे, (ताइं सवाइं के०) ते सर्वे जिनबिंब प्रत्यें किं बहुना घणुं शुं कहियें पण (जं किंचि के०) जे कांइ त्रण लोकने विषे परमेश्वरना (नामतिढं के०) नाम रूप तीर्थो ढे ते प्रत्यें पण (वंदामि के०) हुं वांडुं बुं ॥ १ ॥ इति ॥

ए रीतें जं किंचिनो पाठ कहीने पढी खमासमण पूर्वक हेठा बेशीने माबो जानु उंचो करियें,अने जमणो जानु नूमियें लगाडीने "नमुत्थुणं अरिहंताणं" इत्यादि शक्रस्तवनो पाठ कहेवो. जे माटे इंद्रमहाराज पण जेवारे परमेश्वरने स्तवे ढे, तेवारें एज नमुत्थुणंनो पाठ कहेतो थकोज स्तवे ढे, तेवारें पण "वामजाणु अंचेइ दाहिणजाणु धरणितलसिकट्टु" ए

पाठ श्रीकल्पसूत्रमां छे, ते रीतें स्तवे छे, तेथीज एनुं नाम पण शक्रस्तव कहेवाय छे. ते शक्रस्तवनो पाठ नीचें लखियें छैयें.

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं, भगवंताणं ॥ १ ॥

अर्थः-(नमुत्थुणं के०) नमोस्तु नमस्कार हो, एटले नमः पदवडे न मस्कार, अत्थु एटले अस्तु, भवतु ए पदवडे हो. तथा णंकार जे छे, ते वाक्यालंकारने अर्थे छे, जेम अलंकारें करी स्त्री शोभे, तेम णंकारें करी पद शोभे छे, ते नमस्कार कोने हो? तो के (अरिहंताणं के०) श्रीअरिहं तने हो. अही जूदा जूदा त्रण पाठ छे, एक तो इंद्रादिक देवोनी करेली पूजाने योग्य तेने अरहंत कहियें, बीजो कर्मरूप वैरीने हण्या माटे अरि हंत कहियें, त्रीजो फरी संसारमां अवतरवुं नथी माटे अरुहंत कहियें, तेनें नमस्कार थाउ. हवे ते श्रीअरिहंतजी तो नामादिक भेदें करी अनेक प्रकारें छे, माटे अहीं भाव अरिहंतने नमस्कार करवानें अर्थें आगल पद कहे छे. (भगवंताणं के०) भगवद्भ्यः एटले भगवंतने नमस्कार हो, एटले ठकुराइ, रूप, यश, लक्ष्मी, धर्म अनें प्रयत्न युक्त एवा भगवंत ते विवेकी पुरु षोने स्तववा योग्य छे, माटें ए बे आलावे बे पदनी प्रथम स्तोतव्य संपदा जाणवी, एमां लघु तेर अने गुरु एक, सर्व मली चौद अक्षरो छे ॥ १ ॥

हवे स्तववा योग्यना सामान्य हेतुने कहेवा माटे कहे छे.

॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥

अर्थः-वली ते श्री अरिहंत कहेवा छे? ए प्रकारें आगल पण हवे प छीना सर्व पदोने विषे कहेवुं. (आइगराणं के०) आदिकरेभ्यः एटले सर्व तीर्थंकर पोत पोताना तीर्थें द्वादशांगीनी आदिना करनार छे, तेमाटे आ दिकर कहियें. (तित्थयराणं के०) तीर्थंकरेभ्यः जेणें करी संसारसमुद्र तरा य छे, ते तीर्थ एटले प्रवचनकथकपणाथकी तथा ते चतुर्विध श्री संघरूप तीर्थना करवाथकी तथा प्रथम गणधररूप तीर्थना करवाथकी, तीर्थंकर कहियें. (सयंसंबुद्धाणं के०) सयंसंबुद्धेभ्यः (सयं के०) पोतानी मेलें (सं के०) सम्यक् प्रकारें (बुद्ध के०) तत्त्वना जाण थया, तेमाटे स्वयंसंबुद्धा णं कहियें. एमां स्तववा योग्यना सामान्य हेतु कह्या माटे ए त्रण पदनी

ऽथ एटले सामान्यहेतु नामा त्रण पदनी बीजी संपदा जाणवी. एमां लघु चौद अने गुरु बे, सर्व मली शोल अक्षरो ढे ॥ २ ॥

हवे बीजी संपदाना अर्थने विशेष दीपाववा माटे त्रीजी विशेषहेतु संपदा कहेढे.

पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुं
मरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥

अर्थः–(पुरिसुत्तमाणं के०) पुरुषोत्तमेभ्यः, पुरुषोने विषे उत्तम प्रधान एटले धैर्य, गांभीर्य, औदार्य, परोपकार, इत्यादिक गुणें करी उत्तम ढे माटे पुरुषोत्तम कहियें. (पुरिससीहाणं के०) पुरुषसिंहेभ्यः, एटले पुरुषमांहे सिंहसमान ढे, अर्थात् जेम सिंह शौर्यादिकगुणें करी युक्त होय ढे, तेम भगवंत पण कर्मरूप शत्रुने शूरतायें करी ढेदनारा ढे, क्रूरतायें करी क्रोधादिकने उच्छेदनारा ढे, तेमाटे पुरुषसिंह कहियें. (पुरिसवरपुंमरीयाणं के०) पुरुषवरपुंमरीकेभ्यः, एटले पुरुषोने विषे वर प्रधान पुंमरीक कमल समान ढे, एटले पुंमरीक कमल, जेम कचराथी उत्पन्न थइ जलमां वृद्धि पामे ढे, अने ते बन्नेनो त्याग करी उपर वर्त्ते ढे, प्रकृतियें करी सुंदर होय ढे, तेम श्रीअरिहंत भगवंत पण, कामरूप जे कचरो एटले मातानुं रुधिर अने पितानुं वीर्य,ते थकी उत्पन्न थया, दिव्यभोगरूप जलें करी वृद्धि पाम्या,पढी बेहुनो त्याग करी वर्त्ते ढे, पोतें सुंदर ढे. (पुरिसवरगंधहत्थीणं के०) पुरुषवरगंधहस्तिभ्यः, पुरुषोने विषे वर प्रधान गंधहस्तिसमान ढे, एटले जेम गंधहस्तीना गंधें करी ते देशमां विचरनारा बीजा क्षुद्र हाथीयो नाशी जाय ढे, तेनी पेठें भगवानना विहाररूप पवनना गंधथकी परचक्र, दुर्भिक्ष,मारी प्रमुख उपद्रवरूप जे गज ढे, ते भागी जाय ढे, माटे पुरुषवरगंधहस्ती कहियें. एम सिंह, पुंमरीक अने गंधहस्ती, ए त्रण उपमाथकी पुरुषोत्तम कहियें, एमां पुरिसुत्तमाणं इत्यादिक मध्यें पुरुषमांहे उत्तम कह्या; माटे पूर्वोक्त सामान्य हेतु संपदाथी ए इतर एटले विशेषहेतु नामें ए चार पदनी त्रीजी संपदा जाणवी. एमां लघु त्रीश अने गुरु बे,सर्व मली बत्रीश अक्षरो ढे ॥३॥

हवे चोथी उपयोग संपदा कहे ढे.

लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं,
लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥

अर्थः-(लोगुत्तमाणं के०) लोकोत्तमेभ्यः, सर्व लोकने विषे उत्तम छे. अहीं लोकशब्दें करीने सर्व भव्य लोकज ग्रहण करवा, ते भव्यलोकोने कल्याणना करनार छे, ए माटे लोकोत्तम कहियें. (लोगनाहाणं के०) लोकनाथेभ्यः, एटले लोकना नाथ छे. अहीं लोक शब्दें करीने आसन्न सिद्धि जीव लेवा, आसन्न एटले नजीक छे सिद्धि जेने एवा भव्य जीवोना नाथ छे. (लोगहियाणं के०) लोकहितेभ्यः, लोकना हितना करनार छे. अहीं लोक शब्दें सर्व संव्यवहारी प्राणिवर्ग लेवो, तेने सम्यग्दर्शन प्ररूपण, रक्षणरूप योगें करी हितना करनार छे. (लोगपईवाणं के०) लोकप्रदीपेभ्यः; अहीं लोक शब्दें संज्ञी पंचेंद्रिय जीव, जेने धर्मनी आस्था छे, ते लेवा. तेमने देशनादिक करवे करीने अज्ञान मिथ्यात्वरूप अंधकार टालवा माटे प्रदीपसमान छे. तथा (लोगपज्जोयगराणं के०) लोक प्रद्योतकरेभ्यः; अहीं लोक शब्दें विशिष्ट चौद पूर्वने जाणनारा लोक ग्रहण करवा, ते गणधर चौद पूर्वधर जाणवा. तेमना हृदयने विषे द्वादशांगी रचनारूप बोधना प्रकाश करवा पणानी उपपत्ति छे, एटले तेने सूर्यसमान छे, अर्थात् प्रभुना " उप्पन्नेइवा, विगमेइवा, धुवेइवा, " एटली त्रिपदीने वचनें करीज गणधरने एवी बुद्धि उत्पन्न थाय छे, के जेथकी ते नवां अगीयार अंग अने चौद पूर्वनी तें वखतेंज रचना करे छे, माटे लोकविषे प्रकर्षें करी उद्योतना करनार कहियें. एमां लोगुत्तमाणं इत्यादिकें करी लोकमां उत्तम कह्या माटे सामान्य स्तवनानो उपयोग कह्यो, तेथी ए पांच पदनी चोथी उपयोग संपदा जाणवी. एमां लघु सत्तावीश अने गुरु बे, सर्व मली उगणत्रीश अक्षरो छे ॥ ४ ॥

हवे ए पूर्वोक्त संपदाने विषेज हेतुरूप पांचमी उपयोग हेतु संपदा कहे छे.

अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गद
याणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं॥ ५॥

अर्थः-(अभयदयाणं के०) अभयदेभ्यः, एटले इहलोक, परलोकादिक सात भय रहित एवुं जे अभयपद, तेना दातार माटे अभयद कहियें, (चक्खुदयाणं के०) चक्षुर्देभ्यः, सम्यग्ज्ञानरूप लोचनना दातार, तथा अज्ञानांध जीवने श्रुतज्ञानरूप चक्षु आपे छे, माटे श्रुतचक्षुने देनारा ते चक्षुर्द

कहियें, (मग्गदयाणं के०) सम्यग्दर्शनादिक रत्नत्रयरूप जे मोक्षनो मार्ग छे, तेना दातार; जेम कोइ एक अटवीमां नूला पडेला वटेमार्गुनुं धन, चोर लोकोयें लूंटीने तेने उन्मार्गें पाड्यो होय, पछी तेने कोइक सत्पुरुष वस्त्र, धन प्रमुख आपी खरो मार्ग देखाडी, तेने स्थानकें पहोंचाडे; तेम, आ संसार रूप अटवीने विषे नविक जीवरूप साथना धर्मधन रूप संबलने महा मोहादिकनी धाडें लूंटी मिथ्यात्वादिक पाटा बांधीने कर्मस्थितिरूप अटवीमां नाख्या, तेने परोपकारी एवा ते नगवंत, मिथ्यात्वादिक पाटा कापी, धर्मसंबल आपी, रत्नत्रयी रूप शुद्ध मार्गें चलावी शाश्वतस्थान प्रत्यें पहोंचाडे छे. (सरणदयाणं के०) शरणदेन्यः, जन्म, जरा अनें मरण प्रत्यें पमाडनार एवो कर्मरूप नूप, ते थकी बीक पामनारा जीवने शरणना दातार छे, एटले जेम वैरीना नयथकी बीक पामेला पुरुषने कोइ उत्तम पुरुष शरण राखे, तेम डुर्गतिना नयथकी बीक पामनार पुरुषने नगवंत शरण राखे. (बोहिदयाणं के०) बोधिदेन्यः,एटले बोधि ते जिनधर्मप्राप्ति तेने देनारा ते बोधिद कहियें. एमां, पूर्वें कही जे उपयोग संपदा तेना अर्थने अनयदयाणं इत्यादि हेतु सद्भावें करी दीपाव्युं माटे ए पांच पदनी पांचमी तद्धेतु एटले पूर्वें कही जे उपयोग संपदा तेनी हेतु माटे उपयोगहेतु संपदा कही. एमां लघु पच्चीश अने गुरु बे, सर्व मली सत्तावीश अक्षरो छे ॥५॥

हवे एज संपदाने दीपाववा माटे सविशेष उपयोगहेतु संपदा कहे छे.

धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥

अर्थः- (धम्मदयाणं के०) धर्मदेन्यः, यथायोग्य साधु श्रावक संबंधी धर्मना दातार छे. (धम्मदेसियाणं के०) धर्मदेशकेन्यः, पूर्वोक्त जेने जेवो धर्म योग्य होय तेने तेवो साधु श्रावक संबंधी जे धर्म तेना देशक एटले उपदेशना करनार छे, माटे धर्मदेशक कहियें. (धम्मनायगाणं के०) धर्मनायकेन्यः, धर्मना नायक एटले धर्मने वश करवाथकी तथा ते धर्मनुं फल जे अरिहंत पदवी छे, तेने नोगववाथकी अथवा कोइ धर्मनो व्याघात करे, तो करवा न दीये, माटे धर्मनायक कहियें; तथा (धम्मसारहीणं के०) ध

र्मसारथिन्यः, धर्मना सारथि छे. केम के जेम सारथि रथस्थनी तथा रथिकनी तथा अश्वोनी रक्षा करे छे, तेम श्री अरिहंत पण चारित्र धर्मनां जे अंगो तेमनुं रक्षण तथा उपदेश करे छे, नव्यजीव रूप रथसमूह तेने कुमार्गे चालवा न आपे, कुमार्गे जाताने पाछा वाले, एक मोक्षमार्गने विषेज चलावे माटे धर्मसारथि कहियें. तथा (धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं के०) धर्मवर चातुरंतचक्रवर्त्तिन्यः, धर्म तेज प्रधान श्रेष्ठ छे चार गतिरूपसंसारना अंतनुं करनार एटले मिथ्यात्वादिक नावशत्रु तेमने उच्छेद करवानुं कारण तद्रूप धर्मचक्रें करीने जे वर्त्ते छे, विचरे छे, अर्थात् उत्कृष्टधर्म तेज चार गतिना अंत करवारूप चक्र तेणेंकरी सहित वर्त्ते छे, ते धर्मवरचातुरंतचक्रवर्त्ती कहियें. ए उपयोगहेतु संपदाना गुण दीपाववा निमित्तें कारण सहित स्तववा योग्यनुं स्वरूप पांच पदनी छठी सविशेष उपयोगहेतु संपदा जाणवी. एमां लघु उंगणत्रीश अने गुरु सात, सर्व मली छत्रीश अक्षरो छे ॥ ६ ॥

हवे यथार्थ स्वरूप प्रकटार्थ देखाडवा रूप सातमी संपदा कहे छे.

अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥

अर्थः—हवे ते धम्मदयाणं इत्यादि प्रकृष्ट विशेषण समूह तो ज्ञानादिक योगथकी होय, त्यां ज्ञानातिशयत्व कहे छे. (अप्पडिहय के०) अप्रतिहत एटले क्षायिकपणाथकी कोइथी हणाय रोकाय नहीं, एवुं जे (वर के०) प्रधान (नाण के०) ज्ञान ते विशेषोपयोग अने (दंसण के०) दर्शन ते सामान्योपयोग तेहना (धराणं के०) धरनार छे, तेने अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं कहियें. हवे अप्रतिहतज्ञानपणुं केम उपन्युं? ते कहे छे. (विअट्टछउमाणं के०) व्यावृत्तछद्मन्यः, अहीं (विअट्ट के०) निवर्त्युं छे (छउमाणं के०) छद्मस्थपणुं जे थकी एटले कपट पणुं, शठपणुं अथवा आवरणपणुं, ते ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय अने अंतराय, ए चार घनघातिकर्म जेथकी क्षय थइ गयां छे, तेने व्यावृत्तछद्मा कहियें. एमां अप्रतिहतवरनाणदंसणधरत्वें करी तथा व्यावृत्तछद्मतायें करीने प्रथम स्तोतव्य संपदाने विषेज बे पदनी सातमी स्वरूपहेतु संपदा कही. एमां लघु वीश अने गुरु बे, सर्व मली बावीश अक्षरो छे ॥ ७ ॥

हवे निजसम फलद नामे आठमी संपदा कहे छे.

जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं ॥
बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥

अर्थः—(जिणाणंजावयाणं के०) जिनेभ्यो जापकेभ्यः, एटले (जिणाणं के०) रागादिक वैरीनुं जींतवापणुं छे माटे जिन कहियें, तथा (जावयाणं के०) जापकेभ्यः एटले भव्य जीवोने पण सडुपदेशें करी रागादिक शत्रु थकी मूकावनार छे, माटे जापक कहीयें. (तिन्नाणं तारयाणं के०) तीर्णेभ्यस्तारकेभ्यः, एटले पोतें संसारसमुद्रथकी तस्या, अने भव्य जीवो प्रत्यें संसार समुद्रथकी तारनार छे, अर्थात् सम्यग् ज्ञानदर्शनचारित्र रूप नावें करीने पोतें भवार्णवथी तस्या छे, तथा अन्यभवि जीवने तारे छे, माटे तीर्ण अने तारक जाणवा. (बुद्धाणं के०) बुद्धेभ्यः, पोतें तत्त्वना जाण थया. (बोहयाणं के०) बोधकेभ्यः, एटले भव्य जीवोने स्वपरस्वरूपनो बोध करावनार, (मुत्ताणं के०) मुक्तेभ्यः, एटले पोतें चातुर्गतिक विपाकविचित्र कर्म थकी मूकाणा तथा (मोअगाणं के०) बीजा भव्य प्राणीने कर्मथकी मूकावनार छे, ए जिनत्वजापकत्व, तीर्णत्वतारकत्व, बुद्धत्वबोधकत्व, मुक्तत्वमोचकत्व, एणें करी स्वपरहित सिद्धि छे, माटे पोताने तुल्य परने फलना आपनार कह्या, ते माटे ए स्वतुल्यफलकारी एवी चार पदनी आठमी निजसमफलद नामें संपदा जाणवी. एमां लघु पच्चीश अने गुरु त्रण, सर्व मली अठावीश अक्षरो छे ॥ ८ ॥

हवे श्री अरिहंत मोक्ष गया, ते अवस्था आश्रयीने नवमी संपदा कहे छे.

सव्वन्नूणं सव्वदरिसिणं, सिव मयल मरुअ म
णंत मक्खय मव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइ
नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, णमो जिणाणं ॥ ९ ॥

अर्थः—(सव्वन्नूणं के०) सर्वज्ञेभ्यः, एटले सूक्ष्म बादर एवा सर्व जगत् संबंधी भाव तेना ज्ञात जाण एटले सर्वं जानाति इति सर्वज्ञः सर्वने जाणे तेने सर्वज्ञ कहियें, (सव्वदरिसिणं के०) सर्वदर्शिभ्यः, एटले सर्व सूक्ष्म, बादर, जगत्ना भाव तेने प्रत्यक्षनी पेरें देखे, एटले सर्व पदार्थ सामान्य

अने विशेषरूप छे, तो पण प्रथमसमयें विशेषरूप जाणे, माटें सर्वज्ञ अने तेवार पछी बीजे समयें सर्वपदार्थ सामान्यपणें देखे, माटे सर्वदर्शी जाणवा. (सिवं के०) शिवं एटले सर्वोपद्रवरहित छे, माटे शिव कहियें (अयलं के०) अचलं एटले स्वाजाविक, प्रायोगिक चलनक्रियारहित छे, माटे अचल, स्थिर अने अकंपित छे. (अरुयं के०) अरुजं एटले व्याधि वेदनाथी रहित तथा तेनुं बंधनरूप शरीर अने मन तेनो अजाव छे, माटे अरुज ते रोगरहित कहियें. (अणंत के०) अनंत एटले ज्ञानादिक चतुष्टयें करी युक्त छे माटे अनंत कहियें. (अरकयं के०) अक्षयं एटले सर्वकाल विनाशनो अजाव छे, निरंतर निश्चल छे, माटे अक्षय कहियें. (अव्वाबाह के०) अव्याबाधं एटले अकर्मत्व छे, माटे समस्त प्रकारें बाधारहित छे, (अपुणराविति के०) अपुनरावर्त्ति; अपुनः एटले नथी वली आवृत्ति एटले आववुं जेथी एटले जे गतिथकी फरी संसारने विषे अवतार लेवो नथी, एवी (सिद्धिगइ के०) सिद्धिगति छे, (नामधेयं के०) नाम जेनुं. ए शिवमय लथी मांमीने सात विशेषण सहित एवुं (ठाणं के०) स्थानक प्रत्यें (संपत्ताणं के०) संप्राप्तेन्यः, एटले पाम्या छे, अर्थात् मोक्षनगर प्रत्यें पाम्या छे, एवा अरिहंत जणी (णमो के०) नमस्कार थार्ज. अहींयां बीजी वार णमो पद आव्युं, ते पदें पदें नमस्कार जणाववाने अर्थें छे. तथा अहिं स्तुति करी छे, माटे पुनरुक्ति दोष पण नथी. कारण के, सज्जाय, ध्यान, तप, कायोत्सर्ग, उपदेश, स्तुति अने उत्तमना गुणनां वखाण, एटले स्थानकें पुनरुक्तिनो दोष कह्यो नथी. वली ते श्रीअरिहंत केहवा छे ? तो के (जिणाणं के०) अंतरंगरागादिक रिपुवर्ग प्रत्यें जींपनार छे, ए सवन्नूणं इत्यादिक वाक्य मोक्षमां छे. तेहवुं स्वरूप कह्युं, माटे ए त्रण पदनी मोक्षसंपदा जाणवी. एमां लघु छेंतालीश अने गुरु सात, सर्व मली त्रेपन्न अक्षरो छे.

ए श्री शक्रस्तवमांहे अनेक विद्यामंत्र गोपव्या छे, ते गुरु आम्नायें जाणीयें, ए नमुत्थुणें करीने जगवंतने जन्म कल्याणकादिकने विषे इंद्र स्तवे छे, माटे एने शक्रस्तव कहियें. एमां सर्व मली संपदा नव छे, पद तेत्रीश छे, वर्णो उगणत्रीश लघु, अने अठावीश गुरु, सर्व मली वर्णो ने सत्तावन्न अक्षरो छे. ए समवसरणें बेठा विहरमान तीर्थंकर देव जावजिननें स्तववारूप शक्रस्तव श्रीगणधर देवनुं करेलुं जाणवुं ॥ इति शक्रस्तवः समाप्तः ॥

ए बहुं खमासमण थयुं. पबी इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन्! गुरुवंदना करुं जी. एम कही गुरु वंदनानो पाठ कहियें, ते लखियें बैयें.

॥ अथ गुरुवंदन पाठ ॥

अढ्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पनरससु कम्मजूमीसु ॥ जावंत केवि साहू, रयहरण गुच्छ पडिग्गहधारा ॥ १ ॥ पंचमहव्वय धारा, अठारस सहस्स सीलंगधारा ॥ अक्कयायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ २ ॥ पुज्जसिरि अज्जरक्खिय, गुरुणो तप्पट्टि पुज्ज जयसिंहा ॥ सूरि सिरि धम्मघोसा, महिंदसिंहा तउ गुरुणो ॥ ३ ॥ तप्पय सिरि सिंहपहा, तेसिं पइ अजियसिंह वरगुरुणो ॥ देविंदसिंह गुरुणो, तप्पइं सिरिधम्मपह सूरि ॥ ४ ॥ सिरिसिंह तिलय सूरी, तप्पइं सिरिमं महिंदपह गुरुणो ॥ सिरिमेरुतुंगगुरुणो, तप्पइं जयकित्ति गुरुराउ ॥ ५ ॥ सिरिजयकेसरि सूरी, तप्पइं सिद्धंतसायरो सुगुरु ॥ सिरिज्ञावसायर गुरु, तप्पइं सूरि गुणनिहाणो ॥ ६ ॥ सिरिधम्ममुत्तिसूरी, तप्पइं कल्लाण सायर मुणिंदो ॥ सिरि अमर सायर गुरु, कल्लाणं कुणउ संघस्स ॥ ७ ॥ तप्पट्टि पुव्वपुव्वय, नाणु विज्जाय सायरं सूरि ॥ सिरिउदय सायर सूरि, तप्पइं गुणमणि रूहाणं ॥ ८ ॥ श्री कीर्त्ति सागर सूरि, श्रीपुण्य सागर सूरि, श्रीराजेंद्रसागर सूरि, श्रीमुक्तिसागर सूरि श्रीरत्नसागर सूरियं वंदे, विहरमान श्रीविवेकसागर सूरियं वंदे. अचल गच्छनायकं वंदे, विधिपक्षगच्छनायकं वंदे. पहेले पाटें सुधर्मा स्वामी, बीजे पाटें जंबूस्वामी, त्रीजे पाटें प्रजवा स्वामी, चोथे पाटें सिज्जंजवसूरि, पांचमे पाटें यशोजद्रसूरि, बठे पाटें संजूतिविजय सूरि, सातमे पाटें जद्रबाहु स्वामी, आठमे पाटें थूलिजद्रस्वामी,

एवा पाटानू पाट ठेला श्रीउःप्रसहनामा आचार्य थाशे, तेने महारी एकशो ने आठ वार त्रिकाल वंदना होजो ॥

॥ इति ॥ ए सातमुं खमासमण पूरुं थयुं ॥

अर्थः– (अड्ढाइज्जेसुदीवसमुद्देसु के०) अढी द्वीप बे समुद्र संबंधि जे (पनरससुकम्मनूमिसु के०) पंदर कर्मनूमि क्षेत्रने विषे, (जावंत के०) जेटला (केवि के०) केइ पण (साहू के०) साधु, (रयहरणगुच्छपडिग्ग हधारा के०) रजोहरण ते उंघो अने गुच्छ ते पात्रानी जोलीनी उपरनुं उपकरण अने पतद्ग्रह ते पात्रुं, इत्यादिक धर्मोपकरणना (धारा के०) धा रण करनारा ठे ॥१॥ एटले सुधी साधुनो वेषमात्र जणाव्यो, परंतु ते वेष तो गुण विना अप्रमाण कह्यो ठे, माटे हवे गुण कही देखाडे ठे. वली ते साधु केहवा ठे? तो के (पंचमहव्वयधारा के०) पांच माहाव्रतना धारण हार ठे, वली केहवा ठे? तो के (अठारसहस्ससीलंगधारा के०) अष्टादश सहस्र शीलना चारित्रना अंग जे अंश ठे, तेना धरनार ठे, वली केहवा ठे? तो के (अरकयायारचरित्ता के०) अक्षत संपूर्ण आचार रूप चारित्र तेना धरणहार ठे, (ते सव्वे के०) ते सर्वे प्रत्यें (सिरसा के०) ललाटें करीने (म णसा के०) मनें करीने (मच्छएण के०) मस्तकें करीने (वंदामि के०) हुं वांडुं बुं. अथवा मच्छएण वंदामि ए वचनें पंचाग प्रणामें करी वांडुं बुं ॥ २ ॥

प्रथम नाणक गच्छ नाम हतुं ते बदलावीने ज्यारथी विधिपक्षगच्छ एवुं नाम प्रचलित थयुं त्यारथी सडतालीशमें पाटें श्रीआर्यरक्षितसूरि महाप्रान्ना विक, महाक्रियाधारी, संवेगकारी, निर्विषयी, निर्विकारी, अत्यंत शांतमु डाधारक पूजवा योग्य थया ठे. तेमनुं नाम इहां गुरुवंदनामां त्रीजी गा थानी आदिमां " पुज्जसिरि अज्जरक्खिय गुरुणो " एवुं लख्युं ठे. तेवार पठी (तप्पट्टि के०) तत्पट्टे एटले तेमना पाट उपरें अडतालीशमा श्री जयसिंहसूरि (पुज्ज के०) पूजवा योग्य एवा थया. तेवार पठी उंगणप चाशमे पाटें श्रीधर्मघोषसूरि थया. (तउ के०) ततो एटले ते पठी पच्चा शमे पाटें महेंद्रसिंहसूरि गुरुराज थया ॥ ३ ॥

(तप्पय के०) तेमना पदें एकावन्नमे पाटें श्रीसिंहप्रन्नसूरि थया. (तेसिं के०) तेषां एटले तेमना (पइ के०) पदें बावन्नमे पाटें वर एटले प्रधान एवा श्री

अजितसिंहसूरि गुरु थया. त्रेपन्नमे पाटें श्रीदेवेंद्रसिंहसूरि गुरुमहाराज थया. (तप्पइं के०) तत्पदे एटले तेमना पदे चोपन्नमे पाटें श्रीधर्मप्रजसूरि थया ॥४॥

पच्चावन्नमे पाटें श्रीसिंहतिलक सूरि थया. (तप्पइं के०) तत्पदे एटले तेमने पदें ढप्पन्नमे पाटें (सिरिमं के०) श्रीमान् एटले ऐश्वर्यवान् एवा महेंद्रप्रजसूरि गुरु थया. सत्तावन्नमे पाटें श्रीमेरुतुंग सूरि गुरु थया. (तप्पइं के०) तेमने पदें अट्ठावन्नमे पाटें श्रीजयकीर्त्तिसूरि गुरुराज थया ॥५॥

उंगणशाठमे पाटें श्रीजयकेसरी सूरि थया. (तप्पइं के०) तेमने पदें शाठमे पाटें श्रीसिद्धांतसागर सूरि रूडा गुरु थया, एकशठमे पाटें श्रीजावसागरसूरि गुरुराज थया. (तप्पइं के०) तेमने पदे बाशठमे पाटें (सूरि गुणनिहाणो के०) श्रीगुणनिधान सूरि थया ॥ ६ ॥

त्रेशठमे पाटें श्रीधर्ममूर्ति सूरि थया. (तप्पई के०) तेमने पदें चोशठमे पाटें श्रीकल्याणसागर सूरि (मुणिंदो के०) मुनिउने विषे इंद्रसरखा शोजायमान थया. पांशठमे पाटें श्रीअमरसागर सूरि गुरु थया. एवा ते सूरि महाराज (संघस्स के०) श्रीसंघनुं (कल्लाणं कुणउ के०) कल्याण करो ॥ ७ ॥

(तप्पट्टि के०) तेमना पाटरूप (पुव्वपव्वय के०) पूर्वपर्वत एटले पाट रूप पूर्वाचल तेने विषे (जाणु के०) जानु एटले सूर्य समान उदय थया एवा, ढाशठमे पाटें (विज्जायसायरं सूरि के०) श्री विद्यासागर सूरीश्वर थया. सडशठमे पाटें श्रीउदयसागर सूरि थया. (तप्पइं के०) तत्पदे एटले तेमने पदें अडशठमे पाटें (गुणमणिरूहाणं के०) गुणमणि रूपें आरूढ थया, अथवा गुणमणि रूप एवा ॥ ८ ॥

श्रीकीर्त्तिसागर सूरि थया. उंगण्योत्तेरमे पाटें श्रीपुण्यसागर सूरि थया. सित्तेरमे पाटें श्रीराजेंद्रसागर सूरि थया. एकोतेरमे पाटें श्रीमुक्तिसागर सूरि थया. बहोंतेरमे पाटें श्रीरत्नसागर सूरि थया, अने त्रहोंतेरमे पाटें बिहरमान श्रीविवेकसागर सूरीश्वरजी महाराज विद्यमान ढे, तेमने हुं वांडुं ढुं.श्रीअचलगच्छनायकने हुं वांडुं ढुं. श्रीविधिपक्षगच्छ नायकने हुं वांडुं ढुं.

तेवार पढी, श्रीसुधर्मास्वामी महाराजथी मांमीने आठमे पाटें श्रीथूलि जद्रजी थया. तेमनां नाम लेइ ढेवट पाटन् पाटें ढेहला श्रीडुःप्रसह नामा आचार्य थशे, तेमने महारी १०८ वार त्रिकाल वंदना होजो. इहां सातमुं खमासमण थयुं. आ गुर्वादिकनी पट्टावली आज पुस्तकमां आगल

दाखल करवामां आवशे, माटे विशेष वात जोवी होय, तो तिहांथी जोवी.

पछी इच्छामि खमासमण पूर्वक इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ! सज्झाय कहुं, सज्झाय सांजलुं जी, एम कही नवकारनो पाठ संपूर्ण कहीने पछी सज्झाय कहियें, तेनो पाठ नीचे लखीयें छैयें.

॥ अथ सज्झाय प्रारंजः ॥

धम्मो मंगलमुक्किठं, अहिंसा संजमो तवो ॥ दे
वा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥

अर्थः– (अहिंसा के०) सर्वजीव उपर दया, (संजम के०) सत्तर जेदनो संयम, (तवो के०) द्वादश प्रकारनुं जे तप तद्रूप (धम्मो के०) धर्म्म, ते (उक्किठं के०) उत्कृष्ट एवुं (मंगलं के०) मंगल छे. कारण के, (जस्स के०) यस्य एटले जे पुरुषनुं (सया के०) सदा एटले निरंतर (धम्मे के०) पूर्वोक्त धर्मने विषे (मणो के०) मन होय, (तं के०) ते पुरुषने (देवा वि के०) देवा अपि एटले इंद्रादि देवताउ पण, इहां अपिशब्दें जवनपत्यादिक अने चक्रवर्त्यादिक ग्रहण करवा. ते पण (नमंसंति के०) नमंति एटले प्रणाम करे छे ॥ १ ॥

हवे पूर्वोक्त धर्मवान् जे साधु होय, ते साधु आहारनी शुद्धि राखी धर्म पाले, ते वात ज्रमरना दृष्टांतें कहे छे.

जहा डुमस्स पुप्फेसु, जमरो आवियइ रसं ॥ न
य पुप्फं किलामेइ, सोय पीणइ अप्पयं ॥ २ ॥

अर्थः–(जहा के०) यथा एटले जे प्रकारें (डुमस्स के०) डुमस्य एटले वृक्षना (पुप्फेसु के०) पुष्पेषु एटले फूलोने विषे रह्या एवा (रसं के०) रसने (जमरो के०) ज्रमरः एटले जमरो (आवियइ के०) आपिबति एटले मर्यादायें करी पान करे छे, (य के०) च एटले वली (पुप्फं के०) पुष्पं एटले पुष्पने (न के०) नहिं (किलामेइ के०) क्लामयति एटले किलामणा उपजावे छे. (य के०) च एटले वली (सो के०) सः एटले ते ज्रमर, (अप्पयं के०) आत्मानं एटले आत्माने (पीणइ के०) प्रीणयति एटले तृप्ति पमाडे छे ॥ २ ॥

एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो ॥
विहंगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया ॥ ३ ॥

अर्थः–(एमेए के०) एवमेते एटले ए पूर्वोक्तप्रकारें एते नाम ए (समणामुत्ता के०) श्रमणा मुक्ताःएटले बाह्य अभ्यंतर परिग्रहथकी मुक्त एवा श्रमण एटले तपस्वीयो (जे के०) ये एटले जे कोइ (लोए के०) लोके एटले लोकने विषे (साहुणो के०) साधुउ (संति के०) छे, ते (पुप्फेसु के०) पुष्पेषु एटले पुष्पोने विषे (विहंगमा व के०) विहंगमा इव एटले भ्रमर जेम होय, तेम (दाणभत्तेसणे रया के०) दानभक्तैषणे रता एटले दातानुं आपेलुं जे अन्न, तेनी गवेषणाने विषे रता एटले आसक्त छे ॥३॥

हवे आगलनी गाथामां कहेवा प्रमाणें साधु जे छे, ते दातारना दीधेला अन्ननी गवेषणाने विषे आसक्त रहे तो तिहां कहे छे, के एम लोको भक्तिथी आकृष्टचित्त छता कदाचित् आधाकर्मादि आहार दिये, ते ग्रहण करवाथी सत्त्वावरोध थाय, अने आहार न ग्रहण करवाथी स्ववृत्तिनो अलाभ थाय! तो बेहु रीतें कष्ट छे! तो तिहां कहे छे.

वयं च वित्तिं लप्नामो, न य कोइ उवहम्मइ ॥
अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरो जहा ॥ ४ ॥

अर्थः–हवे आहिं शिष्यो गुरु प्रत्यें कहे छे, के (वयं के०) अमो तो (वित्तिं के०) वृत्तिं एटले अमारी वृत्ति जे निर्वाह तेने (लप्नामो के०) लभामहे एटले पामियें. (च के०) वली, केवीरीतें पामशुं? तो के (कोइ के०) कोइ पण प्राणी जेवी रीतें (न उवहम्मइ के०) न उपहन्यते एटले हणाय नहिं, तेवीरीतें ते साधुउ (अहागडेसु के०) यथाकृतेषु एटले गृहस्थ पोताने माटें सिद्ध करेला एवा आहारने विषे (रीयंते के०) गच्छंति, एटले जाय छे. केनी परें? तो के (पुप्फेसु के०) पुष्पेषु एटले पुष्पोने विषे (भमरो के०) भ्रमर (जहा के०) यथा एटले जेम रस ग्रहण करे छे, तेम ॥४॥

महुकारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया॥ नाणा
पिंमरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो॥ ५॥ त्तिबेमि॥

अर्थः–हवे ते साधु कहेवा छे? तो के (महुकारसमा के०) मधुकरसमाः

एटले भ्रमरसमान तथा (बुद्धा के०) तत्त्वना जाण तथा (जे के०) ये एटले जे साधुउ (अणिस्सिया के०) अनिश्रिता एटले कुलादिकना प्रति बंधरहित एवा तथा (नाणापिंमरया के०) नानापिंमरता एटले घरघर थी स्वल्प स्वल्प आहार लाववाने विषे रत एवा तथा (दंता के०) दांताः एटले इंद्रियोनुं दमन कर्युं ठे जेमणें एवा होय, (तेण के०) तेन एटले ते कारण माटे ते (साहुणो के०) साधुउ (वुच्चंति के०) उच्यंते, एटले कहे वाय ठे. अर्थात् आ गाथामां कहेला गुणोयुक्त होय, तेने साधु जाणवा. (त्तिबेमि के०) इति ब्रवीमि एटले सुधर्मास्वामी कहे ठे के ए प्रकारें तीर्थं करादिकना उपदेश थकी हुं जाणुं बुं ॥ ५ ॥ इति सिकाय ॥

हवे जो पण पूर्वाचार्योयें सिद्धांतोमांथी उद्धार करी शेंकडा गमे स ज्झायो रचेली ठे, तथापि प्रत्येक दिवसें अथवा रात्रियें पडिक्कमणमां ते मांहेली गमे ते एक सज्झाय कहेवाय ठे, ए हेतु माटे नवीन नवीन सज्झा य कहेवा सारु बीजी पण घणी सकायो आ पुस्तकमां दाखल करवानी आवश्यकता ठे, तेथी पांचे प्रतिक्रमणनो विधि पूर्ण थया पठी जग्यानो अवकाश मलशे तो आ पुस्तकमां दाखल करशुं. तथापि,हमणां पण,एक सज्झाय जरूर खपमां आववा योग्य ठे, तेथी ते नीचे लखीयें ठैयें.

॥ अथ द्वितीय सज्झाय ॥

॥ अरिहंता मंगलं मुज्झ, अरिहंता मुज्झ देवया ॥ अरिहंता कित्तियंताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धा य मंगलं मुज्झ,सिद्धा य मुज्झ देवया ॥ सिद्धा य कित्तियंताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥२॥ आयरिया मंगलं मुज्झ, आयरिया मुज्झ देव या ॥ आयरिया कित्तियंताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥३॥ उ वज्झाया मंगलं मुज्झ,उवज्झाया मुज्झ देवया॥उवज्झाया कित्ति यंताणं,वोसिरामि त्ति पावगं॥४॥साहू य मंगलं मुज्झ,साहू य मुज्झ देवया ॥ साहू य कित्तियं ताणं,वोसिरामि त्ति पावगं॥५॥ ए पंचे मंगलं मुज्झ,ए पंचे मुज्झ देवया ॥ ए पंचे कित्तियंताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ६ ॥ एसो पंच णमुक्कारो,सव्व पावप्प

णासणो ॥ मंगलाणं च सवेसिं, पढमं होइ मंगलं ॥ ७ ॥
इति सिज्ञाय ॥ एनो अर्थ सुलन्न छे. ए आठमुं खमासमण ॥

एवी रीतें सज्झाय कहीने पछी उन्ना थइ इछामि खमासमण देइ 'इछा कारेण संदिस्सह नगवन् दैवसिक प्रायश्चित्त विशोधनार्थं करेमि काउस्स ग्गं. अन्नछ० ॥' इत्यादि पाठ कहीने चंदेसुनिम्मलयरा सुधी चार लोगस्सनो काउस्सग्ग मनमां करवो. पछी नमो अरिहंताणं ए एक पद कहीने काउस्स ग्ग पारवो. पछी प्रगट लोगस्स कहियें. एम प्रथम पण जे जे स्थानकें का उस्सग्ग करवा कह्या छे, ते सर्व चंदेसु निम्मलयरा पर्यंत पच्चीश पदना का उसग्ग करी नमो अरिहंताणं कहीने पारवा. ए नवमुं खमासण.

फरी इछामि खमासमण पूर्वक इछाकारेण संदिस्सह नगवन्! अनिन व काउस्सग्ग ठाउं. इछं अनिनव ते अशेष ङुरकरकय कम्मरकय निमित्तं करे मि काउस्सग्गं अनछ० ॥ इत्यादिक कहिने सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु पर्यंत पूरे पूरा एवा पांच लोगस्सनो काउस्सग्ग मनमां करवो. पछी नमो अरिहं ताणं ए एक पद कहीने काउस्सग्ग पारवो, पछी प्रगट लोगस्स कहेवो. ए द शमुं खमासमण अनें पांचमुं आवश्यक पूरुं थयुं. एणें करी पडिक्कमणामां जे अशुद्ध आचार रह्या, ते आचार ए पांचे लोगस्सना काउस्सग्गथी शुद्ध थाय छे.

पछी इछामि खमासमणपूर्वक इछाकारेण संदिस्सह नगवन्! छठा आवश्यक नणी पच्चरकाण वांदणां करुं जी. एम कही बे वार वांदणां दीजें. पछी गुरुमुखें पच्चरकाण करीयें. ए अगीयारमुं खमासमण अने छठुं आवश्यक पूरुं थयुं.

पछी इछामि खमासमणपूर्वक हेठ बेशीने इछाकारेण संदिस्सह नग वन्! सामायिक पालवा त्रण नवकार गणुं जी. एम कही त्रण नवकार म नमां गणवा. पछी नमो अरिहंताणं ए एक पद प्रगट कहीने इछाकारेण संदिस्सह नगवन्! सामायिक पालवा गाथा नणुं जी. एम कही " जं जं मणेण बद्धं " इत्यादि गाथा नणीयें; ते लखीयें छैयें.

॥ अथ सामायिक पारवानी गाथा ॥

॥ जं जं मणेण बद्धं, जं जं वाया य नासियं पावं ॥ काएण वि

डुठकयं, मिच्छामि डुक्कडं तस्स ॥ १ ॥ सव्वे जीवा कम्मवस, चउदह रज्जु ज्ञमंत॥ते में सव्व खमाविया, मुज्झवि तेह खमंत ॥ २ ॥ खमी खमावी मइखमी, ठविह जीव निकाय ॥ शुद्ध मनें आलोवतां, मुज मन वेर न थाय ॥ ३ ॥ दिवसे दिवसे लक्खं, देइ सुवन्नस्स खंम्डियं एगो ॥ एगो पुण सामइयं, करइ नपहुप्पए तस्स ॥ ४ ॥ कुणे पमाए बोलिउं, हुई विरुइ बुद्धि ॥ जिण सासणमें बोलीउं, मिच्छा डुक्कड सुद्धि ॥ ५ ॥ सामायिक व्रत फासिअं, पालिअं, पूरिअं, तीरिअं, कित्तिअं, आराहिअं, विधें लीधुं विधें कीधुं विधें पाल्युं, विधें करतां, किसी अविधि, आशातना हुइ होय, ते सवि हुं, मनें, वचनें, कायायें करी मिच्छामि डुक्कडं ॥ १ ॥ पाटी, पोथी, कवली, ठवणी, नोकरवाली, कागलें, पग लगाड्यो होय, गुरुने आसने, बेसणे, उपकरणे पग लगाड्यो होय, ज्ञानद्रव्यतणी आशातना थइ होय. ते सवि हुं, मनें, वचनें, कायायें करी मिच्छामि डुक्कडं. अढी द्वीपने विषे साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, जे कोइ प्रज्ञु श्री वीतराग देवनी आज्ञा पाले, पलावे, ज्ञणे, ज्ञणावे, अनुमोदे, तेहने म्हारी त्रिकाल वंदना होजो. सीमंधर प्रमुख वीश विहरमान जिनने म्हारी त्रिकाल वंदना होजो, अतीत चोवीशी, आनागत चोवीशी, वर्त्तमान चोवीशीने म्हारी त्रिकाल वंदना होजो. रुषज्ञानन, चंद्रानन, वर्द्धमान, वारीषेण ए चार शाश्वता जिनने म्हारी त्रिकाल वंदना होजो. दश मनना, दश वचनना, बार कायाना, ए बत्रीश दोषमांहेलो सामायिकव्रतमांहे जिको कोइ दोष लागो होय, ते सवि हुं, मनें, वचनें, कायायें करी मिच्छामि डुक्कडं. साचानी सद्द

हणा, जूठाना मिच्छामि डुक्कडं. पछी त्रण नवकार मनमां गणी त्रण खमासमण देइ जयणापूर्वक ऊठवुं॥ ए बारमुं खमासमण॥

॥ अथ श्रावकस्य राइपडिक्कमणविधिः ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण आपी इच्छाकार०॥ कहीने इरियावही० ॥ पडिक्कमी पछी तस्सुत्तरी० ॥ कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगटलोगस्स कही गमणागमण आलोववुं एटले मार्गने विषे जातां आवतां० ॥ ए कही पछी सामायिक लावा त्रण्य नवकार गुणियें. पछी जीवराशि खमावी अढार पापस्थानक आलोची पछी गुरुस्थापना निमित्त पंचिंदिय कही; द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव धारवा. पछी सामायिक उच्चार करवा. एक नवकार गुणी सामायिक व्रत उच्चार करियें. पछी फरी बीजा आवश्यक भणी इरियावही० ॥ तस्सुत्तरी० ॥ कही पछी एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी लोगस्स प्रगट कही पछी त्रीजा आवश्यक भणी छव्वं अभिनव अशेष दुरकरकय कम्मरकय निमित्त लोगस्स पांचनो काउस्सग्ग करवो. पछी लोगस्स एक प्रगट कही पछी कुसुमिण दुसुमिण उड्डामि निमित्तं करेमि काउस्सग्गं. एम कही चार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. पछी एक लोगस्स प्रगट कही पारीने उत्तरासंगनो छेहडो पडिलेही पछी चोथा आवश्यक भणी चार आवश्यक वांदणां देइने पछी एक जण उभो रही पांचमा आवश्यक भणी लघु अतिचार कहे. पछी चैत्यवंदन कही चार स्तवन कहेवां. पछी उवसग्गहरं, नमोत्थुणं कही गुरुवंदना कही सिझाय कहियें. पछी छठा आवश्यक भणी पच्चरकाण वांदणां बेवार देइनें गुरुमुखें पच्चरकाण करियें. पछी सामायिक पालवा त्रण नवकार गणियें. पछी 'जंजंमणेणबद्धं' इत्यादिक गाथा कही प्रतिक्रमण समाप्त करियें॥ एश्रावकनो राइ पडिक्कमणविधिः

॥ अथ श्रावकस्य पाक्षिकप्रतिक्रमणविधिमाह ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देइ इच्छाकार० ॥ कही गमनागमन निमित्त इरियावही तस्सुत्तरी कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी पछी प्रगट लोगस्स कही, गमनागमन आलोची पछी सामायिक लावा त्रण नवकार गुणी जीवराशि खमावी अढार पापस्थानक आलोववां. पछी गुरुस्थापना निमित्त पंचिंदिय कही द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव धारवा. पछी सामायिक व्रत

उच्चार करवां. एक नवकार गुणी सामायिक व्रत उच्चार करी पछी फरी बीजा आवश्यक नणी इरियावही तस्सुत्तरी कही एक लोगस्सनो काउस्स ग्ग करी पछी प्रगट लोगस्स कही छेहडो पडिलेही पछी त्रीजा आवश्यक नणी आवश्यक वांदणां बे वार देवां. पछी एक जण उनो रही चोथा आवश्य क नणी महोटा अतिचार कहे,बीजा सर्व बेग थकाज सांजले,ते आवीरीतेः—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मच्छएण वंदामि. इच्छाकारेण संदिस्सह नगवन् ! गुरु पर्व नणी पांखी सविशेष अतिचार अलोउं जी. गुरु कहे आलोएह ॥ पछी इछं, नमो अरिहंताणं० ॥ ए नवे पद पूर्ण कहीने अतिचार कहेवा. ते कहे छे.

॥ अथ बृहदतिचार प्रारंनः ॥

॥ इछं श्रावकतणे धर्मे श्रीसम्यक्त्व मूल बार व्रत नणीयें॥ इछं अरिहंत देव, सुसाधुगुरु,जिनप्रणीतधर्म, नावतः समकित प्रतिपालुं, द्रव्यतो लौकिक लोकोत्तर देवगत, गुरुगत, पर्वगत, मिथ्यात्व, चतुर्विध नणीयें, हरि, हर, ब्रह्मा, सूर्य, इंद्र, चंद्र, ग्रह, गोत्रज, गणेश, दिक्पाल, खेत्रपाल, स्कंद, कापिल, बुद्ध, हनुमंत, यक्ष, नक्तिमुक्तिदायक नणी आराधीयें, ते लौकिक देवगत मिथ्यात्व; चरक, परिव्राजक, कौल, कापालिक, द्विज, तापस, संसार तारक नणी मानीयें, ते लौकिक गुरुगत मिथ्यात्व, अपर परिग्रहीत जिनबिंब वैरोच्या ब्रह्मशांति प्रमुख जैनदेव देवी तणुं जे देवबुद्धें पूजन, ते लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व. पासछा, उसन्ना, कुशील, संसक्त, आहाछंद, निन्हव, बोटिक, द्रव्य लिंगीतणे विषे जे गुरु बुद्धिपूजन, ते लोकोत्तर गुरु गत मिथ्यात्व. ए चतुर्विध मिथ्यात्व यथाशक्तें परिहरुं. ए श्रीसमकिततणा पांच अतिचार शोधुं.

शंका,कंखा,वितिगिछा,परपासंमिपरसंसा,परपासंमिसं

थुठ. शंका–जीवाजीवादिक नव तत्त्वमांहे एके तत्त्वतणो मन संदेह धस्यो होय, अथवा देव,गुरु,धर्म, सिद्धांत तणो मन संदेह धस्यो होय; कांक्षाः–अपर धर्मतणो अभिलाष धस्यो होय; अथवा सर्वे धर्म सरखा लेखव्या होय; वितिगिछाः–धर्म तणा फलप्रत्यें मनःसंदेह धस्यो होय, अथवा मलमलिनगात्र तपोधन, तपोधना देखी डुगंछा कीधी होय; परपासंमिपरसंसाः–परदर्शनी तणी अतिशय विद्याख्याति देखी प्रशंसा कीधी होय; परपासंमिसंथुठः–परदर्शनीशुं संस्तव, परिचय, इष्टगोष्ट, अंतरंगप्रीति, भक्ति, दान, आलापादिक कीधां कराव्यां होय. परतीर्थे स्ववशपणें गया होइयें. स्नान, दान, होम, महोत्सव कीधा कराव्या होय, तथा संक्रांति, ग्रहणस्नान,दानादिक कर्म समाचस्यां होय, होली पम्ली पूजी होय,पींपल,तुलसी,पाणी घाल्यां होय. नदी, कुंभ, प्रमुख लौकिक तीर्थें धर्म बुद्धें स्नान कीधुं होय, आदित्यवारें, एकादशी भणी तप कीधुं होय; लोकप्रवाहें देव देवी भणी यात्रा,ऊजाणी मानी होय; कन्याहल लीधुं होय, नील, तुलसी परणाव्यां होय; श्राद्ध, संवत्सरी जम्यां होइय; आजापडवे,बलेव,भाव बीज, अखात्रीज, विणायगचोथ, नागपांचमि,जीलणाछठि,शीयल सातमि, ध्रुआठम, माहीनोम, अहवदशमी, विजयादशमी, भीमएकादशी, वछबारशी, धनतेरशी, शिवचतुर्दशी, पैतृकी अमावास्या, माहीपूनम, तथा संक्रांति, ग्रहण, व्यतिपात, वैधृति प्रमुख लौकिकपर्व,अने अष्टमी, चतुर्दशी,पूर्णिमा, अमावास्या तथा पर्यूषणापर्व तणी त्रीज, चोथ, पांचम टाली अनेरे दिवसें पर्वबुद्धें तप कीधुं होय, अनेरुं जे कांइ

जिनवचन विराध्युं होय; अनेरो सम्यक्त्वविषे पक्ष दिवस मांहे जिको कोइ अतिचार हूउ होय, ते सवि हुं, मन, वचन, कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥

अर्थः– हे जगवन्! महारे बलात्कारें नहीं, परंतु जो तमारी (इछाकारेण के०) इछा होय तो (संदिस्सह के०) आज्ञा आपो तो गुरुपर्वेनणी पाखीने दिवसें विशेष पणे श्रावकनां बार व्रत संबंधी एकेका व्रतना पांच पांच अतिचार करतां शाठ अतिचार तथा कर्मादानना पन्नर अने संलेषणाना पांच तथा समकेतना पांच सर्व मली पंचाशी अतिचार आलोउं? ए रीतें गुरुने कहे, तेवारें गुरु "आलोएह" एवो पाठ कहे, एटले गुरु कहे के अतिचार रूप पापने आलोचो. एम गुरुनो आदेश पामीने शिष्य कहे के, इछं एटले हुं पण एमज अतिचार आलोववाने इछुं छुं, प्रमाण करुं छुं,एवी रीतें गुरुनी आज्ञा पामीने पछी नमो अरिहंताणं कहीने अतिचार आलोवे.

श्रावकतणे धर्मे एटले श्रावकना धर्मने विषे पांच अणुव्रत, त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत मली बार व्रत छे, तेनुं मूल सम्यक्त्व जाणवुं. तिहां अढार दोषें रहित एवा श्री अरिहंतदेव ते शुद्ध देवतत्त्व जाणवुं. तथा आठ प्रवचनमाताना धारक एवा सुसाधु ते शुद्ध गुरुतत्त्व जाणवुं, तथा विनयमूल एवो श्रीजिनप्रणीत धर्म, ते शुद्ध धर्मतत्त्व जाणवुं. ए त्रण तत्त्वनी उपर सूधी सद्दहणा राखवी, तेने समकित कहियें, ते समकितनी जावतः एटले जावथी प्रतिपालना करुं, अने ए त्रण तत्त्वथी जे विपरीत सद्दहणा होय, तेने मिथ्यात्व कहीयें.

तिहां इव्यतो एटले इव्यें करी जावें करी लौकिकगतें, लोकोत्तरगतें, देवगतें गुरुगतें अने पर्वगतें मिथ्यात्व छे, ते चतुर्विध एटले चार प्रकारनुं मिथ्यात्व छे तेनो त्याग करवो, ते जणियें एटले कहियें छैयें.

हरि एटले कृष्ण, हर एटले महादेव, ब्रह्मा, सूर्यदेव, इंइ,चंइमा, ग्रह, देवता, गोत्रज देव, गणेश, दिक्पाल, क्षेत्रपाल, स्कंददेव, कापिल, बुद्ध, हनुमंत, यक्ष प्रमुखनी जक्ति करीने तेमने मुक्तिना देवावाला जाणी आराधियें, ते प्रथम लौकिक देवगत मिथ्यात्व जाणवुं.

चरक ते संन्यासी, परिव्राजक ते तापस ब्राह्मण, कौलिक, कापालिक,

द्विज ते ब्राह्मण अने तापस ए मुजने संसार थकी तारशे, एवुं समजीने एमनुं आराधन करीयें, ते बीजुं लौकिक गुरुगत मिथ्यात्व कहीयें.

जे श्रीवीतराग देवनी प्रतिमा अन्यदर्शनीउयें ग्रहण करी तेने अपरप रिगृहीत जिनबिंब कहियें. एवां जे जिनबिंब तथा शोल विद्यादेवीयो मांहेली तेरमीनुं नाम वैराटया छे अथवा श्रीमल्लिनाथनी वैराट्या देवी अने श्री शीतलनाथनुं ब्रह्म नामा यक्ष तथा श्रीसुपार्श्वजिननी शांता नामा देवी वली प्रमुख शब्दथी बीजा पण श्रीजिनशासनना अधिष्ठायिक जे देव देवीयो छे ते मने देव बुद्धियें जे पूजन करवुं,ते सर्व त्रीजुं लोकोत्तर देवगत्त मिथ्यात्व कहीयें.

तथा पासछा, उसन्ना, कुशीलीया, संसक्त, यथाछंदा अने निन्हवादिक बोटिक ए सर्वेने द्रव्यलिंगी कहियें, तेने विषे जे गुरुबुद्धें पूजन करवुं, ते चोथुं लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व कहीयें.

हवे ए श्रीसमकेतना पांच अतिचार छे, ते टांकवा, तेने शोधुं छुं. एक शंका, बीजो कांक्षा, त्रीजो वितिगिछा, चोथो परपाखंमीनी प्रशंसा करवी अने पांचमो परपाखंमीनी संस्तवना करवी. ए पांच अतिचार विवरीने कहेछे.

तिहां जीव अजीवादिक नवतत्त्वमांहेला कोइएक तत्त्वने विषे मनमां संदेह धस्यो होयः—जे आ वात केम हशे! किंवा नही होय? अथवा देव, गुरु धर्म अने सिद्धांत एटले आगम तणो मनमांहे संदेह धस्यो होय; शंका करी होय, ते प्रथम शंका नामा अतिचार जाणवो. तथा कांक्षा ते अपर ए टले अन्य जे पाखंमी दर्शनियो छे,तेने ग्रहण करवानो मनमां अभिलाष धस्यो होय; अथवा सर्वे धर्मोने सरखा करी लेखव्या होय; ते बीजो कांक्षा नामा अतिचार जाणवो. तथा श्रीजिनोक्त तप संयम नियमादिक क्रिया जे आचरीने धर्मकरणी करीयें छैयें, ते धर्मकरणीथी देवपदवी तथा मो क्षादिक फल मलशे, किंवा नही मले? एटले धर्मनुं फल थाशे के नही थाय? एवो मनमां संदेह धस्यो होय; अथवा मलें करीने मलिन थ येलुं एवुं गात्र एटले शरीर देखीने तपोधन जे साधु तथा तपोधना जे साध्वी तेनी डुगंछा कीधी होय, ते त्रीजो वितिगछा नामें अतिचार जाण वो. तथा परपासंमी प्रशंसा ते कोइ परदर्शनी अन्यदर्शनीना तपादिक म हात्म्यनो अतिशय देखीने तथा तेनी विद्यानी ख्याति एटले प्रसिद्धता दे खीने तेनी प्रशंसा कीधी होय,ते परपासंमी प्रशंसा नामें चोथो अतिचार

जाणवो. तथा परदर्शनीनी साथें संस्तव, वात प्रमुखनो परिचय तथा इष्ट गोष्ठी एटले वचन गोष्ठी करवी. अंतरंगने विषे प्रीति राखवी, तेनी नक्ति करवी, तेने दान प्रमुख आपवुं, आलाप संलापादिक कीधा कराव्या होय ते पांचमो परपासंमिसंथुउ एटले परपाखंमीना संस्तव नामा अतिचार.

तथा परतीर्थे जे अन्यदर्शनीयोनां तीर्थ होय तिहां पोताने वशें गया होइयें तिहां स्नान, दान, होम, महोत्सव कीधा कराव्या होय तथा सूर्य संक्रांति, ग्रहणने दिवसें स्नान करवुं दानादिक आपवा प्रमुख कर्म जे कार्य, ते समाचर्यां होय, तथा होलिका पर्वने पमली एटले फेरा प्रमुख देइने पूजी होय, तथा पींपलाने विषे, तुलसीने विषे पाणी नाख्यां होय, तथा नदी, कुंम प्रमुख लौकिक तीर्थने विषे धर्मनी बुद्धियें स्नान कर्युं होय, तथा आजे आदित्यवार ठे, आजे एकादशी ठे ते नणी तप कर्युं होय तथा लोकप्रवाहें एटले लोकोनी देखा देखीयें लोकने अपवादें देवता देवीनी यात्रा करवी, उजाणीं करवी, तेनी मानता कीधी होय, तथा धर्मार्थें पारकी कन्या परणाववानुं माथे लीधुं होय, नील परणाव्युं होय तुलसी परणावी होय. तथा श्राद्ध संवत्सरी मासी, ठम्मासी प्रमुख जम्या होइयें. चंद्रमा अने रोहिणीनुं गीतगान करवुं, विवाहमां गणेशनुं बेसाडवुं, पुत्र जन्में ठठीने दिवसें ठठीदेवतानुं पूजन करवुं, विवाहादिकने विषे मातृका देवीनुं, गोत्रजदेवीनुं मांमवुं, तोतलादिकनुं पूजन करवुं, गोत्र देवतानुं पूजन करवुं, कृषीने आरंनें सीता अने महेल देवतानुं पूजन करवुं, पुत्रादिकने जन्मे माइ सरावलानुं करवुं, सोनानुं तथा रूपानुं आनरण तथा रंगीत वस्त्र पहेरती एवी सोनिणी तथा रूपणी तथा रंगिणी देवतानुं पूजन करवुं, मृत्युकार्यें जलांजलि, तिल, दर्न, जल, घट, इत्यादिकनुं दान वगेरे करवुं, नदीतीरें अथवा तीर्थोदकें मृतकदाह करवो, नूतने सेवादान, मृतकनुं श्राद्ध, बारमासी, ठमासी करवी, पाणीना पर्वनुं नरावबुं, कुमारीने नोजन दान आपवुं, धर्मार्थें पारकी कन्या परणाववी. नानाविध यज्ञ करवा, लौकिकयात्रा निमित्तें नोजनादिक करवां, धर्मार्थें वापी कूवा खणाववा, खेत्रादिकने विषे गोदान आपवुं, काक मार्जारादिकने पिंमदान देवुं, पींपलो, लाकडो इत्यादिक वृक्षनुं वाववुं, शांढने अंकवो, पूजवो, गोपुठनुं पूजवुं, शीत मटाडवाने माटे अथवा धर्मार्थें अग्नि प्रज्ज्वलित करवो, उंबर,

आंबलीनुं पूजन करवुं,सूर्य संक्रांतिने दिवसें विशेष पूजा स्नानादिक करवां, उत्तरायणने दिवसें पूजा करवी,आदित्यवारें तथा सोमवारें तप करवुं,शनिवारें तेल, तिल चडाववा, कार्त्तिकमासें स्नान करवुं, माघमासें स्नान करवुं, तथा ब्राह्मण तापसादिकने नमवुं, ब्राह्मण आगल पाठण जणवुं,तापसोनी आगल 'ॐ नमः शिवाय' इत्यादि जणवुं,मूलनक्षत्र तथा आश्लेषा नक्षत्रनेविषे बालक जन्मे तो ब्राह्मणकर्त्तव्यनुं करवुं, विप्रने गोल तिल तेल जोजननुं दान आपवुं, विप्रनी समीपें बेसी कथा सांजलवी, विप्रने घेर गमनागमन करवुं. ए सर्व लौकिक गुरुगत मिथ्यात्व जाणवुं.

तथा श्रीवीतरागनी प्रतिमा अन्यदर्शनीयें ग्रहण करी होय तें प्रतिमाने वांदता लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व जाणवुं. जेम उज्जेणीनगरीयें अयवंती सुकुमार जिहां स्मशाने काउसग्ग रह्या हता,ते स्थानकें ते कुमरनी जड़ा नामक मातायें घणुं इव्य खरचीने श्रीजिनप्रासाद कराव्यो, पछी अनुक्रमें केटलोएक काल वीत्या केडें ते प्रासाद अन्यदर्शनीउयें ग्रहण करी महादेवनो प्रासाद करी तेमां ईश्वरनी मूर्त्ति थापी. तिहां तीर्थयात्रा करे तो मिथ्यात्व लागे, तथा इहलोकना सुखने अर्थें श्रीगोडीपार्श्वनाथादिकनी मानता करे, ते पण लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व कहियें.

तथा श्रीवीतरागजाषित सिद्धांतना उत्थापक उत्सूत्रजाषी, पोतानी मतिकल्पनायें नवा नवा मार्गना प्रकाशक एवा साधु वेषधारी होय, पण समकेतरहित होय, तो तेने गुरुबुद्धें माने, ते लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व जाणवुं. जेम जमालिये पोतानी मतिकल्पनायें केवलिजाषित वचन उत्थापी नवो पंथ चलाव्यो; तेने श्रीवीतरागें निन्हव कह्यो. ए जमाली श्रीमहावीरनो जमाइ अने जाणेज हतो, तेणें महावैराग्यें दीक्षा लीधी हती, पछी करवा मांरुयुं ते कयुं. इत्यादिक जगवाननां वचन उत्थापी उत्सूत्र जाषतो निन्हव कहेवाणो. ते किल्बिषिया देवोमां जइ उपन्यो, अने संसार वधार्यो, माटे एवा कुमति ते साधुने वेषें वर्त्तता जो क्रिया पालता होय, तोपण तेने वांदतां लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व लागे.

तथा सर्व पाखंमी दर्शनवाला कहे छे के, अमारुं दर्शन जलुं छे, बीजां सर्व जुगं छे,एम कदाग्रही थइ रेहवुं,ते प्रथम अजिग्रहिक मिथ्यात्व जाणवुं.

तथा केटलाएक पामर लोक कहे छे के, सर्व देवने वांदवुं, पण कोइने

निंदवुं नहीं. सर्व प्रकारना गुरुने तथा सर्व धर्मोने आराधे; पण कोइने वि राधे नही. ए रीतें सर्व दर्शनने सरखा करी मानवां, जलां नूंमां सर्वे सर खां करवां, ते बीजुं अनभिग्रहित मिथ्यात्व जाणवुं.

तथा जे हठ कदाग्रहना जोरथी जाणतो थको पण सूधा मार्गने उत्था पीने पोतानो मनःकल्पित मार्ग थापे, गोष्ठामाहिलनी पेरें प्रवचनथी विप रीत थको पोतानो बोल थापवो, ते त्रीजुं अभिनिवेशिक मिथ्यात्व जाणवुं.

तथा जे धर्मने विषे अने जिनप्रणीत वचनने विषे संदेह राखवो,शंका धरवी, ते चोथुं सांशयिक मिथ्यात्व जाणवुं.

तथा जे अनुपयोगें कोइ प्रकारनो विचार जाणे नहीं, ए मिथ्यात्व एकेंद्रियादिक पांच थावरना जीवोमां लाभे, ते पांचमुं अनाभोगिक मि थ्यात्व जाणवुं. ए पांचे प्रकारनां मिथ्यात्व टाली अने शुद्ध निरतिचार पणें सडसठ बोलें अलंकृत एवुं सम्यक्त्व पालवुं.

तथा अजापडवो एटले नवरात्रिनो प्रथम अर्थात् आश्विन शुदि एक मने दिवसें गोमेध करवो, एटले बलदनी हिंसा करवी, तथा भाव बीजनुं करवुं, तथा सर्व महीनानी शुदि बीजने दिवसें चंद्रमाने दशिकानुं दान आ पवुं, एटले चंद्रदर्शनें वस्त्रमांथी दशिका काहाडीने चंद्रने दान आपवुं. त था माघ मासनी शुक्लतृतीयायें भिक्षा मागी खावुं. अखात्रीजने दिवसें कां तणुं नहीं कांतवुं, भाद्रपद मासनो अंधारो पक्ष एटले श्राद्धपक्ष तेने मानवो, आश्विन महीनामां शुदि त्रीजे गोरीनुं पूजन करवुं, भादरवा शुदि चोथे अथवा वैशाख शुदि चोथें गणेश चोथ कहेवाय ते दिवसें गणेशनुं पूजन करवुं. रात्रे गणपतिनुं पूजन करी पछी जमवुं. मागशिर मासें अने माघ मासें चोथने दिवसें रात्रिनो चंद्र उग्या पछी चंद्रनुं दर्शन करीने भो जन करवुं. श्रावणशुक्ल पंचमीये नागनी पूजा करवी, महाशुदि छठने दि वसें चंदन व्रत करवुं, सूर्यनी पूजा करवी, श्रावण शुदि छठें जीलणा छठ ने दिवसें ठाकोरने जीलाववुं,शीयल सातमीने दिवसें शीतलादेवनी पूजा करवी. तथा आखा श्रावण महीनामां महादेवनी पूजा करवी, जे जे आठ मने दिवसें बुधवार आवे, ते ते आठम बुधाष्टमी कहेवाय, ते दिवसें केवल गोधमनुं भोजन करवुं,तथा भादरवाशुदि आठमने दूर्वाष्टमी कहेवी ते दिवसें मृतकनुं श्राद्ध करवुं, तथा आश्विन मासें नवरात्रिने विषे एकासणां उप

वास करवा, चैत्रशुदि अष्टमीयें तथा .रामनवमीयें गोत्र देवतानुं पूजन करवुं, तथा भादरवा शुदि अक्षय नवमीयें अक्षत भोजन तथा माहिनो मने दिवसें व्यतिपातें स्नान करवुं, भादरवा शुदि अहवदशमीयें जागरणा दिक करवां, पितृने पिंम आपवा, तथा विजयादशमीयें खीजडीना (श मीना) वृक्षने प्रदक्षिणा देवी, तथा आषाढशुदि एकादशीने हरिशयन ए कादशी कहे छे, अने कार्त्तिक शुदि अगीआरसने हरि उठापन एकादशी कहे छे, तथा फागुणशुदि अग्यारशें तथा जेठशुदि भीम एकादशियें तेमज सर्व महिनानी प्रत्येक एकादशीयें व्रत उत्सवादिक करवा, तथा आशोवदि बारशें एटले वत्सबारशने दिवसें वाछडाउने शणगारवा, संतानादिकने अर्थे वत्ससहित गायनुं पूजन करवुं, तथा ज्येष्ठशुदि तेरशने दिवसें साथवानुं दान आपवुं, तथा धनतेरशने दिवसें धननुं पूजन वगेरे करवुं, तथा महा वदि चौदश ते शिवचतुर्दशीने दिवसें शिवरात्रिनो उपवास करी जागरणा दिकनुं करवुं,तथा फाल्गुनवदि चौदशें नव सतीनी यात्रा वगेरे करवी. त था श्रावणवदि चौदशें पवित्र करणादिक करवां, तथा भादरवा शुदि चौ दशें अनंत देवनो चौद गांठनो दोरो, पूजन करी बांधवो. ते अनंतबंधन कहेवाय. अमावास्यायें जमाइ अने भाणेजने भोजनादिक करावबुं. तथा सोमवती अमावास्यायें नदी तलावें स्नानादिकनुं करवुं, तथा दीपोत्सवी अमावास्यायें पितृनिमित्तें दीपप्रदान करवुं, तथा भादरवावदि पैतृकी अ मावास्यायें श्राद्ध तथा ब्रह्मभोजनुं करवुं. तथा कार्त्तिकी पूर्णिमायें विशे ष स्नानादिक करवां, तथा फाल्गुन पूर्णिमायें होलीने परवाली प्रदक्षिणा नुं देवुं, श्रावण पूर्णिमायें बलेव पर्वनुं करवुं, तथा माहि पूनेमने दहाडे देवीपूजनादिक व्रत करवां. तथा संक्रांति, ग्रहण, व्यतिपात, वैधृति प्रमुख मिथ्यात्वीउंना घणां पर्वो छे ते देश देशने विषे जूदी जूदी रूढी प्रमाणें अनेक प्रकारनां छे,ते मांहेला केटलांएक प्रसिद्ध पर्वो अहीयां लखी देखा ड्यां, ए सर्व लौकिक पर्वगत मिथ्यात्व जाणवुं. तथा आठम, चौदश, पून म, ए प्रत्येक पक्षना त्रण दिवस अने श्रीपर्युषण पर्वना दिवसो मांहेली त्रीज, चोथ अने पांचम एटला दिवस टाली अनेरा दिवसोनेविषे पर्वनी बुद्धि आणीने तप कर्युं होय ते लोकोत्तर पर्वगत मिथ्यात्व जाणवुं. ए तथा अनेरुं पण जे कांइ श्रीजिनेश्वरनुं वचन विराध्युं होय, मिथ्यात्व उप

र नाव राख्यो होय, अने समकेतने लोप्युं होय, समकेतने दूषण लगाड्युं होय इत्यादिक पक्षदिवसें एटले पखवाडीया मांहे जे कांइ सूक्ष्म अथवा बादर अतिचार श्रीसमकेतने विषे लाग्यो होय, ते रूप डुक्कडं एटले डुष्कृत जे पाप लागां होय तेने हुं मद्दारा मनें, वचनें अने कायायें करी मिथ्या करुं बुं, एटले ते मद्दारां पाप सर्व फोक थाउ.

हवे समकेत दर्शन तथा चक्षुदर्शन तेना प्रतिक्रमण माटें कहे बे. मिथ्यात्वीउनी रथयात्रा प्रमुख जोवाने अर्थे कौतुकें करी चारे तरफ जावुं, तथा आववुं तेनें विषे बांधेलुं जे कर्म तथा मिथ्यात्वीउना मंदिर देवदेहरां प्रमुखने विषे उत्सवादिक जोवाने माटे तिहांज अरहुं परहुं फरवुं उंची दृष्टियें करी जोवुं, ते जेम केः—उपयोग विना तथा राजानी आज्ञाथी अथवा राजानी प्रेरणाथी अथवा श्रेष्ठिपदादिक मलवाथी तथा आजीविका निमित्तें जेनुं दासपणुं करीयें तेनी आज्ञाथी जे जोवुं, तेणे करीने बंधायेलुं जे कर्म तथा पूर्वे कही आव्या तेणें करी बंधायेलां जे कर्म, ते सर्व मिथ्या करुं बुं.

दर्शनमोहनीयकर्मना उपशमादिकने विषे समर्थ तथा श्रीअरिहंतनो कहेलो एवो तत्त्वसद्दहवा रूप जे आत्मानो शुन परिणाम, ते सम्यक्त्व जाणवुं, ते सम्यक्त्वना गुणने प्रकाश करनारुं शंकादि अतिचार रूप दूषण न लगाडनारुं एवुं नरवर्माराजानुं आहिं कथानक कहे बे.

जंबुद्दीपना नरतक्षेत्रमां मगधदेश मध्यें विजयवती नगरी ते लक्ष्मीयें करी स्वर्गपुरीने जीते एवी बे, तिहां घणां राजा जेने नमे बे, सेवे बे, एवो नरवर्मा नामें राजा बे, ते राजानी सुंदरी नामें राणी घणीज स्वरूपवती बे, ते राणीनें बलें करीने सिंहसमान एवो हरिदत्त नामें पुत्र बे, तथा ते राजाने विचारना जाण एवा मतिसागर आदिक घणा प्रधानो बे,एकदा राजा अने प्रधानादिक सर्व सनायें बेठा थका परस्पर धर्मसंबंधि विचार करे बे, तिहां एकें कह्युं केः—दाक्षिण्य औदार्य धैर्यथी परोपकार करवो, लोकविरुद्ध वातनो त्याग करवो, ते धर्म बे. बीजो बोल्योः वेदमां कह्या प्रमाणें अग्निहोत्रादिक कर्मोनुं अनुष्ठान करवुं, ते धर्म बे. त्रीजायें कह्युं के जे कुलक्रमागतें चाल्यो आव्यो ते धर्म जाणवो. वली एकें कह्युं केः— धर्म अधर्म कांइ प्रत्यक्ष देखाता नथी, माटे आकाशना पुष्पनी परें धर्म पण नथी, अने अधर्म पण नथी ! एम धर्मनो विवाद करतां एवा लोकोने दे

खीने ज्ञानवंतमां मुख्य एवो राजा पोताना मनमां विचारवा लाग्यो के, दाक्षिण्य प्रमुख तो पुरुषनुं व्रत छे, माटें तेणे करी धर्म थाय नही. तथा वेदमां कहेलो धर्म ते हिंसायें करी मलिन छे, माटे ते पण धर्म नथी. तथा कुलक्रमागतें धर्म तो सर्व कोइने छेज, तेतो नास्तिकने पण छे, जगतमां विचित्र प्रकारना कुलक्रमागत धर्म देखाय छे, तेमां कयो खरो, अने कयो खोटो कहेवाय? माटे ते धर्म न कहेवाय! तो हवे उपाधी नावें करी रहित एवो पण कोइ धर्महशे? एम चिंतवे छे, एटलामां पोलीये आवी राजाने नमस्कार करी कह्युं. के हे देव! तमारो मदनदत्त नामें बालमित्र घणा दिवसें तमोने मलवा सारु आव्यो छे, ते सांजली राजायें कह्युं एने शीघ्र तेडी लावो. पछी तेने महोटा महोत्सवें करीने गाममां तेडी लाव्या,राजा आलिंगन आपी मल्यो; अने पूछ्युं के, हे मित्र! तुं एटलो काल क्यां रह्यो हतो? अने शुं उपार्जन करी आव्यो? तेवारें ते पण राजाने नमस्कार करी कहेवा लाग्यो के, हुं घणा देश जम्यो, तिहां घणां आश्चर्य दीगं,अने धन पण घणुं उपार्ज्युं, तथा नक्षत्रनी श्रेणी सरखो मोतीनो एकावली हार पाम्यो छुं, ते त्रण जगतमां मनोहर छे, त्यारें राजायें पूछ्युं के प्रथम तो ए हारनो तुने लाज केम थयो? ते मने कहे, तेवारें मदनदत्त बोल्यो के, हे देव! हुं अंतःपुरमांथी नीकल्यो ते अविश्रांतपणें पृथ्वीमां जमतो जमतो डुपदिका नामनी अटवीमां गयो, तिहां तृषायें पीड्यो मध्यान्हें जलनुं स्थानक शोधवा माटें जमण करुं छुं, एवामां चंड्मानी परें मुनियोयें परिवर्या, शेषनागनी पेरें क्षमाना आधार अने देवतायें परिवर्या एवा श्रीगुणधर नामें आचार्य दीग, तिहां में एकावलीहार तथा बीजा पण केटलाएक दिव्य आजूषणें शोजित अने पोतानी देवीसहित एवो एक देवतानें धर्मश्रवण करतो दीगे, तेवारें हुं पण ते जगवंतना वचन हर्षे करी सांजलवा लाग्यो, तेथी घणे कष्टें छेदाय एवी तृषा मने लागी हती, ते पण उपदेश सांजलती वखत शांत थइ गइ. हुं जक्तियें करी गुरुना चरण वांदीने बेगे, तिहां पोताना जाइनी पेरें प्रीतियें करीने ते देवता महारी साहामुं जोइ रह्यो, अने निर्मलबुद्धियें करी गुरुने पूछतो हवो के, हे स्वामी! ए पुरुषने विषे मुजने घणो प्रेम उपज्यो छे. तेनुं शुं कारण हशे? तेवारें आचार्य कहेवा लाग्या के, पूर्वला जवने विषे कोसंबी नगरीयें जय

नामें राजाना बे पुत्र हता, तेमां मह्होटानुं नाम विजय अने न्हानानुं नाम विजयंत हतुं. दैवयोगें ते बेहुनी माता मरण पामी, तेवारें धाव मातायें तेमने पाळ्या, अनुक्रमें यौवन पाम्या, एकदा ते बेहु कुमरने राजायें युवराजपदें थाप्या, ते जाणीने ते बेहु जण वनमां गया छे, तिहां उरमान मातायें तेमने कोइ युक्तियें करि विष देवराव्युं, हवे ते वनमां अशोकवृक्षनी तळें कोइ दिवाकर नामें रूडा साधु निश्चळध्यान करीने अध्ययन करवा बेठा छे, तेना प्रभावथी जेनी ध्वजाने विषे गरुड छे एवो गरुडध्वजनामें देवता मह्होटी ऋद्धिनो धणी छे, तेनुं आसन कंपायमान थयुं, तेथी ते देवता तिहां आवी हाथ जोडी साधुनी सन्मुख उभो रह्यो. तिहां ते देवताना प्रभावथी जेम सूर्यना मंमळथी अंधकारनो तरत क्षय थइ जाय, तेम ते बेहु कुमरोने विषम विष व्याप्युं हतुं ते नाश पाम्युं. हवे ते देवता पण ते साधुने हाथ जोडी नमस्कार करी संतोष पामतो सिद्धांत सांभळवा लाग्यो, अने ते बेहु राजपुत्रोनुं विष उतरी गयुं. तेना माहात्म्यथी ते पण विस्मय पाम्या थका साधुने पगे लागीने आगळ बेठा. तेने गरुडध्वज देवतायें कह्युं, जे हे कुमरो! जो आ ऋषि न आव्या होत, तो विष व्याप्याथी तमारुं मरण जरूर थात, ते माटें विश्वने पूजनीय एवा ए ऋषीश्वरनी तमें सम्यक् प्रकारें सेवा करजो. एम कही ते गरुडध्वज देवता साधुने नमीने पोताने स्थानकें गयो, पाछळथी ते बे कुमरो सारी रीतें गुरु मुखथी तत्त्व सांभळी जाणीने संसारथी विरक्त थइ दीक्षा लेइ आकरी तपस्या करी मरण पामी पहेले देवलोकें मह्होटो भाइ विद्युत्प्रभ नामें देवता थयो, अने लघुभाइ तिहांज विद्युत्सुंदर नामें देवता थयो. तिहांथी चवी मह्होटो भाइ तो विजयवती नगरीयें वाणीयानो पुत्र थयो, तेज मदनदत्त नामें नरवर्म राजानो मित्र थयो, ते द्रव्य कमाववाने माटे देशाटन करतो आज तें आहीं अटवीमां दीठो, माटे पूर्वभव संबंधी भाइना अभ्यासें करी तुजने एनी उपर घणो स्नेह उपजे छे, एवा मुनिनां वचन सांभळी हर्षवंत थइने ते देवतायें मनें आ एकावळी हार आप्यो.

वळी ते देवता गुरुने पूछतो हवो के, महाराज निद्रादिक भाव मुजने केम थाय छे? तेवारें गुरुयें कह्युं के तहारुं मृत्यु ढुकडुं छे, तेवारें देवतायें पूछ्युं, हुं च्यवीने क्यां जइ उपजीश? अने मने बोधबीजनो लाभ केम

थशो? तेने गुरुयें कह्युं के,तुं नरवर्मराजानो हरिदत्त नामें पुत्र थइश,अने आहा रने देखी प्रतिबोध पामीश ! एवुं सांजली आचार्यने नमीने देवता स्वर्गे गयो.

वली में आचार्यजीने नमस्कार करीने हारनी उत्पत्ति पूछी, तेवारें गुरुयें कह्युं के, पूर्वे जेवारें चमरेंद्र नवो उपन्यो, तेवारें सौधर्मेंद्र सायें युद्ध करवा गयो, पछी इंद्रें क्रोध कीधो तेवारें बीनो थको उतावलो तिहांथी नागो ते.नासतां थकां तेना कंठथी आ हार इहांथी असंख्यातमे द्वीपें धरती उपर जइ पड्यो, ते हार तिहांथी देवतायें उपाड्यो. एवुं सांजली गुरुने नमस्कार करी हुं तिहांथी चाल्यो, ते पच्चीश वर्ष लगण पृथ्वीउपर पर्यटन करी घणुं धन कमाइने तमारी पासें आव्यो बुं. हवे ते देवता तमारे घेर पुत्रपणें थयो अथवा नथी थयो ते कहो? एम पूछ्युं तेवारें राजा बोल्यो के हे मित्र ! आ हार पुत्रने देखाडियें ? एम कही पुत्रने तेडावीने ते हार देखाड्यो, ते देखवाथी पुत्रने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं, पछी राजाना पूछवाथी मदनदत्तनी पेरें पुत्रें पण सर्व पूर्वभव कही संजलाव्यो.

हवे राजा चिंतववा लाग्यो के, जे प्रथम धर्मनो विवाद थयो, ते पुत्रनुं वृत्तांत सांजलवाथी महारो सर्व संदेह पोतानी मेलें छेदाइ गयो. माटें आ त्रणे जगतमां एक श्रीअरिहंतनो धर्मज जव्यजीवोने संसारनी बीकने छेदनारो तथा स्वर्ग अने मोक्षना सुखनो दातार छे. एवो निश्चय कर्यो.

एवा समयमां वनपालकें आवीने राजाने विनति करी के, हे देव ! आजे नगरबाहिर पुष्पावतंसक नामा वनने विषे घणा शिष्यना परिवारें परवर्या, चार ज्ञानना धारक, सुरासुरें सेवित एवा गणधर नामें गुरु समवसर्या छे, एवुं सांजलीनें जेम मेघनो शब्द सांजली मोर हर्ष पामे, तेम राजा हर्ष पाम्यो थको वनपालकने वधामणी आपी संतोषित करी पोतें हस्ती उपर बेशी पुत्र मित्रादिकें सहित सर्व ऋद्धियें करी ते आचार्यने वांदवा गयो, आचार्यने विधि सहित वांदीने योग्यस्थानकें बेशी काननेविषे अमृत सरखी एवी धर्म देशना सांजलवा बेठो. तिहां गुरु कहेवा लाग्या के, हे जव्यजीवो ! सर्वधर्मनुं मूलद्वार एटले बारणां रूप, धर्मनो आधार, धर्मनुं जाजन, धर्मनो निधान ते समकितज छे,'तिहां जे देवने विषे देवनी बुद्धि, अने गुरुने विषे गुरुनी बुद्धि तथा धर्मने विषे धर्मनी बुद्धि ते सम्यक्त्व

जाणवुं, अने तेथी विपरीत ते मिथ्यात्व जाणवुं. जेमाटें सम्यक्त्व विना मोक्षप्राप्ति नहीं, अने मिथ्यात्वविना संसारनी वृद्धि नही.

· तिहां देव ते रागद्वेष रहित श्रीजिनेश्वर जाणवा; तथा जे पंचमहाव्रत धारी साधु ते गुरु जाणवा,अने श्रीजगवंतनो कहेलो दयामूल धर्म ते धर्म जाणवो, ए त्रण तत्त्वना आराधनरूप समकेत पाले बते ते पुरुषने नरक अने तिर्यंचनी गति केवारें पण प्राप्त न थाय, तथा देवगतिनां सुख, मनुष्यगतिनां सुख अने मोक्षनां सुख वश थाय, जे प्राणी एक अंतरमूहूर्त्त मात्र पण समकेतने फरसे, ते निश्चेंथी अर्द्धपुजलपरावर्त्तनमांहे सिद्धि पामे. एवो धर्म गुरुपासेंथी सांजलीने राजा पोताना पुत्रसहित समकितपूर्वक श्रावकनो धर्म अंगीकार करी हर्ष धरतो मनने रंगें करी पोताने घेर आव्यो.

एकदा देवलोकमां इंद्रमहाराजें नरवर्माराजानी प्रशंसा करी के, ए राजा समकेतमां एवो दृढ थयेलो बे, के देवताएं चलाव्यो पण चले नही, ते वातने सुवेग नामें एक देवता असद्दहतो थको परीक्षा करवा माटे नरवर्माराजानी पासें आव्यो, तिहां वैक्रिय लब्धि विकूर्वीने घणा यतियो अकार्य करता थका ते राजाने देखाड्या, ते एवा देखाड्या के,जे थकी गमे एवो धर्ममां निश्चल थयेलो प्राणी होय, तो ते पण धर्मथकी अवश्य चले, पण नरवर्मराजा तो महाबुद्धिवंत बे, माटे विचारवा लाग्यो के, मलरहित सुवर्ण सरखुं निर्मल एवुं श्रीजिनशासन निर्मल बे. तो शुं ए यतियो जारे कर्मी जीवो बे के, जेथी आवां अकार्य करे बे, माटें ए जिनशासनने विषे हलकाइपणुं देखाय बे, तेथी बुद्धिवानें तेनी रक्षा करवी. एम चिंतवी ते यतियोने राजा वारतो हवो. एवो राजाने धर्ममां निश्चल थयेलो जाणीने ते देव राजाने नमस्कार करी कहेवा लाग्यो के, सजामां बेठा इंद्र महाराजें तमोने जेवा प्रशंस्या तेवाज तमें बो, माटें धन्य बे तमोने!!! एम कही पोतानो मुकुट आपीने देवता देवलोकें गयो. ए रीतें सम्यक्त्व मूल माधुर्य गृहस्थधर्म घणा काल पर्यंत पालीने पुत्रादिक सार्थे दीक्षा लइ नरवर्म राजा अनुक्रमें सद्गति पाम्यो. ए रीतें नरवर्मराजानुं दृढ समकेत पाल्यानुं फल स्वर्ग, मनुष्य अने मोक्ष सुखनुं देववालुं तेने हे मनुष्यो! तमें सर्वदा आदर करो. ए समकेतने विषे शंकादिक अतिचार टालवा आश्र

थी नरवर्माराजानुं चरित्र कह्युं. तेम बीजा श्रावकें पण समकेतने विषे शं कादिक पांच अतिचार जाणवा, पण आचरवा नहीं.

हवे जीवादिक तत्त्वने विषे जीव छे के नथी, एवो संशय करवो, ते शं कादोष जाणवो. तथा अन्यदर्शनीमां क्षमादिक थोडोसो गुण देखीने अ न्यदर्शननी वांछा करे, ते कांक्षा दोष कहियें, तथा दानादिक वगेरे चार प्र कारनो धर्म करियें छैयें खरा, पण तेनुं फल थशे किंवा नहीं थाय! एवो संदेह करवो, तेमज मलेंकरी मलीन एवा शरीर तथा उपधीवाला साधुने देखीने डुगंछा करवी ते वितिगिछा नामा दोष जाणवो. तथा अन्य कुलिं गीने कहेवो के आ महोटो तपस्वी छे, एवी प्रशंसा करवी ते परसंस्तव दोष जाणवो. तथा अन्यदर्शनी साथें परिचय करवो ते परप्रशंसा नामा दोष जाणवो. ए पांच अतिचार उपर पांच दृष्टांत कहे छे.

प्रथम शंका दूषण उपर दृष्टांत कहे छे. कोइक बे पुरुष धनना अर्थी थका एक सिद्ध पुरुषनी सेवा करता हता, केटले एक दिवसें सिद्धपुरुष प्रसन्न थइने कहेवा लाग्यो के, आ कथा तमो छ महिना पर्यंत कंठे राख जो. छ महीना वीत्या पछी पांचशें दीनार देशे. एम कही सिद्ध पुरुषें ते बेहुने कथा आपी. तेवारें एक पुरुषें विचार्युं, जे ए कथा पांचशे सोना मोर आपशे अथवा नही आपशे, पण छ महीना पर्यंत कंठमां राखतां लोक हांसी करशे! एवी शंका आणीने कथाने पडती मूकी, अने बीजे पुरुषें निःशक पणें छ महीना पर्यंत कंठें राखी छ महीना वीत्या पछी नि रंतर प्रतिदिवसें पांचशे दीनार देवा लागी तेथी थोडा दिवसमां ते पुरुष ऋद्धिवंत थइ गयो. ए दृष्टांतें धर्म उपर कोइ रीतें शंका न करवी.

हवे कांक्षा उपर दृष्टांत कहे छे. कोइक ब्राह्मण धारा नामें पोतानी गोत्रदेवीनुं निरंतर आराधन करे छे, पछी लोकोना मुखथी चामुंडा देवीनो विशेष प्रनाव सांजलीनें तेने पण आराधवा मांमी, एम करतां एकदा ते ब्राह्मण नदी उतरतां पाणीना पूरमां तणाणो, तेवारें कहेवा लाग्यो के, अहो धारा देवि! तुं माहारी सार कर! हुं तहारो सेवक पाणीमां डुंबी जाउं छुं! तथा वली अहो चामुंडा देवि! तुं तहारा बुडता सेवकनी सार संजाल केम करती नथी? एवा ब्राह्मणनां वचन सांजली बेहु देवीयो तिहां आवी, अने जुवे छे तो, ब्राह्मण बेहु देवीयोनां नाम लेतो थको डु

बतो जोयो,तेवारें ते देवीयो मांहोमांहे ईर्ष्याथी मत्सर धरती थकीज रही; पण ब्राह्मणनी चिंता बेहुमांथी कोइयें पण करी नही,तेथी ब्राह्मण डुबी गयो, अने मरण पाम्यो; पण जो ते ब्राह्मणें एकज देवीनुं साधन कर्युं हत, तो बूडत नही. ए दृष्टांतें अन्यदर्शनीनी वांछा न करवी.

हवे वितिगिच्छा दोष उपर दृष्टांत कहे छे. आषाढभूति आचार्यें घणा शिष्योने धर्मदेशना आपी देवलोकें पहोंचाड्या. एक वार पोताना शिष्यनी सार्थें आचार्यें संकेत कर्यो के, जो तमें देवतानी पदवी पामो तो अमने दर्शन देखाडजो. पछी ते शिष्य अनशन आराधना पूर्वक समाधिकाल करी देवता थयो. ते देवता तिहां देवलोकनी ऋद्धि देखी देवांगनाना सौभाग्य रूप देखी व्यामोह पाम्यो. तेणें करी तत्काल आवी शक्यो नही; तिहां सुखमां एक वर्ष ते क्षणमात्र जेटलो थाय,तेवारें आचार्यें चिंतव्युं जे देवता थयो होत तो अवश्य महारो शिष्य महारी पासें आवत, पण जाणीयें छेयें जे देवलोकादिक कांइ छेज नहीं! मार्टें में एटला वर्ष पर्यंत तप, जप, संयम, नियमादिक कीधां, ते सर्व फोकट महारां आत्माने में क्लेश पमाड्यो. एम चिंतवी दीक्षानो त्याग करवा एकाकी निकल्यो, एवा अवसरें तिहां देवतायें अवधिज्ञान प्रयुंजीने पोताना गुरुना शिथिल परिणामनुं स्वरूप दीठुं. तेवारें देवतायें आवी मार्गमां नाटक विकुर्व्युं. ते नाटक छ महीना पर्यंत आचार्यें जोया कर्युं. दवतायें नाटक विसर्जन कर्युं. तेवारें आचार्य आगल चाल्या आगल जतां मार्गमां रत्नेजडित एवा अनेक सुवर्णमय आभूषणें अलंकृत देवकुमरनी पेरें सुंदर अत्यंत मनोहर एवो न्हानो बालक एकलो मल्यो, तेणें आचार्यने मार्ग जवानुं पूछ्युं. तेवारें आचार्यें कह्युं के, तुं एकांतें महारी सार्थें आव, तुने हुं मार्ग देखाडुं. वली तहारुं नाम शुं छे? ते मने कहे. तेवारें बालक बोल्यो महारुं नाम पृथ्वीकायियो छे, पछी आचार्यें तेने एकांते तेडी विणासीने तेना आभरण सर्व लइ लीधां. वली आगल मार्गे चालतां एवीज रीतें बीजो अप्कायियो एवे नामे बालक मल्यो, तेने पण तेजरीतें आभरण लइ विणासी नाख्यो. एम तेउकायियो, वायुकायियो, वनस्पतिकायियो अने छट्ठो त्रसकायियो एवा छ कुमरने हणी तेना आभरण लइ जोलीमां भरीने मार्गमां चाल्यो जाय छे; एवामां देवतायें आगल मार्गमां एक सार्थवाहनो महोटो सथवारो विकूर्व्यो, अने ते

देवतायें पोतें सार्थवाहनुं रूप करी आचार्यने वांदीनें पूछ्युं के, तमने अमारा छ पुत्र क्यांहि मार्गमां मल्या ? ते सांभली आचार्य भयभ्रांत थया, पछी सार्थवाह सिंहकेसरिया लाडु लावीने आचार्यने वहोरावा लाग्यो. पण आचार्यनी जोली तो आजरणें करी जरेली हती माटें केवी रीतें वहोरे? एटलामां ते श्रावकें पात्रां काहाडवाने मिशें बलात्कारें जोलीमां हाथ घाल्यो, तो सर्व पात्रां अजरणोथी जरेलां दीठां. तेवारें कहेवा लाग्यो के, हे आचार्य ! तमारा चरित्र रुडा दीठामां आवतां नथी. ते सांभली आचार्य लज्जा पामता महाजय पाम्या. पछी ते देवतायें सार्थवाहादिकनां विकूर्वेलां रूप सर्व विसर्जन करी मूलगुं रूप आदरी आगल उन्नो रही देव पदवी पाम्या. ते आरंजथी मांमीने सर्ववृत्तांत आचार्यने कह्यो,तेवारें आचार्य पण समज पामी आलोयण लइ चारित्र पाली देवलोकें गया. ए त्रीजुं विचिकित्सा उपरें आषाढजूति आचार्यनी कथा कही.

हवे मिथ्यत्वीयोना पंचाग्नि साधन प्रमुख महा तपस्याना करवाथी तथा बीजा पण कष्ट चमत्कारादिक देखीने विचारवुं के, ए बापडा निरर्थक अज्ञान कष्ट सहन करे छे, परंतु जो सम्यक्त्व पूर्वक स्वल्प कष्ट करे, तो तेने थोडे कष्टें पण घणुं काम सिद्ध थाय. एवुं कहेवुं परंतु ते अज्ञानें तपश्चर्या करनारनी प्रशंसा न करवी, तेनी उपर कथा कहे छे. सिंहपुर नगरमां रहेनार लक्ष्मण शेठें एकवार राजसजामां आवी मासोपवासी तापसनी प्रशंसा करी, ते सांजलीने बीजा बे श्रेष्ठी ते तापस पासें गया, ते तापस जिनधर्मनो द्वेषी छे, तेणें ते बे श्रावकनुं चित्त व्युद्ग्राहित कर्युं. तेथी ते बे श्रावक मरण पामी नरकादिकने विषे अनंता जव जम्या. तेनुं कारण लक्ष्मणश्रेष्ठी थयो. हवे लक्ष्मण शेठ पण श्रावकनो धर्म पाली पहेले देवलोकें देवता थयो. एकदा प्रस्तावें जंबुद्वीपना जरतक्षेत्रें श्री महावीरदेवने वांदवा आव्यो, तिहां तेणें पोतानो च्यवनसमय ढूकडो जाणिने पूछ्युं के, हे जगवन् ! हुं इहांथी चवी क्यां उपजीश, अने मोक्ष क्यारें पामीश ? तेवारें जगवंतें कह्युं, के हे वत्स ! तें पूर्वेला जवें तापसनी प्रशंसा कीधी हती. तेना योगें बे श्रावक श्रीजिनधर्मना द्वेषी थया. तेथी ते अनंता जवलगें संसार जमशे, तिहां तमें निबिड कर्म बांध्यां छे, तेणें करी इहांथी चवी सात जव पर्यंत तिर्यंचगति पामी पछी मनुष्यजव पामशो. तथापि तमोने जवो जवें

जिनधर्मनी प्राप्ति डुर्लन्न थशे. एम केटलाएक नव न्रमण करी अनागत कालें प्रथम तीर्थंकर श्रीपद्मनान्नना शासनमां मोक्ष पामशो. एम जाणी परदर्शनीनी प्रशंसा न करवी. ए चोथो दृष्टांत कह्यो.

हवे मिथ्यात्वीसाथें आलाप संलाप करवाथी, तेनी साथें एकगा वसवाथी तेनी वासना लागी जाय, तेनी उपर श्रीज्ञानदिवाकर सूरिनो शिष्य सिद्धनामा साधुनो संबंध कहे ने. ज्ञानदिवाकर सूरिनो सिद्ध नामें शिष्य, एकदा गुरुने कहेवा लाग्यो के, हे नगवन्! मनें आज्ञा आपोतो हुं बौद्ध मतना रहस्य पामवा बौद्धोनी पासें नणवा जाउं, तेवारें गुरुयें कह्युं के, मिथ्यात्वीयोनी पासें रहेतां थकां तहारुं चित्त पलटाइ जशे, माटे तेमनी पासें जावुं नही, एम वार्यां उतां पण तेने तिहां जवानी घणीज आजीजी करी,तेवारें आचार्यें कह्युं के,तुजने घणी अनिलाषा ने,तो जा. परंतु तिहां कदाचित् तहारुं मन पलटाइ जाय, तो अमने मलीने संशय दूर कस्या विनाज तहारे तिहां रहेवुं नही. एवो बोल अमनें आप, तो हुं तुने जवानी आज्ञा आपुं. शिष्य पण गुरुने बोल आपी बौद्धनी पासें नणवा गयो. तिहां थोडा दिवसमां बौद्धनो रागी थयो. पनी गुरुने मलवा माटे बौद्धनी पासेंथी आज्ञा मागी, तेवारें बौद्धें, पण तेमज बोल लीधो, पनी गुरुनी पासें आव्यो. गुरुयें धर्म समजाव्यो, वली बौद्धोने मलवा जतां गुरुयें पण बोल लीधो. पानो बौद्धो पासें आव्यो वली बौद्धोनो रागी थयो. एम एकवीश वार जाव आव करी, गुरु अने बौद्ध बेहु बोल लीये, तेवारें जावा आपे. पनी एकवीश वार जातो आवतो जाणी घणा विचारमय ललित विस्तरा नामे शक्रस्तवनी वृत्ति तथा बीजा पण ग्रंथो करीने सिद्ध नामा शिष्यने आचार्यें देखाड्या. ते ग्रंथ घणा कठिण तथा विचारवा योग्य देखीने प्रतिबोध पाम्यो, पनी बौद्धोने मलवा गयो नही. श्रीज्ञानदिवाकर सूरियापासेंज रह्यो. एटलो हेरान थयो माटें मिथ्यात्वीनो परिचय करवो नही. ए पांचमी कथा कही. माटे श्रावकें अतिचार रहित सम्यक्त्व पालवुं, अने मिथ्यात्व नांमवुं. इति सम्यक्त्व अतिचार समाप्त ॥

ए रीतें सम्यक्त्व व्रत संक्षेपथी कहीने हवे बारव्रतना अतिचार आलोवे ने. तेमां प्रथम प्राणातिपात विरमणादिक पांच अणुव्रत श्रावकनां ने, अने एज पांच साधुनां महाव्रत ने,साधुनी अपेक्षायें श्रावकने अणु एटले

न्हानां व्रत तेने अणुव्रत कहियें, अथवा समकेतनी प्राप्तिथी (अनु के०) पछी जे व्रत तेने अनुव्रत कहियें. तेमां पहेलुं प्राणातिपातविरमण नामें महाव्रत साधुने होय. ते साधुने संपूर्ण वीश विश्वानी जीवदया छे, अने श्रावकने तो सवा विश्वानी जीवदया छे. जेमाटें जीवना बे भेद छे. एक तो एकेंद्रियादिक पांच थावर ते सूक्ष्म जाणवा, यद्यपि पांचे थावर ते सूक्ष्म अने बादर एवा बे प्रकारना छे तथापि ते सूक्ष्मजीवोना शरीरने बाह्य शस्त्रादिकनो घाव लागतो नथी माटें तेमने पोतानी जातिना जीवोथीज घात पात थाय छे माटें इहां सूक्ष्म शब्दथी पण पृथ्वी,पाणी,अग्नि,वायु अने वनस्पति रूप बादर पांचे थावर छे,तेमनेज सूक्ष्म कहेवा.अने बेंद्रियादिक महोटा जीव ते बादर जाणवा. तेमां साधुने तो सूक्ष्म अने बादर रूप सर्वजीवोनी विराधनाथी विरमवानो नियम पूरेपूरो वीशविश्वानो छे, अने श्रावकथी तो सूक्ष्मजीवनी दया पली शकती नथी केमके, एक वार अन्नपान करतां पण छकायनी विराधना थाय छे, माटें सूक्ष्मनी दया न पले, मात्र बादर महोटा जीवनी दया पली शके छे. तेथी वीशविश्वामांथी दश गया बाकी दश विश्वा दया रही. तेमां पण गृहस्थ जेवारें आजीविकाने अर्थें कर्षणादिकनो आरंभ करे छे, तेवारें बेंद्रियादिक महोटा जीवोनो पण वध थाय छे. तेमाटें श्रावक आगार मोकला मूके छे. तेथी संकल्प करी जाणीबुजीने महोटा जीवोने नही हणवानो नियम करे,पण अजाणते तथा आरंभें करी जीव वध थइ जाय, ते मोकलो राखे, तेमाटें दश विश्वामांथी अर्ध गया, बाकी पांच विश्वानी दया रही. तेमां वली कोइ पोताना घरमां चोरी करवा आव्यो होय तेने अथवा पोतानी स्त्रीनी साथें कोइ अविचारयुं काम करे तो तेवा पंचेंद्रिय जीवने पण जाणी बुजी मार आपवो पडे, ते माटें आगार मोकलो मूके छे तेथी जे निरपराधी जीव होय,तेने नही मारवानो नियम करे छे, पण जे अपराधी जीव होय तेने नहीं मारवानो नियम नथी, तेनी जयणा राखे. ए रीतें पांच विश्वामांथी पण अढी विश्वा गया,बाकी अढी विश्वानी दया रही. तेमां पण बलद तथा अश्वादिक जीवने खेडे छे, ते पंचेंद्रिय जीव छे, निरपराधी छे, तो पण तेनी शक्ति जाण्या विना चाबकादिक मारवा पडे, तेनो आगार मोकलो मूके छे, एटले कोइ जीवने प्रहार करवो, ते निर्दय पणे नही, पण सापेक्ष सदय पणे करवो, माटें

अढी विश्वामांथी सवा गयो, शेष सवा विश्वानी दया श्रावकथी पली शकें, तेमाटें अणुव्रत कहियें. ए प्रथम प्राणातिपातविरमण नामक व्रत कह्युं. एंवीज रीतें बीजा महाव्रतमां साधुने सूक्ष्म बादर सर्व प्रकारना जूठ बोलवाथी विरमवानो नियम छे, अने श्रावकने तो कन्यालीकादिक पांच मोटकां जूठ बोलवानो नियम होय, बाकी तो सर्वनी जयणा होय. तथा त्रीजा महाव्रतमां साधुने तो तृणमात्र पण अदत्त नहीं लेवानो नियम छे, पडेली लींबडानी सली मात्र लीये,तेवारें 'अणुजाणह जस्सुग्गो' एम कही लिये, अने गृहस्थने तो जे वस्तु लीधाथी पोतानी उपर चोरीनुं कलंक चढे, राजदंम थाय, तेवा अदत्त नहीं लेवानो नियम होय, पण सूक्ष्म अदत्त नहीं लेवानो नियम न होय, तथा चोथे महाव्रतें साधुने तो सर्व प्रकारनी स्त्रीयो नोगववाना वर्जवानो नियम होय छे,परंतु श्रावक तो जो घणुं ज मन ठाम राखे, अने घणो जाण होय, तो ते जावजीव ब्रह्मचर्य पाले, ते न पले, तो स्वस्त्रीउपर संतोष राखे, अने परस्त्रीने वर्जे. तथा पांचमा महाव्रतमां साधुने तो बाह्याभ्यंतर सर्व प्रकारें धनधान्यादिक नवविध परिग्रह नहीं राखवानो नियम होय छे, अने श्रावकने तो नवे प्रकारना परिग्रहनुं परिमाण करी राखेलुं होय, माटें श्रावकनें अणुव्रत कहेवाय.

हवे ए पूर्वे कहेलां पांच अणुव्रतने जे गुणकारी थाय, तेने गुणव्रत कहियें, ते गुणव्रत त्रण छे,तेमां दिशापरिमाणनामक पहेलुं व्रत छे, ते चार दिशायें अने चार विदिशायें तथा ऊर्ध्व अने अधोदिशि मलीने तेनुं परिमाण करी राखे, जे अटला योजन पर्यंत अमुकदिशियें जावुं तेथी उपरांत जावानो नियम करे, के जेथकी तेटली बाहेरनी नूमिना जीवोने अनय आपवाथी पहेला व्रतने गुणकारी थाय, तथा ते नूमिसंबंधी जूठुं न बोलवाथी, नही वंचवाथी बीजा व्रतने गुणकारी थाय, तथा ते नूमि संबंधि अदत्त न लेवाथी त्रीजा व्रतने गुणकारी थाय, तथा तेटली नूमि संबंधी मैथुनसेवा टली गयाथी चोथा व्रतने गुणकारी थाय, तथा तेटली नूमिसंबंधि नवविध परिग्रहनी मूर्छा टली जवाथी तथा व्यवसाय वाणिज्य करवानी इछा टलवाथी पांचमा व्रतने गुणकारी थाय. माटें ते गुणव्रत कहियें.

तथा बीजुं नोगोपनोग विरमण नामक गुणव्रत छे, तेमां नोग ते नोजन आश्रयी सचित्तादि, तथा अनदय अने अनंतकाय वस्तुनो नियम लि

ये, अथवा परिमाण करी राखे, तथा उपनोग ते स्त्री, वस्त्र, आनरणादिक आश्रयी नियम लिये, अथवा परिमाण करें, तथा जेथकी घणी जीव हिंसा थाय एवां लोह,लूण,मीण,मध,मद्यादिकना व्यापारनो त्याग करे,एणे करी पाछल कहेलां पांचे अणुव्रतने गुण थाय,तेमाटें एने पण गुणव्रत कहियें.

तथा त्रीजुं अनर्थदंमविरमण नामक गुणव्रत छे,ते कामकाज विना निरर्थक पाप कर्मे करी आत्माने दंमाववो,जेम के हिंसा,कुतूहल,अंगकुचेष्टा, फीलवुं, हींचवुं, जुवटे रमवा प्रमुख त्यागवानो नियम करवाथकी पाछला पांचे अणुव्रतने गुणकारी थाय, माटें तेने पण गुणव्रत कहीयें. एवी रीतें पांच अणुव्रत अने त्रण गुणव्रत मली आठ व्रत थयां.

हवे चार शिक्षाव्रत कहे छे. शिक्षा एटले जेनो वली वली आन्यास करीयें, एटले पाछलां आठ व्रत जे कह्यां, ते तो जेवां लीधां तेवां जावजीव पर्यंत पालवां जोइयें,अने ए चार व्रत जे छे,ते तो वारंवार लेवाय, अने वारंवार मूकाय, माटें एने शिक्षाव्रत कहियें.

तेमां पहेलुं सामायिकनामेंशिक्षाव्रत छे, ते बे घडी पर्यंत सामायिकनो पाठ उच्चरीने समता परिणाममां आत्माने राखीयें, तेने सामायिकव्रत कहियें. ते प्रतिदिन उनयकाल तो श्रावकने अवश्य करवुं जोइयें.

बीजुं देशावकाशिक नामें शिक्षाव्रत छे,ते छठा व्रतमां जे दिशापरिमाणनो नियम जावजीव पर्यंत लीधेलो छे, तेमांथी पण संक्षेपीने दिन प्रत्यें परिमाण करवुं, जे आटली नूमिथी उपरांत नहीं जावानो आज माहारे नियम छे, तथा सातमे व्रतें 'सचित्त दव्वविगइ' आदिकजे चौद नियम कहेला छे, तेने दिनप्रत्यें संक्षेपीनें लिये, ते जाणवुं.

त्रीजुं पौषधोपवास नामें शिक्षाव्रत ते पर्व तिथियें अहोरात्रिनो पोसह लेइ चउविहारो उपवास करे, ते न थाय तो तिविहारो उपवास करे.

चोथुं अतिथिसंविनाग नामें शिक्षाव्रत,तें न्यायोपार्जित इव्यमांथी सूजतां नात पाणी शुनजावें करीने साधुने देवां,जो साधुनो संयोग नही बने, तो गुणवंत साधर्मीनी नोजनादिकें करि शक्तिने अनुसारें नक्ति करवी.

जे निरपेक्षपणें व्रत विराधवुं तेने व्रतनंग कहियें, अने जेहवुं लीधुं तेहवुं शुद्ध पाले, तो निरतिचार कहियें; परंतु मनमांहे व्रत नांगवाना नयपणे अने अनानोग पणे कांक्ष दोष लागे, तेने अतिचार कहियें.

आंहीं दृष्टांत कहे ले. मूल तो श्रावक जे होय ते पोतानी नार्या, पुत्र, दासदासी प्रमुखने एवी आशंकामां राखे के,जेम बांध्या कूव्या विनाज ते पोतानी आज्ञा मान्य करे, जेम के,गाय प्रमुखने गले टुंपो न आवे,अने पलेवणुं प्रमुख लागवाथी तत्काल बूटी जाय. तेवी रीतें ढीले बंधनेंज बांधे,तथा द्विपद, चतुष्पदनी उपर नार नरे तो एटलो नरे के, ते जीव सुखेंथी उपाडी शके, तथा ते जीवोने नात पाणी आपवानी चिंता पण वखतसर करे, तथा कोइने रोगादिक उपने थके वैद्य, जे प्रतीकार करावे,ते दयासहितपणे एकांतहित बुद्धियें करी करे.

इहां कोइ पूले के,हे नगवन्! श्रावकें प्राणथी अतिपात एटले जूदा करी नाखवाथी अर्थात् जीवने मारी नाखवाथी विरमवानो नियम करेलो ले, तो बंधादिकनो अतिचार लागे नही. माटे बंधादिकथी श्यो दोष ले? कारण के प्राणातिपातनी विरति अंगीकार करेली ले, तेतो अखंमित ले, माटें अतिचार न उपजे. मुख्यपणें जीवहिंसानुं पच्चरकाण कीधुं ले,पण वध बंधादिकनुं पच्चरकाण कर्युं नथी? तिहां गुरु कहे ले,के हे नव्य! सांनल. व्रत बे प्रकारनां ले,एक अंतरंगवृत्तिथी, बीजुं बाह्यवृत्तिथी. तिहां जेवारें निर्दय पणे बंधनादिक करे ले, तेवारें तेने दयानो परिणाम लगार मात्र रहेतो नथी, तेनणी अंतरंग दृष्टियें जोइयें तो ते व्रत नांग्युंज कहेवाय,पण ते जीवने मारतां कूटतां थकां पण मरण पाम्यो नही, तेमाटें ते अतिचार कहियें.

इहां जयपुरनगरें शत्रुंयज राजा हतो तेना सूर अने चंड ए बे पुत्र हता, तेमां सूर वल्लन हतो,माटें तेने युवराजपदवी दीधी, तेवारें चंड रीशाइने चाली नीकल्यो, ते शत्रुपुरें गयो, अने सुदर्शननामा साधुपासेंथी पहेलुं व्रत आदर्युं. तेमां निरपराधी स्थूल जीवोने मारवा नही, एवो नियम लई विजयसेनराजानी सेवा करे ले,एक वार तेने राजायें हुकम कर्यो के, मह्वारो वैरी कुंनराजा ले, तेहने घायकें पेसीने मारी आव. हवे चंडें कह्यो में नियम कर्यो ले, ते सांनली राजा हर्ष्यो, अधिकारी थाप्यो, परणाव्यो, एकवार कटकसहित जइ चंडें कुंनराजाने बांधीने राजाने आणी आप्यो, हवे एनो नाइ सूरराजा ते युवराज पदवीथी अतृप्त थको पिताने मारवा माटें घायकें पेसी बूरीनो घाव मूक्यो, तेवारें पितायें तेंने देशवटो दीधो,अने कागल लखी चंडकुमरने तेडावीने राज्यपाटें थाप्यो. पली

राजा मरण पामी वनमांहे चित्रो थयो. सूर पण फरतो फरतो तिहां आव्यो तेने चित्रकें दीठो, पूर्वभवना वैरने योगें तेणें सूरने मारी नाख्यो, ते मरीने भिल्लनो पुत्र थयो, तेणें आहेडे फरतां फरतां चित्राने मार्यो, पछी भिल्ल तथा चित्रो बेहु मरीने सूअर थया, तिहां पण मांहो मांहे जूझी मरण पामीने मृग थया, ते बेहु मृग मरीने वनमांहे हाथी थया. तिहां पण बेहु हाथी मांहोमांहे लडता हता, तेने भिल्लें पकडीने चंद्रराजाने भेट आणी आप्या. तिहां पण बेहु हाथी मांहोमांहे मत्सर धरता देखीने राजायें एकदा केवलीभगवानने पूछ्युं, तेमना मुखथी पूर्वभव वैर संबध सांभली वैराग्य पामी चंद्रराजा दीक्षा लइने देवलोकें पहोतो, अने बे हाथी मरण पामी पहेली नरकें गया, एम सूरने पहेलुं व्रत अणपाल्यानुं अशुभ फल अने चंद्रने पहेलुं व्रत पाल्यानुं शुभ फल सांभलीने पहेलुं व्रत पालवुं. ए पीठिका कही. हवे पहेला व्रतनो पाठ लखे छे.

१ बार व्रतमांहें पहेलुं प्राणातिपातविरमण व्रत, स्थूल बेंद्रियादिक त्रसजीव निरपराधउपेतकरण संकल्पी करी हणवा नियम, आरंभें जयणा ॥ ए पहेला प्राणातिपात विरमणव्रततणा पांच अतिचार शोधुं. बंधे, वहे, छविछेए, अइभारे, भत्तपाणवुछेए. द्विपद, चतुष्पदप्रत्यें निबिडबंध बांध्या होय, रीषवशें ढोर, श्वान, मांजार, दास, कुमार, छोरू, वाछरू प्रत्यें गाढो प्रहार दीधो होय. छविछेदः–कर्ण कंबलादिक तणो छेद कीधो होय, चउकडी कुंभली पडावी होय, बलीवर्द नथाव्या होय. अतिभार आरोपणः–पोठीया, वहीत्रा, ऊंट, बलद, खर, वेसरने अतिभार आरोप्यो होय. भक्तपानव्यवछेदः–कुटुंब नायक हुंतें भूख्यां, तरश्यां, ग्लान, वृद्ध, छोरू, वाछरूतणी सार संभाल कीधी न होय. लहेणे देवे अजिमवो सोंह दीधो होय, लांघण पाडी होय, खाल वाह्या होय, शल्यां

धान दलाव्यां नरडाव्यां होय,गलणुं वहेलुं आप्युं न होय, नीलफूलनी जयणा कीधी न होय, धाबा मांम्या होय,कोउ घाती होय, पुंजे आग दीधी होय, वरासें दीवो उघाडो मूक्यो होय, वाशी गारें लींपणुं कीधुं कराव्युं होय, वरसाले खात्र चलाव्यां होय, तडके मांकड पखोड्या होय, रात्रे स्नान, अंघोल कीधुं होय. आखुं फोफल दांतें नांग्युं होय,घरना माणसने जयणाविषे शीखामण दीधी न होय, अनेरूं ए पहेला प्राणातिपात विरमणव्रतविषे पक्ष दिवस मांहे जिको कोइ सूक्ष्म बादर अतिचार हुउ होय, ते सवि हुं, मन, वचन, कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥

अर्थः– पहेलुं स्थूल एटले बाह्य निमित्तें जणाय माटे बादर एटले जावुं आववुं इत्यादिक प्रगट लक्षण छे जेहनुं एवा बेंडी, तेंडी, चउरिंडी अने पंचेंडीजीवो तेनां जे इंडिय प्रमुख प्राण तेनो हाड चर्म प्रमुखने अर्थे अतिपात एटले विनाश करवो तेने प्राणातिपात कहियें. पण गृहस्थ संबंधि कार्यादिकना आरंभें वध थाय,तेनी जयणा राखेली छे; परंतु त्रस जीवने निरपराधें उपेतकरण एटले समीप आवेला कृषी प्रमुख कारण विना संकल्प करीने नहीं हणवानो नियम करेलो छे. एवीरीतें जे विरमवुं तेने प्राणातिपात विरमणव्रत कहीयें. ते विरति पणाने अतिक्रमवुं विरति नांजवी तेनुं पडिक्कमण छे, इहां अप्रशस्त क्रोधादिकना उदयथी जे ए पहेला प्राणातिपात विरमण व्रतने विषे मद्यादिक प्रमादने प्रसंगें करीने अतिचार लागे, ते अतिचार पांच प्रकारें छे,ते अतिचारने शोधुं,एटले शुद्ध करुं छुं.

इहां प्रमादने प्रसंगें कह्युं माटें एक प्रमादना ग्रहणथी तज्जातीय जे आकुट्यादिक तेनुं पण ग्रहण करवुं, एटले आकुटी प्रमुखें अथवा अव्रति आश्रयीने आचर्युं, ते कहे छे. प्रथम बंध एटले बांधवुं, बीजुं वए एटले वध करवुं, त्रीजुं छविछेए एटले कान प्रमुख कातरीने विछेदनुं करवुं, चोथुं अइनारे एटले तेनी शक्ति उपरांत अत्यंत नारनुं नरवुं, पांचमुं नत्तपाण वुछेए एटले नातपाणीना व्युछेदनुं करवुं, अन्नपाणी वेलासर न आपवुं.

हवें विशेषथी कहे छे. तिहां प्रथम बंध आश्रयी द्विपद चतुष्पद जीव प्रत्यें निर्दयपणें निबिड एटले आकरा बंधनें करी बांध्यो होय, ते बंधन कहियें. तथा बीजो रीष एटले क्रोधने वशें करी ढोर एटले गाय बलद प्रमुख तथा श्वान एटले कुतरो, मार्जार एटले बिल्लाडो तथा दासनो कुमर अने छोरु वाछरु ते प्रत्यें गाढो प्रहार एटले अत्यंत आकरो लाकडी प्रमुखनो प्रहार दीधो होय, ताडना करी होय, घायल कीधो होय, ते वध कहीयें, तथा त्रीजो छविच्छेद पणुं ते कर्ण एटले कान अने कंबल एटले नासिका इंद्रियादिक अवयवोनो उच्छेद कीधो होय; तथा चउकडी एटले चोकडी तथा कुंभली करावीने मांज दीधो होय. तथा बलीवर्द ते बलद प्रमुख जीवने नथाव्या एटले नथ घलावी होय, तथा चोथो थोडा भार उपाडवानी शक्तिवाला एवा बलद, पोठीयादिकनी उपर लोभना वशथकी अत्यंतभार आरोप्यो एटले भर्यो होय, तथा पांचमो भत्तपाण एटले भात पाणीनो खावा पीवानो उच्छेद कीधो होय, एटले पोतें कुटुंबनो नायक एटले मालक होते छते घरमां कोइ भूख्यां होय, तरष्यां होय, ग्लान एटले रोगें पीडेलां होय, वृद्धअवस्थावालां होय, तथा छोरु अथवा वाछरु प्रमुख होय, तेमनी सार संभाल कीधी न होय, तथा कोइनी उपर लहेणुं होय, तेने विषे तथा देवाने विषे अजिमवुं एटले तमें महारुं लहेणुं आप्या विना जमशो नही, एवा सोंह एटले सोगन दीधा होय, अथवा तेने घरे लांघण करी बेसी रह्या होइयें. तथा खाल प्रमुख वहेवराव्यां होय, सडेलां धान्यने दलावीने लोट करावी नाख्यां होय, तथा भरडाव्यां होय, एटले एक दाणाना बेचार कटका करी नाख्या होय, तथा पाणी गलवानुं गलणुं वहेलुं एटले तरत आप्युं न होय, एटले रूडुं गलणुं न कीधुं, अणगल पाणी वावर्यां, अथवा जेटली वखत पाणीने गलवानुं शास्त्रमां कह्युं छे, तेटली वखत गलणें करी पाणी गल्युं न होय, मार्गे चालतां अथवा जलस्थानकें नीलफूलनी जयणा कीधी न होय. तथा घर प्रमुखने विषे धाबा कराव्या होय, कौउ घाली होय, एटले खाडो खोदी तेमां करडनी जडो सलगावी लाकडीथी कूटीने जुवार प्रमुखना पहोंक शेके, तेने कउ कहे छे, तथा पुंजे एटले कचरा प्रमुखना पुंजने अग्निथी बाली नाखवो, वरासें दीपक ढांक्या विना उघाडो मूकी दीधो होय, तथा छाणनी गारने बे चार दिवस राखी

मूकवाथी चीकाश सारी थाय छे, तेनुं लीपणुं करवाथी घणा दिवस लग ए चाले,तरत उखडी जाय नही! एवुंधारी वाशीगारथी लीपणुं कीधुं होय तथा कराव्युं होय. तथा वर्षादना दिवसोमां खात्र खोदावीने खेत्रोमां च लाव्यां होय, तथा तडकामां मांकड जू प्रमुखना खाटला सूकावा मुक्या होय, रात्रे स्नान अंघोल कर्यां होय, आखी अखंड सोपारी लइने दांत थी जांगी नाखी होय, तथा घरना माणसोने जयणायें काम काज करवा माटें शीखामण दीधी न होय, देतां आलस कर्युं होय, अनेरुं ए पहेला प्राणातिपात विरमणव्रत विषे पक्षदिवस मांहे जे कोइ सूक्ष्म बादर अतिचार रूप डुष्कृत हुउं होय,ते सर्वे हुं मन वचन अने कायायें करी मिथ्या करुं छुं.

इहां कोइ पूछे के, ए जे वधबंधादिक अतिचार कह्या, तेने अंगीकार करवाथी पण मलिनपणाना अजाव माटें अंगीकार करेली जे प्राणाति पातनिवृत्ति ते तो अखंमितपणें रही, एमां कांइ अतिचार उपन्यो नही? इहां उत्तर कहे छे के, जो पण मुख्य पणे जीवहिंसानुं पच्चरकाण कीधेलुं हतुं, अने वधबंधादिकनुं कांइ पच्चरकाण कर्युं नथी, तो पण परमार्थ थकी प्राणातिपातना कारण माटें तेने वधबंधादिकनुंज पच्चरकाण जाण वुं. केम के, वधबंधादिकथी जो मरण पामे तो प्राणातिपात व्रत अंगीका र करेलुं होय तेनो जंग थाय. पण अतिचार न लागे,जेमाटें व्रत बे प्रकार नां छे, एक अंतरंगवृत्तिथी बीजुं बाह्यवृत्तिथी, तिहां क्रोधादिकने वशें करीने वधबंधादिकने बिषे प्रवृत्ते, तेवारें दया रहित परिणाम थया माटें अंतरंगवृत्तियें व्रत जांग्युंज कहेवाय, अने आयुष्यना बलथी जो ते जीव वधबंधन करतां थकां पण नही मुउ तो तेथी ते व्रत बाह्यवृत्तियें पाल्युं कहेवाय, तेवारें ते व्रत जांग्युं, अने नही जांग्युं ते रूप अतिचार लाग्यो तेज कहे छे. जेमाटें 'जीवने हुं नही मारुं' एवुं व्रत कीधुं छे, अने मर ण विना इहां श्यो अतिचार लागे? एवो प्रश्न पूछे, तिहां उत्तर कहे छे. के, जे कोप्यो थको वधादिक करे, ते निश्चयनयें करी व्रतजंग करे छे, अने मरणना अजावथी व्रतजंग थतो नथी, पण कोपादिकथी अने दयाहीनपणाथी व्रत जांग्युं कहेवाय; एटले देशथी जांग्युं अने देशथी पाल्युं, तेने वडेरा अतिचार कहे छे, अथवा अनाजोग पणें अतिक्रम वाथी सघले अतिचार लागे, एम जाणवुं.

ए व्रतने विषे यज्ञदेवनी कथा कहे छे. आ जरतक्षेत्रने विषे कलिंग नामा देशमां सुमित्रा नामें नगरीने विषे सुमित्र नामें राजा छे. तेनी तारा नामें राणी छे, अने बंधुदेव नामें प्रधान छे. ते प्रधाननी महिमा नामें स्त्री छे. तेनो यज्ञदेव नामें पुत्र छे. ते विनयादिगुणें सहित छे. तथा तेनो शिवदेव नामें न्हानो जाइ छे. ते महानिष्ठुर स्वजावें डुष्ट छे, ते बे जाइ यौवन अवस्था पाम्या, तेवारें पितायें बेहु जाइयोने जली बे कन्यार्ज परणावी. बेहु जाइ राजानी नित्यप्रत्यें सेवा करे. तेमां यज्ञदत्त गुणवंत छे, माटें राजाने सम्मत थयो तेथी राजा तेने मान आपे.

हवे तिहां महीधर नामें सेनाधिपति छे. तेनी मदनसुंदरी नामें पुत्री महास्वरूपवाली छे. ते कुमरीने ते नगरमां शिवदेवें दीठी, तेवारें तेने रूपें मोह्यो, तेथी शून्यचित्त थको पोताने घेर गयो. तिहां तेना पितायें सोगन आपीने शून्यचित्त थवानुं कारण पूछ्युं. तेवारें शिवदेवें कुमरीनुं कारण कह्युं,ते सांजली प्रधानें कन्यानी मागणी करवा सेनानीने घेर पोताना पुरुषने मोकल्यो. तेणे जइ सेनानीने कह्युं के, तमारी कन्या प्रधानना पुत्रने आपो, तेवारें सेनानी बोल्यो. जे ए वात ठीक छे, पण ए कन्या प्रथम में कोटवालनो नंदीघोष नामें पुत्र छे तेने आपी छे, माटें हजी सुधी पण जो कोइ रीतें ए कन्याने नही परणे, तो हुं शिवदेवने अवश्य आपीश! ते वात सांजली पाछो आवी ते पुरुषें सर्व वात प्रधान आगल कही. तेवारें प्रधाननो पुत्र कामक्रोधें पीड्यो थको दिलगीर थयो. हवे ए वात सांजली नंदीघोष पण विशेषें आदर सहित ते कन्याने परणवा आव्यो. ते जाणी प्रधाननो पुत्र एहवुं कहेवा लाग्यो के, हे मित्रो! जो ए डुष्टात्मा ए कन्याने परणशे, तो हुं निश्चें एने यमने घेर मोकलीश. ए वात शिवदेवना मित्रें प्रधान आगल कही, तेवारें प्रधान पोताना महोटा पुत्र यज्ञदेवने कहेवा लाग्यो के, एने पाप कर्मथी हुं पाछो शी रीतें निवृत्तावुं? हुं धारुं छुं के, एने आचार्य महाराज पासें लइ जइयें, तो ते एने समजावशे. पछी तेने वज्रसेन नामा गुरुपासें ते बाप दीकरो बेहु मलीने कोइक युक्तिथी तेडी गया. तिहां पोताना पुत्रसहित प्रधानें गुरुने वांदीने वीनति करी के, हे महाराज! गृहस्थधर्म केम पालवो? तेनुं स्वरूप फलसहित मुजने कहो. तेवारें गुरु कहेवा लाग्या के, दया

मूल धर्म सर्वत्र कह्यो छे,माटें तेधर्म श्रावकने तेम यतिने पण घणो मोंह्घा मूल्यनो छे, ते उपर अजय कुमारनो दृष्टांत गुरुयें कह्यो. तिहां द्विविध त्रिविधें एटले मन, वचन, कायायें करी, न करुं, न करावुं, एवीरीतें निरपराधी त्रस जीवने जे वधवुं, तेनो निषेध करवो, ए व्रत लेवुं ते धर्म छे, वली बीजां जे व्रतो छे ते ए अहिंसारूप व्रत राखवाने मा टें वाड सरखां कह्यां छे, अने एनुं फल ते मनुष्य तथा देवतानां सुख छे, अनुक्रमें मोक्षनां सुख पण एथीज पामीयें. ए व्रतनेविषे क्रोधथकी वधबंधनादिक पांच अतिचार उपजे ते जाणीने तेने यत्नें करी वर्ज्जवां. वली जे प्राणी ए व्रत ग्रहण नथी करतो, अथवा लइने जांजे छे, ते प्राणी कठिण डुर्गतिने विषे नरकादि संबंधी घणांज डुःख पामे छे, ए उपदेश गुरु मुखें सांजलीने मह्होटा जाइ यज्ञदत्तें ए व्रत गुरुपासेंथी लीधुं; पण शिवदेवें न लीधुं. पछी गुरुनां चरण नमी सहु पोतपोताने घेर आव्या.

ह्वे ते कन्याने परणी सांजलीने शिवदत्तें निश्चय कर्यो के,कोटवालना पुत्रने हण्या पछी हुं जमीश ! तिहां सुधी शय्यायें सूवुं नही. वली फूलमाला प्रमुख पण नही वापरुं. ए वात सांजली मह्होटा आत्मानो धणी प्रधान तो वैराग पामी दीक्षा लेतो हवो, अने यज्ञदेवें ते सर्ववात राजाने जइ कही. तेवारें राजायें संतुष्ट थइने यज्ञदत्तने एना पिताना मंत्रिपदने विषे था प्यो, अने शिवदेवने तेडावीने ए डुष्कर्म करवाथी वार्यो, अने कह्युं के ए कर्म करीश नही, तिहां राजाना कहेवाथी तेणें हाकारो कर्यो के, हवे हुं नहींज हणुं. पण सर्पनी पेठें क्रूर आत्मानो धणी पाछलथी तेनां छिड् जोया करे, एम करतां केटला एक दिवस वीती गया. एकदा वसंतऋतु मां तेरशने दिवसें ते नगरीना सर्व लोक वनमां क्रीडा करवा लाग्या, ते वारें शिवदेवने हेरु पुरुषें आवीने कह्युं के, संध्यायें अल्पपरिवारें ते नंदी घोष उद्यानमां जशे, ते सांजली शिवदेव तिहां सन्नद्ध थइने छानो रह्यो. ह्वे तिहां नंदीघोष पण कामदेवने पूजवा आव्यो. तेनी साथें प्रधाननो पुत्र युद्ध करी तेने हणीने उघाडे शरीरें तिहांथी नाठो. तेने कोटवालें दीठो तेवारें पकडीने राजा आगल लई आव्यो. राजायें तेने अन्यायी जाणीने उवेखी मूक्यो. तेवारें कोटवालें तेने मारी नाख्यो, ते मरीने डुर्गति पाम्यो, पछी तेना मह्होटा जाइ यज्ञदत्तने नगरना लोकोयें जाइनुं वैर लेवा माटें

अनेक वार प्रेस्यो, तोपण ते पोताना चित्तमां चिंतववा लाग्यो, जे सर्व प्राणी अनंतीवार वैरी थया छे, अने थशे, माटें कोण सज्जन अने कोण दुर्जन? जे जेने हणे ते तेनो वैरी थाय! परज्नवें नरकमां जाय! माटे प्राणीने केवी रीतें हणीयें! एवुं स्वरूप जाणीने अविवेकी लोकना वचनें करी जीवहिंसानी विरतिथी मेरुपर्वतनी परें यज्ञदत्त चलायमान थयो नही. अतिचाररहित अहिंसाव्रतने घणाकाललगें आचरीने इहलोकनेविषें पण घणी कीर्ति पाम्यो, अने परज्नवें स्वर्गनां सुखनो नजनार थयो.

एम प्राणातिपातनी विरति नहीं करवाथी घणां दूषण अने प्राणातिपातनी विरति करवाथी घणा गुणनी श्रेणी संबंधी वात सांज्नलीने स्वर्ग मोक्षनां फलनी आपनारी एवी जे दया ते सर्व जीवनेविषे निरंतर करवी. ए प्राणातिपात व्रतने विषे यज्ञदत्तनी कथा कही. इति प्रथम व्रत अर्थ समाप्त.

२ बीजुं स्थूल मृषावादविरमणव्रत पंचविध. कन्नालीए, गोवालीए, नूमालीए, नासावहारे, कूडसक्खिज्जे, ए पांच मोटकां कूडां आपणने काजें, स्वजननें काजें धर्मने काजें मूकी परकाजें कूडुं बोलवा नियम, सूक्ष्म अलीक तणी जयणा, ए बीजा स्थूलमृषावादविरमणव्रत तणा पांच अतिचार शोधुं. सहस्साज्नरकाणे, रहस्साज्नरकाणे, सदारामंतज्नेए, मोसोवएसे, कूडलेहकरणे. सहसात्कारें-हारते, फीटते, कुणह प्रत्यें कूडुं आल दीधुं होय, ए अमुकातणुं काम अमुकेंज कीधुं, इस्युं जण्युं होय. रहस्साज्नरकाणे-बे जणा एकांत मंत्र मंत्रता देखी, में जाण्युं, तुमें अमुकुं अमुकुं राजविरुद्ध आलोचो छो, इस्युं बोल्युं होय. स्वकीयकलत्र-मित्र तणो मंत्र अनेरा आगलें प्रकाश्यो होय. मृषा-कूडो सिद्धांत तणो उपदेश परप्रत्यें दीधो होय, अथवा अनेरा पासें कूडुं बोलाव्युं होय, कूडा लेख लखाव्या होय, मषीज्नेद कीधो होय, कूडी हुंमी, कूडी मुद्रा संचारी हो

य, तथा कुणहशुं कूडो झगडो मांड्यो होय, हुं जाणुं बुं तु झने निधान लाधुं बे, तुझ कने अमुका अमुका तणुं द्रव्य रह्युं बे. इस्युं बोल्युं होय. अनेरुं ए बीजा स्थूलमृषावाद विरमणव्रतविषे पक्ष दिवसमांहे जिको कोइ सूक्ष्म बादर अतिचार हुत होय ते सवि हुं, मन वचन कायायें करी मिडामि डुक्कडं ॥

अर्थः—हवे बीजुं स्थूल मृषावाद व्रत ते जूठुं बोलवाथी विरमवुं ते मृषावाद व्रत पंचविध एटले पांच प्रकारें बे,ते कहे बे. एक कन्यालीक एटले जे निर्दोष कन्या होय तेने सदोष कहे, अने जे सदोष कन्या होय तेने निर्दोष कहे. तथा बीजा पण द्विपद आश्रयी जूठुं बोलवानुं सर्व एमां आवे बे. बीजुं गवालीक एटले गवालीक ते थोडुं दूध आपनारी गायने घणी डुजणी कहे, अने घणुं दूध आपनारी गायने थोडी डुजणी कहे, तथा जेंष आदिक बीजा पण चतुष्पद आश्री जुठुं बोलवानुं सर्व एमां आवे बे. त्रीजुं जूम्यालीक ते जूमि संबंधि अलीक एटले जूठुं बोलवुं; जेम के,पारकी जूमिने आपणी कहेवी, तथा द्रव्यादिक संबंधी जे जूठुं बोलवुं, ते सर्व एमां आवे बे. चोथुं न्यासापहार एटले थापण मोसो अर्थात् पारकी वस्तु थापण राखीने पडी तेनुं अपहरवुं उलववुं, जे में तो थापण राखी नथी. पांचमो कूडसक्खि एटले मत्सरथी अथवा लांच लइने कूडी साक्षी जरवी,तथा कूडा करहानुं काढवुं, विश्वासघात करवो, ए सर्व एमां आवे बे. ए पांच मोटकां कूडां बोलवाना नियम ते स्थूलथी नियम कहेवाय.ए पांच वानां पोताना आत्माने काजें तथा सगां, संबंधि, सज्जनादिकने काजें तथा धर्मने कार्यें एटले स्थानकें जूठुं बोलवानुं मूकवुं, एटले चालतां सुधी श्रावकें जूठुं नज बोलवुं एम करतां स्वसंबंधि, कन्यालीक तथा गवालीकमां जेवारें कोइरीतें नज बूटाय तेवारें कांइ अधिक न्यून बोलवुं पडे, तो तेनी जयणा राखे, तथा पर एटले अन्य कोइने कार्यें एटलां पांच महोटकां जूठ बोलवानो नियम करेलो बे. परंतु सूक्ष्म, अलीक एटले जूठुं बोलवुं तेनी जयणा बे,एटले हास्यादिक वातविनोदमां अथवा कोइ निमित्तें कषायादिकने परिणम्यो आत्मा मूढ चेतनामां रहे थके कांइ आलपंपाल बोलाइ जाय, अ

थवा आजीविका निमित्तें पोताना परिणामनी कलुषताथी कोइ चाडीयो प्रमुख दुष्ट मनुष्य, घणुं दुःख देतो होय, कोइरीतें दुःख देतो रहे नही ते वारें ते सापराधीने शिक्षा देवरावबा सारु कांइ ऊंधुं वधतुं बोलवुं पडे तेनो आगार राखे,परंतु जे बोलवाथी दंम नरवो पडे,तथा जीन,कान, नाक,हाथ, आदिक छेदाय, राजदरबारमां शिक्षा थाय, एवी नाषा तो श्रावक नाम धरावीने क्यारेंपण बोले नहीं.

ए बीजा स्थूल मृषावाद विरमणव्रतना पांच अतिचार छे, तेने शोधुं एटले शुद्ध करुं, अर्थात् ए व्रतने विषे प्रमादने प्रसंगें करी अशु ननाव हूए छते जे अतिचार दोष आचस्यो होय ते पडिक्कमुं छुं.

प्रथम सहसान्याख्यान, बीजो रहस्यान्याख्यान, त्रीजो स्वदारामंत्र नेद, चोथो मृषाउपदेश, पांचमो कूडलेखकरण. ए पांच अतिचार छे. तेमां प्रथम सहसा एटले सहसात्कारें मांहोमांहे हारते फिटते थके तुं चोर छे,इत्यादिक कहीने कोइने अणविचाखुं कूडुं आल दीधुं होय,तथा आ अमुका फलाणानुं काम हतुं ते अमुकेंज कीधुं एवुं बोल्युं होय,ते सहसात्कार अतिचार जाणवो.

तथा कोइ बे जण एकांतमां छानी रहस्यनी वात करता होय, तेने देखीने पोतें वचमां आवी कहे के,खबरदार! तमें जे विचार करो छो ते में जाणी लीधो. तमें अमुक अमुक राज्यविरुद्ध आलोचो छो. एटले राज्यवि रुद्ध वातनो विचार करो छो. ते हुं सारी पेठें जाणुं छुं. एवीरीतनां वचन बोल्यां होय. ते बीजो रहस्यान्याख्यान अतिचार जाणवो.

तथा (स्वकीय के०) पोतानी (कलत्र के०) स्त्री अथवा पोतानो कोइ मित्र होय तेणें आपणा उपर विश्वास आणीने कोइ छानी गुह्य वात आपणने कही होय. ते पोतानी स्त्री तथा मित्र तेमनो जे मंत्र एटले गुह्य ते अनेरा कोइ बीजानी आगल प्रकाश कस्यो होय,के जेथी लज्जाने लीधे तेने आपघात करवो पडे ते त्रीजो स्वदारमंत्रनेद अतिचार कहियें.

तथा मृषा ते श्रीसिद्धांत संबधि अजाण्या मंत्र औषधनो कूडो उपदेश पर प्रत्यें दीधो होय अथवा अनेरा बीजा कोइना मुखथी जूठुं बोलाव्युं होय. ते चोथो मृषा उपदेश अतिचार कहीयें.

तथा पांचमो कूडा लेख, ते जूठा लेख लखाव्या होय, जूठां नामां लख्यां होय, उछा वधारे अक्षर लख्यां होय, मषीनेद ते प्रथम लिखत अ

करने बरी प्रमुखना प्रयोगें करी ठेकी नाख्या होय, तथा जूठी हुंमी लखी होय, जूठी मुद्रा ते परवाना उपर जूठी महोर करी होय, खोटा खत बनाव्यां होय ते पांचमो कूटलेख अतिचार जाणवो.

तथा कोइनी साथें कूडो जगडो मांम्यो होय, धमकी आपीने कह्युं होय के तुजने नूमिमांथी द्रव्यनो निधान एटले खजानो मल्यो ठे? ते में सारीपठें जाण्युं ठे, तथा कोइने कह्युं होय के तहारी पासें फलाणा फला णा अमुक अमुक माणसनुं द्रव्य रह्युं ठे, एवुं बोल्युं होय, अनेरुं एटले ए कह्या ते मांहेलो जे कोइ पण सूक्ष्म बादर अतिचार, पक्ष दिवस मांहे ए बीजा मृषावाद विरमणव्रतने विषे हूउ होय ते सर्व हुं मनें० ॥

इहां कोइ कहेशे के, त्रीजा अदत्तव्रतमां न्यासापहारनी वात आवशे, माटे आंहीं लखवाथी पुनरुक्ति थाय ठे. इहां उत्तर कहे ठे के, प्रधानत्वें करी तो न्यासापहार ते वचननुं खोटुं बोलवापणुंज ठे, माटें मृषावाद मांज लख्युं ठे, तथा वली न्यासापहार अने जूठी साक्षीपणुं ए द्विप दादि अलीकना अंतर्नावमां आवी जाय ठे, तोपण लोकने विषे ए बेहु नुं अत्यंत पृथक्पणें ग्रहण करवा पणुं ठे,माटें अहीं ए बेनुं जूडुं ग्रहण ठे.

हवे ए बीजा व्रतउपर दृष्टांतरूपें बे नाइनी कथा कहे ठे. आ नरतक्षे त्रनेविषे कंचनपुर नगरनो समरसिंह नामें राजा सिंहसमान पराक्रमी ह तो, तिहां बे अध्यापक वेदना पारंगामी एवा एक सागर अने बीजो अ ग्निशिख ए बे नाइ घणे ठात्रें करी परवख्या थका रहे ठे. ते बे जण पूर्वें शु क्तिमती नगरीने विषे खीरकदंबक नामें उपाध्याय पासें नणेला ठे, महा बुद्धिमान् ठे, तेणें एकदा एवुं सांनल्युं जे खीरकदंबक उपाध्याय मरण पा म्या, अने तेने पाटें तेनो पुत्र पर्वतनामें ठे, ते अध्यापक थपाणो ठे. अं ने ते नगरीनो वसुराजा हतो तेनो पुत्र राजगादीयें बेठेलो ठे. तेनुं कारण एवुं सांनल्युं जे वसुराजानी साथेंनो नणनार नारदमुनि एकदा तिहां परो णो आव्यो, तेवामां पर्वतक "अजैर्यष्टव्यम्" एवा वेद वचननो अर्थ बोक डानो यज्ञ करवो ए प्रमाणें शिष्यने शीखवतो हतो,तेने नारदें कह्युं. के हे नाई! तुं खोटो अर्थ करे ठे,आपणा गुरुयें अज शब्दें त्रण वर्षनी जुनी शा ल कहेली ठे,एम मांहोमांहे विवाद थतां जे खोटो पडे तेनी जीन ठेदी ना खवी, अने ते शिर आपे. एवुं पण करीने ते बे जण वसुराजानी पर्षदामां आ

व्या, तेनी आगल पोतपोतानी वात बेहु जणें कही. अने कह्युं के, तमें अमारी साथेंज नण्या बो, माटें खरेखरी साक्षी आपो. पण वसुराजायें पोताना अध्यापकना दीकरानी दाक्षिण्यताथी खोटुं बोलीने बोकडो एवो खोटो अर्थ कह्यो. तेवारें देवतायें रीष करीने वसुराजाने चपेटे करी हणी नाख्यो. ते मरीने नरकें गयो, तथा पर्वतक, पण घणा क्लेश दुःख जोगवी मरण पामी नरकें गयो. एवी वात लोकोना मुखथी सांजलीने ते बे नाइ मांथी सागरदत्त कहेवा लाग्यो के, हा! हा! ए पर्वतक शामाटे खोटुं बोल्यो? तेवारें बीजो नाइ अग्निशिख बोल्यो के, एमां शो दोष बे? एणें जे लोकोमां मुख्य अर्थ बे, ते कह्यो बे, ते सांजली सागरदत्त कहेवा लाग्यो के,हा! हा! जो ए मुख्य अर्थ बे तो ए वसुराजा तथा पर्वतक एवुं मातुं फल केम पाम्या? एवुं नाइना मुखथी सांजलीने अग्निशिख घणो द्वेष करीने कहेवा लाग्यो के, दंन बे प्रकारना देखाय बे, एक न्याय बोलतां पण दंन थाय बे. जे माटे तें पुराणमां कहेलो मांमवऋषिनो दृष्टांत नथी सांजल्यो? तो हवे हुं तुजने कहुं बुं. ते एकाग्र मनें करीने सांजल. एकांत अटवीमां एक मांमव्यऋषि आकरी तपस्या करे बे. तिहां एकदा समयें लोहनुं खातर पाडीने चोर नागो बे, तेनी पाबल राजाना माणस दोडतां आवे बे. तेना नयथी ते चोर ऋषिनी पासें लोह मूकीने पोतें क्यांय नाशी गयो. पाबलथी राजपुरुषो आवी ऋषि पासें पडेलो लोह देखीने मनमां चिंतववा लाग्या,जे जूर्ड आ चोर कहेवुं कपट करीने तपस्या करवा बेगो बे? एम विचारी लोहसहित ते ऋषिने बांधीने राजापासें लइ आव्या. राजायें पण उतावली आज्ञा दीधी. जे एने माग हालें करी हणी नाखो. तें ऋषिने गर्दन उपर चढावी तेवाज निश्चल ध्यानमां थयेलाने वधस्थानकें लइ जइने शूली उपर चढावी दीधो. पबी जेवारे ते ऋषिनुं हृदय नेदी शूली नीकल्युं, तेवारें ते शूलीनी पीडाने योगें करी ध्यानथी पड्यो, अने शूली उपर चडेलुं पोतानुं शरीर देखीने रीषें चढी एम चिंतववा लाग्यो के, ए सर्व राजाना सेवकोने हणी नाखुं? अथवा ए बापडा किंकरने हणवाथी शुं थाय? माटे राजानेज हणी नाखुं? अथवा ए राजापण महारे हणवा योग्य नथी, परंतु जेणें साधु अने चोरनुं सारुं मातुं कांइ पण विचार न कर्युं एवा धर्मराजानो जें लेखक बे तेनेज तपरूप अग्नियें क

री बाळी नस्म करुं. एम चिंतवी ते रुषि जेवारें तेने हणवाने उजमाळ थया, तेज वेळायें चित्रगुप्तनामें लेखकसहित धर्मराजा आवीने कहेवा लाग्यो के, हे मुनि ! हुं शुं कोइनुं उताळी लेउं बुं? अथवा कोइने कांइ आपी दउं बुं? ए तो जेहवां जेहनां कर्म होय,तेने अनुसारें महारो व्यापार छे. ते सांजळीने रुषीश्वर चिंतववा लाग्यो, जे में पाछले नवें शुं पाप कर्युं छे ! तेवारें जाएयुं. जे कोटवाळने नवें यूकाने शूळीयें दीधी हती. एम पाछला नवनुं पोतानुं करेलुं पाप तेणें ज्ञानें करी जाएयुं. तेवारें जेम सर्पना दर्शथी देवो समाइ जाय, तेम रुषिनो क्रोध तरत समाइ गयो. माटे हे नाइ ? सर्व जीवने पोताना करेलां पापकर्म नोगव्या विना छूटको नथी. तेथी वसुराजा अने पर्वतक पण पोताने कर्में डुःख पाम्या छे. माटे ए अर्थ कहेवामां निश्चें एनो श्यो दोष छे ? एवुं नाइनुं बोलवुं सांनळी ने वळी सागर बोल्यो के, हे नाइ? तुं एरथी एम म कहे,जे माटे जिहां हिंसा छे, तिहां निश्चेंथी धर्म तो नथीज. ए उक्ति साची छे, ते वारें वळी अग्निशिख रोषथी बोल्यो के, नाइ ! ते शुं नथी सांनळ्युं? जे पुराण धर्मशास्त्र मानवधर्म, ते मनुसंहिता, अंगसहित चार वेद अने वैद्यशास्त्र ए चार आज्ञासिद्ध छे. एमां कहेला धर्म उपर कांइ कुकल्पना अथवा कुतर्क करीने तेनुं खंमन करवुं नहीं. तेवारें वळी सागर बोल्यो, के इहां कांइक वक्तव्यता छे,माटे ए नथी विचारता के जे निर्दोष साचुं सुवर्ण छे, ते परीक्षाथी शुं बीहे छे ? ना नथी बीहीतुं. त्यारें अग्निशिख क्रोधें करी साक्षात् अग्निनीपेरें प्रज्ज्वलित थइ बोल्यो के, जा हवे महारे आज पछी तहारी साथें बोलवानुं सर्युं.

एम पोताना नाइनुं अयोग्य बोलवुं जाणीने सागर मौन करी रह्यो. एकदा ते नगरें गुणसागर सूरि आव्या. तिहां बुद्धिमंत सागर आदरसहित जइ गुरुने नमस्कार करीने गृहस्थ संबंधि सत्यव्रतनुं स्वरूप पूछतो हवो तेवारें गुरुयें पण कन्यालीक प्रमुख पांच मोटकां जूठ छे ते गृहस्थें जीवता सूधी डुविध त्रिविधें करी न बोलवां, तथा एने विषे सहसान्याख्यानादि पांच दोष जे छे,तेपण घणे उद्यमें करीने पंमितें कपट रहित थका पुण्यने अर्थें परिहरवां. एवी रीतें ए व्रतनें जे सर्वदा सम्यक् प्रकारें ग्रहण करे, ते परनवें विश्वने पूजनीय थाय, आदेयवचननो धणी थाय. तथा जे ए व्रतनेग्रहण नथी करता, तथा वळी ग्रहण करेलानें नांजे छे, ते प्रा

णी जवोजवने विषे मुंगा, बोबडा मुखरोगिया थाय. एवुं गुरुयें कह्युं.

तेवारें ते अग्निशिख पण तिहां लोकसहित आवेलो छे, ते सूरिने कहे वा लाग्यो के,किंचित् मात्र पण सत्यव्रत पाल्यानुं फल नथी,तेवारें सूरि बोल्या के, मननी शुद्धिथी, उपन्या क्लेशनुं नसाडनार एवा ब्रह्मचर्यनुं तथा ब्र ह्मज्ञाननुं कारण ते सत्य व्रतज शास्त्रमां कह्युं छे. जेवारें सत्य आव्युं, ते वारें असत्य सर्व तज्युं. मृषा बोलवुं वर्ज्युं, अने सत्यज बोल्युं, तेवारें ब्र ह्मसंपदा उपजे छे. एवुं गुरुनुं वचन सांजली अग्निशिख प्रत्युत्तर आपी श क्यो नही, मौन करी रह्यो तथा सागर सत्यव्रत गुरुपासें उच्चरीने सेववा लाग्यो. अंतें श्रीजिनधर्मने विषे तत्पर थयो, बीजो जाइ अग्निशिख जारीक कर्मी छे माटें ते सागरनी निंदा करवा लाग्यो.

हवे एकदा ते नगरना राजायें यज्ञ करवा मांड्यो छे, तिहां तत्त्वनो जाण माह्यो जाणीने ते अग्निशिखने यज्ञ होमना कर्ममां थाप्यो छे. बी जा पण शास्त्रना पारंगामी एवा घणा अध्यापक राजायें एकठा कस्या छे. तिहां होमवाने माटें बोकडो तैयार कीधो छे, ते सागरें दीठो तेवारें राजा ने विनति करी के,ए रांकने तमें शामाटें हणो छो? हे राजन्! अज शब्दें बो कडो न समजवो. पण त्रण वर्षनी शालि एटले व्रीहि कही छे. ते केम न थी होमता? हे महाराज! तमें वसुराजा अने पर्वतकनुं वृत्तांत शुं नथी सां जल्युं? जे असत्य बोलीने क्षय पाम्या छे. तेवारें राजायें कह्युं, के में प्रगटप णें नथी सांजल्युं. तेवारें सागर कहेवा लाग्यो के हे महाराज! तमें ए वात मां लगार पण संदेह आणशो नही. ए वात तमें वली बीजा उत्तम अध्या पकोने पूछो? राजायें पण ते अध्यापकोने पूछयुं,ते पण कहेवा लाग्या के, अमेंपण वसुराजानुं वृत्तांत सांजल्युं छे. तेवारें अग्निशिख क्रोध आणी अ हंकारें जस्यो थको कहेवा लाग्यो के,हे देव! एने शुं कहियें? एणें पोतानो कुलाचार मूक्यो छे. ए कुडने माने छे. माटें एने मूको, निश्चें हुं कहुं ते सां जलो. जूउ के, ते वसुराजा अने पर्वतक जो असत्य बोलवाथी क्षय पाम्या होय, तो हुं पण दिव्य करुं अने क्षय पामुं, तेवारें राजायें कह्युं के घणी सारी वात. तुं सुखेंथी दिव्य कर. एवी राजानी आज्ञा मानी कदाग्रहें ग्रह्यो थको लोहनी तपावेली रांपी तेणें ग्रहण करी तेथी ते अग्निशिख बल्यो,तेवा रें राजायें अग्निशिखने देश बाहेर काढयो अने सागरने सत्यवादी कही

नगरना लोकें तथा राजायें पण पूज्यो, ते सागर घणोकाल सत्यधर्म पाली सद्गति पाम्यो. एवुं मृषावाद बोलवाने महोटा पाप रूप दूषणनो समूह जाणीने हे नव्य प्राणीयो! तमें सत्यवचन बोलो. सत्य जे बे, ते धर्म अने यशनुं निरंतर आपनार बे ॥ इति मृषावादव्रते बांधव द्वय कथा समाप्ता ॥

३ त्रीजुं स्थूलअदत्तादानविरमणव्रत. सचित्त, अचित्त, राजनिग्रहकारीउं, पियारुं अणदीधुं लेवा नियम. सूक्ष्म तृण, इंधण, पथिपतित व्यवहारनियोगें, दाणचोरीजयणा, ए त्रीजा स्थूलअदत्तादानविरमणव्रततणा पांच अतिचार शोधुं. तेनाहडे, तक्करप्पउगे, विरुद्धरज्जाइक्कम्मे, कूडतुल्लकूडमाणे, तप्पडिरूवगववहारे. स्तेनाहृत-जाणी करी चोराइ वस्तु लीधी होय. तस्कर प्रयोग. चोरने संबल आप्युं होय, पग रहण दीधुं होय, आगल थइ चोराइ वस्तु वेची वेचावी होय, विरुद्धरज्जाइक्कम्मे-विरुद्ध राज्य जइ व्यवसाय कीधो होय. कूडतुल्लकूडमाणे-कूडां तोलां, कूडां मापां कीधां होय, अनेरे दीधुं अनेरे लीधुं होय, लहक त्रहक कीधुं होय, काटलां कूडां कीधां होय, उसिसी दीधी होय. तत्प्रतिरूपक व्यवहार-सफरी वस्तुमांहे निफरी वस्तु घाती सफरीने मूल्यें वेची होय. घी, तेल, साहिली, कउची, नेल संनेल कीधां होय. नवी वानी देखाडी जूनी वस्तु आपी होय, तथा कूडो करहो काढ्यो होय, वंच डोह, विश्वासघात कीधो होय, लेखे कोइ वरांइयो होय, कूडी मुद्रा संचारी होय, सिसीसीज्वार, फल्या चण्या उपाड्या होय, कुणहनुं द्रव्य, व्यवसाय करतां आपणपां कन्हे रह्युं होय, नाणापालटो कीधो होय ॥ अनेरुं ए त्रीजा स्थूल० ॥

अर्थः—त्रीजुं स्थूल अदत्तनुं आदान जे ग्रहण, तेथी विरमवुं तेने अदत्ता

दानविरमणव्रत कहीयें. ते संपूर्ण तो साधुने इव्यन्नावथी अदत्तनो त्याग हो य, अनें श्रावक तो सचित्त अचित्त एवी कोइनी गयेली, पडेली, वीसरी गयेली वस्तु लीये नही तथा कोइनी नजर चूकावीने लीये नही, तेमज रस्ते जतां कोइने लूंटे नहीं. तथा घर फोडीने चोरी करे नही, एवी रीतें राजनिग्रह कारिउं एटले राजानी तरफथी दंम थाय, बंदीखानुं नोग ववुं पडे, शूलीयें चडवुं थाय. एवो पारको माल ते धणीना दीधा विना लेवो नही. एवी रीतनो नियम करेलो ठे, अने सूक्ष्म तृण तथा इंधण ए टले लाकडां काठी प्रमुख पथि एटले मार्गमां पतित एटले जे पडेलां होय, अर्थात् जेनो कोइ धणी न होय,तेवी तृणकाष्ठादिक वस्तु जे होय,तेनी जय णा राखे. तथा वली व्यवहारनियोगें एटले व्यापार प्रमुखमां जे दाण प्रमुख लेवानो नियम राजादिकें राखेलो होय, तेमां कांइ आजीविकाने अर्थें दा ण नहीं आपवाथी, अथवा उंबुं दाण आपवाथी दाणचोरी थाय,तेनी ज यणा राखे, ए त्रीजा स्थूल अदत्तादान विरमण व्रतना पांच अतिचार शोधुं, एटले शुद्द करुं बुं, पडिक्कमुं बुं, एटले तेथी निवृत्तुं बुं.

ते पांच अतिचारोनां नाम कहे ठे. एक स्तेनाहृत, बीजो तस्करप्रयोग, त्रीजो विरुद्द राज्यातिक्रम एटले विरुद्द राज्यगमन,चोथो कूटतुला कूटमा न अतिचार एटले कूडातोल कूडां माप करवां,पांचमो तत्प्रति रूपक व्यव हार अतिचार. ए पांच अतिचार जाणवा.

तेमां प्रथम स्तेनाहृतअतिचार,ते स्तेन एटले चोर तेणें देशांतरप्रमुखथी आहृत एटले हरण करीने आणेली एवी केसर प्रमुख बहुमूल्य वाली व स्तु तेने ए चोरेली ठे, एवुं जाण्यां उतां पण सोंघी मलती जाणीने लोन नां वशथी कांइ कणप्रमुख आपीने तें जणश वेचाती लीधी होय, ते प्रथ म स्तेनाहृत नामा अतिचार जाणवो.

बीजो तस्करप्रयोग अतिचार, ते तस्कर एटले चोर तेने चोरी करवा नो प्रयोग एटले प्रेरणा करे, चोरने संबल प्रमुख आपे, पगरहण एटले चोरने ठेकाणा बतावे, चोरीप्रमुख कराववाने लोढाना हथीयार प्रमुख आ पे. तथा पोतें आगल थइने चोरनी चोरी आणेली वस्तुने वेची वेचावी आपे, ते बीजो तस्कर प्रयोग अतिचार जाणवो.

विरुद्दरज्जाइक्कम्मे एटले पोताना राजाथी विरुद्द जे राज्य, तेमां अति

क्रमण करवुं अर्थात् आपणा राजायें आज्ञा करी बे, के अमुक गामनो राजा मह्मारो शत्रु बे, माटें तेमना गाममां कोइयें व्यापार अर्थे कोइ चीज इह्मांथी लइ जइने वेचवी नही; तथा तिहांथी पण कोइ चीज लाववी न ही. तेम बतां ते राजानी आज्ञा अतिक्रमीने एटले नंग करीने ते काम करवुं,ते त्रीजो विरुद्धराज्यातिक्रम अतिचार कहीयें.

चोथो कूड तुल्ल कूड माण एटले कूडां तोलां अने कूडां माप करवां, तथा करी राखवां–एटले तोलवानां तोलां तथा अनाजवगेरे नरवानी पायली प्रमुख माप, तथा वस्त्र मापवाना गज प्रमुख सर्व खोटां राखवां. पबी व्यापार करतां उंबां तोलां मापाथी माल देवो, अने अनेरा पासेंथी लेतां बीजा अधिकां तोल मापाथी माल लेवो,तथा लहक त्रहक एटले तोलती वखतें आडुं अवलुं तोलीने उंबुं आपवुं. जेम लेती वखतें पाय ली माथा सुधी नरिलिये अने देती वखतें पायली माथा सुधी नरी मगावीने दिये,कूडां काटलां करे,एटले जुतुं बोलीने काप कूप दगल बाजी करी काटलां करे,अथवा काटलां एटले कांटा,तोलवानां त्राजुवां,ते खोटां करी राख्यां हो य तथा तेमां उसीसी आपे एटले कांटा अने त्राजवानी मांमीमां अंतर कोण राखे,तथा उंची नीची पगथी दबावी मूके,जेथी तोल करवामां पोता ने फायदो थातो होय तेवी रीतें करे,ते कूड तुल्ल कूड माण अतिचार जाणवो.

पांचमो तत्प्रतिरूपक व्यवहार अतिचार. ते बहु मूल्यनी चीज होय, तेना सरखारूपनी बीजी हलकी चीज बहुमूल्यें करी वेचवानो व्यापार करवो, एटले सफरी ते रूडी वस्तु तेमांहे तेनी सदृश बीजी नफरी एट ले हलकी वस्तु घालीने तेने सारी वस्तुनी समान मूल्य लइ वेची होय, घृत, तेल, साहिली अने कचचीनी मांहोमांहे नेल संनेल कीधा होय, कोइ चीजनी नवी वानकी देखाडी तेनो नाव करीने पबी जुनी वस्तु तोली आपी होय, तथा कूडो करहो एटले खेत्रमां वावणी करवा सारु कोइ पा सें धान्य लईनें तेनी साथें ठेराव करे के धान्य पाक्या पबी दोढुं बमणुं आपीश, पबी जेवारें धान्य पाके,तेवारें कहे के में तो सवायो आपवानो ठेरा व कर्यो हतो ! इत्यादि कूडो करहो काहाढ्यो होय, तथा वंच एटले को इने वंचवो ठगी लेवो डोह करवो, तथा कोइनी साथें विश्वास घात करी होय लेखें कोइ वराश्यो एटले नामा लेखामां कोइने नूलाव्यो होय,

कूडी मुद्रा ते कूडी महोर छाप संचारी होय, एटले कीधी होय; तथा सिसीसी फली ज्वार चणा फली वस्तु कोइना खेत्रमांथी उपाडी लीधी होय. तथा कोइनी साथें व्यापार करतां तेनुं द्रव्य आपणी पासें मूलमां रह्युं होय ते पाछुं तेने दीधुं न होय,तथा नाणापालटो ते नाणानी उलट पालट करी होय, एटले खरा नाणाने पलटावी खोटां चलाव्यां होय. अनेरुं ए त्रीजा स्थूलअदत्तादानविरमण० ॥

हवे ए त्रीजा अदत्तव्रतने विषे दृष्टांत कहे छे, एक गाममां धनशेठ रहे छे,तेनी धनश्रीनामें नार्या छे,अने तेने धनसार नामें पुत्र छे,ते शेठ व्यापार करतां बापडा गामडीया लोकोने ठगीने घणुं द्रव्य मेलवे छे. पण पासें, कांइ द्रव्य रहे नहिं. वर्षदिवसें नामुं तपासे, तेवारें मूलगुं पण मांम मांम रहे,परंतु कांइपण धननी वृद्धि थाय नही.एहवामां एक गामडीया श्रावकनी कन्या श्राविका छे,ते जीवादिक नव तत्त्वनी जाण छे,ते कन्यासाथें शेठें पोताना छोकराने परणाव्यो.हवे शेठनुं घर अने हाट ढूकडां पासें पासें छे,हवे माल तोली आपवानो शेर,त्रण पाशेरानो अने माल लेवानो शेर,पांच पाशेरानो राखेलो छे. ते संकेत पोताना छोकराने शीखावी मूक्यो छे. लेती देती वखतें जेवारें जे सेरनो खप पडे, तेवारें 'त्रिपुष्कर' 'पंचमो कूर' एवे नामें छोकराने बोलावी शेर मंगावी लेवड देवड करे. ए वात सर्वलोक जाणी गया, तेथी ते शेठनुं नाम लोकोयें वंचकशेठ एवुं पाडी दीधुं. हवे एकवार ससराने पोताना नर्त्तारें नवे नामें बोलावतां सांनली वहूयें पोताना नरतारने तेनुं कारण पूछ्युं. तेवारें नर्त्तारें पोतानी वहूने यथार्थ वार्त्ता कही संनलावी. ते वात सांनलीने वहूयें ससराने कह्युं के, हे तातजी ! आवी रीतें कूड कपटें करी उपार्ज्जन करेली लक्ष्मी आपणी पासें स्थिर थइ रहेशे नही ! तेवारें शेठें कह्युं. के एम न करीयें तो निर्वाह केवी रीतें थाय ! ते सांनली वहू बोली, हे तात ! न्यायनुं उपार्ज्युं धन चिरकाल लगण रही शके छे अने ते धन वली जो सुपात्ररूप खेत्रमां वाव्युं होय,तो फरी वृद्धि केम न पामे ? अर्थात् वृद्धि पामेज. एम छतां जो ए महारी कहेली वात तमोने नही मानवामां आवती होय, तो छ महीना पर्यंत महारा आग्रहथी हुं कहुं छुं, तेवी रीतें करी जूओ. पछी महारुं वचन खरुं थाय तो तमें हरहमेश सत्यमार्गें आपणी मेलें चाल्या करशो. ते वा

त शेठें कबूल करीने शुद्ध व्यापार करवा मांड्यो,एटले खरे खरुं तोली लेवुं अने खरेखरुं तोली देवुं. एवी रीतें करवा मांड्युं. तेथी लोकमां तेनुं "सत्यवादी" एवुं नाम प्रसिद्ध थयुं. अने छ महिनामां पांच शेर सुवर्ण वधार्युं, ते आणीने वहूने आप्युं. पछी वहूयें तेने कह्युं, के हे तातजी! आ सत्यमार्गेथी पेदा करेलुं द्रव्य क्यांय जशे नही. तमोने परीक्षा जोवी होय तो सुखेंथी जूउ. ते सांभली शेठें छोकरानें मोकली ते सोनानी पांचशेरी करावी, उपर चामडुं मढावी उपर पोतानुं नाम नाखी त्रण दिवस पर्यंत राजमार्गेमां नाखी दीधी, पण कोइयें उपाडी नही. पछी रानमां जइ एक द्रहमांहे नाखी दीधी. तिहां तेने एक मत्स्य गली गयो. ते मत्स्य, मछीमारें जालमां पकडी आणीने विदार्यो, तेवारें तेना पेटमांथी पांचशेरी नीकली, तेनी उपर शेठनुं नाम पडेलुं हतुं. ते वांचीने मछीयें शेठने आणी आपी, शेठें कांइक आपीने लइ लीधी, तेवारें वहूनां वचन उपर शेठने प्रतीति आवी. ते दिवसथी शेठ शुद्ध न्यायमार्गें द्रव्य उपार्जवा लाग्यो, अने सात खेत्रें धन वावरतो थकोमहोटो धर्मात्मा थयो. एवा शुभ फल जाणी न्यायमार्गें चालतां त्रीजुं व्रत पालवुं.

इहां परशुरामनी कथा कहे छे. कांपिलपुर नगरें चक्रेश्वर नामें राजा छे. तेनी वसुंधरा नामें राणी छे तथा ते राजानो अर्जुन नामें प्रधान छे, ते प्रधानना देवकी नामें स्त्री छे, तेनें परशुरामनामें पुत्र छे, ते यौवन अवस्था पाम्यो,तो पण निरंतर विद्याभ्यास मूके नही,तेने पितायें कह्युं के तुं घरनां कामकाज नथी करतो,अने स्त्रीना विषयपण सेवतो नथी,रात्रदिवस त्रण वाना व्यसनें करी दुःखित थको केम फरे छे? एवां पितानां वचन सांभली कांइ पण तेणें प्रत्युत्तर दीधो नही, अने वली पण नित्य प्रत्यें विद्याभ्यासमां आदरसहित रहेवा लाग्यो. एकदा राजायें एक उत्तम जातिनुं आभरण प्रधान पासें थापण राखवा मोकल्युं, प्रधानें वली पोताना पुत्र परशुरामने थापण राखवा आप्युं, अने प्रधान कोइ एक कामने अर्थें किहांक जतो रह्यो. हवे पशुराम ते वेलायें निश्चल मन राखीने कोइक विषमसूत्रने चिंतवतो हतो. तेहमां तेनुं मन निश्चल थयुं हतुं. एवामां परशुरामनुं विषम सूत्रमां निश्चल मन जाणीने कोई दासनो कालिसुत नामें पुत्र छे, ते हार लइने तत्काल तिहांथी नासी गयो. हवे परशुराम पण सूत्रा

थै जाण्या पछी ते आजरण जोवा लाग्यो, अने तेटलामां प्रधान पण बा हेरथी आव्यो, हवे ते हार जारें परशुरामने न मल्यो तारें पोताना पिताने कह्युं के हार कोइ लइ गयुं? हार गयो सांजली रुष्टमान थयो थको प्रधान कहेवा लाग्यो के, अरें पुत्र ! ताहारे विश्वासें में हार राख्यो ते गयों, माटे तहारे निमित्तें महारामाथा उपर निश्चें वैरी उपन्यो. हवे राजाने हुं जवाब शुं दइश ! अने राजानुं आजरण जवाथी हवे आपणे किहां जइ रहीशुं ? माटें हे पुत्र ! कुविद्यानी पेरें जो तुं आ विद्यानो अन्यास नही मूकीश, तो निश्चें थोडा कालमां आ महारा सर्व कुलनो तुं क्षय करावीश. एम पितायें निर्त्रंछयो थको परशुराम चिंतववा लाग्यो, जे पिताने उद्वेगना करनार एवा महारा रहेवाथी पितानुं शुं सारुं थवानुं छे ! एम चिंतवी रात्रें तिहांथी निकली उत्तरदिशि जणी जाय छे. तिहां मार्गमां इंद्रप्रस्थ नगरना उद्यानने विषे एक साधुने देख्यो. तेवारें जक्तियें करी तेमना चरणकमलने नमस्कार करी निर्मल चित्तें पूछवा लाग्यो के,शें कारणें तमें आ व्रत लीधुं छे? ते कहो. तेवारें साधु बोल्या के तगरनगरीयें सूरदत्त शेठनो इंद्रदत्त नामें हुं पुत्र थयो, पण जाग्यरहित निर्जागी हतो. यौवन अवस्थायें मा बापें मने जली कन्या परणावी, घरनां कार्यमां मने स्थाप्यो. लक्ष्मी उपार्जवानी प्रेरणा करी. एम करतां पिता मरण पाम्यो. तेवार पछी अग्नि तथा चोरोथी सर्व धन क्षय पाम्युं, हुं दारिद्रें पराजव्यो. पछी शून्य चित्त थइ ते नगरथी निकली जमतां जमतां में मार्गमां साधुने दीठा, तेने वांदीने दारिद्र प्राप्त थवानुं कारण पूछ्युं. तेवारें ते ज्ञानी मुनि बोल्या के, इहां तुं पूर्वें कोसंबी नगरीयें साम्ब नामें वणिक् हतो,तेवारें पहेलां बे अणुव्रत तें लीधां हतां. एक समयें गुरुयें कह्युं, के जेथकी राजदंम उपजे, तेवुं अदत्त जला गृहस्थें डुविधें त्रिविधें न लेवुं. अने तेना स्तेनाहृत प्रमुख पांच अतिचार छे, ते पण वर्जवा. जे प्राणी ए व्रतने अतिचार रहित घणा काल लगण पाले, ते पुरुषने थोडा कालमां घणी लक्ष्मी आवी मले, अने जे पुरुष अतिचार रहित पणे ए व्रतने ग्रहण करीने घणाकालपर्यंत नथी पालता अथवा लइने जांजे छे, ते प्राणी, इह लोकादिकें अंगछेदनादिक अत्यंत डुःख पामीनें परजवें नरकनें विषे जाय छे. एवी रीतें सांजलीने साम्ब त्रीजुं अणुव्रत ग्रहण करि अतिचार रहित विशुद्ध पणे मन ठाम राखीने पालवा ला

ग्यो. अनुक्रमें तेहने आठ पुत्री थइ. तेवारें ते पुत्रीयोना निरंतर विवाह प्रमुखें करीने तेनुं धन शीघ्र नाश पाम्युं. पछी ते गाममां निर्वाह न थाय. तेवारें पासेंना गामडामां जइ रह्यो, तिहां चोरनो माल लेइ त्रीजा व्रतमां अतिचार लगाडवा लाग्यो. ते अंत समयें आलोया विना मरण पामीने किल्बिषियो देव थयो. तिहांथी च्यवीने तुं इहां इंद्रदत्त नामें थयो छो. तें जे पूर्वें व्रतने अतिचार लगाड्या छे, तेने योगें करी इहां पितानुं धन उपार्जेलुं क्षय थइ गयुं, अने नवुं उपार्जन करी शकतो नथी. एम गुरुमुखथी सांभली मने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं तेथी म्हारो पाछलो भव सांभरी आव्यो. तेवारें भावसहित में साधुपासेंथी दीक्षा लीधी छे. ए म्हारे व्रत लेवानुं कारण हतुं, ते तुझने कह्युं.

ए रीतें मुनिनुं चरित्र सांभलीने परशुराम पण रीझ पाम्यो, अने शुद्ध आत्मायें करी त्रीजुं अणुव्रत ग्रहण कर्युं, तेने साधुयें शिक्षा दीधी. जे हे भद्र! जो तें व्रत लीधुं छे, तो अतिचार लगाडीश मां. तेवारें तेणें पण तेमज कबुल कीधुं, पडिवज्ज्युं. पछी मुनिने नमस्कार करीने परशु राम नगरमांहे गयो. तिहां कोइ यज्ञदेव नामें वाणीयाने हाटे जइ बेठो. पछी तेनी साथें घणो परिचय थयो, तेथी नित्यें तिहां जइ बेसे, ते बेहु एकदा स्नान करवाने पुष्करणी वाव्यें गया, तिहां क्रीडा करतां कर तां ते वाव्यने तटें शेठनी वींटी पडी पण न्हाया पछी ते वींटी पडी गई. एवी वात शेठें जाणी नही अने पोताना घर भणी चाल्यो. हवे पाछ लथी परशुरामें वींटी दीठी तेने लइने जेटले आवे छे, तेटलामां तो शेठ पण वींटी पडी गइ जाणीने घणो मनमां विषाद पामवा लाग्यो. एटला मां पाछलथी परशुरामें आवीने शेठने कह्युं के में ए वींटी लीधी छे माटें ल्यो आ तमारी वींटी! एम कही शेठने वींटी आपी, तेवारें शेठ संतोष पामीने पूछवा लाग्यो के तमोयें ए वींटी कये ठेकाणेथी लीधी? तेवारें परशुरामें कह्युं के वाव्यने कांठे पडी हती, तिहांथी में उपाडी छे, ते सांभली विजयशेठें विचार्युं जे, आ माणस परधननो निःस्पृही छे, जेमाटें आ पृथ्वी रत्नगर्भा कहेवाय छे, जेमां आवा उत्तम पुरुषो होय, तेमां कांइ विशेष नथी.

हवे एकदा परशुराम सहित शेठ बेठा छे, तिहां ते कालिसुत नामें

दास पण ठानो मानो आजरण लावीने शेठने देखाडतो हवो, ते देखी ने जयदेव शेठ पण चतुर छे माटें एम कहेवा लाग्यो के आ महोटा मूल्यनुं आजरण छे, ते अमाराथी लेवाय नही, एतो कोइ राजाथी लेवाय. तेवारें प्रधाननो पुत्र जे परशुराम ते पण ठानो जइने शेठने ते आजरणनुं वृत्तांत कहेतो हवो. पछी कालीसुतनामा दासने संभ्रमें कह्युं के तुं क्यांथी आव्यो छो? तेवारें ते पण अजाणतोज होय नहिं एवो छतो कहेवा लाग्यो के ताहरे पूछवानुं शुं काम छे? तेवारें हसीने परशुराम तेहने कहेतो हवो के, थोडा कालमां तुजने शुं वीसरी गयुं! तुं कपिलपुर नगरें महारो पिता अर्जुन नामें प्रधान छे तेनो कालीसुत नामें दास छो. ते मने तुं शुं नथी उलखतो!! तेवारें धीठाइ करी चंचल नेत्रें करी ते कालिसुत नामनो दास कहेवा लाग्यो के, हे जड! तुं मह्यो छो. तो पण सरखे सरखा देखीने भ्रम पाम्यो छो. ते सांजली जयदेव शेठ ते दासने पूछवा लाग्यो, के तुं क्यांनो रहेवासी छो? तथा तहारुं नाम शुं छे? अने आ आजरण कया धणीनुं छे? तथा एनुं मूल्य शुं कल्प्युं छे? ते अमने कहे. तेवारें कालिसुत नामा दास कहेवा लाग्यो के, हुं तहारा राजानो गंग एवे नामें सेवक छुं, अने ए अलंकार महारो छे, तथा ए अलंकारनुं मूल्य एक लाख मुद्रा कल्प्युं छे, ते सांजली शेठ बोल्या के हे मूर्ख! तुं जूठुं बोले छे, जेमाटें बोली पण नथी जाणतो. कारण के एनुं तो एकेकुं माणिक्य ते लाख लाख द्रव्यना मूल्यनुं छे, तेथी तहारी वात योग्य नथी, केम के एहवां रत्न पण रोहणाचलने विषेज होय, एवुं शेठनुं बोलवुं सांजली दास कहेवा लाग्यो के अमारे मूल्यनो खप नथी आ महारुं आजूषण मने पाछुं आपो. एवुं कह्युं पण शेठें ते पाछुं आप्युं नही, तेवारें सहु राजा पासें गया. तिहां राजा पण बेहुने पूछीने, ते अलंकार देखी कहेवा लाग्यो के, ए दिव्य अलंकार छे, तेतो जे दिव्य धीज करे, तेने मले, ते धीज तो चंडिका देवीनी आगल एक वाव्य छे तेमांहे कमल छे ते कमल काहाडी लावे, तो थाय. तेवारें घणी धीठाइयें ग्रह्यो थको विधियें करी ते कालिसुत नामा दास वाव्यमां पेठो, तिहां तेनुं शीघ्र मगरादिकें जक्षण कीधुं, तेवारें राजायें मंत्रीना पुत्र परशुरामने कह्युं के, हवे तुं पण धीज कर, तेवारें पंचपरमेष्ठीनुं स्मरण करी प्रधानपुत्र प

ए वाव्यमां पेठो. तेने मगर, पोताना वांसा उपर बेसाडीने वाव्यमां कम ल पासें लइ गयो, तिहांथी कमल लइने वाव्यमांहेथी जय सहित निकल्यो, तथापि राजा लोनें ग्रसाणो थको ते अलंकार मंत्रीपुत्र प्रत्यें न आपतो हवो, तेवारें शेठें ते आजरणनी सर्व वात राजा आगल कही संजलावी. राजायें कह्युं के, ए आजरण तमने अवसरें आपीशुं ! एम राजायें न मान्युं, आजरण न आप्युं, तेवारें शेठ अने प्रधानपुत्र बेहु पोताने घेर गया. हवे राजायें बाहिर जूमि मार्गमां पोतानी मुद्रा नाखी तेने जोवाने पोताना चर पुरुष ठाना मोकल्या, तिहां प्रधाननो पुत्र निःस्पृही ठे, माटें मुद्रा दे खीने तेणें उपाडी नही, ते वात चरपुरुषें आवी राजाने कही. राजा पण घणो रीज्यो थको परशुरामने तेडावी ते अलंकार आपता हवो. तिहां रा जायें तथा गामना लोकोयें तेने घणुं मान्यो, पढी तेणें पोताने नगरें जइने अलंकार पोताना पिताने आप्यो, अने पोताना व्रतनी वात तथा कालि सुत नामा दासनी वात जेम थइ तेम सर्व पिता आगल कही. तेवारें पिता घणुं संतोष पाम्यो, अने नगरनां लोक तेमज राजा पण परशुरामनुं नि र्लोजीपणुं देखीनें रीज पाम्या. ए रीतें परद्रव्य न लेवानुं व्रत घणा का ल पर्यंत पालीने परशुराम स्वर्गादिकसुखनो जजनार थयो. एम जो जव्य लोको ! अदत्त व्रत लेनारने इहलोकें पण सुख ठे, माटें जे अदत्तव्रत लीये, ते स्वर्ग मोक्षनां सुख अने यश पामे, ए त्रीजा व्रत उपरें परशुरामनी कथा कही ॥ इति तृतीय स्थूल अदत्तविरमण व्रतं समाप्तम् ॥

४ चोथुं शीलव्रतः– यथाशक्तें स्वदारासंतोष परदाराविव र्जनारूप ॥ ए चोथा शील व्रत तणा पांच अतिचार शोधुं. इत्तरपरिग्गहियागमणे, अपरपरिग्गहियागमणे, अनंग कीडा, परविवाहकरणे, कामजोगतिव्वाजिलासे. इत्वर-थो डे कालें द्रव्यादिकें परिगृहीत परस्त्रीतणुं गमन कीधुं होय. अपरपरिगृहीत-विधवा कुमारिकातणुं गमन कीधुं होय. अनंगकीडा-अत्यासक्तें स्वदेह परदेह काम कुचेष्टा कीधी होय, पीयारा विवाहना जोडावाडा कीधा होय, काम जो

गतणेविषे रात्रि, दिवस, तच्चित्त थइ तीव्राभिलाष धर्यो होय, पर्वतिथियें विस्मृत लगें शीलभंग हुउ होय, परस्त्री शुं अश्लील वचन हास्य कीधां होय, स्त्रीतणा अवयव भणी सरागदृष्टि घाती होय, वेश्या, वाहिगदर्शनी भणी दुष्टमनसा कीधी होय, स्वप्नांतरें शीलभंग हुउ होय, अनेरु ए चोथा०॥

अर्थः– चोथुं शीलव्रत एटले मैथुननो त्याग करवो, ते ब्रह्मचर्यव्रत छे. तेने विषे यथाशक्ति एटले जेवी पोतानी शक्ति तेप्रमाणें वरतवुं, तिहां जो पूर्ण शक्तिमान् श्रावक होय, तो पोतानी तथा पारकी सर्व प्रकारनी स्त्रीने भोगववानो त्याग करे, परंतु तेटली शक्ति न होय, तो पण स्वदारा एटले पोतानी पंचनी साखें परणेली स्त्रीने भोगववानो संतोष राखवो, अने परदारा ते पारकी स्त्रीनुं विवर्जन करवुं ते रूप शीलव्रत जाणवुं. इहां स्त्रीने पर पुरुषनुं वर्जन जाणवुं. एवी रीतें व्रत लीधुं छे, तेमां प्रमादने प्रसंगें जे अतिचार लाग्या होय, ते पांच अतिचारने शुद्ध करुं. तेनां नाम कहे छे.

एक इत्वरपरिगृहीतागमन, बीजो अपरपरिगृहीतागमन, त्रीजो अनंगक्रीडा, चोथो परविवाहकरण अने पांचमो कामभोगतीव्राभिलाष. ए पांच अतिचारनां नाम कह्यां. हवे एनो संक्षेपथी अर्थ लखीयें छैयें.

पहेलो कोइएकें वेश्यादिकने इत्वर एटले थोडाकाल पर्यंत अर्थात् मास छ मास पर्यंत इत्यादिक ते भाडुं आपीने पोतें परिगृहीता एटले ग्रहण करी राखेली होय तेने इत्वर परिगृहीता कहीयें. तेनी पासें जइने तेनी साथें गमन विलासादिक करवा ते इत्वरपरिगृहीतागमन अतिचार कहीयें. अथवा पोतें वेश्यादिकने भाडुं आपी राखे, अने मनमां विचारे, जे में तो परस्त्रीनो त्याग कर्यो छे! पण आ तो कोइनी कांइ परणेली स्त्री नथी! एम विचारी तेनी साथें गमन करे. परंतु एथी चेतना बगडे छे, एवुं विचारे नही. ते इत्वरपरिगृहीता गमनातिचार जाणवो.

बीजो अपरपरिगृहीता एटले विधवा अथवा कुमारिका होय, ते कोइनी ग्रहण करेली नथी. तेथी एने अपरिगृहीता कहीयें, माटें एम विचारे जे एनो कोइ स्वामी कहेवातो नथी, ए कोइनी स्त्री कहेवाती नथी. एम समजीने तेनी साथें गमन विलास करे, ते अपरिगृहीतागमन अतिचार कहीयें.

त्रीजो अनंग एटले काम तेने जाग्रत करवा सारु तेनी क्रीडा करे, एटले कामने विषे अत्यासक्तियें ते अत्यंत आसक्त थइने स्वदेहें एटले पोताना पुरुषचिन्हें परदेहें एटले परपुरुष चिन्हें अथवा स्त्री होय तो स्त्रीचिन्हें ते गुह्यस्थानकें अधिकरणें करी कामनी कुचेष्टा करे, बीजां प ण चुंबन आलिंगन हाव, नाव, कटाक्षादिक तथा हास्य, ठठा, मश्करी प्रमुख परस्त्रीसाथें करे, ते सहु ए अतिचारमां जाणवा. ए त्रीजो अनं गक्रीडा नामा अतिचार जाणवो.

चोथो पोताना ठोकरां ठैयां टालीने नलमनसाइ लेवाने माटें पार का संताननें स्नेहें करी तेना विवाहना जोडा वाडा करे. तिहां पोताना संता नना विवाहनो अनिग्रह करी तेनी संख्या राखवी, ते व्रती श्रावकने युक्त ज ठे, परंतु पारका विवाह जोडे, तो तेने परविवाहकरणनामा अतिचा०

पांचमो तीव्र अनिलाष अतिचार. ते शब्दादिकने विषे, नोगने विषे, रसादिकने विषे ते कामनोगने विषे रात्रि दिवस तच्चित्त एटले तलत चित्त अर्थात् तेमांज चित्त राखीने तीव्र एटले अत्यंत मननो अनिला ष धरे, तथा पारकी स्त्रीनें जोइने बहु चाहना करे तथा पारकी स्त्री विना क्षण मात्र पण रही शके नही, हरतां फरतां जीव तेमांज लाग्यो रहे.

तथा पर्वतिथियें एटले पाक्षिकादिक पर्वने विषे विस्मृतिथी कामनें व श थकां शीलनंग थइ गयो होय, तथा परस्त्रीनी सार्थे अश्लील एटले बीनत्स वचन, राग सहित कहीने तेनी सार्थे हास्य कीधुं होय, तथा स्त्रीना शरीरना जूदा जूदा, हाथ, पग वगेरे अवयव तरफ जोइने तेनी उपर सरागदृष्टि एटले रागसहित दृष्टि कीधी होय, तथा वेश्या प्रमु खनी सार्थे चोराशी आसन सेववां संबंधि अथवा वाहिगदर्शनी एटले जोगण अतीतण सामिणी प्रमुख तथा कुटणी प्रमुख तेने जोइने दुष्ट मनसा करी होय, तथा स्वप्नांतरने विषे शीलनंग हुउं होय, ते संबंधी जे दुष्कृत पाप तेने हुं मन, वचन, कायायें करीने मिथ्या करुं ठुं.

इहां जे पोतानी स्त्रीनो संतोषी होय, तेने ठेहला त्रण अतिचार ला गे, अने पहेला बे अतिचारथी तो नंगज थाय. कारण के ते अनाचार रू प ठे, स्त्रीने पण तेमज जाणवुं. अथवा अतिक्रमें करीने अतिचार जाण वो, जे माटें कह्युं ठे के जेणें परस्त्रीनो त्याग कर्यो होय, तेने ए पांचे,

अतिचार रूपें लागे छे, अने स्वदारा संतोषीने पछवाडाना त्रण अति चार रूपें होय, अने प्रथमना बे अतिचार ते अनाचार रूपें होय, तेमज स्त्रीने पण पांच, अने त्रण अतिचार होय, ते नांगाने नेदें जाणवा.

ए व्रत उपर सुरप्रिय कुमरनी कथा कहे छेः— मगधदेशें राजगृही नग रीमां एक प्रनास नामें नगवाननो अगीयारमो गणधर छे तेनो नाइ यज्ञ प्रिय नामें ब्राह्मण रहे छे, ते श्रावक छे, तेने यज्ञयशा नामें स्त्री छे, अने सुरप्रिय नामें पुत्र छे,ते पुत्र, रूप,सौनाग्य, अने शीलादिक गुणोयें करीने देवताउने पण वल्लन छे,तेथी तेने लोको सुरप्रिय कहि बोलावतां हतां. एकदा राजगृही नगरीने विषे धर्मरुचि नामें मुनि आव्या, तेमने प्रनासगणधरें कहेलुं हतुं के,तमें यज्ञप्रिय विप्रने प्रतिबोधजो. अनुक्रमें ते मुनि यज्ञप्रियने घरे आव्या, ते मुनिने आव्या देखिने यज्ञप्रियें संज्रमें उठीने तेमनें वांद्या, वांदीने पोतानुं आसन मुनिने आपी तेनी उपर बेसाड्या. पछी मुनि पण सर्व जगत्‌ना प्रनु एवा वीरनगवान् प्रत्यें समग्र जनने वंदावता हवा. हवे मुनि कहे छे,के श्रीप्रनास गणधरें महारा मुखथी तमोने एम कहेवरा व्युं छे, जे आ मनुष्यादिक सामग्री घणी दोहेली पामीने तमें धर्मकार्यने वि षे एक लगार मात्र पण प्रमाद करशो नही. ते सांनली ब्राह्मणें पण ते मुनिनुं वचन तेमज अंगीकार कर्युं, तेवारें मुनियें कह्युं के तमारा व्रतनो तमाराथी सुखें निर्वाह थाय छे ? सारी रीतें पले छे ? तेवारें ब्राह्मण बो ल्या. हे महाराज ! आपने प्रसादें अटला काल सुधी तो व्रत संपूर्ण पल्यां छे,अ ने आज पछी तो हुं जाणतो नथी. जे पलशे के नही पले! जेमाटें महारो पु त्र सुरप्रिय छे, तेने सौंदर्यना अतिशय पणाथी पगले पगले स्त्रीयो प्रार्थ नां करे छे, माटे हे नगवंत ! निर्मल शील प्रत्यें जो ए खंमना करशे, तो शरदऋतुना चंद्रनी परें उजला कुलने कलंक लागशे, तेवारें मुनि बोल्या के तुं विषाद नहीं कर. ए तहारो पुत्र अकार्य नहीं करे,एना पुण्यानुबंधी पु ण्यना प्रनावथी ए महोटी मतिनो धणी छे. एम सांनली संतोष पाम्यो थ को फरी नमस्कार करीने साधुने पूछवा लाग्यो के,महाराज ! एणे पूर्वनव ने विषे शुं पुण्य कीधुं छे ? ते मुऊ प्रत्यें कहो. तेवारें मुनि कहेता हवा के, ए पूर्वनवमां वाराणसीनगरीयें अरिदमन राजानो जयमाली नामें राजपु त्र हतो. एकदा ते वसंत तिलकनामें वनमां क्रीडा करवा गयो, तिहां अ

शोकवृक्षनी नीचें चारण मुनिने देखी तेमने नमीने जक्तियें करी तेमनी आगल बेगो. तेवामां तिहां स्त्रीसहित एक अनंगकेतु नामें विद्याधर आव्यो. ते पण मुनिने नमस्कार करी आगल बेगो. तेवारें मुनियें विद्याधरने पूछ्युं आ स्वरूपवती स्त्री कोण छे? तेवारें ते विद्याधर, मुनिने नमी माथुं निचुं करीने कहेवा लाग्यो के,महाराज ! ताराचंद नामें विद्याधरनी ए पुत्री छे,पण एनो धणी चंमालनी पुत्री साथें लुब्ध्यो जाणीने ए स्त्री पोताना धणी उपर विरक्त थइ छे, माटें हे स्वामी ! में तेने अंगीकार करी छे. तेवारें मुनि बोल्या हे जइ ! पुरुषने परस्त्रीसाथें गमन करवाथी पोताना कुलने कलंक चढे, इहां वैर उपजे, अपयशनुं कारण थाय, अने परजवें तो परस्त्रीरक्त पुरुषने नरकमां लोहनी पूतलीनुं आलिंगन प्रमुख दुःख सहन करवां पडे. एटलामां तो ते स्त्रीनो धणी अमोघ खड्ग हाथमां लइने दोडतो दोडतो आव्यो. ते जोई अनंगकेतु तेनी घणी तर्जना करतो थको बोल्यो के. अरे चंमालणीना धणी! तुं आज पोताना कर्मेंज मरीश! एम आक्षेप करतो शीघ्र युद्ध करवाने उठ्यो,पछी ते बेहु जण युद्धकरीने मांहोमांहे घात करते मरण पाम्या,अनें ते स्त्रीपण जारधणीनुं शरीर लइ अग्निमां प्रवेश करती हवी.

हवे ते चारणऋषिने शोक करता देखीने जयमाली कहेवा लाग्यो के, महाराज ! तमो शा माटें शोक करो छो ? तेवारें मुनि बोल्या के, अमारो जाइ नवकारसहित ए पापथी अकस्मात् मरण पाम्यो, तेथी अमने शोक उपजे छे. ते सांजली जयमालीयें मुनिने नमीने परस्त्रीगमन विरमणव्रत लेवानी याचना करी. तेवारें मुनि बोल्या के,प्रथम ए व्रतनुं कांइक स्वरूप कहुं छुं, ते सांजल. पोताथी जूदा जे पर तेनी स्त्री बे प्रकारें छे. एक वैक्रिय ते देवतानी स्त्री,बीजी औदारिक ते मनुष्य तिर्यंचनी स्त्री. ते वली बे प्रकारें छे. एक परणेली, बीजी द्रव्य आपीने ग्रहण करेली. तेने विषे जेवे जांगे व्रत लीये, तेवे जांगे पाले, ते चोथुं व्रत कहीयें. इहां अपरपरिगृहीतादिक जे पांच अतिचार छे, ते वर्जवाथी व्रत पली शके छे. तेनुं फल ते यशकीर्त्ति तथा सौजाग्य अने स्वर्गादिकनां सुख पामवां इत्यादिक जाणवुं. जे प्राणी ए व्रत नथी लेता, अथवा लइने जांजे छे, ते प्राणी दुर्जागीपणुं, नपुंसकपणुं, दरिद्रीपणुं तथा दुर्गतिपणुं पामे. एम सांजली राजपुत्र पण विशेषथी तत्त्व जाणीने साधुपासेंथी चोथुं अणुव्रत जे ब्रह्मचर्य

छे. ते ग्रहण करतो हवो. पछी मुनि पण गरुडनी पेठें उडीने आकाशमा र्गेथी बीजे स्थानकें गया, अने पोताना आत्माने कृतार्थ जाणीने राजपुत्र पण घरे गयो. हवे ते राजकुमर सुंदर होवाथी तेने सुंदर स्त्रीयो प्रार्थना करवा लागी, तेथी तेने अपरिगृहीतादिक दोष आवी उपज्या. तो पण तेने पोताना व्रतने अतिचार लगाड्या नहीं.

एकदा ते सजामां बेगं उतां जातिनुं वर्णन चाल्युं. त्यारें ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य अने शूद्र, ए चार वर्णमां क्षत्री प्रधान छे, एवो वाद सांजली ते राजपुत्रें जातिनो मद कर्यो. अंतसमयें काल करी पहेले देवलोकें देवता थयो, अने तिहांथी च्यवीने आ तहारो पुत्र थयो छे. एणें पाछले नवें शुद्धमनें करी चोथुं व्रत पाल्युं छे. तेथी जो ए सौजागी स्वरूपवान् थयो छे. तो पण ए शीलखंमन करशे नही. ए वात सांजली सुरप्रियने जातिस्मरण उपन्युं पूर्वलाजव सांजरी आव्या. तेवारें पिताने कहेवा लाग्यो जे मने दीक्षा लेवानी शीघ्र आज्ञा आपो. तेवारें यज्ञप्रिय कहेवा लाग्यो के, हे पुत्र! तुं थोडो काल सबूर कर, अवसरें प्रजास गणधर पासें आपणे बेहु साथें दीक्षा लइशुं, ते सांजली जो पण यतिधर्म अंगीकार करवो तेने वल्लन छे, तो पण पितानां वचन अंगीकार करवा माटें धर्मरुचि मुनिपासेंथी गृहस्थनो धर्म सुरप्रियें पडिवज्ज्यो. पछी मुनियें पण ते नगरथी बाहिर विहार कीधो, अने सुरप्रिय पण ग्रहण करेला धर्मने शुद्धबुद्धियें पालवा लाग्यो.

हवे एकसमयें सुरप्रिय उद्यानमां जइ केलीना घरमां सूतो. एवामां किहांकथी एक व्यंतरी आवी. ते तेने जोइ रूपें मोही थकी सुरप्रियनी स्त्रीनुं रूप धारण करी घणा विकारनां वचन बोलती थकी सुरप्रियपासें आवी; पण सुरप्रियें चिंतव्युं जे निश्चेंथी ए लज्जारहित छे, माटें महारी स्त्री नथी. एम विचारी तेने पडती मूकी पोताने घेर जतो रह्यो. पछी व्यंतरीयें जइने पोताना धणी व्यंतरने कह्युं के, ए ब्राह्मणें दुष्टताथी तथा धीगाइथी विषय सुखमाटें मने घणी प्रार्थना करी,पण हुं घणे कष्टें तिहांथी नाशी आवी छुं. ते सांजली व्यंतर क्रोधें धमधमतो रात्रिने वखतें सुर जे समयें प्रियने हणवा माटें ज्यां सुरप्रिय पोतानी स्त्रीसहित सुतेलो छे, ते घरमां गयो. ते समयें सुरप्रिय पण पोतानी स्त्रीने पूछतो हतो के, आज शुं तुं वनमां आवी हती? तेवारें ते कानमां आंगली घालीने कहेवा लागी

के, हे महाराज ! ए अघटतुं शुं बोलो बो ? जेमाटें बीजी पण कुली न स्त्री एकाकी वनमां एकली न जाय. तो हुं श्री प्रजासनी वहू थइने एकली वनमां केम जाउं ? पण तमें महारी आगल साची वात कहो. जे ए वात तमें शा कारणें मनें पूढी ? तेवारें सुरप्रियें व्यंतरीनी चेष्टानुं स वें वृत्तांत कही संजलाव्युं. ते सर्व वात व्यंतर देवतायें सांजलीने मनमां चिंतववा लाग्यो के, डुष्ट चेष्टावाली डुःशीलादिकना घर रूप एवी महारी स्त्रीने धिक्कार बे ! एम विचारी पढी सुरप्रियने पोतानी हकीगत कही. जेथी हुं तुजने हणवा आव्यो हतो. पण हे महासत्त्वना धणी ! हुं तहारे शीलें क रीने तहारा उपर संतुष्ट थयो बुं. माटे तुं वर माग. तेवारें सुरप्रियें कह्युं के, हुं श्रावकनो धर्म पाम्यो बुं. तो बीजी वस्तुने शुं करुं ? तेवारें व्यंतरें क ह्युं के देवतानुं दर्शन निःफल न थाय. माटें कांइ पण माग. तेने सुरप्रियें, कह्युं जे मुजने तमें कहो. जे मारुं हवे केटलुं आयुष्य बे ? तेवारें व्यंत रें कह्युं के तहारुं आयुष्य शेष एक महीनानुं बे. एम कही तेनी प्रशंसा क रतो घरने आंगणे घणी सुवर्णनी वृष्टि करीने व्यंतर स्वस्थानकें गयो. प्र जातें सुरप्रियें जगवंतने पूजी संथारें दीक्षा लइ, एक मासनुं अनशन कर्युं मरण पामीने बारमे देवलोकें उत्कृष्ट बावीश सागरोपमने आयुषें देव ता थयो. तिहांथी चवी उत्कृष्ट व्रत पालवाथी उत्कृष्ट स्थानक पामशे. ए सुरप्रियनुं चरित्र सांजली पंमितना चित्तमां चमत्कार उपजे. माटें सुख, यश, मोक्ष ते रूप वृक्षनुं वन तेना जेवुं ए चोथुं व्रत जे बे तेने हे जव्यजी वो ! तमें पालो. इति चतुर्थव्रते सुरप्रिय दृष्टांतः संपूर्णः ॥

वली पण चोथा व्रत उपर बीजो दृष्टांत कहे बेः–महापुर नगरें जोज राजा राज्य करे बे. ते गाममां लखमण नामें शेठनी नंदा नामें बेटी श्रा विका हती. ते यौवन पामी तेवारें शेठ वरनी चिंता करवा लाग्यो. बेटी यें कह्युं. जे दीवामां काजल न होय, कालाश न होय. बत्ती खूटे नही, जे सदैव स्थिर होय, जेमां तेल पूरवुं पडे नही, अनें तेल खूटे नही, एवो दीवो जेना घरमां सर्वदा होय, तेने हुं परणुं ! बीजाने न परणुं ! ते सांज ली शेठ वरनी चिंता करतो रहे बे. हवे ते वात नागील नामना जुगारीयें सांजलीने विरूपाक्ष नामें यक्षने एकवीश उपवासें आराधी संतुष्ट करीने ते यक्षनी पासें नागीलें पोताने घरें तेवो दीवो कराव्यो. तिहां शेठें तेने घे

र तेवो दीवो देखीनें ते दरिद्री एवा नागिल जुगारीने पोतानी कन्या परणा वी दीधी. पढी जुगारी जेम जेम जूवटे रमी द्रव्य हारतो जाय, तेम तेम शेठ,जमाइने द्रव्य पूरतो जाय. जुवटे द्रव्य हारी, परस्त्रीगमन करीने जे वारें घरे आवे, तेवारें नंदा तेनो विनय करे.

एक वार नागीलें चिंतव्युं जे, निश्चें हुं एने वल्लन नथी. जेमाटें एवडो अपराध हुं करुं बुं, तो पण ए म्हारी उपर क्रोध करती नथी. एम विचारी एकदा गुरुने पूछ्युं के माहाराज! म्हारी स्त्री म्हारी उपर स्नेह केम राखती नथी? तेवारें गुरुयें कह्युं के ए स्त्रीयें विवेकी वरने परणवाने माटें दीवारूप मिष करी विवेकीजन शोधवो धार्यो हतो, अने तें तो यत्नना बलथी तेहवो दीवो करीनें एने परणी लीधी, माटें तुं निर्विवेकी बो. तेथी तहारा उपर प्रीति बांधती नथी. ते सांजली नागीलें विवेक शीखवा माटें स्वदारासंतोष व्रत आदर्युं. घर आवी स्नान करे, देव पूजा करे, सुपात्रने दानादिक देइ विवेकें जोजन करे. ते देखी स्त्री हर्षवंत थइ थकी कहेवा लागी. जे स्वा मी! आज अमारुं महोटुं जाग्य, जे तमारामांहे विवेक आव्यो में दीठो! तेवारें जर्त्तारें गुरुनुं वृत्तांत कह्युं. पढी बेहुने मांहोमांहे स्नेह वधतां व धतां सुखमां काल निर्गमन थवा लाग्यो.

एकदा नंदा पोताने पीयर गइ बे, अने नागील पीटणी उपर सूतो थ को चंद्रमा सहामुं जूए बे. तेवामां एक विद्याधरी नागीलने रूपें मोही थ की कामाग्नियें संतप्त थकी तिहां आवी नागीलने कहेवा लागी. जे हुं ता हारे शरणें आवी बुं. हुं चंद्रनामा विद्याधरराजानी बेटी बुं. अने हंसराज विद्याधरनी जार्या बुं. लीलावती म्हारुं नाम बे. माटें तुं मुझने अंगीका रं कर. नहीं तो हुं मरीने तहारी उपर स्त्रीहत्यानुं पाप नाखीश. एम क हीने जेटलाकमां पगे लागे बे, तेटलामां नागीलें पोताना पग पाढा कीधा. तेथी विद्याधरीयें रीष करीने तप्त लोहनो गोलो उपाडी नागील उपर नाख्यो. तेवारें नागीलें नवकारनुं स्मरण कर्युं. तेथी गोलो दूर जइ पड्यो. पढी वली ते विद्याधरी नागीलनी स्त्री नंदानुं रूप करी स्नेहवचनें तिहां बोलती आवी. तेने जोइ नागीलें संकेत कर्यो के, जो तुं नंदा होइश, तो म्हारी शय्यायें आवी शकीश! नहीं तो तुं म्हारा धर्मने प्रजावें इहांज थंजाइ जइश! एम कहेतांज ते थंजाइ गइ. नागीलें तेनुं स्वरूप जाणी शीलजंगने जयें वैराग्य

पामी लोच कीधो. तेवारें शासनदेवतायें आवी वेष आप्यो, पछी दीवा आगल आवी कह्युं के अहो यक्ष! हवे तुं तहारे स्थानकें जा. तेवारें यक्ष बोल्यो के हुं तहारी सेवा, जावजीव सूधी जिहां तुं विचरीश, तिहां करीश. महारे दीवाने तेजें उजेही थाशे नही. पछी नागीलें नंदा सहित गुरुपासें जइने दीक्षा लीधी. ते दीवाने तेजें रात्रि दिवस नणतां माहा जाण थयां थकां तिहांथी मरण पामीने बेहु जण हरिवर्ष क्षेत्रें युगलिया पणे जइ उपन्यां. केम के दीक्षा लीधा पहेलां युगलीयानुं आउखुं बांध्युं हतुं, पछी तिहांथकी चवी देवता थशे. तिहांथी महाविदेहक्षेत्रें मनुष्यपणुं पामीने मोक्ष पामशे. ए दृष्टांत सांजली चोथुं व्रत शुद्ध पालवुं ॥ इति चतुर्थव्रतं समाप्तम्॥

८ पांचमुं परिग्रहपरिमाणव्रत नवविध. खित्त, घर, हट्ट, वाडिय, कुविय, धण, धन्न, हिरन्न, सुवन्न, एय परिमाण डुप्पय चउप्पयमिय, नवविह परिग्गह वयं तु ॥ ए पांचमा परिग्रहपरिमाणव्रततणा पांच अतिचार शोधुं. खित्तवत्थुप्पमाणाइक्कमे, हिरन्नसुवन्नप्पमाणाइक्कमे, धणधन्नप्पमाणाइक्कमे, डुप्पयचउप्पयप्पमाणाइक्कमे, कुवियप्पमाणाइक्कमे. क्षेत्र, वास्तु, हिरन्न, सुवन्न, धन, धान्य, द्विपद, चतुष्पद, राछ पीछ तणो प्रमाणातिक्रम कीधो होय, अथवा परिग्रहतणे कारणें मोटा आरंन कउमर्द मांम्या होय, आहट्ट, दोहट्ट, धस्यो होय, आपणो परिग्रह पुत्र पौत्रादिकतणो करी आपणे काजें अणाव्यो होय, परिग्रह परिमाण लीधुं न होय, लेइने पढिउं न होय, पढीने वीसार्युं होय, वीसारीने संनार्युं न होय॥ अनेरुं ए पांचमा परिग्रह परिमाण व्रतविषे पक्षदिवसमांहि० ॥ एटले पांच अणुव्रत हूआं, हवे त्रण गुणव्रत कहे छे.

अर्थः–हवे परिग्रहनुं परिमाण करवुं, तद्रूप पंचम अणुव्रत छे, ते कहे छे. ए परिग्रहपरिमाणव्रत नवविध एटले नव प्रकारें छे. तेनां नाम कहे छे.

प्रथम खित्त एटले क्षेत्रपरिग्रहपरिमाणव्रत, तिहां क्षेत्र ते खुल्लीभूमि अ थवा वाववानी भूमि तथा बगीचो करवानी जगा प्रमुख जाणवी. तथा बीजो घरपरिग्रह ते एक भूमिथी मांमीने सात भूमिनी हवेली तथा हा ट वखार प्रमुख. अने वाडिय एटले वाडी बाग बंगला प्रमुख सर्व घर परिग्रहमां जाणवां; तथा त्रीजो कुविय एटले कुप्य परिग्रह ते सोनुं तथा रूपुं मूकीने बाकीनी सर्व धातु जाणवी. एटले त्रांबुं, पीतल, कांसुं, सी सुं, लोहोढुं, कलइ, बंग, भरत, इत्यादिक धातुनां वासण. थाली वाट का कलशिया प्रमुख तथा खाटला पाटला प्रमुख वस्त्रादिक घरवखरी जा णवी. तथा चोथो (धण के०) धन परिग्रह ते चार प्रकारनो छे, तेमां एक गणिम ते सोपारी,त्रोपा नालियर प्रमुख जे गण्यां वेचाय ते जाणवां. तथा बीजो धरिम ते गोल, घृत, करियाणां प्रमुख जे तोल्यां वेचाय ते जा णवां. त्रीजो परिच्छेद्य ते सोनुं रूपुं,जवाहीर,वस्त्र नाणां प्रमुख,जे परीक्षाथी वेचाय ते जाणवां,चोथो मविय धन ते डुग्धादिक मापथी वेचाय ते जाणवां. एवी रीतें ए धन परिग्रह चार प्रकारें जाणवो. तथा पांचमो धन्न एटले धा न्यपरिग्रह ते चोवीश प्रकारनुं धान्य जाणवुं. छठो हिरण्ण परिग्रह ते रूपुं काचुं एटले शिक्का विनानुं रूपुं जाणवुं, ते रुप्पपरिग्रह. तथा सातमो सु वण्णपरिग्रह ते शिक्का विनानुं सोनुं जाणवुं. तथा आठमो डुप्पयपरिग्रह ते मूल्य आपीने वेचातां लीधेलां एवां दास दासी प्रमुख द्विपद मनुष्य जा णवां. तथा नवमो चउप्पय परिग्रह, ते गाय, भेंष, हाथी, घोडा, बलद, बकरी प्रमुख चउपगा जीव जाणवा. एवी रीतें नवसंख्यायें करी (मिय के०) मित एटले प्रमाण करेलुं नवविहपरिग्गह एटले नव प्रकारना परि ग्रह रूप (वयंतु के०) व्रतं तु एटले व्रत ते पोतानी इच्छा प्रमाणें परिमाण करीने लीधेलुं छे, तेमां अप्रशस्त भाव हुए छते जे अतिचार लगाड्या होय, तेने पडिक्कमुं, शोधुं, शुद्ध करुं. ते पांच अतिचारनां नाम कहे छे.

एक क्षेत्रवास्तुपरिमाणातिक्रम अतिचार, बीजो हिरण्यसुवर्णपरिमाणा तिक्रम अतिचार, त्रीजो धनधान्यपरिमाणातिक्रम अतिचार, चोथो द्विपद चतुष्पदपरिमाणातिक्रम अतिचार, अने पांचमो कुप्यपरिमाणातिक्रम अ तिचार जाणवो. हवे एनो सामान्यथी अर्थ कहे छे.

इहां क्षेत्र तथा वास्तु ते घर, मेडी, टांकां, भोंयरा प्रमुख जाणवां. तथा

हिरण्य ते रूपुं अने सुवर्ण ते सोनुं अने धन तथा सर्व प्रकारनुं धान्य, ते मज द्विपद ते दास दासी प्रमुख, अने चतुष्पद ते गाय भेंष प्रमुख तथा घरनां राच पीठ ते धातुना न्हानां महोटां वासण तथा खाट पाट अने वस्त्रादिक सर्व घरवखरी जाणवी. तेनुं परिमाण करेलुं छे. जे अमुक चीज महारे आटली राखवी. पछी जेवारें तेथी उपरांत थती देखे एटले जेम के वास्तु प्रमाणमां घर वधारे थतां देखे, तेवारें बे घरनी वचमां दिवाल फोडावीने एक करी नाखे, अने मनमां विचारे जे, में जे प्रमाण राख्युं छे, तेतो अखंड छे! गणती बरोबर छे! घर महोटुं करवामां शो दोष छे! एम करे, तेवारें ते परिमाणने अतिक्रम्युं कहीयें. ए रीतें पूर्वोक्त सर्व नवविध परिग्रहमांहेला कोइ पण परिग्रहनो परिमाणातिक्रम कीधो होय.

अथवा परिग्रह मेलववाने अर्थे महोटा आरंभ कठमर्द एटले लाकडा वगेरेने कापवा प्रमुख आरंभ मांड्या होय तथा परिग्रह मेलववा माटें महोटा आहट्ट एटले संकल्प अने दोहट्ट एटले विकल्प धस्या होय तथा जेवारें परिमाण करेला परिग्रहथी वधारें थतुं देखे तेवारें लोभ संज्ञाथी पोतानो परिग्रह होय तें मनमां मनसुबा करीने पुत्रना नामनो अथवा पौत्रादिकना नामनो जमे करी राखे, अने मनमां विचारे जे ए पण महोटा थया छे! एने पण आपवुं जोइशें! एवी कल्पना करी पुत्र पौत्रादिकने नामें जमे करीने पोताने कार्यें वापरवामां आव्यो होय.

तथा श्रावक छतां परिग्रहनुं परिमाण लीधुंज न होय, लइने पढ्युं न होय, पढीने वीसारी मूक्युं होय, ते वीसरेलुं पाछुं संभार्युंज न होय, अनेरुं बीजुं पण जे कांइ सूक्ष्मबादर अतिचार रूप दुष्कृत पक्खदिवसमांहे हुउं होय, ते सर्व हुं मन वचन कायायें करी मिथ्या करुं छुं.

इहां दृष्टांत तरीकें क्षेमादित्य अने धरणनी कथा कहे छेः—महाराष्ट्र देशमां अरिष्टपुर शहेरनो त्रिलोचन नामें राजा ते पृथ्वीमां विख्यात छे. तेनो क्षेमादित्य नामें प्रधान छे. तेनी वसुंधरानामें स्त्री छे. तेने धरण नामें पुत्र थयो. एकदा क्षेमादित्य पोताना पुत्र धरणने खोलामां लइने घरने आंगणे बेठो छे, तिहां भीम नामें ऋषि अहार लेवाने पधास्या. तेने नमस्कार करीने क्षेमादित्यें पूछ्युं. माहाराज! तमें शा वास्ते घर छांडीने दीक्षा लीधी? तेवारें मुनियें कह्युं. एनो जवाब तमोने महारा गुरु वनमां आ

व्या छे, ते कहेशे. एम कही जात पाणी लइने जीम ऋषि तेमना घेरथी चालता थया. पाछलथी प्रधान पण वनमां जइने तिहां दक्षिण मथुराना पांच राजा ते राज्य संपत्ति मूकीने पांचे आचार्य थया छे. ते जाणीयें मूर्त्तिमा न् पांच आचारज होय नहिं? एवा गुरुने जक्तियें करी वांदीने विन यें करी हाथ जोडी पांचमां वडेरा गुरुने पूछवा लाग्यो के, हे महाराज! तमें एवी राज्य संपदानो त्याग करीने शा माटें दीक्षा लीधी? तेवारें धर्मा चार्य बोल्या के, द्वीपायन ऋषियें जेवारें द्वारिका नगरी बाली जस्म करी, तेवारें राम अने कृष्ण,ए बे जण पांडुमथुरायें जातां वचमां कोशंबी नगरीनी अटवीमां जराकुमारें कृष्णने हण्या. तेवारें रामें दीक्षा लीधी. एवी रीतें या दवोनो विध्वंस थयो जाणी अमें तप आदर्युं. जेमाटें वीजलीना संपात स रखी लक्ष्मीने धिक्कार हो. जे क्षण एकमां विणसी जाय छे, एवुं प्रत्यक्ष दे खीने संसारथी वैराग्य पामीने अमें दीक्षा लीधी.

माटें हे क्षेमादित्य! तुं पण द्रव्यने विषे घणी आस्था राखी आसक्ति पूर्वक प्रयत्न म कर. ते सांजली क्षेमादित्य वली पण गुरुने नमीने विनति करवा लाग्यो के, मुजने परिग्रहपरिमाणव्रत, प्रसन्न थइने आपो. तेवारें गुरु बोल्या के प्रथम तुं ए व्रतनुं स्वरूप विस्तार सहित सांजल.

जे माटें, धनधान्यादिक नव प्रकारें परिग्रह कह्यो छे. तेनुं इछा माफक मन वचन कायायें करी न करुं, न करावुं, एवी रीतें प्रमाण करवुं. एनुं फल ए छे के देवता तथा मनुष्य संबंधि सर्व लक्ष्मी पामीयें. ते धन धान्या दिकना परिमाणने अतिक्रमवाना लोजथी उत्पन्न थयेला पांच दोष छे, ते कपट रहित पुण्य उपार्जवा माटें वर्जवा, अने जे प्राणी ए व्रत नथी लेता, तथा लइने जांजे छे, ते प्राणीने जवजवनेविषे दरिद्रपणुं तथा दा सपणुं प्राप्त थाय छे. एवां आचार्यनां वचन सांजली क्षेमादित्यें समकेत पूर्वक सम्यक्प्रकारें पांचमुं अणुव्रत लीधुं. पछी मुनिने नमीने पोताने घेर गयो. अने आचार्य पण विहार करी श्रीशत्रुंजयने विषे मोक्ष पाम्या.

हवे धरण यौवन अवस्था पाम्यो, तेवारें घणे आदरें करी रात्रिदिवस राजसेवा प्रमुख उपाय करीने द्रव्य कमाववा लाग्यो. तेवारें तेना पितायें कह्युं. के हे पुत्र! तुं अनर्थनुं घर एवुं आ द्रव्य छे,तेने कमाववा माटें फो कट शा वास्ते खेद करे छे? तेवारें धरण बोल्यो के, निर्द्रव्य पुरुष कोइ प

ण कामनो नही, जेमाटें द्रव्य पेदा न करे, ते, पुरुष नामें पण यथार्थ कहेवाय नही. एवुं पुत्रनुं अयोग्य बोलवुं सांभलीमे पितायें तेने उवेख्यो, तेवारें वली धरण द्रव्य कमाववाना कर्ममां विशेष प्रवृत्त्यो.

एकदा नागरिक लोको राजानी पासें आवीने विनति करवा लाग्यां के, एक सिंह अटवीमांथी नगरीपासेंनी पांच योजनप्रमाण भूमिमां माणसोने हणे छे. तेवारें राजायें सर्व सभाना लोकोनी उपर नजर नाखीने जोयुं तो सर्वलोक उत्साहरहित नीचुं माथुं करी धरतीयें जोइ रह्यां दीठा, एवामां धरणें आवी राजाने कह्युं के, हे देव! मुजने आज्ञा आपो. राजायें तेने पोताने हाथे बीडुं आप्युं. ते लेइ प्रसन्न थइ बीजा केटला एक पुरुष सहित वनमां जइ सिंहने देखी कठिण वचनें तेने हांकवा लाग्यो, तेवारें सिंह पण सज्ज थइ फाल भरवा मंमयो, तेने देखीने धरणें बाणें करी तेनी बे आंख वींधी. तो पण ते सिंह सन्मुख आववा लाग्यो, तेने बाणनी श्रेणें करी धरणें हण्यो. तेवारें लोक चमत्कार पामी जयजय शब्द करवा लाग्या. पछी ते लोकोयें राजापासें जइ सर्व वृत्तांत कह्युं. राजायें संतोष पामीने धरणने सत्कार दीधो अने धरणना पिताने रूपुं, सुवर्ण,गाम, नगर, प्रमुख आपवा मांमयां, पण मंत्रीयें परिग्रहपरिमाण व्रत लीधेलुं हतुं माटें कांइ पण लीधुं नही,एमज घरे आव्यो. तेवारें मंदबुद्धिवालो धरणें कह्युं के, तें गाम नगरादिक केम न लीधां? माटें हुं जाणुं छुं के तुं कदाग्रही छो. प्रधानें कह्युं, के हे वत्स! में जाण्युं जे रखेने म्हारो व्रतभंग थाय! तेना भयथी न लीधां. तेवारें धरण क्रोधथी पाछां निष्ठुर वचन बोल्यो के, तम्हारी श्रद्धाना मूढपणाथी अमें नित्य बली रह्या छैयें. हे जरठ! मूर्ख! शुं तुं नथी जाणतो? यमना मुखमां पेशीने में राजाने संतोष्यो छे! ते सर्व तें निःफल करी आप्युं! तो हवे ताहाराथी सयुं. म्हारे तम्हारी सार्थे एकठुं रहेवुं तेने हुं सदा अनर्थकारीज समजुं छुं. एम कही पोतानो भाग वेंची लइने धरण बापथी जूदो थयो.

हवे एकदा राजायें जे पोतें पोताने म्होटो शूर मानें छे,एवा धरणने वाहाणें करी जलमार्गें चौडेश नामें राजानी पासें घणुं भेटणुं आपीने मोकल्यो. ते जाणीने पुत्रना स्नेहथी ते प्रत्यें हेमादित्य कहेवा लाग्यो के, हे पुत्र! जेमां प्राण राखवानो संदेह छे, एवा समुद्रमां शा माटें तुं तहा

रा आत्माने नाखे छे? जन्मथी मांकी घणो क्लेश करी घणुं द्रव्य मेलव्युं ते कोइ नवांतरने विषे साथें आवे नही. ते सर्व द्रव्य तो स्वजन कुटुंबादिकने आधीन रहे छे. पण धन कमावीने तेथी उपार्जेलां पाप ते वली दुर्गतिमां जइ निश्चें पोताने नोगववां पडे छे. एवुं बापनुं बोलवुं सांनली धरण क्रोधें करी उठीने पिताने कहेवा लाग्यो के, हुं तहाराथी जुदो थयो बुं, तो पण हजी तुं महारो छेडो कां नथी मूकतो! एम कही घणा कर्मनो धणी एवो धरण ते घणो लोन धरतो जहाजमां बेसीने अनुक्रमें चौडेश नगरें जइ पहोतो. तिहां ते नगरना धणीने नेटणुं आपी नम्यो, वली तेणें पण नेटणुं आपी सत्कार दीधो. पछी त्यां व्यापार करी तेमज ते पाछो वल्यो. मार्गमां चोरोयें वहाणने रुंध्युं. तिहां युद्ध करतां क्षणेकमां धरणनुं वहाण नांग्युं. धन सर्व समुद्रमां पड्युं. पछी ते धरण पोतें एक पाटियुं पामीने सात दिवसें घणे कष्टें समुद्रनो पार पामीने महोटी अटवीमां आव्यो तिहां फलादिकनो आहार करी अरहो परहो नमतां तिहां बोकडाने शिंगडे करी धरतीने खणतां एवा एक पुरुषने दीठो. तेनी पासें जइने नक्तियें करी तेने रीझव्यो. ते धातुर्वादी तेने कहेवा लाग्यो के, हुं तहारुं दारिद्र्य अलगुं करीश! पछी ते बे जण धातुना पाषाणने धमीने तिहां औषधिनो रस प्रक्षेपीने नेत्र मींच्या वगर आखी रात्रि तेने जोतां छतां बे जणें सुवर्ण कीधुं. वली पण बीजुं सुवर्ण करवा लाग्या तेवारें क्षेत्रदेवता रीषें नराणो थको तिहां आवीने पहेलुं जे सोनुं करेलुं हतुं ते पण तेणें उपाली लीधुं, अने बेहु जणने उपाडी वेगला एक बीजाथी जुदा जुदा नाखी दीधा. हवे धरण विषाद पाम्यो छतो चिंतववा लाग्यो जें धिक्कार छे मुझ अधन्यने!! के हुं जे जे आरंन करुं बुं, ते ते सर्व निःफल थाय छे, अने साहामो अनर्थ पामुं बुं. एम शोचना करे छे. एवामां तिहां एक देवता आवीने कहेवा लाग्यो के, हे धरण! पाछला नवनुं तहारा दारिद्रनुं कारण हुं तुझने कहुं बुं. ते सांनल.

मिथिला नगरीयें तुं अने हुं आपणें बे नाइ वणिकना पुत्र हता, तेघणा माह्या तथा मांहोमांहे घणो स्नेह धरता हता. तिहां जे जे कर्म आपणें करता, ते निःफल थतां. तेवारें तिहां आपणे निर्धन माटें लोकोमां आकडाना तूलनी पेरें हलका थया. तेवारें अपमान, दारिद्र, दुःख, सं

ताप,तेणें करी तप्या थका, पोताना घरथी नीकळीने वनमां ज्ञमवा लाग्या. तिहां एक अद्भुत मुनिनें देखी जक्ते करी तेने नमीने स्वस्थ मनें करी पोताना डुःखनुं कारण पूठवा लाग्या. तेवारें मुनि बोल्या के लोज जे ठे,ते सर्व डुःख नी खाणं ठे. माटें ते लोजने मूकीने सुखनुं कारण जे निर्ग्रंथकी संतोष ठे, तेने तमें धारण करो. एम सांजळी पांचमुं अणुव्रत अंगीकार करी शुद्ध धर्म पाळीने हुं सौधर्म देवलोकें देवता थयो, अने तुं तो लोजमां पड्यो थको पांचमा अणुव्रतने घणा प्रकारें विराधी तिहांथी मरण पामी केटलोक काळ तिर्यंचमां ज्रमण करी हमणां आ जवमां तुं धरण थयो ठो. ते सांजळी धरण पण जातिस्मरण ज्ञान पाम्यो. पाठलो जव दीठो. सारो जाव उपन्यो, तेवारें घणो लोज मूकीने देशविरतिपणुं ग्रहण करतो हवो, वळी देवता कहे ठे के, आ सर्व वात में अवधिज्ञानें जाणीनें तुऊने हमणां प्रतिबोधवा माटें हुं इहां आव्यो बुं, तेमाटें धर्मने विषे हवे तुं प्रमाद करीश मां. एम कही संतोष पामी ते देवता स्वर्गे गयो. तेम धरण पण संतोष सहित थको अनुक्रमें चालतो पोताने नगर आव्यो. तेने राजायें आदर मान दीधुं,पिता प्रमुखें पण स्तव्यो. धर्मनो उद्यम करवा संबंधि पितायें वात पूठी, ते वारें पाठला जव प्रमुखनी सर्व वात कही संजळावी. ते सांजळी पितायें सर्व धन तेने आपी पोतें दीक्षा लीधी. ते कर्मनो क्षय करी श्रीशत्रुंजयने विषे मोक्षें पहोतो. हवे धरण पण वळी पितानुं ड्व्य मळ्युं जाणी लाज थी लोज वृद्धि पामे, एवी लोक वायका प्रमाणें वळी व्रतने विराधतो अंतें रोगें ग्रह्यो थको मरण पामी संसारमां जमतो हवो. एम घणा परिग्रहनुं फळ ते अतिकठन ठे. माटें हे जव्यो! जो तुमने अनंतसुखरूप मोक्षनी वांठा होय, तो परिग्रहनुं परिमाण करी राखो. ए पांचमा अणुव्रतने विषे क्षेमादित्य अने धरणनी कथा कही.

वळी बीजी कथा कहे ठेः— मगधदेशें सुघोष नामें गाममां कूचीकर्ण शेठ गामनो अधिकारी हतो. तेने गायो राखवानी घणी खांत हती. जेम के काळी, धोळी, नीली, पीळी, राती, मांजरी प्रमुख गायो, तेनां जुदां जुदां गोकुल करी जुदा जुदा गोवाळियाने सोंप्यां, दिवसें दिवसें गोकुल वधारे. एकदा तृप्ति थाय त्यां सुधी डुध दहीं यथेष्ट जमीने अजीर्णे गोकुलना आर्त

रौद्रध्यानें करी मरण पामी तिर्यंचगतिमां उपन्यो, एम ए कूचीकर्ण शेठें घणां गोकुल कीधां, पण तृप्त थयो नहिं.

तथा अचलपुरें तिलकशेठ रहेता हता ते अडद, शाल, तिल, मग, चणा प्रमुख धान्य सवाइयां दोढां करी एकठां मेलवे. एक वार डुर्भिक्ष थयुं, तेवारें घणो लाभ थयो. वली जेवारें सुकाल थयो, तेवारें घणे शस्ते नावें धान्य लइने गाम नगरें कोठार भर्या. क्रोडोगमें जीवोनो विनाश कर्यो. वली एक वखत निमित्तिये आगलथी कह्युं के डुकाल पडशे? तेवारें शेठें पोताना घरना दागीना तथा करियाणां वगेरे सघली चीज वेचीने तेनां नाणां कर्यां. तथा बीजुं व्याजें द्रव्य लइने धान्यनो संग्रह कीधो, पण प्रजाने भाग्यें डुःकाल पड्यो नही, श्रीकार वर्षाद थयो, तेने लीधे कोठार फूट्या, धान्य तणाइने विनाश पाम्यां, ते देखी तिलकशेठनुं हृदय फूटी गयुं, तेथी मरीने नरकें गयो. एम तिलकशेठ घणा धान्यना संग्रहें पण तृप्त न थयो.

तथा पाडलीपुर नगरें नंदराजा तेणें अनेक आकरा कर करी लोकने दंडी, सुवर्ण एकठुं करी, भंडार तथा कूवा भर्या, सोनानी डुंगरी करी अनेक राजा लोकोयें वार्यो,तो पण रह्यो नही. एकवार तेना शरीरें माहारोग उपन्यो, तेणे करी तेने आक्रंद करतो सांभली लोक सर्व हर्ष पामवा लाग्यां. एम नंदराजा सुवर्णें अतृप्तो थको मरण पामी नरकें गयो. घणाकाल पर्यंत संसारमां भमशे. ए नंदराजा घणे सुवर्णें पण अतृप्तोज रह्यो, पण तृप्ति पाम्यो नही. माटें इछा अपरिमित छे,तेथी संतोष राखवो, तेज श्रेय छे. ए पांचमा व्रत उपर कथा कही. एटले पांच अणुव्रत कह्यां.

हवे त्रण गुणव्रत कहे छे.

६ छठुं दिशिव्रत, त्रिविधें जाणवुं. उड्ढदिसिवए, अहोदिसिवए, तिरियदिसिवए॥ ए छठा दिशिव्रततणा पांच अतिचार शोधुं,उड्ढदिसिप्पमाणाइक्कमे, अहोदिसिप्पमाणाइक्कमे, तिरियदिसिप्पमाणाइक्कमे, खित्तवुड्ढी,सयंतरध्दा,ऊर्ध्वदिशि, अधोदिशि, तिर्यग्दिशि–विस्मृत करी सहसात्कारें गमनप्रमाणतणो अतिक्रम कीधो होय, क्षेत्रवृद्धि-एक पखा भू

मिका उंची करी बीजी परवां वधारी होय, स्मृति अंतर्द्धा न-दिशिव्रततणुं प्रमाण करी वीसार्युं होय, वड सफर कीधा होय, जोजलगें अतिविषम पंथ वाह्या होय॥ अनेरुं ए ब्ठा०

अर्थः—हवे, ब्ठुं दिक्परिमाण नामें प्रथम गुणव्रत कहे ठे. ब्ठुं दिशि व्रत ते त्रिविधें. एटले त्रण प्रकारें जाणवुं. एक उढदिसिवय एटले ऊर्ध्व दिशि व्रत, बीजुं अहोदिसिवय एटले अधोदिशिव्रत अने त्रीजुं तिरियदिसि वय एटले तीर्ब्छिदिशि व्रत. एम उंची, नीची अने तीर्ब्छी, ए त्रणे दिशियें जावा आववानो नियम करे, जे आ अमुकदिशियें एटला योजन अथ वा गाउ पर्यंत मह्वारे जावुं आववुं, उपरांत जवुं आववुं नही. तेमां अना जोग पणें अथवा. प्रमादने प्रसंगें जे अतिचार दोष लागे, ते पांच प्रकारें ठे. तेनां नाम कहे ठे.

प्रथम उढदिसिप्पमाणाइक्कमे एटले ऊर्ध्वदिशिनुं शो योजननुं परिमाण कीधुं ठे, तेने अनाजोगादिकें अतिक्रमीने वधारे पंथ करी आगल जाय तो ऊर्ध्वदिशिप्रमाणातिक्रम अतिचार लागे. एमज बीजा अहोदिसि ते अधोदिशि एटले नीचलीदिशिना प्रमाणने अतिक्रम्युं होय, तेमज त्रीजा तिरियदिशिना प्रमाण करेला योजनने अतिक्रम्यो होय, चोथो खित्तवुढि एटले क्षेत्रवृद्धि नामा अतिचार जाणवो, अने पांचमो सयंतरद्धा एटले स्मृत्यंतर्द्धा ते कोइदिशियें सो योजननुं परिमाण करेलुं होय, ते दिशियें ज तीवेलायें विचारे, जे में शो योजन परिमाण कीधुं ठे? के पच्चाश योजन पर्यंत जवानुं प्रमाण कीधुं ठे? एवी रीतें विस्मृतिथी संदेह उपजे, स्पष्ट न सांजरे, ते पांचमो स्मृति अंतर्द्धा नामा अतिचार जाणवो. स्मृ त्यंतर्द्धा स्मृतेर्ज्रंश इत्यर्थः इहां विस्मृतथी जो शतसंख्या परिमाण करेला योजनथी पच्चाश योजन उपरांत जाय, तो अतिचार लागे, अने शो यो जन उपरांत जाय, तो व्रतजंग थाय.

इहां ऊर्ध्वदिशि, अधोदिशि अने तीर्ब्छीदिशि, ते चारे दिशि अने विदिशि जाणवी. तेने विषे जावानुं जेटला गाउ प्रमुखनुं परिमाण कीधेलुं ठे, तेमां विस्मृतियें करी एटले वीसरी जवाथी सहसात्कार पणे गमन एटले जावुं तेना परिमाणनो अतिक्रम कीधो होय, ए त्रणदिशि आश्रयी त्रण

अतिचार जाणवा. अने चोथो क्षेत्रवृद्धि अतिचार, ते पूर्वदिशियें शो योजन जवानुं परिमाण करेलुं छे, अने तिहां जेवारें दोढशो योजन सुधी जावानुं काम पडे, तेवारें बीजी दक्षिणदिशिना पच्चास योजन तेनी साथें नेलवी लीये, अने मनमां विचारे जे पूर्वदिशियें पच्चास योजन वधार्या तो दक्षिणदिशिना पच्चास योजन उंडा करी नाख्या. एवा कुविकल्प करी एक पखां एटले एक पडखानी दिशिनी नूमिना योजन उंडा करीनें बीजा पडखानी नूमिना योजनमां वधारो करे, तो अतिचार लागे,तथा पांचमो स्मृतिअंतर्द्धी ते दिशिव्रतनुं परिमाण करी पछी वीसारी मूके जे अमुकदिशि यें पच्चास योजन जवानुं परिमाण कर्युं, छे किंवा सो योजननुं कर्युं छे?

तथा वडीसफर एटले जलने मार्गे अथवा स्थलने मार्गे महोटी महोटी सफर करी होय, तथा लोनें करी अत्यंत आकरा विषम पंथ वाह्या होय, एटले आकरे पंथें चाल्या होइयें, जेम के पांच योजन जवानी शक्ति होय तो दश योजन पंथ चाले, अथवा कांटा कांकरा वाली जमीनमां चाले, अथवा उंची नीची आडी अवली जमीन पाहाड प्रमुखनी के ज्यां रस्ता पच्या न होय, एवी जमीनमां जोसथी चाले, इत्यादिक सर्व विषम पंथ कहेवाय. अनेरुं ए छठा दिशिव्रतविषे० ॥

इहां बे नाइनी कथा कहे छेः—कलिंग देशने विषे माकंदी नगरीयें शीतपाल नामें राजा छे. तेनी नानुमती नामें स्त्री छे, अने तेनो देवपाल नामें पुत्र छे, ते नगरीमां विष्णु नामें शेठना एक शिवनूति अने बीजो स्कंद एवा बे पुत्र श्रावककुलमां उत्पन्न थयेला छे, ते बेहु देवपालना मित्र छे. मांहोमांहे घणी प्रीतिवाला छे. ते बे जण राजपुत्र सहित रात्रिदिवस मांहोमांहे काव्यादिकना प्रश्नोत्तर पूछवा प्रमुखें करी दिवस निर्गमन करे छे.

एकदा एकांतें ते राजपुत्रनें शिवनूतियें कह्युं के, ज्ञान विना विनोद करवा, ते शा कामना? आपणे एमज जन्म हारी जाइयें छैयें. जेम समुद्रना मध्य नागमां रुबी गयेलुं चिंतामणि रत्न, पामवुं दुर्लन छे, तेम जे पुरुष आ मनुष्यदेह पामी पुण्य नथी करता,तेमने पाछुं मनुष्यपणुं पामवुं दोहिलुं छे. तेवारें राजपुत्रें कह्युं के धर्म ते कोने सम्मत छे,अने धर्म ते कयो कहेवाय? एवो संदेह वालो धर्म करवो, ते करतां तो आवां संदेह रहित संसारनां सुख जे प्रत्यक्ष नोगवियें छैयें, तेज ठीक छे, तेने कोण मूकी दीये? ते माटें हे मित्र!

तुं फरी कोइ पण वखत मनें एवुं कहीश मां. जे तुं धर्माचरण कर. आ वात सां भळी मौन करी मनमां विषाद धरीने शेठनो पुत्र पोताने घेर जतो रह्यो. तदनंतर ते श्रेष्ठिपुत्र गया पछी राजकुमार पण तेने डुर्वचनना कहेवाना पश्चा त्तापथी तेविना क्यांय शाता पाम्यो नही. तेथी फरी पाछो शेठना पुत्रने तेडा वीने कहेवा लाग्यो के, हे मित्र! में तारो तिरस्कार कर्यो, तेथी ते म्हारो अपराध तुं खमजे पण तुं आवो ज्ञानी छतां तारे मुजने उखेववो, ए कांइ युक्त नही. एम कही तेनो रोषापनोद करी जमाडीने मांहोमांहे वातो करवा लाग्या, एकदिवसने प्रस्तावें बेहुजणने वात चालतां चालतां वैश्यपुत्रने राजकुमारें कांइक प्रश्न कर्यो, ते प्रश्न सांभळी तेनो उत्तर न देवायो तेथी, तथा राज कुमारने जिनधर्म प्राप्त करम्ववो एम धारी कांइक मीष करी त्यांथी श्रेष्ठिपुत्र चाल्यो अने तुरत सिद्धसेननामा गुरुनी पासें आव्यो, आवीने सिद्धसेन गुरुने प्रणाम करी कहेवा लाग्यो के महाराज! हुं जे माकंदी नगरीमां रहुं छुं, ते नगरीनो एकराजकुमार मारो मित्र छे, ते बीजी सर्व लौकिक वातें तो हुशीयार छे. पण धर्मबोध जराय नथी, माटें ते लौकिक प्रश्नोत्तर करतां धर्मबोध पामे, तेवो कांइ उपाय होय, तो मने कहो, के जेणें करी ते बोध पामी बहुलसंसारी मटे. ते वात सांभळीने गुरुयें तेने प्रश्नो कह्या, के भाई! आ प्रश्नो तारे राज कुमारने पूछवा, तेथी ते छेवटना प्रश्नना उत्तरमां जाति स्मरणज्ञान पामी चा रित्र ग्रहण करी मोक्ष पामशे. तुं एम नहिं जाण जे के ते राजकुमर उत्तर नहि आपी शके! कारण आ प्रश्नो साधारण छे अनें ए राजकुमर बुद्धिमान् छे, तेथी ते में कहेला सर्वप्रश्नोना उत्तर आपी सकशेज! तेमां छेवटना प्रश्ननो उत्तर तो सर्वरीतें आपशे, परंतु तेनो भाव ते जाणी शकशे नहि, तारें तेनो भावार्थ तारा मुखथी सांभळी तेने जातिस्मरणज्ञान उत्पन्न थाशे! आ वात वैश्यपुत्रसांभळी प्रश्नो, उत्तरसहित शीखी बीजे दिवसें राजकुमारपासें आव्यो, तेने राज कुमारें सन्मान आपी बेसाड्यो. पछी ते वखत तेणें पंडितोनी सभा तेडावी. त्यार पछी राजकुमारें कह्युं के कांइक प्रश्नोत्तर चलावो. त्यारें ते वैश्यपुत्र बोल्यो के कोइयें मने प्रश्न पूछ्या छे. ते जेम के सर्वप्रश्नना उत्तरो एकज वखत बोलेला अस्त व्यस्त छ अक्षरोथीज आपवा. तेमां बीजा नवीन अक्षरो नज आवे. ते जो आप आज्ञा आपो तो हुं कहुं. तेवारें राजकुमार कहे के पूछो. जो आवडशे तो अमें कहेशुं. पछी श्रेष्ठिपुत्र कहेवा लाग्यो के प्रथम प्रश्न. सर्व

वस्तुनी प्राप्ति कोनाथी थाय छे? बीजो प्रश्न. सर्वपदार्थनो नार कोण सहन करे छे? त्रीजो प्रश्न. विषम अक्षरविना समान नाम कोनुं छे? चोथो प्रश्न. सर्व उत्तरना अक्षरो बोलतां अर्धाअक्षरोयें ब्रह्मानुं नाम कोणें करी आवे छे? पांचमो प्रश्न. सहुथी छेल्लो समुद्र कयो छे? ते सर्वना उत्तरो अस्तव्यस्त छ अक्षर बोलीने आपो.

ते सांभली बुद्धिमान् एवा राजकुमारें तेने एकवार बोलेला "स्वयंभु रमण" एवा छ अक्षरोथी पांचे प्रश्नना उत्तरो आप्या. ते केवी रीतें? के प्रथम प्रश्नमां कह्युं के सर्व प्रिय वस्तुनी प्राप्ति केनाथी थाय? तो के (स्वयं) एटले पोताथी अर्थात् स्वर्गादिकसुख अथवा मोक्ष सुख ते पोतें करेला तप वगेरे साधनथी थाय छे. तथा बीजा प्रश्नमा कह्युं के सर्वनो नार कोण सहन करे छे? तो के (भू) एटले पृथ्वी आखा जगतनो नार सहन करे छे. तथा त्रीजा प्रश्नमां कह्युं के विषमाक्षर विनानुं नाम कोनुं छे? तो के (रमण) एटले रमण ए पदमां त्रणे अक्षरो सम छे पण विषम नथी एटले एक दीर्घ एक ह्रस्व एवा नथी. एवुं रमण पद छे, तथा चोथा प्रश्नमां कह्युं के जे उत्तरना अक्षरो बोलवाथी अर्धा अक्षरो ज्यां थाय, त्यां ब्रह्मानुं नाम आवे, तो स्वयंभु, एम बोलतां प्रत्युत्तराक्षरना अर्धा अक्षरो थाय छे,अने (स्वयंभु) एवुं ब्रह्मानुं नाम पण छे. तथा पांचमा प्रश्नमां कह्युं छे के, छेल्लो समुद्र कयो जाणवो? तो के समस्त प्रत्युत्तरना अक्षरोयें करी छेल्लो (स्वयंभु रमण) नामा समुद्र छे. आ प्रमाणें समस्त व्यस्त अक्षरोयें एवा छज अक्षरोयें पांचे प्रश्नना उत्तारो आप्या. आ प्रश्न,केवललौकिकज कह्या. हवे जे प्रश्नोना अंतना उत्तर देवाथी राजकुमारने जातिस्मरण ज्ञान थयुं,ते प्रश्नो श्रेष्ठिपुत्र कहे छे. के हे मित्र! ए उत्तरो तो आपें बराबर छ अक्षरथी आप्या. परंतु बीजा हवे हुं पूछुं एवा प्रश्नोना उत्तरो पण पूर्वनी रीत प्रमाणेंज आप आपशो? ते पछी राजकुमारें हुकम कर्यो के जरूर कहो,जो अमने आवडशे, तो आपशुं. त्यारें वली श्रेष्ठिपुत्र प्रश्नो करे छे, केः– हे मित्र! प्रथम प्रश्नमां पूछुं छुं के पांडव पृथ्वीपर केटला हता? वली बीजा प्रश्नमां पूछुं छुं के नमन करवामां कयो शब्द बोलवो जोइयें? तथा त्रीजा प्रश्नमां पूछुं छुं के विधि केतां ब्रह्मानुं नाम कयुं छे? चोथा प्रश्नमां पूछुं छुं के पृथ्वीनो पुत्र कोण छे? अने पांचमा प्रश्नमां पूछुं छुं के सर्व

मंत्रोमां उत्तम मंत्र कयो जाणवो? हवे आवी रीतना पांच प्रश्नोना उत्तर राजकुमार पण ब अक्षरथीज व्यस्त समस्त रीतें करी आपे छे. के (पंचनमस्कारः) तेमां हे मित्र! प्रथम प्रश्नमां तमें कह्युं के पांम्व केटला हता? तो के (पंच) एटले पांच पांमवो हता. तथा बीजा प्रश्नमां कह्युं के नमन करवामां कयो शब्द बोलवो जोइयें? तो तिहां (नमः) ए शब्द बोलवाथी नमन थाय. त्रीजा प्रश्नमां कह्युं के ब्रह्मानुं नाम कयुं छे? तो के ब्रह्मानुं (क) एवुं नाम छे. तथा चोथा प्रश्नमां कह्युं के नूमिपुत्र कोण छे? तो तिहां नूमि पुत्र (कार) एटले मंगल छे? पांचमा प्रश्नमां कह्युं के सर्वे मंत्रोमां श्रेष्ठ मंत्र कयो छे? तो तिहां राजकुमार बे घडीवार विचार करीने कहे छे के (पंचनमस्कारः) एटले पंचपरमेष्ठि नमस्कारज छे. एम हुं नावना करुं छुं. त्यारें श्रेष्ठिपुत्र कहे छे, के वाह वाह मित्र! हवे शामाटें विलंब करो छो. ए मंत्रनो नावार्थ आप जलदी कही आपो. त्यारें राजकुमार कहे छे के हुं ते मंत्रनो नावर्थ जाणतो नथी, तेवारें श्रेष्ठिपुत्रें तेनो विस्तारपूर्वक नावार्थ सारी रीतें कुमरने समजावीने कह्यो. ते सांनल्यो के तत्काल राजकुमरने पंचपरमेष्ठिमंत्रप्रनावथी जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं. तेवारें केशने क्लेशदायक जाणीने पंचमुष्टियें करी उखेडी नाखीने राजपुत्रें दीक्षा लीधी.तेने देवतायें तेज वखतें साधुनो वेश आप्यो. तेवारें जेम केसरीसिंह गुफामांथी नीकले,तेम घरमांथी नीकलीने महापुंमरीक नामें वनमां जइ रह्यो. राजा ते सर्व वृत्तांत जाणी परिवारसहित तिहां आवीने शोकें पीड्यो थको तेनी साहामुं जोइ न शक्यो. अने तुरत नमीनेंज पाछो वल्यो. हवे नक्तिनो नर जेनो उल्लास पाम्यो छे,एवो तथा रोमांचरूप कंचुकें करी शोनायमान एवो शिवनूति पण तेने नमीने व्रत लीधानुं कारण पूछतो हवो.

हवे कुमर रुषि कहे छे के, पूर्वे कोल्लागपुरें सिंधुदत्त शेठनो पुत्र नंदन नामें हतो. ते त्रण महिनानो थयो, तेवारें तेने दांत आव्या, ते देखीने तेनो पिता बीहितो थको ए शुं आश्चर्य छे! एम शंका सहित निमित्तियाने पूछवा लाग्यो, तेवारें निमित्तियो कहेवा लाग्यो के, पहेले महीने जेने दांत आवे, ते पुत्र कुलने हणे, बीजे महिने जेने दांत आवे, ते बालक पोतें मरण पामे, नही तो पिताने मारे. जेने त्रीजे महिने दांत आवे, ते तो पिताने तथा पितामहने एटले पिताना बापने पण हणे. चोथे मासें जेने

दांत आवे, ते तो जाइनो विनाश करे. पांचमे मासें जेने दांत आवे, ते तो जला हाथी, अश्व, उंट, तेनो विनाश करे. छठे मासें जेने दांत आवे, ते कुलमां कलह उत्पन्न करे,संतापकारी होय,सातमे महिने जेने दांत आवे, ते धन धान्यादिकनो नाश करे. एम जाणीने हे सिंधुदत्त! जेम युक्त जाणो तेम करो. ते सांजली निमित्तियाने शीख आपीने शेठें पुत्रने जूदा घरमां राख्यो. तो पण चोरोयें तेना पिताने हण्यो. तेवारें ते पुत्रने सर्वकुटुंबें छोडी दीधो. तो पण ते छोकरो कष्टें करी जीवतो रह्यो तेणे जिक्षायें जमतां लोकना मुखथी पोतानी वात सांजलीने ते घणो खेद पाम्यो,पछी जमतां जमतां एक दिवसें वनमांहे आंखने अमृतांजन सरखा अने शास्त्ररूप समुद्रना पारंगामी एवा सुधर्मानामें गुरु दीठा. तेमना मुखथी दुःखथी मुक्त करनार एवो धर्म सांजलीने तेणें मोक्षसुखनी आपनारी दीक्षा लीधी, पछी अगीयार अंग तथा कांइक पूर्वगत आम्नाय जणीने एक महीनानुं अनशन करी मरण पामी सौधर्मदेवलोकें देवता थयो. तिहांथी चवीने हुं हमणां राजपुत्र थयो छुं. ते तहाराथी नवकार सांजलीने प्रतिबोध पाम्यो. तेवारें व्रत लीधुं. एम पोतानुं वृत्तांत कहीने ते साधु अन्यस्थानकें विहार करी गया, पछी तेमने अनुक्रमें अवधिज्ञान उपन्युं, तेवारें वली पण ते माकंदी नगरीयें आव्या. एवा राजकुमर रुषिनुं आगमन जाणीने स्कंदशेठ पुत्र अने जाइ सहित, तथा राजा ए सर्वमली रुषिने वांदवाने अर्थें जक्ति सहित गया. तिहां सहु कोइ गुरुने नमस्कार करी बेठा. एवामां कोइक पुरुष घणोज अपंग लाकडीयें वलगेलो तिहां आव्यो. ते गुरुने नमीने पूछवा लाग्यो के, महाराज! आ यौवनावस्थामां पण महारी गतिनो जंग केम थयो? अने लाकडी लइ चालवुं पडे छे, तेनुं शुं कारण हशे? तेवारें गुरु बोल्या के पूर्वें तुं आ जरतक्षेत्रने विषें कालंजर पर्वतनी पासेंना देशमां वास करनारो विश्वदेव नामें गोवाल हतो. एक समयें तुं गायो चारवा गयो. तिहां वनना कुंजमांहे काउस्सग्गें रहेला एक साधुने देखी तेने नमीने जय पाम्यो, तेवारें तिहांथी उतावलो नाशीने घेर गयो. एम बीजे दिवसें पण नाशी गयो,तथा त्रीजे दिवसें पण तेमज तेहने देखीने हलवे हलवे तिहां जइ नमीने तें कह्युं के, तुं नित्यें निश्चलपणे इहां रहे छे, तेनुं कारण शुं छे? तेवारें सा

धु बोल्या के कामविना यतिने पण संलीनता जे छे, तेहीज श्रेष्ठ छे. तेम तप्त लोहना गोला समान गृहस्थें पण पोतानी शक्तिमाफक सर्व दिशियो नेविषे जावानो नियम करवो, ते युक्त छे. कृपालु पुरुषें सर्व दिशि विरमण व्रत ते द्विविध त्रिविधें लेवुं. जे प्राणीयें दिशिविरमण व्रत लीधुं, तेणें चर अचर सर्वजीवने अन्नयदान दीधुं. ए व्रतमां ऊर्ध्वदिशि प्रमाणातिक्रमादि पांच दोष छे, ते सर्वदा शरीरन्नंगादिक डुःख देनारा छे, माटें ते वर्जवा. एम सांजली पापथी बीहीते थके तेणे दिशिनुं व्रत लीधुं. पण ते व्रतने प्रमादथी वारंवार अतिचार लगाड्या. तेथी मरण पामी कुदेवतापणुं पामी तिहांथी चवीने इहां तुं उत्तम कुलमां उपन्यो. पण पूर्वें व्रतन्नंग कस्यो, तेने पापें करी लूलो थयो छे. एवुं गुरु मुखथी सांजलीने तेने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं, तेवारें ते पुरुषें तिहां गुरुपासेंथी वली दिशिव्रत पडिवज्ज्युं, अने गुरुने नमस्कार करी जेम आव्यो हतो, तेम पाछो गयो. हवे शिवनूतियें पण पोताना स्कंद नाइ सहित दिक्परिमाण व्रत लीधुं, देवपाल रुषि पण विहार करी अन्यस्थानकें जता हवा. हवे ते बे नाइ एकदा डव्यरहित थया तेवारें पोतामां जूदा थइ गया, अने व्यापार करवा माटें द्रविडदेशें गया, तेवारें शिवनूति तो अतिचार लागवानी बीकथी सीममांज रह्यो, अने स्कंद तो लोन्नासक्त थको सथवारानी साथें आगल गयो. धन कमावी पाछा वलतां रस्तामां निल्लें सर्व धन लूंटी लीधुं. पाछो खाली हाथे घेर गयो, अने शिवनूति पोताना करियाणा मोघें नावें वेचीने डव्य पाम्यो, वली बीजा शस्तानावनां करियाणां तिहांथी लइने पोताने घेर गयो. तेने घणो लान्न थयो, अने बहु प्रशंसा थइ. यशने पाम्यो थको घणाकाल पर्यंत धर्म करीने स्वर्गनां तथा मनुष्यनां सुख पाम्यो, अने स्कंद तो व्रतना खंमन करवाथी इहां तथा परनवें पण डुःख पाम्यो. माटें हे नव्य प्राणीयो! ए दिशिव्रत घणा जीवोने रक्षानुं करनारुं छे, तेने सम्यक् प्रकारें जाणीने स्वस्थचित्तें करी ते व्रतने विषे सर्वदा यत्न करो. ए छठा व्रतने विषे बे नाइनी कथा कही ॥

हवे वली बीजी कथा कहे छेः—सावछी नगरीयें कीर्त्तिपाल राजानो नीम कुमर नामें पुत्र हतो. वली ते राजानो मित्र सिंहशेठ हतो. एक अवसरें कोइ दूत आवी राजाने विनति करतो हवो के, हे राजन्! नागपुर नगरें

नागचंद्र राजा छे, तेने गुणमाला नामनी बेटी छे. ते तमारा पुत्रने देवा वांछे छे माटें प्रसन्न थइने तमारा पुत्रने मोकलो. तेवारें राजायें सिंहश्रेष्ठीने कह्युं के,तमें नागपुर नगरें जइने मांहो मांहे कुमरनो विवाह करी आवो. तेवारें शेठें कह्युं के ते नगर इहांथी शो योजन जाजेरुं थाय छे, अने मुजने तो शो योजनथी उपरांत जावानो नियम छे, तेमाटें हुं तो जइश नही. तेवारें राजा बोल्यो के, जो नही जाशो तो तमने उंट उपर घाली हजार योजनथी उपरांत मोकलावी दईश. तेवारें शेठ बोल्यो के हे स्वामी! हुं तमारी साथें वियोग थाय माटें उत्तर कहेतो हतो; पण तमारी आज्ञा महारे प्रमाण छे. पछी राजायें सिंहशेठने मुख्य करी स्वपुत्रनी साथें बीजो पण घणो परिवार आपी नागपुर नणी चलाव्या. मार्गमां शेठें राजाना कुमरने प्रतिबोध आपीने संसारथी विरक्त कीधो. शो योजन गया पछी शेठ कुमुहूर्त्तादिकनुं बहानुं काहाडी आगल न चालतो हवो. पांच दिवस थया, तेवारें सामंतें आवीने कुमरने वीनव्यो के, राजायें चालती वखतें अमने छानुं कह्युं छे, जे सिंहश्रेष्ठी जो शो योजनथी आघो न चाले, तो बांधीने आघो तेडी जाजो. ते वात,कुमरें सांनली पण नक्तिवंत होवाथी आपणा गुरु सिंहश्रेष्ठीने राजानुं कहेलुं वृत्तांत सर्व कह्युं, तेवारें सिंहशेठ बोल्या जे आ देह उपर मुजने मोह नथी. वनमांहे जइ पादोपगमन अनशन लइश! पछी मने बांधी जशे तो पण महारुं शुं लइ जशे! एम कही शेठ रात्रें वनमां गया. तिहां मुनिराज काउस्सग्गमां उना छे, तेमने देखी शेठ कहेवा लाग्या के तमारा पगनुं मुजने शरणुं होजो. एम कहे छे,एटलामां कुमर पण केडें गयो. तिहां बेहु जणें दीक्षा लइ पादोपगमन करी अणसण लीधुं. प्रनातें सर्व परिवारें आवी अनेक प्रकारनां चाटु ते प्रेमसहित खोटां वचन कहेवा मांड्यां पण; तेणें मान्यां नहिं. पछी सर्व परिवारें जइने राजाने खबर करी. ते वात सांनली राजा पण तिहां आव्यो, अने जूवे छे तो वाघ तथा सिंहादिक, वननां महोटां जोरावर जनावर पण तेमना तपने प्रनावें शांत थइने तेमनी सेवा करे छे. ते देखी राजा तेमने अनेक प्रकारें मनाववा लाग्यो, पण ते बेहु जणें राजानी साहामुं पण जोयुं नही. एक मास अनशन पाली केवलज्ञान पामी ते बेहु जण मोक्षें पहोता. पछी राजा शोकातुर थको तेमनां उत्तर कार्य करीने पोताने

नगरें पहोतो. एवी रीतें जेम सिंहश्रेष्ठीयें प्राणांतें पण व्रतनो लोप न कर्यो, तेम बीजायें पण व्रत लोपवुं नही. इतिषष्ठव्रतकथा समाप्ता ॥ ६ ॥

७ सातमुं भोगोपभोगव्रत द्विविध. भोजनतः कर्मतश्च. तत्र भोजनतः-इणे व्रतें " पंचुंबरि महविगई, हिम विस करगेय सव्व मट्टीय ॥ राईभोयणगं चिय, बहुबीय अणंत संधाणं ॥ १ ॥ घोलवडां वायंगण, अमुणियनामाणि फुल्ल फलयाणि ॥ तुच्छफलं चलियरसं, वज्जय भुज्जाइं बावीसं ॥ २ ॥ ए बावीश अनक्ष्य ॥ सव्वाउ कंदजाई, सूरण कंदो य वज्जकंदो य ॥ अद्द हलिद्दा य तहा, अद्दं तह अल्ल कच्चूरो ॥ १ ॥ सत्तावरी विराली, कुंआरि तह थोहरी गलोई य ॥ लंसण वंस करिल्ला, गज्जर तह लूणउ लोढो ॥ २ ॥ गिरिकन्नि किसलिपत्ता, खरिसुआ थेग अल्ल मुत्था य ॥ तह लूण रुक्खबल्ली, खिल्लुहडो अमयवल्ली य ॥ ३ ॥ मूला तह भूमिरुहा, विरुहाई टक्क वत्थुलो पढमो ॥ सूअरवल्लो य तहा, पल्लंको कोमलंबिलिया ॥ ४ ॥ आलू तह पिंडालू, बत्तीसं जाणिऊणणंताइं ॥ एयाइं बुद्धिमया, परिहरियव्वा पयत्तेणं ॥ ५ ॥ " ए बत्रीश अनंतकाय यथाशक्तें रोग दुर्भिक्षादिक मूकी परिहरुं ॥ ए सातमा भोजनव्रत तणा पांच अतिचार शोधुं. सचित्तआहारे, सचित्तपडिबद्ध आहारे, अप्पोलिओसहिभक्खणया, दुप्पोलिओसहिभक्खणया, तुच्छोसहिभक्खणया. सचित्त तणो नियम लीधे अजाणतां अधिकुं सचित्त लीधुं होय. सचित्त प्रतिबद्ध-रायण मुह घाली निकोली होय, वृक्षतणो गूंद उखेडी तत्काल अचित्त बुद्धें आहार्यो होय. अप्पोषधि-पोलीमांहेलो कण भक्ष्यो होय. दुप्पोषधि-उला, पहोंक, अचित्त बुद्धें आहा

ख्या होय. तुच्छोषधि-कुअली आंबली, कुअलां वाघरडां, मोहोर, कुंपली, सूक्ष्म केरी तणुं नक्षण कीधुं होय, अने रात्रें नोजन कीधुं होय, लगबगवेलायें जिम्या होइयें, जिमवा अंधारे बेठा होइयें, गुलले पाणी पीधुं होय, "सच्चित्त दव्व विगइ" ए चौद नियम, दिवसगत, रात्रिगत चिंतव्या न होय. वर्षाकालें जूनुं टोपरुं, खारेक, खजूर, आहाख्यां होय, आमण बोर, जांबू, पीलू, आखी वाल्होली लीधी होय, पहोंक स्वहस्तें कीधा होय. काचूं लूण, वाशी वडां, वाशी पोली, शोल पहोर उपरांत दहीं वावस्युं होय, संसक्त फूल, फल, उपजीव्यां होय, अणगल पाणी पीधुं होय. अनेरुं एसा०

अर्थः—सातमुं नोगोपनोगविरमण व्रत ते द्विविध, एटले बे नेदें छे. ते मां एक तो "नोजनतः" एटले नोजनथी अने बीजुं "कर्मतश्च" एटले कर्मेथी जाणवुं. तत्र एटले तेमां प्रथम नोजनतः एटले नोजनथी तो इणे व्रतें एटले आ व्रतने विषे पंचुंबरि एटले पांच जातिनां उंबर आदिक जे बावीश अनक्ष्य तथा बत्रीश अनंतकाय इत्यादि आवे छे, तेनो त्याग करवो. ते पंचुंबरि आदिक पदोनो अर्थ आगल लखशुं. हाल ए व्रत आश्रयी संक्षेपथी समजण लखियें छैयें.

ए बीजुं गुणव्रत बे नेदें छे. तेमां एक नोगथी अने बीजुं कर्मेथी. तेमां वली नोगना बे नेद छे. एक उपनोग अने बीजो परिनोग. तिहां आहार, फूल फल प्रमुख जे एकवार नोगवीयें, तेंने उपनोग कहीयें. अने स्त्री, घरेणां प्रमुख जे वस्तु वारं वार नोगवीयें, ते परिनोग कहियें.

हवे श्रावकें प्रथम उत्कृष्टथी तो फासु शुद्धमान निरवद्य आहार लेवो जोइयें, परंतु जो तेम न बनी शके, तो पण सचित्तपरिहारी तो अवश्य थवुं जोइयें. ते पण जो न थवाय, तो पण मद्यादिक अनक्ष्य वस्तु के जेनुं नक्षण करवामां घणुंज पाप छे, ते वर्जीने प्रत्येक मिश्र वस्तुनुं प्रमाण करी लेवुं जोइयें. जे माटें कह्युं छे, के निरवद्य आहार, अचित्त आहार, अथवा मिश्र एवा आहार करतो नलो श्रावक आत्माने राखे.

हवें बावीश अनक्ष्य त्याज ले, ते कहे ले. तेमां प्रथम पंचुंबरी एटले वड, पींपल, पीपर, उंबर, काकोडुंबर. ए पांच जातिनां वृक्षनां जे फल, ते पंचुं बरी जाणवां. केरडां, महुडां वगेरेनां फूल, अने कुंथुआदिक त्रस जीव संसक्त जे पत्र अने जांबु बीली वगेरेनां फल, ते सर्व पंचुंबरीमां जाणवां; मार्टे ते अनक्ष्य ले, अने महविगई एटले मदिरा, मांस,मधु अने माखण ए चार महाविगय कहेवाय ले. तिहां मदिरा जे ले, ते प्रथम तो घणा दोषोनुं कारण ले. घणो मोह, कलह, निडा, पराजव, हास्य, क्रोध, मद एटला वानां मदिरा पीधाथी पामीयें; अने लक्का, लक्ष्मी अने धर्मनो पण नाश थाय ले. तथा मांस पण महानिंद्य ले, एक तो जेमां पंचेंडिय जीवनो वध थाय, अने वली ते डुर्गंधयुक्त होय ले, तथा देखवामां पण अपवित्र, राक्षसनुं नक्ष्य अने डुर्गति आपनारुं एवुं ले. मार्टे ते निंद्य जाणवुं. ए वस्तु मांहे निरंतर तेहवाज वर्णवाला अनेक संमूर्छिम जीव उपजे ले, तेमार्टे ए अनक्ष्य ले, एवं नव. तथा हिम एटले बरफ, ए पण अनक्ष्य ले, एवं दश. तथा विष एटले अफीण प्रमुख सर्व जातिनुं विष ते पण अनक्ष्य ले. एवं अगीयार. तथा करगेय एटले वर्षादमां करा जे रोयडा पडे ले, ते पण अनक्ष्य ले, एवं बार. तथा सबमट्टीय एटले सर्व जातिनी खडी माटी जे पृथ्वीमां थाय ले, ते पण अनक्ष्य ले, एवं तेर. तथा राईनोयणगं चिय एटले रात्रिनोजनकं चैव अर्थात् रात्रिनोजन ते पण अनक्ष्य ले. एवं चौद. तथा बहुबीय एटले बहुबीज वस्तु ते जेमां गर्न थोडो अने बीज घणां होय, ते पण अनक्ष्य ले. एवं पन्नर. तथा अणंत एटले बत्रीश अनंतकाय अनक्ष्य ले, एवं शोल. तथा सिंधाणं एटले बोलानुं अथाणुं पण अनक्ष्य ले. एवं सत्तर. तथा घोलवडां ए विदल ते कगोलमां काचुं गोरस मेलव्युं होय, तेमां पण बेंडियादिक जीवोत्पत्ति थाय तेनणी ए अनक्ष्य ले. एवं अढार. तथा वायंगण एटले वेंगण रिंगणां ए पण काम दीपावे, अने निडा घणी आपे मार्टे ए जाति पण अनक्ष्य ले. एवं उंगणीश. तथा अमुणियनामाणि य एटले अमतनामानि ते जे फलनां नाम न जाणीयें, एवा अजाण्यां जे फूलफलयाणि एटले पुष्पफलकानि अर्थात् फूल तथा फल होय ते सर्व अनक्ष्य ले, एवं वीश थयां. तथा तुबफलं एटले तुब असार एवां अत्यंत कोमल फल ते वनबोर, च

णीयां बोर, पीलूडां, लींबडानां फल ते पाकेली लींबोलीप्रमुख, जे घणा खाइयें तो पण तृप्ति न थाय, अने तेनी गोटली ज्यां नाखीयें तिहां गोटलीनी आसपास असंख्याता संमूर्छिम पंचेंद्रिय जीव आवी उपजे, वली जे घणां खाय तेने तत्काल रोगोत्पत्ति थाय, माटें ए पण अनक्ष्य छे. एवं एकवीश. तथा चलितरस ते जे चीजनो रस चलायमान थइ गयो होय. एटले जेनो काल पूरो थयेथी स्वाद बदली गयो होय. एवुं कोह्युं सड्युं अन्न, कठोल, ढूंढण प्रमुख शोल पहोर उपरांत दहीं, छाश, कांजी तथा कालातीत थयेली सुखडी प्रमुख तेमां जीव आवी उपजे छे,माटें ए पण अनक्ष्य छे. एवं बावीश. ए बावीसं एटले बावीश अनक्ष्य जे छे, तेनुं (जुज्जाइं के०) नुंजवा एटले खावानुं (वज्जय के०) वर्जन करवुं. ए बाबीश अनक्ष्य कह्यां.

हवे बत्रीश अनंतकायनां नाम कहे छेः—तिहां (सव्वाउकंदजाई के०) सर्व कंदनी जाति मात्र अनक्ष्य छे, तेमांथी केटलां एकनां नाम कहे छेः— पहेलुं सूरणकंद (य के०) वली बीजुं वज्रकंद, (य के०) वली त्रीजी (अद्दहलिद्दा के०) लीलीहलदर, चोथुं (तहा के०) तथा (अद्दं के०) लीलुं आडुं पांचमुं (अल्लकच्चूरो के०) लीलो कचूरो अने छठी शतावरी, सातमी (विराली के०) विरहालीकंद ते जेने देश नाषायें वरियाली केहे छे, आठमी (कुंआरी के०) कुंआर, (तह के०) तथा नवमी (थोहरि के०) थोहरीकंद, एटले थोर, दशमी (गलोइ के०) गलो एटले गुलवेल (य के०) वली अगीयारमो लसणकंद, ते लसण, बारमो (वंसकरिल्ला के०) वंश कारेलां वंश संबंधिनी कारेली एटले वासोटा, तेरमुं (गज्जर के०) गाजर ए कंद छे. (तह के०) तथा चौदमुं (लूणउ के०) लूणी एटले साजीवृक्ष; पन्नरमुं (लोढो के०) लोढ ते पद्मिनीकंद, शोलमुं (गिरिकह्मि के०) गिरिकर्णिका ते गरमर एवे नामें जे प्रसिद्ध छे ते. सत्तरमो (किसलयपत्ता के०) कोमल पांदडां ते सर्व वनस्पतिनां नवां ऊगतां सर्व गुब्बानां पांदडां, तथा सर्व वनस्पतिना जे उगती वखतना अंकूर होय ते सर्व अनंतकाय छे. अढारमो खरिसूआ ते खरिंशुकनामा कंद विशेष उंगणीशमी (थेग के०) थेगीअने थेगीनी नाजी, वीशमी (अल्लमुत्थाय के०) लीली मोथ (तह के०) तथा एकवीशमी (लूणरुरकछल्ली के०) लूण वृक्षनी छाल, बावीशमुं (खीह्लुहडो के०) खिह्लोडुं कंदविशेष, त्रेवीशमी (अमयवल्ली के०) अमृतवेली जेने टीं

मोरुं कहे ठे ते, चोवीशमी मूलानी पाहाड ते प्रसिद्ध ठे, (तह के०) तथा पच्चीशमा (नूमिरुहा के०) नूमिफोडा एटले नूमिथकी निकलेला ठत्राकार थाय ठे. जेने देशनाषायें सापनुं बेसवुं, कहे ठे. तथा ठवीशमुं (विरुहाइ कु०) विरूढानि एटले पलाल्याथी जेने अंकूर आव्या होय एवा मठ, चणा, वाल, मग. प्रमुख द्विदल धान्य जाणवां, सत्तावीशमुं (टक्कवत्थुलो के०) ढक्क वस्तुल नामें शाक विशेष जे (पढमो के०) प्रथम उगेलो होय ते अनंतकाय जाणवो अने ठेदन कस्या पठी उगेलाने अनंतकाय न कहेवो. अघावीशमो (सूअरवल्लो के०) सूअरवल्ल जे रोहिमां महोटा सीम जेवो थाय ठे,ते (य के०) वली (तहा के०) तथा उंगणत्रीशमो (पल्लंको के०) पल्लंकानी नाजी तेपण शाकविशेष. त्रीशमो (कोमलंबिलिया के०) कोमल आंबली ज्यांसुधी मांहे बीज संक्रमे नही, त्यांसुधी अनंतकाय जाणवी. एकत्रीशमुं आलुकंद (तह के०) तथा बत्रीशमुं पंमोलुं जाणवुं. (एयाइं के०) ए (बत्तीसंजाणिऊणणंताइं के०) बत्रीश अनंतकायने जाणीने (बुद्धिमया के०) बुद्धिमान् पुरुषें ए पूर्वोक्त बत्रीश अनंतकायने (पयत्तेणं के०) प्रयत्नें करीने (परिहरियवा के०) परिहरवां,एटले त्याग करवां. (यथाशक्तें के०) यथाशक्तियें रोग आवे थके दुर्निक्षादिक कारण थये थके जयणा राखवी; एटले एवा कारणो मूकीने ए कारणो विना (परिहरुं के०) त्याग करुं ठुं. एवी रीतें सचित्तनुं पच्चरकाण श्रावकें कीधुं ठे; अथवा सचित्तनुं मान कस्युं ठे.

ए उपनोगपरिनोगविरमणनामा बीजा गुणव्रतने विषे जे अनानोग पणें प्रमादना प्रसंगथी पांच अतिचार थाय तेने शुद्ध करुं ठुं. तेनां नाम कहे ठेः—एक सचित्तआहार नामा अतिचार, बीजो सचित्त प्रतिबद्धआहार नामा अतिचार. त्रीजो अपक्कौषधि नक्षण नामा अतिचार, चोथो दुःपक्कौषधि नक्षण नामा अतिचार, पांचमो तुठौषधि नक्षण नामा अतिचार. ए पांच अतिचारनां नाम जाणवां. हवे एनो अर्थ लखे ठे.

प्रथम सचित्त वस्तुनुं प्रमाण कीधुं ठे. जे आटली खावी, उपरांत न खावी, एवो नियम लीधो, पठी अजाणते अनानोगथी नियममां ठूट राखेली हदथी पण वधारे सचित्त लेवामां आवे, अथवा सचित्त पाणीना नियमवालाने त्रण उकाला आवे, तेवारें शुद्ध थाय. तेने बदले एक उकालो आवे, तेवारें अचित्त थयुं एवुं समजीने ते पाणी पीये, अथवा सचित्त

वस्तुने फासु करतां कांइ काचुं रही जाय, तेने अचित्त जाणी खाय, ते प्रथम सचित्तआहार नामा अतिचार जाणवो.

बीजो सचित्त प्रतिबद्ध अतिचार, ते रायण बोर बीज सहित (मुहगालि के०) मुखमां घालीने (निकोलि के०) चूश्यां होय, अर्थात् मोढामां ते फलनो ठलीयो ममलाव्या करे, तथा पाकी केरी चूसे, अने मनमां उपयोग आणे जे ए तो पाकुं फल छे. तेने हुं चूसुं छुं. पण एमां गोटली सचित्त छे, तेनी साथें एनो प्रतिबंध छे, ते विचारे नही. तेमज खेरना जाडनी गांठमांथी गुंदर उखेडीने तत्काल तेने तेज वखत अचित्तनी बुद्धियें करी आहारे, एटले खाय; पण एम न विचारे, जे गुंदर तो अचित्त छे, पण एने सचित्तनो स्पर्श लाग्यो छे, तेथी अनक्ष्य छे. ते उपयोग न राखे, माटें सचित्तना नियमवालाने ए बीजो अतिचार लागे.

त्रीजो अपक्कौषधि ते अण चाल्या लोट प्रमुख, तेने अग्निसंस्कार न कर्यो होय, अने एमज काचो फाके. सिद्धातमां तो कह्युं छे के, आटो दल्या पछी पण केटलाएक दिवस सचित्तमिश्र रहे छे, पछी अचित्त थाय, तेने अचित्तनी बुद्धियें खाय. तथा रोटली पोलीमां रहेलो कण, ते सचेत छे, तेने अचेत मानी नक्षण करे, तो त्रीजो अतिचार लागे,

चोथो डुप्पोसहि एटले डुःपक्कौषधिअतिचार ते कांइक काचा अने कांइक पाका एवा ऊला, पोंक, कंबी, जुवारना पोंक इत्यादिक सर्वजातिना लीला पोंक तेने अग्निसंस्कार थयो, माटें अचित्त थया, एम अचित्तनी बुद्धियें करी आहारे, तो तेने चोथो अतिचार लागे.

पांचमो तुच्छौषधिनक्षण ते कुअली आंबली ते काची आंबली, तथा कुंअलां एटले कांचां वाधरडां ते पातलीयां बीजवालां बावलीयाना आकारवालां जे परडां थाय छे ते, तथा आंबादिकना महोर अने कूंपल तथा सूक्ष्म केरी एवी असार वस्तु के जेना खावाथी तृप्ति न थाय, अने नूख पण नांगे नही, परंतु आरंन घणो थाय, अने प्रसंगदोष पण घणो लागे, माटे एवी चीजनुं नक्षण करे, तो पांचमो अतिचार लागे.

तथा रात्रिनोजन करवुं, लगबग वेला ते सूर्यास्त वेलायें एटले कांइक सूर्य होय न होय तेवखतें जमवा बेठा होइयें. तथा अंधारे जमवा बेठा होइयें, गुललें पाणी एटले उंचेथी पाणी पीधुं होय, तथा " सच्चि

नदव्वविगइ" ए गाथायें करी सचित्तनो नियम, द्रव्यनियम, विगयनो नियम उपानह नियम, आदिक जे चौद नियम छे, तेनी दिवसगत रात्रिगत एटले दिवसें तथा रात्रें चिंतवणा न कीधी होय.

तथा वर्षाकालें घणा कालनुं जूनुं टोपरुं तथा खारेक, खजुरना आहार कस्या होय, तथा आमणबोर, जांबू, पीलू अने आखी वाल्होल लीधी होय, स्वहस्तें एटले पोताने हाथें पहोंक कीधा होय, काचुं लूण, वाशीवडां, वाशी पोली अने शोल पहोर कालथी उपरांत जे दहीं रहेलुं होय, तेवुं दहीं वावखुं होय. पोतें खाधुं बीजाने खवराव्युं होय,अने संसक्त एटले अति संघट्टित एवां फूल फल उपजीव्यां होय, तथा अणगल पाणी पीधुं होय,अनेरुं ए सातमा नोजन व्रत०॥ ए रीतें नोगथी सातमुं व्रत कह्युं.

हवे ए नोगोपनोग विरमणरूप बीजागुणव्रत उपर दृष्टांत कहे छेः— कमलपुर नगरें राजशेखर नामें राजा हतो, तेने एकवार जोषीयें कह्युं के, हे स्वामी ! आवते वर्षे महा डुर्जिक्ष थाशे. ते प्रमाणें न थयुं तेवारें राजा विचारमां पड्यो. एवामां तिहां उद्यानमां युगंधरऋषिने केवलज्ञान उपन्युं, तेनी वनपालकें राजाने जाण करी, तेथी राजा वांदवा गयो. देशना सांनलीने पूछवा लागो के हे महाराज ! जोषीनुं वचन केम न मल्युं? तेवारें केवली कहेवा लाग्याः—ग्रहयोग एवोज हतो, जेणें करी बारवर्ष पर्यंत डुर्जिक्ष पडे, तोपण सुनिक्ष थयुं, तेनुं कारण कहुं छुं, ते सांनलो. पुरिमतालनगरें एक पुरुष डुर्जागी, महारोगी हतो. ते आहार लिये तेथी तेनें विकार उत्पन्न थाय. पछी तेणें विवेकेंकरी सर्व अनक्ष्य, अनंतकाय खारा, खाटा, गल्या, चोपड्या इत्यादिक सर्व अनक्ष्य आहारनो नियम लीधो, अने ब्रह्मचर्य अंगीकार कर्युं. ते अनुक्रमें नीरोगी थइ महोटी ऋद्धिनो धणी थयो, घणी लक्ष्मी पाम्यो; पण नियम मूके नही. एकवार डुर्जिक्ष पडयुं, तेवारें ते अनेक सुपात्रोने दान देइ नियम पाली पुण्य उपार्जी मरण पामीने वैमानिक देवता थयो. तिहांथी च्यवी आ नगरमां सुबुद्धिनामें श्रावक छे. तेणें एक दिवस नक्षण योग्य जेटलुं अन्न जोइयें तेटलानो संग्रह राखवो, उपरांत संग्रह करवानो नियम लीधो. एवामां डुर्जिक्ष पडशे एवी वात पण गाममां चाली, परंतु सुबुद्धि श्रावकें अन्नसंग्रह न कस्यो. तेना कुलमां ते आवी उपन्यो. शुनदिवसें पुत्र जन्म थयो. ते पुत्रने प्रनावें डुर्जि

रू टली गयुं. ए वात सांजली राजा हर्ष पामतो ते श्रावकने घरे जइ बाल कने प्रणमी तेनुं धर्मकुमर एवुं नाम आपी राज्यपाटें थाप्यो, धर्मराजानी आज्ञा प्रवर्त्तावी. ते पछी तेना देशमां कोइवारें डुकाल पड्यो नही; अने धर्मराजा पण राज्य पाली दीक्षा लइ केवलज्ञान पामी, मोक्षें पहोतो. एवा सातमा व्रत पाल्यानां फल जाणी सर्वजनयें सातमुं व्रत पालवुं.

हवे पन्नर कर्मादान कहे छे.

कर्मतो तलार, गुप्तपाल प्रमुख खरकम्म अने आजीविका अर्थें कुव्यवसाय परिहरुं ॥कर्मतो ए व्रततणा पंदर अतिचार शोधुं.इंगालकम्मे,वणकम्मे,साडीकम्मे,भाडीकम्मे,फोडीकम्मे, दंतवाणिज्जे, लक्खवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, जंतपीलणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सर दह तलाव सोसणया, असइ पोसणया. १ इंगालकम्मे-लाभार्थें रांगण,लीहाला, सोनारा,कंसारा ठंठारा, भाडभुंजा, ईटवाह, नीमाह, धातुधमनादिक अग्निकर्म कीधां होय. २ वणकम्मे-कण, कपाशीया, फूल, फल,पानतणो,विक्रय कीधो होय. दलावणुं,छोडावणुं,मंभाव्युं होय. वांस, वली, काठ वढाव्या फडाव्या होय. ३ शकटकम्मे-गाडां वाहिनी धरी, ऊधी, पइ तणो विक्रय कीधो होय. ४ भाटककम्मे-पोठीया,वहीत्रा, उंट,बलद, खर, वेसर शकट तणुं भाडुं कीधुं होय. ५ फोटिककम्मे-आजीविकार्थें खाण, पाषाण,माटी, मुरड, खणाव्या होय, करसण कीधुं होय. १ दंतवाणिज्जे-आगर जइ गजदंत, चमर, कस्तूरी, नख, रोम, चर्म लीधां होय. २ लक्खवाणिज्जे-लाख, गली, मणसिल, धावडी,महुडां, साजी,तुरी, साकरोड, भांग, साबू, कंदादिक वहोरयां होय. ३ रस

वाणिज्जे-रस, मद्य, मद्यांग, मधु, माखण, वेशणतणो विक्रय कीधो होय. ४ विसवाणिज्जे-विष, हल, हथीयार, लोह यंत्र, हरियाल, कांकशी प्रमुख जीवघातक वस्तु वेची वेचावी होय. ५ केसवाणिज्जे-द्विपद, चतुष्पदतणो विक्रय कीधा होय. १ यंत्रपीलणकम्मे-अरहट्ट, पावट्ट, कोल्हु, लोढणी, ऊखल, मुशल, घंटी, घाणी, वाह्यां होय. २ निल्लंछणकम्मे-द्विपद, चतुष्पद प्रत्यें आंक, नाथ, पाळणां, कर्ण, कंबल, मुष्कछेद, पृष्ठिगालन, नासावेधादिक कीधां कराव्यां होय. ३ दवग्गिदावणया-खड अन्नतणी घणी निष्पत्ति जाणी दव दीधा, देवराव्या होय. ४ सरदहतलावसोसणया-सर सोषाव्यां होय, खिल्ल खेडाव्या होय, क्यारा गहराव्या होय, द्रह तलाव फोडाव्यां होय. ५ असतीपोषण-श्वान, बिडाल, शूडा, सालही, मोर, कुर्कुट, दुराचार, दासदासरु पोष्या होय. अनेरा बहु पाप व्यापार, व्यवसाय कीधा होय. ए पन्नरे कर्म्मादान विषे स्थूल नियम सूक्ष्मतणी जयणा. ए पन्नर अतिचारमांहे पक्खदिवसने विषे जिको कोइ सूक्ष्म बादर अतिचार हूउ होय, ते सवि हुं मन वचन कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं ॥

अर्थः– कर्मतो एटले कर्मथी (तलार के०) कोटवालानुं कर्म अथवा तलार ते तबल एवे नामें मालवा देशमां एकजातनो हथीयार थाय छे, जेना घावथी प्राणीने महादुःख उत्पन्न थाय ते तथा (गुप्तपाल के०) गुप्ति, ते उपरथी लाकडीजेवो होय अने अंदर एक जातनो हथीयार होय, तेने जे पोतानो करि राखीने तेनो उपयोग करवो, ते गुप्तपाल कर्म कहीयें, अथवा बंदिवाननुं रक्षण करवुं तेनेपण गुप्तपाल कहियें. ए रीतें तलार अने गुप्तपाल प्रमुख (खरकर्म के०) कर्म बंधननां कारणरूप एवा घणा आकरां कर्म अने बीजा आजीविका चलाववाने अर्थें जे (कुव्यवसाय के०) कु

व्यापार एटले जे माठा व्यापार करवा, ते परिहरुं. एवीरीतें श्रावकें व्रत लइ नियम करेलो छे. तेमां अनाभोगथी ए व्रतने विषे जे पन्नर अतिचार लागे ते न लगाडवा, तेनां नाम कहे छे.

एक इंगालकर्म, बीजुं वनकर्म, त्रीजुं साडीकर्म ते शकटकर्म; चोथुं भाडि ते भाटककर्म, एटले भाडा करवानुं कर्म, पांचमुं फोडी ते फोडवानुं कर्म, तेने स्फोटिककर्म कहीयें. ए पांच कर्म. हवे पांच वाणिज्य, कहे छेः– एक दंतवाणिज्य, बीजुं लाखनुं वाणिज्य, त्रीजुं रसनुं वाणिज्य, चोथुं विषवस्तुनुं वाणिज्य अने पांचमुं केशवाणिज्य ए पांच वाणिज्यनां नाम कह्यां. हवे पांच सामान्य कर्म कहे छेः– एक यंत्रपीलनकर्म, बीजुं निर्लांछनकर्म, त्रीजुं दावाग्निदेवानुं कर्म, चोथुं सर इह अने तलावने शोषण करवानुं कर्म अने पांचमुं असती जीवोने पोषण करवानुं कर्म. ए पांच सामान्य कर्म,एवं पन्नरकर्मादाननां नाम कह्यां. हवे एनो संक्षेपथी अर्थ कहे छे.

तिहां प्रथम इंगालकर्मने विषे रांगणि एटले रंगना आपनारा रंगारी लोको जे भठी करे छे,ते कर्म तथा लीहालानुं कर्म ते लाकडां बालीने कोयला करी तेना व्यापारें आजीविका चलाववी, तथा सोनारनो धंधो, कंसारानो धंधो, तथा ठंठारा ते पगमां पहेरवा माटें वींछीया अंगुठीयां, करडा प्रमुखना बनावनार ते पण एकजातना कंसाराज छे. तथा भाडभुंजा ते दालिया कुरमराधाणीना शेकनार जाणवा,तथा ईंटवाह ते इंटना नीपजावनारा कुंभार जाणवा,अने नीमाह ते नीभाडाना करनारा,घडा तथा बीजा अनेक प्रकारना माटीनां वासण प्रमुख बनावनारा कुंभार जाणवा. तथा धातुधमनादिक एटले त्रांबुं पीतल आदिक धातुने तपावनारादिकनुं कर्म जाणवुं. तथा आदिशब्दथी लोहार कर्म बंगडीकार, सीसकार, कलाल, हलवाइ, धोबी, भठीयारा आदिक जेटला अग्नि वडे व्यापार थाय छे. ते सर्व इंगालकर्म जाणवां. एमां घणा दोष छे. केम के, अग्नि छे, ते सर्व शस्त्रमां मुख्य शस्त्र छे, दशेदिशिने विषे छकायना जीवने हणे.

बीजुं वनकर्मने विषे कण ते धान्य, कपासिया तथा बगीचानां फूल, फल, पान ए वस्तुनो विक्रय एटले वेहेचवुं कर्युं होय, तथा धान्यने दलावबुं, भरडाववुं, खंमाववुं, अने कपासीयानुं लोढाववुं मंमाव्युं होय,एटले एवां कारखानां मंमाव्यां होय; तथा वांस वली महोटा वांस तथा काठ

ते लाकडां तेने वढाव्यां, एटले कपाव्यां होय, फडाव्यां एटले फाडीने कट का तथा पाटीयां कराव्यां होय. ए सर्व वनकर्म जाणवुं. तथा लीली वन स्पति, हरिबीज प्रमुखनो व्यापार आजीविकानिमित्तें करवो. ते सर्व वनक र्म जाणवुं, तथा खेडुतने आगलथी पैसा आपीने पछी धान्य नीपजे तेवा रें वधारे लेवुं,ते पण वनकर्ममांज गणाय. एमां वनस्पतिना जीव तथा तेना आश्रित त्रसजीवोनी अवश्य विराधना थाय,माटें ए कर्म्म अनाचरणीय छे

त्रीजुं साडीकर्म एटले शकटकर्म तेनें विषे गाडां ते महोटां गाडां जाणवां तथा वाहिनी ते वहेल अने असवारीना रथनी जाति तथा न्हाना महो टा नावनी जाति तेमज तेनां अंग जे गाडांनी धरी ऊध,पइ, एटले गाडा नां पइडां ए सर्व नवां बनाविने तेनो विक्रय करवो एटले वेचवां ते पण महा हिंसानुं कारण छे, माटें अनाचरणीय छे.

चोथुं भाटक एटले भाडाकर्मने विषे पोठीयानुं भाडुं वहीत्रां ते वही त्रुं भार उपाडवानुं कर्म, उंटनुं भाडुं, बलद, खर ते गधेडानुं भाडुं,वेसर ते खच्चरनुं भाडुं तथा शकट ते गाडानुं भाडुं ए पदार्थोना भाडां कर्यां होय, एटले एमनी उपर बीजानो माल भरीने मालधणी कहे तिहां पहोंचाडी आपवानुं भाडुं कीधुं होय, तथा घर, डुकान, वखार प्रमुख भाडे आपवी तथा सार्थवाहनो व्यापार, हुंडा भाडानो व्यापार एम जे कोइ पोतानी चीज बीजाने भाडे आपवी,तेमां बलद, घोडा प्रमुख जीवोने ताडनादिक करवी पडे तथा गाडाप्रमुखने मार्गमां चलावतां त्रसादिक जीवोनी हिंसा अवश्य थाय, माटें ए कर्म पण वर्ज्जनीय छे.

पांचमा फोटिक कर्मने विषे पोतानी आजीविका चलाववाने अर्थें फो ड करवी एटले पृथ्वी विदारवी जेम के हीरा, रत्ननी खाण खोदाववी, पा षाण ते पथरानी अने माटीनी खाण खणाववी तथा मुरड ते खोदता खो दतां प्रथम माटी निकल्या पछी न्हाना न्हाना काचा पत्थरा निकले तेने मुरड कहे छे. तथा करसण ते खेती करवी, कूवा खणाववा,तलाव खणा ववां, नीक खोदवी, हल खेडवुं, छीद्र पडाववां, पर्व कराववी, भोयरां क राववां, तहखानां बनाववां, इत्यादिक सर्व फोडीकर्ममां त्रसकाय जीवोनी हिंसा थाय छे. तथा घणा जीवोनी अंगघात थाय छे, एम ए पांचें कुकर्म ते महा हिंसामय छे माटें त्याज्य छें. हवे पांच कुवाणिज्य कहे छे.

प्रथम दंतवाणिज्यने विषे आगरमां जइने गजदंत ते हाथीना दांत,तथा गायना पूछडानां चमर, मृगलानी मूंटीनी कस्तूरी, उलूकना नख, पंखीनां रोम तथा चर्म ते वाघनुं चामडुं,हरिणादि जनावरनुं चामडुं तथा हरिण, सावर अने गेंमा प्रमुखनां शिंगडां, वाघनी मूछना केश, कचकडुं, किरम जदाणा, रेशम, उन प्रमुख लीधां होय, ए माल जेवारें आगरमां लेवाने जाय, तेवारें भिल्लादिक कुइ लोक तरत गेंमा, मृग, हस्ती प्रमुख जीवोनी हिंसा करवामां प्रवृत्ते, महा अनर्थ करी नाखे, अने पोतानो जीव पण म लीन थइ जाय, लोजने माटें कदाच ते लोकोने एवुं कहेवुं पडे के,अमारे वास्ते सारा महोटा दांत आणी आपशो तो वधारे द्रव्य पामशो! इत्यादि कहेवुं पडे, माटें एवी चीजो आगरें जइ न लेवी.

बीजा लाखवाणिज्यने विषे, लाख, गली, मणशील, धावडी, महुडा, कपिला तूरी, साजीखार, शाक रोड,टंकण खारादिकनुं वहोरवुं. साबू, नांग कंदादिकनुं वहोरवुं एटले ते लेवो तेनो व्यापार करवो, ते पण महाहिंसा कारी अनर्थनुं मूल छे माटें तेने कुवाणिज्य कहीयें.

त्रीजा रसवाणिज्यने विषे रसनो वेपार तिहां रस ते मांसरस तथा मद्य अने मद्यांग ते मदिरानां अंग तथा मधु जे मध अने माखण, ए चार तो महाविगय छे, ते आकरां पाप हेतु छे; तथा वेशण ते तेल, दूध, दहीं घृत, गोल अने खांम प्रमुख रसवाली जे नरम चीजो छे, तेनो व्यापार, विक्रय करवो एटले वेचवुं ते पण त्याज्य छे. जेमाटें ए चीकणा रसवाली चीजोना ज्यां वासण उघाडां रहे, तिहां पण न्हाना महोटा जीवो आवी पडे, माटें ए कुवाणिज्य छे, बहु हिंसामय छे.

चोथा विषवाणिज्यने विषे विषनो व्यापार करवो. तिहां विष ते सोम ल, वछनाग, अफीण प्रमुख तथा हल ते जमीन खेडवानुं हल, मूशल, उखल, कोश ते खोह, कोदाली, दंताली, करवत, पावडा,दात्रा, अने हथि यार ते धनुष्य, तीर, तरवार, कटारी, बरछी,तोमर, फरसी, कुहाडो, छुरी प्रमुख जाणवा. तथा लोहनो, यंत्रनो, हडतालनो व्यापार,तथा कांकसी ते माथाना वाल साफ करवानी फणी दांतियादिक जाणवा. आदि शब्दथी नाल गोलादिक अनेक विष विस्तुने वेची वेचावी होय पोतें वेचे, बीजानी वेचावी आपे. ते सर्व व्यापारने विष कुवाणिज्य कहियें.

पांचमा केशकुवाणिज्यने विषे द्विपद ते दास, दासी, गुलाम प्रमुखने आजीविकाने अर्थे वेचाता लइने परदेशमां जइ वेचे, अने चतुष्पद ते गाय, नेंष, घोडा, उंट, हाथी, बलद, बकरी, पाडा, तेमज पंखी प्रमुखनो विक्रय कस्यो होय. ए पांच कुवाणिज्य कह्यां. हवे पांच सामान्य कर्म कहे छे.

पहेलुं यंत्रपीलन कर्मनेविषे अरहट्ट ते रेंटीयो, पावट्ट ते पावडां, कोल्हुं ते इक्षु पीलवानो यंत्र, लोढणी ते लोढणी, चरखा, तथा उखल जेने खारणीयो अथवा उखोर कहे छे अने खांडवानुं मुशल तथा लोट दलवानी घंटी अनेतिल,सरशव,एरंमादिक पीलवानी घाणी ए प्रकारें जेमां पीलनकर्म थाय तेवा यंत्रने वाह्या वहेवराव्या होय, चलाव्या होय, नवा करी वेच्याहोय.

बीजा निर्लांछन कर्मने विषे द्विपद ते बालकना कान नाक वींधवां. तथा कन्या अने विधवा स्त्रीना गुह्येंद्रिय संबंधि फूलनो नाश करवो तथा पुरुषने नपुंसक करवो अने चतुष्पद जे बलद, उंट,घोडा प्रमुख जीवो तेने आंकवा, एटले आंक पडाववा, मांन देइ त्रिशूल काहाडवां, तथा पाछणां एटले शरीरना वाल उतारवा, तथा कर्ण एटले कान तथा कंबल ते गलानी नीचें जे गाय वगेरेने लुलतुं चर्म रहे छे ते तथा मुष्क एटले अंम, ए सर्वेनुं छेदन करवुं अने पृष्ठिगालन एटले लादवुं शरीरना पुंछना नागने नार नाखी नाखीने नाठां पाडवां. तथा नासावेधादिक एटले नासिकानुं वींधवुं, आदि शब्दथी इजारो लइ आकरो कर बेसाडे, चोरधाडमां दोडादोडी करावे, निर्दय पणाथी तेनी उपर आकरां शस्त्र चलावे. इत्यादिक निर्दय पणाना कर्म पोतें कर्यां होय परने हाथें कराव्यां होय. ते सर्वेनिर्लांछन कर्ममां जाणवां.

त्रीजा दावाग्निदापन कर्मने विषे जे आ जंगलने वनने अग्निथी बाली साफ करशुं तो एमां खड एटले घास अने अन्न ते अनाज प्रमुखनी घणी निष्पत्ति थाशे! ते जणी पोतें तिहां दव दीये बीजाने कहीनें दव देवरावे.

चोथा शोषण कर्मने विषे, सरोवरनुं, जल शोषवी लीधुं होय, तथा खिह्न एटले उखर क्षेत्र अथवा बीडवाली जग्या तेनें खेडावी होय, तथा पाणीना क्यारा गलावी नाखे,तथा पोताना क्षेत्रमां पाणी आणवाने माटें पासेनां द्रह तलावने फोडावी नखाव्यां होय,ए सर्व शोषण कर्म कहियें.

पांचमा असतीपोषण कर्मने विषे कौतुकने अर्थे असती जे श्वान,

बिडाल ते बिल्लाडां, सूडा अने सालही ते मेनां तथा मोर अने कूकडां, न पुंसक प्रमुखने पाले, तथा डुराचार एटले माठा आचारवाला एवा दास दासी प्रमुखनुं पालण पोषण करवुं. ते सर्व असतीपोषण कर्म जाणवुं.

तथा ए कह्यां जे कर्मादान तेथी अनेरा एटले बीजां पण बहु एटले घणां जेमां पाप होय,एवा जे व्यापार व्यवसाय ते यत्न कस्या होय, जेम के माछी, कसाइ,वाघरी, चमार प्रमुख बहु आरंभी जीवोनी साथें व्यापार करवो,ते मने खरची सारु द्रव्य वगेरे आपवुं ते पण सर्व असतीपोषण कर्म छे. इहां अनुकंपा हेतुयें देवुं तेनो दोष नथी. ए प्रकारना आकरा कर्मबंधनां कारण एवां जे गुप्तपालनादिक पन्नरे कर्मादान तेमां स्थूल एटले महोटा कर्मो न आचरवा एवो नियम कस्यो छे, अने सूक्ष्मनी जयणा राखी छे. ए पन्नर अतिचार श्रावकें जाणवा, पण आचरवा नही. ए पन्नर अतिचा रमां जे कोइ सूक्ष्मबादर अतिचार पक्षदिवस मांहे० ॥

हवे भोगथी तथा कर्मथी एवा बे प्रकारना सातमा भोगोपभोग विरमण व्रतउपर पिता पुत्रनो दृष्टांत कहे छेः—कुरुदेशने विषे मुकुट समान हस्तिना पुर नगरमां मेघनामें व्यवहारीयो रहे छे. ते मेघनी पेरें लोकोने वल्लभ छे. देवकी नामें तेनी स्त्री छे, सुप्रभा नामें तेनो पुत्र छे. ते मेघशेठ, एक दिवसें कुसुमखंम नामा उद्यानमां रमवा गयो. तिहां कुबेरें जेनां चरण कमल पूज्यां छे, एवा एक कोढीया मुनिने देखीने जेटलामां ते शेठ मु निने नमस्कार करे छे, एटलामां ते कुबेर अदृश्य थइ गयो. तेवारें मेघ शेठ मुनिने पूछवा लाग्यो के, हे स्वामी ! जे तमोने नमे छे, ते रोगरहित थाय छे;अने तमें पोतें आवा कोढना रोगें करी केम आक्रम्या छो ? तेनुं कारण शुं छे? ते मने कहो. तेवारें मुनि बोल्या के हे शेठ ! करेला कर्मनो भो गव्या विना नाश थातो नथी, तेथी महारां पाछला भवनुं कर्म जे छे, ते हुं कहुं छुं माटे सावधान मनें करी तुं सांभल.

पूर्वे मगधदेशमां राजगृही नगरीयें कुरुचंद्र नामा शेठनो पुत्र मधुसू दन नामें थयो. तेने घरे एकदा एक अव्यक्त वेषधारी एवो मुनि भिक्षाने अर्थें आव्या. तेने शेठें हर्षथी निषिद्ध फल आपवा मांमयां. परंतु ते दर्शी नीयें फल निषेध्यां; पण लीधां नही. तेवारें ते लिंगीने पूछयुं, जे तमें ए फल शामाटें नथी लेता ? जे माटें तमारे कांइ व्रत पच्चरकाण छे ? तेवारें

ते लिंगी बोल्यो के ए महोटी वात छे. एटलुं कहीने चालतो थयो. तेथी फरी पाछले पहोरें ते लिंगी पासें जइने मधुसूदने तेनुं कारण पूछ्युं, तेवारें ते लिंगी कहेवा लाग्यो के, हुं प्रथम दीक्षा लइने पछी सूत्रनो अर्थ जाण्यो, वली पाछी दीक्षा मूकी दीधी. माटें मुजने धिक्कार छे ! जे महाराथी परी सह खमाणा नही,तेथी हवे हुं अप्रगट वेषने धारण करी अने श्रावकनां बार व्रत लइने सिद्धांत जाणायें सिद्धपुत्र एवुं नाम धरावतो विचरुं छुं. अने हुं जे निषिद्ध फल खातो नथी तेनुं कारण सांभल.

भोगोपभोग नामें श्रावकनुं सातमुं व्रत छे. ते व्रतमां बावीश अभक्ष्य अने बत्रीश अनंतकाय छांमवां कह्यां छे. वली जीवसहित फल खावानी मना छे. तथा बीजां पण फलनी संख्या करवी कही छे. जेथकी भोगना अंगनी खावानी सामग्री भवोभवें घणी थाय. वली ए व्रतमां सचित्त आहारादिक पांच दोष जे आकरा रोगना आपनारा अने सर्व प्रकारना भोगना अंतरायकारी छे ते टालवा. ते कारण माटें हे मधुसूदन ! एवा अनंतकाय मांहेला निषिद्ध एवां फल तमें आपतां छतां पण पापथकी बीक पामता थकां ते फल में लीधां नही.

एवुं सांभलीने शेठ पण तेनी पासेंथी सातमुं व्रत लेतो हवो. एक समयें ते शेठने म्लेछें पकडीने अनार्यदेशमां जइ मूक्यो. तिहां अनार्यलोकनी संगतथी मधुसूदने घणे प्रकारें व्रतने भांग्युं. तिहांथी मरण पामीने व्यंतर देवता थयो. व्यंतरनुं आयुष्य क्षय करी तिहांथी च्यवीने विशाला नगरीयें महोटी लक्ष्मीनो धणी ते हुं पुरुषदत्त नामें वाणीयानो पुत्र थयो. पाछला भवमां व्रतने जे अतिचार लगाड्या, तेणें करी महारा शरीरें ए रोग उत्पन्न थयो. एकदा उद्यानमां केवलज्ञानी मुनिने में दीठा. तेमनी पासेंथी पाछलो भव सांभली संसारथी घणो वैराग्य धरतो पोतानां करेलां पापने संभारीने में दीक्षा लीधी. ते महारुं पाप,आ रोग थवानुं कारण छे.

हवे शेठ पण ते मुनिनी पासें तेमनो पाछलो भव सांभली संसारथी घणो वैराग्य धरतो पोतानी देवकी नामें स्त्री तथा सुप्रभ नामा पुत्र सहित सातमुं व्रत लेतो हवो. पछी ते मेघशेठ पोताना परिवार सहित ते मुनिने प्रणमी पोताना आत्माने धन्य मानतो घेर गयो, अने मुनि पण अन्यत्र विहार करी गया. हवे केटलोएक काल गया पछी अनंत भवलगें

सेव्यो जे प्रमाद, तथा साधु अने साधर्मिना संसर्गना अनावथी तेम ना रे कर्मीपणाथी देवकी अने तेनो पुत्र सुप्रज्ञ ए बेहुने व्रतमां शिथिलपणुं थयुं. तथा पूजा अनुष्ठानमां पण अवरति थइ. तेवारें ते बेहुने शेठें कह्युं के,तमें प्रमाद केम करो छो? जे माटें विष खावुं ते सारुं,वैरी पण सारो,परं तु व्रत नांगवुं ते घणुंज खराब छे. कारण के नांगेलुं व्रत अनंतां दुःखने आपे, माटें ए रूडुं नही, एम शीखामण दीधी तो पण तेमने प्रथमनी पेरेंज प्र माद करता जाणीने शेठ नला उत्तम धर्मने विशेषें करवा लाग्यो, अने तेनी ईर्ष्यायें ते बेहु जण वली विशेषें धर्ममां प्रमाद करवा लाग्यां. ते देखीने शेठ विषाद पाम्यो, घरवासथकी उद्वेग पाम्यो. तेवारें कांइक धननुं शंब ल लइ तीर्थयात्रानुं मिष करी तिहांथी नीकली तीर्थयात्रा करवा लाग्यो.

हवे ते बे जण मर्यादा मूकीने धनें करी अंध थयां थकां सर्वत्र जयणार हित शंकारहित पापकर्ममां प्रवर्त्ते छे. एकदा शेठना दासना नेदथी तेने मिलापी करीने कोइ चोरें घरनुं सार आनरण हतुं ते लइ लीधुं. तेवारें सुप्रज्ञें राजा आगल जइ ते सर्व वात करी. राजायें कोटवालने कह्युं के, अरे ए शो आपणा गाममां उपद्रव थयो! तेवारें कोटवाल बोल्यो. स्वामी! आपणा शेहेरमां चोर तो शुं? पण चोरनो गंध पण नथी. तो बीजुं शुं आपने कहुं? तेवारें राजायें कह्युं. तो अरे कोटवाल! त्यारें आ चोरी केम थइ? चोरी थवानुं खोटुं कांइ कोइ कहे नही? तेथी एनो तमो मन दइने तपास करो. तेवारें सुप्रज्ञना सांनलतां. कोटवाल बोल्यो के,महाराज! आ सुप्रज्ञ तथा तेना पिताने बनतुं नथी. तेथी ते सुप्रज्ञनो बाप बिचारो कंटालीने यात्रानुं मिष करी घर छोडी गयो छे, माटें तेना पितानुं घर जा णी द्वेषथी तेणेंज चोरी करी हशे! तेमां संशय नथी, आ वात सांनली सुप्रज्ञने रीस चढीने कहेवा लाग्यो, के ज्यारें चोरी हुं करुं, त्यारें केम एक आनरणज चोरी लेहुं!! माटें तुं कोटवाल पदने लायकज नथी. आ वात सांनली कोटवाल पण रीस चढावी कहे छे. के त्यारें आ कोटवाल पद तुंज लहे, तेवारें सुप्रज्ञ कोप करीने कोटवालने कहेवा लाग्यो के,जे हुं इछुं, तो निश्चें एमज करुं. तुं एमां उतावलो न था! सुप्रज्ञ कोटवाल पदने लेवा वांछतो अहंकारें करी परिपूर्ण थको नेटणुं लइने राजा पासें आव्यो. रा जायें पण लोनना वशथी ते दिवसथी ते सुप्रज्ञने कोटवाल पदें स्थाप्यो.

तेवारें सर्व कार्यनेविषे दयारहित थको यमसरखो थइ वर्त्तवा लाग्यो. पछी चारें पण वृत्तांत जाण्युं. जे ए बापडो वाणीयो आपणने शुं करशे? एम चिंतवी रात्रें घरमां पेसी पूर्वे जेणें चोरी करी हती? ते चोरें सुप्रज्ञने हण्यो. तेवारें तेनी माता देवकी पण तेना शोकथी वली पण धर्मथी घणीज विरक्त थइ, विचारवा लागी. जे ए विघ्ननो करनार आ धर्मज छे. तेथी हवे आपणे शुं काम छे? माटे एथी सर्युं! पछी एक समयें सर्प जतां विषनी गरल तेनी उपर नाखी. ते विषें व्यापी थकी देवकी मरण पामी. तदनंतर एक समयें ज्ञातियें ते वृत्तांत परदेशमां गयेला मेघशेठने जणाव्युं, शेठ चिंतववा लाग्यो जे हाहा!! धर्मनो प्रमाद तो आ लोकमां पण घणा दुःखनो करनार छे! एवा प्रमादनुं कारण जे घरवास तेणेंकरी म्हारें सर्युं! एम चिंतवी गुरुपासें जइ ते चतुर, मोक्षसुखनी आपनारी दीक्षा अंगीकार करतो हवो. हवे पापरहित एवो मेघशेठ सद्गति पाम्यो, अने देवकी तथा सुप्रज्ञ ए बेहु जण घणुं संसारमां भम्यां.

एम घणे निपुणाइपणे भोगव्रतनी विराधनाथी चारगति रूप संसारमां भमवा रूप ते माताने तथा दीकराने घणुं दुःख उपन्युं एवुं जाणीने निरंतर आदरसहित व्रतभंग करवानुं वर्ज्जन करवुं; जे व्रतभंग न करे ते प्राणी इहलोकें अने परलोकें सुखीयां थाय, इति सप्तमव्रतें मेघश्रेष्ठिकथा ॥

अथ अष्टम अनर्थदंडविरमणव्रत प्रारंभः ॥

८ आठमुं अनर्थदंडविरमणव्रत चतुर्विध. अवझाणायरिए, पमायायरिए, हिंसप्पयाणे, पावकम्मोवएसे, १ आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान, अंतर्मुहूर्त्त उपहरुं धर्युं होय; अने वयर, कलह वाद, वेढि, अबोला, रूशणु, सराप, गाल, कर्कश वचन तणुं ध्यान ते अपध्यानाचरित. २ तथा झीलणुं, छांटणुं हींचवुं, द्यूतवुं, होड, वाद विकथादिक हास्यरस, पुण्यप्रभावनांग टाली नाटिक गीत, फाग, चाचर, खेल वाडी वेश करावबा; अने मल्ल, महिष, श्वान, कुर्कुट, जूझारवा. रोग, श्रम मूकी सर्वरात्रें सूइवुं. आलें फूल, फल, पान तणुं

तोडवुं. देहरे, पोशालें, तांबूलादिक दश आशातना तणुं करवुं, ते प्रमादाचरित. ३ तथा दाक्षिणपार्खें कोशि, को दालो, पावडो, धनुष; खड्ग, आग आपीयें,ते हिंसाप्रदान. ४ तथा घोडा कल्होडा समराव, खेत्र खेड, गाडुं वाह,हा ट मांड, इस्युं जे बोलीयें; ते पापोपदेश कहीयें. ए अनर्थ दंड चतुर्विध जे परिहरीयें, ते आठमा अनर्थदंडविरमण व्रततणा पांच अतिचार शोधुं. कंदप्पे, कुक्कुइए, मोहरिए, संजुत्ताअहिगरणे, उवभोगपरिभोगअइरेगे; कंदर्पलगें-स विकार वचन बोल्यां होय. कौकुच्य-भांडचेष्टा, मुख, नय नविकार करी लोक हसाव्या होय. मौखर्य-वाचालपणें पी यारी तांती, राडि, मर्म, मोसो, बोल्यो होय. संयुक्ताधिक रण-उखल, मुशल, घंटी,घाणी,निसाह,लोढुं,धनुष,बाण, जोत्र, पराणो, मेली मेहल्यां होय. स्नाने, भोजनें, पहेरवे, उढवे,अत्यासक्ति कीधी होय;तथा रात्रें माथुं गूंथ्युं गूंथाव्युं होय,वासीगारे लीपणुं कीधुं,कराव्युं होय. निकर्कशवचन-असत्य वचन बोल्यां होय॥ अनेरुं ए आठमा अनर्थदंडवि रमणव्रतविषे पक्षदिवस० ॥ एटले त्रण, गुणव्रत हूआं.

अर्थः—हवे आठमुं अनर्थदंडविरमण नामें त्रीजुं गुणव्रत छे. तिहां आपणुं अथवा आपणा स्वजननुं जे कार्य तेने अर्थदंड कहियें, पण जेमां पोताने तथा पोताना स्वजनने कांइ लाभ नथी. एवा निष्फल कर्मने अ नर्थदंड कहिये. एटले प्रयोजन विना जे पुण्यरूप धननो नाश करीने पोता ना आत्माने दंडाववुं, पापकर्मैं करी लीपावयुं, अर्थात् अर्थविना दंडाववुं तेने अनर्थदंड कहियें. ते अपध्यानाचरितादि भेदें चार प्रकारनो छे, तेने जे मुहूर्त्तादिक कालनी मर्यादायें निषेधवुं तेने अनर्थदंडविरमणव्रत कहीयें. हवे ए अनर्थदंडना चार प्रकार छे, ते कहे छे.

एक अवज्झाणायरिय एटले अपध्यानाचरित अनर्थदंम, बीजो पमाया यरिय एटले प्रमादाचरित अनर्थदंम, त्रीजो हिंसप्पयाण एटले हिंसाप्र दान अनर्थदंम, अने चोथो पावकम्मोवएस एटले पापकर्मोपदेश अनर्थ दंम. ए चार प्रकार अनर्थदंमना जाणवा.

तिहां प्रथम अप एटले मातुं एवुं जे आर्त्तध्यान अने रौद्रध्यान ते ध्याननुं आचरित एटले आचरण कर्युं होय. अर्थात् अंतर्मुहूर्त्त पर्यंत उपहरुं क्रोध धारण कर्यो होय, तथा कोइनी साथें वैर करवानुं ध्यान, कलह करवानुं ध्यान, वादविवाद करवानुं ध्यान, वेढ एटले वढवाड कर वानुं ध्यान, अबोला रहीने रुसणुं करवुं, सराप देवो, गाल देवी, तथा क र्कश एटले मागं कठण वचन बोलवानुं ध्यान आकुलचित्तें चिंता करवी तेने अपध्यानाचरित अनर्थदंम कहीयें.

तथा बीजुं झीलणुं एटले पाणीमां झीलवुं, ढांटणानुं ढांटवुं. द्यूतवुं एट ले जूवटुं रमवुं, वाद करवो, विकथा ते स्त्रीकथा, देशकथा, राजकथा अने ज्ञोजनकथा ए चार विकथानुं करवुं, तथा पुण्यप्रज्ञावना जेथी थाय तेना अंग जे जिनपूजा, पडिक्कमणादिकनां अनुष्ठान, शास्त्रश्रवणादिक ढे, तेने टालीने जे थकी हास्यरस उत्पन्न थाय एवा नवनवा प्रकारना नाटक करावचा गीत गवराववां, अथवा हास्य ते हास्य विनोद करवा, अने रस ते रसगृद्धिना वधारनारा एवा मिष्टान्नादि रसनी वखाण करवी. होरीना फाग गवराववा, खेलवा, चाचर ते ज्ञोआ ज्ञरडा नचावीनें चाचर काहाडवा, अथवा चाचर ते गरबीनां नवरात्रीमां चाचर करावे ढे, ते कराववां, खेल कराववा, वाडी बाग बगीचामां फरवुं, नवा नवा दैत्यादिकना वेश कराव वा, तथा मल्लयुद्ध करावचुं, महीष ते पाडानें झूझारवा तथा श्वान ते कूतरा अने कुर्कुट ते कूकडा तेने मांहोमांहे झूझारवा, अने शरीरमां रोग तथा पंथ अथवा मेहेनत करवानो श्रम कांइ पण न होय तो पण प्रमा दने वश थका निरर्थक धर्मध्यानादिक शुज्ञकृत्य न करतां सर्वरात्रें एटले संपूर्ण आखी रात्रि पर्यंत सूइ रहीने निद्रा लेवी, तथा आलें एटले लीला अथवा आलें एटले निरर्थक पणे फूल, फल, अने पान तेने वृक्षोमांथी त्रोडी लेवुं. तथा देहराने विषें, पौषधशालाने विषे तांबूल आदिक दश

आशातनाउ जे कहेली ढे ते आशातनाउनुं करवुं, ते सर्व प्रमादना वश थी आचरित एटले आचराय ढे, माटे एने प्रमादाचरित कहियें.

त्रीजुं दाक्षिणता पाखें एटले दाक्षिणताविना कोइने कोश, कोदाली, पावडो, धनुष्य,खङ्ग एटलें तरवार तथा आग एटले अग्नी इत्यादिक पदार्थ सर्व जीवहिंसानां अंग ढे, ते आपीयें. ते हिंसाप्रदान एटले तेथी हिंसानुं प्रकर्षेंकरी आदान एटले ग्रहण थाय, माटें एने हिंसाप्रदान कहियें.

तथा चोथुं नाहक कारणविना कोइने पापनो उपदेश करेः—के जाइ आ घोडा तथा कल्होडा ते वृषज प्रमुख महोटा थया; माटें हवे एने समरावो तो काममां आवे, तथा आ खेत्र फोकट पडी रह्युं ढे, तेने खेडो, एमां पाणीनी नीक मूको, तो धान्य सारुं नीपजशे! अथवा आ तमारुं गाडुं ढे, तेनें वाह एटले वहेवरावो, तथा क्यारनो दिवस तो उग्यो ढे, हजी पण केम घरमांज सूइ रह्या ढो! उठो हाट मांमो, तो वकरो थाय, तथा बीजा पण कोइने कहे के आ फलाणो तमारो वयरी ढे, तेनो नाश करो, घात करो, एवी रीतनुं जे विना कारणे बोलवुं ते सर्व पापोपदेश अनर्थ दंम कहीयें. ए चतुर्विध एटले चार प्रकारना अनर्थदंमने जे परिहरवुं, एटलें त्याग करवो, तेने अनर्थदंमविरमणव्रत कहियें. ते व्रतनेविषे अनाजोगादिकथी जे अतिचार दोष लाग्या होय तेने पडिक्कमुं बुं.

ते पांच अतिचारनां नाम कहे ढे. एक कंदप्पे एटले कंदर्प अतिचार, बीजो कुक्कुइए ते कौकुच्य अतिचार, त्रीजो मोहरिए एटले मौखर्य अतिचार, चोथो संजुत्ताअहिगरणे एटले संयुक्ताधिकरण अतिचार, पांचमो उवजोगपरिजोगअइरेगे एटले उपजोगपरिजोगातिरेक नामा अतिचार. ए पांच अतिचारनां नाम कह्या. हवे एनो अर्थ कहे ढे.

प्रथम कंदर्पलगें एटले कंदर्पने दीपाववा माटें सविकार एटले विकार सहित वचन बोल्यां होइयें, ते प्रथम कंदर्पनामा अतिचार जाणवो.

बीजो कौकुच्च ते जांम जवाइयानी चेष्टा प्रमुख करवी, तथा मुखने विकारें करी, अने नयन एटले चक्षुने विकारें करी, जृकुटीने विकारें करी लोकोने हसाववा ते बीजो कुचेष्टा अतिचार.

त्रीजो मौखर्य ते मुखमांथी अतिशय वाचाल पणे असमंजस वचन बोलवां. जेम पीयारी एटले पारकी तांत करवी, एटले पारकी कोइ सारी

माठी वात होय तेनी तांत कस्यां करवी, ठोडवीज नही. राडिकरी महोटे सादें करीने कोइनुं मर्म मोसो एटले जूतुं मर्म बोलवुं, अर्थात् खोटुं मर्म कहे ते त्रीजो मौखर्य नामा अतिचार जाणवो.

चोथो संयुक्ताधिकरण. तिहां अधिकरण ते उखल मुशल जेमां बाजरी मसाला प्रमुख नाखीयें पठी तेने मुसलें करी कूटीये ते जाणवा; अने अनाज दलवानी घंटी तथा सेलडी पीलवानो शीसुडो, तिल प्रमुख पील वानी घाणी, तथा नीसाह ते दाल वगेरे वाटवानो पथरो, लोढुं, धनुष्य, बाण, जोत्र, पराणो, इत्यादिक अनेक प्रकारनां हिंसाकारी अधिकरण ठे. तेने मेली एटले एकठा करी मेल्या होय, एटले तैयार करी राख्यां होय, ते एवी रीतें के जेने जोतांज कोइ तेनो उपयोग करवा मागतो होय तो, तेनो तेजवखत उपयोग करी शके. माटें एवा पदार्थ राखवाज नही, जो राख्या तोपण एमां कांइ पण व्यंग राखवुंज. एम ठतां ते पदार्थ तैयार राख्या होय, कोइने काम पडवाथी तरत तेमने आपवामां आवे, एवा हेतुथी दाक्षिणतादिक देखाडवा माटें बीजाने देवां देवराववां ते चोथो संयुक्ता धिकरण नामा अतिचार जाणवो.

पांचमो उपनोगपरिनोगातिरेक अतिचार ते पोताना उपनोग तथा परिनोगमां खप योग्य जे वस्तु जोइयें, ते करतां पण अतिरेक एटले वधारो करवो, जेम के स्नाने एटले तैलमर्दनसहित अंग पखालीने स्नान करवुं तेने विषे, पाणी तथा सुगंधि तेलादिक खप करता छिगुणा चोगुणा करी राखे, तथा नोजने एटले विचित्र प्रकारना नोजनने विषे, पहेरवे एटले वस्त्रानूषणा दिक पहेरवाने विषे, उढवे एटले वस्त्रादिक उढवाने विषे अत्यंत आसक्ति कीधी होय, तथा रात्रें माथुं गुंथ्युं गुंथाव्युं होय, तथा वाशीगारथी लीं पणुं कर्युं कराव्युं होय, निकर्कश एटले खोटां कठण वचन बोलायां हो इयें. तेमज असत्य वचन बोलायां होय. अनेरुं ए आठमा अनर्थदंफविर मण व्रतने विषे जे कोइ सूक्ष्म बादर अतिचार हूउ होय ते सवि हुं मन०॥

हवे ए व्रत उपर चित्रगुप्तनी कथा कहे ठेः—कौशल्यानगरीयें जयशेखर नामें राजा थयो, तेनी मनोरमा नामें स्त्री, ते मनोरम एवा गुणें करी स हित ठे. तेना एक पुरुषदत्त अने बीजो पुरुषसिंह एवे नामें बे पुत्रो ठे. तेमज ते राजानो सर्व शास्त्रनो जाण एवो वसुनामें पुरोहित ठे. तेने पण

चित्रगुप्त नामा पुत्र ले. ते पुत्रने क्रीडा कुतूहल बहु प्रिय ले. एवी रीतें पोतपोतानी स्थितीयें करी ते सर्वोए केटलोक काल अतिक्रम्यो.

हवे एकदा राजा सज्ञायें बेठो ले. तेने अकस्मात् वायुना प्रकोपथी पेटमां शूल प्रगट थयुं. अने तेथी क्षणेकमां ते राजा मरण पाम्यो. तेवारे तेना बे पुत्र परिवारसहित शोक रूप कंटकें करी पीड्या थका राजाना शरीरने अग्निसंस्कार करता हवा. पढी महोटो पुत्र राज्यने अणवांछतो पण प्रधानें कोइक रीतें समजावीने तेने राज्यपाटें बेसाड्यो, अने लघु पुत्रने युवराजपदें स्थाप्यो. हवे पुरुषदत्तराजा पोताना पितानुं मरण संज्ञारतो शोकाक्रांतमति थको सज्ञामां बेठा थकां पुरोहितने कहेवा लाग्यो. जे मरण पामेला महारा पिताना मारी उपर करेला उपकारनो कांइ पण बदलो वालवाने अर्थें जो आ महारी महोटी राज्यलक्ष्मी सर्व खरचाइ जाय,तोपण जले! पण महारे कांइ ते मृत्यु पामेला बापना उपकारनो यथा शक्ति जरूर बदलो वले एवुं काम करवुं. तेवारें वसु पुरोहित पृथ्वीनाथने कहेवा लाग्यो के, हे राजन्! पिताना उपकारनो बदलो तो पुत्रथी पूर्णरीतें वले नही; पण पितानी पढवाडे पिताना पुण्यने अर्थें पुत्रें सुवर्णादिकनुं दान देवुं. जे माटें पुत्रनुं दीधेलुं पिता पामे. तेथी कांइक पिताना उपकारनो बदलो वले. एवुं पुराणमां कह्युं ले. एटला माटेज लोक पुत्रनी प्रार्थना करे ले. ते सांजली सर्व पाखंमी दर्शनीने तेडावीने राजा पोतें तेमने तरुउ, रूपुं, गाय, जूमि, तिल, कपास, प्रमुख आपवा लाग्यो. ते वखत सीमंधर नामा गुरु यति हता, तेने पण तेडावीने राजा सुवर्ण प्रमुख आपवानी निमंत्रणा करतो हवो. तेवारें गीतार्थ गुरु एम कहे ले के, हे दातार! आ तहारुं जे दान ले, ते जीवघातनुं करनार ले, माटें सर्वथा अजयना देनारा एवा साधुनें ते दान लेवुं घटे नही. जेथी क्रोध,लोजादिक घणा थाय, तथा चारित्रनुं हरण करनार एवुं सोनुं, अने रुपुं ते साधुने न देवुं. केम के, जे विष्ठा खाय, पोताना शिंगडां प्रमुखें करी जीवने हणे, अने पोताना पुत्रनी साथें मैथुन सेवे, एवी गायना दानें करीने शुं पुण्य थाय? वली जे पृथ्वीनो संकल्प तथा जेना विदारवाथी सगर्ज्ञा स्त्रीनी पेरें पृथ्वीमां अनेक जीवो मरण पामे, तेवी पृथ्वीना दाननी वांठा पण केम करीयें? वली जे तिलमांहे संख्यारहित त्रस जीवो

सदा देखाय, तेना दानने कोण मान्य करे? एवा दानना दातार तथा ले नार ते सर्व धांची जेवाज जाणवा. वळी सर्व आरंजथी रहित एवा यति ने बीजनो संघट्ट स्पर्श ते ध्याननो विघ्नकारी छे. तेवो शुं छे? तोके कपास छे! माटें कपासना दानथी पण शुं? वळी सुवर्ण, रजत, घृत, तेल, प्रमु ख खंम्र खंम्र करि आपियें, अर्थात् गोनिष्क्रयजूत सुवर्ण, रूपुं, घृत, तेल, वगेरे प्रत्येकनिष्क्रयना जागो करी करीने जुदा जुदा ब्राह्मणोने आपवा, ते गोखंम्रदान कह्युं, तो एथी शुं थयुं? तथा जे लोहना अंशें करी उत्पन्न थये ला आर वगेरे शस्त्रोथी बळद प्रमुख प्राणीउ पीडा पामे छे, ते लोहना दानथी पण शुं? अर्थात् कांहिज नहि.

वळी हे राजन्! निपुण पुरुष ज्ञान आणीने चिंतवे तो एकनुं करेलुं पुण्य तेनुं फळ वळी बीजो कोइ पामे! एम नज थाय. जेम एक जनना ज मवाथी बीजो जन तृप्ति न पामे, तेनी पेठे ए जाणी लेवुं. माटें मूआने प्रा प्त थवाने अर्थें जे संकल्पीने आपे छे, ते जस्मना राशिउपर होम कस्यानी परें निष्फळ थाय छे. जे पोते आचरेलुं कर्म तेज साथें आवे छे. बीजुं कांइ आवतुं नथी. एम न होय तो. जन्मांतरे कृतकर्मनो जोग विना नाश थाय, अने अणकीधां कर्मनो जोग आ जवमां लेवानो प्रसंग आवे. ए कृतना शाकृताच्युपगम नामक दोपनी प्राप्ति थाय. माटे गोदानादि ते निष्फळ छे.

एवुं सांजळीने राजा प्रीति पाम्यो, अने कहेतो हवो के, हे जगवन्! तो हवे अमें शुं शुं आपीयें? तेवारें ते गुरु कहेता हवा के, हे राजन्! बेंताळीश दोषेकरी रहित जे अन्न पाणी उपधि प्रमुख धर्मनां साधन छे, तेनुं दान सुपात्रने आपवुं. ते उत्तमदान कहीयें. एवुं सांजळीने राजा पो ताना जाइसहित हर्षवंत थको घणां वस्त्र पात्रादिकने जक्तियें करी गुरुनी आगळ ढोकतो हवो. तेवारें तेना जावना जंगनी बीहीकथी गुरुयें तेमांथी थोडुंशुं लीधुं. पछी बे राजपुत्रें गुरुने जक्तियेंकरी वांद्या, नंतर आचार्य पो ताने स्थानकें गया. हवे राजा पोताना लघु जाइने कहे छे के, ए मुनि निःस्पृही परोपकारना करनार, करुणारसना समुद्र अने तत्त्वना जाण छे. माटें ए मुनि अमारे सेववा योग्य छे. ते सांजळी लघु जाइयें कह्युं, के हमणांज तेमनी सेवा करीयें. एम कही बे जाइ सीमंधर गुरुनी पासें जइ नमस्कार करीने तिहां बेठा. एटले गुरु कहेवा लाग्या के, जेम सो

नाने कसी, छेदी, तपावी, ताडन करी तेनी परीक्षा करीयें छेयें, तेम पंमित जनोयें दया, श्रुत, तप अने शील ए चार वानायें करी धर्मनी पण परीक्षा करवी. एवुं मुनिनुं वचन सांजली पुरुषसिंह राजकुमर प्रथम पोतानी माता अने पछी पोताना जाइनी पासेंथी रजा लइने ते राजपुत्र दीक्षा लइ गुरुनी साथें विहार करी अन्यस्थानकें गयो. तिहां सूत्र अने तेनो अर्थ जणतो आकरां तपने तपवा लाग्यो. अनुक्रमें डुःखें पामीयें एवुं अवधिज्ञान पाम्यो. तेवार पछी ते मुनि कुटुंबने जोवा माटें कौशल्या नगरीयें आव्यो, तिहां राजा अने नगरना सर्व लोक पण तेने नमस्कार करवा गया. मुनिने नमीने सर्व बेठा. तिहां मुनियें धर्मदेशना दीधी. तेवारें एक कठीयारे प्रतिबोध पामीने दीक्षा लीधी. ते जोइ पुरोहितनो पुत्र जे चित्रगुप्त हतो ते कठीयाराने कहेवा लाग्यो के, आ दीक्षा लेवाथी तें घ णुज रूडुं कीधुं. जेमाटें डुःखने जलांजलि दीधो, जूखें मरवाथी बूट्यो, हवे तुं कांइ पण धंधो उद्यम कस्या विना निचिंतपणें अन्नादिक सुखें पा मीश. वली राजानी वेठथी बूट्यो, अहो! अहो! आ वेषनुं माहात्म्य तो जूउ!! कहेवुं छे!!! एवी पुरोहित पुत्रनी चेष्टा करवानी वातो ज्ञानें करी मुनियें जाणी. तेवारें मुनि बोल्या के तुजने हजी पण अनर्थदंम मू कतो नथी. ए तुजने पूर्वे पण विडंबनानो करनार हतो.

तेवारें चित्रगुप्त बीहीतो थको गुरुने नमीने पूछवा लाग्यो के,हे प्रजु! कहेवो ते अनर्थदंम छे? अने एथी मुजने शी वीडंबना थइ छे? गुरु बो ल्या के जे कीधाथकी पोतानुं तथा स्वजनादिकनुं कांइ पण कार्य न थाय, तेने अनर्थदंम कहीयें. ते अनर्थदंम अपध्यानादिक जेदें करी चार प्रकारें कह्यो छे. ते चारगतिनां आकरां डुःख तेना समूहनुं घर छे. ए व्रतने विषे कंदर्पादिक पांच अतिचार छे, ते ढांमवा. तेना आचरणथी जवोजवने विषे माठी योनि तथा कुशीलादिकनी प्राप्ति थाय. ए अनर्थदंमनुं स्वरूप तुजने कह्युं.

हवे एनी विटंबना सांजल. पूर्वें जद्दिल नामें नगरने विषे जिनदत्त नामें श्रावक हतो. तेने सेन नामें पुत्र हतो. ते बालपणाथीज सुगुरु पासेंथी श्रावकनां बार व्रत लेतो हवो. तेहनी व्रतनी इछा मातायें जाणीने तेने विटलपुरुषनी संगत करावी. तेवारें तेणें कुसंगना योगथी प्रमादने वशें रा जाना विरोधी एवा राजपुत्रनी साथें मैत्री कीधी. पछी तेनी सोबतथी कं

दर्प्पादिक करे, पापध्यानादिक करे, एक वखतें राज पुत्र कोइक बीजानी साथें विचार करतां तेने जिनदत्तना पुत्र सेने कह्युं के, तह्मारो पिता वृद्ध थयो छे, माटे तेने हणीने कां हजी राज्य लेतो नथी ?

ते विचार प्रधानें जाणीने राजाने कह्युं. तेवारें राजायें विचारीने निर्धा र्युं के, प्रथम तो ए मतिना आपनार वणिक्पुत्रनेज हणवो. एवो हुकुम सांजलीने राजाने माणसें तेने बांधीने बंदीखानामां नाख्यो. पछी तेना कु टुंबने विडंबना उपजावीने कुटुंबना देखतांज तेने हण्यो. तिहां डुःखें पीड्यो थको मरण पामीने नरकने विषे नारकी थयो. तिहांथी च्यवी एकनव ति र्यंचनो करीने पछी जांमना कुलमां जइ उपन्यो. तिहां कंदर्प्पादिक अनर्थ मां तत्पर थको मरीने व्यंतर देवता थयो. त्यांथी च्यवीने हमणा पुरोहि तनो पुत्र तुं थयो छो. माटें हे चित्रगुप्त ! पूर्वजवना अन्यासथी हमणां पण तह्मारे क्रीडामां तत्परपणुं छे. ते सर्व अनर्थनुं कारण छे. ए वात गु रुमुखथी सांजलीने चित्रगुप्तने जातिस्मरणज्ञान उपन्युं. तेवारें जवच्रमण करवाथी घणुं बीहीतो थको च्रांतिरहित थयो थको तपप्रत्यें ग्रहण कर तो हवो. राजादिक पण विशेषें धर्म पामी गुरुने प्रणमीने पोताने स्थानकें गया. वली ते साधु पण हवे अन्यस्थानकें विहार करता हवा. हवे ते चि त्रगुप्त मुनि सार्थ दंम अथवा अनर्थदंम ते सर्वने मन, वचन, कायाथी छांमतो हवो. पछी मन, वचन, कायायें करी जीवदया प्रधानज्ञानादि आ चार अनिग्रहीने ते इहलोके परलोकें सुखनुं थानक थयो. एम जाणीने हे ज विजनो अनर्थदंम जे सुधर्म अने ड्व्यादिकनो क्षय करनारो, महा अनर्थना समूहनो करनार तेने पोतानी शक्तिने अनुसारें सर्वथा परिहरवो. तो सदा क्षेम अने मंगलिकनी घणी श्रेणी हाथमां थाय. ॥ इति चित्रगुप्तकथा ॥

हवे ए व्रत उपर बीजी कथा कहे छेः—बंधुरा नगरीयें वीरसेन राजा छे, तेना शूरसेन अने महासेन नामें बे पुत्रो छे. तेने मांहोमांहे घणी प्रीति छे. एकवार महासेननी जीनें रोग उत्पन्न थयो. तेने घणा उपचार कस्या पण तेथी लगारमात्र गुण न थयो. एटली डुर्गंधता शरीरमांथी नीकले ! के तेथी करी कोइ कुटुंबनुं माणस पण एनी पासें आवी बेसी शके नही. ते देखी स्नेहने लीधे महोटा जाइ शूरसेन कुमरें प्रतिज्ञा करी के, जिहां सुधी महारा जाइनो रोग टले नही, तिहां सुधी महारें अन्नपाणीनो नि

यम छे, अने जो ए रोगें करी ए नाइ मरशे, तो हुं पण एनी साथें अन शन लइश. एम कही तेनी आगल बेठो. मक्षिकाउने उडाडे, अने नवकार मंत्रें मंत्रीने फासुं पाणी पाये, जीने सींचे. एम करतां वेदना उपशमी, जीन सारी थइ, राजा हर्ष्यो. एवामां अवधिज्ञानना धारक श्रीनद्रबाहु स्वामी गुरु तिहां आव्या; तेंने बेहु नाइयें जइने वांद्या, अने शूरसेन कु मरें नाइनी जीननां रोगनुं कारण पूछे थके गुरु कहेवा लाग्या के, मणि पुर नगरें मदन नामें क्षत्रिय महाश्रावक हतो. तेहने धीर अने वीर एवे नामें बे पुत्र हता. ते एकदा वनमां गया. तिहां पोतानो मामो वसंत नामें साधु बहु पुरुषें वींट्यो नूमिकायें पड्यो दीठो. तेवारें बीजा पुरुषोने पूछ ता हवा के, आ शुं छे ? तेने एक पुरुषें जबाब दीधो जे हमणांज आ सा धुने एक सर्प, मशीने आ बिलमां एटले राफडामां पेसी गयो. तेवारें वीर नामें न्हानो नाइ कहेवा लाग्यो के, अरे रांको! तमें ए पापी सर्पने जोतां वेंतज केम मार्यो नही ? ते सांनलतांज मोहोटो नाइ धीर, तेंने वारीने कहे छे के? अरे नाई! फोकट जीनें करी आवां पाप कां उपार्जे छे? तेवा रें वीर बोल्यो के, नाई साधुनो मारनार साप छे. तेनें मारी नाखीयें तो धर्मज थाय छे. तो हजी मात्र मारवानी वात कही छे. तेमां पुण्यने बदले पाप किहांथी आवी लाग्युं ? एम करवाथी जो पाप लागतुं होय, तो ते पाप नलें महारी जीनें आवी बेसो. पछी धीरें मणि,मंत्र,उपधिने बलें करी ते साधुने विष उतारी साजो कीधो. हवे घणा काल पछी ते धीर मरण पामीने इहां तुं शूरसेन थयो छो; अने वीरनो जीव मरी महासेन नामें तहारो न्हानो नाइ थयो छे. ते वीर कुवचन बोल्यो, माटें एनी जीनें रोग थयो. वली साधुने साजो कीधो ते पुण्यना योगें तुजने रोग टालवानी लब्धि उ पनी. ए वात मुनि पासेंथी सांनली बेहु नाइयोने जातिस्मरण ज्ञान उप न्युं. तेवारें दीक्षा लइ चारित्र पाली मोक्षें पोहाता, माटें अनर्थदंम विर मण व्रत पालवुं. एटले इहां त्रण गुणव्रत पूर्ण थयां.

हवे चार शिक्षाव्रत कहे छे.

९ पहेलुं सामायिकव्रत. समो रागद्वेषरहित नाव कीजें, ते सा मायिक कहीयें॥ए नवमा सामायिकव्रततणा पांच अतिचारसोधुं

मणदुप्पणिहाणे, वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे, सामा
इयस्स अकरणया, सामाइयस्स अणवुठियस्स करणया,
सामायिक कीधे आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान, आहट्ट, दोहट्ट,
चिंतवी मनदुःप्रणिधान कीधुं होय, वचनें करी जा, आव,
ले, घे, आण, मूक, इस्युं सावद्य वचन बोल्युं होय, उघा
डे मुखें वात कीधी होय, कायायें करी, पडिलेह्या प्रमार्ज्या
पांखे खमासमण, वांदणां दीधां होय. हाथ, पग, आसण
हलाव्यां होय, छती वेलायें सामायिक कीधुं न होय. करी
ने विस्मृत कीधुं होय. अनवस्थित सामायिक करतां वेला,
अवेला जोइ न होय. बे घडी पूगी पांखें पार्युं होय. करीने अ
रहुं परहुं परिभ्रमण कीधुं होय. कण, कपाशीया, फूल, फल,
माटी, पाणी, स्त्रीयादिकतणो संघट्ट हूउ होय. निद्रा विकथादि
क प्रमाद कीधो होय, सचित्तने संघट्टे इरियावहि पडिक्कमी न
होय. अनेरुं ए नवमा सामायिकव्रतविषे पक्खदिवसमांहे०॥

अर्थः— चार शिक्षाव्रतमां पहेलुं सामायिक व्रत छे. जे रागद्वेषरहित सम एटले समता भाव तेनो आय एटले लाभ जेणेकरी होय, ते समाय कहियें, अने समाय तेनेज सामायिक कहीयें. ए नवमां सामयिक व्रतने सम्यक् प्रकारें अणपारवे करी पांच अतिचार लागे छे, ते शुद्ध करुं. हवे ते पांच अतिचारनां नाम कहे छे.

एक मनोदुःप्रणिधान अतिचार, बीजो वचनदुःप्रणिधान अतिचार, त्रीजो कायदुःप्रणिधान अतिचार, चोथो सामायिक अकरणनामा अतिचार पांचमो सामाइयस्स अणवुठियस्स करणया एटले सामायिक अनवस्थित करण नामा अतिचार जाणवो. हवे एनो संक्षेपथी अर्थ लखियें छैयें.

प्रथम सामायिक कीधे थके मनमां आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान, आहट्ट दोहट्ट चिंतवीने मनोदुःप्रणिधान करे, ते मनोदुःप्रणिधान नामा अतिचार

बीजो वचने करी अमुक तुं अमुक स्थानकें जा, अमुक ! तुं इहां आ

व, अमुक ! तुं आ चीज ले, तुं मनें आ चीज आप, तुं अमुक वस्तु इहां आण, तुं आ चीज आंही मूक. एवुं सावद्य एटले पापसहित वचन बोल्युं होय; तथा उघाडे मुखें वात करी होय, पद अक्षरादिक अशुद्ध सामायिकमां बोले. ते वचनदुःप्रणिधान अतिचार जाणवो.

त्रीजो कायायें करी आणपूंजे अणप्रमार्जे स्थानके बेसें, तथा शरीरने पूज्या, प्रमार्ज्या विना खमासमणां वांदणां दीये, सामायिकमां पोताना शरीरना अवयव जे हाथ, पग, प्रमुख तथा बेसवानुं आसन प्रमुख छे तेने हलाव्या करे, भिंतने पुंठ लगाडी बेसे, ते कायदुःप्रणिधान अतिचार जाणवो.

चोथो सामायिक करवानो वखत होय, तेम छतां सामायिक न करे, अथवा करीने वीसारी मूके, जे सामायिकनां सूत्र उच्चर्यां के नथी उच्चर्यां. पाल्युं के नथी पाल्युं, एवी विस्मृति प्रबलप्रमादना उदयथी राखे, ते सामायिक अकरणनामाअतिचार, अथवा स्मृतिविहीन अतिचार जाणवो.

पांचमो अनवस्थित अतिचार ते सामायिक करतां वेला अवेला जूवे नही, तथा सामायिकनो बे घडीनो काल पूर्ण करवो जोइयें, ते बे घडी पूरी पारखें एटले पूर्ण थइ न होय, ते विना पारे एटले बे घडी पूर्ण थया पारखेंज पारे; पण बे घडी पूरी न करे, अथवा करे तो यद्वा तद्वा करे, उतावलथी पारे, ए पांचमो अनवस्था अतिचार जाणवो.

तथा सामायिक करीने पछी अरहुं परहुं इहां तिहां परिभ्रमण करे, सामायिकमां निद्रा करे, तथा देशकथादिक विकथाउ आदि प्रमाद सेवन करे, शून्यपणें सामायिक करे, सचित्त वस्तुनो संघट्ट थयेथी इरियावहि पडिक्कमे नही; तथा कण, कपासीया, फूल, फल, पान अने स्त्री आदिक तणो संघट्ट थयो होय, अनेरो एटले ए मांहेलो नवमा सामायिक व्रत ने विषे पक्षदिवसमांहे जे कोइ सूक्ष्मबादर अतिचार० ॥

हवे सामायिक करतां थकां बत्रीश दोष टालवा, तेनां नाम लखीयें छेयें.

प्रथम सामायिक करतां मनना दश दोष छे ते कहीयें छेयें.

१ मनमां विवेक न धरे.	२ यशकीर्त्तिनी वांछा राखे.
३ मनमां धननी वांछा राखे.	४ मनमां गर्व आणे.
५ बीहीतो बीहीतो सामायिक करे.	६ धन पामवानुं नीयाणुं करे.
७ संशयसहित सामायिक करे.	८ मनमां रीष धरतो सामायिक करे.

ए अविनीत थको सामायिक करे. १० नक्तिरहित थको सामायिक करे.

हवे सामायिकमां वचनना दश दोष कहे छे.

१ सहसात्कारें अणविमास्युं बोले. २ कोइने जुतुं आल आपे.
३ अपेक्षा विना स्वेछायें बोले. ४ कुवचन बोले.
५ सूत्र नणतो वचन संक्षेपे. ६ साधर्मी सार्थे कलह करे.
७ देशादि चार विकथा करे. ८ परनी हांसी मस्करी करे.
ए पद संपदायें अशुद्ध सूत्र नणे. १० उतावलुं मुणमुण बोले.

हवे सामायिक करतां कायाना बार दोष कहे छे.

१ वस्त्रें अथवा हाथें पलांठी वाली बेशे. २ आसन आघु पाछुं हलावे.
३ दृष्टी चपलपणे चारे दिशे जोयांकरे. ४ कांइ सावद्य कार्य करे.
५ थांने तथा नींतें उठींगणो लीये. ६ अंगोपांग संकोचें, विस्तारे.
७ आलस मोडे. ८ करडका मोडे. ए शरीरनो मेल उतारे.
१० खाज खणे. ११ सर्व अंग वस्त्रथी ढांके. १२ निड्रा करे.

ए रीतें दश मनना,दश वचनना अने बार कायाना सर्व मली बत्रीश दोष थया तेंने त्यजीने सामायिक करवुं ते शुद्ध छे.

हवे इहां शिष्य गुरुने पूछे छे के, हे नगवन्! सामायिक लइने पछी सर्वथा मननो संवर तो करी शकियें नहीं; अने मनना कुव्यापारें तो अवश्य सामायिक नांजे, तेथी एक तो मनना कुव्यापारनुं पाप लागे, अने बीजो सामायिकनो नंग थाय, वली तेनुं प्रायश्चित्त लेवुं पडे, माटें अविधियें जे सामायिक करवुं ते करतां नहींज करवुं ते नलुं छे.

गुरु उत्तर आपे छे. हे शिष्य! सामायिक तो अवश्य करवुं. केम के? सामायिक जे लेवाय छे, ते 'डुविहं तिविहेणं' एटले मन वचन कायायें करी सावद्य व्यापार न करवुं, न करावतुं, एवे नांगे लेवाय छे. एमां छ नियम आवे छे. तो तें छमध्यें कोइवारें कदाचित् एक नियमनो नंग थाय. तोपण पांच तो अखंमित रहे. अने मनना कुव्यापारथी जे पाप लागे, तेनो 'मिछामि डुक्कडं' देवाथी छूटियें छियें, माटें सामायक अवश्य लेवुं; अने ते लइने पछी जेम बने तेम तेने शुद्ध पारवानो खप करवो. कारण के, हमणांने काले दीक्षा तथा सामायक जे छे, ते अन्यास मात्र छे, अनें अन्यास करतां थकां कोइ वखतें शुद्ध चारित्रनो पण लान्न थाय.

तेथी सामायिकनो अत्यंताजाव जे निर्मूलपणुं करवुं ते योग्य नथी. वली सातिचार जे अनुष्ठान छे,ते पण अज्यास करतां काले करी निरतिचारपणें थाय छे. एम पूर्वाचार्यो कहे छे. वली अज्यास जे छे ते जन्मांतरने विषे पण माणसनी पछवाडे चालतो आवे छे. माटें सामायकनो अज्यास अवश्य करवो. जेम ग्रहण करवाना पात्रमां एक वखत पडेलो उदकबिंडु महत्ताने पामतो नथी. तेम मनना सदोषपणायें करी सामायिक करवुं, ते पण अत्यंत दोषनी महत्ताने पामतुं नथी. कारण के, तेनी 'मिछामि डुक्कडं' थी शुद्धि छे. माटें अविधियें करवाने बदले सामायिक नज करवुं, ते जलुं. एवुं बोलवुं ते असूयावचन छे. कह्युं छे केः—अविहिकया वरमकयं, असूयवयणं जणंति समणुस्सं ॥ पायछित्तं जम्हा, अकए गुरुअं कए लहुअं ॥ इति.

केम के प्रायश्चित्त जे छे ते अणालोयुं महोटुं थाय, अनें आलोयाथी हलवुं थाय छे. मनःसंबंधि जे मातुं ध्यान छे तेनी मिछाडुक्कडंथी शुद्धि छे.

एनी उपर कथा कहे छेः—एक नगरें सुधन नामें शेठ मिथ्यात्वी वसे छे. ते दिनप्रत्यें एक लक्ष सुवर्ण निरंतर दान दीये, तेवारें शय्याथकी जूमि उपर पग मूकें. एम करतां एक समये शेठना घरपासें एक कूपडामां एक मोशी श्राविका रहे छे. ते दरिद्री पारकुं पीसणादिक काम करी आजीविका चलावे छे. पण उजयकाल पडिक्कमणुं सामायिक शुद्ध करे छे. एक वखत कार्य विशेषें मोसीने असुर थइ गयुं,तेथी पडिक्कमणुं न थयुं,माटें बेठी बेठी आत्मानी निंदा करती, पश्चात्ताप करती देखीने शेठें पूछ्युं के, तुजने शुं महारी पेठें लक्ष सुवर्णनुं दान देवामां खोट पडी ? के जेथी तुं एवडुं डुःख धरे छे ! आज तें गडबड करी उठ बेस. थोडी करी ते कालें घणेरी करजे मोकरी बोली. हे शेठ ! तमे एम म कहो. ए सामायिकनो तो महोटो लाज छे. हवे ते डोशी जन्म पर्यंत सामायिक करी अनुक्रमें मरण पामीने तेहज नगरने विषे राजानी बेटी थइ. ते महाचतुर छे. राजाने अत्यंत वल्लज छे, अनुक्रमें बेटीने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं. शेठ मरण पामी वनमांहे हाथी थयो. तेने जिल्लें कालीनें तेहिज राजाने जेट आणी आप्यो, राजायें तेने पट्टहस्ती कस्यो. त्रण वार आरती उतारे,एकवार पाणी पीवा बूळ्यो. तेवारें मार्गमां पोतानुं धवलगृह देखी ते हाथीने मूर्छा आवी. जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं. तेथी मनमांहे विषाद धरतो मरवानुं मिष करी

नूमियें पडी रह्यो. तेने कोइ रोग उपन्यो छे, एवुं जाणी राजायें अनेक उपाय कस्या. पण हाथी कोइरीतें उठे नही. एवामां राजानी बेटीयें तक ताक जाणी जातिस्मरणना बलथी जाणीने हाथीना कानमांहे छानुं मानुं कह्युं. के " उठ शेठ मन शांत करे, हुइ कम्मवसेणं " संकेत जाण्यो. अने हाथी तुरत उठ्यो. पछी अनशन लेइ देवलोकें पोहोतो, अने राजानी पुत्री दीक्षा लइ मोक्ष पाहोती. एम जाणी सामायिक शुद्ध पालवुं.

हवे ए नवमा व्रत उपर मेघरथ राजानी कथा कहे छे.

कलिंगनामा देशनेविषे मनोज्ञ एवुं नरपुर नामनुं नगर छे. तिहां जयरथ नामें राजा परमश्रावक छे. तेनी विजया नामें स्त्री छे, अने मेघरथ नामें पुत्र छे. त्रण जगतने प्रचंम सूर्यनी पेरें महोटा प्रतापें आक्रम्यो छे. एकदा समयें ते राजा पोताना आवासमां नगवंतने देहरे जिनप्रतिमानी पूजा करे छे, वली महोटी नक्ति करे छे, पूजा करीने पछी नाटक करी महा महोत्सव करे छे. एवामां पोलीयायें आवीने प्रणाम करी कह्युं के, हे देव ! नावदेव नामें श्रावक तीर्थयात्रा करवा नीकल्यो छे, ते तमारे देहरे जिनेश्वरने वांदवानी इच्छायें बारणें आव्यो छे. ते सांनली राजायें कह्युं के ए श्रावकने शीघ्र तेडी आवो, तेवारें पोलीयायें श्रावकने मांहे प्रवेश कराव्यो. तेणें आवी जिनेश्वरने पूजी नमीने पछी ते श्रावक राजा प्रत्यें कहेवा लाग्यो के, समेतशिखर, शेत्रुंजो, गिरनार अने बीजा पण जे चैत्य छे तेंने तमे महारे वचनें करी इहां रह्या थकांज जूहारो. वली तमने घणा साधुउ धर्म लाननी आशीष आपे छे. माटे तेमने पण तमे इहां रह्या थका जुहारो. राजाने एम कहे थके राजा नक्तियें करी धरतीयें मस्तक नमाडीने सर्व तीर्थने तथा साधुने वांदतो हवो. वली नावदेव बोल्यो के, तमोने सर्व श्रावकें पण वंदना कही छे, तेथी राजा विशेषें रंज्यो. अने तिहां बेठा थकां सर्व श्रावकने पण राजाये वंदन करीने पछी नावदेवने पूछ्युं के, तुजने घेरथी नीकले केटलो काल थयो ? तेवारें श्रावकें कह्युं के महाराज ! बार वर्ष वही गया. ते सांनली राजा बोल्यो के धन्य छे तुजने, के जेणें घणां तीर्थवंदन कस्यां ! अने हुं अधन्य छुं. के जेणें एकें तीर्थ दीठुं नथी वांद्युं नथी ! ! तेवारें नावदेव शेठें कह्युं, के तमें इहां रह्या थकांज सर्व तीर्थने रुडा नावें करी सर्वदा वांदो छो. माटें तमने पण धन्य छे.

वली राजायें पूछ्युं. के ए बधां तीर्थमां महोटुं तीर्थ कयुं छे? ते कहो. तेवारें श्रावक बोल्यो, के जिहां वीश तीर्थंकर मोक्ष पाम्या, एवुं समेतशिखर तीर्थ ते सर्व तीर्थमां महोटुं छे, अने उत्तम छे,तेवारें नावदेवने राजा पोताने घेर तेडी गयो; तिहां नोजन करावी, वस्त्रादिकनी पहेरामणी आपी सत्कार देइने शीख देतो हवो. पछी समेतशिखरना राजाने दूत मोकलीने कहेवराव्युं के, जो तमारा हृदयमां राज हरवानी कांइ शंका न आवे, तो जयराजा श्रीसमेतशिखर तीर्थने वांदवाने माटें आवे. तेवारें ते राजायें पण कहेवराव्यु के, हे राजा! तमें सुखें आवो. तमारा वांछित मनोरथ पूर्ण करो. तेवारें जयलक्ष्मीनुं घर एवा राजायें पोतानी नगरीमां पोताना मनुष्यना मुखथी उद्घोषणा करावी के, जय राजा समेतशिखर तीर्थें यात्रा करवा जाशे माटें तेनी साथें बीजो पण जे कोइ यात्रा करवा चाले, तेने जे कांइ जोशे ते सर्व राजा आपशे. ते सांनलीने प्रथमथीज जेमने यात्रा करवानी घणी उत्कंठा हती ते लोक यात्रायें जवा माटें तैयार थयां. राजा पण हर्षवंत थयो थको चतुरंगिणी सेना सहित तैयार थइ पोताना पुत्र मेघरथने राज्यनो रखवाल स्थापीनें यात्रा करवाने चाल्यो. मार्गमां स्थानकें स्थानकें देहरांने विषे महोटी पूजाउ करतो अर्थिजनने दान देतो,रुडा नोजनादिकें वस्त्र पहेरामणीयें करी नक्तिसहित साहामी वात्सल्य करतो, अनयदान देतो अनुक्रमें समेतशिखर तीर्थें जइ पहोतो. तेवारें साहामां आव्या जे पूजारा मनुष्य तेने आगल करी महोटा परिवारें सहित नगवंतनुं देहरुं देखी राजा हर्षें करी नाचतो हवो. शरीरमां समाय नहि एवा आनंदने रोमांचना मिषें करी धरतो ते देहरासरमां विधिसहित जइ, त्रण प्रदक्षिणा देइ, जिनेश्वरने पखाल करी आदर सहित पूजीने पछी महोटी ध्वजा चढावतो हवो. तिहां आठ दिवस सुधी उत्सव करी आशातनाथी बीहीतो थको ते राजा पर्वतथी उतरती वखतें पूजाराने दान सत्कार दइ शीख आपीने पोताना नगरनी सन्मुख चाल्यो.

एवामां निल्लनी सेन्यायें तेने रुंध्यो. ते वात मेघरथना जाणवामां आवी तेवारें ते कटक लइ तरत आव्यो तेणें निल्लनी साथें महोटो संग्राम करीने निल्लने हराव्यो. निल्लनो पति नाशी गयो. हवे मेघरथ गया पाछल राजरहित देश जाणीने पासेंनो रहेवासी माठी मतिनो धणी जयपाल नामें

राजा उपद्रव करी देशमां लूंटफांट करवा लाग्यो तेवारें मेघरथें पोताना पिताने नगर जणी विसर्जन करी पोतें युद्धनो रसियो थको जयपालनी साथें युद्ध करवा गयो. तिहां युद्ध करी तेने बांधीने मनोरथ सिद्ध थयो छे जेनो एवो ते मेघरथ उतावलो पोताना नगर जणी चाल्यो. हवे राजा पण नगरें आव्यो; तेवारें लोकोयें तेमना आगमननो महोटो उत्सव कीधो, अने मेघरथ पण आवीने जयलक्ष्मीनी पेरें ते जयपाल राजाने लावी पोताना पिताने आवी नमस्कार करी सोंप्यो. राजायें तेज दिवसें तेने बंध मुक्त कस्यो. वली सत्कार देइ तेनो देश तेने पाछो आपी विदाय कस्यो.

एकदा अतिशयवंत ज्ञानी एवा विजयघोष नामा आचार्य ते नगरीनी बाहिर मनोहर कुसुमखंम नामा उद्यानें आवी समोसस्या. तेवारें राजादिक सहु तिहां जइ ते गुरुने नमस्कार करी पासें बेठा. तिहां आचार्य धर्मोपदेश करतां तीर्थयात्रानुं फल आ रीतें कहेवा लाग्या के, जे प्राणी नित्यप्रत्यें तीर्थयात्रा करे छे, वली तीर्थनी प्रजावना करे छे, तेने तीर्थंकर प्रमुखनी पदवी कांइ दूर नथी.

एवामां तिहां कोइ बे जाइ मुनिने वांदवा आव्या. तेमां एक सोजागी, नीरोगी, देवता सरखो रूपवंत हतो, अने बीजो जाइ तो दोजागी, दीन, कुरूपी, पापना पुंज सरखो श्वास, कास, ज्वरादिक आकरा शोलरोगनुं घर हतो. ते बेहु जण आवी सूरीने वांदता हवा. पछी ते मांहेलो स्वरूपवान् जाइ मुनिने पूछतो हवो के, महाराज! शुं एणें पूर्वजवें पाप कीधुं हतुं. के? जेथी आ जवमां ए रोगी थयो छे. तेवारें गुरु कहे छे के, एज जरत क्षेत्रमां एक सोमसिंह अने बीजो अजितसिंह एवे नामें बे जाइ राजाना पुत्र पणे थया हता. तेने मांहोमांहे घणो स्नेह हतो. ते बे जाइमां महोटो जाइ जे हतो, ते स्वजावें रूपावंत अने शांत मनवालो हतो. तथा न्हानो जाइ धर्मरहित, निर्दय, कठिणचित्तनो धणी हतो. तेने आहेडी प्रमुख कर्ममां प्रवृत्ततां महोटो जाइ घणुंए वारे, तो पण तेने न्हानो जाइ कहे के, जाइ! धर्माधर्मनी जे वात छे, ते सहु वृथा छे. ते सांजली तेने अयोग्य जाणीने सोमसिंह वली अधिक उपशमवंत थको जीवदयादिकने विषे आदरवंत थयो. ते काल करी सौधर्म देवलोकें देवता थयो. तिहांथी च्यवी पूर्वें करेली समताना प्रजावें इहां आवी अत्यंत रूपवंत थयो छे; अने न्हानो

न्नाइ अजितसिंह क्रोधवंत जेनो आत्मा छे एवो छतो मरण पामी डुर्गति मां घणुं न्नमण करी इहां कासरोगें करी पीडित आ तहारो न्नाइ थयो छे. एवुं गुरुनुं वचन सांन्नली महोटो न्नाइ हलुआकर्मी छे, माटें तेने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं. तेथी घणो संवेग पामीने तेणें दीक्षा लीधी, अने बीजो न्हानो न्नाइ तो गुरुकर्मा छे, माटें आ साचुं कहे छे के! खोटुं कहे छे, एवी शंका यें शंकित थको जेवो आव्यो तेवोज पाछो पोताने घेर गयो.

हवे मेघरथ राजा गुरुने पूछे छे के, हे प्रनु! अमें आ राज्य देशादिकना कचरामां रात्रिदिवस खूता छैयें. ते अमारी शी गति थाशे? तेवारें गुरु बोल्या सामायिक व्रतना सेवनारा चंडावतंसक राजा ते पण शुं देवलोकने विषे नथी गया? अर्थात् गयाज छे, तेवारें मेघरथें पूछ्युं स्वामी ए व्रतनुं स्वरूप कहो, गुरु कहे छेः—ए व्रत बे प्रकारें छे. एक देशथकी अने बीजुं सर्व थकी तिहां सर्वथी सामायिक तो सर्व सावद्यपापना छोडवाथी थाय छे. तेतो जिहां सुधी जीवे तिहां सुधी त्रिविधें त्रिविधें साधुने होय, अने देशथी सामायिकव्रत जे बे घडी प्रमाणनुं समता परिणाम रूप ते द्विविधें त्रिविधें श्रावकने होय. ए पहेलुं शिक्षाव्रत छे श्रावक पण ए व्रतमां जेटली वार होय तेटली वार साधु सरखो कहेवाय. माटें जेवारें वखत मले, ते वखते सामायिक लइयें. एमां मनोडुःप्रणिधान एटले मननुं मातुं प्रवर्त्तन आदिक पांच अतिचार छे. ते कुरूप, श्वास, खासी प्रमुख आकरां डुःखना देनारां छे. ते छांमवां. एटले ते पांच अतिचार न लगाडवा.

एवी गुरुनी वाणी सांन्नलीने गुरुने नमी न्नक्तियें सहित राजा कहेतो हवो के, स्वामी, प्रथम तो मुजने देशथी सामायिक व्रत आपो. तेवारें गुरुयें पण विधिसहित ते मेघरथने तथा जयरथ राजा प्रमुखने देशविरति आदिक विशेष व्रत आप्यां. तेवारें राजपुत्र मेघरथ तो तिहां गुरुपासें आवी नमीने पोताना जीवत्वने क्षणन्नंगुर जाणतो थको धीरपणे निरंतर सामायिक करवा लाग्यो. हवे डुष्ट जयपाल राजा पोतानी अपन्राजना एटले पोतानी मानहानिनें संन्नारतो, मेघरथ राजपुत्रने हणवा माटे पोताना माणसोने मोकल्यां. तेपण कपटी श्रावक थइने जिहां मेघरथ कुमर सामायिक व्रत लइ बेठो छे, तिहां तेने हणवा माटें आव्या. तेने श्रावक जाणीने रखवालें पण वार्या नही. ते शीघ्र तरवार काढीने यमराजाना जेवो बीहाम

णो आकार करी हणवा धाया; पण मेघकुमर, तेमनी उपर कांइ पण क्रोध न करतां एक धर्मध्यानमांज निश्चल रह्यो. तेना सत्त्वें करी उद्यान देवी तुष्टमान थइने ते मारनाराउने थंनी राखती हवी.

हवे सामायिक पूर्ण थया पछी कुमर तेमने कहेवा लाग्यो के, आ शुं छे? तेवारें ते पुरुषोयें पोतानुं सर्व वृत्तांत कही संजलाव्युं, ते सांजलीने महोटी मतिना धणी मेघकुमरें तेहने अजयदान आपी शीख दीधी. गुरुयें पण अन्यस्थानकें विहार कस्यो. कुमरें पण पोताना पितानुं राज्य पामीने घणाकाल सुधी ते राज्य जोगव्युं. अंतें सम्यक् प्रकारें आराधन करी मरण पामी जला स्वर्गादिक सुखनुं जाजन थयो. माटे हे जव्यलोको! तमे मेघरथ राजानुं चरित्र सांजलीने घणा आदर सहित थका सामायकव्रतने करो. जे सामायिक व्रतने बे घडी पर्यंत आर्त्त रौद्रध्यान तथा सावद्य व्यापार मूकीने पाले, ते मोक्षें पहोचें. एवुं सामायिकनुं माहात्म्य छे. (संके०) सम्यक् प्रकारें ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूप मोक्ष मार्गनो लाज छे जेमां तेने सामायिक कहीये. ए सामायिक व्रत उपर मेघरथ राजानी कथा कही.

हवे दशमुं देशावकाशिक नामें बीजुं शिक्षाव्रत कहे छे.

१० दशमुं देसावगासिगव्रत. छठे दिशिव्रतें जंदिशि तणुं प्रमाण कीधुं होय, ते प्रतिदिवसें संकोडीयें अनेरा ए सर्वव्रत तणा नियम संक्षेपियें ते देसावगासिगव्रत कहियें. ए दशमा देसावगासिगव्रततणा पांच अतिचार शोधुं. आणवणप्पजगे, पेसवणप्पजगे, सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ, बहियापुग्गलपक्खेवे. देसावगासिग कीधे नियमी जूमिका बाहेर हुंति जिणपाहें वस्तु अणावी होय अथवा कोइपाहें वस्तु मोकलावी होय, साद करी खांसी हुंकारो करी गाढे गुणे रूप देखाडी कांकरी नाखी आपणपुं छतुं जणाव्युं होय ॥ अनेरुं ए दशमा देसावगासिगव्रतविषे पक्षदिव० ॥

अर्थः—दशमुं देशावकाशिक व्रत छे. तिहां छठा दिशिव्रतने विषे (जं के०) जे दिशिनुं प्रमाण जावजीव सुधी कीधेलुं होय, तेमांथी पण प्रतिदिवसें

एटले नित्य प्रत्ये संकोडियें एटले संक्षेपियें. जेमके एकदिशें पांचशो योजन जावानो नियम यावज्जीवसुधी करेलो छे; तेमांहेथी आज महारें ए दिशियें जवुं पडे, तो बे गाउ पर्यंतज जवुं, उपरांत नही जवुं. एवी रीतें संक्षेप करीने नियम करवो. तेमज अनेरा बीजा जे प्राणातिपातादिक व्रतो छे, तेने पण संक्षेपीने प्रतिदिवसें मर्यादा करवी. जे आज महारें अमुक आरंभ आटलोज करवो. उपरांत न करवो. यावज्जीवसुधी लीधेला दिग्विरमण व्रतमां जेटला योजन सुधी जवानो नियम लीधो छे, तेमां पण एकदेशनो अवकाश एटले गमनागमननी मोकलाश अर्थात् छुट राखीने शेष रहेलो प्रदेश ते पुनरपि नियममां लेवो, एम प्रतिदिन करवुं.

जेम कोइ मंत्रवादी गारुडी, प्रथम आशीविषनो धरनार जे सर्प्प, तेहनुं बार योजन प्रमाणदेशमां व्यापेलुं एवुं विषम जे दृष्टिविष तेने टालीने पछी तेना एक देशमांज आणी राखे, एटले स्वल्पक्षेत्रमांज आणी राखे, अथवा आखा शरीरमां विष व्याप्युं होय, ते विषने एक अंगुलीना एकज देशमां आणी राखे. तेम ए व्रती पण शो योजन प्रमुख एकेकी दिशि आश्रयी यावज्जीव सुधी ग्रहण करेलुं जे दिग्व्रत जेहनां घर, शय्या स्थानकादिकथी उपरांत आगल जावानुं निषेध रूप व्रत छे, तेने संक्षेपीने एक गाउ आदिक एकदेश जेटली छूट राखे, उपरांत जवानो प्रतिदिवस नियम करे. तथा काल आश्रयी पण जे मूलगुं प्रमाण राख्युं छे, तेने संक्षेपें; वली जेमां बे घडी, पहोर, दिवस रात्रि, प्रमुख काल सुधी जावुं, आववुं, खावुं, पीवुं, एम सर्व भोग उपभोगनो, लेवड देवडनो नियम ते क्षेत्रनी मर्यादायें करें. उपरांत अधिक न करे, एम दिवस, रात्रि, पंचदिवस, पन्नर दिवस पर्यंत व्रत दृढ पणें धरवुं. तेने देशावकाशिक व्रत कहियें.

हवे इहां ए व्रतनें विषे अनाभोगादिकें करी जे पांच अतिचारो लागे छे, ते शोधवा माटें तेनां नाम कहे छेः– एक आणवणप्पयोग अतिचार, बीजो पेसवणप्पयोग अतिचार, त्रीजो शब्दानुपातअतिचार, चोथो रूपानुपातअतिचार, पांचमो बाह्यपुद्गलप्रक्षेप अतिचार. तेना अर्थ कहे छे.

पहेलो देशावकाशिक कीधे नियमी भूमिकानी बाहिरनी कोइ चीज होय, तेनी गरज पडवाथी त्यांथी बीजा कोइ जनारा जण एटले जन पा

सें ते वस्तुने अणावे, एटले मगावे. ते प्रथम आणवणप्पयोग एटले आ नयन प्रयोग,अर्थात् आनयन ते कोइ चीजनुं कोइ जगाथी आपणीपासें मगा ववुं. तेनी प्रयोग एटले योजना करवी. ते आणवणप्पयोग अतिचार जाणवो.

बीजो. तेवीज रीतें नियमी नूमिकाथी बाहिरनी नूमियें कोइ जनार माणसनी साथें कोइ वस्तु मोकलावी आपे, एटले प्रेषणप्रयोग ते आप णी पासें जे चीज होय, ते कोइ निमित्तथीबीजे ठेकाणें मोकलवी तेनो प्रयोग एटले योजना करवी. ते बीजो पेसवणप्पयोग नामा अतिचार जाणवो.

त्रीजो शब्दानुपात ते पोताना नियमित खेत्रनी बाहिरली नूमिमां कोइ माणस चाल्यो जतो होय,अने व्रतीने पण कोइ नियम लीधेला खेत्रथी बा हेरनुं काम होय,तेवारें ते माणस नियमित नूमिकाथी बाहिर छे,माटें तेने तेडवा सारु पोताथी जवाय नही, तेथी पोते जेम मार्गें जतां आवतां सर्व लोक एने देखे तेवीरीतें अगाशी उपर अथवा ढाजां उपर उन्नो रहीने ऊंचे सादें करी खांसी एटले उधरस खाय,अथवा खोंखारो अथवा हुंकारो करे, किंवा नाकमां दोरो घाली ठींके, के जे थकी मार्गें जतो माणस ते शब्द सांजलीने एने जूए,एम जेवारें बेहुनो दृष्टिमिलाप थाय तेवारें ते मा णस चलावीने तेनी पासें आवे, तेनी सायें पोताना कामसंबधि वात चि त करी लीये. एटले कास अथवा ठींक इत्यादिकना शब्दने अनुपात एटले अनुसारें जे बीजा माणसने पोतानुं धारेलुं कार्य करवा माटें तेडवासारुं सूचना करवी, ते शब्दानुपात नामें त्रीजो अतिचार जाणवो.

चोथो गाढे गुणें करी रूप देखाडवुं. ते एम के, माल प्रमुखें चढीने ए वी रीते उन्नो रहे के, जे थकी नियमनूमिथी बाहिर जनारो माणस तेनुं रूप अवश्य देखे, अने एने आवी मले, एवी रीतें जे रूपना अनुसारथी पोतापणुं बीजाने जणाववुं ते चोथो रूपानुपात नामें अतिचार जाणवो.

पांचमो पुद्गल जे काकरी पाषाण प्रमुख तेनो प्रक्षेप करीने एटले तेने नाखीने पोतानी नियम नूमिथी बाहेर जता माणसने जे आपणापणुं एटले पोतापणुं छतुं जणाववुं. जेथकी ते माणस आपणी पासें आवे, ते वारें पोतानुं कार्य करी लीयें ते पुद्गलप्रक्षेप नामा पांचमो अतिचार जाणवो.

ए पांच अतिचार मांहेलो जे कोइ सूक्ष्म बादर अतिचार पक्खदिवस मांहे हूउ होय, ते सर्व डुष्कृतने हुं मन वचन कायायें करी मिथ्या करुं छुं.

हवे ए व्रतउपर पवनंजयनो दृष्टांत कहे छेः– आ जरतक्षेत्रनेविषे रु द्धिवंत एवुं. नंदीपुरनामें नगर छे. तिहां जयवर्म नामा राजा ते जयवाद नुं जेवुं घर होय तेवो छे. तेनी जयावतीनामें राणी छे ते जाणियें साक्षात् जयलक्ष्मीज होय नही, एवी छे. तेनो चारबुद्धियेंकरी सहित एवो विजय सुंदरनामा प्रधान छे. अने ते नगरमां धनंजय नामनो शेठ वसे छे. ते ध र्मे करीने सर्वधर्मवंतमां मुख्य छे, अने धनें करी धनद जे कुबेर तेना जेवो छे. तेहनी सज्जनने आनंद देनारी एवी सज्जनी नामें स्त्री छे. तेने रूप ला वण्येंकरी परिपूर्ण एवो पवनंजय नामें पुत्र छे, वली तेना घरना काम का जनो करनार वय अने रूपें सरखो, विनीत, सर्वकार्यमां डाह्यो एवो एक शेखर नामा पवनंजयनो मित्र छे. हवे एकदा कोइ ज्ञानगर्ज नामें निमि त्तियो आवीने राजा प्रत्यें कहेवा लाग्यो के, इहां आज काल केटलाएक डुर्निमित्त थयां छे, तेना प्रजावथी इहां घणा लोकने श्वास कासादिक, वि विधप्रकारना रोग अधिक थाशे. राजायें पूछ्युं. ए अरिष्ट क्यां सुधी रहेशे? निमित्तियें कह्युं के, हे स्वामी ! ज्यांसुधी अनंग त्रयोदशी नथी आवी, तिहां सुधी रहेशे. ते सांजली राजा प्रधानने कहेतो हवो के, अनंग तेरस दूर छे. तेमाटें लोकने जेम पीडा न थाय एवो कोइ उपाय मुजने कहे. मंत्रीयें कह्युं. आ चालु पखवाडीयानी तेरशने दिवसें कामदेवनी यात्रा करावो. ते वातनें निमित्तियायें पण अनुमत दीधुं. तेवारें राजायें नगरना लोकने यात्रा करवानी आज्ञा दीधी,लोको पण सर्व रुद्धियें करी सहित थका तिहां जावा लाग्यां, तेवारें शेठनो पुत्र पवनंजय पण रथमां बेसीने ते यात्रा जोवाने मित्र तथा सेवकना परिवारसहित चाल्यो. ते जेटले दरवाजासुधी गयो. तेहवामां तेहना रथ आगलें दिन्न शेठनो पुत्र सागरनामें छे, तेपण पोताना रथमां बेठो थको तिहां आव्यो. तेवारें पवनंजय रीश करीने पोताना सारथीने कहे छे के, ए कोण छे ? के जे पोताना रथने पाछो वा लतो नथी. एवुं सांजली सागर बोल्यो महारो रथ केम तहारा रथथी अ लगो टले, तुं शुं महाराथी अधिक छो ? हे पवनंजय ! तुं शा माटें एवो म त्त थयो छो ? एम घणा गर्वे करीने ते बेहुने विवाद करते थकें तिहां घणा लोक आवी मल्यां. अने बेहु प्रत्यें कहेवा लाग्यां के, जाइयो ! तमने लडवुं घटे नही, कारणके तमें बेहुजण सरखा छो, तथा उत्तमकुलना उपना छो,

एकठा साथेज जण्या बो, अने सरखी वयना बो, तथा पोत पोतामां मित्र बो, जो एक जण न नमे, तो बीजाये जरुर नमवुं जोइयें. एवी रीतनी नगरना लोकोनी शीखामण सांजली पण कांइ तेमणे मानी नही. पबी ते वृत्तांत तेमना पितायें जाण्युं, तेवारें ते आवीने पोतपोताना बोकरानी वाह जाली कहेवा लाग्या के, हे म्हाया. तमारे वणिकना कुलमां उपनाने ए शो विरोध बे? एवा अविचारित कामना करनारा तो क्षत्री होय, माटें एकबीजाने नमीने मारग आपवामां कुल, शील, बल अने यश, तेनी कांहिं हाणी थाती नथी? तो तमे कां हठ करो बो? वली नगरना लोकपण तमने आवा हठकदाग्रहथी कुलहीण जाणशे. तथा ए वातथी तमें डुर्जननना मनोरथ सर्व पूर्ण करशो, तेथी ते खुशी थाशे, ए अमारुं वचन जो तमने अणगमतुं होय, तो पण एकवार तो तमें मानो, विशेषें करी अमारुं माबापनुं वचन जे उल्लंघन करवुं ते तमोने योग्य नथी! एवुं कह्युं तो पण तेणे माता पितानुं कह्युं मदिरांधनी पेरें कांइ पण न मान्युं; तेवारें तेमना माबाप घेर जतां रह्यां. पबी ते वात राजायें सांजली तेवारें तेणें बडीदार मोकलीने कहेवराव्युं के, अरे! शेठना पुत्रो! ए श्यो तमारे ऊगडो करवानो हठ बे? मात्र मने तो एम लागेबे के तमो पोतानी लक्ष्मीयें करी मदोन्मत्त थया बो, पण मूर्ख बो, कांइ पण जाणता नथी. नगरना लोक तथा मातापितायें वाख्या तो पण कांइ मान्युं नहिं! हजी पण तमें पोतपोताने घेर जाता नथी! फोकट कूतरानी पेठें शूरा थया बो!!!

हवे जो तमने ए सर्वेनुं कह्युं इष्ट नथी, तो उतावलो रथथी उतरी परदेश जइ घणुं धन उपार्जन करी एक वर्ष पबी इहां आवीने एज तेरशने दिवसें पोतानी जुजायें उपार्जेला घणा धनेकरीने बेमांथी जे याचक जनोना मनोरथ पूर्ण करशे, तेनो रथ अस्खलित पणें सर्वत्र फरशे, अने जे तेम नही करशे, तेनो रथ निश्चेंथी अलगो टालशुं! एम सांजली हर्ष पामी पवनंजय शीघ्र पोताना रथथी उतरीने दक्षिण दिशिना मार्गनी सन्मुख चाल्यो. तेवारें सागर पण पोताना रथथी उतरीने उत्तरदिशे अपशकुनेंवाख्यो थको पण पवनंजयनी ईर्ष्यायें चाल्यो. अने पवनंजय तो शुजशुकने प्रेख्यो थको महोटो उत्साह धरतो अनेक आश्चर्य सहित एवी पृथ्वीनें जोतो जोतो हलुवे हलुवे मार्गमां चालतो हवो.

एवामां कांचीपुरीयें लक्ष्मीधर नामें व्यवहारीयो छे तेनें मनोरमा पुत्री छे, ते त्रण जगतमां अत्यंत मनोहर छे. ते व्यवहारी एक समयें ब्रह्म नामें निमित्तियाने तेडी पूछतो हवो के, महारुं आयुष्य केटलुं छे? अने आ महारी लक्ष्मी तथा महारी पुत्रीनो धणी कोण थशे? तेवारें-निमित्तियो कहेवा लाग्यो के, आजथी छ महीनानुं तमारुं आउखुं छे, सात दिवस पर्यंत माथामां आकरी पीडा तमने थाशे; अने आ पुत्री तथा लक्ष्मीनो धणी एक परदेशी पुरुष थाशे. शेठें पूछ्युं के ते केम जणाशे? निमित्तिये कह्युं के इहांथी पांच योजन उपर पुंमरिकनामें तीर्थ छे, तिहां पुंमरीक नामें यक्ष छे; तेनी पासें तुं जइश, तेनी यात्रा करी पाछो वलतां मार्गमां स्खलन पामीने पडीश. त्यारें जे तिहां तहारुं रक्षण करशे, ए पवनंजय नामें श्रेष्ठिपुत्र ते तहारी पुत्रीनो वर थाशे. अने तहारी लक्ष्मीनो पण तेज धणी थाशे. ते सांभली शेठें निमित्तियाने सत्कार देइ वीसर्ज्यों. पछी पोतें सर्व लक्ष्मी सहित थको ते तीर्थें रहेवाने गयो. यात्रा जोइ नीसर्यो, तिहां माह्यामां मुख्य एवो पवनंजय पण आव्यो छे. तेणें शेठने पडतो देखी राख्यो, तेवारें शेठें कह्युं के हे आयुष्मन्! हे पवनंजय! तुझने सुख छे? एम कही तेने घरे आणी भक्तियें करी जमाडीने निमित्तियायें कहेली सर्व वात कही पोतानी पुत्री परणावी.

एकदा शेठनें निमित्तियाना कहेवा मुजब माथानी पीडा आकरी थइ, तेवारें मरण समय जाणीने पवनंजयने कहेवा लाग्यो के हे वत्स! अढार क्रोड सोनैया महारी पासें छे, ते तुं ले; अने महारी मनोरमा नामें पुत्री कहे तेम एनुं हित कर. के जेम ए अमने न संभारे. तथा महारा वियोगथी खेद पामती पराभव न पामे, तेम कर. पवनंजय पण ते वचन प्रमाण करीने कहेतो हवो के, तमें ए माथानी पीडाथी भय म पामो. हे तात! हुं तमारी तेम सेवा करीश, के जेम हमणां तमें पीडारहित थइ जशो! तेवारें शेठें कह्युं के हवे वैद्यनुं औषध करवानुं सर्युं, पण तमें हमणां मुझने धर्म रूपी औषध आपो, तेवारें पवनंजयें श्वशुरनी पासें धर्मकृत्य करावीने तेने लघुकर्मा कर्यो. पछी तिहां केटलो एक काल रह्या पछी पूर्वोक्त तेरशनो दिवस ढूकडो आव्यो जाणीने ते सर्व वात पोतानी स्त्रीने कही. तेनी आज्ञा लइने घणां करियाणां लइ बे क्रोड सुवर्ण नवुं उपार्जी क्रयविक्रय करतो थको पोताना नगर भणी चाल्यो. वीश कोडी सुवर्णनो

धणी थयो. तेने आव्यो जाणी जयवर्मा राजा घणा उत्सवपूर्वक सामैयुं करी तेने नगरमां प्रवेश करावतो हवो. ते उत्सवनेविषे आठ दिवस पर्यंत जेने जे लेवानी वांछा हती,ते करतां पण अधिक द्रव्य याचकने पवनंजयें आप्युं. वली घणुं नेटणुं मूकीने राजाने पण प्रणाम करतो हवो. राजा पण तेने शेठनी पदवीयें स्थापी स्नेह सहित गुण गातो स्तवना करतो हवो. तेवारें नगरने विषे सर्व नागरिक लोक,तेना गुणने समूहें अत्यंत राजी थयां.

हवे सागर कुमर पण उत्तरदिशें जइ घणे कष्टें करी पांच हजार सोना मोर उपार्जतो हवो. मनमां चिंतववा लाग्यो के, धिक् धिक्! जे में घणे कालें पण अल्पधन उपार्ज्यु. तो पण तेरश ढूकडी आवी, माटें तिहां जावुं. तेवारें वटेमार्गुने सखायिया लेइ पोताना नगरनी पासेंनुं गाम आव्युं तिहां थाक्यो हतो, तेथी रात्रें सूतो, ते वखत सखायिया तेनी दीनार (सोनैया) लइने तरत नाशी गया. पछी सागर जाग्यो, तेवारें विषाद पामीने चिंतववा लाग्यो के, द्रव्य जेम आव्युं, तेमज गयुं. हुंतो हवे जेवो जण्यो तेहवोज रह्यो? माटें हुं निश्चें लोकोने केवी रीतें महारुं मुख देखाडीश? एम खेद पामतो थको वली विचारतो हवो के कदाचित् महारी प्रत्यें स्प र्द्धा करनार पण जो एमज आव्यो हशे तो बेहु सरखा थाशुं! एम विचारी छानो पोताने घेर आव्यो. तिहां सर्व वात मा बापने पूछी,तेवारें तेणें कह्युं के ते पुण्यवंत पवनंजय तो उत्सवें करी इहां आव्यो, माटें तें कोइनुं व चन न मान्युं तेथी तुं केवल प्रयासनुं अने सर्वने हास्यनुं पात्र थयो.

एम कहीने वली मा बापें ते सागरने कह्युं, जे हवे तुं घणो विषाद म कर. जे माटें मानने भ्रंश पण जेनुं मान पृथ्वीमां महोटुं होय तेनोज थाय, जेना पगमां नेउर होय तेनाज पगमां बेडी होय, चंद्रमानो क्षय छे, पण तारानो क्षय नथी, जिहां लक्ष्मी होय तिहां चंचलता पण होय, परंतु दान तथा नीचने कांइ न होय. एम मा बापें धारणा दीधी, तेवारें साग रें पोतानो रथ जे दरवाजे हतो ते पाछो पोताने घेर अणाव्यो. पछी यात्रा ने दिवसें रात्रे सघले अस्खलित पवनंजय, रथमां बेशीने सहुयें करेलां व खाणने सांजलतो थको तथा याचकोने दान देतो थको नगरमां भ्रमण करे छे, तेवारें सागर पण ईर्ष्यायें चिंतववा लाग्यो जे ए पवनंजयने हुं पोता ने हाथेज हणीश! कारण के एणें महारी घणीज अपभ्राजना कीधी छे!

एकदा चोमासीने दिवसें धनंजय शेठ पोताना घरमां प्रमादरूप काष्ठ ने अग्निसरखो, अर्थात् प्रमादनो नाशक एवो पोसह करे छे. अने पवनंजय तो आखो दिवस बाहिर फरी फरी वगरचिंतायें सांजे पिता पासें आव्यो. तेने पितायें नलें वचनें शिखामण दीधी के हे वत्स! पर्वने दिवसें पण तुं पोसह नथी करतो, तो पण अनर्थनी रक्षानुं करनारुं देशावकाशिकव्रत तो तुं अवश्य कर? तेने पवनंजयें पूछ्युं, के ते केवुं व्रत छे? त्यारें शेठें कह्युं. के छट्ठं दिशिव्रत जे छे, ते दिशिना मानमो जे एक देश मोकलो राखवो, तेने देशावकाशिक व्रत कहियें. ज्यां सुधी जीव नियममां न होय तिहां सुधी प्रमादसहित कठिन उदयना योगें समय समय कर्म बांधे छे, माटें जेम गारुडी सर्पविषयुक्त एवा देहमां व्यापेला विषने एक क्षणमां नसाडी मूके छे, तेम देशावकाशिकव्रत अंगीकार कीधे थके जीव कर्मनो क्षय करे छे. एना आनयनप्रयोग प्रमुख पांच दोष छे, ते व्रतने मलिन करे छे. तेणे करी इहां पण माननी मलिनता होय. एवुं सांनली ते पवनंजय कांइक काल पर्यंत पोताना घरमांज रहेवानुं व्रत पडिवज्जतो हवो.

एवामां शेखरदास उतावलो आवीने वचन कहेवा लाग्यो के हे पवनंजय! सहस्राक्ष नामें इंद्रजालीयें आवी इंद्रजाल रमवा मांमी छे. ते जोवा माटें तमने राजा तेडे छे. एम कह्युं ते वखत पिता ने पुत्र बेहु व्रतमां रह्या, माटें कांइ न बोल्या. तेवारें सजनी नामें शेठाणी समयनी जाण छे, ते शेखरप्रत्यें कहेवा लागी के, हे शेखर! तुंज पवनंजयनो वेष करीने जाजे. केम के ए बन्नेना व्रतनो नंग नहीं थवो जोइयें. एम शेठाणीनुं कहेवुं सांनली शेखर पवनंजयनो वेष लइने राजाने त्यां गयो, अने आसने जइ बेठो, एटलामां कृपारहित सागर पवनंजय शेठनी ज्रांतें ते शेखरनें खड्गें करी हणीने चालतो थयो. तिहांथी निकलतां कोटवालें तेनें पकड्यो. इहां कोइकें आवीने शेठने कह्युं के हे शेठ! सागरें तमारा पुत्रने हण्यो छे. ते सांनली शेठ पवनंजयने कहे छे के हे वत्स! हुं जाणुं छुं जे एणे शेखरने हण्यो हशे. तें तो व्रत लीधुं माटें तुं तो जीवतो रह्यो, पण सागरने राजा काले पोतें हणशे तेवारें पवनंजय कहे के हे पिताजी! हुं प्रनातें निश्चें सागरने जीवतो मूकावीश. पछी प्रनातें सागरने वधनूमियें लइ जाता राजाने वीनवी घणे कष्टें करी पण पवनंजयें तेने मूकाव्यो. तेवारें तेना स्वजनो

यें संतोष पामी जेनी स्तुति करी ळे एवो पवनंजय सज्जन लोकोपासेंथी पगे पगे पूजा पामतो थको घेर आव्यो. तेने बापें कह्युं के हे वत्स ! तें ए रुडुं कर्युं, जेमाटें वेरीने पण उपकार कस्यो ? एम एनुं यश पोतानी मेलें विस्तर्युं, जो सागरने हण्यो हत तो यशनुं अपयश थात. तेमाटें पोतानुं शरीर तथा द्रव्यना व्ययथी पण पोतानुं तथा परनुं हित करवुं, एवी पितायें तेनी प्रशंसा करी. पळी ते दिनथी जलो धर्म आदरीने ते पवनंजय अनुक्रमें स्वर्ग मोक्ष सुखनो विजागी थयो. एम जाणी जे दशमुं व्रत रूडी रीतें पाळे. ते प्राणी उज्ज्वल सुख पामे. तेमाटें सर्व गुणनी मर्यादा सरखुं ए देशावकाशिक व्रत ळे. तेने विषे हे जव्यजनो ! तमें नित्यें उद्यम करो. इति देशावकाशिकव्रतविषयिक पवनंजय कुमरनी कथा समाप्ता ॥

हवे ए देशावकाशिक व्रत उपर बीजी कथा कहे ळेः—चंद्रिका नगरीयें नारीसिंह राजा अधर्मी ळे,तेनो सुमित्र प्रधान श्रावक ळे,तेणें एकवार पाखीने दिवसें घर बाहिर निकलवुं नही. एवुं देशावकाशिक व्रत आदर्युं ळे. एटलामां राजानुं तेडुं आव्युं, त्यारें तेडवा आवनार प्रातिहार्यने प्रधानें पोतानो नियम लीधेलो कही संजलाव्यो. ते प्रमाणें प्रतिहारें जइ राजाने कह्युं, राजा कोप्यो थको कहेवा लाग्यो के, जो प्रधान इहां नही आवे, तो महारी दीधेली प्रधान पदनी मुद्रा पाळी लइ आव. ते वात प्रतिहारें आवी प्रधानने कही, ते सांजली प्रधानें तत्काल मुद्रा उतारी आपी, ते प्रतिहार लइ गयो. प्रधान हर्ष पाम्यो,ने विचार्युं जे हुं निश्चित थयो. हवे प्रातिहार्य हास्यमिषें ते मुद्रा पहेरीने सर्वने कहेतो हवो के, आ जूउ जाइ हुं प्रधान थइ आव्यो ळुं ! तेवारें बीजा लोको कहे ळे. के हे मंत्रीश्वर ! हलवे हलवे पाउ धारो, एम हांसुं करे ळे ! बहु पुरुषें वींट्यो जाय ळे. तेटलामां कोइक घायकें आवी ते प्रातिहार्यने मास्यो, तेथी कोलाहल थयो. राजायें वात जाणी जे प्रधानें प्रतिहारने मराव्यो. तेथी राजा पण तिहां आव्यो अनें जूवे ळे तो प्रतिहार पड्यो ळे, प्रधान तो दीठो नही; पण घायकने घा लागेला दीठा. तेने राजायें पूछ्युं के, अरे ! तुं कोण ळो ? अने केम महारा प्रतिहारने मास्यो ! तेवारें घायक बोल्यो के, स्वामी ! धरावास नयरीना शूरसेन राजायें मने तमारा प्रधानने हणवा घायक मोकल्यो हतो. अने ए प्रतिहार तो क्यांथी आवीने शुं जाणीयें केम पाशमां आवी पड्यो!

एटलुं कहेतांज ते घायक मरण पाम्यो. पछी राजा पश्चात्ताप करी प्रधानने खमावी कहेतो हवो के,अहो प्रधान धन्य छे तुजने,जो तें आजे आ व्रत न कर्युं हत, तो महारा राज्यने कोण आधार थात. एम राजा पण धर्म नो प्रत्यक्ष महिमा देखीने पोतें पण धर्मी थयो. अनुक्रमें ते राजा अने प्रधान बेहु मरण पामी महाविदेह क्षेत्रें मनुष्य थइ दीक्षा लेइ मोक्षें प होता. एवो ए व्रतनो महिमा छे, माटें देशावकाशिक व्रत पालवुं. इति दशम देशावकाशिक व्रत कथा समाप्ता ॥

इग्यारमुं पौषध नामें त्रीजुं शिक्षाव्रत कहे छे.

११ इग्यारमुं पौषधव्रत चिहुंभेदें जाणवुं. चतुर्विध आहार पोसहे–चतुर्विधआहारतणो परिहार. सरीरसक्कारपोसहे-सर्वथा स्नानादिकशरीर शुश्रूषा तणो परिहार. बंभचेरपो सहे–सर्वथा औदारिक वैक्रियमैथुन तणो परिहार. अ वावारपोसहे–सर्वथा सावद्य व्यापार तणो परिहार ॥ ए इग्यारमा पौषधव्रततणा पांच अतिचार शोधुं. अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय सिज्जासंथारे, अप्पमज्जिय डुप्पमज्जिय सिज्जासंथारे, अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय उच्चार पासवणभूमी, अप्पमज्जिय डुप्पमज्जिय उच्चारपा सवणभूमी. पोसहोववासस्स, सम्मं अणणुपालणया, पो सह कीधे शय्या, उपाश्रय, संथारो, संथारातणी भूमिका अने मल मूत्र तणां थंडिल, थंडिल तणी भूमिका, दिव स छते पडिलेह्यां दृष्टें जोयां न होय, अने वस्त्रांचलें दंडा सणें करी पडिलेह्यां प्रमार्ज्यां न होय; अथवा विरुई परें पडिलेह्यां प्रमार्ज्यां होय, पोसहतणो उपवास सम्यक् सा चव्यो न होय, चतुर्विध आहारमां एके आहार वांछ्यो होय; अने स्नानादिक शरीर सत्कार, अब्रह्मसेवा, वाणि ज्यादिक, गृहव्यापार वांछ्या होय, पाछल्यां समर्थ्यां हो

य, अनागत प्रार्थ्यां होय, शरीर गांठ्यां होय, आलोटा दीधा होय, पोसह थके पारणानी सूत्रणा कीधी होय, दिवसें लांबे पगें संथार्युं होय, श्लेष्मा उघाडो मूक्यो होय, उपाश्रयथी निकलतां आवस्सही पेसतां निस्सही कही न होय, पोरिसी नण्या पाखें रात्रें संथार्युं होय, उर्जेइ संघट्ट हुउ होय॥ अनेरुं ए इग्यारमा पौषधव्रतविषे पक्कु०॥

अर्थः—अगीयारमुं पौषधव्रत छे, ते जे अनुक्रमें करवा थकी धर्मना पोष एटले पुष्टिने धत्ते एटले धारण करे छे, तेने पौषध कहीयें. ते अवश्य अष्टम्यादि पर्वने दिवसें आदरवुं,तेमां रहेवुं. ते पौषध आहारादि नेदें चार प्रकारनुं छे. तेमां एक तो सर्व चार प्रकारना आहारनो परिहार करवो, तेने आहार पोसह कहीयें. बीजुं सर्वथा प्रकारें स्नानादिक शरीरनी शुश्रूषा एटले शोना करवानो परिहार करवो, ते शरीरसत्कार पोसह जाणवुं. त्रीजुं सर्व प्रकारें औदारिक, वैक्रिय, मैथुन तणो परिहार करवो, ते ब्रह्मचर्य पोसह जाणवुं, चोथुं सर्व प्रकारें अवद्य एटले पाप तेणें करी स एटले सहित जे होय, तेने सावद्य कहीयें. तेवा व्यापारनो जे परिहार करवो, तेनें अव्यापार पोसह कहीयें.

ए अगीयारमा पौषधोपवासव्रतने विषे जे अनानोगादिकें करी प्रमादना प्रसंगथी पांच अतिचार लागे, ते शोधुं, शुद्ध करुं. तेनां नाम कहे छे.

जे प्रथम शय्या एटले सर्व शरीरें पूरी थाय एवी लांबी सर्वोपकरण सहित होय ते साडा त्रण हाथ प्रमाणनां जाणवी, अने संथारक एटले पाट कांबला आदिक जाणवां. ते तथा तेनी नूमि तेने अप्पडिलेहिय एटले अप्रतिलेखित ते प्रतिलेखना करी न होय, एटले प्रतिलेखना ते पोतानी दृष्टियें करी सारी पेठें निगाह करी जोवुं ते प्रतिलेखन कहीयें, अने जो प्रतिलेखन करी होय तो ते सारीरीतें करी न होय डुप्पडिलेहिय एटले यद्वा तद्वा ते कांइ करी कांइ न करी एम प्रमाद सहित प्रतिलेखना करी होय, ते प्रथम अतिचार जाणवो. एमज तेज शय्या संथाराने अप्पमज्जिय एटले प्रमार्ज्यां न होय अने कदापि प्रमार्जन कर्यां होय तो पण डुप्पमज्जिय एटले दोषयुक्त कांइ प्रमार्ज्यां कांइ न प्रमार्ज्यां

एवी रीतें यद्वा तद्वा प्रमार्ज्यां होय, ते बीजो अतिचार. तथा उच्चार पास वणनूमी एटले उच्चार जे लघुनीति, वडीनीति तेना पासवण एटले त्याग नूमिनुं प्रतिलेखन न कर्युं होय, अथवा जो प्रतिलेखन कर्युं होय, तो पण यद्वा तद्वा कर्युं होय, ते त्रीजो अतिचार. तथा एज-वडीनीति अने लघुनीति करवानी नूमिनुं पूंजन प्रमार्जन न कर्युं होय अथवा जो कर्युं होय तो यद्वा तद्वा कर्युं होय, ते चोथो अतिचार. तथा पांचमो (पोस होववासस्स के०) पौषधोपवासस्य एटले पोषधने विषे उपवास कस्यो हो य तेनी (सम्मंअणणुपालणया के०) सम्यगननुपालनया एटले नियमें लीधे ली रूडी पालना नही करि होय, तेणे करी पांचमो अतिचार लागे.

हवे ए पांचे अतिचारनो संक्षेपथी अर्थ कहे छेः– पोसह कीधे थके शय्या ते उपकरणसहित साडात्रणहाथ लांबी होय ते, अने उपाश्रय तथा संथारो ते कांबलादिक तथा संथारो ते पाथरवानी जे नूमिका तेने तथा म ल ते वडीनीति करवानां थंमिल अने मूत्र ते लघुनीति करवानां थंमिलनी नूमिका प्रमुख तेने दिवस छते एटले दिवसनी वखतें पडिलेह्यां एटले प्रति लेख्यां न होय, दृष्टियें करी जोयां नही होय. तथा तेने वस्त्रना अंचलें एटले छेहडायें करी अथवा दंमासणें करी पडिलेह्यां एटले प्रतिलेख्यां न होय अने प्रमार्ज्यां एटले पूंज्यां न होय; अथवा पडिलेह्यां प्रमार्ज्यां होय तो पण विरुइपरें एटले विरुद्धपरें कांइक पडिलेह्यां प्रमार्ज्यां होय, कांइक प डिलेह्यां प्रमार्ज्यां न होय. तथा पोसहमां उपवास करेलो होय ते सम्यक् एटले रूडे प्रकारें साचव्यो न होय, पोसह करतां करतां चतुर्विध एटले अशन, पान, खादिम, स्वादिम, एवा चार प्रकारना जे आहार छे, ते मांहे लो कोइ एक पण आहार करवानी मनमां वांछा कीधी होय, अने पोसह ने दिवसें स्नानादिक मर्दनादिक शरीरने सत्कार कस्यो होय, शुश्रूषा करी हो य, तथा अब्रह्मसेवा एटले कुशील पणुं सेववुं तथा पोसह करतां वाणि ज्यादिक एटले व्यापार प्रमुख धंधा रोजगार आदिक गृह एटले घरनां का मकाज संबंधी व्यापार करवानी वांछा कीधी होय. तथा पोसहमां पाछ लां करेलां सावद्यकर्म संजार्यां होय, एटले पूर्वें जे जे सावद्य व्यापार करे ला होय तेनुं स्मरण करयुं होय, ते जेमके में फलाणो धंधो करीने आटलुं धन कमाव्युं ! अने एवा एवा प्रकारनां सुख नोगव्यां. तथा अनागत प्रा

र्थ्या एटले हवे पछी हुं आ अमुक अमुक कार्य छे, ते आवी रीतें करीश. एवी प्रार्थना इच्छा करी होय, तथा पोसहमां शरीरने टाढक करवामाटें पाणी छांटयुं होय, आलोटा दीधा होय, थाकी जवाथी आलोट्यो होय,

तथा पोसहमां रह्यां थकांज भूख प्रमुखें पीड्या थकां पारणानी सूत्रणा करे के, पोसह पूरण थाय के प्रभातें हुं अमुक जातिना आहारादिकें करी पारणुं करीश ! एवी सूत्रणा एटले योजना करि होय, अथवा एम विचारणा करी होय के आ पौषध क्यारें पूर्ण थाय,ने हुं क्यारें जमुं !

तथा पोसह करतां दिवसेंज पग लांबा करी सूइ रहे, अथवा बेसी रहे, एवी रीतनो संथारो करे, पोसहमां तो रात्रिनी पोरिसी भणावीने पछी जो नहींज रही शकाय तो पण कुकडीनी पेठें पग पसारीने संथारो करवो जोइयें, तेनें बदले दिवस छतांज लांबे पगे संथारो करी बेसे.

तथा पोसहमां श्लेष्म नाखवानुं जे ठाम होय,तेने उघाडुं राख्युं होय, के जेमां मक्षिकादिक जीवो आवी पडे, तो अतिचार लागे.

तथा उपाश्रयथी निकलती वखत आवस्सही अने उपाश्रयमां पेसती वखत निस्सही कहेवी जोइयें. ते न कही होय, तो अतिचार लागे.

अने रात्रें हजी पोरिसी भण्या न होय, एटले पोरिसी भणाव्या विना ज सूइ रहेवा माटें संथारो कर्यो होय, तथा उद्धेइ एटले दिवा प्रमुखनो संघट्ट थयो होय,अनेरुं एटले ए मांहेलो कोइ पण सूक्ष्मबादर अतिचार०॥

आ व्रतने विषे ब्रह्मसेननो दृष्टांत कहे छेः—वाराणसी नगरीयें ब्रह्मसेन नामें वणिक् छे, तेनी यशोमती नामें स्त्री छे. एक समयें ते वणिक नगर बाहिर गयो. तिहां भव्य जीवोने उपदेश करता एवा एक साधुने उद्यानमां देखी, तेने प्रणमीने शेठ पण तिहां बेठो ! पछी मुनि बोल्या के अहो भव्यो ! ज्यां लगें जीव हाले चाले छे, त्यां लगें आहार लीये छे. अने त्यां लगें कर्म उपार्जे छे. ते कर्मथी अनंतां दुःख पामे छे. माटें सुखनी वांछा करनार पंमितें आहार करवानी घणी लालच मूकी देवी. ते वारें शेठ बोल्या के हे महाराज! ए उपदेश अशक्य छे, केम के ते पले नही, आहारनी लालच तो मूकायज नही. तेवारें मुनि बोल्या, के हे शेठ ! गृहस्थें पौषधव्रत करवुं. ते पौषध व्रतमां आहार, अंगसत्कार, अब्रह्मसेवा अने पाप व्यापार, ए चार वानां देशथी तथा सर्वथी पौषधव्रतमां दुविध त्रिवि

धें करि वर्जवां. जेटला काल लगें ए व्रत उत्तम श्रावक धरे, तेटला काल लगें आचारनो पालनार जे श्रावक ते पण यतिसरखो जाणवो. ए व्रतना अणजोया अणपडिलेह्या एवा आसने शय्यादिकें बेसवा प्रमुख जे पांच अतिचार छे, ते त्याग करवा. ते अतिचार पोसहनो विधि विपरीत करे थके थाय छे माटें पोसहनो जे विपरीत विधि ते त्यजवो. एम सांजलीने ते समयें तिहां कोइएक क्षेमंकर नामें श्रावक हतो ते कहेवा लाग्यो के, महाराज! म्हारे तो ए पौषधव्रतनो कांइ खप नथी. हुंतो ए व्रत न लहुं! तेवारें ब्रह्मसेन शेठें पूछ्युं. के महाराज! ए क्षेमंकरने पोसहव्रत उपर आटलो बधो श्यो द्वेष छे? ए देखवामां तो स्वजावें जद्रिक छे, वली श्रावकने कुलें उपन्यो छे. तेम छतां एम द्वेषयुक्त वाक्य केम कहे छे?

तेवारें मुनि बोल्या के एनो जीव आ जवथी त्रीजे जवें कोसंबी नगरीने विषे क्षेमदेव नामें वाणीयो थयो हतो. तिहां उत्तम श्रावक एक जिनदेव नामें महोटो जाइ अने धनदेव नामें न्हानो जाइ एवा बे वाणीया महोटा व्यापारी हता. एकदा कुटुंबनो जार न्हाना जाइने सोंपीने महोटो जाइ जिनदेव ते पौषधशालायें जइ विधिसहित सदाय पौषध करवा लाग्यो. एक वखत ते जिनदेवने पोसहमां रहेतां थकां अवधिज्ञान उपन्युं ते ज्ञानना उपयोगें करी जाणीने पोताना लघुजाइने कहेवा लाग्यो के, हे वत्स! तहारुं हवे आउखुं थाकतुं निश्चेंथी दश दिवसनुं रह्युं छे. माटें हे जाइ! तुं कांइ स्वार्थ कर, सावधान मनें करीनें तुं धर्म कर. ते सांजली धनदेवें जगवंतने देहरे जइ महोटी पूजा करी, दीनदुःखीयाने दान दइने अदीन थको नीयाणां रहित रह्यो. तेवारें तिहां क्षेमदेव आवीने तेने कहेवा लाग्यो के, हे जाइ! स्त्रियादिकना संग सहित एवा गृहस्थने अवधिज्ञान ते केम उपजे? अने जो ए साचुं होय,तो हे जइ! ज्ञानरूप सूर्यना उदयाचल एवा पौषधव्रतनेज ग्रहण करशुं, बीजा धर्मनुं आपणें शुं काम छे!!

हवे धनदेव दशमे दिवसें पंचनवकार स्मरतो मरण पामीने बारमे देवलोकें सामानिक देव थयो. पछी तेना कलेवरनी पासें व्यंतरादिक देवतायें सुगंधमय जल फूलनी वृष्टि करी. संतोषथी घणो महोत्सव कीधो. ते देखी क्षेमदेव लगारेक श्रद्धा जाव धरतो धर्मने वांछतो प्रीतियें पोसह करवा लाग्यो, एकदा आषाढ चोमासायें ते एक समयें पोसहव्रत धरीने जूख तृ

षायें पीड्यो थको चारित्रियाने तप करतां जे पीडा थाय छे तेने चिंतवतो हवो के, अहो ! ! आ पौषध व्रतमां तो जूख तृषा अने तापथी महोटुं डुःख छे ! एम आर्त्तध्यानें ते क्षेमदेव व्रतमां अतिचार लगाडी मरण पाम्यो; ते व्यंतर देवमां जई उपन्यो. तिहांथी च्यवी इहां ए क्षेमंकर थयो छे. जे माटें ए पोसहमां पूर्वें खेदसहित मरण पाम्यो हतो, माटें आ जवमां ए ने पोसह उपर द्वेष उपजे छे.

एवुं सांजली ब्रह्मसेन वली साधुने प्रणाम करी पौषधव्रतनो नियम लेइ आत्माने धन्य मानतो पोताने घरे गयो. ते दिवसथी ते शेठ सुखें आजीविका पाम्यो. एम केटलोएक काल गयो. पौषधव्रत पालते पालते एकदा ते नगरनो राजा अपुत्रीयो हतो, ते अकस्मात् मरण पाम्यो. तेनुं नगर बीजा वैरी राजायें जांगवा मांमयुं. तेवारें शेठ पौषधव्रत पालतो मगध देशमां जइ गोर्बर गामने विषे पेट जराइ करवाने हेतुयें विधाताने वशें वसतो हवो. तिहां साधर्मीजाइ कोइ नथी. तथापि तिहां शेठ तेमज पूर्वली परें पोसह करे छे, ते पोसह जे छे, ते कर्म रूप रोगनुं महोटुं औषध छे.

हवे तेने घेर नित्य लेवा देवाना मिषथी डुष्ट बुद्धिना धणी एवा कोइक चार पुरुष आवीने बेठा,अने ते पुरुषोयें शेठना पोसहनो समय जाण्यो. पछी एकदा पाखीने दिवसें शेठें पोसह कीधुं, तिहां रात्रियें पहेला पहोर उपरांत पोरिसी लइने शेठ सूते थके ते डुष्ट पुरुषोयें घरमां पेसी खातर देइने माल लुंटवा मामयो, एटलामां शेठ जाग्यो,अने पोतानुं घर लुंटाणुं एम जाणतो थको पण पर्वतनी पेठें लगार मात्र शुजध्यानथी चलायमान थयो नही. उलटो संवेगना अतिशयथी शेठ पोताना आत्माने आवी रीतनी शीखामण आपतो हवो के,अरें जीव ! धनधान्यादिकने विषे सर्वथा मोह करीश नही. ए सर्व बाह्य छे, अनित्य छे, तुछ छे, घणा डुःखनां देनार छे, माटें एथी विपरीत जे नित्य, घणो सुखकारी एवो जे धर्म, तेनी उपर दृढचित्त करवुं. एवी आत्मशिक्षा श्रेष्ठिना मुखथी सांजलीनें ते चोर हर्षेकरी मनमां जावना जाववा लाग्या. जेमाटें जावना जे छे, तेपण संसारनी नाशक छे. ते जावना एवी रीतें जावी के धन्य छे ए शेठनें ! जेणें पोताना धन उपर पण निःस्पृहता करी ! अने धिक्कार छे अमारा सरखा अधन्य पुरुषपने के जे नित्य उठीने पारकुं धन लेवानी वांछा करे छे ! एम चिंतवता

ते हलुयाकर्मी हता माटें जातिस्मरण पाम्या. कारण के एवी जावना छे, ते पण संसारनाशक छे. पछी देवतायें वेष आप्यो अने सघलायें दीक्षा लीधी.

प्रजातें सूर्य उगे थके चोरोयें अकस्मात् व्रत लीधुं देखीने शेठ तेमने नमस्कार करी पूछवा लाग्यो. जे आ तमारें प्रथम अने हमणांना स्वजावमां विरोध केम पड्यो? प्रथम तो तमें चोर हता,अने हमणां तो तमें साधु थया? तेवारें ते कहेवा लाग्या के, अमें पूर्वें अंगदेशमां केशरी नामें ब्राह्मणना चारे पुत्र हता, अमारो पिता मरण पाम्या पछी अत्यंत वियोगें पीड्या थका तीर्थयात्रा करवाने नीकल्या, तिहां मार्गमां जतां परलोकनुं साधन करवामां आदरवंत एवा एक साधुने जुख तृषायें करी मूर्छा पामेलो दीठो, तेवारें अमें तरत तेनें सावधान कीधो, पछी तेमनी पासेंथी धर्म सांजली दीक्षा लइ, ते साधुनी साथें विहार करतां तप करतां पूर्वगत सिद्धांत जण्या; परंतु कुलनो मद कर्यो, तेथी तपने योगें मरीने देवलोकें उपना, तिहांथी च्यवी इहां मद करवाना योगथी चोरने कुलें आवी उपना. तेमां तमारुं घर आजे लूंटता हता, तिहां आत्मशिक्षा सांजले थके अमने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं, तेथी अमें व्रत लीधुं. तमने पण धर्मलाज हो. धर्ममां तमारुं निश्चल चित्त छे. एम कही ते मुनि तिहांथी बीजे देशें गया.

ब्रह्मसेनशेठ घणा काल लगें दृढधर्म आराधन करी विधि पूर्वक मरण पामी स्वर्ग मोक्ष सुखनो जजनारो थयो. एम हे जव्यलोको! मोक्ष सुखने अर्थें जव समुद्रमां पडता थका प्राणीने तारवाने जहाज सरखुं सर्व व्रतमां प्रधान एवुं ए पौषध व्रत जाणीने जो जव्य प्राणी! तमें पोतानी बुद्धियें करी निरंतर ए व्रतने विषे उद्यम करो. इति पौषध व्रतोपरि ब्रह्मसेन कथा.

हवे ए अगीयारमा व्रत उपर बीजी कथा कहे छे. वाराणसी नगरीमां चूलनीपिता नामें एक श्रावक रहेतो हतो. तेनी श्यामा नामें जार्या हती. तेनुं आठ कोडी द्रव्य जूमिमा दाटेलुं हतुं;आठ कोडी द्रव्य घरना जंडाणमां राखेलुं हतुं; अने आठ कोडी द्रव्य देशावरें व्यापारमां अटकावेलुं हतुं. एवं चोवीश कोडीद्रव्यनो धणी हतो; वली ते चूलनीपिताने घेर आठ तो गोकुल हतां. ते प्रत्येक गोकुलमां दश दश हजार गायो हती. एक वखतें ते चूलनीपिता पोसह लइने रात्रें काउस्सग्ग करी रह्या, एटलामां एक मिथ्यात्वी देवता त्यां आवी अट्टहास करी हाथी, सर्प इत्यादिकनुं रूप वि

कूर्वीने चूलनीपिता श्रावकने बीवराववा लाग्यो; पण शेठ धर्मथी चलाय मान थयो नही. तेवारें ते देवतायें ते शेठनो वडो पुत्र खोटो बनावी तेना केश पकडी शेठनीपासें लावी प्रत्यक्ष ते शेठनी नजर आगल माखो,तेमज बीजो तथा त्रीजो पण कृत्रिम शेठना पुत्र प्रत्यक्ष देखाडी माखो. तोपण श्रेष्ठी धर्मथी चल्यो नही. तेवारें ते देवतायें शेठना माता पितानां वैक्रिय शरीर नीपजावी त्यां काली आण्यां, तेने जोतांज ते चूलनीपिता श्रावक थोडो कलकल्यो. ते सांजली ते शेठनी माता घरमांथी कठीने आवी,अने कहेवा लागी, के हे वत्स! तुं केम कलकल्यो? त्यारें पुत्रें कह्युं. के हे माता! कोइ देवतायें माहारा त्रण पुत्र हण्या,अने वली तमने पण कोइ देवता अनर्थ करे छे, एम में दीतुं. तेथी हुं कलकल्यो. त्यारें मातायें कह्युं, के हे पुत्र! मुजने तथा तारा त्रण पुत्रने कांई अस्वस्थपणुं नथी. तुजने कोइ मिथ्यात्वी देवतायें बीवराव्यो,अने कौतुक देखाडी धर्मथी भ्रष्ट करवानो प्रयत्न कस्यो; परंतु तेथी तें पोतानुं पोसह विराध्युं, ए रूडुं नही कस्युं! नवें नवें माता मलशे, पण पोसह मलवुं घणुं दोहिलुं छे. पछी चूलनीपितायें प्रजातें महा वीरने वांदीने प्रायश्चित्त लीधुं. एवुं पोसह व्रतनुं माहात्म्य सांजली जव्य जीवोयें दृढपणें पोसह करवुं ॥ इति पौषध व्रत उपर बीजी कथा समाप्ता ॥

बारमुं अतिथिसंविजाग नामें चोथुं शिक्षाव्रत कहे छे.

१२ बारमुं अतिथिसंविजागव्रत. जं पर्वतणे पारणे साधुने शुद्धमान, दान, देइ आपणपुं उपजीवियें ते अतिथिसंविजागव्रत कहीयें ॥ ए बारमा अतिथिसंविजागव्रत तणा पांच अतिचार शोधुं. सचित्तनिक्खेवणया, सचित्तपिहणिया, कालाइक्कमदाणे, परोवएसे, मच्छरिया, सूजतुं अन्नपानादिक अण देवानी बुद्धें सचित्त उपरें मूक्युं होय, अथवा सचित्तें ढांक्युं होय, कालातिक्रम-वेला टाली अन्नपान तणी निमंत्रणा कीधी होय. परव्यपदेश-आपणी वस्तु पीयारी कही होय. मच्छरलगें अनेरातणुं दान देखी तेहनी स्पर्द्धायें दान दीधुं होय, अथवा दान तणी वेलायें; म

हात्मा तुम्हें अमारुं कांहीं लेशो तो तुमशुं अमारुं रूषणुं छे. एम कही कलह मांड्यो होय. तथा ग्लानादिक कारण पाखें असूझतुं दीधुं होय, सूझतुं कृपणपणें दीधुं न होय ॥ अनेरुं ए बारमा अतिथिसंविभागव्रत विषे पक्ष दिवस० ॥

अर्थः—बारमुं अतिथि संविभाग नामें व्रत छे. तिहां अतिथि एटले तिथि पर्व उत्सवादिक तेहेवार जे लौकिक व्यवहारनां पर्व, ते जेने आववाने निमित्त नथी एटले तेना त्यागथीज तिथि तहेवारना प्रयोजन विना महापुरुष साधु मुनिराज ते श्रावकने घेर भोजन कालेंज अणचिंतव्या आवे, तेने अतिथि कहीयें, अने शेष बीजा जे तिथि पर्वादिक जोइने भोजनने माटें आवे, तेने अभ्यागत कहीयें. हवे श्रावकें पण पोताने घेर अतिथि आव्यो देखीने रोमोद्गमपूर्वक अपूर्व आनंदसहित पोताने महोटो भाग्यशाली समजीने ते अतिथिने न्यायोपार्जित द्रव्यथी नीपजावेलुं अने प्रसंगादिदोषरहित साधुने माटे नही निपजावेलुं पण पोतानेज माटे निपजावेलुं एवुं जे निर्दोष अन्न पाणी रूप द्रव्य तेनुं देशकालने अनुमाने श्रद्धा सत्कारादि क्रम युक्त पश्चात्कर्मादि दोष रहित महोटी भक्तियें करी सहित पोताना आत्मानी अनुग्रहबुद्धियें करीने संजयाणंदाणं एटले संयतिने माटे अन्नपाणी रूप द्रव्यनो विभाग करवो, एटले ते संविभागित अन्ननुं यतिने दान देवुं, तेने अतिथिसंविभाग कहीयें.

ते (जं के०) जे पाक्षिकादिक पर्वोने दिवसें उपवास सहित पोसह प्रमुख करीने तेना पारणाने दिवसें पूर्वोक्त न्यायोपार्जित द्रव्यें करी निपजावेलुं जे शुद्धमान अन्नपानादिक ते मांहेला विशेष भागनुं दान प्रथम साधुमुनिराजने देइ करीने पछी वधेलो आहार ते आपणपुं उपजीवियें एटले पोतें आहारीयें. एम पोसहादिक पर्वना पारणाने दिवसें अवश्य करवानो नियम करवो, तेने अतिथिसंविभागव्रत कहियें. ए व्रतमां अनाभोगादिकथी लागे एवा पांच अतिचार शुद्ध करुं, तेनां नाम कहे छेः—

एक सचित्तनिक्खेवण अतिचार, बीजो सचित्त पीहण अतिचार, त्रीजो कालातिक्रमदान अतिचार, चोथो परव्यपदेश अतिचार, अने पांचमो मत्सरदान अतिचार. हवे एना अर्थ कहीयें छेयें.

प्रथम साधुने देवायोग्य जे प्राशुक सूजतुं अन्नपानादिक होय, तेने अ णदेवानी बुद्धियें करी सचित्त पृथ्वी, माटी, पाणीनो घडो, बलतो चूलो, अनाजनो ढगलो, पान, फल, फूलनी उपर निक्षेप कर्युं एटले मूक्युं होय, तेथी सचित्तनिक्षेपणनामा अतिचार. तथा तेज पूर्वोक्त, साधुने देवा यो ग्य सूजतुं अन्नपानादिक होय,तेनें अणदेवानी बुद्धियें करी सचित्त पान फूल फलादिकें ढांक्युं होय, एटले सूजता अन्नादिकनी उपर सचित्त वस्तुनुं (पिहणिया के०) पिधानं एटले ढांकवुं. ते बीजो सचित्त पिधानअतिचार॥

त्रीजो अणदेवानी बुद्धियें करी साधुने गोचरी करवानो जे वखत तेने अ तिक्रमीने एटले साधुने वहोरवानी वेला टालीने पढी अन्न पाणीनी निमं त्रणा करवा जाय. के महाराज! महारा उपर कृपा करीने वहोरवा पधा रो? नहीं कां हुं भुख्यो रहीश! तेवारें तेने खप तो नहोय तोपण श्राव क भुख्यो रहेशे तेना भयथी क्वचित् वोहरीने चाल्यो जाय, तेथी ए त्री जो कालातिक्रम अतिचार.

चोथो जेवारें कोइ साधुने खपती चीज साधु मागे, अने पूढे के, आ चीज कोनी ढे? तेवारें अणदेवानी बुद्धियें महोटो भाव देखाडतो ढतो पोतानी चीज होय तो पण परनुं नाम लीये,अने कहे के ए चीज अमा री तो नथी, पण अमारा भाइनी ढे, ते पण अमारीज ढे, अने अमारो भाइ पण सारो दातार ढे, माटें तमे सुखें ल्यो. पढी ते पारकी चीज जा णीने साधु लीये नही, ते चोथो परव्यपदेश नामा अतिचार जाणवो.

पांचमो पोताथी कोइ गरीब होय ते सारीरीतें दान आपतो होय,तेनुं दान देखीने तेनी तारीफ सांभलीने विचारे, जे ए गरीब ढतां शुं ए म हाराथी पण महोटो थवानी चाहना राखे ढे के! एवा मत्सरभगें एटले मत्सरथी तेनी स्पर्द्धायें एटले ईर्ष्यायें करी साधुने दान दीधुं होय, अ थवा दाननी वेलायें साधुयें कांइ चीज मागी तो तेमनी उपर रोष करी कहे के तमें एक अमारुंज घर दीठुं ढे? बीजो कोई गाममां नथी शुं? एम कही क्लेशनुं मंमाण करे. किंवा साधुएं मागेली चीज घरमां ढतां पण आपी नहि होय.कोपथी दान आप्युं होय,तथा ग्लानादिक एटले रोगादिक कारणें कदा पि साधुने असूजतुं पण देवाय,परंतु तेवुं कांइ कारण नही ढतां असूजतुं अन्नपानादिक दीधुं होय,अने कृपण पणाथी साधुने सूजतुं वहोरवा योग्य

कल्पे एवुं अन्नपानादिक दीधुं न होय. ते पांचमो मत्सरनामा अतिचार जाणवो. ए पांच अतिचार श्रावकें जाणवा, पण आदरवा नही.

हवे ए व्रत उपर नरदेवनी कथा कहे छेः—सोरठ देशमां क्षेमपुरी नगरीयें ताराचंद नामें राजा छे, जेम श्रीकृष्णने लक्ष्मी स्त्री हती तेम ते राजाने पण पद्मावती नामें स्त्री छे. तेने रूप लावण्यें करी सहित एवा एक नर देव अने बीजो देवचंद्र एवे नामें बे पुत्र छे. तेमां महोटो पुत्र श्रेष्ठ, बल वान्, भोगी, उदार अने कलानो निधि छे, अने न्हानो पुत्र तेथी विपरीत छे. एकदा राजा चिंतवे छे के, धिक्कार छे आ पुत्रना जन्मने ! के जे संप त्तिनो उपभोग पोतें लेतो नथी, अने बीजाने पण दान आपतो नथी. तेथी ए इहलोक परलोकनां कार्य करवाने सर्वथा असमर्थ छे. माटे एणें निश्चें पूर्वभवें कोइ महोटुं पाप कर्युं हशे ! ते कोइ रीतें पण विशेष ज्ञानी विना सम्यग् रीतें जणाय नही.

एकदा लक्ष्मीनो अधिकारी राजानो भंमारी श्रीदत्तनामें छे. ते आवी राजाने नमीने कहेवा लाग्यो के,हे देव ! थोडा दिवसमां तमारो भंमार खा ली थशे, राजायें पूछ्युं के शामाटें खाली थाशे ? भंमारीयें कह्युं के तमा रो पुत्र नरदेव सर्वने घणुं दान आपे छे,माटें नरदेवना दाने करीनें भंमार खाली थाशे. ते सांभली राजा रूठयो थको बोल्यो के,अहो !! आ तो पुत्रने मिषें करी निश्चेंथी कोइक महारो वैरी उपन्यो छे ! ए दानने व्यसने ग्रस्यो थको महारा भंमारनो क्षय करवा वांछे छे. ते सांभली नरदेव चिंतववा लाग्यो के धिक्कार हो आ वृद्धपणाने ! जेमाटें थोडे दाने करी पण पिताना मनमां दुःख उपजे छे. तेथी महारे इहां रहेवाथी सर्युं. हवे वनमां जई रहेवुं सारुं, पण इहां रहेवुं सारुं नही ! एम विचारी खड्ग सखाइ लेइने रात्रियें तिहांथी निकल्यो, ते पृथ्वीमां भमते भमते अन्यदा एक तपस्वी तेने मल्यो. ते राजपुत्रने उत्तम जाणीने निधिनो कल्प देखाडतो हवो. राजपुत्रें तेने पूछ्युं जे ए कल्प तुजने कोणें आप्यो ? तापसें कह्युं के पूर्वें इहां सिंधुसेनराजा थयो तेनो शंकरधर्म नामें बुद्धिवंत प्रधान हतो. ते राजायें आकरा कर बेसाडेला हता तेणे करीने ते घणुं द्रव्य मेलवतो हवो. माटें ते राजा अने प्रधान बे मली आ पर्वतनी पासें वीश कोडी सोनैयानुं निधान पृथ्वीमां भाटयुं छे, अंते ते राजा अपुत्रीयो मरण पाम्यो. रा

जानो ध्वंस थयो जाणीने प्रधान अमारा गुरुना गुरुनी पासें तापस थयो. तेणें गुरुने आ कल्प देखाड्यो. गुरुयें मह्रारा गुरुने अने मह्रारा गुरुयें मुझने कह्युं के ह्मणां तुं रूडी रीतथी आ कल्पने साचवजे. एम परंपरायें ते कल्प मह्रारे हाथे आव्यो. में तेने खणवा मांम्यो ते निधान खणतां थकां मने घणा विघ्न थयां, माटें हे नरदेव ! तुं इहां मुझने सहाय कर. दाक्षिण्य थी अने लज्जाथी कुमरे पण तेनुं वचन अंगीकार कर्युं. पछी बलि पूजादिक करी निधान खोदते इहां यक्षें तापसने हण्यो,अने निधान प्रगट कर्युं. तेवारें कुमरें विचार्युं जे धिक्कार छे ! अरे ! आ तापसनो प्रयास पण आ निधानमां निष्फल थयो ! तेथी ए निधान मह्रारा पिताने मोकलवुं, पण मह्रारे पोतें जोगववुं नही. एम चिंतवी ते देशनो अयवंतीसेन नामें राजा तेनो मामो छे, तेनी पासें गयो. तेणें पण तेने घणो आदर दीधो. पछी एकाकी आव्यानुं कारण पूछीने राजायें तेने कह्युं के, हे वत्स आ मह्रारुं राज्य तुं ले. हुं वनमां जइने तापस थइश, तेवारें नरदेवें कह्युं के, हे देव ! तमारुं राज्य मह्रारे लेवुं. तेतो रह्युं, पण तमें आ निधान छे ते मह्रारा पितानी पासें मोकली आपो, ते सांजली ते मामायें पण तेमज कर्युं. पछी कुमर पण ते नगरथी निकली गंधिलावती नगरीयें गयो,तिहां शक्रावतार नामक देहेरासरमां श्रीरूषजदेवनी प्रतिमा देखी तेने पंचांग धरतीयें लगाडी प्रणाम करीने ते स्तवना करवा लाग्यो. ते आवीरीतें के,धर्मना उपदेश देवाथी विश्वने आनंदना करनार ! श्रीयुगादि जिनेश्वर ! श्रीनाजिराजाना पुत्र ! तमें जयवंता वर्त्तो. हे देव ! मरुदेवीमातानी कूक्षिरूप सरोवरने विषे हंससमान एवा तुझने जे नमस्कार करे छे, ते निश्चें संसारमां जमता नथी. हे नाथ ! जे लोकोयें दुःखरूप दावानलनेविषे मेघसमान एवी तह्मारी आज्ञानी आराधनानो अंगीकार कर्यो छे,ते आराधक पुरुष,संसारमां दुःखी थता नथी. जे तह्मारा निर्वाणने दिवसें उत्सव, जक्ति करे; ते निरंतर बिहामणा एवा संसारमांहे जमे नही. जेनो शब्द मेघनीपरें गंजीर छे, एवा हे देव ! तह्मारुं शासन जे सेवे,तेनी आज्ञाने शासनदेवता पण उल्लंघे नही. हे देव ! तह्मारा चरण कमल प्रत्यें जे आदरसहित नमे छे. ते निश्चेंथी जन्म, जरा, मरण अने रोग,एणेंकरी रहित थाय. सर्वदा अनंतकुकर्मना अंश तेना वृक्षने जांगवा हस्ती समान एवो तुं चिरंजीवी रहो. लाखोगमे दुःखोना निवारक,

अज्ञानरूप अंधकार टालवाने सूर्यसमान, कंदर्प्पना हणनार एवा हे रुष नदेव ! तुं मुऊ दीनप्रत्यें संसारमां पडता थकाने राख. एम स्तवी संतोषित चित्तें ते जगवंतना देहराथी निकलतो हवो. तेने राजपुरुषो आवी नमीने नक्तियें करी विनवता हवा के, तुऊने तेडवाने सिंधुविष्णुराजायें आ र थ मोकल्यो ले, तेमाटें आ रथमां तुं शीघ्र बेस. कुमरपण ते रथमां बेसी ने राजा पासें गयो. राजायें पण तेने सत्कार मान दइ स्नेह सहित कह्युं के, पुरुषद्वेषिणी एवी आ कमलावती नामें महारी पुत्री ले. तेना वर माटें में कुलदेवताने आराध्यो हतो. तेवारें मुऊ आगल तेणें कह्युं के, आजे शक्रा वतार देहरे जगवंतने स्तवीने जे राजपुत्र प्रजातकालमां देहराथी बाहिर नीकलशे, ते निश्चें आ तहारी पुत्रीनो जर्तार थशे. वली एनी चार सखी यो ले, ते चारे इंद्राणी सरखी ले. तेमां एक तो मिथिला नगरीना राजा नी पुत्री जयसुंदरी ले, बीजी वंगदेशना राजानी पुत्री लीलावती नामें ले, त्रीजी कलिंगदेशना राजानी पुत्री वंसतसेना ले, चोथी कुरुराजानी पुत्री अनंगलेखा ले. ए चार पण एनी साथेंज एक जर्तारने वरशे, माटें एनो त में अंगीकार करो. ते वातनी कुमरें हा कही,तेवारें जेमनी कन्याउ उपवर हती. एवा मिथिलेशादि चार राजायें तथा सिंधुविष्णुराजायें पोतानी कन्याउ शुजदिवसें आपीने महोटे महोत्सवें, महोटी ऋद्धियें हाथी घोडा प्रमुख दइने ते नरदेवनो घणो सत्कार कस्यो. केटलाएक काल तिहां रह्यो पढी पितायें तेडाव्यो, तेवारें पोताने नगरें राणीना परिवारसहित गयो. मा बापने जइ पगे लाग्यो. पिता पण तेनुं चरित्र सांजली रंज्यो थको कहेवा लाग्यो के, घणुं महोटुं दान देवाथी पण ए धननो क्षय थाय नही. जेम आखुं गाम पाणी जरी जाय, तो पण महोटा कूवानुं जल खूटे नही. व ली ए नरदेव कुमरनो कांइक अद्भुत पुण्यनो उदय ले, जेने लक्ष्मी अने निधाननो लाज अणचिंतव्यो थयो, माटें लक्ष्मीनुं मलवुं ते पुण्यानुसारें ले. तेथी सर्वथा कृपणपणुं आदरवुं ते व्यर्थ ले, माटें लक्ष्मीमांथी पुण्य ने अर्थें दान तो अवश्य करवुंज.

एकदा वनपालें आवी राजाने वीनव्यो के, महाराज! आपना नगरनी बाहेर त्रण ज्ञानें करी युक्त एवा जयघोष नामें आचार्य समोसस्या ले. तेवा रें वनपालने संतोषनुं दान देइ राजा पुत्र सहित तिहां जइ गुरुने नमी यो

ध्यस्थानकें गुरु पासें बेठो. तिहां कोई स्वातिदत्त नामें शेठ पोताना पुत्रसहित गुरुने नमीने पूछतो हवो के, महाराज! आ पुत्र महोटी सजामां पण जो जलां वस्त्र पहेरे, तो एनुं शरीर जांगे, तथा लगार पण उत्तम जोजन जमे तो, पीडा घणी थाय. करार न रहे, जो मस्तकें फूल बांधे तो माथामां पीडा थाय, जो विलेपन करे तो सर्व देहमां दाह थाय, तेमाटें हे स्वामी! एणें पूर्वें शुं पापकर्म कीधुं हशे? तेवारें आचार्य, राजादिकनी सा हामुं जोइने कहेवा लाग्या के, पूर्वें वत्सदेशमां त्रण मित्र पोतामां घणा स्नेहवंत होता हवा. एकदा ते नगरना उद्यानमां कुरुराजाना पुत्रें महा बल नामा मुनिने दीठो. तेमने जक्तिसहित वांदीने यतिधर्म पालवाने अस मर्थ माटें श्रावकनो धर्म पूछ्यो. तेवारें गुरु समकेतमूल बारव्रत कहेता हवा. तेमां जेवारें अगीयारमुं व्रत कहीने बारमुं अतिथिसंविजाग व्रत एटले अतिथिने आधाकर्मादि दोषरहित अन्नादिक आपवुं, ते व्रत स्वर्गना जोग प्रमुख संपदानुं कारण छे, एना सचित्त निक्षेपणादि पांच अतिचार वर्जवा. केम के? ते दानादिक पांच लब्धिना घातक छे. ए व्रतनी व्याख्या सांजलीने तेणें तथा त्रणे मित्रें गुरुपासें गृहस्थ धर्म अंगीकार कर्यो. पोता ना आत्माने धन्य धन्य मानता घेर गया. मुनियें पण तिहांथी विहार कर्यो.

हवे ते त्रण मित्रमांथी महोटो मित्र एकदा सोरठ देशमां व्यापारने अर्थें गयो. तिहां गिरनार पासें कोइक नगरें आवी रह्यो. कार्त्तिकमासें चोमासानुं पर्व जाणी पोसह कीधो. तेने सम्यक् प्रकारें पाली बीजे दिव सें पोसह पार्यो. तिहां मध्यान्ह वेलायें जोजन पीरशे थके विचार्युं जे मु निने दान दीधा विना आज हुं केवी रीतें जमुं! माटें जो कोइ महाऋषि माहारे जाग्ययोगें किहांथी पण आवे तो सारुं! ते अतिथिने प्राशुक आ हार पाणीनो संविजाग आपीने हुं जमुं! एवी शुद्धबुद्धियें पांच नमस्कार स्मरीने दिशि साहामुं जोइने जेहवे कोलियो हाथमां लइने जमवाने उद्य म करे छे, तेवामां द्रविड राजर्षि ते पर्वतने विषे चोमासुं पूर्ण करीने चउमासी तपना उपवासी, पारणाने अर्थें आव्या. तेने देखी ए वाणीयो पण जेम वादलविना अणचिंती वृष्टि थाय, तेनी पेठें साहामुं जोइने ह र्ष पाम्यो थको उठी नमस्कार करीने जक्तियें सहित तेने पडिलाज्यो. सुपात्रदानथी तिहां सुवर्णनी वृष्टिप्रमुख पांच दिव्य प्रगट थयां. एम वडे

रो मित्र, आ ज्ञवने विषे पण धर्म, अर्थ अने कामनुं थानक थयो. न्हा ना मित्रें तो तिहां साधुने आहार अणदेवानी बुद्धियें पारणाने दिवसें सचित्त प्रमुखना जेल संजेल करवाथी अतिथिसंविज्ञागव्रतने पांचे अतिचार लगाड्या. साधु आव्यो, पण अशुद्धमान आहार करी देखाड्यो, तेथी ते साधुयें लीधो नही; पढी ते मध्यम मित्रें त्रीजा लघु मित्रने ठानुं कह्युं, जे में आम कयुं. तेवारें त्रीजा लघुमित्रें कह्युं के, जाइ तें रुडुं कीधुं. जे दीधुं पण नही अने व्रत पण न जांग्युं? पढी ते त्रणे जण काल करी मरण पामी देवता थइ तिहांथी आवीने हे राजा! ते वडेरो मित्र तहारो पुत्र ए नरदेव नामें थयो, ते सुपात्रदानें करीने दानादिक गुणनो ज्ञजना रो थयो. तथा बीजा मित्रनो जीव, ते विपरीत मतिनो धणी पापना अनुमोदनथी तहारो लघु पुत्र थयो. त्रीजो न्हाना मित्रनो जीव ते स्वाति दत्तनामें शेठनो पुत्र थयो. एणें पूर्वें व्रतज्ञंग कीधो, माटें आ ज्ञवें जोगा दिकें रहित थयो ढे; अने वली एने कुइ एवा व्यंतर देवताउ रात्रिदिवस पी डा करे ढे. माटें जगतमां विशेष सुखनुं कारण एक आत्माविना बीजो कोइ नथी, कारण के, ते आत्माज पुण्य पापनो उपार्जन करनारो ढे, अ ने पुण्यपाप जे ढे, तेहज सुखदुःखनुं निमित्त ढे.

एवी वाणी सांजलीने राजादिक सर्व यथायोग्य धर्म ग्रहण करता ह वा. वली विशेषें करी नरदेव तो शुद्धबुद्धियें करीने श्रावकनो धर्म ग्रहण करतो हवो. तेवार पढी नरदेव सर्व राज्य पामी घणो काल ते राज्य पा ली अंतकालें सम्यक् संयम पालीने स्वर्ग अने मोक्षनां सुख पाम्यो, माटें देव, मनुष्य अने मोक्ष, तेना सुखनुं आपनार, नरकादि दुःखना समूहनुं हरनार एवुं ए अतिथिसंविज्ञाग व्रत ढे, एम जाणीने ए व्रतने विषे हर्ष सहित आदरवंत थावुं ॥ इति नरदेव कथा ॥

आहीं साधुने आहार वहोरतां बहेंतालीश दोष त्यजवा जोइयें, तेनां नाम कहे ढे.

तिहां प्रथम शोल उजम दोष, ते आहार सिद्ध करतां श्रावकथी उपजे तेकहे ढे. १ जे साधुने अर्थें ढकायनो आरंज करी आहार निपजावे, ते आधाकर्मी दोष. २ कुटुंबार्थे पाक करतां तेमांज साधुने अर्थें अधिक आहार रंधावे, जे साधु आवशे तेने आपशुं! ते उद्देशिक दोष. ३ आधाकर्मी आहारनो

एक दाणो शुद्ध आहारमां मेळवे, ते पूतिकर्म दोष. ४ कांइ साधुने का
जें कांइ पोताने काजें रंधावे, ते मिश्रजाति दोष. ५ साधुने अर्थें आहा
रमांथी जूदो काहाडी राखे, ते स्थापना दोष. ६ साधुनो योग मळवाने
अर्थें तथा तेमने भेट तरीकें कांइ मिष्ट चीज आपवाने अर्थें आखडी तथा
विवाहादिकनी तिथि आघी पाछी करे, ते प्राभृतिक दोष. ७ साधुने
अर्थें अंधारामांथी उपाडीने अजवाळामां लावी मूके, ते प्राडुःकृत दोष.
८ वेचाती चीज आणी साधुनें आपे, ते क्रीत दोष. ९ उछीनुं लइने
साधुने आणी आपे, ते प्रामित्यक दोष. १० आहार पलटावीने गाक
ठीक करीने साधुने आपे, ते परिवर्त्तिक दोष. ११ आपणा कोइ स्वजनें
आपेलुं अन्न साधुने आपे, अथवा आपणा कोइ स्वजनने माटे तैयार करे
लुं अन्न ते कोइ पण कारणथी न लिये, तो ते साधुने आपवुं, किंवा
साधुनी साहामे जइ आहारनुं आपवुं, ते अन्यागत दोष. १२ कमाड,
तालुं अथवा मोढुं बंध करेलुं वासण उघाडीने आपे, ते उद्भिन्न दोष.
१३ ऊंचा स्थानथी उतारी लावीने आहार आपे, ते मालापहृत दोष.
१४ बीजा पासेंथी झूटी लइने आपे, ते आछेद्य दोष. १५ घणा धणीयें
अनेक जनने आपवा माटें तैयार करेलुं जे भोजन होय, तेमांथी ते धणी
जाणतां अथवा अजाणतां जे साधुने आपे, ते अनिसृष्ट दोष. १६
आजे आपणा गाममां घणा साधु आव्या छे, माटें तेने आपवा सारु जो
शे! एवुं जाणी आंधरण उकळतुं होय, तेमां वळी बीजुं काचुं पाणी रेडे,
ते अध्यवपूरक दोष कहियें. ए शोळ दोष श्रावकथी उपजे.

हवे शोळ दोष साधुथी उपजे, ते कहे छे.

१ गृहस्थनां बाळक रमाडीने आहार लीये, ते धात्रीदोष. २ कासी
दनी पेठें गामपर गामना संदेशा कहीने आहार लिये, ते दूती दोष. ३ आ
हारने अर्थें ज्योतिष्य निमित्त भाखे, ते निमित्त दोष. ४ आहारने अर्थें
आपणी जाति प्रकाशे, ते आजीविका दोष. ५ गृहस्थ आगळ दीनप
णुं भाखी लीये, ते वनीपक दोष. ६ आहारने अर्थें नाडी जोइ औषध
करे, ते चिकित्सादोष. ७ आहारने अर्थें रीश करे, शराप दीये, ते क्रो
धपिंड दोष. ८ आहारने अर्थें गृहस्थने मान आपे, पोतें मान करे, ते
मानपिंड दोष. ९ आहारने अर्थें रूप परावृत्त करे, ते मायापिंड

दोष. १० लोनें करी आहारादिक घणुं लीये, ते लोनपिंम दोष. ११ आहारने अर्थे प्रथम तथा पठी गृहस्थने संस्तवे, ते पूर्वपश्चासंथव दोष. १२ आहारने अर्थे देवतानुं आराधन करे, ते विद्यापिंम दोष. १३ आहारने अर्थे कामण मोहनादिक मंत्र प्रयुंजे, ते मंत्रपिंम दोष. १४ आहारनें अर्थे औषध एकठां मेलवी आपे, ते चूर्णपिंम दोष. १५ पादप्रलेपादिकें करी लोक रंजावी आहार लिये, ते योगपिंम दोष. १६ आहारने अर्थे गर्न्न उपजाववानां, गर्न्नपातन करवानां औषध कहे, मूल, अश्लेषाना उपाय कहे, अथवा शांतिकर्म करे, ते मूलकर्म दोष.

हवे दश दोष साधु तथा श्रावक बेहुथी उपजे,ते कहे ठे.

१ कांइक दोषनी शंकासहित आहार लीये, ते शंकित दोष.

२ अनक्ष्य अयोग्यवस्तु लिये, सचित्त अचित्त वस्तुयें करी खरडेले हाथे आहार लिये, ते म्रक्षित दोष.

३ माटी पाणी प्रमुख अनेरा सचित्ते संघट्ट करेली वस्तु लिये, तथा परस्पर संघट्टथी अचित्त थयेली वस्तु लिये, ते निक्षिप्त दोष.

४ एक अचित्त वस्तु सचित्तथी ढांकेली होय, बीजी सचित्त वस्तु अचित्तथी ढांकेली होय, त्रीजी सचित्त सचित्तथी ढांकेली होय, चोथी अचित्त अचित्तथी ढांकेली होय,ए चार नांगामांथी चोथो नांगो शुद्ध ठे अने शेष त्रण नांगे लीये, तो पिहित दोष.

५ देवानां पात्रामां अयोग्य वस्तुने नरेली देखीने ते वस्तु बीजा पात्रमां नाखीने पठी तेज देवाना पात्रथी आहार आपे, ते संहृत दोष.

६ नपुंसक, बालक, घरडो, आंधलो, शीतें कंपतो, बेडीयें जड्यो, हेडमां घाल्यो, खांमतो, दलतो, शेकतो, कांततो, लोढतो, पींजतो, विखेडतो, वलोवतो, जमतो, ठक्कायनो आरंन करतो, आठ मासनी गर्न्नवती स्त्री, धावतो रोतो बालक मूकीनें आपवा तैयार थइ एवी स्त्री, एटला जणने हाथेंथी आहार लेतां दायक दोष लागे.

७ योग्य आहारने अयोग्य आहार साथें मिश्रित करी आपे तें उन्मिश्र दोष.

८ जेना वर्ण, गंध, रस, स्पर्श एनो परिणाम न थयो होय एटले ते पाकुं न होय, एवुं काचुं अन्न, अथवा घरमां एकजणने आपवानो नाव होय अने बीजाने न होय तेवो आहार लीये, ते अपरिणीत दोष.

९ जे साधुने आहार देतां धान्यनी सीथें हाथ खरड्या होय अथवा भाजन खरड्यां होय, तेवा हाथ तथा भाजनने सचित्त पाणीयें धोइने ते हाथथी तथा भाजनथी आहार आपे, अथवा वहोराव्या पछी हाथ धोइ नाखे, एम साधुनिमित्त पूर्वकर्म पश्चात्कर्मनो आरंभ करी आहार आपे, ते लेपकृत दोष.

१० साधुने आहार देनारो धान्यनी सीथ पाडतो तथा घृत, दहीं, दुग्धादिकना टीपां पाडतो ढोलतो ढोलतो आहार आपे, ते छर्दित दोष.

हवे आहार करती वखत मांडलीना पांच दोष लागे, ते कहे छे.

१ स्वादने माटें घणां द्रव्य एकठां मेलवी आहार करे, ते संयोजना दोष.

२ बत्रीश कवलथी उपरांत आहार करे, ते प्रमाण दोष.

३ आहारने अथवा देनारने प्रशंसतो आहार करे, ते प्रशंसा दोष.

४ आहारने अथवा देनारने निंदतो आहार करे, ते धूम्र दोष.

५ विनय, वेयावच्च, संयमनिर्वाह, क्षुधावेदनी उपशम, शुभध्यान, इत्यादि कारण विना मात्र शरीरपुष्टि माटें आहार करे, ते कारण दोष.

ए रीतें आहारना बहेंतालीश अने पांच मांडलीना मली सुडतालीश दोष टालवा. तेमांथी शोल उद्गम दोष श्रावकथी उपजे. तेनुं निवारण करतो पोतानी अनुग्रह बुद्धियें दान आपे. ते अतिथि संविभाग व्रत कहीयें मूल श्रावकने पोसहने पारणे बारमुं व्रत साचववुं कह्युं छे.

एनी उपर धनशेठनी कथा कहे छेः—एक गाममां धनशेठ नामें व्यवहारीयो वसे छे. तेनी रूपवती नामें भार्या छे. बेहु भद्रक परिणामी छे, अने दान देवानी बुद्धि घणी छे. एकवार शेठें गुरुमुखें नियम लीधो, जे म्हारे त्रिकाल देवपूजा करवी, एकांतरें उपवास करवो, सचित्त परिहार करवो. इत्यादिक धर्मकृत्य आचरतां कालक्रमें अंतराय कर्मना उदयथी शेठ निर्धन थयो. तेवारें स्त्रीयें कह्युं, तमें म्हारें पीयरें जइ द्रव्य मागी आणो, अने व्यापार करो, एम घणी प्रेरणायें सासराना घर भणी चाल्यो, साथुआनुं संबल लीधुं, पहेले दिवसें उपवास थयो, बीजे दिवसें दान आपवानो मनोरथ करतांज एक मासखमण करनार साधु मल्या, तेने साथुआनुं दान आपी, पोतें पण साधुआनुं पारणुं कीधुं; वली त्रीजे दिवसें उपवास थयो, चोथे दिवसें सासरे पहोतो. तेमने द्रव्यमाटें घणुं कह्युं पण सासरे जाएुं

जे ए निर्धन छे माटें पाछुं आपशे नही, एवा हेतुथी कांइ पण द्रव्य आप्युं नही. पछी निराश थइ पाछो वल्यो. मार्गमां नदीने तटें आवी चिंतववा लाग्यो, जे स्त्रीयें तो घणा मनोरथें मुजने मोकल्यो हतो; पण मने ठाले हाथे पाछो आव्यो देखीनें निराश थशे! एम विचारी नदीना वाटला कांकरा लइ पोटलो बांधी घरे गयो. पोटलो स्त्रीना हाथमां दीधो, स्त्री हर्ष पामी, दानने प्रभावें कांकरा फीटी रत्न थयां. तेमांथी एक रत्न काहाडी लइने स्त्रीयें अन्नादिकनी सामग्री तैयार कीधी, शेठ विस्मय पाम्यो. भोजन कस्या पछी शय्यायें सूतो थको चिंतवन करे छे के, आ ते शुं थयुं !! तेवामां शासन देवीयें आकाशथी कह्युं के, तह्मारा सुपात्र दानना पुण्य प्रभावथी कांकरा टालीनें में रत्न कीधां छे. पछी शेठ ते रत्नें करी महोटो व्यवहारीयो थयो. धर्म पाली चारित्र लइ मोक्षें पहो तो. एम जाणी अतिथिसंविभागव्रतनेविषे विशषें करी आदर करवो.

हवे साधुने विषे संविभागव्रत कहेवाना प्रस्तावथी केहवा साधुने विषे केहवा प्रकारनुं दान दीधुं? ते आश्रयी कहे छेः—सम्यक्,ज्ञान,दर्शन अने चारित्रनुं जेमने हित छे, तेवा सुहित साधु तथा रोगें करी पीडित, दुःखित, तपें करी दुर्बल शरीरवाला अने तुछ, जीर्ण उपधीयें करीने दुःखीया एवा गुरुनी आज्ञामां विचरनारा सुसाधु तेनी उपर आ महारो पुत्र अथवा भाइ प्रमुख छे एवा रागें करी दान दीधुं, पण गुणवंतनी बुद्धियें दान न दीधुं, अथवा आ साधुने ज्ञातिना लोकोयें काहाडेलो छे, भूख्यो छे, सर्वथा एने खावानुं ठेकाणुं नथी. ए बापडाने आपणे आहार पाणी न आपीयें, तो बीजो कोण आपे? नहीं आपशुं तो ते भूखें मरशे? एवी निंदा रूप जे द्वेष, तेवा द्वेषें करी एटले दुगंछा भावनी बुद्धियें करी महारे जीवें अशनादिक प्रमुख दानें करी दया भक्ति कीधी होय,तेप्रत्यें आत्मसाखें हुं निंदुं छुं, वली ते प्रत्यें गुरुसाखें हुं गर्हुं छुं. विशेषें निंदुं छुं. अथवा वस्त्र पात्रादिकें करी सुखीया अने रोग प्रमुखें करी दुःखिया एवा जे रूडो उद्यम नथी करता, परंतु जीवहिंसादिक कर्मपाशमां पडवा संबंधि उद्यमना करवावाला, जैनाभास, वेषविडंबक एवा असंयती, पासथा, उत्सन्नादिक तेने. अथवा असंयत ते षड्विधजीव वधकोने अथवा अन्यदर्शनी कुलिंगी तेने रागें करीने, जेम के, एक गामना वासी छे अथवा महारा भाइ प्रमुख छे,

आपणी उन्नखाणना छे, इत्यादिक जे रागन्नावें करी दान दीधुं,तथा जिन शासनना प्रत्यनीक छे, द्वेषी छे, निर्लज्ज नंमक छे, इत्यादिक द्वेष उपन्यो तो पण घरे आव्या, माटें दान आप्युं, इत्यादिक न्नावें जे म्हारे जीवें अनुकंपा, दया कीधी होय, तेने निंदुं बुं ॥

अहीं गुणवंत साधुने दान दीधुं ते निंदवुं नहीं, परंतु पूर्वोक्त राग द्वेषनी निंदा करवी तथा पासन्नादिक अने कुलिंगी प्रमुखने गुणवंतनी बुद्धियें दान दीधुं होय, ते निंदवुं, पण जे सहेज अनुकंपायें दान दीधुं होय, ते तो अनुकंपाज कहेवाय,ते दाननें न्नगवंतें पण वर्षीदान दीधुं निषेध्युं नथी, अहीं रागद्वेषनी निंदा जाणवी, पण दान दीधुं, तेनी निंदा जाणवी नहीं.

हवे सुसाधुने दान न दीधुं, ते आलोवे छे. तपें करीने, चरण सित्तरीयें करीने, करण सित्तरियें करीने सहित एवो जे सुसाधु, तेने विषे देवा योग्य प्राशुक निर्दोष एवुं अशनादिक दान छते, म्हारे जीवें जो संविन्नाग, न कीधो होय, तेथी जे अतिचार हुउ होय, ते प्रत्यें आत्मसाखें निंदुं बुं, ते प्रत्यें गुरुनी साखें गर्हुं बुं. आ ठेकाणें तप पदनुं जूडुं उपादान कर्युं छे,तेणें करीने जे तप छे, ते निकाचित कर्मोने पण क्षय करनारुं छे, एवुं प्रधान सूचन कर्युं छे.

हवे संलेषणा व्रत कहे छे.

॥ अपश्चिम मरणांतिक संलेषणा तणा पांच अतिचार शोधुं. इहलोगासंसप्पउगे, परलोगासंसप्पउगे, जीवियासंसप्पउगे, मरणासंसप्पउगे, कामन्नोगासंसप्पउगे. इह लोक आश्री ऋद्धि,वृद्धि तणी आशंसा,वांछा कीधी होय. परलोक आश्री इंद्र चक्रवर्त्तीतणी आशंसा,वांछा कीधी होय.जीवितव्य अने मरण तणी आशंसा, वांछा कीधी होय. कामन्नोग तणी आशंसा वांछा कीधी होय ॥ अनेरुं ए संलेषणा विषे पक्ष०॥

अर्थः—अपश्चिम मरणांतिकें जे अनशन संलेषणा करवी तेना पांच अतिचार शुद्ध करुं. ते अतिचारनां नाम कहे छेः—आ धर्मना प्रन्नावें करी हुं इहलोकने विषे एटले फरी एज मनुष्यन्नव पामीने शेठ, सेनापति, राजा,मंत्री प्रमुखनी ऋद्धिनी वृद्धिने पामुं. एवी आशंसा जे अन्निलाष वांछा तेनो प्रयोग

एटले मननो व्यापार करे,ते प्रथम इहलोकाशंसा प्रयोग नामा अतिचार.

तथा एमज आ धर्मने प्रभावें परलोक आश्री हुं परभवें इंद्र थाउं, अथ वा चक्रवर्त्तीनी पदवी पामुं! एवी आशंसा एटले अभिलाषानो प्रयोग जे मननो व्यापार करवो, ते बीजो परलोकाशंसाप्रयोग अतिचार.

अनशन लीधाथी थतां सन्मान सत्कार देखीने घणाकाल पर्यंत जीव वानी अभिलाषा वांछा करवी, ते त्रीजो जीविताशंसाप्रयोग अतिचार.

चोथो कोइ कर्कश क्षेत्रने विषे अनशन लइने कोइ पूजा अर्चा न कर ता होय तेणे करी अथवा क्षुधादिकें पीड्यां थकां शीघ्र मरण थाय तो सा रुं! एवी जे आशंसा वांछा करवी, ते चोथो मरणाशंसा प्रयोग अतिचार,

पांचमो आ धर्मने प्रभावें हुं आवते भवें रूडा शब्द, रूप, रसादिक जे कामभोग छे ते पामुं! तेनी आशंसा वांछा रूप प्रयोग जे मननो व्यापा र,ते पांचमो कामभोगाशंसाप्रयोग अतिचार जाणवो. ए पांच अतिचार जा णवा, पण आदरवा नही. ए संलेषणाव्रतने विषे पक्षदिवस मांहे जे को०॥

ए व्रतने विषे धर्मघोष अने धर्मयशनो दृष्टांत कहे छेः— आ भरतक्षे त्रने विषे कोसंबीनगरीयें अजितसेन नामें राजा तेनी धारणी नामें राणी छे. एकदा ते नगरीने विषे वृद्ध छे माटें एकस्थानें वास करनारा बहु श्रुत संय मने विषे दृढ रहेला एवा धर्मवसुनामें आचार्य आवी रह्या. तेमना एक धर्मघोष अने बीजा धर्मयश ए बे शिष्यें समाधिथी महोटी संलेषणा आ रंभी छे. तिहां विनयवती एवे नामें अने तेवाज परिणामवाली एक म होटी साधवी छे. तेनी विगतभय एवे नामें विनीत चेली छे. एकदा श्रीसंघ ने पूछीने ते साध्वीयें अनशन कीधुं. तेवारें घणा नगर लोकोयें चमत्कारनी क रनारी एवी तेनी पूजा प्रभावना कीधी. ते देखिने धर्मघोष ऋषियें चिंतव्युं, जे धन्य छे ए आर्याने! के जेनी जीवतां अने मूआ पछी एवी प्रभावना आ नगरने विषे थइ. तेथी हुं पण हमणां अनशन करुं, के जेथी महारीपण एवी पूजा आ भवें अने परभवें प्रवृत्ते! एम चिंतवी तिहां अनशन करतो हवो.

वली धर्मयश पण चिंतववा लाग्यो जे जगतना लोक जाणे जे आ ध र्म करे छे, माटें एने पूजीयें एवा धर्में करीने शुं थाय? एवा धर्मनी कांइ जरुर नथी. एम विचारी गुरुने पूछी वत्सगा नदीने किनारें पर्वतनी गुफा मां जइ उज्जयणी नगरीनी वचालें पादोपगमन नामें अनशन व्रत करी सिंह

नी पेरें निर्ग्रंथ थको एकलो स्थिरचित्तें तिहां रह्यो. एवामां उज्जयणी नगरीयें चंड प्रद्योतनराजानी शिवादेवी राणीनो पुत्र पालकनामें राजा तेनो न्हानो नाइ गोपालक नामें युवराज छे, ते हलुवाकर्मी माटें तृणनी पेरें लक्ष्मीने पडती मूकीने तेणें दीक्षा लीधी अने पालकने एक महोटो अवंतिवर्द्धन अने बीजो न्हानो राष्ट्रवर्द्धन एवा बे पुत्र थया छे. ते पण न्यायवंत छे. तेमां एकने राज्यें स्थाप्यो अने बीजाने युवराज्य पदवीयें स्थापीने ते पालकें रजनी परें राज्य छांमीने चारित्र लीधुं.

हवे राष्ट्रवर्द्धननी धारणी नामें राणी छे, ते रूपेंकरी अप्रतिम अंगवाली छे.• तेनो पुत्र अवंतीसेन छे,हवे ते धारणीने एक समय उद्याननें विषे अवंती वर्द्धनराजायें दीठी. तेनां सूर्यनी कांतिसमान नेत्र कमलने देखीने कंदर्प्पें पीड्यो थको दूतीना मुखथकी तेने घणी प्रार्थना करतो हवो. तेने धारणीयें कह्युं के, तुं नाइथी पण लाजतो नथी. तेवारें अवंतिवर्द्धन राजायें कोइक उपाय करी पोताना न्हानानाई राष्ट्रवर्द्धनने हण्यो.

हवे धारणी गर्नसहित छे, शीलना अलंकारनी धरनारी छे, ते पोताना धणीनी नामांकित मुद्रासहित नाशीने वाणीयाना सथवारा साथें शील राखवा माटें कोसंबी नगरीयें जाती हवी. तिहां राजानी यानशालामां (घोडा, वाहन, रहेवानी शालामां) साध्वीयो रहे छे. तेमनी पासें जइ तेणें चारित्र लीधुं. गर्ननी वात कोइने पण कही नही; पछी वडेरी साध्वीयें ते गर्ननी वात जाणीने छानी राखी. तदनंतर जेम मेरुपर्वतनी नूमि कल्प वृक्ष जणे, तेम ते धारिणी साध्वीयें वखत पूर्ण थये पुत्र जण्यो.

हवे पुत्रोत्पत्ति जे छे, ते साध्वीने संयमसाधनमां अनर्थकारी छे, एम जाणीने राजाना घरने आंगणे नामांकित मुद्रासहित एवा ते कुमर प्रत्यें कोइ न देखे, तेम साध्वी मूकती हवी.

तिहां अजितसेन राजायें मणिना पुंज सरखो तेजवंत बालक देखीने पोताने घेर पुत्ररहित पट्टराणी छे, माटे हर्षे करीने ते कुमर पट्टराणीने आप्यो. पछी गूढगर्ना राणी हती, एवी रीतें लोकमां कहीने राजायें पुत्र जन्मनो महोत्सव कर्यो, अने ते पुत्रनुं मणिप्रन एवुं नाम दीधो. हवे वडेरी साध्वीयें तेने पूछ्युं,तेवारें धारणी साध्वी कहेवा लागी के में मुएलो बालक जण्यो ते हे नगवति ! हुं परठवी आवी.

हवे धारणी पुत्रना प्रेमें करी राणी साथें मित्राइ करे, केटलेक कालें राजा मूवा पछी ते मणिप्रन्न राजा थयो.

हवे अवंतीवर्द्धन राजा लघुनाइ राष्ट्रवर्द्धनने हणीने अवंती नगरीमां आव्यो. तिहां एकतो पोतानो न्हानो नाइ राष्ट्रवर्द्धन तथा बीजी तेज राष्ट्रवर्द्धननी स्त्री धारणी ए बेहुथी च्रष्ट थयो थको घणुं वैराग्य पाम्यो. तेवारें पोताने राज्यें नाइना पुत्र अवंतीसेनने बेसाडी संसारथी बीहितो थको गुरुपासें जइ व्रत ग्रहण करतो हवो.

हवे एकदा मणिप्रन्नराजायें दूत मोकलीने अवंतीसेनने कहेवराव्युं के तुं राज्य लक्ष्मी सुखें नोगव; पण मुऊने खंमणी आपी सलाम नरीने नोगव. तेवारें तेणें कह्युं के व्याजसहित मुलगुं आप्युं ले, तेपण ताहरी पासेंथी लइश. एम कही अवंतिसेन सर्व कटक लइने उतावलो कोसंबी नगरीयें आव्यो. सैन्यें करी चारे दिशियें नगर रुंधीने रह्यो. इहां घणुं ले बल जेनुं, वली अवंतीसेनने ध्वंस करवानो आदर कस्यो ले जेणें एवो मणिप्रन्न पण पोताने शूरवीर मानतो थको बीजा वीर पुरुषोने तृणसमान करी जाणे ले, रणसंग्रामनो एक अद्वैत रसियो थइनें सर्वने हणवाने उजमाल थयो थको चतुरंगसेनारूप चक्रने संग्राम करवा विषे जाण करतो हवो. तिहां नगरनां लोको पण परचक्रने नयें बीहीनां थका नूमिनुं खणवुं, धनादिकनुं माटवुं, तेमां घणां व्यग्रचित्त थयां. तथा बाहिर उच्चार नूम्यादिकें जवामाटें, गोचरी जवामाटें, संकीर्ण पणाथी सर्व यति पण दिलगीर थया, त्यारें आत्मविराधना संयमविराधना थती देखता अनशन करेला धर्मघोष मुनिने सुख संयम यात्रा संबंधी शातानी वात कोइ पण पूछे नही. ते धर्मघोष पूजानो अर्थी लतो जीववानी आशंसा वांछानो प्रयोगी लतां ते न थइ, अने विपरीत पणाथी मरण पाम्यो. तेवारें पण तेना शरीरने कोट उपरथी पाषाणनी पेरें बाहेर नाख्यो.

हवे धारणीयें पोताना पुत्रनुं वृत्तांत मूलथी मांमी प्रवर्त्तिनीने कहीने पूछ्युं के, जो आप आज्ञा आपो, तो ए बे नाइने संग्रामथी हुं निवारुं. गुरुणीयें पण आज्ञा आपी तेवारें धारणी,मणिप्रन्नराजा पासें जइने आगलनुं स्वरूप समजावीने कहेवा लागी के, तमारे संग्राम करवो युक्त नथी! तो पण अनिमानथी ते जेवारें निवर्त्त्यो नही, तेवारें साधवी अवंतिसेन रा

जा पासें उतावली गइ. तेणें नमीने पोतानी माताने सर्व वात पूछी. ते णीयें पण सर्व पोतानुं वृत्तांत संजलावीने कह्युं के,हे पुत्र ! तुं पोताना ल घुजाइ साथें शुं युद्ध करे छे ? ते सांजली संग्रामनो आरंज मूकीनें जाइने मलवा माटें चाल्यो. मणिप्रज पण पोताना जाइने आवतो जाणी जक्तियें करी साहामो आव्यो. तेवारें तेपण वाहनथी नीचें उतरीने परस्परने नेत्रेंकरी जोइने जाणे एकेकना अंगमां पेसि जाशे? एम मांहोमांहे गाढे आलिंगनें नगरी मां घणा उत्सव सहित बेहु आव्या,तिहां केटलाएक दिवस रही ते बेहु जाइ अवंती नगरी जणी चाल्या राजायें तेडी थकी साध्वीयो पण साथें चालियो. मार्गेजातां नदीतटें वासो रह्या,तिहां पर्वत उपर चढतां उतरतां लोकने सा ध्वीयोयें देखीने पूछवाथी मालम पड्युं के धर्मयश मुनि अणसण करी रह्या छे. तेवारें साध्वीयोयें राजाने कह्युं के, अणसणीया मुनिने मूकीने हमणां अमें तमारी साथें नही आवीयें ! एम सांजली परिवारसहित रा जा पण तिहां रह्यो थको नित्यें जक्ति सहित सर्व संपदायें करी मुनिने पूजे. जो पण ते साधु महोटा महिमाने अणवांछतो हतो. तो पण तेवा महिमाने तथा सत्कार मानने पामीने ते महाजाग्यवंत मरण पामीने म होटां स्वर्गनां सुख पाम्यो. एम निश्चेंथी धर्मघोष यतिनी सर्वथा अपन्रा जना जाणीने अने धर्मयश मुनिने विपुलयशनुं सुख जाणीने हे जव्यो ! अतिचारना लेशमात्रें करी रहित थका आदरसहित संलेषणा करवी. विशुद्ध सिद्धांतमां ए प्रकारें कह्युं छे. इति संलेषणाव्रत कथा ॥

हवे जे जे व्रत छे, ते ते व्रतना अतिचारोः पण प्रायें परिग्रहथकी उप जे छे, तेमाटें सामान्यपणे परिग्रह आश्रयीने पडिक्कमवाने कहे छे.

बे प्रकारना परिग्रह छे, तेमां एक द्विपद चतुष्पदरूप सचित्त परि ग्रह, अने बीजो द्रव्य आजूषणादिक ते अचित्तपरिग्रह जाणवो. तथा एक बाह्यपरिग्रह ते धनधान्यादिक नवविध जाणवो, अने बीजो अन्यंतरपरि ग्रह ते कषाय, नोकषाय, मिथ्यात्वरूप चौद प्रकारनो जाणवो. तेनी उत्प त्तिनुं कारण, पापसहित एवा बहुविध कृषिप्रमुख अनेक प्रकारना जे आरंज, तेने पोतें करवाथकी अनेरा पासें करावता थकी बीजा आरंज करनाराने अनुमोदवा थकी जे महारे अतिचार लाग्यो होय, ते सर्व अतिचार प्रत्यें हुं प्रतिक्रमुं छुं, एटले ते अतिचारथकी हुं निवर्तुं छुं.

इहां महोटा परिग्रह आरंभ, तेथी निवर्त्तवुं तेना गुणनुं, तथा निवर्त्तवुं नही, तेना दोषनुं प्रकाशक एवुं बे श्रेष्ठिनुं कथानक कहे छेः—नाशिक्यनगरने विषे नंदनामें बे वाणिया रहेता हता. ते व्यापार करवानी कलामां घणा निपुण हता. तेथी आखा नगरने विषे प्रसिद्ध थया. तेमां एकतो गृहस्थधर्मने विषे घणोरक्त, शुद्ध व्यवहारनो धरनार एवो थको पोताना गुणेकरी लोकमां धर्मनंद एवे नामें प्रसिद्ध थयो; अने बीजो लोभ सहित चित्तवालो तथा खोटा व्यापार करनारो होवाथी तेनुं नाम लोभनंद एवो लोकमां विख्यात थयो. केम के जेहवा गुण पोतामां होय तेवुं नाम पण लोकमां पडे, ए वात लोकमां बलवंत छे.

एकदा नगरना राजाना कहेवाथी प्रधानें तलाव खोदाववा मांड्युं. ते मांथी एक दिवसें घणी कोशो नीकली, ते लोहनी छे,एम जाणीने खणनारा मजुरोने प्रधानें आपी दीधी,तेमांथी ते मजुरें बे कोशो लइने धर्मनंदना हाट उपर जइ देखाडीने कह्युं के आ बे कोशना मूल्यनुं तेल अने अन्न अमने आपो. धर्मनंदें तेमां घणो भार प्रमुख देखीने ते सोनानी छे एम उलखीनें कह्युं के,एनुं महारे काम नथी;पछी तेणें लोभनंदने हाटें जइ देखाडी. तेणेपण तेमज सुवर्णनी जाणीने तरत हाटमां नाखीने मजुरोने घणुं तेल अन्नादिक आप्युं; वली शेठें ते मजुरोने ए कोशनी उत्पत्ति पूछीने लोभना वशें ते मनुष्योने कह्युं के, महारे लोहनी कोशनुं काम छे,माटे तमारा पासें होय तो नित्य प्रत्यें तुमें इहांज लइ आवी आपजो. ते सांभली मजुरोयें पण हाकारो कर्यो,अने नित्य प्रत्यें बे बे कोश तिहां लइ आवे;तेपण संतोष न पामतां उतावलो स्वल्प मूल्यमां ग्रहण करी लिये, वार लगाडे नही घणी मूर्छायें मूर्छित थयेलो शेठ ते कोशनी वात पूछनारा पोताना पुत्रनी आगल पण ते वात करे नही. कारणके पुत्रनो पण विश्वास तेने न हतो.

एकदा ते शेठने पासेंना गामवाला कोइ मित्रें विवाह उपर तेडुं कर्युं. तेवारें कोश लेवानी पुत्रने शीखामण आपीने जोरावरीथी केमे करीने पण तिहां गयो. पाछलथी ते खणनारा मजुरोएं बे कोश हाट उपर लावी शेठना पुत्रने दीधी. तेनुं ते मजुरोयें घणुं तेलादिक माग्युं, तेवारें शेठनो पुत्र रीष चडावीने बोल्यो रे मूर्खो ! आ लोहनुं शुं मूल्य आवे ! एम कही ते कोश हाथमां लइने धरतीयें पछाडी रीषेंकरी भांगी नाखी, एटले

तेना बे खंम थइ पड्या. ते खंम देखीने घणा लोक जोवा मल्यां. एवामां शेठ पण परगाम गयो हतो, तिहांथी पाछो आव्यो, तेणें तेवात जाणीने पोतानो दोष वांक विचारतो क्रोधें करी शीघ्र पोताना बे पगने हणी नांजी नाखिने कहेवा लाग्यो. जे धिक् धिक् अरे आ बे पग जो प्रथमथी साजान हत तो हुं गामें पण जात नही; अने आ आकार्य पण बनत नही ! ! !

हवे ए सर्व वात राजाना माणसें जइ राजानी आगल कही. राजायें मजुरोने तेडावी मूलथी सर्व वात पूछी वाकेब थइने हर्ष सहित पोताना सेवक मोकलीने धर्मनंदने तेडाव्यो; अने लोजनंदने रीषें करी कोटवाल पासें चोरनी पेरे बांधीने अणाव्यो धर्मनंदें आवी राजाने प्रणाम कीधो, तेंने राजा पूछवा लाग्यो तें कोश केम न लीधी ? तथा ते सुवर्णनी छे, एम केम न कह्युं ? तेवारे तेणे कह्युंके महाराज ! परिग्रहपरिमाणव्रत न जांगवाना जयें करी न लीधी. जो कदाचित् सुवर्णनी होय तेनुं घणुं धन उपजे, तेथी व्रतजंग थाय माटें नाकारो कह्यो; तथा वली महारे मृषावादनुं पच्चरकाण करेलुं छे, माटें चोकश जाण्याविना सुवर्णनी खरे खरी छे,एवुं पण शी रीतें कहुं ! वली चोरीनी वस्तु अदत्तलेवानुं पच्चरकाण छे, माटें लोहना जावें सुवर्ण महाराथी केम लेवाय ? वली पोताना व्रतथी अधिक परिग्रह केम ग्रहण करुं ? तथा वली अनर्थदंमथी बीक पामतो बीजाने पण केम कहुं ? जो कहुं तो अनर्थदंम लागे. तेवारें तेने गुणें रंज्यो थको राजा कहेवा लाग्यो के,हे शेठ ! अहो तहारो विवेक ! अहो तहारी निर्लोजता ! अहो तारुं पापथी बीहीवुं ! अहो तहारुं पैशून्यवर्जन ! एम प्रशंसीने सत्कार देइ,वस्त्राजरण आपीने राजायें ते महोटा मनना धणी धर्मनंद शेठने शीख दीधी.

अने लोजनंदने राजा कहेवा लाग्यो. अरे तुं प्रत्यक्ष चोर छो,के जे जोला रांक जेवा खणनाराने तें जोलव्या मूस्या ! हे दुरात्मन् ! तुं लबाड छो. एम कही तेनुं सर्वधन लूंटी लइ घणी विटंबना करी कोइक रीतें तेने छोडी दीधो. इहां धर्मनंद तो महोटा आरंजपरिग्रहनो वर्ज्जनार आ जवें तथा परजवें महोटी कीर्त्तिनुं तथा धर्मनुं जाजन थयो; तथा लोजनंद तो आरंज परिग्रहमां तत्परथयो थको इहलोकें अने परलोकें दुःखनुं स्थानक थयो. एम घणा महोटा आरंज परिग्रहना फलनो माठो परिणाम सांजलीने ए

संसारवृक्षना बीज रूप परिग्रहने विषे हे नव्यजीवो! तमें संतोष करो. इति धर्मनंद लोजनंद कथा समाप्ता ॥

हवे प्रायें सर्व अतिचार, मन, वचन अने कायाना कुव्यापारें होय छे, तेनुं प्रतिक्रमण कहे छे. वधादिकारी एवा शरीरें करी करेला जे अतिचार, ते अतिचार कायोत्सर्गादिक तप अनुष्ठानादिक जे कायाना शुन व्यापार, तेणें करी युक्त एवा शरीरें करीने, तथा सहसान्याख्यानादि रूप वाणीयें करिने कस्यो एवो जे वचनसंबंधि अतिचार तेने,वचने करीने मिथ्याडुक्कड देवुं, जिनस्तवन करवुं, इत्यादिक जे शुन वचननो व्यापार, तेणें करीने, तथा देवतत्त्वादिकने विषे मनें करी शंकादिकने करवे करी कस्या एवा जे अतिचार तेने, मनें करीने एटले अनित्य नावनादिक जे मनना शुनव्यापार तेणें करी तथा " हा! में डुष्ट काम कस्युं " इत्यादिक आत्मनिंदायें करीने एम सर्व व्रतना अतिचार प्रत्यें त्रिकरण शुद्धे करीने हुं प्रतिक्रमुं छुं, निवर्त्तुं छुं. अहीं सामान्यें करी त्रण योगनुं प्रतिक्रमण कह्युं.

हवे एनेंज विशेषें करी कहे छे. एक वंदन ते बे प्रकारें छे. तेमां एक देववंदन, बीजुं गुरुवंदन छे. बीजुं श्रावकनां स्थूलप्राणातिपात विरमणादिक व्रत बार प्रकारें छे, त्रीजी शिक्षा बे नेदें छे. त्यां श्रावकने सामायिक सूत्रार्थनुं ग्रहण, तेने ग्रहणशिक्षा कहियें. ते जघन्यें नवकारथी मांमीने अष्ट प्रवचन, गुरु पासेंथी नणे अने उत्कृष्टो दशवैकालिक सूत्रना पांचमा छज्जीवणिया अध्ययन पर्यंत सूत्र अने अर्थ बेहु नणे, ग्रहे, धारे, शीखे, त्यां लगें प्रथम ग्रहणशिक्षा जाणवी. अने जे अर्थ सहित नमुक्कार सहिय प्रमुख दिनकृत्य एवी श्रावक संबंधि क्रियाअनुष्ठाननी जे सामाचारी छे, एटले पहेलो नवकार कहेतो थकोज उठे, पछी पोतानुं स्वरूप विचारे जे हुं श्रावक छुं! केटलां व्रत मुजने छे? इत्यादिक ते सर्व जाणे, आचरे, आसेवे, ते बीजी आसेवनाशिक्षा कहियें. चोथो ऋद्धि गारव, रसगारव अने शातागारव, ए त्रण प्रकारनां गारव छे. तेमां जे पोतानी पासें धन, तथा कुटुंब परिवार घणां देखीने मनने विषे अहंकार आणे, तेने ऋद्धि गारव कहियें. अने जे सरस अन्न पाणी प्रमुखने विषे लोलुपी थाय, ते रसगारव कहियें. तथा जे सुकुमाल वस्त्र, शय्या, घरप्रमुखने मोहें बांध्यो थको तेने मूकी शके नही, तेने शातागारव कहियें, ए त्रण प्रकारनां गा

रव कह्यां, तेनुं सेवन करवाथी, तथा पांचमो आहार, जय, मैथुन अने परिग्रह, ए चार संज्ञाउ. बीजी क्रोध, मान, माया, लोज, लोक, उघ, ए ठ संज्ञाउ. ते एकेंड्यिादिक सर्व जीवोने होय ठे, तथा ठ्ठो क्रोधादिक चारकषाय, तथा सातमो धर्म धनथी जेणें करी आत्मा दंमाय, ते दंम, अशुज मनादिक त्रण जेदें ठे. आठमो मनादिक त्रण गुप्ति, नवमो ईर्यादिक पांच समिति दर्शन पडिमा प्रमुख श्रावकनी अगीयार पडिमा. ए पूर्वोक्त नव बोल मध्यें जे बोल निषेध करवा योग्य ठे, तेना करवा थकी अने जे बोल करवा योग्य ठे तेना न करवा थकी जे अतिचार, अथवा दोषसमुच्चय मने लाग्यो, ते प्रत्यें निंडुं बुं, पडिक्कमुं बुं.

हवे सम्यक्दर्शनने माटें कहे ठे. जो पण सम्यक्दृष्टि एटले यथाव स्थित स्वरूपनो जाण एवो जीव. ते किंचित् थोडुं कृषि प्रमुख आरंजरूप पाप, ते प्रत्यें निर्वाह चलाववाने अर्थें समाचरे ठे, एटले करे ठे, तोपण ते श्रावक सम्यक्दृष्टि जीवने अल्प ते पूर्व गुणस्थाननी अपेक्षायें करी थोडो कर्मनो बंध होय, जे कारण माटें जाणीयें ठैयें के, सम्यक्दृष्टि जे श्रावक ठे ते, निर्दयपणे हिंसादिक व्यापार न करे, अने करे, तो पण शंका राखीने करे, वली मनमां विचारे के धिक्कार पडो आ गृहस्थाश्रमने के जेने विषे केटलां पाप करवां पडे ठे! एवी बीक राखीने करे पण निर्दय परिणाम राखीने न करे,तेथी तेनें पाप थोडुं लागे ठे.

अहीं कोइ आशंका करे के, जेम थोडुं पण विष खाधुं थकुं प्राण हरण करे ठे तेम थोडुं पण पाप करवा थकी डुर्गतिनी प्राप्ति न थाय शुं? आ आशंकानुं उत्तर आपे ठे. प्रतिक्रमण जे षडावश्यक तेणें करी सहित थको एटले प्रतिक्रमणने करवे करी, वली परिताप सहित थको एटले पश्चात्ताप करवे करी, वली उत्तर गुणें सहित थको एटले गुरुयें दीधुं जे प्रायश्चित्त तप, ते तप करवे करी युक्त एवो जे श्रावक, ते निश्चें अल्पकर्मना बंध प्रत्यें पण क्षिप्र एटले शीघ्र उतावलो उपशमावे ठे, टाले ठे. कोनी पेरें? तोके जेम जलो शीखेलो एवो वैद्य, ते व्याधि प्रत्यें साध्यरोग प्रत्यें तुरत उपशमावे ठे, तेम ए पण जाणवुं.

हवे वली बीजो दृष्टांत कहे ठे. जेम, मंत्र मूलना विशारद, एटले जाण, मांह्या एवा जे वैद्य, ते कोष्ठगत एटले शरीरमां व्यापेलुं एवुं जे सर्पा

दिकनुं विष, ते प्रत्यें मंत्रोयें करीने हणे छे,एटले दूर करे छे, तेवारें ते श रीर, निर्विष एटले विषरहित होय छे, जो पण विषार्त्त पुरुष, अहिमणि मंत्राक्षर औषधिनो प्रजाव जाणतो नथी तो पण अहिमणि मंत्राक्षर औषधिनो प्रजावज अचिंत्य छे, तेथी तेनुं विषार्त्तत्व निवृत्त थाय छे तेम अहिं पण श्रावकने गुरुवाक्यानुसारें तदक्षर श्रवणथी लाज थाय छे.

ए पूर्वोक्त दृष्टांतें गुरु समीपें आलोवतो एटले पोतानां पाप प्रकाश करतो थको, वली निंदतो थको एटले साचा मनथी ' मिछामि डुक्कडं ' देतो थको जलो श्रावक जे छे, ते राग, द्वेषें करीने उपार्जेलुं बांधेलुं एवुं जे अष्टविध कर्म, ते प्रत्यें शीघ्र हणे छे, फेडे छे.

वली एहीज वातने सविशेष कहे छे. पापनो करनार एवो पुरुष पण गुरु गीतार्थादिकना समीपने विषे आलोवतो थको एटले करेलां पाप प्रत्यें प्रकाश करतो थको पापनी निंदा करतो थको एटले मिछाडुक्कड देतो थको अत्यंत पापथकी हलवो थाय, जेम जारनो वहेनार, वहीतरुं करनार पुरुष, जार उतारीने हलवो थाय छे,तेम ए पण कर्मरूप जारें करीने हलवो थायछे.

हवे बहु आरंजरक्त एवा श्रावकने पण आवश्यकें करी ते पापरूप डुःखनो अंत थाय छे, ते देखाडे छे. जोपण, आरंज परिग्रहें करी घणा पापें सहित एवो श्रावक होय, तो पण ए पडिक्कमणादिक जावावश्यकें करी सारी रीतें थोडा कालमांहे ते पापोनो विनाश करशे.

हवे पडिक्कमणुं करतां जे अतिचार आलोववाना विसर्जन थया होय एटले जे अतिचारो, विस्मृत थया होय, ते आलोवे छे. आलोचना एटले गुरु आगल प्रमाद आलोववानी प्रकाश करवानी रीत ते घणा प्रकारनी छे. ते तेना प्रतिक्रमण कालने विषे एटले पडिक्कमण करवाना अवसरें न सांजरी होय, ते न सांजरवा थकी सम्यक्त्व पूर्वक पांच अणुव्रत, तेने विषे तथा त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत, तेने विषे जे अतिचार लाग्या होय, ते प्रत्यें हुं आत्मसाखें निंडु छुं, वली गुरुसाखें गर्हुं छुं.

॥ एवं कारे श्रीसम्यक्त्वमूल बार व्रतविषे पंच्याशी अतिचारमांहे जिको कोइ अतिचार, अनाचार, अतिक्रम, व्यतिक्रम हुउ होय,तथा जाणतां अजाणतां सूक्ष्म,बादर,कानो,

मात्रा, मिंमी, पद, अक्षर, ओगे, अधिको, हलवो, नारी, आगल, पाबल, कह्यो, कहेवाणो होय ॥ ते सवि हुं, मन, वचन, कायायें करी मिछामि छुक्कडं ॥ एनो अर्थ सुगम छे.

१ तथा ज्ञानाचारें ज्ञान रहि, आशातना कीधी होय, पढतां, गुणतां, अंतराय कीधो होय, मछर धस्यो होय, अक्षरने थूंक लगाड्युं होय, पाटी, पोथी, कवली, ठवणी, नोकरवाली, कागलें पग लगाड्यो होय. खमासमण पाखें परिवाडि लीधी होय, ज्ञान द्रव्यतणी सार संनाल कीधी न होय. अनेरुं ज्ञानाचार विषे पक्षदिवस०॥ ते सवि हुं, मन, वचन, कायायें करी मिछामि छुक्कडं ॥ एनो अर्थ सुगम छे.

२ तथा दर्शनाचारें सम्यक्त्व विराधियुं होय, देवगुरु नमस्कार कस्या पाखें नोजन कीधुं होय, देव पूजतां धोती शुद्ध कीधी न होय, मुखकोश कीधो न होय, आधडविचें देव पूज्या होय, गुरुने आसणे, बेसणे, उपगरणे, पग लगाड्यो होय, गुरुवचन द्वेषलगें वाल्युं होय, बिंब हाथ थकी विछूटयुं होय, बिंबनुं वेयावच्च कीधुं न होय, देवद्रव्य आपणे व्यवसायें घाल्युं होय, देवद्रव्य विणसतुं उवेख्युं होय ॥ अनेरुं ए दर्शनाचारविषे पक्ष दिवस मांहे० ॥ जिको कोइ सूक्ष्मबादर अतिचार० ॥ एनो अर्थ सुगम छे.

३ तपाचारें छती शक्तें पच्चक्खाण कीधुं न होय, करीने नांग्युं होय, पच्चक्खाण पाल्युं न होय, नियम अनिग्रह लेई नांग्या होय, छ नेद अभ्यंतर, छ नेद बाह्य तप, अवसरें साचव्युं न होय ॥ अनेरुं ए तपाचार विषे पक्ष दिवसमांहे जिको कोइ सूक्ष्मबादर अतिचार० ॥ एनो अर्थ सुगम छे.

४ वीर्याचारें छतीशक्तें छ आवश्यक सम्यक् साचव्यां न

होय, बती वेलायें पोसह सामायिक कीधुं न होय, बेठां, वांदणां दीधां होय, काउस्सग्ग अधिका अधिको वधार्यो न होय, बतीशक्तें तप कीधुं न होय, द्वेष करतो कोइ वार्यो न होय, नवुं पढतां, आगलुं गणतां, अर्थ विचार पूछतां, कहेतां, आलस कीधुं होय, बती सामग्रीयें दान दीधुं न होय. देवयात्रा, गुरुयात्रा, कीधी न होय. साहमी तणी नक्ति साचवी न होय. धर्मवंतनी आपदा नांगी न होय॥ अनेरुं ए वीर्याचारविषे पक्ष दिवस मांहे०॥ एनो अर्थ सुगम बे.

अनेरुं जं कांइ जिनवचन विरुद्ध मन, वचन, कायायें करण करावण अनुमतियें करी समाचर्युं होय, ते सवि हुं, मन, वचन, कायायें करी मिच्छामि डुक्कडं॥

अर्थः—अनेरुं एटले ए पूर्वे कह्या ते मांहेलो जंकाइ एटले जेकांइ श्री जिनेश्वरना वचनथी विरुद्ध करण एटले पोतें कर्युं, करावण एटले अनेराने हाथे कराव्युं तथा अनुमति एटले बीजो कोइ करतो होय तेने अनुमोदवे करीने पाप समाचर्युं होय, ते सर्व डुक्कडं एटले पाप तेने हुं महारा मन वचन अने कायायें करी मिथ्या करुं बुं. एटले ते पाप महारुं फोक थाउ.

हवे कोइ आशंका करे के जेणें व्रत स्वीकार्यां बे तेने प्रतिक्रमण करवुं योग्य बे, परंतु अव्रतीने तो व्रतना अनावें करीने तेना अतिचारनो पण अनाव बे, माटें प्रतिक्रमण करवुं योग्य नथी. ते वातनो निषेध करवाने कहे बे के, आ प्रतिक्रमण जे बे, ते केवल अतिचारोने विषेज नथी परंतु चार स्थानकने विषे पण बे, माटें ते चारे स्थानकनें विषे प्रतिक्रमण थाय बे, तेना उपदर्शनने माटें गाथा कहे बे.

पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं॥
असद्दहणे य तहा, विवरीय परूवणाए य॥ १॥

अर्थः—एक (पडिसिद्धाणं के०) प्रतिषेधवा योग्य निषेधवा योग्य जे सम्यक्त्व अणुव्रतनां मालिन्यहेतु एवां शंकावधादिक तथा अढार पाप स्थानकादिक जे अतिचारसेवनादिक रूप अशुनकार्य बे, ते अशुन कार्य

ने (करणे के०) करवे करी, तथा बीजो (किच्चाणं के०) करवा योग्य एवां जे (पडिक्कमणं के०) देवपूजादि षट्कर्म तथा सामायिकादिक षडावश्यक विनयदानादिक अरिहंतनां नक्तिप्रमुख जे शुनकार्य ठे,ते शुनकार्यने (अ करणे के०) अणकरवाथकी (य के०) वली त्रीजो (असद्दहणे के०) अश्रद्धानने विषे एटले निगोदादिक सूक्ष्मविचारने अणसर्द्दहवे करीने (अ के०) वली (तहा के०) तथा चोथो (विवरीयपरूवणाए के०) जिनागमथकी विपरीत एटले उलटी प्ररूपणा करवे करीने एटले उत्सूत्र प्ररूपणा करवे करीने, आ जे विपरीत प्ररूपणा ठे, ते चतुरंत एवुं अत्यंत नवन्रमण, तेनी कारणनूत ठे. ते विपरीतप्ररूपणा तो अनानोगादिकें करे ठते पण प्रतिक्रमण कराय ठे. त्यां शंका करे ठे के, विपरीत प्ररूपणा जे ठे, ते तो सूत्र कथन करतो होय, तेने थवानो संनव ठे, परंतु अन्यने तो नथी, माटें शुं धर्मकथननो अधिकार श्रावकने ठे ? तो त्यां कहे ठे के, श्रावकने धर्मकथननो अधिकार ठे, कारण के गीतार्थथकी अधिगत ठे सूत्र जेने तेवा तथा गुरुने आधीन ठे वचन जेने, तेवा श्रावकने शा माटे सूत्र कथनननो अधिकार न होय ? त्यारें वादी कहे ठे के, ए जे अधिकार ठे, तेमां प्रमाण शुं ? तो त्यां प्रमाण कहे ठे के,–पढइ सुणेइ गुणेइ जिणस्स धम्मं परिकहेइ" इत्यादि वचन ठे, तेथी ए चार प्रकारें करीने जे पाप लाग्युं होय, अतिचार हुउ होय, ते पापने दूर करवाने अर्थें (पडिक्कमणं के०) प्रतिक्रमण ठे, मिछामि डुक्कड ठे ॥

देसावगासियं उवनोगं परिनोगं पच्चस्कामि अनलणानोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥

॥ इति श्रीमद्विधिपक्षगछ शृंगारपूज्य श्री जयशेखरसूरि विरचिताः श्रावकस्य बृहदतिचाराःसंपूर्णाः ॥

॥ ए रीतें श्रावकनुं चोथुं प्रतिक्रमण नामें आवश्यक शंक्षेप अर्थ सहित समाप्त थयुं. एना मूल पाठमां केटलाएक प्राकृत कोइ देशविशेषना शब्दो आवेला ठे तेथी तेनो अर्थ महारी समजमां बराबर न आववाथी कदापि बराबर न लखायो हशे तेवा शब्दो शुद्धि पत्रमां दाखल करीश तिहांथी जोइने सज्जनोयें बराबर अर्थ बेसाडवो अने ए महारो अपराध खमवो.

ए रीतें बृहदतिचार कही रह्या पछी इच्छामि खमासमण पूर्वक हेग बेशी ने इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन्! अष्टोत्तरी तीर्थमाला कहुंजी. एम कही नमो अरिहंताणं०॥ संपूर्ण कहीने तीर्थमाला कहीयें, ते लखीयें बैयें.

अथ

श्री अचलगच्छेश्वर श्रीमन्महेंद्रसिंहसूरिविरचित श्रीअष्टोत्तरी तीर्थमाला बालावबोध सहित प्रारंजः ॥

अरिहंतं जगवंतं, सवन्नुं सवदंसि तिच्छयरं ॥
सिद्धं बुद्धं निच्चं, परमपयछं जिणं थुणिमो ॥ १ ॥

अर्थः–(अरिहंतं के०) अर्हंतं एटले पूजन करवा योग्य अथवा अंतरंग शत्रु जे काम क्रोधादिक तेने हणनारा एवा तथा (जगवंतं के०) समग्र ज्ञानादि प्रबैश्वर्ययुक्त वा पूज्य एवा तथा (सवन्नुं के०) सर्वज्ञं एटले सर्व लोकालोक स्वरूपने जाणनारा एवा (सवदंसि के०) सर्वदर्शिनं एटले लोकालोक स्वरूपदर्शनशील एवा, अहिं कोइ शंका करशे के सवन्नुं ए पदमां सवदंसि ए पदनो अर्थ आवीज गयो, कारण के सर्वज्ञ एटले लोकालोकस्वरूपनें जाणनारा तेमज सर्वदर्शिनं एटले सर्व लोकालोकने जोनारा, आवी रीतें बेहु पदनो अर्थ एकज थयो, तेथी ए द्विरुक्ति दोष आव्यो? आ शंकाने मटाडवा माटें कहे छे के, दर्शनोपयोगें करी विशेष ज्ञान ते ज्ञान अने सामान्य उपयोग ते दर्शन अर्थात् ज्ञान अनें दर्शन ए बेहुनो अर्थ जूदो जूदो थयो, माटें सवन्नुं अने सवदंसि ए बे पदना अर्थमां द्विरुक्ति दोष नथी. वली (तिच्छयरं के०) तीर्थकरं एटले शासनने प्रकाश करनारा एवा अने (सिद्धं के०) समाप्त थयुं छे स्वकीय कार्य जेने एवा, अने (बुद्धं के०) पोतानी मेलेंज बोधने पामेला एवा, (निच्चं के०) नित्यं एटले नित्य ज्ञाननें प्राप्त थयेला अथवा मोक्षने प्राप्त थवाथी शाश्वत एवा अनें (परमपयछं के०) परमपदस्थं एटले मुक्तिक्षेत्रने विषे रहेला एवा (जिणं के०) श्रीजिनजगवानने (थुणिमो के०) स्तुमः एटले कर्त्ता कहे छे के, अमें स्तवियें बैयें ॥ १ ॥

हवे आरंभने विषे विशेष भक्तिने कहेनारा एवा जयजयर
वने भगवानना उद्देशें करी कहे छे.

जय जय तिहुयण मंगल, भट्टारय सामिसाल भयचत्त ॥
देवाहिदेव जग पहु, परमेसर परमकारुणिय ॥ १ ॥

अर्थः– (तिहुयणमंगल के०) हे त्रिभुवन मंगल ! एटले हे जगत्त्रयमां महामंगलरूप ! अर्थात् त्रिभुवनने मंगल देनारुं जेनुं दर्शन छे माटे तमो त्रिभुवनमां मंगलरूप छो, वली (भट्टारय के०) हे भट्टारक! एटले हे सर्व पूज्य, तथा (सामि के०) हे स्वामिन्! वली (साल के०) हे वृक्ष समान! अर्थात् जेम वृक्ष, पोताने आश्रय करनारने छाया तथा फलनुं देनारुं थाय छे, तेम प्रभु पण आश्रय करनारने आनंद तथा मोक्ष रूप फलना देनारा थाय छे, अथवा शाल ए प्रत्यय पूजनमां प्रवर्त्ते छे, माटें हे पूज्य! वली (भयचत्त के०) हे भयत्यक्त! एटले हे बाह्यशत्रु अने अंतरंग जे कामक्रोधादिक शत्रु तेना भयथकी रहित ! तथा (देवाहिदेव के०) हे देवाधिदेव ! एटले देवना अधिप जे इंद्र तेना पण दैवतरूप ! वली (जगगुरु के०) हे जगद्गुरो ! एटले हे प्राणसमूहात्मक जगतना धर्मेक थकत्वथी गुरुरूप ! तथा (परमेसर के०) हे परमेश्वर, एटले हे परमप्रभु! तथा (परमकारुणिय के०) हे परम कारुणिक ! एटले हे परमदयारूप ! तमो (जयजय के०) उत्कृष्टा वर्त्तो. आहीं जयजय एम बे वखत जय शब्द लख्यो छे, तेमां पुनरुक्ति दोष नथी, कारण कें स्तुति करवाने प्रसंगें भक्ति रसमां मग्न थयेलो स्तुतिकार हर्षथी बे वखत जयवाद करे छे ॥ १ ॥

जय जय जगिक्कबंधव, भवजलहिदीव तिहुअण पईव ॥
जय जय जगचिंतामणि, तिहुअण चूडामणि जिणंद ॥ २ ॥

अर्थः–वली (जगिक्कबंधव के०) हे जगदेक बांधव ! एटले हे जगतना एक अद्वितीय बंधवरूप ! तथा (भवजलहिदीव के०) हे भवजलधिद्वीप ! एटले हे संसारसमुद्रमां द्वीप समान ! (जयजय के०) उत्कृष्टा वर्त्तो तथा (तिहुअणपईव के०) हे त्रण भुवनने विषे प्रदीप समान ! तथा (जगचिंता मणि के०) हे जगच्चिंतामणे ! एटले जगत्‌ना जीवोने चिंतामणि समान

अर्थात् जेम चिंतामणि रत्न, आगल राखी चिंतवन करनार प्राणीने चिंतित पदार्थने आपे, तेम तमें पण शरणे आवेला प्राणियोने चिंतित एवा मोक्ष सुखने आपो बो. तथा (तिहुअण चूडामणि के०) हे त्रिभुवन चूडामणे! एटले हे त्रण जगतना मुकुटरूप! एवा (जिणंद के०) हे जिनेंद्र! तमो (जय जय के०) उत्कृष्टा वर्त्तो. आहिं पण पूर्वोक्त गाथानी पठें स्तुति होवाथी जय जय ए पुनरुक्ति दोष आवतो नथी ॥ ३ ॥

जय जय सिवपह संदण, असरण जणसरण दीन उद्धरण ॥
जय जय नवनयनंजण, जणरंजण ठिन्नजरमरण ॥ ४ ॥

अर्थः—(सिवपहसंदण के०) हे शिवपथस्यंदन! एटले शिवपथ जे मोक्षमार्ग ते प्रत्यें चालवाने स्यंदन एटले रथ समान तथा (असरणजणसरण के०) हे अशरणजनशरण! एटले हे अशरण जनना शरणरूप! तथा (दीनउद्धरण के०) हे दीनोद्धरण! एटले हे कर्मथी दुःखित एवा दीन जीवोना उद्धार करनार! तमो (जय जय के०) उत्कृष्टा वर्त्तो. तथा (नवनयनंजण के०) हे नवनयनंजन! एटले संसारनयना नांगनारा, तथा (जणरंजण के०) हे जनरंजन! एटले हे जनमात्रने प्रीतिना करनार! तथा (ठिन्नजरमरण के०) हे ठिन्नजरामरण! एटले ठेदी नाख्यां ठे जरा ने मरण जेणें एवा हे नगवन्! तमें (जयजय के०) उत्कृष्टा वर्त्तो ॥ ४ ॥

जय कम्मजलहि तारण, तरंम गुणरयण धारण करंम ॥
जय विसमबाण वारण, वरंम मुणिसुमण वणसंम ॥ ५ ॥

अर्थः—(कम्मजलहितारणतरंम के०) हे कर्मजलधितारण तरंम! एटले पापसमुद्र थकी तारवाने तरंम एटले वाहाण रूप! वली (गुण रयण धारण करंम के०) हे गुण रत्न धारण करंम! एटले गुणरूप रत्नने धारण करवामां करंमियारूप! तथा (विसमबाणवारण वरंम के०) हे विषम बाण वारण वरंम! एटले विषम बाण जे सुरासुरने नय करनार कामदेव तेनां बाण तेने वारवामां वरंम एटले बगतर जेवा अर्थात् जिहां बगतर पहेरेलुं होय, तिहां बाण नेदी शके नहि, तेम जेने नगवान्बगतर रूप ठे माटें तेने कामबाण नेदी शकतां नथी तथा (मुणिसुमणवणसंम के०) हे मुनिसुमनोवनखंम! एटले मुनि जे महार्षियो ते रूप सुमन जे पुष्पो तेनां

हेतुपणा थकी तथा धारणकरवाथकी वनखंम ते उद्यान समूह रूप एवा हे प्रजो ! तमो (जय के०) उत्कृष्टत्वें करी वर्त्तो ॥ ५ ॥

हवे जगवान्नी स्तुतिमां प्रवृत्ति होवाथी स्तुतिकरनार हर्षथकी पोतानुं कृतार्थपणुं कहे बे.

धन्नोहं पुन्नोहं, सहलो मह एस माणुसो जम्मो ॥
जं जिण तुह पयपंकय, पसाय पासायमन्निरूढो ॥६॥

अर्थः–(जिण के०) हे जिन ! (अहं के०) हुं (धन्नो के०) धन्यः एटले धन्य बुं, तथा (अहं के०) हुं (पुन्नो के०) पुण्यः एटले पवित्रात्मा बुं. तथा (मह के०) मम एटले मह्वारो (एस के०) एषः एटले आ (माणु सो के०) मानुष्यः एटले मनुष्यसंबंधी (जम्मो के०) जन्म ते (सहलो के०) सफल थयो. श्या कारणथी सफलजन्म थयो ? तेनो हेतु कहे बे. (जं के०) यत् एटले जे कारणमाटें (तुह के०) तमारां (पयपंकय के०) पदपंकज एटले चरणकमल तेना (पसायपासायं के०) प्रसादप्रासादं ए टले प्रसन्नतारूप जे प्रासाद एटले राजनवन ते उपर (अन्निरूढो के०) चडे लो बुं. अर्थात् तमारा चरण शरणमां हुं आव्यो, तेथी कृतार्थ थयो बुं॥६॥

धन्नो एसो दिवसो, जाम मुहुत्तो वि एस सुपवित्तो ॥
जंमि तुमं तिजगगुरू, नवमरुपहसुरतरू पत्तो ॥ ७ ॥

अर्थः– हे नाथ ! (एसो के०) एषः एटले आ (दिवसो के०) हम णांनो दिवस (धन्नो के०) धन्यः एटले धन्य बे. (एस के०) एषः एटले आ (जाम के०) प्रहर, अने आ (मुहुत्तोवि के०) बे घटिकामात्र बे प्रमा ण जेनुं एवो काल पण (सुपवित्तो के०) सुपवित्रः एटले अत्यंत पवित्र जाणवो. आ ठेकाणें अपि शब्द लीधो बे,तेथी घटिका,पल पण ग्रहण कर वां. तिहां कवि कहे बे के, दिवस, याम, मुहूर्त्त वगेरे सर्व माहारां पवित्र बे, ते कयो दिवस, कयो याम, कयां मुहूर्त्त, वगेरें पवित्र बे ? तो के (जं मि के०) यस्मिन् एटले जे दिवस, जे याम, जे मुहूर्त्त घटिकादिकने विषे (तुमं के०) त्वं एटले तमें (तिजगगुरू के०) त्रिजगुरुः एटले त्रण जग तना गुरु (पत्तो के०) प्राप्तः एटले मने प्राप्त थया. अर्थात् तमारे शर

ऐं जें दिवस वगेरेमां हुं आव्यो,ते दिवसवगेरे माहारां धन्य ले. एम जाण वुं. हवे ते तमो कहेवा गो ? तो के, (नवमरुपहसुरतरू के०) नवमरुप थसुरतरु एटले संसार रूप मरुपथ एटले मरुस्थली तेने विषे सुरतरु जे कल्पवृक्ष ते समान गो. एटले जेम मारवाडमां कल्पवृक्ष अलन्य होय ले, तेम संसारमार्गानुयायी जीवोने तमें पण दुष्प्राप्य गो ॥ ७ ॥

अद्यं मह चिंतामणि, सुरतरु सुरगावि नद्द कुंनाई ॥
सयलं सुलहं जं पहु, अलध्दपुव्वो तुमं लद्धो ॥ ८ ॥

अर्थः—हे स्वामिन्! (अद्यं के०) अद्य एटले हमणां (मह के०) मम एट ले महारे (चिंतामणि के०) चिंतामणि, (सुरतरु के०) कल्पवृक्ष, (सुरगावि के०) कामधेनु, (नद्दकुंनाई के०) नद्रकुंनादि एटले कामकुंनादि ते (स यलं के०) सकलं एटले ते पूर्वोक्त चिंतित पदार्थने देनारो एवो सर्व वस्तुनो समुदाय (सुलहं के०) सुलनं एटले सुलन थयो. ए सर्व समुदाय सुलन श्या थी थयो ? तो के (जं के०) यत् एटले जे कारणमाटें (पहु के०) प्रनु एटले हे प्रनो ! (अलध्दपुव्वो के०) अलब्धपूर्वः एटले पूर्वें क्यारें पण प्राप्त थया नथी एवा (तुमं के०) त्वं एटले तमो (लद्धो के०) लब्धः एटले प्राप्त थया गो. तेथी मारे चिंतामणि वगेरे सर्व मल्या जेवुंज थयुं ले ॥ ८ ॥

हवे ए प्रमाणें स्तुतिकार पोतानो हर्ष प्रगट करीने पगी पोतानी समी पमां बेठेला नव्य जनने हितोपदेश करे ले.

नरयनव तिरिय नर सुर,वर समुदय नमिय चलणकमलजुगं ॥
तिहुअणजण सुरतरुसम, महनिसमवि नमह तिजगपहुं ॥ए॥

अर्थः—हे नव्यजनो! तमें (तिजगपहुं के०) त्रिजगत्प्रनुं एटले त्रण जगतना प्रनु एवा नगवानने (अहनिसमवि के०) अहोनिशमपि एटले रात्रिदिवस निरंतर (नमह के०) नमत एटले प्रणाम करो. अहिं अपि शब्दनुं जे ग्रहण कर्युं ले, तेथी स्तुतिकार कहे ले, के जेम हुं प्रणाम करुं लुं, तेम तमें पण नमन करो. हवे ते पूर्वोक्त त्रिजगत्प्रनु केहवा ले ? तो के (नरयनव के०) नरक नवाः एटले नरकने विषे उत्पन्न थया जे नारकी जीव अने (तिरिय के०) तिर्यंचः एटले एकेंद्रियादिक जीव,तथा

(नरसुरवर के०) नरने विषे अने देवताउ विषे श्रेष्ठ, तेमनो जे (समुदय के०) समूह तेणें (नमिय के०) नमित एटले नमन कर्युं वे (चलण कमलजुगं के०) चरण कमलद्विकं एटले चरण कमलनुं जोडलुं जेनुं. अर्थात् नारकी, तिर्यंच, नर, सुर, ए सर्वेयें जेनां बे चरण कमलनुं वंदन कर्युं वे एवा, वली केहवा वे? तो के (तिहुअणजणसुरतरुसम के०) त्रण जगत्मां निवास करनारा जनने कल्पवृक्ष समान सुखदायक वे ॥ ए ॥

अठदस दोसरहिए, सहिए चउतीस अइसयवरेहिं ॥
हयकोहे कयसोहे, अठ महापाडिहेरेहिं ॥ १० ॥

अर्थः— हवे स्तुतिकार कहे वे, के हुं त्रणे काल, जे श्रीजिनेंद्रनी स्तुति करुं बुं. ते जिन केहवा वे ? तो के, (अठदसदोसरहिए के०) अष्टादश दोषरहितान् एटले अढार दोषोयें करी रहित. वली केहवा वे? तो के (चउतीसअइसयवरेहिं के०) चतुस्त्रिंशद्वरातिशयैः, एटले चोत्रीश मनोहर अतिशयोयें करी (सहिए के०) सहितान् एटले सहित एवा, वली केहेवा वे ? तो के (हयकोहे के) हतक्रोधान् एटले हण्यो वे क्रोध जेणें एवा, तथा (अठमहापाडिहेरेहिं के०) अष्टमाहाप्रातिहार्यैः एटले आठ महाप्रातिहार्योयें करी (कयसोहे के०) करेली वे शोजा जेमनी एवा वे ॥ १० ॥

जियरागे जियदोसे, जियमोहे अठकम्म निम्महणे ॥
सिवपुर पहसबाहे, गयबाहे थोमि जिणनाहे ॥ ११ ॥

अर्थः— वली केहवा वे ? तो के, (जियरागे के०) जितरागान् एटले जित्या वे रागादि दोषो जेणें एवा, तथा (जियदोसे के०) जितदोषान् एटले जित्या वे द्वेषरूप दोषो जेणें एवा,तथा (जियमोहे के०) जित मोहान् एटले जित्यो वे मोह जेणें एवा तथा (अठकम्मनिम्महणे के०) अष्टकर्मनिर्मथनान् एटले आठ कर्मोने जेणें मथन एटले नाशकर्यां वे एवा, तथा (सिवपुर पहसबाहे के०) शिवपुरपथसार्थवाहान् एटले शिवपुरपथ जे मोक्षमार्ग तेनेविषे सार्थवाहसमान एवा (गयबाहे के०) गतबाधान् एटले गइ वे कर्मपीडारूप बाधा जेमनी एवा (जिणनाहे के०) जिननाथान् एटले जिननाथ जगवानने (थोमि के०) स्तौमि एटले हुं स्तवुं बुं. हवे जग

वान् अष्टादश दोषें रहित छे एम कह्युं. ते अढारें दोषोनां नामो कहे छे. पहेलो दानांतराय, बीजो लाभांतराय, त्रीजो वीर्यांतराय, चोथो भोगांतराय, पांचमो उपभोगांतराय, छठुं हास्य, सातमी रति, आठमी अरति, नवमो भय, दशमी जुगुप्सा, अगीयारमो शोक, बारमो काम, तेरमुं मिथ्यात्व, चउदमुं अज्ञान, पंदरमी निद्रा, शोळमी अविरति, सत्तरमो राग, अढारमो द्वेष. ए अढार दोषानां नाम कह्यां. हवे जे भगवान् चोत्रीश अतिशयें युक्त छे एम जे कह्युं, ते चोत्रीश अतिशयोनां नाम कहे छे. तेमां प्रथम सहजना जे चार अतिशयो छे, तेनां नाम कहे छे. पेहेलो रूपवान् रोगरहित सुगंधित प्रस्वेद वाळो अने मलरहित एवो देह, बीजो सुगंधमय श्वास, त्रीजो रुधिरमांस उज्ज्वल, चोथो आहारनीहार अदृश्य, ए चार सहजना अतिशय जाणवा. हवे बीजा केवलज्ञान सहायक अगीयार अतिशयोनां नामो कहे छे. पहेलो योजन प्रमाण समवसरणमां सुर, असुर, नर, तिर्यंच, कोटिगमे समाय. बीजो तिहां रहेला सर्व जीवने भाषा साधारण होय, त्रीजो योजनगामिनी वाणी, चोथो पृष्ठभागने विषे भामंमंडल, पांचमो पोतानां स्थानकथकी एकशो पच्चीश योजन सुधी रोगाभाव होय, छठो मूषक शलभ शुकनो अभाव होय, सातमो वैरनो अभाव होय, आठमो मारीनो अभाव, नवमो अतिवृष्टि अनावृष्टिनो अभाव, दशमो स्वचक्र परचक्र भयनो अभाव, अगीयारमो दुर्भिक्षनो अभाव. ए अगीयार केवल ज्ञान सहायक अतिशय जाणवा. एम सर्व मळी पन्नर अतिशय थया. हवे उगणीश देवकृत अतिशयो कहे छे. पहेलो गगनने विषे धर्मचक्र, बीजो बे चामरो, अणवींज्यां वींजाय, त्रीजो पादपीठसहित सिंहासन, चोथो छत्रत्रय, पांचमो रत्नमयध्वज, ते सहस्रयोजन उंचो, छठो श्रीजिन, ज्यां चरण ठवे, त्यां नव सुवर्ण कमलनुं स्थापन थाय, सातमो त्रण प्राकार होय, आठमो चतुर्मुखत्व होय, नवमो चैत्यवृक्ष रत्नमय, छत्र चामरोयें करी शोभित, दशमो कांटा अधोमुख थाय, अगीयारमो वृक्षनी फालोनुं नमवुं होय, बारमो देवदुंदुभिनिनाद, तेरमो पृष्ठानुयायि अनुकूलपवन, चउदमो प्रदक्षिणायें करी पक्षियोनुं गमन, पन्नरमो गंधोदकनी वृष्टि थाय, सोळमो पांच वर्णना पुष्पना समूहनी वृष्टि, सत्तरमो केश, श्मश्रु तथा नखनी वृद्धि न होय, अढारमो जघन्यपणाथी कोटिदेवताउनो परिवार, उगणी

शमो सर्वे ऋतुओ अने सर्वे विषयो अनुकूल थाय. एम ओगणीश देवकृत अ तिशय जाणवा. ए चोत्रिश अतिशय सर्व जिनने होय. हवे आठ महाप्राति हार्य कहे छे. एक अशोकवृक्ष,बीजो सुरपुष्पवृष्टि,त्रीजो अमृतरसायन समान योजनगामिनी वाणी, चोथो युग्मचामर, पांचमो सिंहासन, छगो नामं मल, सातमो देवडुंडुनिनिनाद, आठमो छत्रत्रय. ए आठ माहाप्रातिहार्य जाणवां. ए आठ महाप्रातिहार्य जो पण चोत्रीश अतिशयमां कहेवाइ गयां छे, तथापि ते माहासाम्राज्यने सूचन करवा वालां छे, तेथी जूदां पण ग्र हण करेलां छे. आ गाथा तथा आगली गाथानो अन्वय साथेंज छे ॥११॥

भरहंमि तीयकाले, पढमं वंदामि केवलि जिणंदं ॥
निवाणी जिण सायर, महाजसं चेव विमल जिणं ॥१२॥

अर्थः—(भरहंमि के०) भरतक्षेत्रने विषे (तीयकाले के०) अती तकाले एटले उत्सर्पिणी लक्षण कालमां प्रथम थइ गयेली चोवीशीने वि षे (पढमं के०) प्रथमं (केवलिजिणंदं के०) केवलि नामा जिनेंद्रने वं दामि के०) हुं वंदन करुं छुं. तथा बीजा (निवाणीजिण के०) निर्वाणिजिन ने, त्रीजा (सायर के०) सागरजिनने, चोथा (महाजसं के०) महाय शजिनने,पांचमा (चेव के०) एमज (विमलजिणं के०) विमलजिनने ॥१२॥

सवाणुभूइ सिरिहर, दत्तं दामोयरं सुतेयं च ॥
सामिजिणं मुणिसुवय, सुमइं सिवगइ तहह्वाहं ॥१३॥

अर्थः—तथा छठा (सवाणुभूइ के०) सर्वानुभूतिने सातमा (सिरिहर के०) श्रीधर जिनने आठमा (दत्तं के०) दत्तजिनने नवमा (दामोयरं के०) दामोदरजिनने (च के०) वली दशमा (सुतेयं के०) सुतेजाजिनने,अ गीयारमा (सामिजिणं के०) स्वामिजिनने बारमा (मुणिसुवय के०) मुनि सुव्रतजिनने तेरमा (सुमइं के०) सुमति जिनने चउदमा (सिवगइ के०) शिवगति जिनने (तहह्वाहं के०) तथास्ताघं एटले ते प्रकारें वली अस्ता घ जिनने पण हुं (वंदामि के०) वंदन करुं छुं ॥ १३ ॥

नमिमो नमीसरजिणं, अनिलं जसोहरं कयछं च ॥
धम्मीसर सुद्धमइं, सिवकरजिण संदण जिणंदं ॥ १४ ॥

अर्थः—शोलमा (नमीसरजिणं के०) नमीश्वरजिनं एटले नमीश्वरजिनने तथा सत्तरमा (अनिलं के०) अनिलने, अढारमा (जसोहरं के०) यशोधरने (च के०) तथा उंगणीशमा (कयछं के०) कृतार्थने, वीशमा (धम्मीसर के०) धर्मेश्वरने एकवीशमा (सुद्धमइं के०) शुद्धमतिने बावीशमा (सिवकरजिण के०) शिवकरजिनने त्रेवीशमा (संदणजिणंदं के०) स्यंदन नामा जिनेंद्रने (नमिमो के०) नमस्कार करीयें छैयें ॥ १४ ॥

संपइनामं वंदे, चउवीसइमं जिणं सिवं पत्तं ॥
अहुणाउ वट्टमाणे, कमेण थुणिमो जिणवरिंदे ॥१५॥

अर्थः—(सिवंपत्तं के०) शिवं प्राप्तं एटले मोक्षने प्राप्त थया एवा (चउवीसइमं के०) चतुर्विंशतिमं एटले चोवीशमा (संपइनामं के०) संप्रतिनामानं एटले संप्रतिनामक (जिणं के०) जिनं एटले जिनने (वंदे के०) हुं वंदन करुं छुं. (उ के०) तु एटले वली (अहुणा के०) अधुना एटले हालमां (वट्टमाणे के०) वर्त्तमानान् एटले वर्त्तमान एवा (जिणवरिंदे के०) जिनवरेंद्रान् एटले जिनवरने विषे इंद्र समान एवा जिनने (कमेण के०) क्रमेण एटले अनुक्रमें करी (थुणिमो के०) स्तुमः एटले अमें स्तुति करीयें छैयें. आ गाथामां अधुना एटले हमणां ए जे पद छे, ते कवि, वर्त्तमान एवा अवसर्पिणी कालना आश्रयें करीने कहे छे ॥ १५ ॥

हवे पूर्वोक्त वर्त्तमानकालीय जिनने अनुक्रमें वंदन करवानुं कह्युं, ते ज जिननां नाम कहीने तेमने नमन करे छे.

नमिमो रिसहजिणंदं, अजियजिणं संभवं च तित्थयरं ॥
अभिनंदण जिणचंदं, सुमइं पउमप्पह सुपासं ॥ १६ ॥

अर्थः—प्रथम (रिसहजिणंदं के०) ऋषभजिनेंद्रं एटले श्रीऋषभ नामा प्रथम तीर्थंकरने, तथा बीजा (अजियजिणं के०) अजितजिनं एटले अजितजिनने (च के०) वली त्रीजा (संभवं के०) संभव नामक (तित्थयरं के०) तीर्थंकरने चोथा (अभिनंदणजिणचंदं के०) अभिनंदन जिनचंद्रं एटले अभिनंदन नामा जिनचंद्रने अने पांचमा (सुमइं के०) सुमति नाथ तीर्थंकरने, छठा (पउमप्पहं के०) पद्मप्रभं एटले पद्मप्रभ ती

र्थंकरने सातमा (सुपासं के०) सुपार्श्व नामा तीर्थंकरने (नमिमो के०) नमामः एटले नमीयें बैयें. साधर्मीना उद्देशथी नमाम ए बहुवचन बे. ए टले जे ठेकाणें नमिमो एवुं बहुवचन आवे त्यां आवी रीतेंज जाणवुं ॥ १६॥

चंदप्पहं च सुविहिं, सीयलनामं जिणं च सिज्जंसं ॥ वसु
पुज्जं विमल तह, अणंत धम्मं जिणं संतिं ॥ १७ ॥

अर्थः– (च के०) वली आठमा (चंदप्पहं के०) चंद्रप्रज नामा तीर्थंकरने, नवमा (सुविहिं के०) सुविधि नामा तीर्थंकरने दशमा (च के०) वली (सीयल नामं के०) शीतलनामानं एटले शीतल नामा तीर्थंकरने (च के०) वली अगीयारमा (सिज्जंसं के०) श्रेयांसं एटले श्रेयांस जिनने बारमा (वसुपुज्जं के०) वासुपूज्यनामा तीर्थंकरने (तह के०) तथा तेरमा (विमल के०) विमलनामा तीर्थंकरने चउदमा (अणंत के०) अनंतनामा तीर्थंकरने, पन्नरमा (धम्मं के०) धर्मनामा तीर्थंकरने सोलमा (जिणंसंतिं के०) शांतिनामा जिनने ॥ १७ ॥

कुंथुजिणं अरनाहं, मल्लिं मुणिसुव्वयं च नमिनाहं ॥
नेमिं पासं वंदे, चउवीसइमं च वीरजिणं ॥ १८ ॥

अर्थः–सत्तरमा (कुंथुजिणं के०) कुंथुजिनं एटले कुंथुनामा जिनने अढारमा (अरनाहं के०) अरनाथं एटले अरनाथनामा तीर्थंकरने उगणीशमा (मल्लिं के०) मल्लिनामा तीर्थंकरने वीशमा (मुणिसुव्वयं के०) मुनिसुव्रतं एटले मुनिसुव्रतनामा तीर्थंकरने (च के०) वली एकवीशमा (नमिनाहं के०) नमिनाथनामा तीर्थंकरने तथा बावीशमा (नेमिं के०) नेमिनामा तीर्थंकरने तथा त्रेवीशमा (पासं के०) पार्श्वं एटले श्री पार्श्वनामा तीर्थंकरने (च के०) वली (चउवीसइमं के०) चतुर्विंशतिमं एटले चोवीशमा (वीरजिणं के०) वीरजिनने (वंदे के०) हुं वंदन करुं बुं ॥१८॥

हवे जाविजिनचोवीशीना नाम लइने तेने प्रणाम करे बे.

सिरिपउमनाहनाहं, वंदामि सूरदेव तिज्ञयरं ॥ तइयं
सुपासनामं, सयंपह जिणं तहा तुरियं ॥ १९ ॥

अर्थः–(सिरिपउमनाहनाहं के०) श्रीपद्मनाजनाथं एटले श्रीपद्मना

नाथने बीजा (सूरदेव के०) सूरदेवने, (तइयं के०) तृतीयं एटले त्रीजा (सुपासनामं के०) सुपार्श्वनामा (तित्थयरं के०) तीर्थंकरने (तहा के०) तथा (तुरियं के०) तुरीयं एटले चोथा (सयंपहजिणं के०) स्वयंप्रभजिनं एटले स्वयंप्रभ नामा जिनने (वंदामि के०) हुं वंदन करुं छुं ॥१९॥

सव्वाणुभूइदेवं, देवसुअं उदयसामि पेढालं ॥ पोटिल सयकित्तिजिणं,मुणि सुव्वय अममसामिं च ॥२०॥

अर्थः—पांचमा (सव्वाणुभूइदेवं के०) सर्वानुभूतिदेवं एटले सर्वानुभूति देवनें छठा (देवसुअं के०) देवश्रुतं एटले देवश्रुतनामा तीर्थंकरने सातमा (उदयसामि के०) उदयस्वामीने आठमा (पेढालं के०) पेढालनामा तीर्थंकरने, नवमा (पोटिल के०) पोटिलनामा तीर्थंकरने दशमा (सयकित्तिजिणं के०) शतकीर्त्तिजिनं एटले शतकीर्त्तिनामाजिनने अगियारमा (मुणिसुव्वय के०) मुनिसुव्रतनामा तीर्थंकरने (च के०) तथा बारमा (अममसामिं के०) अममस्वामीनामा तीर्थंकरने ॥ २० ॥

पणमामि निक्कसायं, निप्पुलायं च निम्ममत्त च ॥ सिरिचित्तगुत्तसामिं, समाहिजिण संवर जिणंदं ॥२१॥

अर्थः— तेरमा (निक्कसायं के०) निःकषाय नामा तीर्थंकरने (च के०) वली चउदमा (निप्पुलायं के०) निष्पुलाकं एटले निष्पुलाक नामा तिर्थंकरने, (च के०) वली पन्नरमा (निम्ममत्तं के०) निर्ममत्वने शोलमा (सिरिचित्तगुत्तसामिं के०) श्री चित्रगुप्तस्वामीने सत्तरमा (समाहिजिण के०) समाधि नामाजिनने अढारमा (संवरजिणंदं के०) संवरजिनेंद्रने (पणमामि के०) स्तुतिकार कहे छे के हुं प्रणाम करुं छुं ॥ २१ ॥

जसहर विजयं मल्लिं, देवुव्वायं अणंत विरियं च ॥ चउवीसइमं भद्दं, इअ भाविजिणे नमंसामि ॥ २२ ॥

अर्थ— उगणीशमा (जसहर के०) यशोधरनामा तीर्थंकरने, वीशमा (विजयं के०) विजयनामा तीर्थंकरने एकवीशमा (मल्लिं के०) मल्लिनामा तीर्थंकरने बावीशमा (देवुव्वायं के०) देवाह्वयं एटले देव जेनुंनाम छे एवा तीर्थंकरने (च के०) वली त्रेवीशमा (अणंतविरियं के०) अनंतवीर्य नामा

तीर्थंकरने (चउवीसइमं के०) चतुर्विंशतिमं एटले चोवीशमा (जइं के०) जइ एटले जइस्वामीने (इअ के०) इति एटले ए प्रकारें (जाविजिए के०) जाविजिनान् एटले जाविजिनने (नमंसामि के०) नमस्करोमि एटले स्तुतिकार कहे ठे, के हुं नमस्कार करुं बुं ॥ २२ ॥

वंदे वेअड्ढेसु, सासय जिएचेइयाणि सितरिसयं ॥
तीसं वासहरेसु, वीसं गयदंतसेलेसु ॥ २३ ॥

अर्थः– अहिं अढीद्वीपने विषे पांच जरत, पांच विदेह, अने पांच ऐरवत, ए पन्नर कर्मजूमियो ठे, तेमां जे पांच विदेह ठे, ते प्रत्येक विदेहमां बत्रीश बत्रीश विजयो ठे, तेवारें पांचे विदेहना एकसो साठ विजय थयां, ते एकसो साठ विजयमां एकसो साठ वैताढ्य, तेमज पांच जरतनां अने पांच ऐरवतनां, एम सर्व मली एकसो सित्तेर (वेअड्ढेसु के०) वैताढ्येषु एटले वैताढ्योने विषे (सासय के०) शाश्वतां (सितरिसयं के०) एकसो सित्तेर (जिएचेइयाणि के०) जिन चैत्यानि एटले जिनचैत्योने तथा (तीसंवासहरेसु के०) वर्षधर पर्वतने विषे त्रीश चैत्य ठे तिहां जंबुद्वीपमां हिमवंत, महाहिमवंत निषध, नीलवंत, रूपी अने शिखरी, ए ठवर्षधर ठे तेमज धातकीखंमना बार अने पुष्करद्वीपना बार, सर्व मली त्रीश अने अढीद्वीपमां सर्व पांच मेरु पर्वत ठे ते एकेक मेरु पासें चार चार गजदंत पर्वत ठे, तेवारें सर्व मली वीश गयदंत पर्वत ठे ते एकेका पर्वतें एकेक चैत्य गणतां (गयदंतसेलेसु के०) गजदंतशैलेषुं एटले गजदंत गिरिने विषे (वीसं के०) वीश चैत्यने (वंदे के०) वंदन करुं बुं ॥ २३ ॥

दस कुरुतरुसिहरेसु, तेसिं परिही वणेसु तह असिई ॥
वरकारगिरिसु असिई, पणसीई मेरुपणगम्मि ॥ २४ ॥

अर्थः– पूर्वें कहेला जे पांच मेरु तेनी उत्तर अने दक्षिण बे कुरुक्षेत्र ठे, तेमां एकेक वृक्ष ठे,एटले पांच मेरुनी बे बे बाजुना बे बे क्षेत्रोमां दश वृक्ष थयां, ते (कुरुतरुसिहरेसु के०) ते दश कुरुवृक्षना शिखरने विषे (दस के०) दश चैत्य अने (तह के०) तथा (तेसिं के०) ते कुरुवृक्षना (परिहीवणेसु के०) परिधिना वनोने विषे (असिई के०) एंशी चैत्योने तथा एक एक विदेहने विषे सोल वक्षस्कार गिरियो ठे. एवं पांच विदे

हमां प्रत्येकमां शोळ शोळ गणतां एंशी वक्षस्कार पर्वतो थया, ते (वरका रगिरिसु के०) वक्षस्कारगिरिष्वपि एटले वक्षस्कार गिरियोने विषे पण (अ सिई के०) अशिति एटले एंशी एवां चैत्यने, तथा (मेरुपणगम्मि के०) मेरुपंचके एटले पांच मेरुपर्वतने विषे (पणसीई के०) पंचाशीतिं एटले पं चाशी चैत्यने स्तुतिकार कहे छे, के हुं (वंदे के०) वंदन करुं छुं. वंदे ए क्रियापद आगळनी गाथानुं ग्रहण करवुं ॥ २४ ॥

उसुयारगिरिसु चउरो, चत्तारि नमामि मणुअ सेलंमि ॥
नंदीसरंमि वीसं, कुंमल रुअगेसु चउ चउरो ॥ २५ ॥

अर्थः—हवे धातकीखंमने विषे अने पुष्करार्द्धने विषे बे बे इक्षुकार गिरि छे, बेहु मळीने चार. (उसुयारगिरिसु के०) इक्षुकारगिरिने विषे (चउरो के०) चत्वारो एटले चार चैत्यने तथा (मणुअसेलंमि के०) मानुष्य शैले एट ले मानुषोत्तर गिरिने विषे (चत्तारि के०) चत्वारि एटले चार चैत्यने तथा (नंदीसरंमि के०) नंदीश्वरनामा आठमा द्वीपने विषे (वीसं के०) वी श चैत्यने तथा (कुंमल के०) कुंमलनामा पर्वतने विषे तथा (रुअगेसु के०) रुचकनामा द्वीपने विषे (चउचउरो के०) चार चार चैत्योने स्तु तिकार कहे छे के हुं (नमामि के०) नमन करुं छुं ॥ २५ ॥

एवं गिरिकूडेसु, गिरि णइ तरुसु तरूण कूडेसु ॥ इक्का
राहिय पणसय, सासय जिणनवण महिवलए ॥२६॥

अर्थः—(एवं के०) ए प्रकारें (गिरिकूडेसु के०) गिरिना कूट एटले शि खरोने विषे तथा (गिरिणइतरुसु के०) गिरिनदीतरुषु एटले गिरि,नदी,अने तरु, जे वृक्षो तेने विषे तथा (तरूणकूडेसु के०) तरूणां कूटेषु एटले वृक्षोना शिखरने विषे (इक्काराहियपणसय के०) एकादशाधिकपंचशत एट ले पांचशे ने अगियार एवा (महिवलए के०) महिवलये एटले नूमित लने विषे (सासयजिणनवण के०) शाश्वतजिनजवनानि एटले शाश्वत एवां जिननवनोने हुं प्रणाम करुं छुं. नमामि ए क्रियापद आगळनी गाथानुं लेवुं॥

एम एकशोने सीतेर वैताढ्योने विषे तथा त्रीश वर्षधर पर्वतने विषे अ ने वीश गजदंतगिरिने विषे एकेक प्रासाद गणतां बशेने वीश चैत्य थयां.

तथा दशकुरुक्षेत्रना दश डुमना विटपार्द्ध शाखार्द्धने विषे एकेक प्रासाद अने ते एकेकां डुमना चारे तरफना परिधिना वनखंमने विषे आठ आठ कूट छे, तेमां एकेका कूटें एकेक चैत्य छे एम एकेका कुरुडुमें नवनव प्रासाद करतां नेवुं थयां. एवं ३१० थयां.

तथा एंशी वक्षस्कार पर्वतने विषे एकेक शाश्वत चैत्य छे, तेवारें एंशी चैत्य थयां. तेमज पांच मेरु मांहेला प्रत्येक मेरुना चार चार वनमांहेलां एकेका वनमां चार दिशायें चार चार जिनजुवन छे तेवारें चार वनना शोल थयां. अने सत्तरमुं चूलिकानी उपरनुं जिनजवन गणतां सत्तर चैत्य एक मेरुनां छे, तेवा पांच मेरुनी उपर पंच्चाशी चैत्यो छे,सर्व मली ४७५ थयां.

तथा चार इखुकारने विषे प्रत्येकें एकेक प्रासाद करतां चार प्रासाद छे, तथा मानुष्योत्तर, कुंमल अने रुचक ए त्रण मांहेला एकेकानी चारे दिशाउने विषे चार चार करतां त्रण स्थानकनां बार थयां, तेनी साथें इखुकारना चार मेलवतां शोल थयां. तथा नंदीसरद्वीपना वीश सर्व मली ५११ शाश्वत जिनप्रासाद तीर्च्छालोकने विषे छे, तेने हुं नमुं बुं ॥

बावत्तरि लरकाहिय, कोडीसत्तेव जवण जवणेसु ॥
जिणजवणोउ असंखे, वंतरनयरेसु पणमामि ॥२७॥

अर्थः– (जवण जवणेसु के०) जवनपति देवना जवनेषु एटले विमानोनेविषे (बावत्तरिलरकाहिय के०) बहोंतेर लाखें अधिक (कोडीसत्तेव के०) सातकोटी एटले सातकोडि ने बहोंतेर लाख जिनजवनने तु एटले वली (वंतरनयरेसु के०) व्यंतर देवोना नगरने विषे (असंखे के०) असंख्य एवां (जिणजवणे के०) जिनजवनने (पणमामि के०) स्तुतिकार कहे छे, के हुं प्रणाम करुं बुं ॥ २७ ॥

वणचेइय संखगुणे, जोइसिएसु तहा विमाणेसु ॥
तेवीसाहिय सहसा,सगनउईलरक चुलसीई ॥२८॥

अर्थः– (वणचेइय के०) वनचैत्येज्यः एटले व्यंतरदेवताउना प्रासाद जे मंदिरो छे तेथी (संखगुणे के०) असंख्यगुणा जे, (जोइसिएसु के०) ज्योतिष्केषु एटले ज्योतिष्कदेवताने विषे; जिनदेवनां जवनो छे, तेने नम

स्कार करुं बुं. (तह्रा के० तथा एटले ते पढी वली (विमाणेसु के०) वैमानिकेषु एटले ऊर्ध्वलोकें वैमानिक देवताउना आवासोने विषे (लरकचुलसीई के०) चतुरशीति लक्षाणि एटले चोराशी लाख अने (तेवीसाहिय के०) त्रयोविंशत्यधिक एटले त्रेविश जेमां अधिक बे एवा (सहसा सगनउई के०) सप्तनवतिसहस्राणि एटले सत्ताणुं हजार अर्थात् चोराशी लाख सत्ताणुं हजार अने त्रेविश जिनजवनोने हुं वंदन करुं बुं ॥ २७ ॥

सुरठाणेसु सवहिं, सन्नपणगे सहि होइ पडिमाणं ॥
चेइयमष्ठसयं, चेइयदारेसु बारसगं ॥ २ए ॥

अर्थः—(सुरठाणेसु के०) सुरस्थानेषु एटले चार प्रकारना देवताउना स्थानकने विषे (सवहिं के०) सर्वत्र एटले सर्वस्थानकमां (सन्नपणगे के०) सन्नापंचके एटले पांचसन्नाउमां (पडिमाणं के०) प्रतिमानां एटले प्रतिमानी (सहि होइ के०) षष्ठिर्नवति एटले साठ संख्या बे, अर्थात् चार प्रकारना देवताउना स्थानकने विषे पांच सन्नामां साठ प्रतिमा बे. ए पांच सन्नानां नाम कहे बे. पहेली उपपातसन्ना, बीजी अन्निषेकसन्ना, त्रीजी अलंकारसन्ना, चोथी व्यवसाय सन्ना, अने पांचमी सुधर्मा सन्ना,ए पांच सन्नाउ बे, तेमां एकेक सन्नाप्रत्यें त्रण त्रण द्वार बे. द्वार द्वार प्रत्यें एक एक स्तूप बे, ते स्तूपने चारे तरफ एक एक पीठिका बे, ते पीठिका उपर चार दिशाउमां एक एक प्रतिमा स्तूपने (अन्निमुख के०) सामी बे. एम एकसन्ना प्रत्यें बार बार प्रतिमा थइ. ए प्रमाणें पांच सन्नाउमां साठ प्रतिमाउ थई. तथा (चेइयमष्ठसयं के०) चैत्यमध्याष्ट शतं एटले तेज चैत्यजवननी मध्यमां एकसो ने आठ. तेम (चेइयदारेसु के०) चैत्यद्वारेषु एटले चैत्यना बारणामां बार बार प्रतिमा; एक एक प्रासादने त्रण त्रण द्वार बे. द्वार द्वार प्रत्यें एक एक स्तूप, स्तूपने फरती चारे बाजु मणिपीठिका बे, ते पीठिकानी चार दिशाउमां एकेक प्रतिमा ते स्तूपने अन्निमुख कहेतां सामे मुखे बे, तेने हुं वंदन करुं बुं ॥ २ए ॥

मिलियं सयं असीयं,चउवीससयं तु नंदिसरदीवे ॥
पइचेइय सेसेसु,वीससयं पडिम तिरिलोए ॥ ३० ॥

अर्थः–(मिलियं के०) मिलितं एटले ए सर्व मलीने (सयं असीयं के०) शतमशितं एटले एकसो ने एंशी प्रतिमां ते देवोना प्रत्येक चैत्यमां छे. (तु के०) वली (नंदिसरदीवे के०) नंदीश्वरद्वीपे एटले नंदीश्वरद्वीपना चैत्यमां (चउवीससयं के०) चतुर्विंशशतं एटले एकसो ने चोवीश प्रतिमा अने (सेसेसु के०) शेष चैत्योमां (तिरिलोए के०) तिर्यग्लोकना (पइचेइय के०) प्रतिचैत्यनी (वीससयं पडिम के०) एकसो ने वीश प्रतिमा छे. त्यां पांच सजाउ नथी. तथा नंदीश्वरना प्रासादोमां चार चार द्वार छे, तेथी चार प्रतिमाउ त्यां अधिक छे, अने तिर्यग्लोकमां शेष चैत्यनी एकसो वीश प्रतिमाउ छे, तेने हुं वंदन करुं छुं ॥ ३० ॥

जवणवई जवणेसु, कप्पाइविमाण तहय महिवलए ॥
सासयपडिमा पनरस,कोडीसय बिचत्त कोडीउ ॥३१॥
पणपन्नलक्खपणवी,स सहस पंचय सयाउ चालीसा॥
तह वणजोइसुरेसु, सासय पडिमा पुण असंखा॥३२॥

अर्थः–(जवणवईजवणेसु के०) जवनपतिजवनेषु एटले जवनपतिना सर्वे जवनोमां तथा (कप्पाइविमाण के०)कल्पादिविमान एटले बार देवलोक, नव ग्रैवेयक अने पांच अनुत्तर पर्यंतना विमानमां (तह य के०) तथाच एटले तेप्रमाणें (महिवलए के०) पृथ्वी उपरनी सर्व शाश्वती प्रतिमानी संख्या करतां पनरशें करोड, बहेंतालीश करोड, पंचावन लाख, पंचवीश हजार पांचशें अने चालीश प्रतिमाउ छे. (तह के०) तथा (पुण के०) वली (वणजोइसुरेसु के०) वनचर ज्योतिःसुरेषु एटले व्यंतर अने ज्योतिष्क देवताउमां (सासयपडिमा के०) शाश्वत प्रतिमाउ (असंखा के०) असंख्य छे, ते व्यंतरदेव अने ज्योतिष्क देवताउनां विमानो पण प्रत्येक देवप्रत्यें असंख्य छे,तेटला माटें प्रथम कहेली प्रतिमानी संख्या व्यंतर अने ज्योतिष्क देवना विमानने वर्जिने जाणवी ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

उसजा चंदाणण व,द्धमाण तहय सिरि वारिसेणाय ॥
सवा सासयपडिमा, पुणपुणरवि एय चउनामा॥३३॥

अर्थः–एक (उसजा के०) रुषजानन, बीजा (चंदाणण के०) चंद्रा

नन, त्रीजा (वद्धमाण के०) वर्द्धमान, (तह्य के०) तथैव एटले तेम ज चोथा (सिरिवारिसेणाय के०) श्रीवारिषेण जगवान्, (सवा के०) सर्वे (सासयपडिमा के०) शाश्वतीप्रतिमाउ जे ले तेना (पुणपुणरवि के०) पुनः पुनः अपि एटले वली वली पण एक चैत्यथी, बीजा चैत्य प्रत्यें पण (एयचउनामा के०) एज चार नाम जाणवां ॥ ३३ ॥

जंबू धायइ पुस्कर, दीवे विजयाण सत्तरिसयंमि ॥
जविए जुवि बोहंते, विहरंते जुगवमरिहंते ॥ ३४ ॥
नमिमो उक्कोसपए, सतरिसयं तह जहन्नउ वीसं ॥ कणग
कलहोय विद्दुम, मरगयवर रिठरयणनिन्ने ॥ ३५ ॥

अर्थः—जंबू के०) जंबूद्वीपमां, (धायइ के०) धातकीखंमद्वीपमां, (पुस्करदीवे के०) पुष्करवरद्वीपार्द्धमां (विजयाण के०) विजयोनुं (सत्तरिसयंमि के०) सप्ततिशते एटले एकशो ने सितेर विजयोना मध्यमां (जुगव के०) युगपत् एटले समकालें (जुवि के०) पृथ्वी उपर (जविए के०) जव्य जीवोने (बोहंते के०) बोधयंतः एटले बोध करता थका (विहरंते के०) विचरता एवा (अरिहंते के०) श्रीअरिहंत जगवानने ॥३४॥ ते (उक्कोसपए के०) उत्कृष्टपदें श्रीअजितजिनने वारे तो (सतरिसयं के०) सप्ततिशतं एटले एकशो ने सितेर जिनोने (तह के०) तथा (जहन्नउ के०) जघन्यतः एटले जघन्यथी (वीसं के०) वीश तीर्थंकर तेमने (नमिमो के०) नमीयें बैयें. ते जिनेश्वरो कहेवा ले? तो के (कणग के०) कनक ते सुवर्ण अने (कलहोअ के०) कलधौत एटले रूपुं, तथा (विद्दुम के०) विद्रुम एटले प्रवालुं, (मरगय के०) मरकतमणि, (वररयणरिठ के०) वररत्नरिष्टएटले नीलमणि, रिष्टरत्न,श्याममणि तेना (निन्ने के०) निजान् एटले सरखी ले कांति जेमना शरीरनी एवा ले ॥३५॥

जंबूदीवे धायइ, संमे तह चेव पुस्करद्धे य ॥ सीमंध
र जुगमंधर, बाहु सुबाहू सुजाउ अ ॥ ३६ ॥

अर्थः— (जंबूदीवे के०) जंबूद्वीपने विषे (धायइसंमे के०) धातकी खंम ने विषे (तहचेव के०) तथैवच एटले तेमज वली(पुस्करद्धेय के०) पुष्करार्द्धे

च एटले पुष्करार्द्धने विषे, सांप्रतकालमां विहरता जे वीश तीर्थंकरो तेनां नाम कहे छे. पेहला श्रीसीमंधर बीजा युगमंधर, त्रीजा बाहु, चोथा सुबाहु, (य के०) वली पांचमा सुजात ॥ ३६ ॥

छठो सयंपहपहू, उसन्नाणण तह अणंतविरिउ अ॥
सूरप्पहो विसालो, वज्जधरो तह इगारसमो ॥ ३७ ॥

अर्थः-(छठो सयंपहपहू के०) छठा स्वयंप्रनप्रनु, सातमा (उसन्नाणण के०) रुषनानन, (तह के०) तथा आठमा (अणंतविरिउ के०) श्रीअनंत वीर्य, वली नवमा (सुरप्पहो के०) श्रीसुरप्रन, दशमा श्रीविशालजिन, (तह के०) तथा (इगारसमो के०) अग्यारमा (वज्जधरो के०) श्रीवज्रंधर ॥३७॥

चंदाणणो सिरिचंद, बाहू देवो नुजंग ईसरउ॥ नेमि
पह वीरसेणो, महन्नद्दो देवजस सामी ॥ ३८ ॥

अर्थः- बारमा (चंदाणणो के०) श्रीचंद्रानन, तेरमा (सिरिचंदबाहूदेवो के०) श्रीचंद्रबाहु देव, चौदमा (नुजंग के०) श्रीनुजंग देव, पन्नरमा (ईसरउ के०) श्रीईश्वर, शोलमा (नेमिपह के०) श्रीनेमिप्रन, सत्तरमा (वीरसेणो के०) श्रीवीरसेन, अढारमा (महन्नद्दो के०) श्रीमाहान्नद्र, उंगणीशमा (देवजससामी के०) श्रीदेवयशा स्वामी ॥ ३८ ॥

सिरि अजिय वीरियजिणो, इयए संपयं विहरमाणे ॥
वंदे वीस जिणंदे, तिहुअण वंदे सुकयकंदे ॥ ३९ ॥

अर्थः- वीशमा (सिरिअजियवीरजिणो के०) श्रीअजितवीर्यजिन, (इअए के०) इत्येते एटले ए कह्या एवा (संपइयं के०) सांप्रतिकं एटले हालमां (विहरमाणे के०) विहरमाणान् एटले विदेहक्षेत्रने विषे विचरता एवा (वीसजिणंदे के०) विंशतिजिनेंद्रान् एटले वीशे जिनने (वंदे के०) हुं वंदन करुं छुं. ते केहवा छे ? तो के (तिहुअणवंदे के०) त्रिनुवनवंद्यान् एटले त्रणे नुवनने विषे रहेला जे नवि जीव तेने वंदन करवा योग्य एवा अने वली केहवा छे ? तोके (सुकयकंदे के०) सुकृतकंदान् एटले सुकृतरूप जे वृक्षो तेना कंदरूप छे जेम कंदथी सर्व वृक्षोनो प्राडुर्नाव थाय छे, तेम श्रीअरिहंतथी सुकृतनो प्रकाश थाय छे.माटें सुकृतनुं मूल श्रीअरिहंतज छे॥३९॥

इयतीअ अणागयव,ट्टमाणया सासया य विहरंता ॥
थुणिया जिणिंदचंदा, पयपंकयपणयमाहिंदा ॥ ४० ॥

अर्थः- (इयतीअ के०) इत्यतीत एटले पूर्वोक्तप्रकारें करीने जे पूर्वे अतीतकालें थइ गया, अने (अणागय के०) अनागत एटले हजी हवे थवाना छे ते तथा (वट्टमाणया के०) वर्त्तमानकाः एटले वर्त्तमान चोवीशीना अने (सासया के०) शाश्वता एटले शाश्वत एवा अने (य के०) च एटले वली (विहरंता के०) विहरंतः एटले विचरता एवा (जिणिंदचंदा के०) जिनेंद्रचंदाः एटले जिनने विषे चंद्रमा समान एवा जिनो, ते (थुणिआ के०) स्तुताः एटले स्तव्या. हवे ते कहेवा जिनचंद्र छे ? तोके (पयपंकय के०) पदपंकज एटले जेना चरणकमलनें (पणयमाहिंदा के०) प्रणतमाहेंद्राः एटले सुरेंद्र नम्या छे, एवा छे ॥ ४० ॥

हवे आचारांग जावनाध्ययनने विषे श्रीजद्रबाहु गुरुप्रणीत महा तीर्थनाम संग्रहकारक गाथाने कहिने ते पूर्वोक्त तीर्थोने सविस्तर महिमोत्कीर्त्तनपूर्वक नमस्कार करे छे.

अठ्ठावयमुज्जंते, गयअग्गपए अ धम्मचक्के अ ॥
पास रहावत्तणयं, चमरुप्पायं च वंदामि ॥ ४१ ॥

अर्थः-प्रथम (अठ्ठावयं के०) अष्टापदं एटले अष्टापदतीर्थने बीजा (उज्जंते के०) गिरनारने, त्रीजा (गयअग्गपए के०) गजाग्रपदं एटले गजाग्रपदने, (अ के०) च एटले वली चोथा (धम्मचक्के के०) धर्मचक्रने (अ के०) च एटले वली पांचमा (पास के०) पार्श्वतीर्थ तेने, छठ्ठा (रहावत्तणयं के०) रथावर्त्तनकं एटले रथावर्त्तन तीर्थने,सातमा (चमरुप्पायं च के०) चमरोत्पातं च एटले वली चमरोत्पाततीर्थने (वंदामि के०) हुं वंदन करुं छुं. ए द्वार गाथा छे, तेनो अर्थ कह्यो ॥ ४१ ॥

हवे एज गाथाने अनुक्रमें प्रथम अष्टापद तीर्थनुं माहात्म्य कहे छे.

अठ्ठावय गिरिराए, पणमेमि थुणेमि तहय झाएमि ॥
धम्म धुरधरणवसभं, उसभं पणमंत सुरवसभं ॥४२॥

अर्थः—(अठावयगिरिराए के०) अष्टापदनामक गिरिराजने विषे (उसजं के०) रूषनं एटले श्रीरूषनदेवजीने (पणमे के०) हुं नमन करुं बुं. तथा (थुणेमि के०) स्तवेमि एटले हुं स्तुति करुं बुं. (तहय के०) तथाच (झाएमि के०) ध्यायामि एटले हुं ध्यान करुं बुं. ते रूषनतीर्थंकर कहेवा बे ? तोके (धम्मधुरधरणवसनं के०) धर्मधुरधरणवृषनं एटले धर्मनो धुर जे जार, तेने धारण करवामां जाणियें वृषनज होय नहिं ? एवा बे अर्थात् जेम बलिष्ट वृषन जारने वहन करे बे, तेम रूषनतीर्थंकर पण धर्मरूप जारने वहन करे बे. वली कहेवा बे? तोके (पणमंतसुरवसनं के०) प्रणाम करे बे देवताउना वृषन एटले इंद्र जेमने एवा बे ॥ ४२ ॥

अजिआइणोवि सेसे,वरअइसेसे जिणे उ तेवीसं॥
तह सासय चउनामा,सोलसपडिमाउथूनेसु॥४३॥

अर्थः—(वरअइसेसे के०) वरातिशयान् एटले मनोज्ञमहिमायें करी प्रसिद्ध एवा (सेसे के०) शेषान् एटले बाकी रह्या एवा (अजिआइणोवि के०) अजितादीनपि एटले अजित तीर्थंकर बे आदि जेमां एवा पण (तेवीसं के०) त्रेवीश (जिणे के०) जिनोने (तु के०) वली श्रीअष्टापदने विषे जरत महाराजें थाप्या बे तेने (तह के०) तथा (सासयचउनामा के०) शाश्वत पूर्वोक्त चार जेनां नाम बे एवी (सोलसपडिमा के०) षोडश प्रतिमाः एटले सोल प्रतिमाउ (थूनेसु के०) स्तूनेषु एटले स्तूनोने विषे बे, तेने हुं प्रणाम करुं बुं ॥ ४३ ॥

उसनस्स समोसरणा,पयपंकय अंकणाउसिवगमणा ॥
तवलद्धिरोहगसिद्धी,जयअठावयंमि थुणे॥उसनं ॥४४॥

अर्थः—(अठावयंमि के०) अष्टापदे एटले अष्टापदने विषे (उसनस्स के०) श्री रूषनदेवना (समोसरणा के०) समोसरणने विषे (पयपंकयअंकणाउसिवगमणा के०) पदपंक जांकना ज्ञिवगमनान् एटले ते श्रीरूषनदेवनाज पदकमले प्रणाम करवाथी शिव एटले मोक्ष तेने विषे बे गमन जेमने एवा मुनियो तिहां केटलाएक समोसरणमां मुक्ति पाम्या तथा केटलाएक प्रजुना पदकमलने नमन करता थका सिद्ध थया बे, तेउनी पण

प्रतिमाउ जरतें त्यां स्थापी बे, (उय के०) तु च एटले तथा (तवलद्धि के०) तपरूपलब्धीयें करीने प्राप्त थई बे (रोहगसिद्धी के०) आकाशोत्पन्न रूप सिद्धि जेने एवा मुनियोने (थुणे के०) हुं स्तवुं बुं, अने ते रुषन देवने नमुं बुं॥४४॥

सुर असुर खयर नरवर, सुरिंद वंदिज्जमाण जिणजवणं ॥
अठावयगिरितिठं, नंदउ जावीरजिण तिठं ॥ ४५ ॥

अर्थः–(सुरअसुर के०) सुर अने असुर (खयर के०) खेचर, ते आकाशगामी विद्याधर (नरवर के०) नरविषे श्रेष्ठ तथा (सुरिंद के०) सुरेंद्र, तेमणें (वंदिज्जमाणजिणजवणं के०) वंदन कर्खु बे, जिनजवन जेने विषे एवुं (अठावयगिरितिठं के०) अष्टापद पर्वत तीर्थ बे ते (जावीरजिणतिठं के०) ज्यां सुधी वीरजगवाननुं तीर्थ चाले बे, त्यां पर्यंत (नंदउ के०) नंदतु एटले आनंद पामो, अर्थात् विजयवंत थाउ ॥ ४५ ॥

हवे उज्जयंतपर्वतनुं माहात्म्य कहे बे.

जायवकुलसिरितिलउ, नेमी वयगहण नाण निव्वाणे ॥
जहिं पत्तो सो नंदउ, उज्जंतो तिगुणमिह तिठं ॥ ४६ ॥

अर्थः–(जहिं के०) यस्मिन् एटले जेने विषे (नेमी के०) नेमीश्वर जगवान् (वयगहणनाणनिव्वाणे के०) व्रत ग्रहण, केवल ज्ञान अने निर्वाणने (पत्तो के०) पामी गया बे. हवे ते नेमीश्वर जगवान् कहेवा बे ? तो के (जायवकुलसिरितिलउ के०) यादवकुलश्रीतिलकः एटले यादवकुलनी लक्ष्मीना शोजायमान तिलक समान एवा बे. हवे (सो के०) ते (उज्जंतो के०) उज्जंत पर्वत, (नंदउ के०) नंदतु एटले जयवंतो थाउ. तें उज्जंतपर्वत कहेवो बे? तो के, जे (इह के०) आ जरतक्षेत्रने विषे (तिगुणं के०) श्रीनेमीश्वर जगवानना त्रण कल्याणिक रूप त्रण गुणमय (तिठं के०) तीर्थ बे ॥ ४६ ॥

तंरेवइगिरिसिहरं, तिलोयसारं तिलोयजणमहियं ॥
ठाणे तिलोय तिलउ, तिलोयपहु नेमि जहिं पत्तो ॥४७॥

अर्थः– (तं के०) तत् एटले ते प्रसिद्ध एवुं (रेवइगिरिसिहरं के०) रेवतगिरिशिखर नामा तीर्थने, ते तीर्थ कहेवुं बे ? तो के (तिलोयसारं के०)

त्रण लोकमां सारजूत एवुं तथा (तिलोयजणमहियं के०) त्रिलोकीजनमहितं एटले त्रण लोक निवासि जनोयें जेनुं पूजन कर्युं ले, एवुं तथा (जहिं के०) यस्मिन् एटले जे पर्वतने विषे (तिलोयपहु के०) त्रिलोकना प्रजु एवा (नेमि के०) नेमीश्वर जगवान् (तिलोयतिलउ के०) त्रण लोकना तिल करूप एवा (गणे के०) मोक्ष स्थानप्रत्यें (पत्तो के०) प्राप्त थया ॥४७॥

रेवयगिरिंमि नवजल,हि पोयनूयंमि नेमिनिज्जामो ॥
डुहियं डुहियवग्गं, सग्गपवग्गं लहुं नेइ ॥ ४८ ॥

अर्थः— (नवजलहिपोयनूयंमि के०) नवजलधिपोतनूते एटले संसाररूप समुड्ने विषे पोत ते वाहणसमान एवो (रेवयगिरिंमि के०) रैवतगिरौ एटले रेवताचलने विषे (नेमिनिज्जामो के०) नेमिनिर्यामक एटले नेमीश्वर नगवान् निर्यामक समान ले, ते (डुहियं के०) डुःखितं एटले डुःखित एवा (डुहियवग्गं के०) डुःस्थितवर्ग एटले निर्धन, डुष्टावस्था पामेला जनना वर्गने (लहुं के०) लघु शीघ्रताथी (सग्गपवग्गं के०) स्वर्ग अने अपवर्ग एटले मोक्ष ते प्रत्यें (नेइ के०) नयति एटले पमाडे ले ॥ ४८ ॥

हवे गजाग्रपद तीर्थनुं माहात्म्य कहे ले.

सेले दसन्नकूडे, दसन्नन्नद्दस्स गव्वहरणठा ॥
सक्को देवाहिवई,नियइद्धिं दंसए एवं ॥ ४९ ॥

अर्थः—(दसन्नकूडे के०) दशार्णकूटे एटले दशार्णकूट नामा (सेले के०) शैले एटले पर्वतने विषे (दसन्नन्नद्दस्स के०) दशार्णनद्रस्य एटले दशार्णनद्रनृपना (गव्वहरणठा के०) गर्वहरणार्थं एटले गर्वहरण करवाने माटें (देवाहिवई के०) देवताउनो अधिपति एवो (सक्को के०) शक्रः एटले इंड्, ते (नियइद्धिं के०) निजऋद्धिं एटले पोतानी ऋद्धिने (दंसए एवं के०) दर्शयत्येवं एटले आगली गाथाथी कहेशे ए प्रमाणें देखाडे ले. अर्थात् एक दिवस दशार्णकूटपर्वतने विषे श्रीवीरनगवान् समोसस्था, ते सांजलीने दशार्णपुरनो निवासी दशार्णनद्रनामा राजा विचार करवा लाग्यो के, हुं मोहोटी ऋद्धियें करी नगवानने वंदन करीश ! जेवी रीतें कोइयें पण वंदन करेलुं न होय ! ते वातनी इंड्ने खबर पडवाथी इंड्, ते दशार्णनी समृ

हिना गर्वहरण करवाने माटें पोतानी समृद्धि लइने वांदवा चाल्यो ॥४९॥
हवे ते इंद्रनी समृद्धि बतावे छे.

चउसठि करिसहस्सा, सव्वे चउसठि अठ मुहजुत्ता ॥
पइमुहदंता अठउ, पइदंतं अठ वावीउ ॥ ५० ॥

अर्थः—(चउसठिकरिसहस्सा के०) चतुःषष्टिकरिसहस्राः एटले चोसठ हजार हाथी, (सव्वे के०) ते सर्वे (चउसठिअठमुहजुत्ता के०) चतुःषष्ठ्यष्टमुखयुक्ताः एटले चोसठने आठ गुणा करियें तेनी जेटली संख्या थाय तेटलां मुख छे जेने एहवा छे, अर्थात् चोसठ हजार जे हाथी छे, ते प्रत्येक हाथीने पांचशेने बार मुख छे, अने (पइमुहदंताअठउ के०) ते हाथीयोना प्रत्येक मुखप्रत्यें आठ आठ दांतो छे, अने (पइदंतंअठवावीउ के०) प्रत्येक दंतें आठ आठ वापिकाउ छे ॥ ५० ॥

पइवावि अठकमला, पइकमलं लक्ख पत्त पइपत्तं ॥
बत्तीसविहं नाम्य, पइकन्निय रयणपासाउ ॥ ५१ ॥

अर्थः—तथा (पइवाविअठकमला के०) प्रत्येक वाव्यप्रत्यें आठ आठ कमलो छे. अने (पइकमलं के०) प्रत्येक कमलमां (लक्खपत्त के०) लाख लाख पत्र छे, तथा (पइपत्तं के०) प्रत्येक पत्रमां (बत्तीसविहं के०) द्वात्रिंशद्विधं एटले बत्रीश प्रकारनुं (नाम्य के०) नाटक थाय छे, अने ते प्रत्येक कमलना (पइकन्निय के०) प्रत्येक कर्णिका प्रत्यें (रयणपासाउ के०) एक एक रत्ननो प्रासाद छे ॥ ५१ ॥

पइपासायं अठउ, नद्दासणयाइं रयणचित्ताइं ॥
सीहासणमेगेगं, सपायपीढं रयणमयचित्तं ॥५२॥

अर्थः—(पइपासायं के०) प्रतिप्रासादं एटले प्रत्येक प्रासादमां (रयणचित्ताइं के०) रत्नचित्राणि एटले रत्नें करि चित्रविचित्र एवां (नद्दासणाइं के०) नड्डासनानि एटले नड्डासनो (अठउ के०) अष्टौ एटले आठ आठ छे. तथा (रयणमयचित्तं के०) रत्नमयचित्रं एटले रत्नमयपणायें चित्रविचित्र एवुं अने (सपायपीढं के०) सपादपीठं एटले पादपीठें सहित एवुं, (एगेगं के०) एक एक (सीहासणं के०) सिंहासन छे ॥५२॥

पइ सिंहासणमिंदो, पइनद्दासणग मग्गमहिसीउ ॥
इय तिपयाहिण पुव्वं, गयअग्गपयाणि नुवि दोवि ॥५३॥
पडिबिंबिअतो सक्को, वंदइ वीरं तउ दसणन्नद्दो ॥
विह्मिअमणसोहरि चो, यणेण विलज्ज्य पव्वइउ॥५४॥

अर्थः—(पइसिंहासणं के०) एकेक सिंहासन प्रत्यें (इंदो के०) इंद्रः एटले इंद्र वैक्रियरूप धारण करीने बेठेलो छे, तथा (पइनद्दासणगं के०) एकेक नद्रासन प्रत्यें (अग्गमहिसीउ के०) एक एक अग्रमहिषी छे. (इय के०) ए प्रकारें महाक्रुद्धिने देखाडतो, एवो सुधर्मेंद्र ते (तिपयाहिणपुव्वं के०) त्रिप्रदक्षिणापूर्वं एटले प्रथम त्रण प्रदक्षिणा करीने (दो वि के०) बे पण (गयअग्गपयाणि के०) गजाग्रपदानि एटले ते पूर्वोक्त हस्तीना आगलना बे पग प्रत्यें (नुवि के०) दशार्णकूटपर्वतनीशिखर नूमिने विषे ॥ ५३ ॥ (पडिबिंबिअतो के०) प्रतिबिंबयन् एटले प्रतिबिंब पाडतो थको (वीरं के०) श्रीवीरनगवानने (वंदइ के०) वंदते एटले नमस्कार करे छे. अर्थात् सौधर्मेंद्रें नमस्कार कर्यो त्यारें हाथीना आगलना बे बे पगोनुं प्रतिबिंब दशार्णपर्वतनी नूमिकाने विषे पड्युं. त्यारें शुं थयुं के? घणा हाथी होवाथी दशार्णपर्वतने विषे संकोची बीजा हाथीयोने पाछा काढी मूकतो हवो, अने एकज गजें करी नक्तिथी दशार्णपर्वतने त्रण प्रदक्षिणा दइने अग्रनागने विषे हाथीने स्थापन करतो हवो. त्यारें अत्यंत प्रौढ एवा ते हाथीना आगलना बे पग समाया, अने तेनुं प्रतिबिंब पण दशार्णपर्वतने विषे पड्युं, अने ते हाथीना पाछला बे पग आकाशमांज रह्या, एम समजवुं. एवुं इंद्रनुं ऐश्वर्य देखीनें (तउ के०) ततः एटले पछी (दसणन्नद्दो के०) दशार्णनद्र राजा (विह्मिअमणसो के०) विस्मित छे मन जेहनुं एवो छतो (विलज्ज्य के०) विलज्य एटले लज्जा पामीने (हरिचोअणेण के०) हरिचोदनेन एटले इंद्रनी प्रेरणाथी (पव्वइउ के०) प्रव्रजितः एटले चारित्र लेतो हवो ॥ ५४ ॥

तो सुरवइ मुणिचलणे, खामिय उवबूहियं दिवं पत्तो ॥
गयअग्गपउ एवं, जाउ तहिं थुणह वीरजिणं ॥ ५५ ॥

अर्थः-(तो के०) ततो एटले ते पछी (सुरवई के०) सुरपति एटले इंद्र (मुणिचलणे के०) मुनिचरणे एटले दशार्णनद्रें जे दीक्षा लीधी छे, ते मुनिना चरणने विषे (खामिय के०) पोतानो करेलो जे अपराध ते खमावीने (उवबूहिय के०) उपबृंह्य एटले ते मुनिनी प्रशंसा करीने (दिवं पत्तो के०) दिवं प्राप्तः एटले इंद्र, स्वर्ग प्रत्यें गयो. (एवं के०) ए प्रकारें ते पर्वत (गयअग्गपउ के०) गजाग्रपदे एटले गजाग्रपद नामा तीर्थरूप (जाउ के०) जातः एटले थयो. अर्थात् तेहीज गजाग्रपद नामा तीर्थ थयुं. माटें हे जनो ! (तहिं के०) तस्मिन् एटले ते गजाग्रपद तीर्थने विषे(वीरजिणं के०) वीरभगवानने (थुणह के०) स्तुत,एटले स्तवो ॥५५॥

हवे कथा कहे छेः- दशार्णपुर नगरें दशार्णभद्र राजा थयो. तिहां एक समये दशार्णपर्वतने विषे महावीरस्वामी समोसर्या, वनपालकें वधामणी दीधी तेवारें राजा हर्ष करी पोताना आसनथी ऊठी उत्तरासंग करी सात आठ पग साहामो जइने भगवंतने विधिसहित वांदतो हवो. पाछो सिंहासने बेशीने वधामणीयाने वधामणी आपी. पछी भक्तिना समूहें करी शोभतो एम चिंतववा लाग्यो, के हुं प्रभातें एवीरीतें श्रीअरिहंतने वांदीश के जेवी रीतें पूर्वें कोइयें पण वांद्या नथी ! एम विचारी रात्रें नगरमां उद्योतकारक हाटनी श्रेणी शणगारी,मार्गमां सुगंधित पाणी छंटाव्युं,रत्ननां तोरण बंधाव्यां,रत्ननी पुतलीयो बंधावी,मंचोनी श्रेणियें करी शोभित करी,घणा अगर धूप तेना धूआडे करी आकाश धूम्रसहित कर्युं, ठाम ठाम प्रबंध सहित अनेक नाटक कराव्यां, प्रभातें पोतें शणगार करी राजा गंधहस्ती उपर चढयो, सर्व सामंत राजाने साथें लइ, सर्व ऋद्धियें परवर्यो, जुदी जुदी पालखीयें बेठेली एवी देवांगना सरखी पांचशें राणीना परिवारें सहित तथा अढार हजार हाथी, चोवीश लाख घोडा चोवीश लाख रथ अने एकाणुं क्रोड पायदल, ए चतुरंगिणी सेना साथें लइ, जगतने तृण समान मानतो श्रीवीरभगवानने वांदवा माटें निकल्यो.

मार्गमां पगले पगले गीत, नाटक, वाजिंत्र जोतो थको, याचकजन जे मागे तेथी पण अधिक दान देतो, घणा गुण गवरावतो, घणा मांगलिक करतो, दशार्णभद्रराजा दशार्ण नामा पर्वतने विषे पोहोच्यो.

हवे सौधर्मेंद्रें विचाखुं के,ए राजानो नक्तिराग नगवाननी पूजाने विषे घणोज रुडो ठे पण एवा अहंकारें करीने नक्तिरागने दूषवें ठे. नगवानतो मानरहित घणा गुणना धणी ठे माटें सुर असुरना इंद्रोनी सर्व रुद्धियें करीने जो समकालें पूजीयें तो पण संपूर्ण पूज्या एम कहेवाय नही. तेमाटें एनुं मान मूकाववा सारुं हुं पण शक्ति फोरवी उद्यम करुं, एम चिंतवी पूर्वोक्त रुद्धि विकूर्वी.

तिहां राजा दशार्णनद्र ते हजार नेत्रना धणी एवा इंद्रने देखीनें मनमां विचारे ठे. जे अहो ए आश्चर्यजेवी रुद्धि ! अहो एनी इंद्राणीयो ! अहो एनी नक्ति ! अहो एनी शक्ति केवी आश्चर्यकारी ठे ! हुंतो निश्चें कूवाना मेमकानी पेठें रुद्धिने गर्वें करी हलको थयो. तो ए अनर्थेनी देनारी लक्ष्मीथी महारे सखुं. हवे एनो महारे खप नथी, एम चिंतवी धीरज धरी, पंचमुष्टि लोच करी तेज वेलायें प्रनुपासें दीक्षा लेतो हवो. तेवारें इंद्रें जाण्युं जे एणे मुजने जीत्यो एम चिंतवी हर्ष सहित राजर्षिने वांदीने कहेवा लाग्यो. जे धन्य ठे तुजने ! के जेणे घणीज दोहेली एवी पोतानी प्रतिज्ञा पूरण करी ! एम वारंवार राजाने प्रशंसीने इंद्र स्वर्गे गयो. अनुक्रमें दशार्णनद्र राजर्षि पण कर्मनो क्षय करी मोक्षें पोहोच्या. ए दशार्णनद्र राजर्षिनो दृष्टांत कह्यो.

हवे धर्मचक्रतीर्थोत्पत्ति कहे ठे.

तरकसिलाए उसनो, वियालि आगम्म पडिम उज्जाणे ॥
जा बाहुबलि पनाए, एई ताविहरिउ नयवं ॥ ५६ ॥

अर्थः– (तरकसिलाए के०) तक्षशिला नामा नगरीने विषे (वियालि के०) विकाले एटले सायंकालें (उसनो के०) रुषनः एटले रुषनदेवजी (आगम्म के०) आवीने (उज्जाणे के०) उद्याने एटले वनने विषे (पडिम के०) प्रतिमा ते काउस्सग्ग प्रत्यें रहेता हवा, ए वात सांनलीने (जा के०) जेवामां (बाहुबलि के०) बाहुबली राजा (पनाए के०) प्रनातने विषे (एइ के०) एति एटले आवे ठे, (ता के०) तेटलामां (नयवं के०) नगवान् जे आदिनाथ ते (विहरिउ के०) विहार करता हवा. अर्थात् बाहुबली राजा आवे ठे, एटलामां नगवानें विहार कस्थो ॥ ५६ ॥

तो तहियं सो कारइ, जिणपयठाणंमि रयणमयपीढं ॥
तडुवरि जोयणमाणं, मणिरयणविणिम्मिय दंडं ॥ ५७ ॥

अर्थः—(तो के०) तदनंतर (सो के०) ते बाहुबली राजा, (तहियं के०) ते स्थलने विषे (जिणपयठाणंमि के०) जिनपदना स्थानकने विषे (रयणमयपीढं के०) रत्नमयपीठने (कारइ के०) कारयति एटले करावे छे; अने (तडुवरि के०) तडुपरि एटले ते पीठनी उपर (जोयणमाणं के०) योजनमानं एटले एक योजन प्रमाण (मणिरयणविणिम्मियं के०) मणिरत्नविनिर्मितं एटले मणि अने रत्न तेणें निर्माण करेला एवा (दंडं के०) दंडने करावे छे ॥ ५७ ॥

तस्सोवरि रयणमयं, जोयणपरिमंडलं पवरचक्कं ॥
तं धम्मचक्कतिडं,नवजलनिहि पवरबोहिडं ॥५८॥

अर्थः—(तस्सोवरि के०) तस्योपरि एटले ते दंडनी उपर (रयणमयं के०) रत्नमय (जोयणपरिमंडलं के०) योजनपरिमंडलं एटले योजन प्रमाण बाह्यपरिधिमंडल एवुं (पवरचक्कं के०) प्रवरचक्रं एटले उत्कृष्ट चक्र करावे छे. (तं के०) तत् एटले ते (नवजलनिहिपवरबोहिडं के०) नव जलनिधिप्रवरवहित्रं एटले संसारसमुद्र तरवाने उत्तम वाहाण समान एवुं (धम्मचक्कतिडं के०) धर्मचक्रतीर्थं एटले धर्मचक्रतीर्थने करावे छे. अर्थात् जे वखत बाहुबली राजा उद्यानने विषे प्रभुनुं वंदन करवा आव्यो, तेनी पहेलां प्रभुयेंविहार कर्यो. प्रभु न मलवाथी बाहुबलीराजा अत्यंत चिंता करवा लाग्यो पछी तेना सचिवोयें कह्युं. जे हे स्वामिन् ! आहिं वेलातिक्रम थवाथी आपणने प्रभुदर्शन न थयुं. परंतु ते प्रभुना पगलां जे आहिं पड्यां छे, तेने कोइ पगे करी खुंदे नहिं, एवो उपाय करवो जोइयें. ते सांभली बाहुबली राजायें तिहां धर्मचक्र तीर्थनी स्थापना करी. इति धर्मचक्र तीर्थमहिमा वर्णन ॥ ५८ ॥

सिवनयरि कुसग्गवणे, पासो पडिमं ठिउ अ धरणिंदो ॥
उवरि तिरत्तं छत्तं, धरिसु कासीय वरमहिमं ॥ ५९ ॥

अर्थः–(सिवनयरि के०) शिवनगरे एटले शिवनगरने विषे (कुसग्ग वणे के०) कुशाग्रवनने विषे (पासो के०) पार्श्वः एटले श्रीपार्श्वनाथ, (प डिमं के०) प्रतिमायें (ठिउ के०) स्थितः एटले रह्या, अर्थात् कायोत्स र्गने विषे रह्या, तेने ज्ञानथी जाणीने धरणेंद्र पातालथी आवीने (उवरि के०) उपर (तिरत्तं के०) त्रणरात्रि पर्यंत (छत्तं के०) छत्रने (धरिसु के०) अधार्षीत् एटले धारण करतो हवो; अने (वरमहिमं के०) वरम हिमानं एटले एवा श्रेष्ठ महिमाने ते नाट्यरंगादि प्रजुनी आगल (कासी य के०) अकार्षीत् एटले करतो हवो ॥ ५९ ॥

तं हेउं सा नयरी, अहिछत्ता नामउ जणे जाया ॥
तहियं नमिमो पासं, विग्घविणासं गुणावासं ॥६०॥

अर्थः– (तं हेउं के०) तं हेतुं एटले ते कारणमाटे (सा के०) ते (नयरी के०) नगरी (नामउ के० नामतः एटले नामें करी (अहिछ त्ता के०) अहिछत्रा (जणे के०) जने एटले लोकने विषे (जाया के०) जा ता एटले थइ अर्थात् ते नगरीनुं नाम जगत्मां अहिछत्रा एवुं प्रसिद्ध थयुं. (तहियं के०) तत्र एटले ते स्थलने विषे (पासं के०) श्रीपार्श्वनाथने (नमिमो के०) अमो नमन करीयें छैयें. ते पार्श्वनाथ केहवा छे? तो के वि ग्घविणासं के०) विघ्नोने नाश करनार एवा अने (गुणावासं के०) गुणो ना आवासरूप एवा छे. हवे ते नगरीनुं नाम अहिछत्रा केम पड्युं ? ते कहे छे के ज्यां धरणेंद्रे आवी करी श्रीपार्श्वनाथ उपर छत्र धारण कर्युं तेथी ते नगरीनुं नाम अहिछत्रा पड्युं ॥ ६० ॥

वली प्रकारांतरें पार्श्वतीर्थ कहे छे.

पडिमाए ठियं पासं, कमठो हरिकरिपिसायपमुहेहिं ॥
उवसग्गिअंतो वरिसइ, अखंमजुगमुसलधाराहिं ॥ ६१॥

अर्थः–(पडिमाए के०) प्रतिमायां एटले प्रतिमाने विषे अर्थात् का योत्सर्गने विषे (ठियंपासं के०) स्थितं पार्श्वं एटले रहेला एवा जे श्री पार्श्वनाथ तेने (कमठो के०) कमठनामा देव, (हरिकरिपिसायपमुहेहिं के०) हरिकरिपिशाचप्रमुखैः एटले सिंह, हाथी, पिशाच प्रमुखना रूपोयें

(उवसग्गिअ के०) उपसृज्य एटले उपसर्ग करीने (तो के०) ततः एटले ते पछी (अखंमजुगमुसलधाराहिं के०) अखंमयुगमुशलधाराभिः एटले अखंमित एवी बेवडा मुशल समान जलधारायें करी (वरिसइ के०) वर्षति एटले वरसे छे, अर्थात् अविछिन्न एवी बे मुशल प्रमाण जामी एवी जलधाराने कमठ, श्रीपार्श्वनाथ उपर वरसावतो हवो ॥ ६१ ॥

उदगं जिणनासग्गं, पत्तं तो लहु करेइ धरणिंदो ॥
जिणउवरि फणाछत्तं, भोगेण य देहबहिपरिहिं॥ ६२॥

अर्थः—(उदगं के०) एटले जल, ते (जिणनासग्गं के०) जिनना साग्रं एटले श्रीपार्श्वनाथने नासिकाना अग्रपर्यंत (पत्तं के०) प्राप्तं एटले प्राप्त थयुं, (तो के०) ततः ते पछी अवधिज्ञानथी जाणीने (धरणिंदो के०) धरणेंद्र, (लहु के०) लघु एटले शीघ्र आवीने (जिणउवरि के०) जिनो परि एटले श्रीपार्श्वनाथजिननी उपर (फणाछत्तं के०) फणाछत्रं एटले फणारूप छत्रने (करेइ के०) करोति एटले करे छे. (य के०) वली (भोगेण के०) भोगेन एटले पोताना शरीरें करीने ते धरणेंद्र, (देहबहिपरिहिं के०) प्रभुना देहथकी बाहेर फण मंमलें करी वेष्टनने करे छे ॥ ६२ ॥

चरणाहो गुरुनालं, कमलं तो कमठु खामिउं नठो ॥
धरणो गउ सवासं, जियउवसग्गं नमह पासं ॥ ६३ ॥

अर्थः—(चरणाहो के०) चरणाधः एटले प्रभुना चरणनी नीचें (गुरु नालं के०) मोहोटुं छे नाल जेनुं एवुं (कमलं के०) कमलने करे छे. (तो के०) ततः एटले ते पछी धरणेंद्रें प्रेरित एवा अवधिज्ञानें करी भग वाननुं स्वरूप जाणीने तर्जना पाम्यो. एवो (कमठु के०) कमठनामा देवता (खामिउं के०) क्षामयित्वा एटले प्रभुने खमावीने (नठो के०) नाठो, अने (धरणो के०) धरणेंद्र नाग, ते (सवासं के०) स्ववासं एटले पोताना स्थानक प्रत्यें (गउ के०) गतः एटले गयो. माटें (जियउवसग्गं के०) जीत्या छे उपसर्गो जेणें एवा (पासं के०) श्रीपार्श्वनाथने (नमह के०) नमत एटले हे भव्यजनो ! तमें नमन करो ॥ ६३॥ इतिपार्श्वतीर्थमाहात्म्यं ॥

हवे रथावर्त्त तीर्थनुं माहात्म्य कहे छे.

सिरि वयरसामि पढमा, रुहिए सेलंमि तेसिं खुड्डेण॥
पढमं कयमाराहण, लोगपाला तउ चउरो ॥ ६४ ॥
रहरूढापायाहिण, काउं महिमं करिंसु खुड्डस्स ॥
तं हेउं तयंतिछं, रहआवत्तं ति तं नमिमो ॥ ६५ ॥

अर्थः–(सिरिवयरसामि के०) श्रीवज्रस्वामीयें (पढमारुहिए के०) प्रथमारूढे एटले प्रथम आरोहण करेला (सेलंमि के०) शैले एटले पर्वत ने विषे (तेसिं के०) तेषां एटले ते वज्रस्वामीना (खुड्डेण के०) क्षुल्लक एवा शिष्यें (पढमं के०) प्रथम (आराहण के०) आराधनं एटले आराधन (कयं के०) कृतं एटले कर्युं. (तउ के०) ततो एटले त्यार पछी (चउरो के०) चत्वारः एटले चार (लोगपाला के०) लोकपालो (रहरूढाः के०) रथारूढाः एटले रथमां बेठा छता ते चार लोकपालो (पायाहिण के०) प्रदक्षिणाने (काउं के०) करीने (खुड्डस्स के०) क्षुल्लकशिष्यना (महिमं के०) महिमाने (करिंसु के०) करता हवा. (तं हेउं के०) तं हेतुं एटले ते कारणमाटें (रहआवत्तं के०) रथावर्त्त एटले रथावर्त्तनामा (तिछं के०) तीर्थ (ति के०) इति ए प्रकारें (तयं के०) तत एटले जगत्‌मां ते नामथी विस्तार पाम्युं. (तं के०) ते तीर्थने स्तुतिकार कहे छे, के अमें (नमिमो के०) नमन करीयें छैयें ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

एक दिवस श्रीवज्रस्वामी महर्षियोनी सार्थे अनशन करवाने इच्छा करता छता कोइएक पर्वत प्रत्यें चढवा लाग्या. तेमनी सार्थे तेमनो एक नानो शिष्य आवतो हवो; पछी तेने गिरिउपर चढवाने असमर्थ जाणी ते बालकने तिहांज छोडीने ते वज्रस्वामि वगेरे चाल्या, पछी क्षुल्लक शिष्य, रस्ताथी जूदो पडीने पोताना गुरुने न मलतां छतां बीजा मार्गेथी तेज गिरिना शिखरपर चढयो, अने ते अनशन करतो हवो. अने सकोमलता तथा हलका शरीर पणाथी गुरुनी पहेलां पोतें पहोंचतो हवो. ते बालकनुं आवुं साहस जोइने चारे लोकपाल चमत्कार पाम्या थका रथमां बेसीने ते बालऋषिनो महिमा करवा माटें प्रदक्षिणा करवा लाग्या.

सिरिवयरसामि राहण, गिरिंमि सक्को रहेण अहि करि
णा ॥ पायाहिण तो सोविय, रहावत्तो कुंजरावत्तो ॥ ६६ ॥

अर्थः—(सिरिवयरसामिराहणगिरिंमि के०) श्रीवज्रस्वामीने आराधन करवाना गिरिने विषे (सक्को के०) शक्र एटले सौधर्मेंद्र (रहेण के०) रथें करीने (अह के०) अथ एटले पछी (करिणा के०) हस्तीयें करी (पायाहिण के०) प्रदक्षिणाने करतो हवो. (तो के०) ते कारण माटें (सोवि के०)ते पर्वत पण (रहावत्तो के०) रथावर्त्त एवे नामें (य के०) वली बीजुं (कुंजरावत्तो के०) कुंजरावर्त्त एवे नामें थयुं ॥ इति रथावर्त्त तीर्थ महात्म्यं ॥६६॥

हवे चमरोत्पात तीर्थ कहे छे.

जह य वज्जपलाणो, चमरो वीरपयंतरे निलुक्को ॥
हरिणा मुक्को तत्तो, जिणपुरउ दंसए नट्टं ॥ ६७ ॥

अर्थः—(य के०) वली (जह के०) जे स्थलने विषे (वज्जपलाणो के०) वज्र थकी पलायन थयो एवो (चमरो के०) चमरेंद्र असुर, (वीरपयंतरे के०) वीरपदांतरे एटले श्रीवीरभगवानना चरणना अंतरालने विषे (निलुक्को के०) निलीनः एटले निलीन थयो; अर्थात् श्रीवर्द्धमानना चरणमां आवीने पड्यो. पछी (तत्तो के०) ततः एटले ते स्थलथकी (हरिणा के०) इंद्र तेणें (मुक्को के०) मुक्त कस्यो छतो (जिण पुरउ के०) जिनपुरतः एटले श्रीवर्द्धमानस्वामीनी आगल (नट्टं के०) नाट्यं एटले नाटकने (दंसए के०) दर्शयति ते देखाडे छे ॥६७॥

तो तहिं तित्थं जायं, चमरुप्पायं च सुंसुमारपुरे ॥
सोमवणे तहिं वीरं, तिहुयण जण वच्छलं नमिमो॥ ६८ ॥

अर्थः—(तो के०) ततः एटले ते पछी (तहिं के०) ते (सुंसुमारपुरे के०) सुंसुमारपुरना (सोमवणे के०) सोमवनने विषे (चमरुप्पायं के०) चमरोत्पातं एटले चमरोत्पात नामें (तित्थं जायं के०) तीर्थ प्रसिद्ध थयुं, माटें (तहिं के०) तत्र एटले ते स्थलने विषे (तिहुयणजणवच्छलं के०) त्रण भुवननिवासिलोकोथी वात्सल्यने करनार एवा (वीरं के०) श्रीवीरभगवानने (नमिमो के०) एटले स्तुतिकार कहे छे,के अमें नमन क

रीयें छैयें. हवे नमाम एवुं अहिं तथा बीजे कोइ पण ठेकाणें जे बहुवचन आवे छे, ते स्तुतिकार कहे छे के, हुं जव्यजीव सहित नमस्कार करुं छुं. एवा अजिप्रायथी आवे छे, एम समजवुं ॥ ६७ ॥

हवे ए तीर्थनो संबंध कहे छे. पूर्वे विजेल ग्रामनो वासी पूरणनामा कोइ एक कौटुंबिक हतो, ते तापसी दीक्षाने लइ घणा आकरा तप तपी ने असुरने विषे चमरेंद्र थयो. ते अवधिज्ञानें करी पोताना शिरथकी ऊर्ध्व इंद्रनुं आसन जोइने क्रोधें करी कुपित थयो एवो ते चमरेंद्र, इंद्रने पोताना आसनथकी चलन करवाने इछतो छतो सौधर्मकल्पप्रत्यें गयो. पछी त्यां विकटरूपें करी देवोनें अने देवीयोने बीवरावबा लाग्यो, ते वात इंद्रें अव धि ज्ञानें करी ते चमरेंद्रनुं कपटरूप जाणीने तिहांथी काढी मूक्यो, तो पण च मरेंद्र गयो नहिं, अने त्यां कूदवा लाग्यो तेने कूदतो जोइने इंद्रें पोताना हा थथकी अग्निना कोटिशः तणखायें करी करालज्वालावालुं एवुं वज्र मूक्युं, पछी ते वज्रना जयथकी पलायन करी जातो एवो ते चमरेंद्र सोमवन ने विषे कायोत्सर्गेने विषे रहेला एवा श्रीवीरजगवानने शरणे आवीने जगवानना चरणारविंदमां लीन थयो; पछी ते चमरेंद्रनी पछवाडे दोडी आवतो एवो सौधर्मेंद्र, चार अंगुल जगवानना चरणथी उंचुं रहेलुं एवुं जे वज्र तेने पाछुं ग्रहण करी प्रजुने नमस्कार करी चमरेंद्रने क्षमापन क रावीनें पोताने स्थानकप्रत्यें गयो; ते ठेकाणें कोइएकें श्रीजिननी प्रति मा स्थापन करी; तेथी त्यां चमरोत्पात नामा तीर्थ थयुं.

इय बहुविह अछेरय, निहीसु अठावयाइ ठाणेसु ॥
पणमह जिणवर चंदे, सुजत्तिजर नमिरमाहिंदे ॥ ६ए ॥

अर्थः-(इय के०) इति एटले ए रीतें (बहुविह के०) बहुविध एटले घणे प्रकारें (अछेरयनिहीसु के०) आश्चर्यनिधिषु एटले आश्चर्यना निधियो ए वा (अठावयाइठाणेसु के०) अष्टापदादिस्थानेषु एटले अष्टापद तीर्थ जे मां मुख्य छे एवा स्थानकोने विषे (सुजत्तिजरनमिरमाहिंदे के०) सुजक्ति जरनम्रमाहेंद्रान् एटले रूडी जक्तिना जरें करी नम्या छे मोहोटा इंद्रो जेने एवा श्रीजिनवरचंद्रोने हे लोको ! तमो (पणमह के०) नमन करो ॥ ६ए ॥

हवे समेत शिखरगिरि तीर्थ वखाणे छे.

मासं पाउवगया, वग्घारियपाणिणो जिणा वीसं ॥
सिद्धि गया जब तयं, नमिमो समेयगिरिसिहरं॥७०॥

अर्थः– (मासं के०) मासपर्यंत (पाउवगया के०) पादोपगताः एटले पादोपगमन आसनें रह्या थका अनशनने करता एवा अने (वग्घारियपाणिणो के०) कायोत्सर्गमां प्रलंबित छे पाणि एटले हाथ जेना एवा (जिणावीसं के०) जिना वीशं एटले वीश जिन ते एक ऋषभदेव, बीजा वासुपूज्य, त्रीजा वीर, चोथा नेमी, ए चार जिन वर्जिने शेष वीश जिनो (जब के०) यत्र एटले जे स्थलने विषे (सिद्धिगया के०) सिद्धिगताः एटले सिद्धिने प्राप्त थया. (तयं के०) तत् एटले ते (समेयगिरिसिहरं के०) समेतगिरिशिखरं एटले समेतगिरिशिखरने (नमिमो के०) नमामः एटले स्तुतिकार कहे छे के, अमें नमन करियें छैयें ॥ ७० ॥

हवे अजितजिननी पहेलां पण ए तीर्थे संघ आव्या छे, ते कहे छे.

जं संमेए संघा, अजिय जिणंदा परंपि आयंसु ॥
तेण य सो महतिबं, तिलोयजणतारणसमबं ॥७१॥

अर्थः–(जं के०) जे कारणमाटें (अजियजिणंदा के०) श्रीअजित जिनेंद्रथकी (परंपि के०) परतोऽपि एटले पूर्वे पण (संमेए के०) समेतशिखरने विषे (संघा के०) संघो, यात्राने माटें (आयंसु के०) आवता हवा. (तेण के०) तेन एटले ते कारण माटें आहिं विश्वने विषे (सो के०) ते समेतशिखरगिरि (महतिबं के०) महातीर्थ एटले मोहोटुं तीर्थ थयुं छे, ते केवुं तीर्थ छे ? तो के (तिलोयजणतारणसमबं के०) त्रिलोकजनतारणसमर्थ एटले त्रणे लोकना जीवोने तारवाने समर्थ छे. इहां अजितजिन आव्या तेना पहेलां पण समेतशिखरगिरिने विषे संघनुं आगमन थयुं, ते आवी रीतें जणाय छे,के जे श्रीसगरचक्रीना पुत्रो हता,ते पूर्वभवने विषे समेतगिरि पासें आवेला प्रत्यासन्न ग्रामने विषे साठ हजार भिल्ल होता हवा, ते समेतशिखरपरं कोइ एक यात्रा करवा माटें आवेला संघने लूंटीने पापें करी अग्निने विषे समकालें बली गया, ते हाथीना मावत थया, अने पछी ते हाथीना पगतलें कचराइने मरण पामीने सगरना पु

त्रूपें थया, अने सगरराजा तो श्रीअजितजिनना वारामां हता, ए कारणथी अजितजिनथी पूर्वे पण समेतगिरितीर्थ हतुं, एम सिद्ध थयुं ॥७१॥

हवे श्री शेत्रुंजयतीर्थ माहात्म्य कहे छे.

जह य पढमं सिद्धो, पुंमरिउ णेगमुणिसहस्स जुउ॥
तक्काला जा जंबू, असंखकोडीउ ता सिद्धा ॥ ७२ ॥

अर्थः—(य के०) वली (जह के०) जे पर्वतने विषे (पढमं के०) प्रथमं एटले प्रथम (अणेगमुणिसहस्सजुउ के०) अनेक मुनि सहस्रयुतः एटले अनेक मुनिना सहस्रोयें युक्त एवो (पुंमरिउ के०) पुंमरीक गणधर (सिद्धो के०) सिद्धिने प्राप्त थयो छे, (तक्काला के०) तत्कालात् एटले ते कालथकी आरंजीने (जाजंबू के०) यावज्जंबू एटले जिहां पर्यंत चरम केवली श्रीजंबुस्वामी सिद्ध थया, (ता के०) तावत् एटले तिहांपर्यंत (असंखकोडीउ के०) असंख्य कोटि जीव (सिद्धा के०) सिद्धाः एटले सिद्ध थया ॥७२॥

जह य सिद्धा पंमव, पज्जुन्न संबाइ जायवा बहवे ॥ तं विमलं विमलगिरिं, थुणिमो अइविमलपयहेउं ॥ ७३ ॥

अर्थः—(जहय के०) यत्र च एटले जे पर्वतने विषे (पंमव के०) पांचपांमव, (पज्जुन्नसंबाइ के०) प्रद्युम्नसांबादि एटले प्रद्युम्न अने सांब जेमां आदि छे, एवा (जायवाबहवे के०) यादवा बहवः एटले घणा यादवो (सिद्धा के०) सिद्धिने पाम्या. ते (अइविमलपयहेउं के०) अतिविमलपदहेतुं एटले अति निर्मल एवा मोक्षपदनुं साधन छे जेमां एवा (विमलं के०) निर्मल (तं के०) ते प्रसिद्ध (विमलगिरिं के०) विमलाचलने (थुणिमो के०) स्तवीयें छैयें ॥७३॥

जह य नेमिं मुत्तुं, नूणं उसन्नाइणो जिणा रुहिया ॥ कहमन्नह तेवीसं, जिणपयजुयलाण पडिबिंबा ॥ ७४ ॥

अर्थः—(नूणं के) नूनं एटले कवि वितर्क करे छे के, (नेमिं के०) नेमीश्वर जगवानने (मुत्तुं के०) मुत्वा एटले मूकीने (जहय के०) जे पर्वतने विषे (उसन्नाइणो जिणा के०) ऋषनादयो जिनाः एटले ऋषनदेवजी वगेरे त्रेवीश जिन (रुहिया के०) आरूढा एटले आरोहण थयेला छे, अर्थात् समवसरण करी मोक्षें गयेला छे. (अन्नह के०) अन्यथा एटले

एम त्रेवीश जिन समवसर्या न होय तो ते (तेवीसं के०) त्रेवीश एवा जिन के०) जिन, तेना (पयजुयलाण के०) पदयुगलोनां (पडिबिंबा के०) प्रतिबिंबो (कहं के०) कथं एटले केम देखाय छे? अर्थात् जो त्रेवीश तीर्थंकर ते सिद्धाचल पर्वतमां समोसर्या न होय, तो ते त्रेवीश जिननां पदयुगलनां प्रतिबिंब क्यांथी देखाय छे? ॥ १४ ॥

तहियं सिरिसेत्तुंजे, सुरनरपुज्जे अणेगवरचुज्जे ॥ पण
मह जिणवरवसभं, वसभंकं वसभ सुमिणं च ॥ १५ ॥

अर्थः—(तहियं के०) तत्र एटले ते (सिरिसेत्तुंजे के०) श्रीशत्रुंजय पर्वतने विषे (जिणवरं के०) जिनोने विषे श्रेष्ठ एवा (उसभं के०) ऋषभं एटले श्रीऋषभदेवने हे जनो! तमें (पणमह के०) प्रणमत एटले प्रणाम करो. हवे ते शत्रुंजय पर्वत केवो छे? तो के (सुरनरपुज्जे के०) देवता अने मनुष्योयें पूजन करवा योग्य एवो, अने (अणेगवरचुज्जे के०) अनेकवराश्चर्ये एटले विविधाश्चर्यमय छे. हवे ते ऋषभ प्रभु केहेवा छे? तोके (वसभंकं के०) वृषभांकं एटले बलदनुं छे चिन्ह जेने एवा (च के०) वली केवा छे? तोके (वसभसुमिणं के०) वृषभ स्वप्न एटले जेनां जन्म पेहेलां पोतानी माता जे मरुदेवी तेमने चउद स्वप्न थयां तेमां पहेला स्वप्नामां वृषभ दीठो, माटें वृषभ देवजी एवुं नाम पड्युं ॥ १५ ॥

हवे मथुरानगरीयें श्रीसुपार्श्वजिननास्तूपनुं माहात्म्य कहे छे.

तच्चंनियाणवाए, सेय पडागा निसाइ जहिं जाया ॥
खवगपभावा तं थुणि, महुराइ सुपास जिणथूभं ॥१६॥

अर्थः—हे बुधजनो! (महुराइ के०) मथुराजीने विषे (सुपासजिणथूभं के०) सुपार्श्वजिनस्तूभने (थुणि के०) स्तुति करो. (जहिं के०) जे स्तूभने विषे (निसाइ के०) निशायां एटले रात्रिने विषे (तच्चंनियाणवाए के०) ताच्चवञिकानां वादे एटले बौद्धदर्शनीयोना वादने विषे (खवगपभावा के०) क्षपकप्रभावात् एटले मासक्षपणादि उग्रतपकारि क्षपकना मा ऋषिना प्रभावथकी (पडागा के०) पताका एटले ध्वजा ते (सेय के०) सपेत (जाया के०) जाता एटले थई. (तं के०) तेने सर्वजन स्तवो. एटले पूर्वे

ते मथुरामां रहेलुं एवुं सुपार्श्वजिनस्तूननामा तीर्थने बौद्धलोकोयें स्वकीय मान्युं हतुं, अने त्यां ध्वजा पण राती बांधी हती. पछी कालांतरें त्यां जैनसंघ मल्यो,अने ते बौद्धसाथें विवाद थयो,त्यारें कोइक लब्धिसिद्ध रूप क नामा रुषि कहेवा लाग्या के हे बौद्धो ! जो आ तीर्थ तमारुंज होय तो ते काल सवार पर्यंत आ ध्वजा रक्त छे तेवीज रहे, अने जो काल सवारें आ ध्वजा श्वेत थाय तो ए तीर्थ अमारुं छे, एम जाणो. ते वात बौद्धजनोयें कबूल करी पछी ते रात्रि ज्यारें व्यतीत थइ, त्यारें ते ध्वजा ते रूपक रुषिना प्रजावथकी श्वेत थइ गइ, अने ते जैनतीर्थ थयुं ॥ ७६ ॥

हवे जरुअच्च तीर्थनुं माहात्म्य कहे छे.

जरुअछे कोरंटग, सुवय जियसत्तु तुरग जाइसरो ॥ अण
सण सुर आगंतुं, जिणमहिम मकासि तो तहियं ॥ ७७ ॥

अर्थः–(जरुअछे के०) नृगुकछे एटले जरुच नगरने विषे (कोरंटग के०) कुरंटके एटले कुरंटक उद्यानमां (सुवय के०) सुव्रत एटले मुनिसुव्रत स्वामीने (जियसत्तु के०) जितशत्रु राजा, अने (तुरगजाइसरो के०) तुरगजातिस्मरः एटले पोताना पूर्वजवनुं स्मरण थयुं छे जेने एवो तुरग, ए बेहु जण, वंदन करता हवा. अने ते पछी ते तुरग (अणसण के०) अनशन व्रत करीने (सुर के०) देव थयो (तो के०) तदनंतर (तहियं के०) ते ठेकाणें ते देव (आगंतुं के०) आगम्य एटले आवीने (जिणमहिमं के०) श्रीजिनजगवानना महिमाने (अकासि के०) अकार्षीत् एटले करतो हवो. हवे तेनी कथा केवी रीतें छे, ते कहे छे, के कोइएक जीव जे तुरग योनि प्राप्त थयेलो अने नृगुकछने विषे जितशत्रु राजायें करेला अश्वमेध मां वध पमाडवाने तैयार करेलो हतो पछी पोताना पूर्व जवना मित्रने,जाणीने श्रीसुव्रतस्वामी एकदम प्रतिष्ठान पुरथकी रात्रिमां साठ योजन जूमि उल्लंघन करी जरूचना कोरंटग उद्यानमां समोसर्या. त्यां अश्वमेध करनारा जितशत्रुराजाने प्रतिबोध पमाड्यो,तेवामां पोताने प्रतिबोधवा माटेसर्वज्ञ आव्या एवुं सांजलीने तुरत तुरगने जातिस्मरण ज्ञान प्राप्त थयुं,पछी ते अश्वें तिहां आवी प्रजुने वंदन कर्युं अने अनशन करी मरण पामी देवता थयो ॥७७॥

अस्सावबोहतित्थं, जायं तं नाम पुणवि बीयमिणं ॥
सिरिसमलिया विहारो, सिंहलधुय कारि उद्धारो ॥१८॥

अर्थः—(तं के०) ते (अस्सावबोहतित्थं के०) अश्वावबोधनामा तीर्थ, (जायं के०) जातं एटले थयुं. त्यां जितशत्रुराजायें प्रासाद करावीने श्रीमुनिसुव्रतस्वामीनां जीवतांज तेमनी प्रतिमा स्थापन करी. तथा वली तेहीज तीर्थनुं (पुणवि के०) पुनरपि एटले फरीने पण (बियंमि के०) बीजुं (नाम के०) नाम थयुं, ते केवी रीतें? तो के (सिंहलधुयकारिउद्धारो के०) सिंहलदुहितृकारितोद्धारः एटले सिंहलराजानी दीकरीयें कर्यो छे उद्धार जेनो एवुं जे ते तीर्थ तेनुं (सिरिसमलियाविहारो के०) श्रीशामलिकाविहार एवुं नाम थयुं ॥ १८ ॥ हवे शामलिकाविहार नाम जे थयुं तेनी कथा कहे छे. एक दिवस नृगुकच्छने विषे सात रात्रि पर्यंत वरसाद वरश्यो, तेथी एक शमली पक्षिणी हती तेने खावा न मल्युं, त्यारें ते शमली अनाहारपणाथी कोइएक व्याधना घरमांथी मांस ग्रहण करीने उडी, तेवात व्याधें जाणवाथी तुरत ते शमलीनी पछवाडें दोडीनें बाण मार्युं, ते बाण वागवाथी श्रीसुव्रतस्वामीना चैत्यनी उपर पडी, तेवामां त्यां जानुनूषण रुषि हता तेणें नवकार आप्यो, के तुरत ते मरण पामी अने तिहांथी सिंहलदेशना सिंहलेश चंद्रशेखर राजानी पुत्री सुदर्शनानामें थइ. पछी ते कन्या एक दिवस पोताना पिताना खोलामां बेठी हती, तेवामां नरूचथकी आवेला जिनदास श्रावकना मुखथकी ते पूर्वोक्त अश्वावबोध तीर्थनी वार्त्ता सांनली, ते अश्वावबोधतीर्थनी वात सांनलतांज तत्काल ते कन्याने पूर्वनव जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं. पछी ते कन्या पार्श्वे, अने सुपार्श्वे एवी पोतानी बे सखियोयें सहित उपवास करती छती नरुचमां आवी अने जीर्ण थइ गयेलुं एवुं जे श्रीसुव्रतस्वामीनुं चैत्य, तेनो उद्धार करी शकुनिका रूपने करावीने तेज जानुनूषण साधुना मुखथकी धर्मने पामीने तेज स्थलने विषे बार वरस पर्यंत तप करी अनशन व्रत लइने मरण पामी ते सुदर्शना कन्या, व्यंतरी थइ, तथा तेनी पार्श्वा अने सुपार्श्वा ए बे सखियो हती, ते पण ते राजकन्याने विषे मोह होवाथी व्यंतरीयो थइ.

पछी ते त्रणे सुरीयो ए प्रासादनी अधिष्ठायिका देवीयो थइ,तेथी ते तीर्थनुं शामलिकाविहार एवुं बीजुं पण नाम पड्युं ॥ ७८ ॥

जिअसत्तु आस समली,पास सुपासा सुदंसणा देवी ॥
नियनिय मुत्तिहिं अज्जवि, सेवंते सुव्वयं तहियं ॥ ७९ ॥

अर्थः-(जिअसत्तु के०) जितशत्रु राजा अने (आस के०) पूर्वोक्त अश्व, (समली के०) शमली अने तेनी (पास के०) पार्श्वनामा सखी तथा बीजी (सुपासा के०) सुपार्श्वनामा सखी (सुदंसणादेवी के०) सुदर्शनादेवी एटले सुदर्शना नामा देवी, ए सर्वे (नियनिय के०) निजनिज एटले पोतपोतानी (मुत्तिहिं के०) मूर्त्तियो करीने (अज्जवि के०) अद्यापि एटले हजी सुधी पण (तहियं के०) ते स्थलने विषे (सुव्वयं के०) सुव्रतं एटले मुनिसुव्रत स्वामीने (सेवंते के०) सेवन करे छे ॥७९॥

इक्कारलक्ख चुलसी, सहस्स किंचूण वरिस जस्स त
हिं ॥ जीवंत सामि तिछे, नरुअछे सुव्वयं नमिमो ॥ ८० ॥

अर्थः-(इक्कारलक्ख के०) एकादश लक्ष एटले अगीयार लाख अने (चुलसी सहस्स के०) चतुरशितिसहस्र एटले चोराशी हजार थकी (किंचूण के०) किंचिन्न्यून एटले काहिंक ऊणां एवां (वरिस के०) वर्षो (जस्स के०) जे तीर्थने थयां. एटले आ तीर्थमालास्तोत्र रच्युं ते दिवसथी, ते तीर्थने पूर्वोक्त संख्यांक वरस थयां. माटें (तहिं के०) ते स्थलने विषे (नरुअछे के०) नरुचमां (जीवंतसामितिछे के०) जीवंतस्वामितीर्थनेविषे (सुव्वयं के०) सुव्रतस्वामिने (नमिमो के०) नमन करीयें छैयें ॥ ८० ॥

हवे थंनणपुर तथा श्रीपावकगिरि तीर्थनुं माहात्म्य कहे छे.

सन्निहिय पाडिहेरं,पासं वंदामि थंनण पुरंमि॥ पा
वयगिरिवरसिहरे, इहदवनीरं थुणे वीरं ॥ ८१ ॥

अर्थः- (थंनणपुरंमि के०) स्थंनणपुरे एटले स्थंनकपुरने विषे (पासं के०) पार्श्वं एटले श्रीपार्श्वनाथने (वंदामि के०) हुं वंदन करुं छुं. ते पार्श्व नगवान् कहेवा छे ? तोके (सन्निहिय पाडिहेरं के०) सन्निहित

प्रातिहार्य एटले समीप छे प्रातिहार्य ते किंकिल्यवृक्षादि जेने एवा अथवा प्रातिहार्य जे महिमा ते छे सन्निहित जेने एवा छे, वली (पावयगिरिवर सिहरे के०) श्रेष्ठ एवा पावकगिरिना शिखरने विषे (दुहदवनीरं के०) दुःखदवनीरं एटले सांसारिक जे क्लेशो तद्रूप दुःख दवानल तेने शमाववा ने जलसमान एवा (वीरं के०) श्रीवीरभगवानने (थुणे के०) स्तुवे एटले हुं स्तवुं छुं. अर्थात् जेम नीरनां छांटाथी वनवन्हि शमी जाय छे,तेम श्रीपाव कगिरिराजनायक श्रीवीर प्रभुना ध्यानें करी सर्व दुःखो शांति पामे छे ॥८१॥

कन्नउज्जनिवनिवेसिय, वरजिणभवणंमि पाडलागामे ॥
अइचिरमुत्ति नेमिं, थुणि तह संखेसरे पासं ॥ ८२ ॥

अर्थः—(पाडलागामे के०) पाडलागामने विषे (कन्नउज्जनिवनिवेसि य के०) कान्यकुब्जनृपनिवेशित एटले कान्यकुब्जराजायें करेला (वरजि णभवणंमि के०) वरजिनभवने एटले श्रेष्ठ एवाजिनप्रासादने विषे (अइचि रमुत्तिं के०) अतिचिरमूर्त्ति एटले अत्यंत चिरंतन ते घणाकालनी छे मूर्त्तिजेनी एवा (नेमिं के०) नेमीश्वर भगवानने (थुणि के०) स्तौमि एटले हुं स्तवुं छुं. (तह के०) तथा (संखेसरे के०) श्री शंखेश्वर गामने विषे (पासं के०) श्रीपार्श्वनाथने हुं स्तवुं छुं ॥ ८२ ॥

पारकरदेसमंडण, भूए गुडरगिरिंमि उसभजिणो ॥
नंदउ तिलोयतिलउ, अवलोयणमित्त दत्तफलो ॥८३॥

अर्थः—(पारकरदेसमंडणभूए के०) पारकरदेशमंडनभूते एटले पारकरदे शना मंडनभूत एवा (गुडरगिरिंमि के०) गुडरनामा गिरिने विषे (तिलोयतिल उ के०) त्रैलोक्यतिलकः एटले त्रणलोकने विषे तिलकरूप एवा अने (अ वलोयणमित्तदत्तफलो के०) अवलोकनमात्र करवाथकी दीधुं छे साम्राज्य रूप फल जेणें एवा (उसभजिणो के०) श्रीऋषभनामा जिनेश्वर, (नंद उ के०) नंदतु एटले जयकारने प्राप्त थाउ ॥ ८३ ॥

सूराचंदे दुन्निय, दुन्निय छेवट्ठणंमि जिणभवणे ॥
चउरो वाहड मेरे,पासं च थुणामि राडद्दहे ॥८४॥

अर्थः— (सूराचंदे के०) सूराचंद ग्रामने विषे (दुन्निय के०) दे

एटले बे जिनभवनो छे. तथा (छेवद्दणंमि के०) छेवट्टण पत्तनने विषे (डुन्निय के०) बे (जिणभवणे के०) जिनभवन छे,तेने तथा (बाह्डमेरे के०) वाग्भट्टमेरौ एटले वाग्भट्टमेरुडुर्गने विषे (चउरो के०) चार जिनभवनोने (च के०) वली (राडदहे के०) राडद्रह गामने विषे (पासं के०) श्री पार्श्वनाथनो प्रासाद छे तेने (थुणामि के०) हुं स्तवुं छुं ॥ ८४ ॥

सिरिकन्नउज्ज नरवइ, कारिय भवणंमि कीरदारुमए॥
तेरस वच्छर सइए, वीरजिणो जयउ सच्चउरे ॥८५॥

अर्थः–(सच्चउरे के०) सत्यपुरे एटले सत्यपुरने विषे (सिरिकन्नउज्ज नरवइ के०) श्रीकान्यकुब्जदेशना राजायें (कीरदारुमए के०) कीर नामा काष्ठमय एवुं (कारिय भवणंमि के०) करावेला एवा भवनने विषे (वीरजिणो के०) वीर भगवान् (जयउ के०) जयने पामो. हवे ते भवन कहेवुं छे? तो के (तेरसवच्छरसइए के०) त्रयोदशवत्सरशतके एटले गयां छे तेरसो वरस जेने एवुं छे. आहिं जे वरससंख्या कहि छे, ते सर्व आ तीर्थमालाना कर्त्तानी अपेक्षायें जाणवी. अर्थात् आ स्तवन कर्युं ते दिवसथी पूर्वे गयेलां वर्षनी संख्या लेवी॥ ८५ ॥

बहुविह अच्छरिय निही, रहो य पडहो अ पयडसादिव्वो ॥
बलन्निच्च गाइ डुन्निवि, जालउरे वीरजिण भवणे ॥ ८६ ॥

अर्थः–(जालउरे के०) जावलिपुरनगरने विषे (वीरजिणभवणे के०) श्रीवीरजिनभवनमां (बहुविहअच्छरियनिही के०) घणा प्रकारना आश्चर्यना निधिरूप एवो (रहो के०) रथ छे, त्यां जे समयने विषे रथयात्रा थाय छे ते रथ, श्रीवीरभगवाननी मूर्त्ति स्थापित थइ छे जेमां एवो छतो पोतानी मेलेंज चाले छे. तेमाटें ते रथ (पयडसादिव्वो के०) प्रकट छे अतिशय जेने एवो छे (अ के०) वली (पडहो के०) पटहः एटले एक मोहोटो ढोल छे ते ज्यारें रथयात्रा प्रवृत्ते छे, त्यारें पोतानी मेलें आगल वागे छे. तथा (डुन्निवि के०) द्वावपि एटले बे एवा पण (बलन्निच्च के०) बलभृत्यौ एटले बे इंद्र पण पुरुषरूप प्रतिमा धारण करनारा एवा बेलने ठेकाणें थइने (गाइ के०) गच्छति एटले चाले छे ॥ ८६ ॥

नवनवइ लक्ख धणवइ, अलद्धवासे सुवन्नगिरिसिहरे ॥
नाहड निव कालीणं, थुणि वीरं जक्ख वसहीए ॥ ८७ ॥

अर्थः– (सुवन्नगिरिसिहरे के०) सुवर्णगिरिशिखरे एटले मेरुना शिखर समान छे शिखर जेनां एवो अने (जक्खवसहीए के०) यक्षवसतिके एटले यक्षवसतिनामा प्रासादने विषे (नाहडनिवकालीणं के०) नाहडनृपकालीन एटले नाहडनृपना वारामां स्थापन करेला एवा (वीरं के०) वीरभगवानने (थुणि के०) हुं स्तवुं छुं. हवे ते सुवर्णगिरिशिखर केहवुं छे? तो के (नवनवइलक्खधणवइ के०) नवनवतिलक्ष धनपति एटले नवाणुं लाख द्रव्यना धणी एवा धनपतियोने पण (अलद्धवासे के०) अलब्धवासे एटले नथी मळ्यो वास जेने विषे एवो छे, अर्थात् उपरना गढने विषे नवाणुं लक्ष द्रव्यना पतिने तो वास रहेवा मलतोज नथी; परंतु कोटिध्वज होय तेने रहेवा वास मले छे, अर्थात् कोटिध्वज जे होय तेज तिहां रहे छे ॥ ८७ ॥

तह चिरभवणे बीए, वंदे चंदप्पहं तउ तइए ॥ पण
यजणपूरियासं, कुमरविहारंमि सिरिपासं ॥ ८८ ॥

अर्थः–(तह के०) तथा (बीए के०) द्वितीये एटले बीजा (चिरभवणे के०) चिरंतन प्रासादने विषे (चंदप्पहं के०) चंद्रप्रभस्वामीने हुं (वंदे के०) वंदन करुं छुं. (तउ के०) ततो एटले तदनंतर (तइए के०) तृतीये एटले त्रीजा भुवनने विषे तो वली (कुमरविहारंमि के०) कुमारविहारे एटले कुमारपालराजायें करावेलो छे विहार जेनो एवुं अर्थात् कुमारपाल राजायें नवा रचेलां एवा भवनने विषे (सिरिपासं के०) श्रीपार्श्वनाथने वंदन करुं छुं. ते पार्श्वनाथ कहेवा छे? तो के (पणयजणपूरिआसं के०) प्रणाम करनारा जननी पूरी छे आशा जेणें एवा छे ॥ ८८ ॥

बंभेवि पल्लि नाणय, देवाणंदीसु वीरनाहस्स ॥ पयप
उमजुयल अंकिय, थूभजुए चेइए वंदे ॥ ८९ ॥

अर्थः–(बंभेवि के०) ब्रह्मणि अपि ब्राह्मणनामें एवा बंभण वाडग्रामने विषे पण तथा (पल्लि के०) पाली ग्रामने विषे तथा (नाणय के०) नाणकग्रामने विषे अने (देवाणंदीसु के०) देवानंदीग्रामने विषे (पयपउमजुयलअंकि

यथून जुए के०) श्रीजिनना बे पगलांएं करी पवित्र अने अंकित एवो जे स्तुज,तेणे युक्त एवा (चेइए के०) चैत्योने (वंदे क०) हुं वंदन करुं बुं ॥८९॥

मेवाडदेसगामे,थुणेमि नत्तीइ नंदिसम नामे ॥ सग
माखमंतिकारिय,जिणनवणे नायकुलतिलयं ॥९०॥

अर्थः– (मेवाडदेसगामे के०) मेदपाटदेशग्रामे एटले मेदपाटदेश गामने विषे (नंदिसमनामे के०) नंदीसमनामक ग्रामने विषे (सगमाल मंतिकारिय के०) श्रीथूलिनद्रना पिता एवा सकमालनामा मंत्रियें करावेला (जिणनवणे के०) जिननवने एटले श्रीजिननवनने विषे (नायकुलतिलयं के०) ज्ञातकुलतिलकं एटले ज्ञातकुलना शृंगाररूप एवा (वीरं के०) श्रीवीरनगवानने (नत्तीइ के०) नक्तिथी (थुणेमि के०) हुं स्तुति करुं बुं ॥९०॥

सुक्कोसल मुणिसुचरिय,पवित्तसिहरंमि मुग्गलगिरिंमि ॥
संपइ चित्तउमरके, चिरतरबहुचेइए थुणिमो ॥ ९१ ॥

अर्थः– (मुग्गलगिरिंमि के०) मुजलनामा पर्वतने विषे (संपइचित्तउमरके के०) संप्रतिचित्रकूटाख्ये एटले हाल चित्रकूट चित्रोड गढने विषे (चिरतर बहुचेइए के०) चिरतरबहुचैत्यानि एटले प्राचीनसमयनां घणां एक चैत्योने (थुणिमो के०) स्तुमः एटले अमें स्तवीयें बैयें. हवे ए चित्रकूटनामा पर्वत केहवो बे ? तो के (सुक्कोसलमुणिसुचरियपवित्तसिहरंमि के०) सुकोशमुनिसुचरित पवित्र शिखरे एटले सुकोशलमुनिना रूडां गमनागमनें करी पवित्र थयेलां बे शिखर जेनां एवो बे ॥ ९१ ॥

हवे ते सुकोशलमुनिनी कथा कहीयें बैयेंः—

॥ अयोध्या नगरीने विषे विजयनामा राजा थयो,तेनो पुत्र पुरंदरनामा हतो, तेणें दीक्षा ग्रहण करी अने तेनो पुत्र कीर्त्तिरथ ज्यारें दीक्षा ग्रहण करवा तैयार थयो. त्यारें तेना कारनारीयोयें कह्युं के हे स्वामी ! ज्यारें तमारें घेर पुत्रोत्पत्ति थाय, त्यारें तमें दीक्षा ग्रहण करजो. एम अत्याग्रहें करी केटला एक दीवस राख्यो, अने ज्यारें पुत्र उत्पन्न थयो, त्यारें दीक्षा ग्रहण करी. जे पुत्र उत्पन्न थयो हतो, ते पुत्रनुं नाम सुकोशल करीने हतुं, ते राज्य पालन करतो हतो, एवामां एक दिवस ते कीर्त्तिरथ राजा जे मुनि थयो बे, ते विहार करतो करतो तिहां आव्यो, तेने जोइने सु

कोशलनी मातायें जाण्युं जे मारो पुत्र पण आ मुनिने जोइने दीक्षा ग्रहण करशे! एम जाणीने ते मुनिराजने सेवको पासें बाहेर कढाव्यो. ते वात तेनो पुत्र सुकोशल राजा सांजलीने विचारवा लाग्यो जे आ सर्व संसार स्वार्थनो छे, माटें एमां कांइ सार नथी. एम जाणी वैराग्य उत्पन्न थवाथी पोताना पिता साथें दीक्षा ग्रहण करी. पछी तेनी माता मरीने व्याघ्री थइ, तेणे पोताना पुत्र सुकोशल राजर्षिने नक्षण कस्यो, तेवखतेंज सुकोशल ऋषि केवल ज्ञान पामी करी मोक्षपदने पाम्यो ॥ ९१ ॥

अब्बूयगिरिवरसिहरे, जिणजवणं विमल ठावियं विमलं ॥
विमलपिअरेहिं दसहिं, गयंदरूढेहिं कयमहिमं ॥ ९२ ॥

अर्थः—(अब्बूयगिरिवरसिहरे के०) अर्बूदनामा गिरिवरना शिखरने विषे (विमलठावियं के०) विमल स्थापितं एटले विमलमंत्रियें करावेलुं एवुं (जिणजवणं के०) जिनजवन छे, ते केहवुं छे? तोके (विमल के०) निर्मल एटले उज्ज्वल कांतियुक्त छे, वली कहेवुं छे? तो के (गयंदरूढेहिं के०) गजेंद्ररूढैः एटले गजेंद्रनी उपर बेठेला (दसहिं के०) दश (विमलपिअरेहिं के०) एक विमलमंत्री विना विमलना पियरो एटले पूर्वज पुरुषोयें (कयमहिमं के०) कस्यो छे, महिमा जेनो एवुं अर्थात् त्यां प्रासादनी आगल अश्व उपर बेठेलो विमलमंत्री अने हाथी उपर बेठेला एवा पोताना दश पूर्वजो,तेणें परिवृत एवो छतो प्रजुने सेवन करे छे. आ प्रमाणें सूत्राधारें लिखित एवी सर्वे जणनी प्रतिमाउ उल्लिखित देखाय छे ॥ ९२ ॥

अइरम्ममइविसालं, महिढ्ढियं सुरकयं व पडिहाई ॥
वर जिणजवणं बीयं, तछ सिरि वछुपाल कयं ॥९३॥

अर्थः— (तछ के०) तेज आबु उपर त्यां (सिरिवछुपालकयं के०) श्री वस्तुपालें करेलुं एवुं (बीयं के०) बीजुं (वरजिणजवणं के०) उत्तम जिनजवनने (सुरकयंव के०) सुरकृतमिव एटले देवताउयें जाणे करेलुं होय नहीं? एम (पडिहाई के०) प्रतिजाति एटले शोजे छे. ते केवुं जिनजवन छे? तोके (अइरम्मं के०) अतिरम्यं एटले अत्यंत मनोहर तथा (अइविसालं के०) अत्यंत विशाल महोटुं एवुं अने (महढ्ढियं के०) महर्द्धिकं एटले महोटी सुवर्णकलशरूप ऋद्धियें युक्त एवुं छे ॥ ९३ ॥

हवे श्रीविमल प्रधाने करावेला तथा श्रीवस्तुपालें करावेला एवा बेहु प्रासादनुं साथेंज वर्णन करे छे.

धोय कलधोय निम्मिय, पयंम धयदंम मंमियं नजयं॥
वरसायकुंनगयदंन, कुंनसोनंत थूनग्गं ॥ ए४ ॥

अर्थः— धोयकलधोय के०) धौतकलधौत एटले गालेलुं, शोधेलुं एवुं जे सुवर्ण तेणें करी (निम्मियपयंमधयदंममंमियं के०) निर्मितप्रचंमध्वजदंममंमितं एटले निर्माण करेलो एवो प्रचंम जे ध्वजदंम तेणें करी सुशोनित तथा (वरसायकुंनगयदंनकुंनसोनंतथूनग्गं के०) वरशातकुंनगतदंनकुंनशोनमानस्तूपाग्रं एटले वरशातकुंन जे सुवर्ण तेना गतदंनते जे दंनरहित कुंन जे कलश तेणें करी सश्रीक छे स्तूपाग्र जेनां एवा (नजयं के०) बे चैत्यो छे ॥ ए४ ॥

पढम जिणनवण जलनिहि, गप्ने चिंतामणिं थुणे उसनं ॥
अवर वरनवणसुरगिरि, तडि अमरतरुव नेमि जिणं ॥ए५॥

अर्थः—पूर्वोक्त जे बे चैत्य तेमां (पढमजिणनवणजलनिहिगप्ने के०) प्रथम जिननवनरूप जलनिधिना गर्नने विषे (चिंतामणि के०) चिंतामणिसमान एवा (उसनं के०) रूषनं एटले श्रीरुषनदेवने (थुणे के०) स्तौमि एटले हुं स्तुति करुं बुं. (अवरवरनवणसुरगिरितडि के०) बीजा मनोहर छे नवन जेमां एवा सुरगिरितटने विषे (अमरतरुव के०) अमरतरुमिव एटले कल्पवृक्षज जाणीयें होय नहिं ? एवा (नेमिजिणं के०) श्रीनेमिजिनने हुं स्तवुं बुं. अर्थात् जलनिधि एटले समुद्रमां जेम चिंतामणि दीपे छे, तेम प्रथमप्रासादनें विषे श्रीरुषनदेवजी शोने छे. तथा जेम सुरगिरि जे मेरुपर्वत तेने विषे कल्पवृक्ष शोने छे, तेम बीजा प्रासादने विषे श्रीनेमीश्वर नगवान् शोने छे ॥ ए५ ॥

नयणजुगं व सुतारं, सिरिघर जुयलं व रयणपडिपुन्नं ॥
रेहइ जिणनवणजुगं, अब्बुयगिरिवरनरिंदस्स ॥ ए६ ॥

अर्थः—(अब्बुयगिरिवरनरिंदस्स के०) अर्बुदगिरिवरनरेंद्रस्य एटले अर्बुदगिरिरूप राजा तेना (सुतारं के०) रूडी छे कीकीयो जेमां एवा (नयणयुगं व के०) नयनयुगमिव एटले जाणे बे नयनोज होय नहि? एवां

(जिणजवणडुगं के०) जिनजवनद्विकं एटले बे जिनजवन (रेहइ के०) राजति एटले शोजे छे. तथा (रयणपडिपुन्नं के०) रत्नपरिपूर्णं एटले रत्नोयें करी परिपूर्ण एवुं (सिरिघरजुयलंव के०) श्रीगृहयुगल मिव एटले सुशोजित एवा राजाना बे जंमारज जाणीयें होय नहिं ? एम शोजे छे. अर्थात् अर्बुदगिरिरूपराजानां जाणीयें मनोहर बे नेत्रज होय नहिं? एम जिनजवनयुग्म शोजे छे. तथा वली जाणीयें ए राजाना रत्ने जरेला एवा लक्ष्मीना बे जंमारज होय नहि? एम ते बे जिनजवन शोजे छे. ए उत्प्रेक्षा कवियें करी, एटले ए अर्बुदगिरिमां बे जिनजुवन छे, एम कह्युं ॥ ए६ ॥

अब्बुअगिरिवर मूले, मुंमथले नंदिरुक्क अहनागे ॥
छउमछकालि वीरो, अचलसरीरो ठिउ पडिमं ॥ ए७॥

अर्थः-(अब्बुअगिरिवरमूले के०) अर्बुदनामा गिरिवरना मूल तलाटीने विषे अने (मुंमथले के०) मुंमस्थलग्रामनेविषे (नंदिरुक्कअहनागे के०) नंदिवृक्षना अधोजागने विषे (अचलसरीरो के०) निश्चल छे शरीर जेनुं एवा (वीरो के०) वीरजगवान् (छउमछकालि के०) छद्मस्थकाले एटले केवलज्ञानना लाजनी पूर्वे (पडिमं के०) प्रतिमां एटले काउस्सग्ग प्रत्यें (ठिउ के०) स्थितः एटले रह्या छे, एटले त्यां कायोत्सर्ग करता हवा ॥ ए७ ॥

तो पुन्नराय नामा, कोइ महप्पा जिणस्स जत्तीए ॥
कारइ पडिमं वरिसे, सगतीसे वीरजम्माउ ॥ ए८ ॥

अर्थः-(वीरजम्माउ के०) श्रीवीरजगवानना जन्मथकी (सगतीसे के०) साडत्रीशमे (वरिसे के०) वर्षे काउसग्गें रह्या (तो के०) ते कारण माटें त्यां (कोइ के०) कोइ (पुन्नरायनामा के०) पुण्यराजनामा (महप्पा के०) महात्मा (जिणस्स के०) श्रीजिननी (जत्तीए के०) जक्तियें करी (पडिमं के०) प्रतिमाने (कारइ के०) करावतो हवो ॥ए८॥

किंचूणा अठारस, वाससयाएय पवरतिछस्स ॥
तो मिछघणसमीरं,थुणेमि मुंमछले वीरं ॥ एए ॥

अर्थः- जे जगवानना (पवरतिछस्स के०) उत्तमतीर्थने प्रवर्त्ततां आज (किंचूणा के०) किंचिदूना एटले कांहिंक ऊणा (अठारस वासस

याएय के०) अष्टादश वर्षशतानि एटले अढारसो वर्ष थयां, (तो के०) ते (वीरं के०) वीरजगवानने (मुंमत्थले के०) मुंमस्थलग्रामने विषे (थुणेमि के०) हुं स्तुति करुं बुं, ते केहेवा ढे तोके (मिढघणसमीरं के०) मिथ्यात्वरूप जे मेघ तेने टाळवामां समीरं एटले वायुसमान ढे ॥ ए९ ॥

महइ महालय अइसय, निम्मल अछेरजूय वरमुत्ती ॥
अजिय जिणो तारणगिरि,कुमारनिव ठाविउ जयउ॥१००॥

अर्थः-(महइ के०) महति एटले मोहोटा (तारणगिरि के०) तारणगिरिने विषे (कुमारनिवठाविउ के०) कुमारनृपस्थापितः एटले कुमारपाळ राजायें स्थापन करेला एवा (अजियजिणो के०) अजितजिन (जयउ के०) जय पामो. ते अजितजिन केहवा ढे ? तो के (महालय के०) महिमा जे तेना (अइसय के०) अतिशयोयें करी (निम्मलअछेरजूयवरमुत्ती के०) निर्मळ एवां आश्चर्य तेणें करी विचित्र ढे मूर्त्ति जेनी एवा ढे ॥ १००॥

वायडनयरे मुणिसु,व्वयस्स जीवंतसामि पडिममहं ॥
वंदे तह वीरजिणं, सत्तरस वछर सया जस्स ॥१०१॥

अर्थः-(अहं के०) हुं (वायडनयरे के०) वायडनगरने विषे (मुणिसुव्वयस्स के०) मुनिसुव्रतस्वामिनी (जीवंतसामिपडिमं के०) जीवंतां ढतां स्थापन करेली एवी स्वामिनी प्रतिमाने (वंदे के०) वंदन करुं बुं. (तह के०) तथा (वीरजिणं के०) तेजवायडनगरने विषे वीरजिनने हुं वंदन करुं बुं. ते जिन कहेवा ढे? तो के (जस्स के०) जेने स्थापन कर्यांने (सतरसवछरसया के०) सत्तरशो वर्ष थयां ढे ॥१०१॥

तह सिरिमाला रासण, बंजाणाणंद सिद्धिपुरपमुहे ॥
कासहह अज्ञाहर, पुरेसु चिरचेइए थुणिमो ॥१०२॥

अर्थः- (तह के०) तथा पहेलो (सिरिमाला के०) श्रीजिन्नमाळ, बीजुं (आरासण के०) आरासणपुर, त्रीजुं (बंजाण के०) ब्रह्माणपुर, चोथुं (आणंद के०) आनंदपुर, पांचमा (सिद्धिपुरपमुहे के०) सिद्धपुरप्रमुख स्थानोने विषे तथा (कासहह के०) काशहह अने (अज्ञाहरपुरेसु के०)

अज्जाहरपुरने विषे एटला स्थानकें (चिरचेइए के०) चिरचैत्यानि एटले घणा कालना पुराणां चैत्योने (थुणिमो के०) अमें स्तुति करीयें बैयें ॥ १०२ ॥

गुज्जर मालव कुंकुण, मरहठ सोरठ कच्छ पंचाले ॥ मरु
संभरि महुराउरि, हत्थिणपुर सोरियपुराइ ॥ १०३ ॥

अर्थः— (गुज्जर के०) गुर्जरदेश (मालव के०) मालवदेश, (कुंकुण के०) कोंकणदेश, (मरहठ के०) माहाराष्ट्रदेश, (सोरठ के०) सौराष्ट्रदेश, (कच्छ के०) कच्छदेश, (पंचाले के०) पांचालदेश तेने विषे तथा (मरु के०) मरुदेश, (संभरि के०) शाकंभरी नगरी अने (महुराउरि के०) मथुरापुरि (हत्थिणपुर के०) हस्तिनापुर, (सोरियपुराइ के०) सोरियपुरादिने विषे १०३

तिहुअण किरिगोवगिरी, कासि अवंती मेवाडमाईसु ॥
देसेसु जिणे थुणिमो, दिठ अदिठे सुए असुए ॥ १०४ ॥

अर्थः— तथा (तिहुअणगिरिगोवरगिरी के०) त्रिभुवनगिरिगोवगिरी एटले त्रिभुवनगिरिदुर्ग अने गोवगिरिदुर्गजेग्वालेर तेने विषे अने (कासि के०) काशी तथा (अवंती के०) अवंती नगरी अने (मेवाडमाईसु के०) मेवाडादिषु एटले मेदपाटादि एवा (देसेसु के०) देशोने विषे (दिठअदिठे के०) दृष्टाऽदृष्टान् एटले दीठेला अने नहिं दीठेला तथा (सुए असुए के०) सांभलेला अने नही सांभलेला एवा (जिणे के०) जिनोनें (थुणिमो के०) अमो स्तवियें बैयें ॥ १०४ ॥

तह जंबुदीव धायइ, पुक्खरदीवड्ढ विजयसतरिसए ॥
जे केई गामागर, नग नगराइय तहियं तु ॥ १०५ ॥

अर्थः— (तह के०) तथा (जंबुदीव के०) जंबूद्वीपने विषे (धायइ के०) धातकीखंमने विषे (पुक्खरदीवड्ढ के०) पुष्करवरद्वीपार्द्धनें विषे एमां सर्व मली (विजयसतरिसए के०) एकशोने सित्तेर विजय बे तेने विषे (जेकेई के०) ये केचित् एटले जे कोइ (गाम के०) ग्राम, (आगर के०) आकर एटले वेलाकूलादिक, (नग के०) पर्वतो, तथा (नगराइय के०) नगरादिक एटले पुरादिक, आदि शब्दें करी अन्यसंनिवेशो पण ग्रहण कख्या. (तहियं के०) ते स्थलोने विषे रहेली प्रतिमाउने तु शब्द पादपूर्णार्थे बे ॥१०५॥

जाणि गिहचेइयाणि य, जाणि य जिणभवण तेसु जा पडिमा ॥
गुरुआ जा पण धणुसय, लहुआ अंगुठ पव्वसमा ॥ १०६ ॥

अर्थः—(जाणि के०) यानि एटले जे (गिहचेइयाणि के०) गृहचैत्यानि एटले गृहदेवालय (य के०) च एटले वली (जाणि के०) यानि एटले जेटलां (जिणभवण के०) जिनभवनो, (तेसु के०) तेने विषे (जा के०) जे (पणधणुसय के०) पांचशें धनुष प्रमाण (गुरुआ के०) मोहोटी अने (जा के०) जे (अंगुठपव्वसमा के०) अंगुष्ठना पर्व जे वडी (लहुआ के०) नाहानी एवी (पडिमा के०) प्रतिमाउ तेनें ॥१०६॥

सुरनरकय मणिकंचण, रीरी रुप्पाइ जाव लिप्पमया ॥
छउमछेही अमुणिय, संखाउ नमामि ता सव्वा ॥ १०७ ॥

अर्थः—(सुरनरकय के०) सुरनरकृत एटले देवताउयें तथा मनुष्योयें करेली एवी (मणिकंचणरीरीरुप्पाइ के०) मणिकंचनरीरीरूप्पादि एटले मणिरत्न, कांचन, रीरी जे पितल, रूपुं इत्यादिकनी आदि पदथकी (जाव के०) यावत् काष्ठ पाषाणादिनी तथा (लिप्पमया के०) लेप्पमय एवी तथा (छउम छेही के०) छद्मस्थैः एटले आपण समानपुरुषोयें (अमुणियसंखा के०) अविज्ञात संख्याः एटले नही जाणेली छे संख्या जेमनी एवी (जा के०) जेछे, (ता के०) ते (सव्वा के०) सर्व प्रतिमाउने (नमामि के०) हुं नमन करुं छुं ॥१०७॥

जे ईया तित्थयरा, जे य भविस्सा अणागए काले ॥
जे आवि वट्टमाणा, ते सव्वे भावउ नमिमो ॥ १०८ ॥

अर्थः—(जे के०) जे (अईया के०) अतीताः एटले अतीतकालने विषे थया एवा (तित्थयरा के०) तीर्थंकर (य के०) वली (अणागए काले के०) अनागते काले एटले भविष्यकालने विषे (जे के०) जे (भविस्साः के०) थाशे अने (जेआवि के०) येचापि एटले जे पण (वट्टमाणा के०) वर्त्तमानाः एटले वर्त्तमानकालमां वरतता एवा जे तीर्थंकर (ते सव्वे के०) ते सर्वेने (भावउ के०) भावथकी (नमिमो के०) नमीयें छेयें ॥१०८॥

सुरकयमणुयकयं वा, भुवणतिगे सासयं च जं तित्थं ॥ तं सयलमिहठिउविहु, मणवयणतणूहिं पणमामि ॥१०९॥

अर्थः–(भुवणतिगे के०) त्रण भुवनने विषे (सुरकय के०) सुरकृत एटले देवताउयें करेलुं (वा के०) अथवा (मणुयकयं के०) मनुष्यनुं करेलुं एवुं तीर्थ (च के०) वली (जं के०) जे (सासयं के०) शाश्वत एवुं (तिबं के०) तीर्थ छे, (तंसयलं के०) ते सकल तीर्थने (मणवयण तणूहिं के०) मन, वचन अने कायायेंकरी (इहछिउविठु के०) इहस्थितोपि तु एटले आहिंज रह्यो एवो पण हुं (पणमामि के०) प्रणाम करुं छुं ॥१०९॥

जब जिणाणं जम्मो, दिरका नाणं निसीहिया आसी ॥
जायं च समोसरणं, ताउ नूमिउ वंदामि ॥ ११० ॥

अर्थः–(जब के०) जे नूमिने विषे (जिणाणं के०) सर्व जिनोनो (जम्मो के०) जन्म, थयो होय, (दिरका के०) दीक्षा, लीधी होय, (नाणं के०) केवलज्ञान उपनुं होय, (निसीहिआ के०) निषेधिका एटले निर्वाण, ए सर्व (आसी के०) आसीत् एटले थयुं होय, (च के०) तथा (जाइ के०) ज्यां श्रीजिनोनुं (समोसरणं के०) समवसरण थयुं, (ताउ नूमीउ के०) ते सर्व नूमिउने हुं (वंदामि के०) वंदन करुं छुं ॥ ११० ॥

एवमसासय सासय,पडिमा थुणिया जिणिंद चंदाणं ॥ सिरिमं महिंदनवणिं, द चंदमुणिवंद थुअ महिया॥१११॥ इति श्रीअचलगछेश्वर श्रीमन्महेंद्रसूरिविरचित तीर्थमालास्तवनं संपूर्णम्॥

अर्थः–(एवं के०) ए प्रकारें (जिणिंदचंदाणं के०) जिनेंद्रचंद्रनी (सासय के०) शाश्वत अने (असासय के०) अशाश्वत एटले कत्रिम एवी (पडिमा के०) प्रतिमाउ ते में (थुणिया के०) स्तवीयो. ते प्रतिमाउ कहेवी छे? तो के (सिरिमंमहिंदनवणिंद के०) श्रीमन्हेंद्रनवनेंद्र एटले सुशोनित एवा महेंद्र जे वैमानिक अने नवनेंद्र ते पातालवासी देवो तथा देवेंद्रो तेणें तथा (चंद मुणिवंदथुअमहिआ के०) चंद्र अने मुनिवृंद तेणे स्तव्यो छे महिमा जेनो एवी छे ॥ आहिं कवियें वली पोतानुं महेंद्रसिंहसूरि एवुं नाम पण आ गाथामां सूचन कर्युं छे ॥११॥ इति श्रीअचलगछेश्वरश्रीमन्महेंद्रसूरिविरचित तीर्थमालास्तवनतस्य बालावबोधः समाप्तः ॥

ए तीर्थमालानी "सत्तरसयबहरसया जस्स" ए पद बोलतां सुधी गाथा एकोशोने उपर एक थाय, तिहां सुधी तो हेठ बेठा थकांज कहीयें अने ते पछी उना थइने "तहसिरिमालारासण" इहांथी मांमिने ज्यां सुधी पूर्ण थाय त्यां सुधीनी दश गाथाउ कहेवी. ते कही रह्या पछी फरी पण उना थकांज 'उवसग्गहर स्तव' कहेवो. ते कही रह्या पछी हेठां बेशीने नमुछणंनो पाठ कहेवो. ते कह्या पछी वली उना थइने इछाकारेण संदिस्सह जगवन् पाक्षिक प्रतिक्रमण संबंधि बार लोगस्सना काउसग्ग करवा निमित्तें तस्सुत्तरीनो पाठ कही अन्नछउससिएणं कहीने बार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, ते करीने छेहलुं नमो अरिहंताणं ए एक पद कही काउस्सग्ग पारीने प्रगट लोगस्स कहेवो. ते कह्या पछी खमासमण पूर्वक हेठा बेशीने इछाकारेण संदिस्सह जगवन् गुरुवंदना करुंजी? एम कही गुरुवंदननो पाठ कहीयें, ते कही रह्या पछी एक नवकार कहीने पछी महोटी बे सद्यायो कहीयें, ते नीचें लखीयें छैयें.

॥ अथ श्रीनंदीसूत्रनी प्रथम सद्याय प्रारंजः ॥

जयइ जगजीव जोणी, वियाणउ जगगुरू जगाणंदो ॥
जगनाहो जगबंधू, जयइ जगप्पियामहो जयवं ॥ १ ॥

अर्थः—षड्गुणैश्वर्यवान् अने अवश्य प्रणाम करवा योग्य एवा (जयवं के०) जगवान् ते (जयइ के०) जयवंता वर्त्ते छे अर्थात् तेने हुं प्रणाम करुं छुं. ते जगवान कहेवा छे? तो के (जगजीवजोणीवियाणउ के०) जगजीवयोनिविज्ञापकः तिहां धर्माधर्मास्तिकायरूप चराचर एवुं जे जगत तेने तथा शरीरादि प्राण धारण करनारा प्राणी ते जीव कहीयें तेने तथा योनि ते सचित्तयोनि अचित्त योनि जे जीवनां उत्पत्तिनां स्थानक एटले कारण तेने विज्ञापकः एटले विविध प्रकारें उत्पाद व्ययादि अनंतधर्मात्मकतायें करी केवलज्ञानने बलें जाणे छे. ए प्रमाणें जगवाननुं केवलज्ञान प्रतिपादन कस्था पछी प्रजुनी स्वाजाविक संपदा कहे छे. ते जगवान् केहवा छे? तो के यथावस्थित पणे जगत्नां स्वरूप,शिष्योने प्रतिपादन करी आपे छे. तेमाटें (जगगुरू के०) जगतना गुरु छे तथा वली जगत शब्दें करी पंचेंद्रिय जीव लेवा. ते पंचेंद्रिय जीवोने दर्शन मात्रें करी आनंदना देनारा

छे माटें (जगाणंदो के०) जगतने आनंदना देवा वाळा छे तथा वळी जगत शब्दें करी चराचर जीव जाणवा, ते जीवोने आ सत्य छे,आ असत्य छे, एवी रीतें यथावस्थित स्वरूप कथनरूप प्ररूपणायें करी नाथ पणाने प्राप्त थया माटें (जगनाहो के०) जगतना नाथ कहेवाय. तथा वळी जगत् शब्दें करी सर्व प्राणिमात्र जाणवा ते, प्राणिनी हिंसा न करवी एवो उपदेश करे छे तेणें करीने (जगबंधू के०) जगत्ना बंधु एटले भाइ समान जाणवा. तथा वळी सर्व प्राणी मात्रने नरकादिक कुगतिने विषे पडवाना भयथकी रक्षण करे छे ते माटें (जगप्पियामहो के०) जगत्ना पितामह छे एवा भगवान् ते (जयइ के०) जयति एटले जयवंता वर्त्तो. आ गाथामां जयइ ए क्रियापद बे वार आवे छे, ते स्तुतिने अर्थें छे माटें तेमां पुनरुक्ति दोष जाणवो नही ॥ १ ॥

हवे समस्त सांसारिक पीडानो समुछेद करनार अने जेनी शक्ति हणाणी नथी एवुं जे प्रवचन तेनो प्रतिपादन करवाथी उपकारी पणाने पामेला एवा वर्त्तमान तीर्थना नायक जे श्रीवीर भगवान् तेमने नमस्कार करे छे.

जयइ सुयाणं पभवो, तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ ॥
जयइ गुरु लोगाणं, जयइ महप्पा महावीरो ॥ २ ॥

अर्थः—(सुयाणं के०) श्रुतानां एटले स्वदर्शन अने परदर्शनने अनुगत एवा सकल शास्त्रोना (पभवो के०) प्रभवः एटले उत्पत्तिनुं स्थानक एवा अर्थात् सर्व शास्त्र जेनाथकी उत्पन्न थयां छे, एवा भगवान् (जयइ के०) उत्कृष्टें वर्त्ते छे. अहिं कोइ कहेशे के परदर्शन शास्त्र पण श्रीजिन भगवानथकीज उत्पन्न थयां, ते केम संभवे ? तो त्यां कहे छे, के परदर्शन शास्त्रमां पण जे संसारनी असारता, स्वर्गापवर्गादिक कारणो, तथा प्राणीनो अहिंसारूप जे श्रेयस्कर अर्थ छे, तेतो जैनशास्त्रमांथीज उद्धार करीने लखेलो छे, माटें पूर्वोक्त दोष नथी. अहिं कोइ कहेशे के सर्व श्रुत उत्पन्न करनारा तो रुषभादि अन्य तीर्थंकरो पण छे, तो तेने मूकीने एक श्रीवीरभगवाननेज तमें हमणां केम स्तवो छो? तो तिहां कहे छे, के (तित्थयराणं के०) तीर्थंकराणां एटले संसाररूप सागरने जेणेंकरी तराय छे, तेने तीर्थ कहियें, ते तीर्थ जे प्रवचन तेने करनारा एवा जे पुरुषो तेनी मध्यें

(अपच्छिमो के०) अपश्चिमः एटले आ नरतखंमनें विषे नथी कोइ प श्चिम एटले पाछल तीर्थंकर जेथकी एवा अर्थात् सर्व तीर्थंकरोथी छेल्ला एवा नगवान् (जयइ के०) उत्कृष्टें वर्त्ते छे. वली ते नगवान् कहेवा छे ? तो के (लोगाणं के०) लोकानां एटले प्राणीउने (गुरु के०) गुरु एटले प्रवचननो उपदेश करे,ते गुरु.कहियें. अर्थात् सर्व जीवोने प्रवचनने उपदेश करनारा एवा ते नगवान् (जयइ के०) उत्कृष्टपणायें वर्त्ते छे. तथा (महप्पा के०) महात्मा एटले अचिंत्य शक्तियेंकरी युक्त छे आत्मा एटले स्वनाव जेनो एवा (महावीरो के०) महावीरः एटले विशेषेंकरी कर्मने ईरयति केतां फेडे छे, ते वीर कहियें अने महोटा एवा जे वीर, ते महावीर कहियें, ते महावीर नगवान् (जयइ के०) जयति एटले उत्कृष्टपणे वर्त्ते छे ॥ २ ॥

हवे फरी पण श्रीमहावीर नगवाननी अतिशय द्वारें करी स्तुति करे छे.

नद्दं सवजगुज्जोयगस्स, नद्दं जिणस्स वीरस्स ॥
नद्दं सुरासुर नमं, सियस्स नद्दं धूयरयस्स ॥ ३ ॥

अर्थः—लोकालोकात्मक सर्व जगत तेने केवलज्ञान अने केवलदर्शने करी प्रकाश करे छे एवा (सवजगुज्जोयगस्स के०) सर्व जगदुद्योतकस्य एटले सर्व जगतने उद्योतना करनारा एवा तथा (सुर के०) वैमानिक देवो अने (असुर के०) नवनपति देवो तेणें (नमंसियस्स कें०) नमस्कृतस्य एटले नमस्कार करेला एवा वली (धूय के०) टाल्युं छे, फेडी नाख्युं छे (रयस्स के०) रज एटले बध्यमान कर्म जेणें एवा (जिणस्स कें०) जिनस्य एटले रागादि शत्रुने जेणें जीत्या छे एवा (वीरस्स के०) श्री वीर नगवाननुं (नद्दं के०) नद्दं एटले कल्याण हो. आ गाथामां नद्दं ए पद चार वखत आवेलुं छे ते नक्तयर्थें छे, माटें तेमां पुनरुक्ति दोष नथी ॥३॥

हवे श्रीतीर्थंकर देवनी पछी तो श्रीसंघज पूज्यछे माटें श्रीसंघने नगररूपें स्तवेछे.

गुणनवणगहण सुयरयण,नरियं दंसणविसुद्धरछागा ॥
संघनयर नद्दं ते, अखंम चरित्तपागारा ॥ ४ ॥

अर्थः—(गुणनवणगहण के०) गुणनवनगहन तिहां गुण जे उत्तर गुण मूलगुणोनुं चारित्र शब्दें करी ग्रहण छे माटें गुणो जे पिंमविशुद्ध्यादिक ते रूप जे नवण एटले घरो तेणें करी गहन एटले दुःप्रविष्ठ एवुं तथा (सुयरयण

नरियं के०) श्रुतरत्ननरितं एटले श्रुत जे आचारांगादिकरूपरत्न तेणें नरित एटले पूरित एवुं तथा (दंसणविसुद्धरह्नागा के०) दर्शनविशुद्धरथ्याकं अर्हिं दर्शन ते प्रशमसंवेगनिर्वेदानुकंपास्तिक्यालिंग ते आत्मपरिणामरूप सम्यग्दर्शन ग्रहण करवुं, ते सम्यग्दर्शन क्षायिकादिक नेदें करी त्रण प्रकारनुं छे. ते जेम के क्षायिक, क्षायोपशमिक, औपशमिक, ते असारमिथ्यात्वादिकरहित एवुं जे सम्यग्दर्शन ते रूप छे रथ्या एटले शेरी जेमां एवुं तथा (अखंमचरित्तपागारा के०) अखंमचारित्रप्राकारं एटले अखंम एवुं जे चारित्र ते रूप छे, प्राकार एटलें कोट जेमां एवुं (संघनयर के०) चतुर्विध श्रीसंघरूप जे नगर तेना संबोधनने विषें. हे संघनगर ! (ते के०) तमारुं (नद्दं के०) कल्याण हो ॥ ४ ॥

वली फरीने पण संसार उच्छेदकत्वथी संघने चक्ररूपें स्तवे छे.

संजमतव तुंबारग स, नमो सम्मत्तपारियल्लस्स ॥
अप्पडिचक्कस्स जउ, होइ सया संघचक्कस्स ॥ ५ ॥

अर्थः–(संजमतवतुंबारगस के०) संयमतपस्तुंबारकस्य एटले संयम ते सत्तर प्रकारनो छे ते अने तप बार नेदें छे ए संयम अने तप तद्रूप छे तुंब एटले मध्य चक्र तथा आरक एटले आरा जेना तथा (सम्मत्त के०) सम्यक्त्व रूप छे (पारियल्लस्स के०) बाह्य नूमि जेने एवा (अप्पडिचक्कस्स के०) अप्रतिचक्रस्य ते चरकादि चक्रोयें करी असमान एटलें चरकादि चक्रोनी समान नथी एवा (संघचक्कस्स के०) श्रीसंघरूप चक्रनो (सया के०) सदा निरंतर (जउ के०) जय (होइ के०) नवति एटले थाय छे ॥ ५ ॥

हवे संघनेज मोक्षगमनपणुं छे माटे तेने रथना रूपकें करी स्तवे छे.

नद्दं सीलपडागु स्सियस्स तवनियमतुरयजुत्तस्स ॥
संघरहस्स नगवउ, सिज्झाय सुनंदिघोसस्स ॥ ६ ॥

अर्थः–(नगवउ के०) नगवतः एटलें समर्थ एवा (संघरहस्स के०) संघरूप रथ तेनुं (नद्दं के०) कल्याण हो. हवे ते संघरूप रथ कहेवो छे? तो के (सील के०) अष्टादश सहस्र शीलांग ते रूप (पडाग के०) पताकाउ तेणे (उस्सियस्स के०) उच्छ्रितस्य एटले उछलतो एवो वली

(तव के०) बार प्रकारनुं तप अने (नियम के०) सत्तर प्रकारनो संयम ए बे (तुरिय के०) अश्वो तेणे करी (जुत्तस्स के०) युक्त छे तथा वांचना, पृछना, परावर्त्तना, अनुप्रेक्षा अने धर्मकथा ए पांच प्रकारनो (सिद्धाय के०) स्वाध्याय ते रूप (सु के०) सुशोभित छे (नंदिघोसस्स के०) नंदिघोष ते बार प्रकारनो तुर्य निनाद जेनो एवो श्रीसंघरूप रथ छे ॥६॥

हवे श्रीसंघने कमलपुष्पना दृष्टांतेकरी स्तवेछे.

कम्मरयजलोहविणि,ग्गयस्स सुयरयणदीहनालस्स ॥
पंचमहव्वयथिरक न्नियस्स गुणकेसरालस्स ॥ ७ ॥

अर्थः—जेम कमलनाल छे ते पण जलौघ एटले जलना समूहथी बाहेर निकले छे, तेम आ श्रीसंघपण (कम्मरयजलोह के०) ज्ञानावरणादि अष्टप्रकारनुं कर्मरज रूप जे जलौघ तेमांथी (विणिग्गयस्स के०) विनिर्गतस्य एटले बाहेर निकलेलो छे, अर्थात् उत्पत्ति तो कर्मजलथी थयेली छे, तो पण कर्मजलथी ते संघ बाहिर निकल्यो छे. केम के? श्रीसंघ जे छे ते अल्पसंसारी छे, तेने मिथ्यात्वादिकनो अन्नाव छे. वली (सुयरयणदीहनालस्स के०) श्रुतज्ञान रूप जे रत्न तेहीज छे दीर्घ एटले लांबु एवुं नाल जेहनुं एटले जेम कमलनुं नाल पाणीथी बाहिर निकले छे तेम श्रीसंघरूप कमलनुं श्रुतरत्न रूप दीर्घनाल ते कर्मरूप जलौघथकी बाहिर निकलेलुं छे. वली (पंचमहव्वय के०) प्राणातिपातविरमणादिरूप पांच महाव्रत ते रूप (थिर के०) दृढ छे (कन्नियस्स के०) कर्णिका एटले मध्यगंभिका जेनी एवुं तथा (गुणकेसरालस्स के०) गुणरूप छे केसर एटले पराग सुगंध जेमां एवुं श्रीसंघरूप कमल पुष्प छे ॥ ७ ॥

सावगजणमहुयरि परि, वुमस्स जिणसूर तेय बुध्दस्स ॥
संघपउमस्स न्नद्दं, समणगणसहस्सपत्तस्स ॥ ८ ॥

अर्थः—वली संघरूप कमल कहेवुं छे? तो के सम्यक्त्व अने अणुव्रत जेने प्राप्त थयां छे तो पण साधुना अने आगारीना उत्तरोत्तर गुणनी प्राप्तिने मार्टे सामाचारीने यतियोनी पासेंथी जे निरंतर सांजले छे एवा (सावगजण के०) श्रावकजन ते रूप (महुयरि के०) मधुकरी जे न्रमरी तेणे

करी (परिवुमस्स के०) परिवृतस्य एटले वींटेलुं छे, तथा सकल जगत् प्रकाशतायें करीने सूर्यसमान एवा (जिणसूर के०) श्रीजिनेश्वररूप सूर्य तेनुं जे विशिष्ट ज्ञान प्रवाह धर्मदेशनारूप (तेय के०) तेज तेणें करीने थयेलो जे प्रकाश तेणें करी (बुद्धस्स के०) प्रफुल्लित थयुं छे एवुं तथा दीक्षाना दिवसथी आरंभीने जीवितपर्यंत सावद्ययोगथी विराम पामेला छतां पण अनशनादिक तपने करनारा एवा (समण के०) साधुउ तेना (गण के०) समूह ते रूप छे (सहस्सपत्तस्स के०) सहस्र पत्रो तें पांखडीयो जेमां अर्थात् हजार पाखंडी वालुं एवुं (संघपउमस्स के०) चतुर्विध श्रीसंघरूप पद्मनुं (नद्दं के०) कल्याण हो ॥ ८ ॥

हवे श्रीसंघ, समतारूप शीतलगुणें करी चंद्रमासमान छे, माटें चंद्रमानी उपमायें करी तेने स्तवे छे.

तव संयम मिय लंछण, अकिरिय राहुमुहदुद्धरिस निच्चं ॥
जय संघ चंद निम्मल, सम्मत्तविसुद्धजुण्हागा ॥ ए ॥

अर्थः– (तवसंजममियलंछण के०) तपःसंयममृगलंछन एटले बार प्रकारनुं तप अने सतर प्रकारनो संयम ते रूप छे मृगनुं लांछन जेने एवो तथा (अकिरियराहुमुहदुद्धरिस के०) अक्रियराहुमुखदुर्धर्ष्य एटले फरीने पाछुं अवतरवुंज नथी तेम जाणीने परलोकमां जवानी क्रियाउ जेने नथी ते अक्रिय कहियें,एवा अक्रियावादी जे नास्तिक जनो तेहीज जिनप्रवचनरूप चंद्रमाने ग्रसवा तत्पर होय छे, माटे ते अक्रियावादीपुरुषोरूप जें राहुमुख तेणें दुर्धर्ष्य एटले पराभव करी शकाय नही एवो, तथा(निम्मल के०) निर्मल ते मिथ्यात्वरहित एवुं जे (सम्मत्त के०) सम्यक्त्व ज्ञान ते रूप (विसुद्ध के०) विशेषें करी शुद्ध छे (जुण्हागा के०) ज्योत्स्नाकः एटले कांति जेनी एवो (संघचंद के०) श्रीसंघरूप चंद्रमा ते (निच्चं के०) नित्यं एटले निरंतर (जय के०) जयवंतो वर्त्तो.

आहीं श्रीसंघने निरंतर जय पामो एम जे कह्युं ते, सर्व परदर्शन रूप नक्षत्रो थकी अतिशयवान् एवो श्रीसंघरूप चंद्र थाउ. यद्यपि संघरूप चंद्र सदैव जयवंतो वर्त्तेज छे, तथापि आहीं कविनी, कुशल एवा मनो वचन कायानी प्रवृत्ति छे. अर्थात् कविने एम कहेवुं घटे छे ॥ ए ॥

वली पण संघनी प्रकाशकतायें करी संघने सूर्यनी उपमा आपे छे.

परतिछिय गहपहना, सगस्स तव तेयदित्तलेसस्स ॥
नाणुज्जोयस्स जए, नद्दं दमसंघसूरस्स ॥ १० ॥

अर्थः—(परतिछियगहपहनासगस्स के०) परतीर्थिकग्रहप्रनानाशकस्य एटले परतीर्थिक जे कपिल, कणाद,अक्षपाद, बौद्धादिक तेनुं जे मत तेने अवलंबन करनारा जे पुरुष तद्रूप जे ग्रह तेनी अन्युपगम अने उपनय स्फूर्त्तिरूप जे प्रजा तेने अनंतनयें करी युक्त एवा प्रवचनथी उत्पन्न थयो जे ज्ञानविशिष्ट स्वजाव तेना प्रजाविताने करीने नाश करे छे. एवो, तथा (तवतेयदित्तलेसस्स के०) तपस्तेजोदीप्तलेश्यस्य एटले तपने तेजें करी दीप्त छे एटले उज्ज्वल छे लेश्या एटले प्रकाशता जेनी एवो अने (नाणुज्जोयस्स के०) ज्ञानोद्योतस्य एटले ज्ञान तेहिज छे उद्योत एटले वस्तुनो प्रकाश करनार जेनेविषे एवा (दमसंघसूरस्स के०) दमसंघसूर्यस्य एटले दम जे उपशम ते छे प्रधान जेने एवो जे संघ ते रूप सूर्यनुं (जए के०) जगति एटले जगतने विषे (नद्दं के०) नद्र एटले कल्याण हो ॥ १० ॥

हवे श्रीसंघने अक्षोन्यता छे, माटें समुद्रनी उपमा आपी स्तवे छे.

नद्दं धिइवेलापरि, गयस्स सज्झाय जोगमगरस्स ॥
अस्कोहस्स नगवर्ज, संघसमुद्दस्स रुंदस्स ॥ ११ ॥

अर्थः—(धिइवेलापरिगयस्स के०) धृतिवेलापरिगतस्य तिहां धृति एटले ते मूलोत्तरगुण विषय एवो प्रतिदिवस उत्साहमान जे आत्मपरिणाम विशेष तेरूप वेला जे जलवृद्धि तेणें करी परिगत एटले व्याप्त थयो एवो तथा (सज्झायजोगमगरस्स के०) स्वाध्याययोगमकरस्य एटले स्वाध्याय योग जे छे ते कर्मविदारण करवानी शक्तियें करी योग एटले युक्त छे,तेथी तेज मगरमत्स्यसमान जेमां छे एवो. तथा (अस्कोहस्स के०) अक्षोन्यस्य एटले परिषहें करी तथा उपसर्गे करी पण निष्प्रकंपित छे तेथी अक्षोन्य कहीयें एवा तथा (नगवर्ज के०) नगवतो एटले समग्रैश्वर्यसंपन्न एवा तथा (रुंदस्स के०) रुंदस्य एटले विस्तीर्ण एवा (संघसमुद्दस्स के०) संघसमुद्रस्य एटले संघरूप समुद्रनुं (नद्दं के०) नद्र एटले कल्याण हो ॥ ११ ॥

वली पण श्रीसंघनुं मेरुनी पेठें सदा निश्चलपणुं छे माटें श्रीसंघने मेरुनी उपमा आपी स्तवे छे.

सम्मद्दंसणवरवइर, दढरूढगाढावगाढपीढस्स ॥
धम्मवररयणमंडिय, चामीयरमेहलागस्स ॥ १२ ॥

अर्थः—हवे अहिंथी आठ गाथानो सार्थेज संबंध छे. (सम्मद्दंसणवरवइर के०) समग्दर्शनवरवज्र एटले सम्यक्ते अविपरीत जे तत्त्वश्रद्धान रूप दर्शन तेज मोक्षप्राप्तिनुं मुख्य साधन होवाथी वज्रसमान जाणवुं. एवुं जे सम्यक्त्वदर्शन तेज छे (दढरूढगाढावगाढपीढस्स के०) दढरूढगाढावगाढपीठस्य एटले दृढ ते निःप्रकंप अने रूढ एटले घणा कालथी गाढ एटले निमग्न एवी छे पीठ एटले प्रथम भूमिका जेमां एवो, अहिं मंदराचल जे मेरु ते पक्षें वज्रमय दृढनिःप्रकंप वगेरे विशेषण पर्वतनी भूमिकानां जाणवां. अने संघपर्वतपक्षमां सम्यक्त्वदर्शनमय वज्र पीठ जाणवुं. ते वज्रमयपीठ केहेवुं छे? तो के दृढ एटले शंकादिछिद्र रहिततायें करी परतीर्थिकना वासनाजलना प्रवेशनो अभाव छे एवुं छे. तथा रूढ एटलें प्रतिसमय मनोहर अध्यवसायने विषे घणा कालपर्यंत वर्त्तमानपणुं छे एवुं तथा गाढ ते तीव्रतत्त्वविषयात्मकता छे एवुं, तथा अवगाढ ते जीवादिक पदार्थोने विषे सम्यक् बोधरूपें करी प्रविष्ट थयेलुं एवुं जे सम्यक्दर्शन ते संघरूप मेरुनी बहिर्भूमिका छे. वली (धम्मवररयणमंडियचामीयरमेहलागस्स के०) धर्मवररत्नमंडितचामीकरमेखलाकस्य एटलें दुर्गतिमां पडता आत्माने धारी राखे, पडवा न दीये, ते धर्म ते रूप छे सुशोभित रत्नमंडित एवी चामीकर जे सुवर्णमेखला जेने एवो अहिं धर्म बे प्रकारनो छे, एक मूलगुणरूप अने बीजो उत्तरगुणरूप, तेमां उत्तरगुणरूप रत्न जाणवां अने मूलगुणरूप मेखला जाणवी. ए धर्मात्मक सुवर्णमेखला जे छे, ते उत्तर गुणरूप श्रेष्ठ रत्नरूप विभूषण विना शोभती नथी ॥ १२ ॥

नियमूसिय कणय सिला यलु, ज्जल जलंत चित्तकूडस्स ॥
नंदणवण मणहर, सुरभि सीलगंधुद्धुमायस्स ॥ १३ ॥

अर्थः— इंद्रियदमन रूप जे (नियम के०) नियम ते रूप छे (कणय

सिलायल के०) कनक एटले सुवर्ण तेनुं शिलातल जेने विषे तथा अशुद्ध अध्यवसायना परित्यागथी (ऊसिय के०) उच्छ्रित एटले उंचा अने प्रतिस मय कर्मनो नाश करवाथी (उज्जल के०) उज्ज्वल तथा उत्तरोत्तर सूत्रार्थना स्मरणथी (जलंत के०) ज्वलत् एटले तेजस्वी एवां (चित्त के०) चित्रविचित्र छे (कूमस्स के०) कूट एटले शिखर जेमां एवो श्रीसंघ रूप मेरुपर्वत छे. इहां मे रुगिरिपक्षें कूटोनुं उंचापणुं तथा उज्ज्वलपणुं अने तेजस्वीपणुं प्रसिद्धज छे.

तथा सुर असुर विद्याधर जेमां आनंद पामे छे एवो संतोष तेज (नंद णवण के०) नंदनवन जाणवुं. ते नंदनवन अमर्षौषध्यादि लब्धिरूप विविध प्रकारनी लताना विस्तारमां अनेक प्रकारना फल,फूल प्रवालें करी (मण हर के०) मनोहर छे तेनो (सुरभि के०) सुगंधवालो जे (सील के०) शील ते रूप (गंध के०) गंध तेणें करीने (उद्धुमायस्स के०) परिपूर्ण एवो. मंदिरगिरि पक्षें तो पूर्वोक्त सर्व विशेषणनी युक्तता प्रसिद्धज छे ॥१३॥

जीवदया सुंदर कंदरु, द्दरिय मुणिवर मइंदइन्नस्स ॥ हे
उसय धाउ पगलंत, रयणदित्तोसहिगुहस्स ॥ १४ ॥

अर्थः—स्वपर निवृत्तिना कारण माटें (जीवदया के०) जीवदया जे छे तेज (सुंदर के०)मनोहर (कंदर के०) गुफाउ छे, एटले पर्वतने विषे आ वासस्थान छे.जगत्मां पण प्रसिद्ध छे. तिहां तपस्वी जीव जे अहिंसाने विषे प्रवर्त्ते छे. ते कंदराउने विषे (उद्दरिय के०) उद्दर्पित तिहां उत् एटले अ धिक प्राबल्यें करी कर्म शत्रुना जय प्रत्यें दर्प्पित एटले अभिमान पामेला एवा जे (मुणिवर के०) मुनिवर ते शाक्यादिक पाखंमीउनो पराजय क रवाथी (मइंद के०) मृगेंद्र एटले सिंहसमान छे तेवा मुणिउयें (इन्नस्स के०) आकीर्ण एटले व्याप्त एवो तथा अन्वयव्यतिरेकलक्षण एवा जे (हेउसय के०) हेतुशत एटले शेंकडा गमे हेतु जे कारण ते कुयुक्तिना नाशक छे माटें ते रूप जे प्रकाश तेणे युक्त (धाउ के०) रजत प्रमुख धातु ते थकी (पगलंत के०) प्रगलत् एटले गलतां एवां क्षायोपशमिक भावरूप (रयण के०) रत्न अने प्रदीप्त ते जाज्वल्यमान एवी आमर्षौषध्यादि लब्धि ते रूप जे (दित्तोसहि के०) दीप्तौषधि ते छे (गुहस्स के०) गुहाने विषे जेना एवो संघरूप मेरुपर्वत जाणवो. ए सर्व संघरूप मेरुगिरिनी स्पष्ट

ता थइ,अने मेरुगिरि पक्षें मेरुनी गुफाउने विषे खरता चंद्रकांतादिक रत्नो छे, तथा कनकादि धातु प्रदीप्त होय छे,तथा अनेक औषधि पण होय छे ॥१४॥

संवरवरजलपगलिय, उज्झरपविरायमाणहारस्स ॥
सावगजणपउररवंत, मोरनच्चंतकुहरस्स ॥ १५ ॥

अर्थः– (संवर के०) संवर ते जे प्राणातिपातादिक रूप पांच आश्रव नुं पच्चरकाण तेज कर्ममलना धोवा पणाथी तथा सांसारिक दुःखरूप तृषानो नाश करवाथकी परिणामें (वरजल के०) श्रेष्ठजल तेनो (पगलिय के०) प्रगलित एटले निरंतर चालतो एवो जे (उज्झर के०) प्रवाह तेज छे (पविरायमाण के०) प्रविराजमान एटले प्रकर्षें करी अधिक शोजतो एवो (हारस्स के०) मुक्ताहार जेनो एवा तथा (सावगजण के०) श्रावकजन जे छे तेहिज थुइ, स्तवन, सज्झाय इत्यादिकनो घोष करे छे माटे ते श्रावकजनज (पउररवंत के०) प्रचुर रुवत् एटले प्रचुर ते महोटा रव एटले घोष जे शब्द तेना करनारा एवा (मोर के०) मोरपक्षी समान जाणवा. तेणें करी जाणे (नच्चंतकुहरस्स के०) नाचतीज जाणियें होय एवी छे जिनमंडप रूप गुफाउ जेमां एवो ॥१५॥

विणयणयपवरमुणिवर, फुरंतविज्जुज्जलंतसिहरस्स ॥
विविहगुणकप्परुरकग, फलजरकुसुमाउलवणस्स ॥ १६ ॥

अर्थः–(विणयणय के०) विनयें करी नत एटले नम्र एवा जे (पवर के०) श्रेष्ट (मुणिवर के०) मुनियो ते रूपज (फुरंत के०) स्फुरत् एटले प्रकाशमान एवी (विज्जुज्जलंत के०) विद्युत् एटले वीजलीना झबूकायें करी ज्वलत् एटले प्रकाशित छे (सिहरस्स के०) शिखर जेनां एवो. आ ठेकाणें शिखर स्थानीय प्रवचनना प्ररूपक एवा आचार्यादिक जाणवा. ते आचार्यो विद्युत्रूप जे विनयादिक तप तेणें करी प्रकाशित छे, एम जाणवुं. तथा (विविहगुण के०) विविध गुण एटले अनेक प्रकारना छे गुण जेमना एवा जे साधुउ तेज, सत्कुलने विषे उत्पन्न थवाथी तथा परमानंद सुखनुं हेतु जे धर्मरूप फल तेना दानथी (कप्परुरकग के०) कल्प वृक्ष समान जाणवा. तेमनो (फलजर के०) मूलोत्तर गुणधर्मरूप जे फलस

मूह अने नाना प्रकारनी जे ऋद्धि ते रूप (कुसुमाउल के०) कुसुम एटले पुष्प तेणे करी व्याप्त एवा ले (वणस्स के०) गच्छरूपवन जेमां एवा ॥१६॥

नाणवररयणदीप्पं तकंत, वेरुलिय विमल चूलस्स ॥
वंदामि विणयपणउ, संघमहामंदरगिरिस्स ॥ १७ ॥

अर्थः–(नाण के०) ज्ञान जे ले तेहीज परमनिवृत्तिना हेतुपणाथी (वररयण के०) प्रधान श्रेष्ठ रत्न समान ले, माटें ते ज्ञानज (दीप्पंत के०) दीप्यमान एटले प्रकाशवाली अने (कंत के०) कांत एटले सुंदर तथा (विमल के०) निर्मल एवी (वेरुलिय के०) वैडूर्य रत्ननी (चूलस्स के०) चूलिका जेनी. आहीं मंदराचल पर्वतने पक्षें तो वैडूर्यमणिनी चूलिका जाणवी.

हवे ए पूर्वोक्त विशेषणोयें युक्त एवा (संघ के०) चतुर्विध श्रीसंघरूप (महामंदरगिरिस्स के०) महामंदराचल तेने कवि कहे ले, के हुं (विणयपणउ के०) विनयप्रणतः एटले विनयेंकरी नम्र एवो थको (वंदामि के०) वंदन करुं लुं ॥ १७ ॥

वली पण संघरूप महामंदरने प्रणाम करे ले.

गुणरयणुज्जलकडयं, सीलसुगंधितवमंम्फिउद्देसं ॥
सुयबारसंगसिहरं, संघमहामंदरं वंदे ॥ १८ ॥

अर्थः–वली (गुणरयणुज्जलकडयं के०) गुणरत्नोज्ज्वलकटकं एटले गुण जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र ते रूप ले. रत्नना उज्ज्वल त्रण कांम्ह जेने एवा तथा (सीलसुगंधितवमंम्फिउद्देसं के०) शीलसुगंधितपोमंम्फितोद्देशं एटले शीलरूप ले सुगंध जेमां तथा अनशनादिक जे नलुं तप तेणें करी मंम्फितोद्देशं एटले मंम्फित ले प्रदेश एटले नाग जेनो एवा, अने (सुयबारसंगसिहरं के०) श्रुतद्वादशांगशिखरं एटले द्वादशांग श्रुत ते रूप ले शिखर जेने एवा (संघमहामंदरं के०) संघरूप महामंदरने (वंदे के०) वंदन करुं लुं॥१८॥

हवे सर्व मली श्रीसंघनी जेटली उपमा थइ, ते सर्व उपमायें युक्त एवा श्रीसंघने स्तवे ले.

नयर रह चक्क उपमे, चंदे सूरे समुद्द मेरुम्मि ॥
जो उवमिज्जइ सययं, तं संघगुणायरं वंदे ॥ १९ ॥

अर्थः—(जो के०) जे श्रीसंघ, (नयर के०) नगर, (रह के०) रथ, (चक्क के०) चक्र, (पउमे के०) पद्म एटले कमल, (चंदे के०) चंद्र, (सूरे के०) सूर्य, (समुद्द के०) समुद्र, (मेरुम्मि के०) मेरुपर्वत तेणें करी (सययं के०) निरंतर (उवमिज्जइ के०) उपमीयते एटले उपमायुक्त थाय छे, (तं के०) ते (संघगुणायरं के०) गुणाकर एटलें गुणोनी आकर जे खाण ते सरखा श्रीसंघने (वंदे के०) हुं वंदन करुं छुं ॥ १९ ॥

एम अनेक प्रकारें श्रीसंघनी स्तुति करी. हवे प्रणाम करवा माटें एक तीर्थंकरावली, बीजी गणधरावली अने त्रीजी स्थविरावली एवी त्रण आवलिकाने प्रतिपादन करेली छे. तेमां प्रथम तीर्थंकरावलीने प्रणाम करे छे.

वंदे उसभं अजियं, संभवमभिणंदण सुमइ पउमप्पह
सुपासं ॥ ससि पुप्फदंत सीयल, सिज्जंसं वासुपुज्जं च ॥२०॥
विमलमणंत य धम्मं, संतिं कुंथुं अरं च मल्लिं च ॥
मुणिसुव्वय नमि नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ २१ ॥

अर्थः—पहेला (उसभं के०) श्रीऋषभ देवजीने, बीजा (अजियं के०) श्रीअजितनाथजीने, त्रीजा (संभवं के०) श्रीसंभवनाथजीने, चोथा (अभिणंदण के०) अभिनंदनजीने, पांचमा (सुमइ के०) श्री सुमतिनाथजीने, छठा (पउमप्पह के०) पद्मप्रभने, सातमा (सुपासं के०) श्रीसुपार्श्वनाथने, आठमा (ससि के०) चंद्रप्रभने, नवमा (पुप्फदंत के०) पुष्पदंत अपर नाम श्रीसुविधिनाथजीने, दशमा (सीयल के०) श्रीशीतलनाथजीने, अगियारमा (सिज्जंसं के०) श्रीश्रेयांसजीने, अने (च के०) वली बारमा (वासुपुज्जं के०) श्रीवासुपूज्य स्वामीने ॥ २० ॥ तेरमा (विमलं के०) श्रीविमलनाथजीने (य के०) वली चउदमा (अणंत के०) श्रीअनंतनाथजीने पन्नरमा (धम्मं के०) श्रीधर्मनाथजीने तथा शोलमा (संतिं के०) श्रीशांतिनाथने सत्तरमा (कुंथुं के०) श्रीकुंथुनाथने (च के०) वली अढारमा (अरं के०) श्रीअरनाथने (च के०) वली उंगणीशमा (मल्लिं के०) श्रीमल्लिनाथने तथा वीशमा (मुणिसुव्वय के०) श्रीमुनिसुव्रत एटले मुनिसुव्रतने तथा एकवीशमा (नमि के०) श्रीनमिनाथने बावीशमा (नेमिं के०) श्रीनेमनाथजीने (तह के०) तथा त्रेवीशमा (पासं के०) श्री

पार्श्वनाथजीनें (च के०) वली चोवीशमा (वद्धमाणं के०) श्रीवर्द्धमानस्वा मिने (वंदे के०) हुं वंदन करुं बुं. आंहिं वंदे ए क्रियापद आगली गाथानुं लेवुं. कारण के बेहु गाथानो संबंध साथेंज छे ॥ २१ ॥

हवे बीजी गणधरावलीने नमस्कार करवा माटें जगवदाज्ञाथी सूत्रनी रचना करे, एवा जे श्रीवीरजगवानना एकादश गणधरो छे, तेने नाम पूर्वक स्तवे छे.

पढमित्थ इंदजूई, बीए पुण होइ अग्गिजूइत्ति ॥
तइए य वाउजूइ, तउ वियत्ते सुहम्मे य ॥ २२ ॥
मंम्मिय मोरिय पुत्ते, अकंपिए चेव अयलजाया य ॥
मेअज्जे य पहासे, गणहरा हुंति वीरस्स ॥ २३ ॥

अर्थः—(पढमित्थ के०) प्रथमस्थ एटले पेहलो (इंदजूई के०) इंडजूतिगणधर, (बीए के०) बीजो (पुण के०) वली (अग्गिजूइत्ति के०) अग्निजूतिरिति एटले अग्निजूतिनामा गणधर (होइ के०) जवति एटले होय. (य के०) तथा (तइए के०) त्रीजो (वाउजूई के०) वायुजूति गणधर (तउ के०) ततो एटले तदनंतर चोथो (वियत्ते के०) व्यक्तनामा गणधर, पांचमो (य के०) वली (सुहम्मे के०) श्री सुधर्मास्वामी गणधर ॥२२॥ छठो (मंम्मिय के०) मंम्मित गणधर, सातमो (मोरियपुत्ते के०) मौर्यपुत्र गणधर, आठमो (अकंपिए चेव के०) अकंपित गणधर, चैव शब्द पादपूरणार्थे छे, तथा नवमो (अयलजाया के०) अचलभ्रातागणधर, दशमो (मेअज्जे के०) मेतार्यगणधर, (य के०) वली अगीयारमो (पहासे के०) प्रजासनामा गणधर, एम एकादश (गणहरा के०) गणधरो (वीरस्स के०) श्रीवीरजगवानना (हुंति के०) छे ॥ २३ ॥

हवे जिनेंड्ना शासनने स्तुति करता छता कहे छे.

निवुइ पहसासणयं, जयइ सया सवजावदेसणयं ॥
कुसमयमयणासणयं, जिणिंदवरवीरसासणयं ॥ २४ ॥

अर्थः—(निवुइपहसासणयं के०) निवृत्तिपथशासनकं एटले निवृत्तिपथ जे मोक्षमार्ग तेने शासनकं एटले प्रतिपादन करनारुं एवुं तथा वली (सवजावदेसणयं के०) सर्वजावदेशनकं एटले सर्व एवा जावनी देसणयं एटले प्र

रूपणने करनारुं तथा (कुसमयमयणासणयं के०) कुसमयमदनाशनकं एटले कुसमय जे परतीर्थिक प्रवचन, तेमनो मद जे गर्व, तेने नाश करनारुं एवुं (जिणिंदवरवीरसासणयं के०) वीरजिनेंद्रनुं वर एटले प्रधान उत्तम शासन ते (सया के०) सदा एटले निरंतर (जयइ के०) जयति एटले उत्कृष्ट वर्त्ते छे ॥ २४ ॥ इति प्रथम स्वाध्यायनो अर्थ समाप्त थयो ॥

॥ अथ द्वितीय स्वाध्याय प्रारंभः ॥

हवे जेमणें परोपकारने अर्थें अविछेद परंपरायें करी आ काल सुधी श्री वीरभगवाननुं शासन चलाव्युं, एवा स्थविरोनी आवलिकाने स्तवे छे. ते स्थविरावलि सुधर्मास्वामीथीज वर्त्तेली छे, जेमाटे बीजा गणधरोने संतान प्रवृत्तिनो अभाव छे, माटे सुधर्मास्वामीनेज प्रथम आगल करीने स्तवे छे.

सुहम्मं अग्गिवेसाणं, जंबूनामं च कासवं ॥
पभवं कच्चायणं वंदे, वछं सिज्जंभवं तहा ॥ १ ॥

अर्थः—(अग्गिवेसाणं के०) अग्निवेश्यना जे पुत्र ते आग्निवेश्यायन कहियें ते आग्निवेश्यायन गोत्रवाला पांचमा गणधर (सुहम्मं के०) सुधर्मा स्वामीने (च के०) तथा (कासवं के०) काश्यपनो जे पुत्र ते काश्यप कहियें माटें ते काश्यपगोत्रीय सुधर्मास्वामीना शिष्य एवा (जंबूनामं के०) जंबु कुमार जेनुं नाम छे तेने तथा (कच्चायणं के०) कात्यायनं एटले कतनो जे पुत्र ते कात्यायन कहियें ते कात्यायनगोत्रवाला जंबुस्वामीना शिष्य (पभवं के०) प्रभवस्वामीने (तहा के०) तथा तेना शिष्य (वछं के०) वत्सनो जे पुत्र ते वात्स्य कहियें, ते वात्स्यायन गोत्रीय एवा (सिज्जंभवं के०) शय्यंभवस्वामीने (वंदे के०) हुं वंदन करुं छुं ॥ १ ॥

जसभद्दं तुंगियं वंदे, संभूयं चेव माढरं ॥
भद्दबाहुं च पाइन्नं, थूलभद्दं च गोयमं ॥ २ ॥

अर्थः—शय्यंभवनाशिष्य अने (तुंगायं के०) तुंगिक एटले व्याघ्रापत्य गोत्रवाला एवा (जसभद्दं के०) यशोभद्रने तथा ते यशोभद्रना जे बे पट्टधर शिष्य तेमां एक (माढरं के०) माढरगोत्रीय एवा (संभूयं के०) संभूति विजय (चेव के०) तथा बीजा (पाइन्नं के०) प्राचीन गोत्रोत्पन्न (भद्द

बाहुं के०) जद्रबाहुने(च के०) तथा ते पूर्वोक्त संजूतिविजयना शिष्य अने (गोयमं के०) गौतमना गोत्रमां उत्पन्न थयेला एटले गौतम गोत्रीय एवा (थूलजदं के०) श्रीस्थूलजद्रने हुं (वंदे के०) वंदन करुं बुं ॥ २ ॥

हवे ते स्थूलजद्रना पण बे शिष्य थया, तेमां एक ऐलापत्यसगोत्रोत्पन्न महागिरि तथा बीजा वशिष्ठगोत्रोत्पन्न सुहस्ती,तेने वंदन करता उता कहेले.

एलावच्चसगोत्तं, वंदामि महागिरिं सुहत्थिं च ॥
तत्तो कोसियगुत्तं, बहुलस्स सिरीवयं वंदे ॥ ३ ॥

अर्थः–(एलावच्चसगोत्तं के०) ऐलापत्यसगोत्रं एटले इलापतिनो जे पुत्र ते एलापत्य कहियें अने ते ले गोत्र जेनुं ते ऐलापत्यसगोत्र कहियें, अने ते ऐलापत्यसगोत्रीय एवा (महागिरिं के०) महागिरिने (च के०) तथा विशिष्ट गोत्रवाला (सुहत्थिं के०) सुहस्तीने (वंदामि के०) हुं वंदन करुं बुं. ते सुहस्तीथी आरंजीने सुप्रतिबद्धादिक्रमें करीनें आवलि निकलेली ले. ते दशाश्रुतस्कंधमां जोवी. ते आवलिनो अधिकार आहिं नथी. आहिं तो महागिरिनी आवलिकानो अधिकार ले, मारें ते कहे ले. हवे ते महागिरि अने सुहस्ती जे पूर्वे कहेला ले (तत्तो के०) तेमां वली महागिरिना बे शिष्य थया, तेमां एक तो (कोसियगुत्तं के०) कौशिकगोत्र वाला एवा, (बहुलस्स के०) बहुलनामक आचार्य तथा बीजा तेना (सिरीवयं के०) सदृग्वयसं एटले सरखावयवाला अर्थात् वयेंकरी बराबरीना एवा बलिस्सह आचार्य ए बेहु आचार्योंनें हुं (वंदे के०) वंदन करुं बुं ॥ ३ ॥

हवे ते पूर्वोक्त बहुल अने बलिस्सहमां पण बलिस्सह प्रवचन प्रधान होवाथी तेनीज आवलिकाने नमन करता उता कहे ले.

हारियगुत्तं साइ च,वंदीमो हारियं च सामज्जं ॥
वंदे कोसियगोत्तं, संमिल्लं अज्जजीयधरं ॥ ४ ॥

अर्थः–पूर्वोक्त बलिस्सहना शिष्य अने (हारियगुत्तं के०) हारितगोत्रीय एवा (साइ के०) स्वातिनामा आचार्यने (वंदीमो के०) हुं वंदन करुं बुं. अहिं चकार ते समुच्चयार्थवाचक ले. तथा ते श्रीस्वातिना शिष्य (हारियं के०)हारितगोत्रीय एवा (सामज्जं के०)श्यामार्य एटले श्यामाचार्यने वली ते

श्यामाचार्यना शिष्य अने (कोसियगोत्तं के०) कौशिकगोत्रीय तथा (अज्जजीयधरं के०) आर्यजीतधरं एटले आर्य जीत जे श्रीआचारांगादि सूत्र तेने धारण करनारा एवा (संमिल्लं के०) शांमिल्यनामा गुरुने (वंदे के०) हुं वंदन करुं बुं. वली केटलाक तो एम पण कहे वे, के शांमिल्यना शिष्य आर्यजीतधरनामा सूरि थया ॥ ४ ॥

तिसमुद्दखायकित्तिं, दीवसमुद्देसु गहियपेयालं ॥
वंदे अज्जसमुद्दं, अखुभियसमुद्दगंभीरं ॥ ५ ॥

अर्थः—(तिसमुद्दखायकित्तिं के०) त्रिसमुद्रख्यातकीर्त्ति एटले पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, ए त्रि एटले त्रण दिशाना समुद्र पर्यंत प्रख्यात वे कीर्त्ति जेनी एवा अने (दीवसमुद्देसुगहियपेयालं के०) द्वीपसमुद्रेषु गृहीतप्रेयालं एटले द्वीप अने समुद्रनुं ग्रहण कर्युं वे प्रमाण जेणे एवा अर्थात् अतिशयें करी द्वीपसागर प्रज्ञप्तिना जाणनारा एवा. तथा (अखुभियसमुद्दगंभीरं के०) अक्षुभितसमुद्रगंभीरं एटले नहि क्षोभ पामेलो एवो जे समुद्र तेना सरखा गंभीर एवा (अज्जसमुद्दं के०) आर्यसमुद्रं एटले शांमिल्यना शिष्य आर्य समुद्रने (वंदे के०) हुं वंदन करुं बुं ॥ ५ ॥

भणगं करगं भरगं, पभावगं णाणदंसणगुणाणं॥
वंदामि अज्जमंगुं, सुयसागरपारगं धीरं ॥ ६ ॥

अर्थः—(भणगं के०) भणकं एटले कालिकादि सूत्रने निरंतर भणनार अने (करगं के०) कारकं एटले कालिकादि सूत्रोना अर्थना करनार, तथा (भरगं के०) ध्यातारं एटले धर्मध्यानना करनार, आहिं कोइ कहेशे के, कारकं ए पदना विशेषणथी ध्यातारं ए विशेषण गतार्थ वे, कारण के कालिकादिसूत्रोना अर्थ करनार होय ते धर्मध्यानधारक पण होयज? तिहां कहे वे. के ध्यानथकी परलोकमां जवानो घणो संभव वे मार्टे ए विशेषण ग्रहण कर्युं वे. तथा (णाणदंसणगुणाणं के०) ज्ञान दर्शनगुणानां एटले ज्ञान, अने दर्शन, रूप गुणोने तथा गुणशब्दें चरणगुण पण ग्रहण करवो. ते गुणोना (पभावगं के०) प्रभावकं एटले प्रभावने करनारा एवा अने (धीरं के०) धी जे बुद्धि तेणें करीज शोभे, ते धीर

कहीयें, माटें धीर एवा तथा (सुयसागरपारगं के०) श्रुतरूप सागरना पारने पामनारा एवा पूर्वोक्त आर्यसमुद्रना शिष्य (अज्जमंगुं के०) श्रीआर्य मंगुने (वंदामि के०) हुं वंदन करुं छुं ॥ ६ ॥

वंदामि अज्जधम्मं, वंदे तत्तो य जद्दगुत्तं च ॥
तत्तो य अज्जवइरं,तवनियमगुणेहिं वइरसमं ॥७॥

अर्थः–(अज्जधम्मं के०) आर्यधर्म आचार्यने (य के०) वली (ज द्दगुत्तं के०) जद्रगुप्ताचार्यने (च के०) तथा (तत्तो के०) ते पछी (अ ज्जवइरं के०) आर्यवज्र एटले आर्यवज्रने (वंदे के०) हुं वंदन करुं छुं. ते आर्यवज्र कहेवा छे ? तो के (तवनियमगुणेहिं के०) तप, नियम अने गुण तेणें करीने (वइरसमं के०) वज्रसमं एटले वज्रमणिसमान, अर्थात् जेम वज्रमणिनुं कोइथी छेदन थइ शके नहिं तेम आ आर्यवज्र पण तप नियमोयें करी पराजव पामी शके नहिं तेने (वंदामि के०) हुं वांदुं छुं ॥७॥

वंदामि अज्जरक्खिय, खमणे रक्खिय चरित्त सवस्से ॥
रयणकरंमग जूउ, अणुउगो रक्खिउ जेहिं ॥ ८ ॥

अर्थः–(जेहिं के०) जेमणें (रयणकरंमगजूउ के०) रत्नकरंमकजूतः एटले ज्ञानदर्शनादिक जे रत्नो तेना करंमीयासरखो (अणुउगो के०)अनुयोग (रक्खिउ के०) रक्षण कस्यो. तथा (रक्खिय चरित्तसवस्से के०) चारित्रनुं सर्वस्व जेमणें रक्षण कर्युं एवा (अज्जरक्खियखमणे के०) आर्यरक्षित क्षमण आचार्यने (वंदामि के०) हुं वंदन करुं छुं ॥ ८ ॥

नाणम्मि दंसणम्मि य, तव विणए णिच्च कालमुज्जुत्तं ॥
अज्जाणंदिलखमणं, सिरसा वंदे पसन्नमणं ॥ ९ ॥

अर्थः–(नाणम्मि के०) ज्ञानने विषे (दंसणम्मि के०) दर्शनने विषे (य के०) चनुं ग्रहण कर्युं छे, माटें चारित्रने विषे पण तथा (तव विणए के०) तपने विषे अने विनयने विषे (णिच्चकालं के०) निरंतर (उज्जुत्तं के०) उद्युक्तं एटले उद्युक्त एवा तथा (पसन्नमणं के०) प्रसन्न छे एटले रागादिकें रहित छे मन जेनुं एवा पूर्वोक्त छट्ठी गाथामां कह्या जे श्री आर्यमंगु तेना शिष्य(अज्जाणंदिलखमणं के०) आर्यनंदिलक्षमणनामक

आचार्यने (सिरसा के०) मस्तकें करी (वंदे के०) हुं वंदन करुं बुं ॥९॥

वड्ढउ वायगवंसो, जसवंसो अज्जनाग हत्थीणं ॥
वागरण करणभंगिय, कम्मपयडी पहाणाणं ॥१०॥

अर्थः—(वागरणकरणभंगियकम्मपयडीपहाणाणं के०) व्याकरणकरणभंगियकर्मप्रकृतिप्रधानानां एटले व्याकरण जे संस्कृतशब्दव्याकरण तथा प्राकृतशब्द व्याकरण अने प्रश्नव्याकरण,करणभंगियतेभांगायुक्तश्रुत, अने कर्मप्रकृति ते अष्टकर्मोनी प्रकृतिना जे विवरा तेमना ज्ञानें करी प्रधान एटले श्रेष्ठ एवा (अज्जनागहत्थीणं के०) आर्यनागहस्तीनां एटले पूर्वोक्त नंदिलक्ष्मणाचार्यना शिष्य आर्यनागहस्ती तेनो मूर्त्तिमान् जाणे (जसवंसो के०) यशनो वांसज होय नहि एवो (वायगवंसो के०) चौद पूर्वगतसूत्रने तथा बीजां पण सूत्रोने विनीतशिष्योने जे अध्ययन करावे ते वाचक जाणवा, तेनो जे वंश ते वाचकवंश कहियें ते वाचकवंश (वड्ढउ के०) वृद्धिने प्राप्त थाउ. आ ठेकाणे यशोवंश ए विशेषणें करी अयश प्रधान पुरुषना वंशनो व्यवछेद कस्यो छे. अर्थात् संसारसमुद्रना प्रवाहमां पडेला अने केवलमुनिवेशना विडंबन करनाराउ केवलमुनिवेष धारी एवा पुरुषो ए वंशमां म वृद्धि पामो. ए कविनो अभिप्राय छे ॥ १० ॥

जच्चंजणधाउसम,प्पहाण मद्दियकुवलयनिहाणं ॥
वड्ढउ वायगवंसो, रेवइनक्खत्तनामाणं ॥ ११ ॥

अर्थः—(जच्चंजणधाउसमप्पहाणं के०) जात्यांजनधातुसमप्रभाणां एटले जात्यवंत एवी जे अंजन धातु तेना सरखी छे प्रभा जेनी एवा अने (मद्दियकुवलयनिहाणं के०) मृद्विकाकुवलयनिभानां एटले मृद्विका जे पाकेली द्राक्ष तथा कुवलय जे कृष्ण कमल, तेना सरखी छे निभानां एटले कांति जेनी एवा (रेवइनखत्तनामाणं के०) रेवतिनक्षत्रनाम्नां एटले रेवती नक्षत्र नामक एवा आर्यहस्तीना शिष्यनो (वायगवंसो के०) वाचक वंश, (वड्ढउ के०) वृद्धिने पामो ॥ ११ ॥

अयलपुरा णिक्कंते, कालियसुय आणुउगिए धीरे ॥ बंभद्दीवगसीहे, वायगपयमुत्तमं पत्ते ॥ १२ ॥

अर्थः—(अयलपुराणिरकंते के०) अचलपुरान्निष्क्रांतान् एटले अचलपुरने विषे दीक्षाग्रहण करीने ते अचलपुरथी बाहिर नीकलेला एवा अने (कालियसुयआणुयोगिए के०) कालिक श्रुतानुयोगव्याख्यानने विषे योजित थया एवा तथा (धीरे के०) धी जे बुद्धि तेणे करी विराजमान एवा तथा (उत्तमं के०) उत्तम एवा (वायगपयं के०) तत्कालीनवाचकपदने (पत्ते के०) प्राप्त थया एवा (बंजद्दीवग के०) ब्रह्मद्वीपकनामक शाखा जेमनी छे एवा (सीहे के०) सिंहनामक पूर्वोक्त रेवतीनक्षत्र वाचकना शिष्यने हुं वंदन करुं छुं ॥ १२ ॥

जेसिं इमो अणुउगो, पयरइ अज्जावि अड्ढभरहम्मि ॥
बहुनयर निग्गयजसे, तं वंदे खंदिलायरिए ॥ १३ ॥

अर्थः—(जेसिं के०) येषां एटले जेमनो (इमो के०) अयं एटले आ (अणुउगो के०) अनुयोग, (अज्जावि के०) अद्यापि एटले हजी सुधी पण (अड्ढभरहम्मि के०) अर्द्धभरतखंडनेविषे (पयरइ के०) प्रचरति एटले चाले छे, एवा अने (बहुनयरनिग्गयजसे के०) बहुनगरनिर्गतयशसः एटले घणा नगरोने विषे प्रसार पाम्युं छे यश जेमनुं एवा (तं के०) ते प्रसिद्ध एवा (खंदिलायरिए के०) स्कंदिलाचार्यने (वंदे के०) हुं वंदन करुं छुं ॥ १३ ॥

हवे ते स्कंदिलाचार्यनी यत्किंचित् कथा कहे छे. एकसमय दुःखदायक एवुं दुर्भिक्ष बार वरस पर्यंत ए पृथ्वीमां उत्पन्न थयुं, त्यारे महोटा दुर्भिक्षना प्रभावें भिक्षा लाभ न होवाथी दुःख पामता एवा साधुउने अपूर्व अर्थनुं ग्रहण अने अपूर्व अर्थनुं स्मरण करावनार श्रुतपरावर्त्तनो मूलथी नाश थइ गयो, अने श्रुत पण नष्टप्राय थयुं, तथा अंगोपांगादि परावर्त्तनना अभावथकी भावथी पण ते श्रुत नष्ट थयुं. हवे बार वर्ष गया छते दुर्भिक्ष नाश पाम्युं, तदनंतर मथुरापुरने विषे स्कंदिलाचार्य प्रमुख साधुउयें एक ठेकाणे मलीने विचार कर्यो के श्रुत तथा श्रुतांग सर्व नष्ट थइ गयां, माटें जेने जे सांभरे, ते तेणें कहेवुं. पछी जे जेने सांभर्युं ते तेणें कह्युं, त्यारें कालिक श्रुतनुं तथा चौद पूर्वगतनुं जेटलुं स्मरण थयुं तेटलुं लख्युं, अने अनुसंधान राखीने मथुरानगरीने विषे श्रुतनी रचना करी, तेनी वाचना स्कंदिलाचार्यें मथुरानगरीने विषे चलावी, माटें ते वाचनानुं नाम माथुरी वाचना

एवुं पड्युं. ते माथुरी कलियुग प्रधान एवा स्कंदिलाचार्यने घणी मान्य हती, अने तेमणें शिष्यपरंपरायें अर्थनी प्ररूपणा करीने चलावी, माटे ते माथुरीने स्कंदिलाचार्यनो अनुयोग एम पण कहे छे.

वली कोइ लोको एम पण कहे छे, के कांइ दुर्भिक्षथकी श्रुत नष्ट थइ गयुं एम नथी, कारण के श्रुत तो प्रचलित हतुं, परंतु मथुरास्थ जे योगधारक हता ते दुर्भिक्षमां नष्ट थइ गया, स्कंदिलाचार्य ते वखत विद्यमान हता, तदनंतर दुर्भिक्षनो अपगम एटले नाश थया पछी फरीने ते मथुरा पुरीने विषे पाछो कालिकश्रुतानुयोग प्रवृत्त थयो. तेथी ते श्रुतानुयोगनी वाचना माथुरी एवे नामें प्रसिद्ध थई. तेथी ते आचार्यनो अनुयोग थयो.

तत्तो हिमवंत महंतविक्कमे धिइपरक्कममणंते ॥
सज्झायमणंतधरे, हिमवंते वंदिमो सिरसा ॥ १४ ॥

अर्थः—(तत्तो के०) ततः एटले स्कंदिलाचार्यानंतर (हिमवंतमहंतविक्कमे के०) हिमवन्महद्विक्रमान् एटले हिमवान् पर्वतसमान छे मोटुंपराक्रम जेमनुं अर्थात् विहारक्रमें करी प्रभूतक्षेत्र व्यापी छे शरीर जेनुं एवा तथा (धिइ परक्कममणंते के०) अनंतधृतिपराक्रमान् एटले अपरिमित धैर्य प्रधान छे पराक्रम जेनुं एवा, वली (सज्झायमणंतधरे के०) अनंतस्वाध्यायधरान् एटले अनंतागमपर्यायात्मकपणुं छे माटें अनंत एवां जे सूत्र तेना स्वाध्यायने धारण करनारा एवा पूर्वोक्तस्कंदिलाचार्यना शिष्य (हिमवंते के०) हिमवंतसूरिने (सिरसा के०) मस्तकें करी (वंदिमो के०) अमें वंदन करीयें छैयें ॥ १४ ॥

वली पण हिमवदाचार्योनी स्तुति करे छे.

कालियसुयअणुयोग, स्स धारए धारए य पुव्वाणं ॥
हिमवंतखमासमणे, वंदे णागज्जुणायरिए ॥ १५ ॥

अर्थः—(कालियसुयअणुयोगस्स के०) कालिकश्रुतानुयोगने (धारए के०) धारण करनारा एवा (य के०) वली (पुव्वाणं के०) पूर्वाणां एटले उत्पादादिक पूर्वना श्रुतने (धारए के०) धारण करनारा एवा (हिमवंतखमासमणे के०) हिमवंतनामक क्षमाश्रमणने तथा तेमना शिष्य (णागज्जुणायरिए के०) नागार्जुनाचार्यने (वंदे के०) हुं वंदन करुं छुं ॥ १५ ॥

हवे ते नागार्जुनाचार्य कहेवा छे ? ते कहे छे.

मिउमद्दव संपन्ने, अणुपुव्विं वायगत्तणं पत्ते ॥
उहसुय समायारे, नागज्जुण वायए वंदे ॥ १६ ॥

अर्थः-(मिउमद्दवसंपन्ने के०) मृदुमार्दवसंपन्नान् एटले मृदु ते सकल भव्यजनना मनने संतोष आपे छे माटें मनोज्ञ कहियें अने ते मनोज्ञ एवुं जे मार्दव तेणें करी संपन्न एवा आहिं मृदुशब्द जे छे ते उपलक्षणथी छे, माटें मृदुशब्दें करी क्षांति, मार्दव, आर्जव, संतोष, तेणें करी संपन्न एवा तथा (अणुपुव्विं के०) आनुपूर्वी जे आचार्य परंपरा तेणें करी (वायगत्तणं के०) वाचकत्वं एटले वाचकपणाने (पत्ते के०) प्राप्त थया एवा अर्थात् वाचकपदने प्राप्त थया एवा, हवे आमां जे वाचकपद छे, ते आ युगना सूरिनी समाचारीनुं प्रदर्शक छे माटें वाचकपदें करि गणधर लेवा नहिं. तथा (उहसुयसमायारे के०) उघश्रुत जे उत्सर्गश्रुत तेने रूडे प्रकारें आचरता एवा (नागज्जुणवायए के०) नागार्जुननामा वाचकने हुं (वंदे के०) वंदन करुं छुं ॥ १६ ॥

गोविंदाणंपि नमो, अणुउगो विउल धारिणिंदाणं ॥
निच्चं खंति दयाणं, परूवणे दुल्लभिंदाणं ॥ १७ ॥

अर्थः-(अणुउगोविउलधारिणिंदाणं के०) विपुलानुयोगधारणेंद्रेभ्यः एटले विस्तीर्णरीतें अनुयोग धारण करनार जे पुरुषो तेमां इंद्रसमान एवा तथा (निच्चं के०) नित्यं एटले निरंतर (खंतिदयाणं के०) क्षमा तथा दयायें युक्त एवा तथा (परूवणे के०) श्रावकनी शुद्ध प्ररूपणा करवामां (दुल्लभिंदाणं के०) दुर्लभेंद्रेभ्यः एटले दुर्लभ पुरुषोमां इंद्रसमान अर्थात् श्रावकने शुद्ध धर्मनी प्ररूपणा करवामां एवा पुरुषो अतिदुर्लभ छे, एवा (गोविंदाणंपि के०) गोविंदाचार्यने पण (नमो के०) हुं नमन करुं छुं ॥ १७ ॥

तत्तो अ भूयदिन्नं, निच्चं तव संजमे अनिव्विण्णं ॥
पंडियजण सामण्णं, वंदामि य संजम विहन्नु ॥१८॥

अर्थः-(अ के०) वली (तत्तो के०) ते पछी (निच्चं के०) नित्यं एटले निरंतर (तवसंजमे के०) तप अने संयम, तेने विषे (अनिव्विणं के०)

अनिर्विसं एटले आसक्त एवा तथा (पंमियजणसामसं के०) पंमितजनने छे श्रामण्य एटले चारित्रपणुं जे थकी एवा तथा (संजमविहन्नु के०) संयमविधिज्ञं एटले संयमविधिना जाणनारा एवा (नूयदिन्नं के०) नूतदिन्न नामे आचार्यने हुं (वंदामि के०) वंदन करुं छुं ॥ १८ ॥

वली पण त्रण गाथायें करी नूतदिन्नाचार्यने वंदन करे छे.

वर कणग तविय चंपग, विमल वर कमल गप्नसिरिव
से ॥ नविय जण हियय दइए, दयागुण विसारए धीरे
॥ १९ ॥ अद्धनरह प्पहाणे, बहु विह सिप्नाय सुमुणिय
प्पहाणे ॥ अणुउगिय वर वसहे, नाइलकुल वंसनंदिकरे
॥२०॥ नूय हिय अप्पगप्ने, वंदे हं नूयदिन्न मायरिए ॥
नव नय वुछेय करे, सीसे नागज्जुण रिसीणं ॥ २१ ॥

अर्थः-(तविय के०) तपावेलुं एवुं (वर के०) श्रेष्ठ (कणग के०) कनक ते सुवर्ण तथा (चंपग के०) चंपकपुष्प तथा (विमल के०) निर्मल विकाश पामतुं एवुं (वरकमल के०) श्रेष्ठकमल तेनो (गप्न के०) गर्न ते मध्यनाग तेना (सिरिवसे के०) सदृशवर्णान् एटले समान छे वर्ण जेनो एवा तथा (नवियजणहिययदइए के०)नविकजनहृदयदयितान् एटले नव्यजीवना हृदयने वल्लन एवा तथा (दयागुणविसारए के०) दयागुणविशारदान् एटले दयारूप गुणनी विधिनी प्रवृत्ति करवामां विशारद एटले कुशल एवा तथा (धीरे के०) बुद्धिना योगें करी शोननारा एवा ॥ १९ ॥

अने (अद्धनरहप्पहाणे के०) अर्द्धनरतप्रधानान् एटले ते कालनी अपेक्षायें समस्त अर्द्धनरतक्षेत्रनी मध्यें युगप्रधान एवा तथा (बहुविहसिप्नायसुमुणियप्पहाणे के०) सुविज्ञातबहुविधस्वाध्यायप्रधानान् एटले जाण्यो छे घणा प्रकारनो स्वाध्याय जेणें एवा जे पुरुषो तेने विषे प्रधान एवा तथा (अणुउगियवरवसहे के०) अनुयोजितवरवृषनान् एटले अनुयोजन कर्या छे यथोचित वैयावृत्यादिकने विषे वरवृषन एटले रूडा साधुउ जेणें अने (नाइलकुलवंसनंदिकरे के०) नागेंइना कुलवंशने प्रमोद करनारा एवा ॥ २० ॥

(नूयहियअप्पगप्ने के०) नूतहितप्रगल्नान् एटले नूत ते प्राणिमात्रने हित कारक उपदेश देवामां समर्थ एवा तथा (नवनयवुछेयकरे के०) सदुपदेशें

करी संसार जयना उछेद करनारा एवा पूर्वोक्त शोलमी गाथामां कह्या जे (नागज्जुणरिसीणं के०) नागार्जुनऋषि तेमना (सीसे के०) शिष्य एवा (जूयदिन्नमायरिए के०) जूतदिन्न नामा आचार्यने (हं के०) अहं एटले हुं (वंदे के०) वंदन करुं बुं ॥ २१ ॥

सुमुणिय निच्चानिच्चं, सुमुणिय सुत्तब धारए नि
च्चं ॥ वंदेहं लोहिच्चं, सप्नावुप्नावणा तच्चं ॥ २२ ॥

अर्थः—(सुमुणियनिच्चानिच्चं के०) सुविज्ञातनित्यानित्यं एटले रूडे प्रकारें जाणी बे, नित्य अनित्य वस्तु जेणें एवा आ विशेषणें करी तेमनुं न्याय वेदित्व कह्युं. तथा (सुमुणियसुत्तबधारए के०) सुविज्ञातसूत्रार्थधारकं एटले अतिशयपणे करी जाण्यां जे सूत्र अने तेमना जे अर्थ तेमने धारकं एटले धारण करनारा एवा, आ विशेषणेंकरी तेमनुं निरंतर सूत्रार्थवेदित्व कह्युं बे. तथा वली (सप्नावुप्नावणातच्चं के०) सद्भावोद्भावनातथ्यं तिहां सत् एटले विद्यमान एवा जाव जे यथावस्थितजाव तेनो जे प्रकाश करवो, तेने विषे तथ्य एटले सत्य प्ररूपक आ विशेषणें करी तेमनुं सम्यक् प्ररूपकत्व कह्युं. एवा पूर्वोक्त जूतदिन्नाचार्यना शिष्य (लोहिच्चं के०) लोहित्यनामा आचार्यने (हं के०) अहं एटले हुं (निच्चं के०) नित्यं एटले निरंतर (वंदे के०) हुं वंदन करुं बुं ॥ २२ ॥

अबमहब खाणिं, सुसमण वरकाण कहण निव्वाणिं ॥
पयइय महुरवाणिं, पयउ पणमामि दूसगणिं ॥ २३ ॥

अर्थः—(अबमहबखाणिं के०) अर्थ ते विजाषा वार्त्तिक अने महार्थ ते तेमना अर्थ तेनी खाण रूप एवा आ विशेषणें करी तेमनुं जाष्यना तथा वार्त्तिकना अनुयोग कारकमां चतुरपणुं जणाव्युं. तथा (सुसमण के०) मूलोत्तर गुणयुक्त एवा सु श्रमण जे सुसाधु तेमने अपूर्व शास्त्रार्थनुं (वरकाणकहण के०) व्याख्यान कथन एटले व्याख्यान कहेवामां (निव्वाणं के०) निवृत्ति एटले सुखसमाधि बे जेनें एवा तथा (पयइय के०) प्रकृतियें एटले स्वजावें करीज (महुरवाणिं के०) मधुर बे वाणी जेनी एटले कोइ दिवसें पण शिष्यनी उपर क्रोध करीने निष्ठुर वचन बोलनार नही एवा. आ विशेषणें करी शिष्यनुं अनुवर्त्तन करवामां तेमनुं कुशलपणुं सूचव्युं.

कारण के, कोइ शिष्य धर्ममां प्रमादी थाय तो तेवा शिष्योने पोताना गुण संपत्तिना योगथी धर्मयुक्त सुलक्षण वाणियें करी समजावे के, जेथी तेनुं मन प्रसन्न थाय ए प्रकारें विशिष्टगुण प्रतिपत्तिने संमुख रहे ले एवा (दूसगणिं के०) दूष्यनामा गणिने (पयउ के०) प्रकर्षेकरी यत्नयुक्त थयो बतो (पणमामि के०) हुं प्रणाम करुं बुं ॥ २३ ॥

हवे बे गाथायें करी वली पण दूष्यनामा गणिने स्तवे ले.

तव नियम सच्च संजम, विणय ज्जव खंति मद्दव रया
णं॥सीलगुणगद्दियाणं, अणुउगजुगप्पहाणाणं ॥२४॥
सुकुमालकोमलतले, तेसिं पणमामि लरकणपसछे ॥
पाए पावयणीणं, पडिच्छगसएहि पणिवइए ॥२५॥

अर्थः–(तव के०) तप, नियम के०) नियम, (सच्च के०) सत्य, (संजम के०) संयम, (विणय के०) विनय, (अज्जव के०) आर्जव, (खंति के०) क्षांति, (मद्दव के०) मार्दव, तेने विषे (रयाण के०) रतानां एटले रत एवा तथा (सीलगुणगद्दियाणं के०) शीलगुणगृहीतव्यानां एटले शील गुणें करी ग्रहण करवा योग्य एवा अर्थात् शीलगुणथीज जे ग्रहण थाय ले. तथा (अणुउग के०) अनुयोगने विषे (जुगप्पहाणाणं के०) युगप्रधान एवा ॥ २४ ॥ तथा (पावयणीणं के०) प्रावचनिकानां एटले प्रवचनकथनमां युक्त एवा (तेसिं के०) तेषां एटले ते दूष्यगणिनां (सुकुमालकोमलतले के०) सुकुमालकोमलतलान् एटले अकर्कश अने कोमल एटले मनोहर ले पगना तल जेनां एवा तथा (पडिच्छगसएहिं के०) प्रातीच्छिकशतैः एटले बीजा गच्छने विषे रहेनारा जे पुरुषो ते पोताना आचार्यना दर्शन करीने स्वआचार्यनी आज्ञा लइने गच्छांतरने विषे अनुयोगना श्रवणने माटें जाय ले, अने ते अनुयोग श्रवण करवा आवे एवा अन्य गच्छीय जनोने ते अनुयोगाचार्य अनुमोदन आपे ले, ते जनोने प्रातीच्छिक कहियें. ते मांहेला सएहिं एटले सेकडायें (पणिवइए के०) प्रणाम करेला ले जेने एवां तथा (लरकणपसछे के०) शंख चक्रादिक प्रशस्त लक्षणोयें करी युक्त (पाए के०) चरणनें (पणमामि के०) हुं प्रणाम करुं बुं ॥२५॥

जे अन्ने जगवंते, कालियसुय आणुजगिए धीरे ॥ ते पणमिऊ
ण सिरसा, नाणस्स परूवणं वुडं ॥ ७६ ॥ थेरावलिया समत्ता ॥

अर्थः—ए पूर्वें कह्या तेथी (अन्ने के०) अन्य बीजा कोइ अतीतकाले थया अने अनागत कालने विषे थाशे एवा श्रुतरत्नना समूहें करी पूरित पणाथी समग्र (जगवंते के०) ऐश्वर्यादियुक्त एवा (कालियसुयआणउगिए के०) कालिकश्रुतना अनुयोगवाला (धीरे के०) धीर एटले विशेष बुद्धियें करी विराजमान एवा (जे के०) जे महामुनियो ढे (ते के०) तेने (सिरसा के०) मस्तकेंकरी (पणमिऊण के०) प्रणाम करीने (नाणस्स के०) आजिनिबोधिकादिकज्ञाननी (परूवणं के०) प्ररूपणाने (वुडं के०) वक्ष्ये एटले कवि कहे ढे के हुं कहीश ॥२६॥ ए स्थविरावली संपूर्ण थइ ॥

हवे प्रथमनी गाथामां कह्युं जे आजिनिबोधिकादिक ज्ञाननी
प्ररूपणाने कहिश ! ते ज्ञाननी प्ररूपणा करे ढे.

आजिणिबोहियनाणं, सुयनाणं चेव उहिनाणं च ॥
तह मणपज्जवनाणं,केवलनाणं च पंचमयं ॥ ७७ ॥

अर्थः—ज्ञान पांच प्रकारनुं ढे, तेमां प्रथम (आजिणिबोहियनाणं के०) आजिनिबोधिकज्ञानं एटले अजिनिबोध जे ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम तेणेंकरीने सिद्ध थयुं जे ज्ञान ते आजिनिबोधिक ज्ञान जाणवुं. बीजुं (सुयनाणं के०) श्रुतज्ञान, (चेव के०) तथैव एटले तेमज त्रीजुं (उहिनाणं के०) अवधिज्ञान, (तह के०) तथा चोथुं (मणपज्जवनाणं के०) मनःपर्यवज्ञान, (च के०) वली (पंचमयं के०) पंचमकं एटले पांचमुं (केवलनाणं के०) केवलज्ञान जाणवुं. एम पांच प्रकारनां ज्ञान जे ढे तेनी प्ररूपणा करीश ॥२७॥ इति नंदिसूत्रस्य द्वितीय स्वाध्यायस्य बालावबोधः समाप्तः ॥

एम सिज्झाय बे कही रह्या पढी उजा थइने इछाकारेण संदिस्सह जगवन् पांचमा आवश्यक जणी दैवसिक प्रायश्चित्त विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं. एम कही अन्नड० ॥ कहीने चार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. ते करी नमो अरिहंताणं ए एक पद कही, काउस्सग्ग पारीने एक लोगस्स प्रगट कही पढी इछाकारेण संदिस्सह जगवन्! अजिनव काउस्सग्ग गउं. एम कही इछं अजिनव असेस कम्मरकय, डुरकरकय निमत्तं किरेमि काउ

स्सग्गं अन्नछ० ॥ कही पांच लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. पछी नमो अरिहंताणं ए एक पद कही, काउस्सग्ग पारी प्रगट लोगस्स कही; इछामि खमासमण पूर्वक देग बेशीने पछी इछाकारेण संदिस्सह जगवन्! अजित शांतिस्तवन कहुं. एम कही एक नवकारनो पाठ कहीने बृहन्नमस्करादिक जूदां जूदां नव स्मरण कहेवां ते लखियें बैयें.

॥ तत्र प्रथम परमेष्ठिनमस्कारस्तोत्ररूप बृहद् नमस्कार प्रारंनः ॥

परमेष्ठिनमस्कारं, सारं नवपदात्मकम् ॥
आत्मरक्षाकरं वज्र, पंजराजं स्मराम्यहम् ॥ १ ॥

अर्थः–(सारं के०) साररूप, (नवपदात्मकं के०) नवपद तेज बे आत्माते स्वरूप जेहनो तथा (वज्रपंजराजं के०) वज्रना पांजरा समान (आत्मरक्षाकरं के०) शरीरनी रक्षा करनार एवो (परमेष्ठिनमस्कारं के०) अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, अने सर्व साधुउ ए पांच परमेष्ठीने जे नमस्कार तेने (स्मरामि के०) हुं समरुं बुं ॥ १ ॥

ॐ णमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितम् ॥
ॐ णमो सिद्धाणं, मुखे मुखपटं वरम् ॥ २ ॥

अर्थः–(अरिहंताणं के०) अरिहंत तीर्थंकर देव जगवानने (ॐ णमः के०) ॐकार पूर्वक नमस्कार हो. ते (शिरसिस्थितं के०) मस्तक उपरे रह्युं थकुं (शिरस्कं के०) मस्तकनी रक्षा करनार कवचतुल्य बे. (सिद्धाणं के०) अनंतज्ञान आदिक आठ गुणना धरनार श्रीसिद्ध जगवानने (ॐ णमः के०) ॐकारपूर्वक नमस्कार हो. ते (मुखे के०) मुखउपर (वरं के०) श्रेष्ठ ते प्रकृष्ट (मुखपट के०) मुखपट्टिकारूप बे ॥२॥

ॐ णमो आयरिआणं, अंगरक्षातिशायिनी ॥
ॐ णमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढम् ॥ ३ ॥

अर्थः–(आयरिआणं के०) बत्रीश गुणे करी युक्त एवा आचार्य जगवानने (ॐ णमो के०) ॐकारपूर्वक नमस्कार होजो, ए नमस्काररूप विद्या (अंगरक्षातिशायिनी के०) अंगनी रक्षाउने उल्लंघन करि रहेनारी बे. अर्थात् रक्षामात्रमां श्रेष्ठ बे. (उवज्झायाणं के०) अंगोपांग आदि पचवीश गुण

ना धारक एवा श्रीउपाध्यायने (ॐ णमो के०) ॐकारपूर्वक नमस्कार होजो. ए नमस्कार (हस्तयोः के०) बेहु हाथने विषे (दृढं के०) अचल मजबूत एवा (आयुधं के०) हथियाररूप छे ॥ ३ ॥

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं, मोचके पादयोः शुभे ॥
एसो पंचणमुक्कारो, शिला वज्रमयी तले ॥ ४ ॥

अर्थः–(लोए के०) लोकमां (सव्वसाहूणं के०) मोक्षमार्गना साधक सत्तावीश गुणसंयुक्त एवा सर्व साधुउने (ॐ णमः के०) प्रणवाक्षरपूर्वक नमस्कार होजो. ए नमस्कार (पादयोः के०) बे पगनी (शुभे के०) सुंदर (मोचके के०) बे पाडुकारूप छे. (एसो के०) ए पूर्वे कहेलो (पंचणमुक्कारो के०) पांच परमेष्ठिनमस्कार जे छे, ते (तले के०) भूतलमां (वज्रमयी के०) वज्रमय (शिला के०) शिला छे ॥ ४ ॥

सव्वपावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहिः ॥
मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिरांगारखातिका ॥ ५ ॥

अर्थः–वली ए नमस्कार केहवो छे? तो के (सव्वपावप्पणासणो के०) अनंत भवमां उपार्जन करेला एवां जे सर्व पापो तेने प्रकर्षे करीने नाश करनारो छे, वली ते पंचपरमेष्ठिनमस्कार (बहिः के०) चार दिशाउमां (वप्रोवज्रमयः के०) वज्रना किल्ला एटले गढरूप छे, (च के०) अने (सव्वेसिं के०) सर्वेषां एटले सर्वे (मंगलाणं के०) इव्यभावरूप मंगलोने अने कल्याण तेने राखवा माटें (खादिरांगारखातिका के०) खेरना अंगारानी परिखा एटले फरती चोतरफ खाइरूप छे. अर्थात् मंगलनी अने सुकृतनी रक्षा करनारी छे ॥ ५ ॥

स्वाहांतं च पदं ज्ञेयं, पढमं होइ मगलम् ॥
वप्रोपरि वज्रमयं, पिधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥

अर्थः–(पदं के०) पद, (स्वाहांतं के०) स्वाहा छे अंतमां जेने एवुं जाणवुं. जेम के नमोऽर्हद्भ्यः स्वाहा ए प्रमाणें ते पद (पढमं के०) आदिभूत (मंगलं के०) मंगल (होइ के०) भवति एटले थाय छे. ते (वप्रोपरि

के०) किल्लानी उपरना नागमां रहेनार (देहरक्षणे के०) शरीरनी रक्षा मां (वज्रमयं के०) वज्ररूप (पिधानं के०) ढाकणुं छे ॥ ६ ॥

महाप्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी ॥ पर
मेष्ठिपदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥

अर्थः–(क्षुद्रोपद्रवनाशिनी के०) दुष्ट उपद्रवोने नाश करवो एवुं जेनुं शील छे, एवी अने (महाप्रभावा के०) महोटा प्रभाववाली (इयं के०) आ (रक्षा के०) रक्षा छे, ते (परमेष्ठिपदोद्भूता के०) परमेष्ठि नमस्कारना पदथी उद्भूत एटले प्रकट थइ. एम (पूर्वसूरिभिः के०) पूर्वाचार्योयें (कथिता के०) कहेली छे ॥ ७ ॥

यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठिपदैः सदा ॥ तस्य
न स्याद्भयं व्याधि, राधिश्चापि कदाचन ॥८॥
॥ इति बृहन्नमस्कारः ॥ प्रथमं स्मरणम् ॥१॥

अर्थः–(यः के०) जे पुरुष (एवं के०) प्रथम कह्युं छे. ए प्रमाणें (सदा के०) सर्वदा (रक्षां कुरुते के०) रक्षा करे छे. (तस्य के०) ते पुरुषने (कदाचन के०) क्यारें (अपि के०) पण (भयं के०) सात प्रकारनां भय, (व्याधि के०) शरीरनी पीडा, (च के०) अने (आधि के०) मननी पीडा, ते (न स्यात् के०) होय नही ॥ ८ ॥ इति पंचपरमेष्ठिमंत्रगर्भितबृहन्नमस्कारः ॥ प्रथमं स्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री अजितशांतिस्तवनामकद्वितीयस्मरणस्य प्रारंभः ॥

अजिअं जिअ सव्व भयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं ॥ जय
गुरु संति गुण करे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥

अर्थः–(जिअसव्वभयं के०) जीत्युं छे, इह लोकादिक सप्तविध सर्व भय जेणें एवा तथा भगवान् गर्भस्थ छते तेमनी विजया देवी माताने पोताना स्वामी जितशत्रु राजायें द्यूतक्रीडाने विषे न जींती, माटें (अजियं के०) अजितनाथ नामा बीजा तीर्थंकर, (च के०) वली (पसंत के०) अपु

नावें करी निवृत्त छे (सव्व के०) सर्व एवा (गय के०) गद ते रोग अने (पावं के०) पाप एटले अशुन कर्म जेमनां एवा (संतिं के०) श्रीशांतिनाथ नगवान् ते, जे वखत गर्नमां हता, ते समये पण जगतना अशिवोनी उपशांतिने करता हवा, अने हमणां पण एना स्मरणथकी जीवने शांति थाय छे, ते माटें ते शांतिनामक शोलमा तीर्थंकर ते (दोवि कें०) बेहु पण (जिणवरे के०) जिनवर तेने (पणिवयामि के०) प्रणिपतामि एटले हुं नमस्कार करुं बुं. ते बेहु जिनवर केहवा छे? तो के (जय के०) जगत् जे देशनार्ह प्राणिवर्ग तेना (गुरु के०) तत्त्वोपदेष्टा एवा छे, अथवा जगतना (गुरु के०) महोटा एवा (संति के०) कषायनो अनाव करे छे, तथा (गुण के०) ज्ञानादिक गुण तेने (करे के०) करे छे, अथवा शांतिरूप गुणना करनार छे ॥ १ ॥ आ, गाथानामक छंद जाणवो. आ सर्व स्तोत्रना छंदनुं लक्षण, छंदोरत्नाकरनामक ग्रंथथी जाणवुं ॥

ववगय मंगुल नावे, तेहं विउल तव निम्मल सहावे ॥ नि रुवम महप्पनावे, थोसामि सुदिठसप्नावे ॥ २ ॥ गाहा ॥

अर्थः-(ववगय के०) व्यपगत एटले गयो छे (मंगुलनावे के०) अशोनन नाव जेमनो एवा,आ कह्युं एवुं ववगयमंगुलनावत्व, तेने विषे विशेषण द्वारायें करीने हेतु कहे छे, ते जेम केः-(विउल के०) विस्तीर्ण ते बाह्या न्यंतर द्वादशविध एवुं (तव के०) तप तेणें करी (निम्मलसहावे के०) निर्मल एटले कर्ममलरहित छे स्वनाव जेमनो एवा, ते पूर्वनी गाथामां कह्या जे श्री अजितनाथ तथा शांतिनाथ, ते बेहुनी हुं नंदिषेणनामा सूरि, (थोसामि के०) स्तुति करुं बुं. हवे ते बे जिन केहेवा छे तो के (निरुवम के०) निरुपम एटले उपमातीत छे (महप्पनावे के०) महान् एटले महोटी प्रनाव एटले शक्ति छे जेनी एवा छे, अथवा निरुपम एटले महोटो एवो छे प्रनाव ते माहत्म्य जेनुं एवा छे. वली केहवा छे ? तो के (सुदिठ के०) रूडे प्रकारें करी, अर्थात् केवल ज्ञान अने केवल दर्शनें करी दीठा छे (सप्नावे के०) विद्यमान जीवाजीवादिकना नावो जेणें एवा छे. आहिं 'तेहं' ए जे पाठ छे, ते अप्रामाणिक छे. कारण के तेनुं प्रावाहिकत्वें करी

ने आगमन छे, तथापि ते पाठ सर्वजनो जाणे छे, तेथी अहिं लख्यो छे. ॥ २ ॥ आ पण, गाथानामा छंद जाणवो.

सव्व डुक्क प्पसंतीणं, सव्व पाव प्पसंतिणं ॥ सया अ
जिय संतीणं, नमो अजिय संतिणं ॥३॥ सिलोगो ॥

अर्थः—(सव्व के०) संपूर्ण (प्पसंतीणं के०) प्रशांत थयां छे (डुक्क के०) जन्म जरादि वेद्यकर्म जेउनां एवा छे,अथवा सर्व योग्य जंतुउना डुःखनी प्रशांति करी छे जेमणें एवा छे, तथा (सव्व के०) सर्व एवां जे प्राणातिपातादिक (पाव के०) पापकर्मो छे, तेनी (प्पसंतिणं के०) प्रशांति थइ छे जेमने एवा छे, तथा वली (अजिअ के०) रागादिकें करी नहिं पराजय पामेलो एवो छे (संतीणं के०) शांति एटले उपशम जेमनो एवा, (अजिअसंतिणं के०) श्रीअजितनाथजी तथा शांतिनाथजी तेमने (सया के०) सदा निरंतर (नमो के०) नमस्कार थाउ ॥ ३ ॥ आ गाथानो श्लोकनामा छंद जाणवो ॥

अजिअ जिण सुह प्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम
नाम कित्तणं ॥ तह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तव
य जिणुत्तम संति कित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिया ॥

अर्थः—(अजिअजिण के०) हे अजितजिन ! तथा (पुरिसुत्तम के०) पुरुष जे मर्त्यलोक तेने विषे उत्तम एटले श्रेष्ठ तेना संबोधनने विषे हे पुरुषोत्तम ! (तव के०) तमारुं (नामकित्तणं के०) नामनुं जे कीर्त्तन ते, (सुहप्पवत्तणं के०) स्वर्गापवर्ग लक्षण जे सुख, तेनुं प्रवर्त्तन करनारुं छे. (तहय के०) तथा वली (धिइ के०) धृति ते चित्तनी स्वस्थता रूप समाधि तथा (मइ के०) मति जे बुद्धि, तेनुं (प्पवत्तणं के०) प्रवर्त्तन करनारुं छे, तथा (जिणुत्तम के०) जिन जे सामान्य केवली, तेने विषे श्रेष्ठ एवा (संति के०) हे श्रीशांतिनाथ ! (तव य के०) वली तमारा नामनुं जे (कित्तणं के०) कीर्त्तन छे, ते पण पूर्वोक्त गुणयुक्त छे. कोइ ठेकाणें पवत्तण एवो पाठ छे, तेनो अर्थ पण तेमज जाणवो ॥ ४ ॥ आ गाथानो, मागधिका नामा छंद जाणवो.

किरिआ विहि संचिअ कम्म किलेस विमुक्कयरं,
अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धि गयं॥अ
जिअस्स य संति महामुणिणोवि अ सतिकरं, सययं
मम निवुइ कारणयं च नमंसणयं॥५॥आलिंगणयं॥

अर्थः–(किरिआविहि के०) कायिक अधिकरणीयादिक पच्चीश क्रिया, तेना विधि एटले नेद, तेणेंकरी (संचिअ के०) संचित करेलां एटले एकठां करेलां एवां जे (कम्म के०) ज्ञानावरणीयादिक आठ कर्म ते थकी तथा (किलेस के०) कषाय तेथकी (विमुक्कयरं के०) मूकाव नारुं एवुं एटले ते थकी अत्यंत बनावने करावनारुं एवुं. अहीं किलेस ते कषाय तेनुं पण कर्मने विषे अंतर्गतपणुं बे, तथापि संसारना कारणने विषे कषायनुं मुख्यपणुं बे एवुं सूचन करवाने कषायपदनुं जूदुं ग्रहण क खुं बे, तथा (अजिअं के०) तीर्थांतरीय एवा अन्यदर्शनीयो जे ईश्वरादिक देवो बे, तेने वांदवानुं जे पुण्य, तेणें नथी जीत्युं जेने एवुं (च के०) वली (गुणेहिं के०) सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्रादिक जे गुणो तेणें करीने (निचियं के०) निचित एटले व्याप्त एवुं उपलक्षणथी ए गुणोनी प्राप्ति पण नगवानने नमस्कार करवाथकी थाय बे. वली (महामुणि के०) महोटा मुनियो जे ऋषियो तेमनी (सिद्धि के०) अणिमादिक आठ सि द्धियो जे बे, तेनी (गयं के०) गत एटले प्राप्ति बे जेथकी एवुं उपलक्षण थकी ते अणिमादिक आठ सिद्धिनी प्राप्ति पण नगवंतने नमस्कार करवा थकी थाय बे. एवा (अजिअस्स के०) अजितनामें जे बीजा तीर्थंकर तेमनुं अने (य के०) वली (संतिमहामुणिणोविय के०) महामुनि, विघ्नोप शांतिने करे एवा जे श्रीशांतिनाथनामा शोलमा तीर्थंकर तेनुं पण (नमं सणयं के०) विशिष्ट प्रणमन, ते (मम के०) मुने (सययं के०) निरं तर, (संतिकरं के०) विघ्नोपशांति करनारुं अने (च के०) वली (निवुइ के०) निवृत्ति जे मोक्षसुख तेनुं प्रशस्त, (कारणयं के०) कारण, (न वतु के०) हो. अहीं नवतु ए पद अध्याहारथी लेवुं. आ काव्यमां बेल्ला कारणकं ए पदमां जे क बे, ते नमनप्रशंसानेविषे बे ॥ ५ ॥ आ, आलिंगनकनामा बंद बे ॥

पुरिसा जइ दुक्खवारणं, जइ अ विमग्गह सुक्खकारणं ॥ अजि अं संतिं च ज्ञावउ, अजयकरे सरणं पवज्जह ॥६ ॥ मागहिआ ॥

अर्थः—(पुरिसा के०) हे मनुष्यो ! (जइ के०) यदि एटले जो तमें (दुक्खवारणं के०) दुःखनुं प्रतिषेधन करवुं, तेने (विमग्गह के०) विमार्गयथ एटले खोलो बो, एटले शोधने वांबो बो, अने (अ के०) वली (जइ के०) यदि एटले जो (सुक्ककारणं के०) सुखनुं कारण एटले हेतु तेने पण विमग्गह एटले खोलो बो, शोधो बो. तो (अजिअं के०) श्रीअजितनाथना (च के०) तथा (संतिं के०) श्रीशांतिनाथना (सरणं के०) शरणने (ज्ञावउ के०) ज्ञावें करीने, परंतु इव्यें करीने नहीं एवुं सूचन करवाने अर्थें ज्ञावउ ए शब्द ग्रहण कस्यो बे. (पवज्जह के०) प्रपद्यत, एटले प्राप्त थाउ. ए बेहु तीर्थंकर केहवा बे ? तो के (अजय के०) निर्जय तेने (करे के०) करे एवा बे ॥ ६ ॥ आ, मागधिका नामा बंद जाणवो ॥

एम बेहु तीर्थंकरनी स्तवना करीने, हवे अनुक्रमें एकेक तीर्थंकरनी स्तुति करे बे. तेमां पण प्रथम अजितनाथने स्तवे बे.

अरइ रइ तिमिर विरहिअ मुवरय जर मरणं, सुरअसुर गरुल जुयगवइ पयय पणिवइअं ॥ अजिअ महम विअ सुनय नय निउणमजयकरं, सरणमुवसरिअ ज्ञुवि दिविज महिअं सययमुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥

अर्थः—(अरइ के०) संयमने विषे अरति अने (रइ के०) असंयमने विषे रति एटले समाधि तथा (तिमिर के०) अज्ञान, तेणें करी (विरहिअ के०) विरहित एवा, अथवा अरति ते मोहनीयना उदयथकी उपन्यो जे चित्तोद्वेग ते अने रति ते मोहनीयोदयथकी उपनी जे चित्ताजिरति, ते बेहु सम्यक् ज्ञानने आञ्चादन करनारी बे. ते रूप तिमिर जे अंधकार,तेणें करी विरहित बे, अने वली (उवरयजरमरणं के०) उपरत एटले निवृत्ति पाम्यां बे जरा अने मरण जेनां, अथवा (उवरयजरं के०) उपरत बे जरा जेने तथा वली (अरणं के०) नथी रण ते युद्धादिक क्लेश जेने एवा, वली (सुर के०) वैमानिक देवो, (असुर के०) ज्ञवनपति, (गरु

ल के०) सुवर्ण कुमार, (नुयग के०) नागकुमार, तेना (वइ के०) प ति जे इंद्रो, उपलक्षणथकी अन्य देवोना पण इंद्रो लेवा, तेमणें (पयय के०) रूडे प्रकारें जेम थाय तेम (पणिवइयं के०) प्रणिपतितं एटले न मस्कार कस्यो ले जेने एवा, अथवा (सुर के०) वैमानिक, (असुर के०) नवनपति, (गरुल के०) ज्योतिषी, (नुयगा के०) जे वृक्षने विषे ग ना म चाले एवा जे व्यंतर, ते वनचर संज्ञायें करीने तेनुं रूढपणुं ले, ए हेतु माटे, तेमना (वइ के०) पति तेमणें (पययं के०) शुद्धतायें करीने (प णिनइयं के०) प्रणिपतितं एटले प्रणमन कर्युं ले जेमने एवा ले,वली केह वा ले? तो के (अविअ के०) अपिच एटले सर्व समीचीन एवा अन्य विशेषणोयें युक्त एवा तथा (सुनय के०) शोजन एवा जे अनेकांतरूप नै गमादिक नय, तेमनुं (नय के०) प्रतीतिनुं पामवुं, तेनें विषे (निउण के०) निपुण माह्या एवा, तथा (अनयकरं के०) निर्नय पणाना करनार अथवा नयरहित सुखना आपनारा, एवा जे जिन तेना (सरणं के०) शरण ने (उवसरिअ के०) उपसृत्य एटले पामीने (नुवि के०) नुविज ते मनुष्यो, (दिविज के०) देवो तेमणें (महिअं के०) पूजित एवा, (अजिअं के०) श्रीअजितनाथने (सययं के०) सततं एटले निरंतर (अहं के०) हुं स्तव न करनारो (उवणमे के०) उपनमामि एटले सामीप्यें करीने नमस्कार करुं ॥ ७ ॥ आ, संगतकनामा लंद जाणवो.

हवे शांतिजिनने स्तवे ले.

तं च जिणुत्तममुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्जव मद्दव खंति वि
मुत्ति समाहि निहिं ॥ संतिकरं पणमामि दमुत्तमतित्थयरं,
संति मुणी मम संतिसमाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥

अर्थः—हुं (तं के०) ते जगत्प्रसिद्ध एवा (संतिमुणी के०) शांतिनामें जे मुनि, तेने (पणमामि के०) श्रद्धापूर्वक प्रणाम करुं बुं. (च के०) च जे ले ते पादपूरणार्थ ले, ते शांतिमुनि केहवा ले ? तो के (जिण के०) सामान्य केवली तेने विषे (उत्तम के०) तीर्थंकर पणायें करीने श्रेष्ठ ले, अने (उत्तम के०) प्रधान (नित्तम के०) निस्तम एटले अज्ञानरहित एवो जे (सत्त के०) स्वनाव तेने (धरं के०) धारण करनार एवा ले. अथवा

(सत्तधरं के०) सत्र एटले नावयज्ञ तेने धारण करनारा बे, वली (अज्ज व के०) आर्जव, ते निर्मायिकपणुं (मद्दव के०) मार्दव, ते निरहंकार ता, (खंति के०) क्षमा, (विमुत्ति के०) निर्लोनता तथा (समाहि के०) समाधि तेना (निहिं के०) निधि एवा बे, तथा (संतिकरं के०) शांति जे विपत्तिनो उपशम, तेने करं एटले करनार एवा वली (दमुत्तम के०) दम जे इंद्रिय दमन एटले इंद्रियनो जय, तेणें करीने उत्तम एटले प्रधान एवा, वली (तित्थयरं के०) तीर्थ करवानुं बे शील जेनुं तेने तीर्थंकर कहियें. एवा ते श्रीशांतिनाथ (मम के०) मुजने (संति के०) शांति अने (समाहिवरं के०) प्रधान समाधि जे चित्तनी स्वस्थता, तेहीज वर एटले वांबितवस्तु तेने (दिसउ के०) द्यो, आपो ॥ ८ ॥ आ, सोपानकनामा बंद.

हवे श्री अजितनाथने गाथायुग्में करीने स्तवे बे.

सावत्थि पुव्व पत्थिवं च वर हत्थि मत्थय पसत्थ विछिन्न संथियं ॥ थिर सरिछ वछं मयगल लीलायमाण वर गंधहत्थि पत्थाण पत्थियं संथवारिहं ॥ हत्थि हत्थ बाहुं धंत कणग रुअग निरुवहय पिंजरं, पवर लस्कणोवचिय सोम चारु रूवं, सुइ सुह मणाभिराम परम रमणिज्ज वर देवडुंदुहि निनाय महुरयर सुह गिरं ॥ ९ ॥ वेड्ढउ ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअसव्वनयं नवोहरिउं ॥ पणमामि अहं पअउ, पावं पसमेउ मे नयवं ॥ १० ॥ रासालुद्धउ युग्मं ॥

अर्थः—(सावत्थि के०) श्रावस्ति शब्दें करीने अहीं अयोध्या ग्रहण करवी, ते विषे आगमनुं प्रमाण बे, जेम के—" इस्काग नूमिउज्झा, सावत्थि विणियं कोसल पुरं च " माटें ते अयोध्याने विषे (पुव्वपत्थिवं के०) पूर्वे एटले दीक्षा ग्रहणथी पहेलां पार्थिव एटले राजा हता, अथवा पूर्वे कहेली एवी अयोध्या तेना पार्थिव एटले राजा, (च के०) चकार पादपूरणार्थ बे. वली (वर के०) श्रेष्ठ एवो जे (हत्थि के०) वन हस्ती तेनुं (मत्थय के०) मस्तक तेना सरखुं (पसत्थ के०) प्रशस्त एटले प्रशंसा करवा योग्य तथा (विछिन्न के०) विस्तीर्ण एवुं बे शरीरनुं (संथियं के०) शुन संस्थान जेमनुं एवा

तथा (थिर के०) स्थिर कठिण (सरिब्र के०) सरखुं अविषम एवुं (वब्रं के०) वक्ष एटले हृदय छे जेमनुं, अथवा (थिर के०) स्वाभाविक होवाथी निश्चल एवुं जे (सरिब्र के०) श्रीवत्सनामा लक्षणविशेष ते (वब्रं के०) वक्षस्थलने विषे छे जेने एवा तथा (मयगल के०) मदोन्मत्त अने (लीला यमाण के०) लीला करतो एवो (वर क०) प्रधान जे (गंधहब्रि के०) गंधहस्ती तेनुं जे (पब्राण के०) प्रस्थान एटले गमन तेनी पेरें छे (पब्रि अं के०) पदसंक्रमण एटले गति जेमनी एवा तथा (संथवारिहं के०) संस्तव जे वर्णन करवुं, तेने अर्ह एटले योग्य तथा (हब्रिहब्र के०) हस्तीनो हस्त, जे शुंढादंम तेना सरखा सरल तथा लांबा छे (बाहुं के०) के०) बाहु जेना एवा तथा (धंत के०) धमेलुं एवुं जे (कणग के०) कनक एटले सुवर्ण तेनुं (रुअग के०) रुचक एटले भाजनविशेष अथवा आभरणविशेष तेना सरखुं (निरुवहय के०) निरुपहत एटले निष्कलंक छे (पिंजर के०) पीतवर्ण जेनो एवा तथा (पवर के०) प्रवर एटले श्रेष्ठ एवा शंख, चक्र, अंकुशादिक (लरकण के०) लक्षणो तेणें करीने (उव चिय के०) उपचित एटले व्याप्त एवा तथा (सोम के०) सौम्याकार एटले देखनाराने दृष्टिने संतोष करनारुं एवुं (चारु के०) मनोहर सुखदायक छे (रूवं के०) रूप जेमनुं एवा तथा (सुइ के०) श्रुति जे बेहु कान, तेनें (सुह के०) सुखनी दायक तथा (मण के०) मनने (अभिराम के०) मनोहर आल्हादकारिणी (परम के०) अत्यंत (रमणिज्ञ के०) रम णिक, अथवा (पर के०) उत्कृष्ट छे (मा के०) लक्ष्मी जेने एवा श्रीमंत जनो तेने अथवा (पर के०) दूर छे (मा के०) लक्ष्मी जेनी एवा द रिद्री जनो, ते बेहुने (रमणिज्ञ के०) रमाडनार एटले संतोष पमाड नार एवा, तथा (वर के०) श्रेष्ठ एवां (देवडुंडुहि के०) देवडुंडुभि तेनो (निनाय के०) शब्द तेणें करी वली (महुरयर के०) मधुरतर एटले अतिशय मधुर अने (सुह के०) शुभ कल्याणकारिणी एवी छे (गिरं के०) वाणी जेमनी एवा ॥ ए ॥ आ, वेष्टकनामा छंद जाणवो.

तथा (जिअारिगणं के०) जीत्या छे, अष्टकर्म रूप शत्रुना समूह जे णें तथा (जिअसवभयं के०) जीत्यां छे सर्व भय जेणें, एम ए पदनो अ र्थ,पूर्वे गयेला पदनी पेरें करवो. अथवा तेना पुनरुक्तिदोष परिहारने अ

र्थे आम पण अर्थ करवो, ते जेम केः–(जिय के०) जीव ते अहीं पंचें द्रिय जीव लेवा तेने (सव्व के०) श्रव्य एटले सांजलवा योग्य छे (नयं के०) नग एटले नाग्य जेमनुं एवा, तथा (नवोहरिउं के०) नवौघरिपुं एटले नव जे संसार तेनो उघ जे प्रवाह तेना रिपु एटले शत्रु छे, अर्थात् संसारनुं उच्छेदकपणुं छे जेमने एवा (अजिअं के०) श्रीअजितनाथ, ते प्रत्यें (पयउ के०) प्रयतः एटले मन, वचन अने कायायें करी उपयुक्त एवो छतो (अहं के०) हुं (पणमामि के०) प्रणाम करुं छुं; अने (नयवं के०) ते नगवान् (मे के०) महारुं (पावं के०) पाप जे छे तेने. अहिं उपलक्षणथी पुण्यकर्म पण लेवुं,कारण के ते पुण्य पण मुक्तिने प्रतिबंधक छे. तेथी एवो अर्थ थयो के, पापकर्मने तथा पुण्यकर्मने (पसमेउ के०) प्रशाम्यतु एटले प्रकर्षेंकरी शमावो; कारण के, पाप पुण्य क्षय छतेज मोक्ष छे, ते विना नथी ॥ १० ॥ आ, रासालुब्धकनामा छंद जाणवो.

हवे बे गाथायेंकरी श्रीशांतिजिनने स्तवे छे.

कुरु जणवय हत्थिणाउर, नरीसरो पढमं तउ महाचक्कवट्टि नोए महप्पनावो ॥ जो बावत्तरि पुर वर सहस्स वर नगर निगम जणवय वई, बत्तीसा राय वर सहसाणुयायमग्गो ॥ चउदस वर रयण नव महानिहि चउसठि सहस्स पवर जुवईण सुंदरवई, चुलसी हय गय रह सयसहस्स सामी, छन्नवई गामकोडि सामी आसिजो नारहम्मि नयवं ॥११॥ वेढउ ॥ तं संतिं संतिकरं,संतिण्णं सव्वनया ॥ संतिं थुणामि जिणं, संतिं वेहेउं मे ॥ १२ ॥ रासानंदियं ॥ युग्मम् ॥

अर्थः–(कुरु के०) कुरु नामें जे (जणवय के०) जनपद एटले देश, तेने विषे जे (हत्थिणाउर के०) हस्तिनापुर नगर, तेना (नरीसरो के०) राजा ते (पढमं के०) प्रथम थया. (तउ के०) तेवार पछी (महा के०) महोटा (चक्कवट्टि के०) चक्रवर्त्ती तेनो (नोए के०) नोग जे राज्य, तेने विषे वर्त्तता हवा, एटले छ खंमना राज्यना नोग नोगव्या. (महप्पनावो के०) महोटो जेनो प्रनाव एटले महिमा छे, अथवा मह एटलें उत्स

वोयें करी आत्माने विषे प्रीति धरनारा छे, वली केहवा छे ? तो के (जो बावत्तरिपुरवरसहस्स के०) जे बहोंतेर हजार पुरवर एटले घरो तेणेंकरी वर एटले प्रधान एवा (वरनगर के०) श्रेष्ठ नगर जे गजपुरादि, जेमां कर नहीं ते नगर कहीयें, अने (निगम के०) ज्यां महोटा रूद्धिवंत वणिक व्यवसाय करनारानी डुकानो होय, ते निगम कहियें, तथा (जणवय के०) जनपद ते देशविशेष जाणवा. तेना (वइ के०) अधिपति, स्वामी अथवा प्रकारांतरें बहोतेर सहस्र पुरवर; तथा बहोतेर हजार वर नगर, निगम, तथा जनपद, तेना स्वामी एवा अने (बत्तीसारायवरसहस्सा के०) बत्रीश हजार एवा जे रायवर एटले मुकुटबद्ध राजा ते बत्रीश हजार देशना नायकें (अणुयायमग्गो के०) अनुयात छे मार्ग जेमनो एटले ते बत्रीश हजार देशना मुकुटबद्ध बत्रीश हजार राजा ते सर्व श्रीशांतिनाथनामा चक्रवर्त्तिनी पछवाडे चालनारा छे. तथा (चउदस के०) चउद छे (वर के०) श्रेष्ठ एवा (रयण के०) रत्न जेने एवा तथा (नवमहानिहि के०) नव महोटा निधि एटले निधान नंमार ते अखूट छे जेने, वली (चउसठ्ठिसहस्स के०) चोशठ हजार (पवर के०) प्रवर एटले श्रेष्ठ एवी (जुवईण के०) युवती जे स्त्री तेना (सुंदरवइ के०) सुंदर पति एटले नर्त्तार छे, वली (चुलसी के०) चोराशी (सयसहस्स के०) शतसहस्र एटले चोराशी शो हजार अर्थात् चोराशी लाख (हय के०) घोडा तथा चोराशी लाख (गय के०) गज ते हस्ती तथा चोराशी लाख (रह के०) रथ, तेना (सामी के०) स्वामी अधिपति जाणवा. वली कोइ ठेकाणें अढार क्रोड घोडा पण कह्या छे, तथा वली (छन्नुवइगामकोडि के०) छन्नु क्रोड गाम तेना (सामी के०) स्वामी एवा (नयवं के०) नगवान् श्रीशांतिनाथ ते (नारहम्मि के०) नरतक्षेत्रने विषे (आसिछ्रो के०) होता हवा ॥ ११ ॥ आ, वेष्टकनामा छंद जाणवो.

अर्थः—(तं के०) ते पूर्वोक्त (संतिं के०) मूर्त्तिमान् उपशम रूप एवा तथा (संतिक के०) स्व एटले पोताना अंतिक समीप जे मोक्ष लक्षण, तेने (रं के०) आपनार एवा अने (संतिसं के०) रूडे प्रकारें तर्युं छे (सव्व के०) सर्वोएं (नय के०) मृत्यु नय जेथकी, अर्थात् जेथकी सर्व लोक मृत्युनय तरी गया छे, एवा (संतिं के०) श्रीशांतिनाथ (जिण के०)

तीर्थंकर तेने (थुणामि के०) स्तुति करुं बुं. श्या माटें स्तुति करुं बुं ? तो के (मे के०) महारा उपसर्गनी (संतिं के०) शांति तेने (वेहेउं के०) विधातुं एटलें करवाने अर्थें स्तुति करुं बुं ॥ १२ ॥ आ, रासानंदित बंद बे.

वली अजितनाथने स्तवे बे.

इस्काग विदेह नरीसर, नर वसहा मुणि वसहा ॥ नवसारय ससि सकलाणण, विगय तमा विहुअरया ॥ अजिउत्तम तेअगुणेहिं, महामुणि अमिअबला विउलकुला ॥ पणमा मि ते नव नय मूरण, जग सरणा मम सरणं ॥१३॥ चित्तलेहा ॥

अर्थः–(इस्काग के०) इक्ष्वाकुकुलवंशमां उत्पन्न थया माटें हे इस्काग कुलवंश्य ! तथा (विदेह के०) विदेहनामा देश तेना (नरीसर के०) नरेश्वर एटले राजा माटें हे विदेहनरेश्वर ! अथवा (वि के०) विविध प्रकारनां पापें करी देह जे आत्मा तेने लिप्त करे बे तेने विदेह कहीयें. इहां विदेह ते गृहवास जाणवो, ते गृहवासमां राजा हता माटें गृहवासने विषे जे नरीसर एटले राजा हता एवा, तथा (नर के०) मनुष्य तेमां (वसहा के०) वृषन एटले श्रेष्ठ माटें हे नरवृषन ! तथा (मुणिवसहा के०) मुनिमांहे एक अद्वितीय एटले मुनिधर्ममां धोरी, अथवा मुनींड्रोनी सन्ना तेने विषे बे नवो स्तव जेमनो एवा, तेना संबोधनें हे मुनिवृषन ! अथवा (मुनि के०) मुनिनो जे वृष एटले क्षांत्यादिक दश प्रकारनो धर्म ते (न के०) प्रकाश पामे बे जे थकी एवा, तथा (नव के०) नवो उग्यो एवो जे (सारय के०) शारद एटले शरदऋतु संबंधि (ससि सकल के०) पूर्ण चंड्मा तेना जेवुं बे (आणण के०) आनन एटले मुख जेमनुं माटें हे नवशारदशशिसकलानन ! वली (विगयतमा के०) गयुं बे तम ते अज्ञान रूप अंधकार जेना थकी माटें हे विगततम ! तथा (विहुयरया के०) विधुत एटले गयुं बे फेडयुं बे बध्यमान अने बद्धकर्मरूप रज जेणें माटें हे विधुतरज ! तथा (अजिअ के०) रागादिकें न जीताय माटें हे अजित ! तथा (गुणेहिं के०) बाह्य अन्यंतर एवा गुणोयें करी (उत्तम के०) श्रेष्ठ बे, (तेअ के०) तेज जेमनुं एवा माटें हे उत्तमतेज ! तथा (महामुणि के०) महातपस्वीउ जे महोटा मुनिउ बे, तेउथी पण (अमिअ के०)

प्रमाण थइ न शकें एवुं ने (बला के०) सामर्थ्य जेमनुं एटलें अपरिमित बल ने जेमनुं एवा माटें हे महामुन्यमितबल! तथा (विउलकुला के०) विपुल एटले विस्तीर्ण ने कुल एटले वंश जेमनो माटें हे विपुलकुल! (ते के०) तुझं एटले तमने (पणमामि के०) वंदन करुं बुं. वली (नवनय के०) संसारथी उत्पन्न थयुं जे नय, तेने (मूरण के०) नांजनार माटें हे नवनयमूरण! तथा (जगसरणा के०) जगत्ना शरण रक्षण करनार माटें हे जगच्छरण! तमें (मम के०) मने पण (सरणं के०) रक्षण करनार बो, अथवा (अमम के०) ममत्व रहित बो माटें हे अमम ॥१३॥ आ चित्रलेखा नामक बंद जाणवो.

हवे शांतिजिनने स्तवे बे.

देव दाणविंद चंद सूर वंद हठ तुठ जिठ परम॥ लठ रूव धंत रुप्प पट्ट सेय सुद्ध निद्ध धवल॥ दंत पंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर॥ दित्त तेअ वंद धेअ सव्व लोअ नाविअ प्पनावणेअ पइसमे समाहिं॥ १४ ॥ नारायन ॥

अर्थः—(देव के०) वैमानिक देवो (दाणव के०) असुर ते नवनपति देवो, तेना (इंद के०) इंड, तथा (चंद के०) चंडमा अने (सूर के०) सूर्य, तेमने (वंद के०) वंदन करवा योग्य तथा (हठ के०) आरोग्यवंत (तुठ के०) संतोषयुक्त (जिठ के०) ज्येष्ठ एटले अतिशय प्रशंसा करवा योग्य (परम लठ के०) अत्यंत सुंदर कांति युक्त ने (रूव के०) रूप जेमनुं, तथा (धंत के०) धमेलुं एवुं (रुप्प के०) रूपुं,तेनो (पट्ट के०) पाटो, तेनी पेरें निबिड होवाथी (सेय के०) श्रेय एटले श्रेष्ठ (सुद्ध के०) निर्मल (निद्ध के०) स्निग्ध अरूक्ष एवी (धवल के०) उज्ज्वल ने (दंतपंति के०) दांतनी पंक्ति जेमनी, तथा (सत्ति के०) शक्ति ते पराक्रम जो सर्व देवता एकठा मलें, तो पण परमेश्वरनी पगनी टचली आंगुली चलावी न शके, अथवा मेरु पर्वतने टचली आंगुलीयें करी उपाडे,एटली शक्ति ने. (कित्ति के०) कीर्त्ति ने समुद्रांत जेहनी तथा (मुत्ति के०) मुक्ति ते निर्लोनता (जुत्ति के०) युक्ति ते न्यायोपेत वचन, (गुत्ति के०) गुप्ति ते त्रण प्रसिद्ध ने, तेणें करीने (पवर के०) श्रेष्ठ ने, तथा (दित्ततेअ के०) दीप्त ने तेजनुं (वंद के०)

वृंद एटले समूह जेमनो तथा (धय के०) ध्यान करवा योग्य अथवा (दित्ततेअवंदधेय के०) दीप्ततेज अने वंदन करवा योग्य एवा जे महाऋषीउं तेमने पण धेय एटले ध्यान करवा योग्य तथा (सव्व के०) सर्व एवा जे (लोअ के०) लोक तेणें (नाविअ के०) नावित ले,अवबुद्ध ले, आप्ले लो ले (प्पनाव के०) प्रनाव जे महिमा तेणें करी (णेअ के०) ज्ञेय एटले जाणवा योग्य एवा (संति के०) हे श्रीशांतिनाथ! तमें (मे के०) मुऊने (समाहिं के०) समाधिने (पइस के०) प्रदिश एटले आपो ॥ १४ ॥ आ, नाराचक नामा छंद जाणवो ॥

हवे गाथायुग्मे करीने अजितनाथने स्तवे ले.

विमल ससि कलाइरेअ सोमं, वितिमिर सूर कराइरेअ
तेअं ॥ तिअसवइ गुणाइरेअ रूवं, धरणिधर प्पवराइरे
अ सारं ॥१५॥ कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारी
रे अ बले अजिअं ॥ तव संजमे अ अजिअं, एस अहं
थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ नुअगपरिरिंगिअं ॥

अर्थः–(विमल के०) निर्मल एवी (ससिकला के०) चंद्रमानी कला तेथकी (अइरेअ के०) अतिरेक ते अधिक ले (सोमं के०) सौम्यता जेनी तथा (वितिमिर के०) गयो ले मेघनो अंधकार जे थकी एवा (सूरकर के०) सूर्यना किरणो ते थकी पण (अइरेअ के०) अधिक ले (तेअं के०) तेज जेनुं एवा ले, तथा (तिअसवइ के०) त्रिदश जे देवता तेना पति जे इंद्र तेना (गण के०) समूह; तेथकी पण (अइरेअ के०) अधिक ले (रूवं के०) रूप जेनुं, जेमाटे सर्व देवता मली पोतानुं रूप एकत्र करी परमेश्वरनी टचली अंगुली पासें मूके, तोपण सुवर्ण अने त्रांबाना रूपमां जेटलो तफावत होय, तेटलो तफावत त्यां देखाय, एवुं तीर्थंकरनुं रूप वखाण्युं ले, तथा (धरणिधर के०) पर्वतो तेमांहे (प्पवर के०) प्रधान श्रेष्ठ एवो जे मेरु पर्वत, तेथकी पण (अइरेअ के०) अधिक ले (सारं के०) स्थैर्य एटले स्थिरपणुं जेमनुं एवा ले ॥ १५ ॥ आ, कुसुमलता नामा छंद जाणवो ॥

तथा (सत्ते के०) सत्वने विषे (सया के०) निरंतर (अजिअं के०) अजित छे एटले जेनो कोइयें पराजव करेलो नथी एवा छे, चकार पादपूरणार्थ छे, तथा (अ के०) वली (सारीरे के०) देह संबंधि जे (बले के०) बल एटले सामर्थ्य तेने विषे पण (अजिअं के०) बीजा कोइयें जीतेला नथी एवा छे, तथा (तव के०) बार प्रकारनुं तप (अ के०) वली (संजमे के०) सत्तर प्रकारनो संयम तेनो समूह तेने विषे पण (अजिअं के०) बीजा कोइयें नही जीतेला एवा, (अजिअं के०) श्री अजितनाथ नामा (जिणं के०) जिनवर तेमने (एस के०) आ (अहं के०) हुं (थुणामि के०) स्तवुं छुं ॥१६॥ आ, जुजगपरिरिंगित नाम छंद.

हवे विमलससी इत्यादिक कहेला अर्थने प्रकारांतरें करीने कहे छे.

सोम्मगुणेहिं पावइ न तं, नव सरय ससी ॥ तेअ गुणेहिं पावइ न तं, नव सरय रवी ॥ रूवगुणेहिं पावइ न तं, तिअस गणव ई ॥ सारगुणेहिं पावइ न तं, धरणिधरवई ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥

अर्थः—(सोम्मगुणेहिं के०) सौम्य जे अल्हादकपणुं तेना जे सर्वथी उत्कर्ष पामेला एवा गुण तेणें करीने (नव के०) नवो उदयमान थयेलो (सरय के०) शरत् काल संबंधि जे (ससी के०) चंइमा ते पण (तं के०) ते श्रीअजितनाथना सौम्यतागुणने एटले ते सरखी सौम्यता प्रत्यें (नपावइ के०) पामी न शके, तथा (तेअगुणेहिं के०) तेज एटले प्रताप तेना गुणें करीने (नवसरयरवी के०) नवो उगेलो एवो जे शरद् कालनो सूर्य एटले शरत् ऋतुमां आकाश निर्मल होवाथी सूर्यनुं तेज श्रेष्ठ होय छे, माटें ते ऋतुमां उदय पामेलो अति तेजस्वी सूर्य पण (तं के०) ते श्रीअजितनाथने (न पावइ के०) पामी न शके. एटले अजितनाथनी बराबरी करी शके नहीं. तथा (रूवगुणेहिं के०) रूपगुणें करीने (तिअस गणवई के०) त्रिदशगण जे देवताना समूह, तेना पति जे इंइ, ते पण (तं के०) ते अलौकिकरूपसंपन्न एवा श्रीअजितनाथने (न पावइ के०) पामी न शके, तथा (सारगुणेहिं के०) स्थिरताना गुणोयें करीने धरणिधर के०) पर्वतो तेनो (वई के०) पति एवो जे मेरुपर्वत, ते पण (तं के०) ते स्थिरतागुणसंपन्न एवा श्री अजितनाथने (न पावइ के०) पामी शके

नहीं, अर्थात् ए पूर्वोक्त सर्व पदार्थो नगवंतना गुणनी बराबरी करी शकता नथी. ॥ १७ ॥ आ, खिज्जितक नामा छंद जाणवो.

हवे श्री शांतिनाथजीने स्तवे छे.

तिछवरपवत्तयं तम रय रहियं धीर जण थुअच्चिअं चु
अकलिकलुसं ॥ संति सुहप्पवत्तयं तिगरणपयउ सं
तिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥

अर्थः—(तिछवर के०) श्रेष्ठतीर्थ जे चतुर्विध संघ,अथवा प्रथम गणधर तेना (पवत्तयं के०) प्रवर्त्तक अथवा तीर्थमां वर एटले श्रेष्ठ एवो जे धर्म तेने तीर्थवर कहियें. ते धर्मरूप तीर्थना प्रवर्त्तक एवा तथा (तम के०) अज्ञान (रय के०) रज ते बध्यमानकर्म, उपलक्षणथी बांधेलुं कर्म पण लेवुं, तेणें करी (रहियं के०) रहित एवा अथवा तमरज ते तमोगुण अने रजोगुण तेणे करी रहित. तथा (धीर के०) बुद्धियें करी शोने, तेने धीर कहियें, एवा तथा (जण के०) नव्यलोकोए (थुअ के०) वाणीयें करी स्तुति कस्या एवा अने (अच्चिअं के०) पुष्पादिकेंकरी अर्चन कस्या एवा तथा (चुअ के०) नाश पाम्युं छे (कलि के०) वैर अथवा कलह तेनुं जे (कलुसं के०) कालुष्य एटले पाप जेनुं एवा तथा (संति के०) मोक्ष तेनुं जे (सुह के०) सुख तेने अर्थें (पवत्त के०) प्रवृत्त थयेला एवा जे साधु उ तेने यं एटले पालन करनार एवा (महामुणिं के०) महोटा मुनि जे श्रीशांतिनाथजी ते प्रत्यें (तिगरण के०) त्रिकरण एटले मन, वचन अने काया ए त्रण करण तेणें करी (पयउ के०) पवित्र छतो एवो (अहं के०) हुं (सरणं के०) शरण प्रत्यें (उवणमे के०) उपनमे एटले जाउं छुं ॥ १८ ॥ आ ललितक नामा छंद जाणवो ॥

हवे त्रण श्लोकें करी अजितनाथजीने स्तवे छे.

विणउ णय सिरि रइ अंजलि रिसिगण संथुअं थिमिअं ॥
विबुहाहिव धणवइ नरवइ थुय महिअच्चिअं बहुसो अइरु
ग्गय सरय दिवायर समहिअसप्पनं तवसा ॥ गयणंगण वि
यरण समुइय चारण वंदिअं सिरसा॥१९॥ किसलयमाला॥

असुर गरुल परिवंदिअं,किंनरोरगणमंसिअं॥ देवकोडि स
य संथुअं,समण संघ परिवंदिअं ॥२०॥सुमुहं॥अनयं अण
हं अरयं अजियं अजिअं पयउ पणमे॥२१॥विज्जुविलसिअं॥

अर्थः– (विणउणय के०) विनयें करी नत एटले नम्या एवा (सिरि के०) मस्तक तेने विषे (रइ के०) रची डे जोडी डे (अंजलि के०) करसंपुट जेमणें एवा जे (रिसिगण के०) रुषिउंना समूह तेमणें (संथुअं के०) रूडे प्रकारें स्तुति करी डे जेमनी एवा, तथा (थिमिअं के०) स्तिमित एटले तरंगरहित एवो जे समुड़ तेनी पेरें निश्चल डे. कारण के कर्मकृत उंच नीच पणानो अनाव डे तथा (विबुहाहिव के०) विबुधाधिप एटले विबुध जे देवता तेमना अधिप जे इंड़ो तेमणे तथा (धणवइ के०) धनपति जे धनद कुबेर लोकपाल, उपलक्षणथी बीजा पण सर्व धनाढ्य जे डे, तेमणें तथा (नरवइ के०) नरपति जे राजाउ चक्रवर्त्ती तेमणें (बहुसो के०) घणी वार (थुय के०) वाणियें करी स्तव्या, (महिअ के०) प्रणामादिकें करी पुजन कस्या एवा तथा (अच्चिअं के०) पुष्पादिकें करी अर्चित एटले पूजन कस्या अर्थात् पूज्या एवा तथा (तवसा के०) तपें करीने (अइरुग्गय के०) अचिरोजत एटले तत्कालनो उदय थयेलो एवो जे (सरय के०) शरद् रुतुनो (दिवायर के०) दिवाकर एटले सूर्य, तेथकी पण (समहिअ के०) समधिक एटले अत्यंत अधिक डे (सप्पनं के०) स्वप्रनं एटले पोतानी प्रना जे कांति ते डे जेमनी एवा तथा (गयणंगण के०) गगनांगण जे आकाशरूप अंगण तेने विषे (वियरण के०) विचरण एटले विचरवुं, चालवुं, तेणें करीने (समुइअ के०) समुदित एटले एकठा थयेला एवा जे (चारण के०) जंघाचारणादिक मुनिउ तेमणें (सिरसा के०) मस्तकें करीने (वंदिअं के०) वंदन कस्युं डे जेमने एवा डे ॥१ए॥ आ, किसलयमालानामा बंद जाणवो ॥

वली केहेवा डे ? तो के (असुर के०) असुर कुमार, (गरुल के०) सुवर्णकुमार, उपलक्षणथी बीजा पण सर्व निकायना नवनपति देवो जे डे, ते पण लेवा. तेमणें (परिवंदिअं के०) समस्त प्रकारें वंदन कस्या एवा तथा (किन्नरोरग के०) किन्नर अने उरग जे व्यंतरविशेष, अने उपलक्

एथी बीजा पण तज्जातीय देवो लेवा, तेमणें (णमंसिअं के०) नमस्कार कस्यो ले जेमने एवा तथा (देव के०) वैमानिक देवो तेमनी (कोडिसय के०) कोटिशत एटले शेंकडा गमे कोटिउ तेमणें (संथुअं के०) सम्यक् प्रकारें स्तुति करी ले जेमनी एवा तथा (समणसंघ के०) यति अथवा श्रमण तेमनो जे संघ एटले समूह, तेणें (परिवंदिअं के०) परि समंतात् एटले चोतरफ नावें करीने वंदन कस्युं ले जेमने एवा ले ॥ २० ॥ आ, सुमुखनामा लंद जाणवो ॥

वली केहेवा ले ? तो के (अनयं के०) सात प्रकारना नयें करी रहित एवा तथा (अणहं के०) अनघ एटले जेने अघ जे पाप व्यसन अने डुःख, ते अ एटले नथी तेने अनघ कहियें, एवा तथा (अरयं के०) अरतं एटले जेने वैरागपणायें करीने विषयासक्त पणुं नथी एवा अथवा अरत एटले मैथुनरहित ले एवा तथा (अरुयं के०) अरुजं एटले रोगरहित ले तथा (अजियं के०) बाह्य अने अन्यंतर वैरीउयें जेनो परानव कस्यो नथी, एवा (अजिअं के०) श्रीअजितनाथ तेमने (पयउ के०) पवित्र लतो सादर पणे अथवा पयउ एटले तेमना बे पगने विषे (पणमे के०) हुं प्रणाम करुं लुं ॥ २१ ॥ आ विद्युत् विलसित नामा लंद जाणवो ॥

हवे चार श्लोकें करीने श्री शांतिनाथजीने स्तवे ले.

आगया वर विमाण, दिव्व कणग रह तुरय पहकर सएहिं हुलिअं ॥ ससंनमो अरण, खुनिअ लुलिअ चल कुंमलं गय तिरीड सोहंत मउलिमाला ॥ २२ ॥ वेढउ ॥ जं सुर संघा सासुरसंघा, वेरविउत्ता नत्ति सुजुत्ता ॥ आयर नूसिअ संनम पिंमिअ, सुट्टु सुविम्हिअ सव्व बलोघा ॥ उत्तम कंचण रयण परूविअ, नासुर नूसण नासुरिअंगा ॥ गाय समोणय नत्ति वसागय, पंजलि पेसिअ सीस पणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं ॥ पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सनवणाइं तो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं मुहामुणि

भुहं पि पंजली, रागं दोस भय मोह वज्जिअं ॥ देव दाणव न रिंद वंदिअं, संति मुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥

अर्थः-(आगया के०) आगता एटले आव्या एवा जे सुरसमुदाय श्री शांतिनाथन समीपें ते केवी रीतें आव्या छे? तो के (वरविमाण के०) श्रेष्ठ एवा विमान तथा (दिव्व के०) मनोहर एवा (कणगरह के०) कनक मय रथ, (तुरय के०) तुरंग तेना (पहकर के०) समूह तेना (सए हिं के०) शेंकडायें करीने (हुलिअं के०) शीघ्र उतावला वेगें तथा (स संभम के०) ससंभ्रम एटले त्वरायें करी सत्वर (उअरण के०) आकाशथकी उतरवुं तेणें करीने (खुभिअ के०) क्षुभित एटले संच लित छते (लुलिअ के०) लोलायमान अरहां परहां हालतां (चल के०) चंचल एवा (कुंमल के०) काननां आभरण कुंमलविशेष तथा (अंगय के०) अंगद जे बाजुबंध (तिरीड के०) किरीट जे मुकुट तेणें करी (सोहंत के०) शोभायमान थइ एवी छे (मउलिमाला के०) मस्त कनी माला जेमनी एवा देवो छे ॥ २२ ॥ आ, वेष्टक नामा छंद जाणवो.

(जं के०) जे भगवंतने समिपें (सुरसंघा के०) वैमानिक देवना समूह आव्या छे. तें केहेवा छे तो के (सासुरसंघा के०) असुर जे भ वनपत्यादिक देव तेना संघ जे समूह तेणें करी सहित एवा छे तथा (वेर विउत्ता के०) वैरविमुक्ता एटले वैररहित छे एवा तथा (भत्तिसुजुत्ता के०) सद्भक्तियें करी बहुमानें करीने सहित एवा तथा (आयर के०) बाह्योपचा र रूप आदर तेणें करी (भूसिय के०) भूषित एटले शोभित तथा (संभ म के०) उतावलें करी (पिंमिअ के०) एकठा मल्या एवा (सुहु के०) सुष्ठु एटले अतिशयें करी (सुविम्हिअ के०) सुविस्मित जेम होय, तेनी पे रें (सव्व के०) सर्व जे (बल के०) गजतुरंगमादिक कटक, तेनो (उघा के०) समूह तथा (उत्तम के०) श्रेष्ठ एवुं जे (कंचण के०) सुवर्ण अने (रयण के०) रत्न तेणें करीने (परूविअ के०) प्रकृष्टरूपयुक्त कर्यां एवा (भासुर के०) दीप्तिमंत जलहलता जे (भूसण के०) भुजबंध कटकादि आभरण तेणें करी (भासुरिय के०) देदीप्यमान छे (अं गा के०) अंगो जेमनां एवा तथा (गाय के०) गात्र ते शरीर, तेणें

करीने (समोणय के०) समवनत ते सम्यक् प्रकारें नम्रीभूत थया थका तथा (भत्तिवसागय के०) भक्तिने वशे आवेला एटले भक्तिनी आधीनताने प्राप्त थया थका (पंजलि के०) बे हाथ ललाटें लगाडीने (पेसिय के०) प्रेषित एटलें कस्यो छे (सीसपणामा के०) मस्तकें करीने प्रणाम जेमणें एवा छे ॥ २३ ॥ आ रत्नमाला नामा छंद जाणवो.

एवी रीतें (वंदिऊण के०) वंदन करीने (तो कें०) तेवार पछी (य के०) वली (तिगुणमेव के०) त्रण वारज (पयाहिणं के०) प्रदक्षिणा करी छे जेमने एवा अर्थात् त्रण प्रदक्षिणायें करीने उपासित एवा ते, (जिणं के०) श्रीशांतिजिन, ते प्रत्यें (य के०) वली ते देवो (थोऊण के०) वाणीथी स्तुति करीने (पुणो के०) फरीने पोताना स्थानक प्रत्यें जवाना अवसरें (जिणं के०) श्रीशांतिजिनप्रत्यें (पणमिऊण के०) प्रणाम करीने एटले नमस्कार करीनें (सुरासुरा के०) सुर अने असुर जे देवो छे, ते (पमुइआ के०) प्रमुदिता एटले हर्षित थया थका (सभवणाइं के०) पोताना भवन जे सौधमादिक ते प्रत्यें (तो के०) ते स्थानक थकी (गया कें०) गता एटले जाता हवा ॥ २४ ॥ आ क्षिप्तकनामा छंद जाणवो.

(तं के०) ते (संतिं कें०) श्रीशांतिजिन तेने (अहंपि के०) हुं पण (पंजली के०) प्रांजलिः एटले जोड्या छे हाथ जेणें एवो छतो (नमे के०) नमस्कार करुं छुं, ते शांतिजिन केहवा छे? तो के (महामुणिं के०) महोटा मुनिउ छे शिष्य जेमना एवा छे, तथा (राग के०) माया अने लोभ रूप राग, अने (दोस के०) क्रोध, मान रूप द्वेष, (भय के०) भीति ते उद्वेग, (मोह के०) अज्ञान, तेणें करी (वज्जियं के०) वर्जित छे. तथा (देवदाणवनरिंद के०) देव, दानव अने नरेंद्र, तेमणें (वंदिअं के०) वंदित छे एटले वांद्या एवा छे, अथवा देवेंद्र दानवेंद्र अने नरेंद्र तथा तदाश्रित लोकोने (वंदि के०) बंदीखानारूप जे संसार, तेंने (अं के०) दं एटले खंडन करे एवा छे, तथा (उत्तम के०) प्रधान एवुं (महातवं के०) महोटुं छे तप जेमनुं एवा छे ॥२५॥ आ क्षिप्तक नाम छंद जाणवो.

हवे अजितनाथने चार श्लोकें करीने स्तवे छे.

अंबरंतर विआरणिआहिं, ललिअ हंस वहुगामिणि

आहिं ॥ पीण सोणि थण सालिणिआहिं, सकल कमल दल लोअणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर थण नर विणमिअ गायलआहिं ॥ मणि कंचण पसिढिल मेहल सोहिअ सोणितडाहिं ॥ वर खिंखिणि नेउर सतिलय वलय विनूसणिआहिं रइकर चउर मणोहर सुंदर दंसणि आहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देव सुंदरीहिं पाय वंदिआहिं वंदिया य जस्स तेसुविक्कमा कमा अप्पणो निडालएहिं मंमणोङ्गणपगारएहिं केहिं केहिंवी अवंग तिलय पत्तलेह नामएहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं नत्ति संनिविठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥२८॥ नारायउ ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअ मोहं ॥ धुय सव्व किलेसं, पयउ पणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥

अर्थः—आ आगलना छंदोमां कहेशे एवा प्रकारनी देवांगनाउयें जेमना चरणारविंदने वंदन कर्युं छे तेम छतां पण जेमनुं मन किंचित् पण विकारने पाम्युं नही, एवा जे श्रीअजितनाथ नगवान्, तेमने हुं नमस्कार करुं छुं. हवे ते देवांगनाउ कहेवीउ छे? तो के (अंबरंतर के०) आकाशमार्गना अंतरालने विषे (विआरणिआहिं के०) विचरवानुं छे शील जेमनुं तथा (ललिअ के०) रमणीय एवी जे (हंसवहु के०) हंसवधू जे हंसी तेनी परें (गामिणिआहिं के०) गमन करवानुं छे शील जेमनुं, तथा (पीण के०) पुष्ट एवो जे (सोणि के०) कटिप्रदेश तथा (थण के०) स्तन ते उरोज तेणें करीने (सालिणिआहिं के०) शोनती एवी तथा (सकल के०) संपूर्ण (कमल के०) पद्म तेनां (दल के०) पत्रो, ते समान छे (लोअणिआहिं के०) लोचन जेमनां एवीउ छे ॥ २६ ॥ आ, दीपक नामा छंद.

वली ते देवसुंदरीयो केहेवीउ छे ? तो के (पीण के०) पुष्ट महोटा अने कामुक पुरुषना हृदयने आल्हादकारक एवा अने (निरंतर के०) निर्व्यवधान पणुं छे ए हेतु माटें निबिड गाढ एवा (थण के०) स्तन जे पयोधर तेनो (नर के०) नार तेणें करी (विणमिअ के०) विशेषें करीने नमेला छे

(गायलआहिं के०) गात्रो जेमनां अर्थात् सुकुमारपणुं तथा तनुपणुं वे माटें स्तन जारें करी लतावल्लीनी पेरें अत्यंत नमेलां वे शरीर जेमनां एवीउ, तथा (मणि के०) मणिउ माणको अने (कंचण के०) सुवर्ण, तेनी करेली एवी अने (पसिढिल के०) प्रकर्षे करी शिथिल एवी जे (मेहल के०) मेखला, तेणें करीने (सोहिअ के०) शोभित वे (सोणि तडाहिं के०) कटिनो प्रदेश जेमनो एवीयो तथा (वर के०) श्रेष्ठ एवी (खिंखिणि के०) किंकिणी अने (नेउर के०) नेफुर वली (सतिलय के०) मनोहर तिलक तथा (वलय के०) कंकण, एवां जे आजूषण तेणें करीने (विजूसणिआहिं के०) विशेषें करीनें सुशोजित एवीयो तथा (रइ कर के०) रतिकर एटले प्रीति करनार एवुं तथा (चउरमणोहर के०) चतुर पुरुषना मनने हरण करनारुं एवुं (सुंदरदंसणिआहिं के०) सुंदर वे दर्शन जेमनुं एवीयो ॥ २७ ॥ आ, चित्राक्षरनामा वंद जाणवो.

तथा (पायवंदिआहिं के०) पोताना शरीरने विषे पहेरेलां जूषणोनां अथवा शरीरनां पाद जे किरणो तेना वृंद ते समूह वे जेमने एवीयो जे देवांगनाउ तेमणें (वंदिया के०) वंदन कर्यां, (च के०) च पादपूरणार्थ वे. ते शुं वंदन कर्यां वे? तो के (जस्स के०) जे जगवंतना (ते के०) तो एटले ते प्रसिद्ध एवां अने (सुविक्कमा के०) रूडुं वे पराक्रम जेमनुं अथवा गति जेमनी एवां (कमा के०) चरणारविंद, तेने वंदन कर्यां. चरणारविंद शेणें करी वंदन कर्यां ? तो के (अप्पणोनिडालएहिं के०) पोतानां जला टोयें करीने. ते देवीयो केहवीयो वे ? तो के जेमना शरीरनें विषे (मंमण के०) आजूषण तेनी (उम्मण के०) रचना तेना (पगारएहिं के०) प्रकारो, तें (केहिंकेहिंवी के०) केहेवा केहेवा अपूर्व प्रकारो, ते कहे वे. (अवंग के०) अपांग जे नेत्र तेना प्रांतमां जे अंजननी रचना तथा (तिलय के०) तिलक एटले टीलां, (पत्तलेह के०) पत्रलेख ते कस्तूरिकादिकना शरीरने विषे करेलां जे टबकां इत्यादिक (नामएहिं के०) नाम वे जेनां एवा (चिल्लएहिं के०) देदीप्यमान मंमननी रचनायें करी (संगय के०) सहित वे (अंगआहिं के०) शरीरना अवयव जेमना एवी देवांगनाउ ते (जत्तिसंन्निविठ के०) जक्तियें करीने व्याप्त थकी (वंदणा के०) वंदनने माटें (आगयाहिं के०) आवेलीउ एवीउ वे. ते देवीउयें (ते के०) ते

पूर्वोक्त तमारां चरणारविंदने श्रद्धातिशयें करीने (पुणोपुणो के०) वारं वार (वंदिआ के०) वंदन करेलां एवां तमारा चरणारविंद (हुंति के०) छे. अर्थात् तमारा चरणारविंदने श्रद्धातिशय थकी देवांगनाउ वारंवार वंदन करे छे ॥ २७ ॥ आ, नाराचक नामा छंद जाणवो.

(तं के०) ते पूर्वोक्त (जिणचंद के०) जिनोमध्यें चंद्रमा समान एवा तथा (जिअमोहं के०) जीत्यो छे मोह एटले अज्ञान जेमणें एवा तथा (धुअ के०) टाल्या छे (सव्व के०) समग्र एवां जे कर्मजनित शारीरिक अने मानसिक (किलेसं के०) क्लेश जेमणें एवा (अजिअं के०) श्रीअजितनाथ नामा बीजा तीर्थंकर तेने (पयउ के०) प्रयत ते मन, वचन अने कायाना उद्यमें करी युक्त थको एवो (अहं के०) हुं पण (पणमामि के०) प्रणमन करुं छुं, एटले नमस्कार करुं छुं ॥ २९ ॥ आ, नंदितक नामा छंद जाणवो.

हवे गाथा युग्में करीने श्री शांतिनाथने स्तवे छे.

थुअ वंदिअयस्सा रिसि गण देव गणेहिं, तो देवव हूहिं पयउ पणमिअस्सा ॥ जस्स जगुत्तम सासण यस्सा, भत्ति वसागय पिंमिअयाहिं देववरछरसा बहुयाहिं सुर वर रइ गुण पंमिय आहिं ॥ ३० ॥ भासुरयं ॥ वंस सद्द तंति ताल मेलिए तिउक्खराभिराम सद्दमीसए कए अ सुइ समाणणे अ सुद्ध सज्ज गीअ पाय जाल घंटिआहिं ॥ वलय मेहला कलाव नेउराभिराम सद्द मीसए कए अ देव नट्टिआहिं हाव भाव विब्भम प्पगारएहिं ॥ नच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा तयं तिलोय सव्व सत्त संति कारयं ॥ पसंत सव्व पाव दोसमेस हं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायउ ॥

अर्थः—श्रीशांतिनाथजीनां चरणारविंदने देवनर्त्तकीउ जे छे, तेणें नृत्य करी वंदन कर्यां, तेने हुं पण नमस्कार करुं छुं. ते शांतिनाथ केहवा छे ?

तो के (रिसिगण के०) ऋषिउना समूह तथा (देवगणेहिं के०) देवताउ ना समूह, तेणें (थुअवंदिअयस्सा के०) स्तुति करेला अने वंदन करेला एवा अने (तो के०) तदनंतर (देववहूहिं के०) देववधू जे ढे तेमणें (पणमिअस्सा के०) प्रणाम करेला एवा (जस्सजगुत्तमसासणस्सा के०) जस्सजे जास्य एटले मुक्तिने पमाडवाने शक्य ढे जगत् जेमने एवा ढे माटें उत्तम ढे शासन जेमनुं एवा. हवे ते देवनर्त्तकीयो केहवी ढे? तो के (नत्तिवसागय के०) नक्तिवशें करीने देवलोकथी जे आववुं तेणें करीने (पिंमिअयाहिं के०) मलेली एवीयो अने (देववर के०) नर्त्तक वादक देवो अनें नृत्यकुशल एवी (ब्बरसा के०) अप्सराउ ते ढे (बहुया हिं के०) घणी जेमां एवी अनें (सुरवररइ के०) देवोनी साथें श्रेष्ठ जे क्री डा ते रूप (गुण के०) गुणोने विषे (पंमियआहिं के०) पंमित एटले माही एवीउ ॥ ३० ॥ आ, नासुरक नामा ढंद जाणवो.

हवे ते देवनर्त्तकीउयें केवा प्रकारनां गीत, नृत्य करते ढते प्रनुना चर णनुं वंदन कर्युं? ते कहे ढे. (वंससद्द के०) वांसनो शब्द एटले वेणुध्व नि, (तंति के०) वीणा, (ताल के०) चपटी, पटहादिक तेणें (मेलिए के०) मेलिते एटले एकीकृत थये ढते (च के०) वली (तिउरकर के०) त्रिपुष्क रनामा वाजित्रविशेष तेना (अनिराम के०) मनोहर एवा (सद्द के०) शब्दो तेणें करीने (मीसए के०) मिश्रित (कए के०) करे ढते, तथा व ली (सुइ के०) श्रुति जे कान तेनुं (समाणणे के०) समानन एटले ते सर्व शब्द सांनलवाने विषे काननुं समान करवुं, ते करे थके (सुद्ध के०) अनुनासिकादि दोष रहित एवो (सज्ज के०) षड्ज ते मयूर, केका, शंखा दि ध्वनिविशेषें करीने अथवा सज्ज एटले अधिक गुणयुक्त एवुं जे (गीय के०)गीत तेणें करीने सहित एवी जे (पायजाल के०) पगने विषे जा लना आकारवाली एवी (घंटिआहिं के०) घंटिका एटले घूघरीउ तेणे करीने उपलक्षित ढते तथा (वलय के०) सोनानां वलियां, कंकण, (मे हला के०) मेखला ते केडनुं आनरण (कलाव के०) अलंकार विशेष, (नेउर के०) नेफुर तेमनो (अनिराम के०) मनोहर एवो जे (सद्दके०) शब्द तेणें करी (मीसएकए के०) मिश्रित करे ढते,(अ के०) वली (हा व के०) बहु कामविकार, (नाव के०) अल्पविकार अनिप्राय, (विब्नम

के०) विच्रम एटले विलास तेमना (पगारएहिं के०) प्रकारो छे जेमने विषे एवा (अंगहारएहिं के०) नला अंगना विक्षेपें करीनें (देवनट्टिआहिं के०) देवनर्त्तकी जे देवांगनाउ तेमणें पूर्वोक्त प्रकारें (नच्चिऊण के०) नृत्य करीनें, (सुविक्कमा के०) सुविक्रमा एटले उत्तम जेमनुं पराक्रम छे एवा (जस्स के०) जे श्रीशांतिनाथजीना (ते के०) ते जगद्विदित पराक्रमें करी सहित एवा (कमा के०) चरणो ते (वंदिआय के०) वंदन कर्यां छे. चकार पादपूरणार्थे छे. एवा (तयं के०) ते (तिलोय के०) त्रिभुवनना (सव्वसत्त के०) सर्व सत्त्व एटले प्राणीउ तेने (संतिकारयं के०) शांतिना करनार एवा अने (पसंत के०) प्रशांत थया छे (सव्वपावदोस के०) सर्व पाप तथा रागादिक दोष जे थकी एवा (उत्तमं के०) उत्तम जे (संति के०) श्रीशांति नामा (जिणं के०) जिन ते प्रत्यें (एस के०) आ प्रत्यक्ष, (हं के०) हुं (नमामि के०) नमस्कार करुं छुं ॥ ३१ ॥ आ, नाराचक नामा छंद जाणवो.

हवे त्रण श्लोकें करी अजितनाथ अने शांतिनाथने स्तवे छे.

छत्त चामर पडाग जूव जव मंडिआ झय वर मगर तुरय सिरिवछ सुलंछणा ॥ दीव समुद्द मंदर दिसा गय सोहिआ सत्थिअ वसह सीह रहचक्क वरंकिया ॥ पाठांतर ॥ सिरिवछ सुलंछणा ॥ ३२॥ ललिययं ॥ सहाव लठा सम प्पइठा, अदोसदुठा गुणेहिं जिठा ॥ पसाय सिठा तवेण पुठा, सिरीहिं इठा रिसीहिं जुठा ॥३३॥ वाणवासिया ॥ ते तवेण धुय सव्व पावया, सव्व लोअ हिअ मूल पावया॥संथुया अजिअ संति पायया, हुंतु मे सिव सुहाण दायया॥३४॥अपरांतिका॥

अर्थः—(छत्त के०) छत्र, (चामर के०) चामर, (पडाग के०) पताका, (जूव के०) यूप, (जव के०) यव, एवां लक्षणोयें करीने (मंडिआ के०) मंडित सुशोभित एवा तथा (झयवर के०) सिंहादि रूपोपलक्षित ध्वजवर, (मगर के०) मगरमछ, जलजंतु, (तुरय के०) अश्व, (सिरिवछ के०) श्रीवत्स, ते उत्तम पुरुषोनां वक्षस्थलमां होय छे, अने

पगमां पण थवानो संनव ले. (सुलंबणा के०) ते सर्वे शोनायमान ले लां छन जेमने एवा तथा (दीव के०) द्वीप ते जंबूद्वीपादिक, (समुद्द के०) समुद्र, ते लवणोदधि प्रमुख, (मंदर के०) मेरु पर्वत अथवा प्रासाद पण जाणवो. (दिसागय के०) दिग्गज जे प्रधान हस्ती, एवा लक्षणें करी एटले आकारें करीने (सोहिआ के०) शोनित एवा तथा (सत्थिअके०) स्वस्तिक, (वसह के०) वृषन, (सीह के०) सिंह, (सिरि के०) लक्ष्मी, (वष्ठ के०) वृक्ष ते कल्पवृक्षादिक तेना (सुलंबणा के०) नला शोनन लांबनो ले एटले लक्षणो ले हाथ पगादिक अंगोने विषे जेने एवा ॥३१॥ आ, ललितक नामा बंद जाणवो.

वली केहवा ले? तो के (सहाव के०) स्वनावें करीने (लघा के०) लष्ट एटले शोनायमान एवा तथा (समप्पइघा के०) समा ते अस्थपुट एटले विष मोन्नत रहित एवी नूमिकाने विषे प्रतिष्ठित एटले रह्या एवा अथवा अस म एटले निरुपम ले प्रतिष्ठा जेमनी एवा तथा (अदोसडुघा के०) रागादिक दोषें करी अडुष्ट एटले विकार नहीं पाम्या एवा तथा (गुणेहिं के०) कूर्मोन्न तत्वरक्षादिक जे गुण,तेणें करीने (जिघा के०) ज्येष्ठ एटले महोटा ले, अथवा गुण जे सम्यक् ज्ञान,दर्शन,चारित्र लक्षण तेणें करीने ज्येष्ठ एटले वृद्ध एवा तथा (पसाय के०) प्रसाद जे अनुग्रह अथवा रागादिकनो क्षय तेथी जे निर्मलपणुं तेणें करी (सिघाके०) श्रेष्ट एवा तथा (तवेणपुघा के०) बार प्रकारना तपें करीने पुष्ट एवा तथा (सिरीहिं के०) श्री जे लक्ष्मी तेणेंक रीने (इघा के०) इष्ट अथवा लक्ष्मीनामक देवीयें जेने पूज्या एवा तथा (रिसीहिं के०) रुषि जे मुनियो तेमणें (जुघा के०) जुष्टा एटले निरंतर सेव्या ले, जेमने एवा ॥ ३२ ॥ आ, वनवासिका नामा बंद जाणवो.

(ते के०) ते पूर्वें वर्णन कस्या एवा तथा (तवेण के०) तपें करी ने (धुय के०) टाल्युं ले अथवा नस्मीनूत कस्युं ले (सव्व के०) सर्व एवुं शुनाशुन कर्म रूप (पावया के०) पाप जेमणें एवा, वली केहेवा ले? तो के (सव्वलोअ के०) सर्व लोक तेने (हिअ के०) हितकारक एवो जे मोक्ष, तेनुं (मूल के०) मूल कारण जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र तेने (पावया के०) प्रापका एटले पमाडनारा एवा तथा (संथुया के०) पूर्वोक्त प्रकारें स्तवन कस्युं ले जेमनुं एवा जे (अजिअसंतिपायया के०)

श्री अजितशांतिपाद अहीं पाद शब्द पूज्यवाचक छे, माटे हे अजितशांति पूज्य, (मे के०) मने (सिवसुहाणदायया के०) शिव सुखना देनारा एवा (हुंतु के०) थाउ ॥ ३४ ॥ आ, अपरांतिका नामा छंद जाणवो ॥

एवं तव बल विउलं,थुअं मए अजिअ संति जिण जुअलं ॥ ववगय कम्म रय मलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥

अर्थः— (एवं के०) ए प्रकारें (तवबलविउलं के०) तपोबलें करीने विपुल विस्तीर्ण विशाल एवुं अने (ववगय के० (गयुं छे (कम्मरयमलं के०) कर्मरूप रज अने मल जेमने एवुं तथा (सासयं के०) शाश्वती एवी तथा (विउलं के०) विपुल विस्तीर्ण छे सुख जेने विषे एवी (गइं के०) गति जे तेने (गयं के०) गत एटले प्राप्त थयुं,एवुं (अजिअसंतिजिण जुअलं के०) अजितशांतिजिनयुगलं एटले बीजा अने शोलमा तीर्थंकरनुं युगल तेने (मए के०) में, (थुअं के०) स्तव्युं छे ॥३५॥ आ,गाथा छंद जाणवो.

तं बहु गुण प्पसायं, मुक्ख सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे विसायं, कुणउ अपरिसा वि अ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥

अर्थः— वली (तं के०) ते पूर्वोक्त जिनयुगल केहेवुं छे ? तो के (बहुगुणप्पसायं के०) ज्ञानादिक अनेक गुणोनो छे प्रसाद जेमने एवुं तथा (परमेण के०) परम उत्कृष्ट एवा (मुक्खसुहेण के०) मोक्षसुख जे तेणें करी (अविसायं के०) नथी विषाद जेमने एवुं जिनयुगल, ते (मे के०) माहारा (विसायं के०) विषाद जे छे तेने (नासेउ के०) नाश करो; (अ के०) वली (परिसावि के०) आ प्रस्तुत स्तवने सांजलनारी जे विद्वानोनी सजा ते पण महारी उपर गुणनुं ग्रहण अने दोषनो त्याग ते रूप, (पसायं के०) प्रसादने (कुणउ के०) करो ॥ ३६ ॥ आ पण, गाथा नामा छंद जाणवो.

हवे स्तवनना अंतमां मंगल शब्दोयें करीने प्रणिधान कहे छे.

तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं ॥ परिसा वि य सुह नंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥३७॥ गाहा ॥

अर्थः— (तं के०) ते अजितशांतियुगल तें, मने (मोएउ के०) मोदयतु ए

टले हर्षने आपो. अने सर्व लोकोने (नंदिं के०) समृद्धिप्रत्यें (पावेउ के०) प्राप्त करो. (य के०) वली आ स्तवन करनार जे (नंदिसेण के०) नंदिषेण कवि, तेने (अभिनंदिं के०) सर्व प्रकारें समृद्धि अथवा आनंद ने पमाडो, तथा (परिसावि के०) आ स्तवन सांभलनार जे श्रोता जनो नी पर्षदा, तेने पण (सुहनंदिं के०) सुख वृद्धिने (दिसउ के०) आपो. (य के०) वली (मम के०) मुजने (संजमे के०) सत्तर प्रकारनो जे सं यम तेनें विषे (नंदिं के०) आनंद प्रत्यें (दिसउ के०) आपो ॥ ३७ ॥ आ गाथा नामक छंद जाणवो.

अहींआं केटला एक वृद्ध पुरुष एम कहे छे, के श्रीशत्रुंजयनी गुफायें श्री अजित नाथ, अने श्री शांति नाथ चोमासुं रह्या हता,पछी ते बन्ने ती र्थंकरना पूर्वाभिमुख देहरां थयां, तिहां एकदा श्रीनेमिनाथना गणधर, श्रीनं दिषेण सूरि तीर्थयात्रायें आव्या थका तिहां श्रीअजितशांतिस्तवननी रच ना करता हवा. ते अहीं सुधी जाणवी. हवे एना माहात्म्यनी आगली गाथाउ अनेरा बहुश्रुतें कीधी, ते वखाणीयें छेयें.

पक्खिअ चाउम्मासे, संवछरिए अवस्स भणिअव्वो ॥ सोअ व्वो सव्वेहिं, उवसग्गनिवारणो एसो ॥ ३८ ॥ गाहा ॥

अर्थः—(पक्खिअ के०) पाखीना पडिक्कमणाने विषे तथा (चाउम्मासे के०) चोमासीना पडिक्कमणाने विषे तथा (संवछरिए के०) सांवत्सरीना पडिक्क मणानी रात्रिने विषे (अवस्स के०) निश्चें (भणिअव्वो के०) भणवा योग्य ते एक जणें भणेलो एवो जे आ स्तव, तेने (सव्वेहिं के०) सर्व श्रीसंघें (सोअव्वो के०) सांभलवो. कारण के सर्व जनो जो एकज अवसरें एकठा पाठ भणे तो तेमां कोलाहल थवानो संभव छे माटे एकज जणें भणवो, अने बीजा सर्व संघजनोयें सांभलवो. (एसो के०) ए स्तव जे छे ते, (उवसग्गनिवारणो के०) उपसर्ग जे विघ्न, तेनो निवारण करनार छे ॥३८॥ आ, गाथा छंद.

जो पढइ जो अ निसुणइ,उभउ कालंपि अजिअ संति थयं॥ नहु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ गाहा ॥

अर्थः—(जो के०) जे कोइ पुरुष, (अजिअसंतिथअं के०) श्रीअजित

नाथ अने श्रीशांतिनाथ तेना स्तवनने (उजउकालंपि के०) प्रातःकाल तथा सायंकाल अने अपि शब्द थकी मध्यान्ह काल लेवो तेने विषे (पढइ के०) जणे वे, तथा (जोअ के०) जे वली (निसुणइ के०) निरंतर श्र वण करे वे, तो (तस्स के०) ते पठन करनार अने सांजलनार पुरुषने (रोगाः के०) रोग जे वे, ते (नहु हुंति के०) निश्चें होतां नथी. अने (पुवुप्पन्ना के०) पूर्वोत्पन्न थयेला एवा जे रोगो तेपण (विनासंति के०) विशेषें करीने नाश पामे वे ॥ ३९ ॥ आ पण गाथा नामा वंद जाणवो.

ववगयकलिकलुसाणं, ववगयनिद्धंतरागदोसाणं ॥
ववगयपुणप्नवाणं, नमोबु देवाहिदेवाणं ॥ ४० ॥

अर्थः—(ववगयकलिकलुसाणं के०) व्यपगतकलिकलुषेज्यः एटले नाश पाम्यां वे कलिनां कलुष ते पाप जेनां एवा तथा (ववगयनिद्धंतरागदोसाणं के०) व्यपगतनिर्द्धंतरागदोषेज्यः एटले नाश पामेला वे प्रबल राग अने द्वेष जेना एवा, तथा (ववगयपुणप्नवाणं के०) व्यपगतपुनर्नवेज्यः एटले नाश पा मेलां वे जन्म मरण जेनां एवा (देवाहिदेवाणं के०) देवाधिदेवेज्यः एटले देवना पण देव एवा प्रजुने (नमोबु के०) नमोस्तु एटले मह्वारो नमस्कार हो ॥४०॥

सवं पसमइ पावं, पुसं वड्ढइ नमंसमाणस्स ॥ संपु
न्नचंदवयण,स्स कित्तणं अजिअसंतिस्स ॥ ४१ ॥

अर्थः—(संपुन्नचंदवयणस्स के०) संपूर्णचंद्रवदनस्य एटले संपूर्णचंद्रमा सरखुं वे वदन एटले मुख जेमनुं एवा (अजिअसंतिस्स के०) अजित नाथ अने शांतिनाथ जे तेनुं (कित्तणं के०) कीर्त्तनं एटले कीर्त्तन, अने (नमंसमाणस्स के०) नमस्यमानस्य एटले ते बेहु जगवानने नम स्कार करता एवा पुरुषनां (सवं के०) सर्वे एवां (पावं के०) पापं ए टले पापने (पसमइ के०) प्रशमयति एटले प्रशमन करी दीये वे, अर्थात् नाश करे वे. अने ते पुरुषनां (पुसं के०) पुण्यं एटले पुण्यने (वड्ढइ के०) वर्द्धयति एटले वधारे वे ॥ ४१ ॥

जइ इच्छह परमपयं, अहवा कित्तिं सुविछडं जवणे ॥
ता तिअलोगुध्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४२ ॥

अर्थः—हे नव्यजनो ! तमें (जइ के०) यदि एटले जो (परमपयं के०) परमपदं एटले मोक्षने (इन्नह के०) इन्नथ एटले इन्नो हो, (अहवा के०) अथवा (नुवणे के०) नुवने एटले जगतमां (सुविन्नडं के०) सुविस्तृतां एटले सारी रीतें विस्तार पामेली एवी (कित्तिं के०) कीर्त्तिने जो तमें इन्नो हो, (ता के०) तर्हि एटले तो (तिलोगुद्धरणे के०) त्रैलोक्योद्धरणे एटले त्रणे लोकनिवासी प्राणीयोना उद्धार करनारा एवां (जिणवयणे के०) जिनवचने एटले जिनन्नगवाननां वचनने विषे (आयरं के०) आदरने (कुणह के) कुरुत एटले करो ॥ ४१ ॥

सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ॥
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ४३ ॥

अर्थः—(सर्व मंगलमांगल्यं के०) सर्वे मंगलमां मंगलरूप (सर्व कल्याण कारणम् के०) सर्वे कल्याणना कारणरूप अर्थात् जेमांथी सर्वे कल्याण थाय हे, एवुं (सर्वधर्माणां के०) सर्वे धर्मोमां (प्रधानं के०) मुख्य एवुं जे (जैनं के०) जिनसंबंधि (शासनं के०) धर्म्म, ते (जयति के०) जय पामे हे ॥४३॥

उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४४ ॥

अर्थः—(जिनेश्वरे पूज्यमाने के०) जिनेश्वरने पूजतां हतां (उपसर्गाः के०) सगला उपद्रव (क्षयं के०) नाशने (यांति के०) पामे हे. (विघ्न वल्लयः के०) विघ्नरूप वेलीउ (छिद्यंते के०) पोतानी मेलें कपाइ जाय हे, अने (मनः के०) मन (प्रसन्नतां के०) प्रसन्नपणाने (एति के०) पामे हे.

शिवमस्तु सर्व जगतः,परहितनिरता नवंतु नूतगणाः ॥
दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखी नवतु लोकः ॥ ४५ ॥

अर्थः—(सर्वजगतः के०) सर्व लोकोनुं (शिवं के०) कल्याण (अस्तु के०) थाउ. (नूतगणाः के०) प्राणीयोना समूहो (परहितनिरताः के०) परोपकार करवामां तत्पर (नवंतु के०) थाउ. (दोषाः के०) कर्म रूप सर्वे दोषो (नाशं के०) नाशनें (यांतु के०) पामो. (लोकः के०) लोक (सर्वत्र के०) सघला वखतमां (सुखी के०) सुखवालो (नवतु के०) थाउ ॥ ४५ ॥

स्मरणं यस्य सत्वाना, तीव्रतापोपशांतये ॥ उत्कृष्टगुण
रूपाय, तस्मै श्रीशांतये नमः ॥ ४६ ॥ इतिश्री नंदिषेण
सूरि विरचितं श्रीअजितशांतिस्तवनं द्वितीयं स्मरणम् ॥

अर्थः–(यस्य के०) जे शांतिनाथनुं (स्मरणं के०) स्मरण (सत्त्वानां के०) सर्वे जीवोना (तीव्रतापोपशांतये के०) महादारुण तापनी शांतिने माटे छे, एवा (उत्कृष्टगुणरूपाय के०) सर्वोत्तम गुणोथी व्याप्त (तस्मै के०) ते (शांतये के०) शांतिनाथने (नमः के०) नमस्कार होजो ॥ ४६ ॥ इति श्रीवृहदजितशांतिस्तव द्वितीय स्मरणस्य बालावबोधः ॥

॥ अथ श्रीपादलिप्त सूरिविरचित श्रीवीरस्तोत्र तृतीय स्मरण प्रारंभः ॥

जयइ नव नलिण कुवलय, विअसिय सयवत्त पत्तल दलछो ॥
वीरो गयंद मयगल, सुललिअ गइ विक्कमो भयवं ॥ १ ॥

अर्थः–(विअसियसयवत्त के०) विकास पामी छे सो पाखडीयो जेनी एवा (नव के०) नवां (नलिण के०) सूर्यविकासी नीलकमल तथा (कुवलय के०) चंद्रविकासी नीलकमल तेनां जे (पत्तलदल के०) पातलां एटले नरम एवां दल जे पानडां ते सरखां छे (अछो के०) अक्षि एटले नेत्रो जेना एवा, तथा (गयंदमयगल के०) गजेंद्रमदकलः एटले मदें करी सुंदर एवो गजेंद्र जे हस्ती, तेनी (सुललियगइ के०) सुललित गति एटले मनोहर एवी जे गति तेना सरखो छे (विक्कमो के०) विक्रमो एटले विहार जेनो अर्थात् चालवुं छे जेनुं एवा (भयवं वीरो के०) श्रीमहावीर भगवान् ते (जयइ के०) जयति एटले जय पामे छे ॥ १ ॥

अज्जवि वहइ सुतिछं, अखंमियं जस्स भरहवासम्मि ॥
सो वद्धमाणसामी, तिअलुक्कदिवायरो जयउ ॥ २ ॥

अर्थः–(जस्स के०) जे भगवाननुं (भरहवासम्मि के०) भरतवर्षे एटले भरत नामा वासक्षेत्रतेने विषे (अज्जवि के०) अद्यापि एटले हजी सुधी पण (अखंमियं के०) अखंमित एवुं (सुतिछं के०) सुतीर्थं एटले सुंदर तीर्थ जे प्रवचन ते (वहइ के०) वहति एटले वहे छे,अर्थात् प्रवर्त्ते छे. एवा

(सो के०) ते (वद्धमाणसामी के०) श्रीवर्द्धमानस्वामी (तिअलुक्कदिवायरो के०) त्रणे लोकने विषे दिवाकर एटले सूर्यसमान छे, ते (जयउ के०) जयतु एटले जय पामो ॥ २ ॥

गाहाजुअलेण जिणं, मयमोह विवज्जिअं जिअकसायं ॥
थोसामि तिसंझागं, तं निस्संगं महावीरं ॥ ३ ॥

अर्थः—(मयमोहविवज्जिअं के०) मदमोहविवर्जितं एटले मद अने मोह तेथकी विवर्जित एवा अने (जिअकसायं के०) जितकषायं एटले जीत्या छे कषाय जेणें एवा अने (निस्संगं के०) निस्संग ते बाह्य अने अभ्यंतर उपाधिए करी रहित एवा (तं के०) ते (महावीरं के०) श्री महावीर स्वामीने (तिसंझागं के०) त्रिसंध्याकं एटले सांझ, सवार, अने मध्यान्हने वखते (गाहाजुअलेण के०) बे गाथायें करी (थोसामि के०) स्तोष्यामि एटले हुं स्तुति करीश ॥ ३ ॥

सुकुमाल धीर सोमा, रत्त किसन्न पंडुरा सिरनिकेआ ॥
सीयंकुस गह भीरू, जलथल नह मंडणा तिन्नी ॥ ४ ॥
न चयंति वीर लीलां, हाउं जे सुरहिमत्तपडिपुन्ना ॥
पंकयगयंदचंदा, लोअणचक्कम्मिअमुहाणं ॥ ५ ॥

अर्थः—आ बेहु गाथानो साथेंज अन्वय छे, (वीर के०) हे वीर भगवन्! (जे के०) जे (पंकयगयंदचंदा के०) पंकज ते कमल, गजेंद्र ते हाथी, अने चंदा ते चंद्रमा, ए त्रणे तमारां (लोअण के०) लोचन तथा (चक्कंमिअ के०) गमन ते चालवुं अने (मुहाणं के०) मुख, तेनी (लीलां के०) लीलाने (हाउं के०) त्याग करवाने (न चयंति के०) समर्थ थातां नथी, एटले कमल छे, ते तमारां नेत्रनी लीलाने, अने हाथी छे, ते तमारी गतिनी लीलाने, अने चंद्रमा छे, ते तमारा मुखनी लीलाने, त्याग करी शकतां नथी. एटले कमलपत्र समान प्रभुनी चक्षु छे, हस्तीसमान प्रभुनुं गमन छे, अने चंद्रमासमान प्रभुनुं मुख छे. हवे ते कमल, गजेंद्र अने चंद्र कहेवा छे? तो के (सुकुमालधीरसोमा के०) सुकुमारधीरसौम्याः एटले कमल सुकुमाल छे, हस्ती धीर छे, अने चंद्रमा सौ

स्य छे. वली ते त्रणे कहेवा छे ? तो के (रत्तकिसन्नपंकुरा के०) कमल रक्त छे, अने हस्ती किसन्न एटले कालो छे, तथा चंद्रमा पंडूर एटले श्वेत छे. वली ते त्रणे केवां छे ? तो के (सिरिनिकेया के०) श्रीनिकेताः एटले शोजानां स्थानकरूप छे, वली ते त्रणे कहेवां छे ? तो के (सीयंकुस गहजीरु के०) शीतांकुशग्रहजीरवः एटले कमल छे ते सीत एटले टाढथी जय पामे छे, अने हस्ती छे ते अंकुशथी जय पामे छे, तथा चंद्रमा छे ते ग्रह एटले राहुनामा ग्रह तेनाथी जीरु एटले जय पामे छे, वली ते (तिन्नी के०) त्रणे कहेवां छे ? तो के (जलथलनहमंमणा के०) जलस्थल नजोमंमनाः एटले कमल छे ते जलने शोजावे छे, हस्ती छे, ते स्थलने शोजावे छे, अने चंद्रमा जे छे, ते नज एटले आकाशने मंमन एटले शोजावे छे. वली केहेवां छे ? तो के (सुरहिमत्तपडिपुन्ना के०) सुरजिमत्त परिपूर्णाः एटले कमल छे ते, सुगंधे करी युक्त छे, तथा हस्ती छे ते मदें करी युक्त छे, अने चंद्रमा छे, ते शोल कलायें परिपूर्ण छे ॥ ४ ॥ ५ ॥

एवं वीरजिणिंदो, अछरगणसंघसंथुउ जयवं ॥ पालित्त यमयमहिउ, दिसउ खयं सव डुरिआणं ॥ ६ ॥ इति पादलिप्तसूरिविरचित्तं वीरस्तवस्तृतीयस्मरणं संपूर्णम् ॥

अर्थः–(एवं के०) ए पूर्वें कह्या ते प्रमाणें (अछरगणसंघ के०) अप्सराउनो गण ते समूह तथा चतुर्विध श्रीसंघ तेणे (संथुउ के०) संस्तुतः एटले स्तुति करेला एवा (जयवं के०) जगवान् (वीरजिणिंदो के०) श्रीवीरजिनेंद्र तीर्थंकर देव, (पालित्तयमयमहिउ के०) पादलिप्तमतिमहितः एटले पादलिप्ताचार्यनी मतियें करी महितो एटले पूज्या थका, (सवडुरिआणं के०) सर्व डुरितोने (खयं के०) क्षयप्रत्यें (दिसउ के०) आपो. अर्थात् पादलिप्ताचार्यना मत प्रमाणें जे पूजन करे तेना सर्व पापनो क्षय करो ॥ ६ ॥ इतिश्री वीरस्तवनामक तृतीय स्मरणस्य बालावबोधः समाप्तः ॥

पछी उवसग्गहर नामक चोथुं स्मरण कहेवुं जोइयें ते स्मरण आ पुस्तकना पृष्ट (६७) मां पूर्वे अर्थसहित छपाइ गयाथी आहीं नथी लीधुं ॥

॥ अथ नमिऊणनामक पंचमं स्मरणं लिख्यते ॥

तेमां प्रथम मंगलाभिधान पुरस्सर मंगलगाथा कहे छे.

नमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि किरण रंजिअं मुणि
णो ॥ चलणजुअलं महाभय, पणासणं संथवं वुछं ॥१॥

अर्थः–(मुणिणो के०) मुनि जे पार्श्वनाथ तेमनुं (चलणजुअलं के०) चरण युगल एटले जे चरणारविंदनुं युगल तेने, (नमिऊण के०) नमस्कार करीने, हवे ते चरणयुगल केहेवुं छे ? तो के (पणय के०) प्रणत एटले नमस्कार करनार एवा जे (सुरगण के०) देवना समूह, तेना मस्तकने विषे रहेला एवा जे (चूडा के०) मुकुट, ते मुकुटने विषे रहेला जे (मणि के०) मणिउ, तेना (किरण के०) किरणो, तेणें करीने (रंजिअं के०) रंगित एवुं छे. वली केहवुं छे ? तो के (महाभय के०) रोग, जल, ज्वलनादि एवा शोल पदार्थथकी उत्पन्न थयुं एवुं जे महोटुं भय, तेने (पणासणं के०) प्रकर्षे करीने नाश करनारुं एवुं ते चरणयुगल छे, तेने नमस्कार करीने हुं आ प्रकारनो (संथवं के०) संस्तव जे छे तेने (वुछं के०) कहीश ॥ १ ॥

हवे " रोग जल जलण " ए पूर्वोक्त शोल भय तेमध्यें आठ महाभय छे तन्निवारणलक्षण, प्रभुनुं अतिशयवर्णन ते प्रत्येक भयआश्रयी बे बे गाथायें करी कहेतो छतो प्रथम रोगभयनिवारण लक्षण प्रभुनो अतिशय, गाथायुग्मेंकरी कहे छे.

सडिय कर चरण नह मुह, निबुड्ड नासा विवन्न लायन्ना ॥
कुठ महा रोगानल, फुलिंग निद्दड्ढ सव्वंगा ॥ २ ॥
ते तुह चलणाराहण, सलिलंजलि सेय वुढ्ढि उछाहा ॥
वण दवदड्ढा गिरिपा, यव व पत्ता पुणोवि लछिं ॥ ३ ॥

अर्थः–(सडिय के०) सटित विशीर्ण एटले सडी गयेलां छे (करचरणनहमुह के०) हाथ, पग, नख अने मुख,जेमनां एवा, (निबुड्ड के०) निमग्न छे एटले बेशी गयेली छे (नासा के०) नासिका जेनी एवा, तथा (विवन्न के०) विनष्ट थयुं छे (लायन्ना के०) लावण्य जेमनुं एवा, (कुठ के०) कुष्ट

ते प्रसिद्ध एवो कोढरूप (महारोग के०) महान् रोग तेनुं संतापजनक पणुं छे जेने ए हेतु माटे (अनल के०) अग्निसमान तेनां (फुलिंग के०) स्फुलिंगना सरखा एटले अंगारना तणखा ते समान पीडा प्रकार तेणें करी (निद्दढ के०) बल्यां छे (सव्वंगा के०) सर्व अंग जेनां एवा ॥ २ ॥ ते के०) ते प्राणीओ पण (तुह के०) तव एटले हे पार्श्वनाथ ! तमारां (चलणाराहण के०) चरणोनुं आराधन जे सेवन ते संबंधी (सलिलंजलि के०) सलिलांजलि जे पाणीनी अंजलि तेनुं (सेअ के०) सेक जे सेचन तेणें करी (वुढ्ढिउच्छाहा के०) वृद्धिंगत थयो छे उच्छाह शोभा जेमनी एवा छता (पुणोवि के०) फरीने पण (लच्छिं के०) लक्ष्मी जे आरोग्यरूप संपदा तेने (पत्ता के०) प्राप्त थाय छे. तेने विषे उपमा कहे छे के, जेम (वणदव के०) वननो अग्नि तेणें करी (दद्धा के०) दग्ध थयेला (गिरिपायव के०) गिरिपादप एटले पर्वतनां वृक्षो छे तेज (व के०) जेम (वुढ्ढिउच्छाया के०) वृद्धि पामी छे शोभा जेमनी, एवा थाय छे, वली वढ्ढियछाया एवो पण पाठ छे तो तेनो अर्थ एम जाणवो. जे वृद्धिंगत थइ छे शोभा जेमनी एवा अर्थात् दवदग्ध वृक्षो जे छे, ते वृष्टिना जलें करी सिंचेला छता फरीने नवकोमलादि संपत्तिने प्रादुर्भाव करे छे. तेम कुष्ठादि महारोगोयें करीने विवर्णभावने पामेला एवा जनो, ते तमारा चरणाराधनामृतें सिंचायेला छता फरी पाछा मकरध्वजतुल्य रूपने पामे छे ॥ ३ ॥

हवे गाथा द्वयें करीने प्रभुनुं बीजुं जलभयापहरण लक्षण माहात्म्यने देखाडतो छतो कहे छे.

दुव्वाय खुभिय जलनिहि, उब्भड कल्लोल भीसणारावे ॥ संभंत भय विसंठुल, निज्जामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ॥ पास जिण चलण जुअलं, निच्चंचिअ जे नमंति नरा ॥ ५ ॥

अर्थः—(दुव्वाय के०) दुष्टवात एटले प्रतिकूल पवन, तेणें (खुभिअ के०) क्षोभित कर्यो एवो (जलनिहि के०) जलनिधि जे समुद्र, तेना (उब्भड के०) उद्भट एटले उदार एवा (कल्लोल के०) कल्लोल जे लहे

रीयो तेना (नीसण के०) नयंकर छे (आरावे के०) शब्दो जेने विषे ए वो तथा (संनंत के०) संभ्रांत ते हवे शुं करवुं जोइयें? एवो विचार करवाने विषे मूढ थयेला तथा (नय के०) नय जे बीक तेणें करीने (विसंतुल के०) विव्हल थया एवा (निद्यामय के०) निर्यामक एटले खलासीउ तेणें (मुक्कवावारे के०) मूक्यो छे व्यापार जेने विषे ॥ ४·५ एवा पण समु इने विषे (अविदलिय के०) नथी नांग्युं (जाणवत्ता के०) यानपात्र ते वाहाण जेमनुं एवा छता (खणेण के०) क्षणें करीने एटले घडीना छ हा नागें करीने (इच्छिअं के०) इच्छित एवुं (कूलं के०) समुइतट एटले कांठो तेने (पावंति के०) प्राप्नुवंति एटले पामे छे. ते कया नर जाणवा? अर्थात् सर्वजन नहिं, परंतु (जे के०) जे (नरा के०) मनुष्यो (पासजि ण के०) श्रीपार्श्वजिन तेनुं (चलणजुअलं के०) चरणकमलनुं जुगल तेने (चिअ के०) चिअ शब्द अवधारणार्थत्वने माटे छे. (निच्चं के०) निरंतर (न मंति के०) नमन करे छे, अथवा (निच्चंचिअ के०) नित्य गंधादिकें करी अर्चन करीने जे (नमंति के०) नमस्कार करे छे, ते नरो समुइना पारने पामे छे ॥५॥

हवे गाथायुगलें करीने प्रनुनो त्रीजो दवानलनयापहारातिशय कहे छे.

खरपवणुद्धुअ वणदव, जालावलि मिलिय सयल डुम गह
णे ॥ मझंत मुद्ध मयवहु, नीसणरव नीसणंमि वणे ॥६॥ ज
गगुरुणो कमजुअलं, निव्वाविअ सयलतिहुअणानोअं ॥
जे संनरंति मणुआ, न कुणइ जलणो नयं तेसिं ॥ ७ ॥

अर्थः— आगल कहेशे ए प्रकारना (वणे के०) वनने विषे (जलणो के०) ज्वलन जे अग्नि ते नय करतो नथी. हवे ते वन केहवुं छे ? तो के (खर के०) प्रंचम एवो जे (पवण के०) वायु,तेणें करी (उद्धुअ के०) उद्धूत ते सर्व दिशिउने विषे आणी तरफ पहेलीतरफ प्रसारने पमाडेलो एवो (वणदव के०) वननो अग्नि, तेनी (जाला के०) ज्वाला तेनी (आवलि के०) श्रेणि तेणें करी ने (मिलिय के०)परस्पर एकीनूत थया छे,(सयल के०) समग्र (डुम के०) डुम एटले वृक्षो तेणेंकरी (गहणे के०) गहन जेने विषे एटले आ आंबानुं वन, आ चंपक वन, इत्यादिक वृक्षो जे वनने विषे एवुं तथा वली ते वन केहवुं छे? तो के

(फ्झंत के०) दाऊती एवी (मुद्ध के०) मुग्ध एटले सरल एवी जे (मयवहु के०) मृगवधू एटले हरिणीउ तेमनो (जीसण के०) जयंकर (रव के०) आक्रंद शब्द तेणें करीने (जीसणंमि के०) जयप्रद थयेलुं अर्थात् जयंकर थयेलुं, अहीं जी एटले जीति तेने षन एटले आपे, ते जीषण कहियें एवा (वणे के०) वनने. विषे, वली अहीं केटलाएक तो एवो अर्थ करे बे के (फ्झंत के०) दह्यांत एटले दहन थवा योग्य एवुं जे वन ते दह्य कहियें, अने दह्यनो जे अंत एटले अवसान ते बे जेमां, तेने दह्यांत कहियें. तें दह्यांत जे दावाग्नि तेनी (मुद्ध के०) सरल एवी जे ज्वाला तेना आकुलितपणायें करीनें मूढ एवा जे (मय के०) अरण्यवासी पशुउ तेनो (बहु के०) घणो अत्यंत (जीसण के०) जयंकर एवो (आराव के०) आक्रंद तेणें करीने (जीसणंमि के०) जयजीत थयेला एवा (वणे के०) वनने विषे ॥ ६ ॥ (जगगुरुणो के०) स्वसामर्थ्यथकी थयेला एवा जगतना गुरु जे श्रीपार्श्वनाथ स्वामी तेमनुं (कमजुअलं के०) चरणयुगल, ते चरण युगल केहेवुं ? तो के (निवाविअ के०) निर्वापित एटले आपत्तिना तापने प्रशमनें करी सुखीउ कर्यो बे (तिहुअणाजोअं के०) त्रिजुवनाजोग एटले परिपूर्ण त्रण जुवन जेणें एवुं. अहीं आजोग शब्द जे बे, ते अनिर्वापणनिषेधार्थ बे, एवा प्रजुना चरणकमलने (जे के०) जे (मणुआ के०) मनुष्यो (संजरंति के०) स्मरण करे बे, (तेसिं के०) ते स्मरण करनार जनोने पूर्वोक्त जे (जलणो के०) दावाग्नि ते, (जयं के०) जय प्रत्यें (नकुणइ के०) नथी करतो ॥ ७ ॥

हवे गाथायुग्में करीने जगवंतना चोथा विषधरजयनिवारकत्व महिमाने देखाडतो बतो कहे बे.

विलसंत जोग जीसण, फुरिआरुण नयण तरल जीहा
लं ॥ उग्गजुअंगं नवजल, य सबहं जीसणायारं ॥८॥
मन्नंति कीडसरिसं, दूर परिबूढ विसम विसवेगा ॥
तुह नामक्कर फुडसिि, द्धमंत गुरुआ नरा लोए ॥ ए॥

अर्थः–(विलसंत के०) सुशोजित एवा (जोग के०) फणा बे जेना

अथवा (विलसंत के०) सुशोभित छे (भोग के०) देह जेनो एवो तथा (भीसण के०) भयंकर अने (फुरिअ के०) स्फुरित एटले चपल अने (अरुण के०) आरक्त छे (नयन के०) चक्षु जेनां एवो तथा (तरल के०) चंचल छे (जीहालं के०) जिव्हा जेनी एवो, वली ते सर्प कहेवो छे ? तो के (नवजलय के०) नवीन जलद एटले आषाढमहिनानो वर्षाद तेना (सच्छहं के०) सदृश छे एटले मेघनी पेरें श्यामवर्ण छे जेनो एवो तथा (भीसणायारं के०) भीषणाकारं एटले भयंकर छे आकार जेनो अथवा भयंकर छे आचार केतां वेष्टन एटले आंहिं त्यांहिं भ्रमण जेनुं एवा (उग्गभुअंग के०) भयंकर सर्प तेने ॥ ८ ॥ (कीडसरिसं के०) कीटसदृश (मन्नंति के०) माने छे. ते कीटसदृश कोण माने छे ? तो के (दूर के०) अत्यंत दूर कर्यो छे तथा (परिछूढ के०) चारे तरफ टाल्यो छे (विसम के०) आकरो एवो (विसवेगा के०) विषनो वेग जेउए, ते कोणें टाल्यो छे ? तो के हे श्रीपार्श्वनाथ! (तुह के०) तमारा (नामरकर के०) नामाक्षर तेज (फुड के०) स्फुट ते प्रकट अने (सिद्ध के०) सिद्ध थयेलो एवो (मंत के०) गारुडादिकनो मंत्र एटले तमारा नामना जे ' पार्श्व ' ए बे प्राभाविक अक्षररूप गारुडादिक मंत्र, तेणें करीने (गुरुआ के०) गरिष्ठ एटले महोटा एवा (नरा के०) मनुष्यो जे (लोए के०) लोकने विषे छे, ते पूर्वोक्त सर्पने कीटसदृश माने छे ॥ ९ ॥

हवे गाथायुगलें करीने प्रभुनुं पांचमुं तस्करभयनिवारकत्व कहे छे.

अडवीसु भिल्ल तक्कर, पुलिंद सद्दूल सद्दभीमासु ॥
भयविहुर वुन्नकायर,उल्लूरिअ पहिअ सत्थासु॥१०॥
अविलुत्तविहवसारा,तुह नाह पणाम मत्तवावारा॥
ववगयविग्घा सिग्घं, पत्ता हियइच्छियं ठाणं ॥११॥

अर्थः–(अडवीसु के०) सर्व अटवीउने विषे, ते अटवीउ केहेवी छे ? तो के (भिल्ल के०) भिल्ल जे पल्लिवासी लोक, तथा (तक्कर के०) तस्कर एटले चोर, (पुलिंद के०) वनचर जीवो, (सद्दूल के०) शार्दूल सिंह, तेना जे (सद्द के०) शब्द तेणें करीने (भीमासु के०) भयंकर बीहा

मणी एवी तथा (जय के०) जय तेणें करीने (विहुल के०) विव्हल (वुन्न के०) विषस्तु एटले दुःखित (कायर के०) कातर एवा निश्च लो कोयें (उल्लूरिअ के०) लूंटेला छे (पहिअसबासु के०) पंथीउना सथवा रात जेने विषे ॥ १० ॥ एवी अटवीउंमां पण हे श्रीपार्श्वनाथ ! (अविलुत्त के०) नथी-चोर्युं (विहवसारा के०) उत्कृष्ट धन जेनुं, ते कया पुरुषनुं उत्कृष्ट धन नथी चोर्युं ? तो के (नाह के०) हे नाथ ! (तुह के०) तमोने (पणाममत्त के०) प्रणाममात्र करवो, ते छे (वावारा के०) व्यापार जेमने एटले ते अवसरने विषे तमोने प्रणाम करवानुं छे कृत्य जेमनुं एवा पथिको, जे वली (सिग्घं के०) शीघ्र ते उतावला (ववगय के०) विशेषें करी गया छे (विग्घा के०) विघ्नसमूह, जेथकी एवा ते पुरुष, (हियइच्छिअं के०) पोताना हृदयने विषे इच्छित एवा (ठाणं के०) स्वनगर ग्रामादिक मनोवांछित स्थानक, ते प्रत्यें (पत्ता के०) प्राप्त थाय छे ॥ ११ ॥

हवे गाथाद्वयें करीने छहुं सिंहजय विनाशकारक प्रजुनुं माहात्म्य कहे छे.

पज्जलिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नह
कुलिसघायविअलिअ, गइंद कुंभत्थलाभोअं ॥ १२ ॥
पणयससंभमपत्थिव, नहमणिमाणिक्कपडिअपडिमस्स ॥
तुह वयणपहरणधरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥

अर्थः—(पज्जलिअ के०) प्रज्वलित एवो जे (अनल के०) अग्नि, तेना सरखां छे (नयणं के०) नेत्र जेनां एवो तथा (दूरवियारियमुहं के०) दूर एटले अत्यंत फाडयुं छे जक्षण करवाने अर्थें मुख जेणें एवो, तथा (महा के०) मोहोटो छे (कायं के०) देह जेनो एवो, तथा (नहकुलिस के०) नखरूप कुलिश जे वज्र, तेना (घाय के०) घात, एटले प्रहार, तेणें करी (विअलिय के०) विदलित एटले विशेषें करि जिन्न कर्या छे (गइंद के०) गजेंद्र जे हस्ती तेमनां जे (कुंभत्थल के०) कुंभस्थल तेना (आभोअं के०) आभोग एटले विस्तार जेणें एवो ॥ १२ ॥ अने (कुद्धंपि के०) क्रोधायमान थयो एवो पण (सीहं के०) सिंह जे छे, तेने (न गणंति के०) नथी गणता, अर्थात् तेवा सिंहने विषे पण जयहेतुतायें करी संजावना

करता नथी, तें कोण संजावना करता नथी ? तो के (पणय के०) नमता एवा (ससंजम के०) ससंच्रम एटले आदर सहित एवा (पछिव के०) पार्थिव जे राजाउ, तेमनुं अथवा पृथिवीने विषे विख्यात जे इंडो तेमनुं (नहमणिमाणिक्क के०) प्रजुना नखो तेहीज श्रेष्ठ मणि माणिक्य तेने विषे (पडिय के०) पडयुं ले (पडिमस्स के०) प्रतिबिंब जेमनें एवा (तुह के०) तमारा (वयणपहरण के०) वचनें करी जे तमारुं नामग्रहण करवुं, ते रूप प्रहरण एटले शस्त्र, ते शस्त्रोने (धरा के०) धारण कर्यां ले जेमणें एवा जनो पूर्वोक्त सिंहने गणता नथी ॥ १३ ॥

हवे गाथायुग्में करीने सातमो गजजय विनाशकारक प्रजुनो
अतिशय देखाडतो लतो कहे ले.

ससिधवलदंतमुसलं, दीहकरुल्लालवुड्ढिउल्लाहं ॥
महुपिंगनयणजुअलं, ससलिलनवजलहरारावं
॥१४॥जीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गणंति ॥
जे तुम्हचलणजुअलं,मुणिवइ तुंगं समल्लीणा॥१५॥

अर्थः—(मुणिवइ के०) हे मुनिपते ! (ते के०) ते नरो, (अच्चासन्नंपि के०) अत्यासन्न एटले अतिशयें करीने निकटवर्त्ति एटले ढूकडा रहेला एवा पण (महागइंदं के०) मोहोटा जे गजेंड तेने (नविगणंति के०) नथी गणता. अर्थात् गजजय हेतुनी संजावना करता नथी, हवे ते गजेंड केहेवो ले ? तो के (जीमं के०) अतिजयंकर एवो,वली केहेवो ले ? तो के (ससि के०) चंड्मा तेना सरखा (धवल के०) धोला ले (दंतमुसलं के०) बे दांत रूप मुशल जेने एवो, अने (दीह के०) दीर्घ एटले लांबो एवो जे (कर के०) शुंमादंम तेनुं (उल्लाल के०) कंचुं उमाडवुं, तेणें करीने (वुड्ढि के०) वृद्धिंगत थयो ले (उल्लाहं के०) उत्साह जेने एवो, तथा (महु के०) मधु एटले मध तेना सरखुं (पिंग के०) पीत रक्त ले (नयणजुअलं के०) नेत्रनुं युगल जेनुं एवो, तथा वली केहेवो ले ? तो के (ससलिल के०) जलें करी पूर्ण एवो जे (नवजलहरारावं के०) नवीन मेघ, तेना सरखो ले आराव एटले गर्जनारूप शब्द जेनो एवो, वली ते नरो

केहेवा छे? तो के (जे के०) जे नरो, (तुम्हचलणजुअलं के०) तमारा चरण युगल ते प्रत्यें (समल्लीणा के०) सम्यक् रीतें आश्रये करीने रह्या एवा छे. ते तमारुं चरणयुगल केहेवुं छे? तो के (तुंगं के०) सर्वथकी गुणोयें करीने उन्नत एवुं छे. हवे ए सर्वनो भावार्थ एज छे जे, तमारा चरणाश्रित नरोने एतादृश गजभय होतुं नथी. आ गाथामां तुंग पदें करी स्तवनकर्त्ताए पोतानुं नाम पण मानतुंग एवुं सूचव्युं. ॥ १४ ॥ १५ ॥

हवे गाथायुग्में करीने आठमो प्रभुनो संग्रामभयहरातिशयने देखाडतो छतो कहे छे.

समरम्मि तिख्खखग्गा, भिघायपविद्धुद्धुयकबंधे ॥
कुंतविणिभिन्न करि कल, हमुक्क सिक्कार पउरंमि ॥१६॥
नीज्जिय दप्पुध्दर रिउ, नरिंद निवहा भडा जसं धवलं॥
पावंति पाव पसमिण, पासजिण तुह प्पभावेण ॥१७॥

अर्थः—(पासजिण के०) हे पार्श्वजिन! तथा (पावपसमिण के०) हे पापना प्रकर्षें करी शमावनहार ! (भडा के०) भट जे सुभटो ते, (समरम्मि के०) संग्रामने विषे (तुहप्पभावेण के०) तमारा प्रभावें करीने (धवलं के०) उज्ज्वल एवुं (जसं के०) यश जे छे तेने (पावंति के०) पामे छे, ते भटोयें तमारा प्रभावें करीने (निज्जिय के०) निर्जित एटले जिंत्या छे (दप्पुध्दर के०) दर्प जे अहंकार तेणें करी मदोन्मत्त थयेला अर्थात् “ अमें योध्धा छैयें ” एवा अभिमान धरनारा जे (रिउनरिंद के०) शत्रु एवा राजाउ तेमना (निवहा के०) समूह जेमणें एवा थाय छे. हवे पूर्वोक्त संग्राम केहेवो छे ? तो के (तिख्खखग्गा के०) तीक्ष्ण एवां जे खड्ग तेना (अभिघाय के०) प्रहार तेणेंकरीने (पविध्द के०) उछृंखल जेम तेमज (उध्दुय के०) आम तेम नाचवा लाग्यां छे (कबंधे के०) मस्तक रहित धड जेने विषे एवो, तथा वली केहेवो ते संग्राम छे ? तो के (कुंतविणिभिन्न के०) कुंत जे भालां, तेमणे विशेषें करी भेदेलां छे अंग जेनां एवा जे (करिकलह के०) हस्तीना त्रीश वर्षना बालको, तेमणें (मुक्कसिक्कार के०) मुकेला एवा जे सीत्कारो ते सीत्कारातिशयें करीने

(पउरम्मि के०) प्रचुर एवो संग्राम छे. एवा दारुण संग्रामने विषे तमारा प्रज्ञावें करी ते सुजटो जयने पामे बे ॥ १६ ॥ १७ ॥

हवे एटला स्तोत्रें करीने कवियें प्रजुनुं अष्टज्ञयनिवारणातिशय पणुं पृथक् पृथक् गाथायुग्में करीने कह्युं, सांप्रत एक गाथायें करीनेज पूर्वे कह्यां एवां जे जयो, तेनुं निवारकत्व कहे छे.

रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण जयाइं॥ पासजिण नाम संकि, त्तणेण पसमंति सवाइं॥१८॥

अर्थः—(रोग के०) कुष्ठादि रोग, (जल के०) पाणी, (जलण के०) अग्नि, (विसहर के०) सर्प, (चोर के०) तस्कर, (अरि के०) शत्रु, (मइंद के०) सिंह, (गय के०) हस्ती, (रण के०) संग्राम, तेनां .(सवाइं के०) सर्व (जयाइं के०) जय ते, (पासजिणनामसंकित्तणेण के०) पार्श्वजिननुं श्रद्धापूर्वक जे नामनुं कीर्त्तन तेने करवे करीने (पसमंति के०) प्रकर्षें करी शांति पामे छे. अर्थात् प्रशब्दें करीने फरी ते जय उत्पन्न पण थाय नहिं. आ ठेकाणे मंत्र कहे बे,ते जेम केः—“ॐ नमिऊण पास विस विसहर वसह जिण फुलिंग ह्रींरोग जल जलण विसहर चोरारि मइंद गय रण जयाइं पास जिण नाम संकित्तणेण पसमंति मम स्वाहा” आ महामंत्र छे, ते आ स्तोत्रना वेराएला अक्षरोयें करी उत्पन्न करेलो बे ॥१८॥

हवे आ गाथामां आ स्तोत्रनुं माहात्म्य कहे छे.

एवं महाजयहरं, पासजिणिंदस्स संथवमुआरं ॥
जवियजणाणंदयरं, कल्लाणपरंपरनिहाणं ॥ १९ ॥

अर्थः—(एवं के०) ए पूर्वोक्त रीतें कह्युं एवुं, (पासजिणिंदस्स के०) श्रीपार्श्वजिनेंद्रनुं (संथवं के०) स्तवन छे, ते केहेवुं छे? तोके (महाजयहरं के०) मोहोटुं एवुं जे जय तेने हरनारुं छे, अर्थात् अनर्थप्रतिघातक छे. आ पदें करीने आ स्तोत्रनुं नाम पण जयहर एवुं जाणवुं. वली ते केहेवुं बे? तो के (उआरं के०) अर्थथकी अने शब्दथकी उदार छे. वली केहेवुं छे? तो के (जवियजणाणंदयरं के०) जव्य जे मुक्तिगमन योग्य जीव, तेने आनंद करनारुं छे, अहिं कोइ शंका करे के, जवियानंदयरं एम न कह्युं, अने जवि

यजणाणंदयरं एम कहेवानुं शुं कारण? कारण कदाचित् पूर्वोक्त पाठ कह्यो हत, तो पण अर्थमां एमज आवत, ते जेम केः—नविकोने आनंद देनारुं बे. त्यां समाधान करे बे के, जो जन शब्दनुं ग्रहण न करियें तो अव्यवहारिक निगोदमां पण नविक जीव बे, तो तेने आनंद थवानो संनव बे नहीं, कारण के ते एकेंडिय बे माटें मध्यें जन शब्दनुं ग्रहण कर्युं बे. अहीं व्यवहार राशिमां जे उत्पन्न थाय, तेने जन कहियें माटे नविक एवा जनने आनंदकारक आ स्तवन बे, एम जाणवुं. वली आ स्तवन केहेवुं बे? तो के (कल्लाणपरंपरनिहाणं के०) कल्याण जे श्रेय तेनी परंपरा जे संतति तेनुं निदानरूप एवुं बे. अहिं केटलाएक तो पदविनंजन करीने आम अर्थ करे बे, ते जेम केः—(नवियजणाणं के०) नविक जनोने (कल्लाणपरं के०) कल्याणैकस्थान एवुं बे. वली केहेवुं बे? तो के (परनिहाणं के०) परनिनानां एटले पर जे शत्रुउ तेनां निन जे कपट, ते उच्चाटनादि तेने (अंदयरं के०) बांधनारुं बे, अर्थात् प्रकारांतरें करी एम जाणवुं जे कुइ कर्मोने स्तंनन करनारुं बे ॥ १ए ॥

हवे आ गाथायें करीने जे कोइ नयस्थानको होय, ते बेकाणें आ स्तवन नणवुं, एवा नयस्थानकोने प्रगट करतो बतो कहे बे.

राय नय जरक रस्कस, कुसुमिणडुस्सउणरिरकपीडासु ॥
संऊासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ ७० ॥

अर्थः—(रायनय के०) राजनय, तथा (जरक के०) यक्ष, (रस्कस के०) राक्षस, (कुसुमिण के०) कुस्वप्न, तथा (डुस्सउण के०) डुःशकुन, एटले डुष्ट शकुन अने (रिरक के०) अशुन ग्रह, ते सर्वेनी (पीडासु के०) पीडाउने विषे तथा (दोसु संऊासु के०) बे संध्या ते एक प्रातःकाल अने बीजो सायंकाल तेने विषे तथा (पंथे के०) पंथ जे अरण्यादि मार्ग तेने विषे तथा (उवसग्गे के०) देवकृत अने मनुष्यकृत उपसर्गोने विषे (तह के०) तथा (य के०) च ते समुच्चयार्थवाचक बे. (रयणीसु के०) रात्रिउने विषे ॥ २० ॥

जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥
पासो पावं पसमेउ, सयलनुवणच्चिअचलणो ॥ ७१ ॥

अर्थः–(जो के०) जे कोइ जन, ए उक्त प्रकारें करीने श्रीपार्श्वजिन नुं आ स्तव जे बे तेने (पढइ के०) नणे बे, तथा (जोअ निसुणइ के०) जे उपयोगपूर्वक सांजले बे, (ताणं के०) ते बेहु जननुं (य के०) वली (कइणो के०) कृतिना एटले आ प्रस्तुत स्तोत्रना कर्त्ता एवा (माणतुंगस्स के०) मानतुंग सूरि तेमना निजप्रजु एवा जे (पासो के०) पार्श्वनामा जिन, अहिं पार्श्व पदें करीने पार्श्वयक्ष ग्रहण करवो नहिं, कारण के ते यक्षने हवे के हेशुं एवा विशेषणोनी अनुपपत्ति बे. माटे ते पार्श्वजिन, (पावं के०) अशुज कर्म जे राजजयादिनुं कारण, तेने (पसमेउ के०) विनाश करो, ते पार्श्व जिन केहेवा बे ? तो के (सयलजुवणच्चियचलणो के०) सकल एवुं जुवन जे जगत् तेणें अहिं जुवन शब्दें करीने त्रिजुवनमां रहेनारा जनो ग्रहण करवा, तेणें अर्चित एटले पूजित बे चरण जेनां एवां बे ॥ २१ ॥

हवे ते पार्श्वजिन केहेवा बे ? तेनो अतिशय आ गाथायें करी कहे बे.

उवसग्गंते कमठा, सुरम्मि फाणाउ जो न संचलिउ ॥
सुर नर किन्नर जुवई, हिं संथुउ जयउ पासजिणो॥२२॥

अर्थः–(उवसग्गंते के०) उपसर्गकारक एवो (कमठासुरम्मि के०) कमठासुर बते पण (जो के०) जे जगवान् (फाणाउ के०) षड्जीव निकाय हितचिंतन रूप एवा ध्यानथकी (न संचलिउ के०) चलायमान थया नहीं. अर्थात् क्षोज पाम्या नहीं. वली ते केहेवा बे ? तो के (सुर के०) देवो (नर के०) मनुष्यो (किन्नर के०) किंनर (जुवइ के०) युवती एटले ते सर्वेनी स्त्रीयो तेणें (संथुउ के०) रूडे प्रकारें एटले त्रिधा शुद्धियें करीने स्तुति करेला एवा (पासजिणो के०) श्रीपार्श्वजिन ते (जयउ के०) जयतु एटले उत्कर्षेंकरी जयवृद्धिने पामो ॥ २२ ॥

एअस्स मज्झयारे, अठारस अरकरेहिं जो मंतो ॥
जो जाणइ सो फायइ, पासं परमेसरं पयडं ॥२३॥
तं नमह पासनाहं, धरणिंद णमंसियं जयविणाडं ॥
जस्सप्पजावेण सया, नासंति उवद्दवा सवे ॥२४॥

अर्थः–(एयस्स के०) आ स्तोत्रना (मज्झयारे के०) मध्यने विषे (जो

के०) जे (मंतो के०) मंत्र (अठारस के०) अढार (अरकरेहिं के०) अक्षरोएकरी युक्त छे तेने (जो के०) जे पुरुष (जाणइ के०) जाणे छे. (सो के०) ते पुरुष (पासं परमेसरं के०) श्रीपार्श्वनाथ जगवाननुं (पयडं के०) प्रगट (झायइ के०) ध्यान करे छे ॥ २३ ॥

(तंके०) ते श्री (पासनाहं के०) पार्श्वनाथ स्वामी प्रत्ये तमे (नमह के०) नमत एटले नमस्कार करो. ते श्री पार्श्वनाथ कहेवा छे तो के जेने (धरणिंद के०) धरणींद्रे (णमंसियं के०) नमस्कार कस्यो छे. वली (जयविणासं के०) इहलोकादिक सात जयनो विनाश करनार एवा, तथा (जस्स के०) जेना (प्पजावेण के०) प्रजावे करीने (सया के०) सदा (सव्वे के०) सर्वे एवा जे (उवद्दवा के०) उपद्रवो ते (नासंति के०) नाश प्रत्ये पामे छे ॥ २४ ॥

जं समरंताण मणे, न होइ वाही न तं महाडुक्खं ॥ नामं पि य मंतसमं, नाह थुणामि जत्तीए ॥ २५ ॥ इति श्रीमान तंगसूरिविरचितं जय हर स्तोत्रं पंचमं स्मरणं समाप्तं ॥

अर्थः–(जं के०) यं एटले जे श्रीपार्श्वनाथने (मणे के०) मनसि एटले मनने विषे (समरंताणं के०) स्मरतां एटले स्मरण करनार छे तेने (वाही के०) व्याधि (न होइ के०) न जवति एटले न होय, (य के०) च एटले तथा (तं के०) तेने (महाडुक्खं के०) महाडुःख (न के०) न होय. (य के०) च एटले तथा जेनुं (नामंपि के०) श्रीपार्श्वनाथ एवुं नाम पण (मंतसमं के०) मंत्रसमान छे, एवा (नाह के०) हे नाथ ! तमने (जत्तीए के०) ज त्त्या एटले जक्तियें करी (इह के०) आ स्थलने विषे (थुणामि के०) स्तवीमि एटले हुं स्तवुं छुं ॥ २५ ॥ इति पंचमस्मरणस्य बालावबोधः ॥

॥ अथ श्री जीरिकापल्लीपार्श्वनाथस्तोत्रं षष्ठस्मरणं प्रारन्यते ॥

ॐ नमो देवदेवाय, नित्यं जगवतेऽर्हते ॥ श्रीमते पार्श्वनाथाय, सर्वकल्याणकारिणे ॥ १ ॥

अर्थः–(श्रीमते के०) आठ प्रातिहार्यरूप जे लक्ष्मी, ते छे जेने एवा (पार्श्वनाथाय के०) श्रीपार्श्वनाथने (नित्यं के०) सर्वकाल (नमो के०)

नमस्कार होजो. हवे ते श्रीपार्श्वनाथ कहेवा छे ? तो के (ॐ के०) रक्षा करे ते ॐ कहेवाय ते रक्षा करनारा एवा तथा वली कहेवा छे ? तो के (देवदेवाय के०) चार प्रकारना देवताउने पण पूजन करवा योग्य एवा देवना देव छे. वली कहेवा छे ? तो के (नित्यं नगवते के०) अखंमितज्ञानादिकें युक्त एवा, वली कहेवा छे ? तो के (अर्हते के०) पूजन करवा योग्य अथवा धर्म कहेवाने माटे योग्य एवा वली कहेवा छे ? तो के (सर्व कल्याणकारिणे के०) सर्व प्रकारना कल्याणना करनारा छे ॥ १ ॥

ह्रींरूपाय धरणींद्र,पद्मावत्यर्चितांघ्रये ॥
शुद्धातिशयकोटीनिः, सहिताय महात्मने ॥२॥

अर्थः—वली श्रीपार्श्वनाथ कहेवा छे ? तो के (ह्रींरूपाय के०) ह्रीं जे मायाबीज तेज छे स्वरूप जेनुं एवा तथा (धरणींद्पद्मावत्यर्चितांघ्रये के०) धरणेंद्र तथा तेनी देवी जे पद्मावती तेणें अर्चितांघ्रये एटले अर्चन कर्यां छे चरण जेनां एवा तथा (शुद्धातिशयकोटीनिः के०) आवरण रूपकर्मना क्षयथी शुद्ध एवा जे अष्ट प्रातिहार्यादि अतिशय तेनी जे कोटी संख्या एटले क्रोडो गमे तेणें करी (सहिताय के०) सहित एवा तथा (महात्मने के०) कर्मरूप मलनो नाश करवाथी लोकालोकनो जाण एवो छे आत्मा जेनो एवा जे श्रीपार्श्वनाथ तेने मारो नमस्कार होजो ॥ २ ॥

अट्टे मट्टे पुरोऽदुष्ट, विघट्टे वर्णपंक्तिवत् ॥
दुष्टान् प्रेतपिशाचादीन्, प्रणाशयति तेऽनिधा ॥ ३ ॥

अर्थः—हे पार्श्वजिन ! (ते के०) तव एटले तमारुं (अनिधा के०) नाम, जप्युं थकुं (दुष्टान् के०) दुष्स्वनाववाला एवा (प्रेतपिशाचादीन् के०) प्रेतरूप देवताउ अने पिशाच व्यंतर विशेष ते छे आदिमां जेने एवा सर्वेने दूरथीज (अट्टेमट्टे के०) अट्टेमट्टे ए चार तथा (पुरः के०) आगल (दुष्टविघट्टे के०) दुष्टविघट्टे ए पांच (वर्णपंक्तिवत् के०) अक्षरनी पंक्तिनी परे एटले 'अट्टे मट्टे दुष्टविघट्टे' ए मंत्रना नव अक्षर जेम विघ्ननो नाशकरें छे, तेम (प्रणाशयति के०) नाश करे छे, एवुं छे ॥ ३ ॥

स्तंनय स्तंनय स्वाहा, शतकोटिनमस्कृत ॥
अधिमथ्कर्मणां दूरा, दापतंतीर्विडंबनाः ॥ ४ ॥

अर्थः–(स्वाहाशनकोटिनमस्कृत के०) स्वाहाशन जे देवताउ तेनी कोटियोयें नमस्कार कर्यो ले जेने, तेना संबोधनने विषे हेस्वाहाशनकोटिनमस्कृत! तमे (अधिमथ्कर्मणां के०) संसारमां जीवने अधिक मथन करे ले, अर्थात् घणुं ज्रमण करावे ले एवा कर्मोनी (दूरादापतंतीः के०) दूरथी आपतंती एटले आवेली एवी (विडंबनाः के०) दुःखोने, विडंबनाने (स्तंजय स्तंजय के०) स्तंजन करो, स्तंजन करो,अर्थात् मटाडो ॥४॥

नाजिदेशोज्ञवन्नाले, ब्रह्मरंध्रप्रतिष्ठिते ॥
ध्यातमष्टदले पद्मे, तत्त्वमेतत्फलप्रदम् ॥५॥

अर्थः–(एतत् के०) जगवन्मंत्र रूप (तत्त्वं के०) तत्त्वते (नाजिदेशोज्ञवन्नाले के०) नाजिदेशथकी उत्पन्न थयुं ले नाल जेनुं एवा अने (ब्रह्मरंध्रप्रतिष्ठिते के०) ब्रह्मरंध्र जे दशमुं द्वार तेने विषे प्रतिष्ठित एटले रह्या एवा (अष्टदले पद्मे के०) आठ दलवाला कमलने विषे (ध्यातं के०) ध्यान कर्युं लतुं (फलप्रदं के०) विशेष फलने देनारुं थाय ले ॥ ५ ॥

तत्त्वमत्र चतुर्वर्णी, चतुर्वर्णविमिश्रिता ॥
पंचवर्णक्रमध्याता, सर्वकार्यकरी जवेत् ॥ ६ ॥

अर्थः–(अत्र के०) आ ध्यानना अधिकारमां (तत्त्वं के०) रहस्य, कहेवाय ले, ते शुं रहस्य कहेवाय ले ? तो के, ए (चतुर्वर्णी के०) पार्श्वनाथ एवा चार अक्षर रूप जे विद्या ले, ते विद्या (चतुर्वर्णविमिश्रिता के०) 'अट्टेमट्टे' ए चार अक्षरोयें युक्त, वली ते विद्या (पंचवर्णक्रमध्याता के०) 'डुष्टविघट्टे' ए पांच वर्णनी सार्थे मलेली एवी क्रमें करी ध्यान करेली लती अर्थात् (पार्श्वनाथ अट्टेमट्टेडुष्टविघट्टे) एम ध्यान करे लते ते विद्या (सर्वकार्यकरी के०) सर्व काम सफल करनारी (जवेत् के०) होय. ते मंत्रः– ॐ पार्श्वनाथ अट्टेमट्टे डुष्ट विघट्टे स्वाहा ॥ ६ ॥

क्षिप ॐ स्वाहेति वर्णैः,कृतपंचांगरक्षणः ॥ योऽजि
ध्यायेदिदं तत्त्वं, वश्यास्तस्याखिलश्रियः ॥ ७ ॥

अर्थः– क्षिप ॐ स्वाहा ए पांच वर्णोयें करी (कृतपंचांगरक्षणः के०) ध्यानमां विघ्न करनारा एवा डुष्टदेवताउथी कर्युं ले पंचांग एटले पोताना

शरीरना पांच अवयवोनुं रक्षण जेणें एवो (यः के०) जे पुरुष, (इदं तत्त्वं के०) आ गाथामां कहेलुं एवुं जे त्रैलोक्यविजयमंत्ररूप तत्त्व तेने (अभिध्यायेत् के०) ध्यान करे, जपे. (तस्य के०) ते पुरुषने (अखिलश्रियः के०) देवनी तथा मनुष्यनी सुखरूप सघली संपत्तियो (वश्याः के०) वश थइ रहे छे ॥ ७ ॥

पुरुषं बाधते बाढं, तावत्क्लेशपरंपराः ॥
यावन्न मंत्रराजोऽयं,हृदि जागर्त्ति मूर्त्तिमान् ॥८॥

अर्थः—(पुरुषं के०) पुरुषने (क्लेशपरंपराः के०) संसारथी उत्पन्न थती जन्म, जरा, रोग, शोक, अने मरण, ए आदिक अनेक प्रकारनी क्लेशनी परंपरा (तावत् के०) त्यां सुधी (बाढं के०) यथेष्ट (बाधते के०) पीडा करे छे. (यावत् के०) ज्यां पर्यंत (अयं के०) आ प्रथम कहेलो एवो (मंत्रराज के०) त्रैलोक्यविजयनामा श्रेष्ठ मंत्र ते (मूर्त्तिमान् के०) दुःखनाशन सामर्थ्यरूप दृढपणुं छे जेमां एवो छतो (हृदि के०) हृदयने विषे (न जागर्त्ति के०) जागतो नथी, अर्थात् ज्यां सुधी पुरुष ए मंत्र राजनो जप करतो नथी त्यां सुधी क्लेश पामे छे. ॥ ८ ॥

व्याधिबंधवधव्याला, नलांभःसंभवं भयम् ॥
क्षयं प्रयाति श्रीपार्श्व, नामस्मरणमात्रतः ॥ ९ ॥

अर्थः—(व्याधि के०) दुष्टरोगो, (बंध के०) बंधन, (वध के०) कशादिकनो प्रहार, (व्याल के०) दुष्ट एवो कृष्णसर्प, अथवा हस्ती (अनल के०) ग्रामवगेरेने बाली नाखनार अग्नि, (अंभः के०) समुद्र वगेरेनुं जल तेथी (संभवं के०) उत्पन्न थयुं एवुं (भयं के०) भय, ते (श्रीपार्श्वनामस्मरणमात्रतः के०) श्रीपार्श्वनाथना नाममात्रना स्मरणथी (क्षयं के०) नाशने (प्रयाति के०) पामे छे ॥ ९ ॥

यथा नादमयो योगी, तथा चेतन्मयो भवेत् ॥
तदा न दुष्करं किंचित्, कथ्यतेऽनुभवादिदम् ॥१०॥

अर्थः—(यथा के०) जेम (योगी के०) योगने साधनारो पवनने दशमा द्वारमां खेंचीने (नादमयः के०) नादमय थाय छे, अर्थात् नादमां

लीन थाय ले. (तथा के०) तेम (तन्मयः के०) ते त्रैलोक्यविजयमंत्रमां लीन एवो (चेत् के०) जो थाय, (तदा के०) तो (किंचित् के०) कांइपण वस्तु (न डुष्करं के०) डुर्लन्न थाती नथी. अर्थात् सर्व कार्य ते पुरुषने सिद्ध थाय ले. (इदं के०) आ सर्व (अनुनवात् के०) अनुनवथी (कथ्यते के०) कहेवाय ले. अर्थात् ए मंत्रराज सर्व कार्यने सिद्धि करनारो ले, ते अमारा अनुनवथी कहियें लेयें, एम कवि कहे ले. ॥ १० ॥

इति श्रीजीरिकापल्लीस्वामी पार्श्वजिनः स्तुतः ॥
श्रीमेरुतुंगसूरेः स्तात्, सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ ११ ॥

अर्थः–(इति के०) एम प्रथम कहेला मंत्र, यंत्र, आम्नायपूर्वक (स्तुतः के०) स्तुति करेला एवा (श्रीजीरिकापल्लीस्वामीपार्श्वजिनः के०) जीरिकापल्ली ग्रामना स्वामी एवा जे श्री पाश्वजिन ते (मेरुतुंगसूरेः के०) मेरुतुंगसूरि के जे श्रीविधिपक्षगलना ईश स्तोत्रना कर्त्ता तेने (सर्वसिद्धिप्रदायकः के०) अणिमादि आठ प्रकारनी सिद्धिने आपनार एवो (स्तात् के०) होजो ॥ ११ ॥

जीरापल्लीप्रनुं पार्श्वं, पार्श्वयक्षेण सेवितम् ॥
अर्चितं धरणेंडेण, पद्मावत्या प्रपूजितम् ॥ १२ ॥

अर्थः–जीरापल्लीनगरीना पति अथवा जीरापल्ली नगरीमां पोतानो महिमा देखाडवा माटें प्रकट थया एवा अने (पाश्वयक्षेण के०) पाश्व नामा यक्ष तेणें (सेवितं के०) सेवेला अर्थात् पाश्वयक्ष जेनी सेवा करे ले. तथा (धरणेंडेण के०) धरणेंडें (अर्चितं के०)पूजेला,तथा (पद्मावत्या के०) पद्मावती जे नगवाननी शासनदेवता तेणे प्रपूजितं एटले प्रकर्षथी पूजेला ॥ १२ ॥

सर्वमंत्रमयं सर्व, कार्यसिद्धिकरं परम् ॥
ध्यायामि हृदयांनोजे, नूतप्रेतप्रणाशकम् ॥ १३ ॥

अर्थः–(सर्वमंत्रमयं के०) सर्व स्तंनन, मोहन, वशीकरणादिक मंत्ररूप तथा (सर्वकार्यसिद्धिकरं के०) सर्वकार्यनी सिद्धि करनारा, अने (नूतप्रेत के०) नूत एटले व्यंतर, अने प्रेत एटले मरण पामीने प्रेतयोनीने पामेला जे पोताना गोत्रीउ तेने (प्रणाशकं के०) नाश करनार एवा जे श्रीपाश्वनाथ तेने (हृदयांनोजे के०) हृदयने विषे रहेला अष्टद

लपद्मने विषे (ध्यायामि के०) ध्यान करुं बुं, अथवा जपुं बुं ॥ १३ ॥

श्रीमेरुतुंगसूरींद्रः, श्रीमत्पार्श्वप्रजोः पुरः ॥ ध्यानस्थितं हृदि ध्यायन्, सर्वसिद्धिं लजे ध्रुवम् ॥१४॥ इति श्रीमेरुतुंग सूरि विरचितं प्रजुश्री जीरिकापल्ली पार्श्वनाथस्तवनं षष्ठं स्मरणं ॥

अर्थः—स्तुतिकर्त्ता हुं श्रीमेरुतुंगसूरिनामक (श्रीमत्पार्श्वप्रजोः के०) नित्य बे श्री ते शोजा जेने एवा पार्श्वप्रजुनी (पुरः के०) आगल (ध्यानस्थितं के०) पद्मासन अने ध्यानमुद्रा वडे करीने रहेला एवा, ते पार्श्वने (हृदि के०) हृदयकमलमां (ध्यायन् के०) ध्यान करता थका (सर्वसिद्धिं के०) सर्व प्रकारनी सिद्धिने (ध्रुवं के०) निश्चयें करी (लजे के०) पामुं बुं ॥ १४ ॥ इति प्रजु श्री जीरिकापल्लीपार्श्वस्तवनं षष्ठं स्मरणं संपूर्णम् ॥

ए बहुं स्मरण कह्या पबी "जं किंचिं नाम तिबं" ए गाथा कहीने शक्रस्तव एटले नमुत्थुणं नामक सप्तमस्मरण कहेवुं. ते आ पडिक्कमणाना पृष्ठ ७१ मध्यें अर्थसहित बपाइ गयेलुं बे माटें इहां लख्युं नथी.

॥ अथ श्रीवीरगणिकृत लघु अजितशांतिस्तवनं प्रारज्यते ॥

गप्रअवयारसोहम्मसुरसामिउ, जणणि जेय संथुणइ जत्तिजरजाविउ ॥ ति जिण इरकागकुरुवंस जूसणधरा, अजियसंती य नंदंतु मंगलकरा ॥ १ ॥

अर्थः—(जेअ के०) ययोः एटले जे अजितनाथ अने शांतिनाथ (गप्रअवयार के०) गर्जावतारे एटले गर्जावतारने विषे (जत्तिजरजाविउ के०) जक्तिजरजावितः एटले जक्तिना जरथी जावित ते प्रकाशित एवो (सोहम्मसुरसामिउ के०) सौधर्मसुरस्वामी एटले सौधर्म देवलोकनो इंद्र, ते श्रीअजितनाथ अने शांतिनाथ जगवान् ए वेहुनी (जणणि के०) माताउने (संथुणइ के०) संस्तौति एटले स्तवे बे. ते बेहु जिन कहेवा बे तो के (इरकागकुरुवंसजूसणधरा के०) अजितनाथ जे बे ते इक्ष्वाकु कुलवंशने विषे जूषणना धरनार बे,अने शांतिनाथ जे बे ते कुरुकुलवंशने विषे जूषणना धरनार बे, अथवा बेहु वंशनेविषे जूषणरूप बे एवा तथा (मंगलकरा के०)

मंगलने करनारा एवा (अजियसंतिय के०) अजितनाथ अने शांतिनाथ नामक (तिजिण के०) ते बेहु जिन (नंदंतु के०) आनंदने प्राप्त थाउ ॥१॥

जम्मकालम्मि जे असुरसुरजासुरे, न्हविय बत्ती
सइंदेहिं सुरगिरिसिरे ॥ खयरनरअमरआणंदवद्धा
रया, जयउ जगि अजियसंती य जट्टारया ॥ २ ॥

अर्थः–(जम्मकालम्मि के०) जन्मकालने विषे अर्थात् जन्मकालना महोत्सवमां (जे के०) यो एटले जे (असुरसुरजासुरे के०) असुर ते जवनपति, सुर ते वैमानिक देवताउ तेणें करी जासुरे एटले प्रदीप्त एवा (सुर गिरिसिरे के०) सुरगिरि एटले मेरुपर्वतना सिरे एटले मस्तक उपर (ब त्तीसइंदेहिं के०) द्वात्रिंशदिंद्रैः एटले बत्रीश इंद्रोयें (न्हविय के०) स्नापि तौ एटले न्हवराव्या एवा अने (खयरनरअमरआणंदवद्धारया के०) ख चर जे विद्याधर आकाशमां फरनारा एवा तथा नर ते जूमिउपर फरनारा मनुष्यो अने अमर एटले चारे निकायना, सौधर्मादि देवलोकमां वास कर नारा देवताउ तेमने आनंद वधारनारा अने (जट्टारया के०) जट्टारकाः एटले पूजनीय एवा (अजियसंतीय के०) अजितनाथ अने शांतिनाथ ते बे (जगि के०) जगतने विषे (जयउ के०) जयने प्राप्त थाउ ॥ २ ॥

खविय रिउवग्ग वररज्जसुह माणिउं,पवरदाणेण ज
गसयल संमाणिउं ॥ जेहिं मुरकंकरी दिरक कंरवीक
या, ताहिं थुणि अजियसंती य पयपंकया ॥ ३ ॥

अर्थः–(रिउवग्ग के०) रिपुवर्ग एटले अंतरंग शत्रुना वर्गने (खविय के०) क्षपित्वा एटले खपावीने (वररज्जसुहमाणिउं के०) उत्तम एवा राज्यना सुखने मानीने एटले जोगवीने पछी (पवरदाणेण के०) प्रवर दानेन एटले उत्तम जे सांवत्सरिक दान ते दानें करी (सयल के०) स घलां (जग के०) जगतने (संमाणिउं के०) सन्मान करीने (जेहिं के०) जे अजितनाथ अने शांतिनाथ तेमणें (मुरकंकरी के०) मोक्षकरी एटले मोक्ष आपनारी एवी (दिरक के०) दीक्षाने (कंरकीकया के०) कांक्षी कृता एटले स्वीकारी. (ताहिं के०) ते पूर्वोक्त बेहु जिनोना (पयपंकया

के०) पदपंकजने हे नविकजन ! तुं (थुणि के०) स्तुति कर ॥ ३ ॥

घोरतव चरणउवसग्गु अहियासिउं, डुज्जए घाइक
म्माइं निन्नासिउं ॥ जेहि नाणं समुप्पाडियं विमल
यं, डुइय सोलसम जिण ति जणमह सुविण्यं ॥४॥

अर्थः–(घोरतवचरण के०) घोर एवा तपश्चरण एटले आकरा तपने आचरण करवुं तेने विषे अथवा घोर एटले आकरुं तप अने चारित्र तेने विषे (उवसग्गु के०) उपसर्गान् एटले उपसर्गोने (अहियासिउं के०) अधिसह्य एटले सहन करीने (डुज्जएघाइकम्माइं के०) डुर्जय घातिकर्माणि एटले डुर्जय एवा ज्ञानावरणीयादिरूप घातिकर्मोने (निन्नासए के०) निर्नाश्य एटले नाश करीने (जेहिं के०) जे अजितनाथं अने शांतिनाथें (विमलं के०) निर्मल एवुं (नाणं के०) केवलज्ञान, (समुप्पाडियं के०) समुत्पादितं एटले उत्पन्न कर्युं, एवा (तिके०) ते (डुइयसोलसमजिण के०) द्वितीयषोडशमं जिनं एटले बीजा अने सोलमा जिनने अर्थात् अजितनाथ अने शांतिनाथने हे (जण के०) हे नव्यजनो ? तमे (सुविणयं के०) सुविनयं एटले विनय जेम होयतेम (णमह के०) नमत एटले नमन करो. तथा (अह के०) हुं पण नमुं बुं. अहिं नमह पद पांचमी गाथामांथी लीधो ढे ॥ ४ ॥

पवरदेसणय तिहुंयण वि पडबोहियं, नवोवग्गा
हिकम्माइं मसमूरिश्रं ॥ पवरसुहपरम निव्वाण पुरि
जे गया, हठ ते नमह जिण अजिअसंती सया ॥ ५ ॥

अर्थः– पढी (पवरदेसणय के०) प्रवरदेशनया एटले उत्तम देशनाथी (तिहुंयणवि के०) त्रण नुवनने पण (पडिबोहियं के०) प्रतिबोध करीने (नवोवग्गाहिकम्माइं के०) नवोपग्राहि एवा, वेदनी आयुष्कादि अघाति कर्मोने (मसमूरियं के०) क्षपयित्वा एटले खपावीने (पवरसुहपरम निव्वाणपुरि के०) प्रवर एटले उत्तम ढे सुख जेनेविषे एवा परम एटले उत्कृष्ट निर्वाणपुरि एटले मोक्षपुरने विषे (जे के०) जे (गया के०) गयां. ए कहेवा बेहु नगवान् ढे ? तोके (हठ के०) हृष्टौ एटले हर्षित ढे. (ते के०)

तो एटले ते (अजिअसंतीके०) अजितनाथ अने शांतिनाथ एवा बे (जिण के०) जिनोने (नमह के०) नमत एटले हे जव्यजनो नमस्कार करो॥५॥

कुविअ रिउवग्ग हरि सरह गय जोयणी, जूय वेयाल
अहि रस्कसी मायणी॥ तासु उवसग्ग कीरेय नासेस
यं, हियइ जो एहु समरेइ जिण जुअलयं ॥ ६ ॥

अर्थः- (जो के०) ये एटले जे पुरुष (एहु के०) आ (जिणजुअल यं के०) जिनयुगलकं एटले अजितनाथ अने शांतिनाथ नामा बे जिनो ने (हियइ के०) हृदयनेविषे (समरेइ के०) स्मरति एटले स्मरण करे ठे, (तासु के०) तेषु एटले ते पुरुषोने विषे (कुविअरिउवग्ग के०) कुपि तरिपुवर्ग एटले कोपायमान थयेलो जे शत्रुवर्ग तथा (हरि के०) सिंह, (सरह के०) शरज ते अष्टापद पक्षी तथा (गय के०) गज एटले हस्ती, (जोयणी के०) योगिनी एटले जोगणी, (जूय के०) जूत, (वेयाल के०) वेताल, (अहि के०) सर्प, (रस्कसी के०) राक्षसी, (मायणी के०) मा किनी ते सर्व (उवसग्ग के०) उपसर्गोने (कीरेइ के०) करवाने (नासे सयं के०) न शक्नुवंति एटले शक्तिमान् थता नथी ॥ ६ ॥

जइ न अहिलसह दालिद्द दोहग्गयं, तुम्ह अहिल
सह जइ लच्छि सोहग्गयं॥ जवह जइ जीअ जइ सिवसु
हासत्तया, हवह एयस्स जिण डुगइ तो जत्तया ॥ ७ ॥

अर्थः-हे जविक! (जइ के०) यदि एटले जो तमें (दालिद्दोहग्गयं के०) दारिद्र्यने अने दौर्जाग्यने (न अहिलसह के०) न अजिलषथ एटले अजिलाष करता नथी? तथा (तुम्ह के०) तमें (जइ के०) यदि एटले जो (लच्छिसोहग्गयं के०) लक्ष्मीने, अने सौजाग्यने (अहिलस्स के०) अजिलषथ एटले अजिलाष करो ठो? तथा (जवह के०) संसारथकी (जइ के०) यदि एटले जो (जीअ के०) जीताः एटले बीक राखता एवा ठो, तथा तमो (सिवसुहासत्तया के०) शिवसुखासक्तकाः एटले मोक्ष सु खमां आसक्त ठो! (तो के०) तो (एयस्स के०) एतस्य एटले आ (डुगइ के०) द्विकस्य एटले अजितनाथ अने शांतिनाथ ए बे जिनना

(जत्तया के०) जक्ताः एटले जक्तो (हवह के०) जवथ एटले थाउ ॥७॥

एय संवच्छरिय पक्खिय चउमासिए, अजियसंतिथ्र
यं जणइ जो निसुणई॥ कहइ कविवीरगणि जविअ
जणअग्गए,असुह तसु जाइ सुह सयल संपज्जए॥८॥

इति श्रीवीरगणिकृत लघु अजितशांतिस्तव समाप्त ॥

अर्थः–(एय के०) आ (अजियसंतिथ्रयं के०) अजितशांतिस्तवं एटले अजितशांतिस्तवनने (संवच्छरिय के०) सांवत्सरिनेविषे, (पक्खिय के०) पाक्षिकने विषे, अने (चउम्मासिए के०) चातुर्मासिकने विषे (जो के०) जे (जणइ के०) जणे बे,तथा (निसुणइ के०) सांजले बे, (तसु के०) ते पुरुषना (असुह के०) डुःख (जाइ के०) जाय बे, अने ते पुरुषने (सुहसयल के०) सकल सुख (संपज्जए के०) संपद्यते एटले प्राप्त थाय बे. एम (कविवीरगणि के०) वीरगणि नामक कवि (जविअजणअग्गए के०) जविकजनाग्रे एटले जविकजननी आगल (कहइ के०) कथयति एटले कहे बे ॥८॥

॥ इति श्रीलघु अजितशांतिजिनस्तवनस्य बालावबोधः समाप्तः ॥

॥ अथ श्रीजयशेखरसूरिविरचितं श्रीबृहत् अजितशांतिस्तवनं प्रारज्यते ॥

सकलसुखनिवहदानाय सुरपादपं, पादपंकजनतानेक
नाकाधिपम्॥ अचलशिवनिलयमप्रलयगुणशोजितं,
नौमि जिनमजितमहमजितमुदितोदितम् ॥ १ ॥

अर्थः–(अहं के०) हुं, (अजितं के०) रागादिक वैरियें नही जितेला एवा (जिनमजितं के०) श्रीअजितनामा जिनने (नौमि के०) कवि कहे बे स्तवुं बुं. ते श्रीअजितनाथ जगवान् कहेवा बे ? तोके (सकलसुखनिवहदानाय के०) समग्र सुखनो निवह जे समूह तेनुं दान जव्यजनोने आपवा माटें (सुरपादपं के०) कल्पवृक्ष समान एवा तथा वली कहेवा बे? तो के (पादपंकजनतानेकनाकाधिपं के०) जेना चरणकमलने विषे अनेक नाकाधिप जे इंद्र ते नत एटले नम्या बे, एवा वली कहेवा बे? तो के (अचलशिवनिलयं के०) निश्चल बे शिव जे मोक्ष तेज निलय ते निवासस्थान जेनुं एवा, वली ते कहेवा बे? तो के (अप्रलयगुणशोजितं के०) जेनो

प्रलय ते नाश थाय नहीं एवा जे गुणो तेणेंकरी शोजायमान एवा अने वली केहेवा ने ? तो के (उदितोदितं के०) उत्तरोत्तर जेनो उदय ने एवा ने ॥१॥

शांतिमुपशांतजवजूरिजयपरिजवं, जुवनवनसुघन
घनवारिवरवैजवम् ॥ परमशममिंडुसममसमम
हिमोदधे, नैतुमीहामनंतामहं संदधे ॥ २ ॥

अर्थः-(अहं के०) हुं (शांति के०) श्रीशांतिनाथने (नंतुं के०) नमस्कार करवाने (अनंतां के०) जेनो अंत नथी एवी (ईहां के०) वांबनाने (संदधे के०) समस्तपणायें धारण करुं बुं, ते शांतिनाथ कहेवा ने ? तो के (उपशांत के०) उपशमी गया ने (जवजूरिजयपरिजवं के०) संसार संबंधी घणा जयना परिजव एटले पराजव जेथकी एवा ने. वली कहेवा ने ? (जुवनवन के०) जुवनरूप जे वन तेने विषे (सुघन के०) गाढ एवो (घन के०) मेघ तेनुं (वारि के०) जल तेना सरखुं ने (वर के०) श्रेष्ठ (वैजवं के०) ऐश्वर्य जेनुं एवा, वली ते कहेवा ने ? तो के (असममहिमोदधेः के०) जेने समान कोइ नथी एवो जे महिमारूप समुड तेने (इंडुसमं के०) चंडसमान अर्थात् जेम चंडदर्शनथी समुड वृद्धिंगत थाय तेम श्री जिनेश्वररूपचंडथी महिमारूप समुड वृद्धिंगत थाय ने. वली ते कहेवा ने ? तो के (परमशमं के०) उत्कृष्ट ने शम एटले उपशम जेने एवा ने ॥२॥

पुण्यरथसुपथनयनाय वृषजक्रमौ, विपुलसंसार
सरिदोघपुलिनोपमौ ॥ सिद्धिसीमंतिनीश्रुतिवतं
सायितौ, संपदे जिनपती अजितशांती युतौ ॥३॥

अर्थः-(अजितशांती के०) श्रीअजितनाथ अने श्रीशांतिनाथ ए बे (जिनपती के०) जिनेश्वर ते (युतौ के) एकत्र मलेला एवा बता (संपदे के०) लक्ष्मीने अर्थे हो. ते बेहु जिनेश्वर कहेवा ने ? तो के (पुण्यरथ के०) पुण्यरूप जे रथ तेने (सुपथनयनाय के०) सारा मार्गप्रत्यें पमाडवाने (वृषजक्रमौ के०) वृषजनी समान समर्थ एवा वली ते बेहु कहेवा ने ? तो के (विपुल संसार के०) विपुल एटले विस्तीर्ण एवो जे संसार तेज (सरिदोघ के०) सरित् जे नदी तेनो उघ एटले प्रवाह तेना (पुलिनोपमौ के०)

पुलिन जे रेताल तेनी छे उपमा जेने अर्थात् नदीना प्रवाहमांथी वही जता जनने रेताल जमीन जेम आश्रय आपीने रक्षण करे छे. तेम ए जिनवर पण संसारमां पडेला जनने तारे छे. वली ते कहेवा छे ? तो के (सिद्धिसीमंतिनी के०) मुक्तिरूप जे स्त्री तेने (श्रुतिवतंसायितौ के०) कर्णाभरणनी एटले कानना आभूषणनी पठें आचरण करनार एवा छे ॥३॥

यः समूहो मुदामजनि जनकांबयो, स्तारमवतार
मवगम्य सम्यग्ययोः ॥ गजवृषप्रमुखसुस्वप्नसंद
र्शना, त्तमलमवगंतुमन्ये न मन्ये जनाः ॥ ४ ॥

अर्थः—(गजवृषप्रमुखसुस्वप्नसंदर्शनात् के०) हाथी, वृषभ, प्रमुख रूडा चौद स्वप्नना दर्शनथकी (ययोः के०) जे अजितनाथ अने शांतिनाथ ते मनो (तारं के०) प्रशस्य वखाणवा लायक एवा (अवतारं के०) अवतारने (सम्यक् के०) रूडे प्रकारें (अवगम्य के०) जाणीने (मुदां के०) हर्षोनो (यः के०) जे (समूहः के०) समूह, (जनकांबयोः के०) नगवाननां जनक जे पिता अने अंबा जे माता तेने (अजनि के०) उत्पन्न थातो हवो, (तं के०) ते आनंदसमूहने (अवगंतुं के०) जाणवाने (अन्ये जनाः के०) बीजा लोको (अलं के०) समर्थ एवा (न के०) नथी. एम हुं (मन्ये के०) मानुं छुं ॥ ४ ॥

जननसमये ययोरसुरसुरनायका, नवनवानेकनेप
थ्यपरिधायकाः ॥ विदधुरुत्सवमतुच्छं गिरौ मं
दरे, वासये तौ जिनौ निजमनोमंदिरे ॥ ५ ॥

अर्थः—(ययोः के०) जे अजितशांतिनाथने (जननसमये के०) जन्मसमयने विषे (असुरसुरनायकाः के०) असुरनां अने सुरनां नायक एटले स्वामी एवा सौधर्मेंद्रादिक चोसठ इंद्र (मंदरे के०) मंदर ते मेरुनामा (गिरौ के०) पर्वतने विषे (अतुच्छं के०) महोटा एवा (उत्सवं के०) उत्सवने (विदधुः के०) करता हवा. ते असुरसुरनायको कहेवा छे? तो के (नवनवानेकनेपथ्यपरिधायकाः के०) नव नवा अनेक प्रकारना शृंगार जे हार मुकुट कुंमलादिक तेने धारण करनार एवा छे,अने हुं तो (तौ के०) ते पूर्वोक्त महि

मा कह्यो छे जेमनो एवा (जिनौ के०) जिनोने (निजमनोमंदिरे के०) पोताना मन रूप मंदिरने विषे (वासये के०) वास करावुं बुं,स्थापन करुं बुं ॥५॥

कोसलापुरवरे पूतविजयोदरं, नृपजितशत्रुकुलकमलवनदिनकरं ॥ द्विगुणनवशतकरप्रमितवरतनूघनं, नौमि कनकाभमिभचिन्हमजितं जिनम् ॥ ६ ॥ ॥ ॥

अर्थः- (अहं के०) हुं (अजितं के०) अजितनामा (जिनं के०) जिनने (नौमि के०) स्तवुं बुं. ते अजित जिन कहेवा छे ? तो के, (कोसलापुरवरे के०) अयोध्या नगरीने विषे (पूतविजयोदरं के०) पोताना जन्मे करी पवित्र कर्युं छे,विजयामातानुं उदर जेणें एवा, तथा वली कहेवा छे? (नृपजितशत्रुकुलकमलवनदिनकरं के०) जितशत्रुनामा जे राजा तेनुं जे कुल ते रूप कमलवन तेनेविषे दिनकर एटले सूर्यसमान एवा, वली कहेवा छे ? तो के (द्विगुणनवशतकरप्रमितवरतनूघनं के०) द्विगुणित करेला एवा जे नवसो कर एटले अढारसो हाथ प्रमाण छे वर एटले श्रेष्ठ एवुं तनूघन एटले शरीर जेनुं एवा, वली कहेवा छे ? तोके (कनकाभं के०) सुवर्णसरीखी छे आभा एटले कांति जेनी, वली केहेवा छे? तो के (इभचिन्हं के०) इभ एटले हस्तीनुं छे चिन्ह जेने एवा छे ॥ ६ ॥

गजपुरे विश्वसेनेशकुलभूषणं, रुचिरमचिरांगरुहमनघमृगलक्षणम् ॥ पष्ट्यधिकहस्तशतवपुपमुत्तमसुखं, शांतिनाथं च गांगेयगेयत्विपम् ॥ ७ ॥

अर्थः-(च के०) वली बीजा (शांतिनाथं के०) श्रीशांतिनाथने (नौमि के०) हुं नमन करुं बुं. ते शांतिनाथ कहेवा छे ? तो के (गजपुरे के०) गजपुर नगरने विषे (विश्वसेनेशकुलभूषणं के०) विश्वसेनेश एटले विश्वसेन नामें राजा तेना कुलने विषे भूषणरूप एवा,वली ते शांतिनाथ कहेवा छे ? तो के (रुचिरं के०) मनोहर एवा वली कहेवा छे ? तो के (अचिरांगरुहं के०) अचिरा राणीना अंगथकी रुहं एटले उत्पन्न थया एवा वली कहेवा छे ? तो के (अनघमृगलक्षणं के०) अनघ एटले दोषरहित एवा मृगनुं छे लक्षण एटले चिन्ह जेने एवा, वली ते कहेवा छे ? तो के

(षष्टयधिक के०) साठ जेमां अधिक ठे एवा (हस्तशत के०) सो हाथ अर्थात् एकसो साठ हाथ प्रमाण ठे (वपुषं के०) शरीर जेनुं एवा, वली कहेवा ठे ? तो के (उत्तमसुखं के०) उत्तम ठे सुख जेनाथी अथवा उत्तम ठे सुख जेने एवा, वली कहेवा ठे ? तो के (गांगेयगेयत्विषं के०) सुवर्णसमान प्रशंसा करवा योग्य ठे त्विष एटले कांति जेनी एवा ठे ॥ ७ ॥

जलधिरसनावनीविततवरशासनं, चिंतितोपस्थि
तद्विरदतुरगासनम् ॥ ललितललनाजनाबद्धबहु
बर्करं, यौ चिरं राज्यमवतः स्म विस्मयकरम् ॥ ८ ॥

अर्थः-(यौ के०) जे अजितनाथ अने शांतिनाथ जगवान् (चिरं के०) घणो कालसुधी (राज्यं के०) राज्यने (अवतःस्म के०) पालन करतां हवा. हवे ते राज्य कहेवुं ठे ? तो के (जलधिरसना के०) समुद्र ठे रसना एटले कटिमेखला जेने एवी जे (अवनी के०) पृथ्वी तेने विषे (विततवर शासनं के०) विस्तार पाम्युं ठे श्रेष्ठ शासन एटले आज्ञा जेनी एवुं, तथा वली ते राज्य कहेवुं ठे ? तो के (चिंतित के०) मनमां चिंतन करतां वेंतज (उपस्थित के०) समीप प्राप्त थयेलां ठे (द्विरदतुरगासनं के०) द्विरद एटले हाथी, तुरग एटले घोडा अने सुखासन जेने विषे एवुं, तथा वली कहेवुं ठे ? तो के (ललित ललनाजन के०) मनोहर एवा ललना जन जे स्त्रीजन तेनो जे समूह तेणें (आबद्धबहुबर्करं के०) रचना करी ठे महामनोहर एवी बर्करं एटले क्रीडा जेने विषे एवुं वली ते कहेवुं ठे? तो के (विस्मयकरं के०) आश्चर्य करनार एवुं ठे ॥ ८ ॥

तदनु दनुजाहितप्रथितमहिमोदयं, वर्षदानेन परि
तुष्टजनसमुदयम् ॥ जगृहतुः स्वहितकामावका
मव्रतं, तौ नमस्कृत्य तोषं जजेऽनवरतम् ॥ ९ ॥

अर्थः- (तदनु के०) ते राज्यप्राप्त्यनंतर जे अजितजिन अने शांति नाथ ते (व्रतं के०) व्रत जे चारित्र व्रत तेने (जगृहतुः के०) ग्रहण करता हवा. (तौ के०) ते बेहु जगवानने (नमस्कृत्य के०) प्रणाम करीने हुं (अनवरतं के०) निरंतर (तोषं के०) संतोषने (जजे के०) जजुं बुं, पा

मुं छुं, हवे त व्रत जे चारित्र ते कहेवुं छे ? तोके (दनुजाहितप्रथितमहिमो दयं के०) दनुज एटले दैत्योना अहित एटले शत्रु जे देवो तेमणें विस्तारित कर्यो छे महिमानो उदय एटले महोत्सव जेने विषे एवुं, वली ते चारित्र कहेवुं छे? तोके (वर्षदानेन के०) सांवत्सरिकदानेंकरी (परितुष्टजनसमुदयं के०) तुष्ट हर्षित थयो छे जननो समूह जेने विषे एवुं तथा वली ते चारित्र कहेवुं छे ? तोके (अकामं के०) नथी कामदेव जेमां अथवा नथी काम एटले अभिलाष जेनेविषे एवुं छे. हवे ते बेहु जिन कहेवा छे? तोके, (स्वहितकामौ के०) पोताना हितने वांछा करनार एवा छे ॥ ए॥

तमसि क्षीने ययोरखिलदोषोदिते, निपुणनीरजवने
निबिडमामोदिते ॥ उदितवति केवलज्ञानभानौ द्रुतं, दिवसपतिनापि खद्योतपोतायितम् ॥ १० ॥

अर्थः- (ययोः के०) जे अजितनाथ अने शांतिनाथ भगवानने (केवलज्ञानभानौ के०) केवलज्ञानरूप सूर्य (उदितवति के०) उदित थये छते (दिवसपतिनापि के०) दिवसपति जे सूर्य तेणेपण (द्रुतं के०) तत्काल (खद्योतपोतायितं के०) पतंगियाना पोत एटले बालक तेनी पठें आचरण कर्युं. अर्थात् केवलज्ञानरूप सूर्यना उदयथी जे प्रत्यक्ष सूर्य हतो ते आगियाजीवडा समान थइ गयो. हवे शुं थये छते केवलज्ञान भानुनो उदय थयो? तो त्यां कवि केवल ज्ञानपक्षे उपमा कहे छे के (अखिलदोषोदिते के०) अखिल एटले समग्र दोष जे रागद्वेषादि तेथकी उत्पन्न थयेलुं (तमसि के०) पाप ते (क्षीने के०) क्षीण थये छते. अने सूर्यपक्षें (अखिलदोषोदिते के०) समग्ररात्रिथी उदय थयेलुं एवुं (तमसि के०) अंधकार ते (क्षीने के०) क्षीण थये छते. तथा वली शुं थये छते केवलज्ञान भानुनो उदय थयो? त्यां कवि ज्ञान पक्षें कहे छे के, (निपुणनीरजवने के०) निपुण एटले चतुर सज्ञान पुरुषोरूप जे कमलवन ते (निबिडं के०) अत्यंत (आमोदिते के०) तोषित थये छते, अने सूर्यपक्षें (निपुणनीरजवने के०) पूर्ण एवा जे कमलो तेनुं जे वन ते (निबिड के०) गाढ (आमोदिते के०) विकसित थये छते, अर्थात् जेम समग्र रात्रिमां उदय छे जेनो एवुं अंधारुं नाश पामे त्यारें तथा कमलवन ज्यारें पूर्ण प्रकाशित थाय त्यारेंज सूर्योदय होय छे, तेम आ

हिं पण अखिलदोष जे रागद्वेषादि तेथकी उदय थयेलुं जे पाप ते नाश पामे छते तथा सुजनरूप कमलवन संतुष्ट थये छते केवल ज्ञाननो उदय थयो, एटले जेम सूर्यनो उदय थाय त्यारें अंधकारनो नाश थाय छे, अने वली कमलवननो प्रकाश थाय छे,तेमज अजितनाथ अने शांतिनाथने केवल ज्ञाननो उदय थयो त्यारें रागद्वेष छे जेमां एवुं पाप क्षीण थयुं,अने सौजन्यरूप सुगंध जयो छे, जेमां एवा सुजनो हर्षने प्राप्त थया ए नावार्थ जाणवो ॥१०॥

यत्पदांभोजभजनाय जातत्वरैः,संघसंघट्टघनघृष्ट
भूषणभरैः॥ व्यूढमपि रुचिरचिररूढरसनिर्भरैः,
पाणितलमानमभवन्नभो निर्जरैः ॥ ११ ॥

अर्थः–(नभः के०) आकाश (व्यूढमपि के०) विस्तीर्ण छे, तो पण (निर्जरैः के०) देवताउयें करी (पाणितलमानं के०) हथेली सरखुं संकुचित (अनवत् के०) होतुं हवुं. हवे देवताउ कहेवा छे? तो के (यत्पदांभोजभजनाय के०) जे श्रीअजितनाथ अने शांतिनाथ तेमना चरणकमलना भजनने माटें (जातत्वरैः के०) उत्पन्न थइ छे उतावल त्वरा जेने एवा, तथा वली देवताउ कहेवा छे? तो के (संघसंघट्टघनघृष्टभूषणभरैः के०) संघ एटले समुदाय तेनो संघट्ट एटले परस्पर मांहोमांहे अथडाववुं, तेणेंकरी घन एटले अत्यंत घसाइ गयेला एवा छे भूषणना भर ते समूह जेमना एवा,वली ते देवताउ कहेवा छे? तो के (रुचिरचिररूढरसनिर्भरैः के०) रुचिर एटले मनोहर तथा चिर एटले घणा कालथकी रूढ एटले उत्पन्न थयो एवो जे रस एटले नक्तिरस तेणेंकरी निर्भर एटले पूर्ण एवा छे ॥ ११ ॥

भरितभवडुरितदवदहनपरितापिताः, सदसि य
द्वाचमतिपुण्यबुध्ध्यापिताः ॥ सत्यसंधाः सुधा
सारसेकं नरेशामरेशा मुदा सर्वदा मेनिरे ॥१२॥

अर्थः–(नरेश के०) राजाउ अने (अमरेशाः के०) देवोना ईश जे इंड्रो, ते (मुदा के०) हर्षे करी (सदसि के०) सन्नाने विषे एटले समवसरणने विषे (यद्वाचं के०) जे अजितनाथ अने शांतिनाथनी वाणीने (सर्वदा के०) सर्वकाल (सुधासारसेकं के०) अमृतनो वेगयुक्त जे वरसाद

तेनुं जाणे सिंचन होय नहिं एम (मेनिरे के०) मानता हवा. हवे ते नरेशो तथा अमरेशो कहेवा छे ? तो के (चरितचवडुरितं के०) संचय करेलां एवां चवडुरितं एटले जन्मजन्मनां पापो, तेज (दवदहन के०) दावानल तेणेंकरी (परितापिताः के०) संताप पामेला एवा, तथा वली कहेवा छे? तो के (अदिपुण्यबुध्यापिताः के०) अत्यंतपुण्यरूप पवित्रमतियें करी प्राप्त थया एवा, वली कहेवा छे ? तो के (सत्यसंधाः के०) सत्य छे प्रतिज्ञा जेनी एवाज छे ॥ १२ ॥

आतपत्रत्रयं चारवश्चामराः, कोटिसंख्या चजंते ऽजितंश्चामराः ॥ अनुपहतडुंडुजिध्वनितमच्युतपदे, यदतिशयराजिरेषा न केषां मुदे ॥ १३ ॥

अर्थः—(एषा के०) आ (यदतिशयराजिः के०) जे अजितनाथ अने शांतिनाथना अतिशयनी राजि एटले पंक्ति, ते (केषां के०) कया प्राणीउने (मुदे के०) हर्षने अर्थे (न के०) न होय? अर्थात् सर्व प्राणियोने हर्षने माटे होयज. हवे ते अतिशयनी पंक्तिमां शुं शुं छे? ते कहे छे. (आतपत्रत्रयं के०) त्रण छत्र, तथा (चारवः के०) चारु जे मनोहर एवां (चामराः के०) चामरो (च के०) वली (कोटिसंख्याः के०) कोटि प्रमाण छे संख्या जेमनी एटले क्रोडोगमे एवा (अमराः के०) देवताउ (अजितः के०) प्रजुनी चोतरफ (चजंते के०) बेहु प्रजुनुं सेवन करे छे. तथा (अच्युतपदे के०) आकाशने विषे (अनुपहतडुंडुजिध्वनितं के०) जेनी ध्वनि नहि हणाय तथा नही वगाडेला एवा डुंडुजिनो ध्वनित एटले निर्घोष थाय छे ॥

बोधयित्वाथ तत्त्वानि धीरं जनं, योगतो यौ गतौ धाम नीरंजनम् ॥ तमहमजितं च शांतिं च चंचद्द्युतिं, सुचिरमर्चामि पंचेषुविजयोद्यतम् ॥१४॥

अर्थः—(अथ के०) प्रतिबोधदानानंतर (यौ के०) जे अजितनाथ अने शांतिनाथ ते बेहु (योगतः के०) अध्यात्मज्ञानना योगें करी (नीरंजनं के०) कर्ममलना लेपरहित एवा (धाम के०) स्थानने (गतौ के०) प्राप्त थता हवा. अर्थात् ते बेहु केवलज्ञान पाम्या पछी मोक्षने प्राप्त थता ह

वा. हवे शुं करीने मोक्षने प्राप्त थया ? तो के (धीरं के०) निपुण एवा (जनं के०) लोकने (तत्त्वानि के०) जीवाजीवादि नव तत्त्वोने (बोधयित्वा के०) बोध करीने मोक्षे गया. (तं के०) ते (अजितं के०) अजितनाथने (च के०) तथा (शांतिं के०) शांतिनाथने (अहं के०) हुं (सुचिरं के०) चिरकालपर्यंत (अर्चामि के०) पूजुं छुं, ते केहेवा छे? तो के (चंचद्द्युतिं के०) मनोहर छे कांति जेनी एवा, तथा वली कहेवा छे ? तोके (पंचेषुविजयोद्यतं के०) कामदेवना पांच बाणनो जय करवामां उद्युक्त एवा छे ॥ १४ ॥

द्विपरिपुव्यालवेतालरोगानला, नीरचौरादयोऽन्येऽ
पि सकलाः खलाः॥ तं न लुंपंति कंचुकिन इव वंजु
लं, नमति यो विमदमिदमेव जिनयामलम् ॥१५॥.

अर्थः– (द्विप के०) हस्ती, (रिपु के०) वैरियो (व्याल के०) सर्पादिक (वेताल के०) भूतप्रेतादि, (रोग के०) रोग, ते ज्वरादिक (अनल के०) दावानलादि, (नीर के०) जल, अने (चौरादयः के०) चोर छे आदि जेमां एवा (अन्येपि के०) बीजा पण (सकलाः के०) समग्र (खलाः के०) दुर्जनो ते (तं के०) ते पुरुषने (नलुंपंति के०) उपद्रव करता नथी. लोपी शकता नथी. अहिं कवि उत्प्रेक्षा करे छे के, (कंचुकिनइव के०) सर्पो जे छे ते जेम (वंजुलं के०) वंजुलनामा वृक्षने बाध करी शकता नथी. वंजुल वृक्षनी छायाने विषे सर्प जता नथी, एवुं प्रसिद्ध छे. ते कया पुरुषने पूर्वोक्त दुर्जन उपद्रव करी शकता नथी? तो के (यः के०) जे पुरुष, (इदमेव के०) एज (विमदं के०) गयो छे मद जेनो एवा (जिनयामलं के०) जिनना युग्मने एटले अजितनाथ अने शांतिनाथने (नमति के०) नमस्कार करे छे ते पुरुषने उपद्रव करी शकता नथी ॥ १५ ॥

पाक्षिके किल चतुर्मासिके वार्षिके, पर्वणि प्रकृतवरपु
ण्यनरनायके ॥ योऽमुमतिसोममतिरजितशांतिस्त
वं, पठति निश्शृणोति लभते सुखं स ध्रुवम ॥ १६ ॥

अर्थः–(किल के०) निश्चें (यः के०) जे मनुष्य, (पाक्षिके के०) पाक्षिक पडिकमणाने वखते (चतुर्मासिके के०) चोमासीना पडिकमणाने

वखते (वार्षिके के०) सांवत्सरी पडिकमणारूप (पर्वणि के०) पर्वने विषे (अमुं के०) आ (अजितशांतिस्तवं के०) अजितनाथ अने शांति नाथना स्तवनने (पठति के०) पाठ करे छे, अने (निश्रृणोति के०) आ दरें करी सांजले छे, (स के०) ते पुरुष, (ध्रुवं के०) निश्चें (सुखं के०) सुखने (लजते के०) पामे छे. हवे ते केवां पाक्षिकादिक पर्व छे ? तो के, (प्रकृष्टवरपुण्य के०) प्रारंन्यां छे उत्कृष्ट श्रेष्ठ पुण्यकार्यो जेमणे एवा छे (नरनायके के०) श्रेष्ठ पुरुष जेने विषे एवुं छे. हवे ते पाठ करनार तथा श्रवण करनार पुरुष केवो छे ? तो के (अतिसोममतिः के०) अतिक्रांत एटले उल्लंघन कर्यो छे सोम ते चंद्रमा जेणे एवी छे सौम्यमति जेनी एवो अर्थात् चंद्रमाथकी पण निर्मल छे बुद्धि जेनी एवो छे ॥ १६ ॥

गुणराजिविराजितमरिपुपराजित, मजितशांति जिन युगलमिदम् ॥ मतिशुभ्रसन्नाजनमतिशय नाजन, मुपजनयतु संघस्य मुदम् ॥ १७ ॥ ॥ इति श्रीजय शेखरसूरिविरचिते बृहदजितशांतिस्तवः संपूर्णः ॥

अर्थः—(इदं के०) आ (अजितशांतिजिनयुगलं के०) अजितनाथ अ ने शांतिनाथ ए जिनयुग्म ते (संघस्य के०) चतुर्विधसंघने (मुदं के०) ह र्षने (उपजनयतु के०) उत्पन्न करो. हवे ते जिनयुगल केवुं छे तो के, (गु णराजिविराजितं के०) गुणनी पंक्तियें करी विशेष शोन्नतुं एवुं तथा वली कहेवुं छे ? तोके (अरिपुपराजितं के०) रिपु जे शत्रुउ तेणें नहि पराज य करेलुं एवुं, अर्थात् कामक्रोधादिक शत्रुयें जेनो पराजय कर्यो नथी, एवुं जिनयुगल छे. वली जिनयुगल कहेवुं छे ? तोके (मतिशुन्नसमाजनं के०) बुद्धियें करी निर्मल छे सन्नाजन जेने एवुं, वली कहेवुं छे? तोके (अ तिशय के०) प्रन्नाव तेनुं (नाजन के०) स्थानक एवुं छे ॥ १७ ॥

इति श्री जयशेखरसूरिकृतस्याजितशांतिस्तवस्य बालावबोधः समाप्तः ॥

ए रीते अजित शांतिस्तवन कही रह्या पछी उन्ना थइने इच्छाकारेण संदि सह नगवन् ! छठ्ठा आवश्यक नणी पच्चरकाण, वांदणां करुंजी. एम कही, बे वार वांदणा आपी पच्चरकाण लेवुं. पछी इच्छामि खमासमण पूर्वक इच्छा

कारेण संदिसह जगवन्! पाखी खामणां निमित्तें वांदणां करुं जी. एम कही बे वार वांदणां देवां तिहां एटलो विशेष जे, देवसिउवइक्कंतोने स्थानकें पक्खिउ वइक्कंतो कहेवुं. एम बीजे पण जे स्थानकें देवसिउ पाठ आवे ते स्थानकें पक्खीउ एवो पाठ कहेवो. एम बे वार वांदणां देइने पछी गुरुने खमावी,मिछामि डुक्कडं दीजें. पछी सामायिक पारवा त्रण नवकार गणिये ते गणीने पछी सामायिक पारवा जंजं मणेण बद्धं० ॥ इत्यादि गाथाउ कही फरी त्रण नवकार गणी देवसिराइ पडिकमणमां कह्या प्रमाणे पाक्षिक प्रतिक्रमण समाप्त करीयें.

अथ चउमासिक प्रतिक्रमणविधिमाह ॥ पाक्षिक प्रतिक्रमणनी पेरें चोमासिकप्रतिक्रमणनो विधि पण जाणवो, परंतु एटलो विशेष जे जिहां जिहां पक्खियं एवो पाठ आवे तिहां तिहां पाक्षिकने ठेकाणे चउमासियं एवो पाठ कहेवो, अने बार लोगस्सना काउस्सगने स्थानकें, वीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. बीजो सर्व विधि पाक्षिकनी पेरें जाणी लेवो.

अथ सांवत्सरिकपडिक्कमणविधिप्रारंजः ॥

॥ सांवत्सरिकनो पण पाक्षिकनी पेरें विधि जाणवो. परंतु एटलो विशेष जिहां जिहां पक्खियं एवो पाठ आवे तिहां पाखीने स्थानकें संवत्सरियं एवो पाठ कहेवो, अने बार लोगस्सना काउसग्गने स्थानकें चालीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. बीजुं सर्व पाखीनी पेरें जाणवुं ॥ इतिश्री अचगछीयश्रावकस्य पंचप्रतिक्रमणविधिः समाप्तः ॥

॥ अथ पच्चक्खाणविधिप्रारंजः ॥

ॐ नमो ॥ जंबूद्वीपे द्वीपे, ये तीर्थंकराश्च धातकीखंमे ॥ ये चापि पुष्करार्द्धे, तान सर्वान प्रांजलिर्वंदे ॥१॥ ख्यातोऽष्टापदपर्वतो गजपदः, सम्मेतशैलाजिधः,श्रीमान् रैवतकः प्रसिद्धमहिमा, शत्रुंजयः पावकः ॥ वैजारो विपुलोऽर्बुदो गिरिवरः,श्रीचित्रकूटाजिध,स्तत्र श्रीरुषजादयो जिनवरा ःकुर्वंतु वो मंगलं ॥२॥ आबूअष्टापदसम्मेतशिखर गिरनार शत्रुंजो तारंगो अमीजरो नवपल्लवो संखेसरो गोडीपार्श्वनाथाय नमोनमः अमीजरा पार्श्वनाथाय नमोनमः नवखंम पार्श्वनाथाय नमोनमः नवसारीपार्श्वनाथाय नमोनमः जाजापार्श्वनाथाय नमोनमः पल्लवीपार्श्वनाथाय नमोनमः आंतरिकपार्श्वनाथाय नमोनमः कलिकुंमपार्श्वनाथाय नमोनमः मनमोहनपार्श्वनाथाय नमोनमः

जगवल्लनपाश्र्वनाथाय नमोनमः गाम्हरीपाश्र्वनाथाय नमोनमः नीडनंज नपाश्र्वनाथाय नमोनमः सहस्सफणापाश्र्वनाथाय नमोनमः अलोपीपाश्र्व नाथाय नमोनमः कोकापाश्र्वनाथाय नमोनमः थंनणापाश्र्वनाथाय नमो नमः चिंतामणिपाश्र्वनाथाय नमोनमः घृतकल्लोलपार्श्वनाथाय नमोनमः सकलतीर्थेन्यो नमोनमः एम कही. पठी जे पच्चरकाण लेवुं होय, ते लेवुं.

॥ अथ प्रत्याख्यानाधिकारप्रारंनः ॥

हवे गुरुवंदनाना अधिकार मध्यें पच्चरकाण घणा विस्तार नणी कह्यां न ही, ते नणी हमणां वखाणीयें ठैयें. ते पच्चरकाण बे नेदें ठे, एक मूल गुण पच्चरकाण, बीजुं उत्तरगुण पच्चरकाण, तिहां मूलगुण पच्चरकाण वली बे नेदें ठे, एक देशथी, बीजुं सर्वथी, तेमां सर्वथी मूलगुण पच्चरकाण पंच महाव्रतरूप ठे ते साधुने होय अनें देशथी मूलगुण पच्चरकाण पंच अ णुव्रतरूप श्रावकने होय, तेमज उत्तरगुण पच्चरकाण पण देशथी अने स र्वथी एवा बे नेदें ठे, तिहां साधुने सर्वथी उत्तरगुण पच्चरकाण जे ठे, ते पिंमविशुद्धि, पांच समिति, बार नावना, बार प्रकारनुं तप, बार प्रतिमा, अनिग्रह, ए आदें देइने अनेक प्रकारें ठे, तथा श्रावकने देशथी उत्तरगुण पच्चरकाण जे ठे ते सात शिक्षाव्रत प्रमुखरूप ठे.

हवे पहेलुं पडिक्कमणुं करतां ठ मासी तपना काउस्सग्गमांहे जे आज अमुक पच्चरकाण करशुं, पठी चौद नियम यथाशक्तियें लेइ गुरुमुखें पच्चरका ण उच्चरे, अने जो गुरु प्रत्यक्ष न होय तो स्थापनाचार्य समक्ष, अथवा देवपूजा करे तेवारें देवनी समक्ष पच्चरकाण उच्चरे, अने जो प्रनातनुं पडि क्कमणुं गुरुमांम्हले, पोशालें न कीधुं होय, तो उपासरे जइ गुरुने पगे बे वां दणां दइ गुरुमुखें अथवा गुरुने आदेशें कोइ साधुने मुखें पच्चरकाण करे.

अहींआं गुरु अने पच्चरकाणना लेनार श्रावकआश्रयी चार नांगा उपजे, ते कहे ठे. एक तो गुरु पण पच्चरकाणनो जाण, अने श्रावक पण पच्चरका णनो जाण; ए प्रथम नांगो शुद्ध जाणवो. बीजो गुरु जाण अने श्रावक अजाण होय, तेवारें गुरु तेने पच्चरकाणनुं स्वरूप संक्षेपें समजावीने करा वे, तेथी ए नांगो पण शुद्ध जाणवो, त्रीजो गुरु अजाण ठे, पण पच्चरकाण नो करनार श्रावक जाण ठे, माटे ए नांगो पण नलो जाणवो, चोथो गुरु अजाण अने श्रावक पण अजाण ए नांगो अशुद्ध जाणवो.

हवे ते पच्चरकाण संक्षेपी जोइयें तो त्रण नेदें ले, एक अद्धापच्चरकाण, बीजुं सांकेतिक पच्चरकाण अने त्रीजुं अनिग्रह पच्चरकाण. तिहां प्रथम अद्धा एटले काल तेनुं पच्चरकाण. ते पोरिसी, साढपोरिसी, पुरिमड्ढ, अवढ्ढ, पक्खक्ख पण, मासक्खपणादिक, ए सर्व अद्धापच्चरकाणमां कहेवाय. तथा बीजुं सांकेतिक पच्चरकाण, ते जिहां संकेत कीधो होय, जेम गंठसहिअं, मुठसहिअं वींटीसहिअं प्रमुख एटले ए पच्चरकाण बीजा पच्चरकाणनी वच्चे थाय ले. जेम के कोइ एक श्रावकें पोरिसी प्रमुख पच्चरकाण कीधुं होय, पढी क्षेत्रादिकें गयो अथवा घेर बेठांज पोरिसी पूर्ण थइ, परंतु हजी नोजननी सामग्री तैयार थइ नथी तेवारें विचारे जे एटलो काल वच्चमां अपच्चरकाणीपणे श्रावकने रहेवुं नही? माटें अंगुठसहिअं पच्चरकामि एटले ज्यां सुधी मुखमां अंगुठो राखुं बुं, तिहां सुधी महारें वली पण पच्चरकाणनी सीमा ले, एमज बीजी मूठि बांधी राखे, तेने मुठसहिअं पच्चरकामि कहियें. त्रीजुं गांठ बांधवी ते गंठसहिअं कहीयें, चोथुं घरसहिअं, पांचमुं अंगना परसेवानो बिंडु निकले त्यां सुधी, सेठसहियं कहियें. ठहुं उस्सास सहित, सातमुं पाणीना बिंडुआ नाजनादिकें सूके त्यां सुधी थिबुकसहिअं कहियें, तथा आठमुं दीवाप्रमुखनी ज्योति सहित ते, जोइसहिअं कहियें. ए पच्चरकाण जेम बीजा पच्चरकाणनी वच्चे थाय ले तेम जो बीजा पोरिसीयादिक पच्चरकाण न करे, अने केवल एवो अनिग्रहज करे, के गांठी प्रमुख न ठोडुं. तिहां सुधी महारे अमुक पच्चरकाण ले, एम अनिग्रहने विषे पण ए पच्चरकाण थाय ले, तथा साधुने पण कोइक स्थानकें मांमल्यादिकें गुर्वादिक आव्या नथी अथवा सागारिकादिक आवी पड्या होय, तेनुं कांइ कारण होय, तोपण अनिग्रहें सांकेतिक पच्चरकाण थाय ले. एने सांकेतिक पच्चरकाण कहियें. अने त्रीजुं अनिग्रह प्रत्याख्यान ते विगय, नीवी, आयंबिल, प्रमुख करवां, ए सर्व अनिग्रह प्रत्याख्यान जाणवां.

हवे विस्तारें जोइयें, तो साधुने अने श्रावकने उत्तरगुणपचरकाण दश नेदें ले, एक नवकारसहिअं, बीजुं पोरिसी, त्रीजुं पुरिमढ्ढ, चोथुं एकासण, पांचमुं एकलठाणुं, ठहुं विगइ, सातमुं आयंबिल, आठमुं उपवास, नवमुं दिवसचरिम, दशमुं अनिग्रह, ए दश पच्चरकाण तथा तेने लगता बीजा पण पच्चरकाणना विचार अने तेना आगारनी संख्या कहीयें लेयें. ए पच्चरका

ए संबंधि सविस्तर वातो प्रवचनसारोद्धार तथा बीजा ग्रंथांतरथी जाणवी.

॥ प्रथम नमुक्कारसहिअंनुं पच्चख्काण ॥

सूरे उग्गए नमुक्कारसहिअं पच्चख्काइ चउव्विहं पि. आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नड णाभोगेणं सहसागारेणं वोसिरइ ॥ १ ॥

अर्थः—(सूरेउग्गए के०) सूर्यना उदयथी मांडीने बे घडी प्रमाण एटले रात्रिभोजननो दोष निवारवाने अर्थे, बे घडी पछी (नमुक्कारसहिअं के०) नवकार कहीने पारवुं तिहां सुधी (पच्चख्काइ के०) पच्चख्काण छे, एटले नियम छे. अहींआं नवकार कहीने पच्चख्काण पारवुं छे, माटें ए पच्चख्काणनुं नाम नवकारसी कहेवाय छे, अहींआं गुरु जे पच्चख्काणनो करावनार होय ते पच्चख्काइ कहे, तेवारें शिष्य जे पच्चख्काणनो करनार होय ते पच्चख्कामि कहे, एम सर्व पच्चख्काणोने विषे जाणी लेवुं. तथा संपूर्ण पच्चख्काणे गुरु वोसिरइ कहे, अने शिष्य जे पच्चख्काणनो करनार होय ते वोसिरामि कहे, ए नवकारसीनुं पच्चख्काण बे घडी प्रमाण काल पर्यंत चउ विहारोज होय, एवो आम्नाय छे, एटले रात्रिना चार पहोर जे रात्रिभो जननो नियम कर्यो हतो. तेना तीरण रूप एटले शिक्षारूप ए पच्चख्काण छे, अहीं कोइ पूछे जे नवकारसीनुं मान तो एक मुहूर्त्तज लीधुं छे, तेने बदले जो मुहूर्त्तद्वयादिक लीधां होय, तो शी हरकत छे? कारण के ते काल पण पोरसीना कालथी अल्प छे. हवे तेने एम कहेवुं जे सर्वथी स्तोक काल अद्धा पच्चख्काणनो एक मुहूर्त्तज छे माटे एक मुहूर्त्तज लेवो, ए नवकारसी पच्चख्काण सूर्योदय पहेलां करवुं अने पंचपरमेष्ठि नमस्कारें करी पारवुं अन्यथा भंग दोष लागे. ए नवकारसी कर्या पछी आगलें पोरिसियादिक थाय, परंतु नवकारसी विना पोरिसियादिक न थाय; तथा कोइ कहेशे के सायंकाल पर्यंतमां गमे ते वखत नवकार कहीने पारियें, अथवा एक घडी पछी नव कार कहीने पालीयें, तो पच्चख्काण पहोचे किंवा न पहोंचे? तेने कहियें के नवकारसी ए शब्दनो अर्थज आवो छे के, बे घडी वीत्यां नवकार भ णीयें त्यारेंज पहोचे, परंतु बीजे वखतें न पहोचे, ए पच्चख्काणमां बे घडी सुधी चउविहार होय, माटें बे घडी वीत्या पछी नवकार गणें, तो प

होचें पण बे घडी वीत्यानी अगाउ नवकार गणे, तो न पहोचे. तथा जो दिवस उग्याथी पहेली बे घडीनी अंदर अने पाछली बे घडीनी पछी जमे, तो तेने रात्रिजोजननो दोष लागे.

हवे शानुं पच्चरकाण करे? ते कहे छे. (चउव्विहंपिआहारं के०) चारे प्रकारनो आहार तेनुं पच्चरकाण करे, ते आहारनां नाम कहे छे.

एक (असणं के०) अशन एटले शालि, ज्वार, गोधूम, बंटी प्रमुख तथा सर्व जातिना उदन एटले जात तथा मग, मठ अने तूवर प्रमुख सर्व कठोल तथा साथुआदिक सर्व जातना लोट, तथा मोदकादिक सर्व जातनां पक्वान्न, तथा सूरणादिक सर्व जातना कंद, तथा मांफा प्रमुख सर्व जातनी केलवेली वस्तु, ए सर्वेने अशन कहियें. तेमज वेशण, वरियाली, धाणा, सूआ आदिक एने पण अशनज कहियें.

बीजुं (पाणं के०) पाणी ते कांजी, यव, चोखा अने काकडी प्रमुखनां धोयण तथा नदी प्रमुख सर्व जलाशयनां पाणी, ए सर्व पाणी कहीयें. तथा शाकरवाणी, डाक्षवाणी, आंबिलवाणी अने शेलडीरस प्रमुख ए सर्वे, यद्यपि पाणीमांहे आवे छे, तथापि एने व्यवहारथी अशनज कहियें.

त्रीजुं (खाइमं के०) खादिम ते खारेक, बदाम, शिंगोडां, खजूर, कोपरां, डाक्ष, तथा अखोडादिक सर्व जातनो मेवो, तथा काकडी, आंबां, फणस अने नालियर प्रमुख सर्व जातनां फल तथा शेकेलां धान्य, जेवां के धाणी, पहुआ प्रमुख तथा पापड प्रमुख ए सर्वेने खादिम कहियें.

चोथुं (साइमं के०) स्वादिम ते दंतकाष्ठ, सुंठ, हरडे, पींपरी, मरी, अजमो, जायफल, कसेलो, काथो, खसखस, जेठीमध, तज, तमालपत्र, एलची, लविंग; जावंत्री, सोपारी, पान, बीडलवण, आजो, अजमोद, कलिंजण, पिंपलीमूल, चिणिकबाब, कचूरो, मोथ, कांटासेलीउ, कपूर, संचल, बेहेडां, आमलां, हिंगलाष्टक, हिंग, त्रिविंसो, पुष्करमूल, जवासामूल, बावची, बाउलछाल, धवछाल, खेरछाल, खिजडाछाल, पान, पंचकूल, तुलसी, जीरुं, ए जीराने पच्चरकाणजाष्य तथा प्रवचनसारोद्धारमां स्वादिम कह्युं छे,अने श्रीकल्पवृत्तिमांहे खादिम कह्युं छे, तथा अजमाने पण केटला एक खादिम कहे छे. तथा कोठपत्र, कोठवडी, आमलगंठी, लिंबुइपत्र, आंबागोटली प्रमुखने स्वादिम कहियें. ए चार प्रकारना आहार कह्या.

हवे अनाहार वस्तु कहियें बैयें. तेमां लिंबडानां पांच अंग, ते मूल, छाल, पत्र, फूल, फल, तथा गोमूत्र, गलो, कडू, करियातुं, अतिविष, सुखड, राख, हलदर, रोहिणी, उपलेट, वज, त्रिफला, धमासो, नाही, आसंधि, रिंगणी, एलीउं, गुगल, वोणिमूल, बदरी, कंथेरमूल, केरडामूल, पुआड, आछी, मंजीठ, बोलबीउं, कुंआरी, चित्रो, कुंदरू, तमाकु, प्रमुख अनिष्ट स्वादवाली वस्तु तथा स्वाद विना रोगादिक कारणें चतुर्विध आहारादिक कल्पे, अफिण प्रमुख पण एमज जाणवां. एटले जे वस्तु खातां थकां जीवने अरुचि उपजे, अलखामणा लागे, ते सर्व अनाहार वस्तु जाणवी. ए वस्तु अहींआं प्रसंगें लखी. एम ए पूर्वोक्त चारे प्रकारना आहारनो पच्चरकाइ एटले नियम लेवाय. हवे नियमभंग थवाना भयने लीधे अहींआं नोकारसीना पच्चरकाणने विषे बे आगार मोकला मूके छे, ते कहे छे.

१ (अन्नछणाभोगेणं के०) अन्यत्रानाभोगात् एटले विसरवा थकी ते अहींआं पच्चरकाणनो उपयोग विसरवाथकी अजाणपणे अनुपयोगें कोइ वस्तु मुखमां प्रक्षेप कस्याथी पच्चरकाण भंग न थाय, परंतु वचमां पच्चरकाण सांभरे, तेवारें तरत मुखथी त्याग करे, थूंकी नाखे तो पच्चरकाण न भांगे, अथवा अजाणपणे मुखथकी हेठुं उतस्या पछी कालांतरें सांभस्युं, अथवा तुरत सांभस्युं, तो पण पच्चरकाण न भांगे, पण शुद्ध व्यवहार माटे फरी निःशंक न थाय तेथी यथायोग्य प्रायश्चित्त लेवुं, ए रीतें सर्व आगारोने विषे जाणी लेवुं.

२ (सहसागारेणं के०) जे पच्चरकाण कस्युं छे तेनो उपयोग तो विसस्यो नथी, पण कार्य करवामां प्रवर्त्ततां योग्य लक्षण सहसात्कार एटले स्वभावेंज मुखमध्यें प्रवेश थाय,जेम दधि मथतां छांटो उडी मुखमां पडे, अथवा गाय, भेंश प्रमुख दोहोतां थकां तथा घृतादिक मथतां तथा घृतादिकनो तोल करतां अचानक छांटो उडी मुखमां पडे, अथवा चउविहार उपवासें वर्षाकालें मेघना छांटा मुखमां पडे, तेथी पच्चरकाण भंग न थाय, ए रीतें उक्त बे प्रकारना आगारें करी (वोसिरइ के०) बे घडी सुधी चारे आहारने वोसिराववुं एटले अपच्चरकाणी आत्माने छांमवुं. अहिआं वोसिरइ ए गुरुनुं वचन छे, अने वोसिरामि ए शिष्यनुं वचन छे ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ बीजुं पोरिसि साढ्ढपोरिसिनुं पच्चरकाण ॥

॥ सूरे उग्गए पोरिसिं साढपोरिसिं पच्चरकाइ चउ
विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थ
णाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं
साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥२॥

अर्थः—(पोरिसिं के०) प्रहर दिवस सुधी अने (साढपोरिसिं के०) सार्द्ध पोरिसि एटले अर्द्ध प्रहर सहित एक प्रहर अर्थात् दोढ प्रहर सुधी (पच्चरकाइ के०) नियम छे. इहां पुरुष प्रमाण शरीरनी छाया ज्यां होय, पण अधिक न्यून न होय तेने पोरिसि कहिएं, अथवा पुरुष जमणे काने सूर्यनुं बिंब राखीने, दक्षिणायनना प्रथम दिवसें ढीचणनी छाया जे वखतें बे पगलां होय, ते वखतें पोरिसि थाय. जे माटे श्री उत्तराध्यय नमां कह्युं छे के ॥ आसाढि पुस्सिमाए, डुपया पोसे चउप्पया चित्ता ॥ आसुए एसु मासेसु, तिपया हवइ पोरिसी ॥ १ १ ॥ हवे हानि वृद्धि ते आ प्रमाणें जाणवी, ते जेम केः—अंगुलं सत्त रत्तेणं, परकेणं तु डु अंगुलं ॥ वड्ढ ए हायए वावि, मासेण चउरंगुलं ॥ २ ॥ अर्थः—बार अंगुलनुं एक पगलुं कहियें. हवे पुरुषें उन्नो रही जमणे काने सूर्यमंमलनुं बिंब राखीनें ढीचण नी छाया जोवी. तिहां आषाढी पूर्णिमायें कर्कसंक्रांतिना प्रथम दिवसें जे वखत ते छाया बे पग प्रमाण होय ते वखत पोरिसि कहियें. तेवार पछी छ महीना पर्यंत मास मासनी संक्रांतियें चार चार आंगुल वधारता जइ यें, तेवारे पोष मासनी मकर संक्रांतियें चार पगनी छायायें पोरिसि थाय, तेवार पछी मास मासनी संक्रांतियें चार चार अंगुलनी हानि करियें, तो फरी आषाढ महीने बे पगनी छाया थाय, तेमज आश्विन अने चैत्रमासें त्रण त्रण पगनी छाया जाणवी, तथा तेवीज रीतें आषाढनी संक्रांति थ की सात दिवसें एक अंगुल अने पखवाडे बे अंगुल छायानी वृद्धि कर वी. अने पोषमासनी संक्रांतियकी सात दिवसें एक अंगुल अने पखवा डीये बे अंगुल छायानी हानि करवी, तेमज महिने चार अंगुलनी हानि वृद्धि करवी, एटले पोरिसी एक प्रहरनी थइ.

(असणंपाणंखाइमंसाइमं के०) अशन, पान, खादिम अने स्वादिम,

ए चार प्रकारना आहारनो नियम करुं बुं. हवे आगार कहे बे, एक (अन्नबणानोगेणं के०) अनानोगें एटले अजाणते विसरवा थकी,बीजो (सहसागारेणं के०) सहसात्कारें, त्रीजो (पन्नन्नकालेणं के०) कालनी प्रन्नन्नता ते मेघादि, ग्रहादि, दिग्दाह, रजोवृष्टि तथा पर्वत अने वादल प्रमुखें करी सूर्य ढंकाइ जाय, तेणें करी वखतनी बराबर खबर न पडे. एवां अजाण पणाएं करी अधूरी पोरिसियें पण पोरिसि पूर्ण थइ, एवुं समजीने पच्चरकाण पारवामां आवे. तो तेथी नंग नहीं, अने कदापि ए रीतें अधूरी पोरिसिएं जमवा बेग एटलामां तावडो जोयो, अने जाण्युं जे हजी सवार बे, पोरिसिनो वखत पूर्ण थयो नथी, तेवारें जे मुखमां कोलीउं होय, ते राखमां परठवीने बेसी रहे, अने यावत् पोरिसि पूर्ण थया पठी जमवा बेसे, तो पच्चरकाण नांगे नहीं.

चोथो (दिसामोहेणं के०) दिशिने मूढपणे एटले दिशिविपर्यास थया थी अजाणते पूर्वने पश्चिम अने पश्चिमने पूर्व करी जाणे. एम अजाणतां वेहेलुं पलाय तो पच्चरकाण नंग नही, अने थोडुं जम्या पठी कोइना कह्याथी जाणवामां आवे तो मुखमांनो कोलीउं थूंकी नाखे. ए रीतें दिशिनो मोह टल्या पठी, अर्ध जम्यो बेसी रहे तो नंग नहीं.

पांचमो (साहुवयणेणं के०) उघ्घाड पोरिसि एवा साधुना वचनें करीपोरिसि नणी, सांनलीने पाले, तो पच्चरकाण नंग नहीं, पठी ज्यारें जाणवामां आवे के साधु तो ठ घडीनी पोरिसि नणे बे, तेवारें पूर्वली रीतें तेमज बेसी रहे, तो पच्चरकाण नांगे नहीं. ए पांचला बे आगार न्रमताना बे.

बठो (सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं के०) सर्व प्रकारें शरीरमां असमाधि ते अस्वस्थता रहे, एटले पच्चरकाण कस्या पठी तीव्र शूलादिक रोग उपने थके अथवा सर्प्पादिकें मश्यो होय, ते वेदनाथी जीव आर्त्तिमां पडे,अथवा जेवारें अकस्मात् कष्ट थाय, तेवारें सर्व इंड्रियनी समाधिने अर्थें अपूर्ण पच्चरकाणे पण पथ्य औषधादिक लेवां पडे तो तेथी पच्चरकाण नंग न थाय, अने समाधि थया पठी तेमज पाठलो विधि करे. इहां पण पच्चरकाणनो आपनार गुरु वोसिरइ कहे,अने शिष्य जे पच्चरकाणनो करनार होय,ते वोसिरामि कहे.

जो ए पच्चरकाण मुठिसहिअं साथें लीधुं होय तो महत्तरागारेणं ए आगार वधे तेनो अर्थ आम बे, के (महत्तर के०) महोटे कार्यें एटले जेट

लो पच्चरकाणमां कर्म निर्झरानो लाज थाय ले, ते करतां पण अत्यंत महोटो निर्झरानो लाज जे कार्यमां थतो होय, अर्थात् कोइ ग्लान, प्रासाद संघ अथवा देवना वैयावच्चने अर्थें कोइ बीजा पुरुषथी ते कार्य न थइ शकतुं होय, त्यारें गुरु तथा संघना आदेशथी मुठिसहिअंनो वखत पूर्ण थया विना पण जो पालवामां आवे, तो पच्चरकाण जंग न थाय. अने ते कार्य पूर्ण थया पठी पाठलोज विधि समजवो ॥ २ ॥

॥ अथ त्रीजुं पुरिमढनुं पच्चरकाण ॥

सूरे उग्गए पुरिमढं पच्चरकाइ, चउव्विहंपि आहारं
असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नडणाजोगेणं सह
सागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसा मोहेणं साहुवयणेणं
महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ ॥३॥

अर्थः–(सूरेउग्गए के०) सूर्यना उदयथी मांमीने नवकार सहित (पुरिमढं के०) पहेला बे प्रहर सुधी पुरिमार्द्ध कहियें; एटले बे प्रहर सुधी अशनादिक चारे आहारनुं पच्चरकाण ले एना अन्नडणा जोगेणं इत्यादि आगारोना अर्थ सर्व प्रथम लखाइ गया ले ॥ ३ ॥

॥ अथ चोथुं विगइ निविगइनुं पच्चरकाण ॥

विगइउ निविगइअ पच्चरकाइ अन्नडणाजोगेणं
सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहडसंसठेणं उक्खित्त
विवेगेणं पडुच्च मक्खिएणं पारिठावणियागारेणं मह
त्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ ४ ॥

अर्थः–जोजन करतां जे थकी कामादिक उन्मादरूप विकार थाय, तेने विगइ कहीएं, ते विगइ सर्व मली दश ले. तेमां मांस, मदिरा, माखण अने मध, ए चार तो अजक्ष्यज ले. बाकी जक्ष्य विगय ल प्रकारनां ले. एक दूध, बीजुं दहीं, त्रीजुं घृत, चोथुं तेल, पांचमुं गोल अने लहुं पक्वान्न, ए ल प्रकारनी विगइमांथी एक पण विगइनुं जे पच्चरकाण करवुं, तेने विगइनुं पच्चरकाण कहियें, अने समस्त विगइनुं जे पच्चरकाण करवुं तेने (निविगइअ पच्चरकाइ के०) निविनुं पच्चरकाण ले एटले निविनुं पच्चरकाण कहीयें.

त्यां श्रावकने निविमांहे निवियाता लीधा कल्पे नही, जो लागट तप मांड्युं होय, तो तेमांहे त्रण दिवस पछी निवियाता लीधा कल्पे.

तथा साधुने तो एक निविमांहे निवियाता लीधा कल्पे छे, अने विगइ आता तथा निवियातानो नियम लीए तो, तेवारें आयंबिल पच्चरके, तेथी आयंबिलमांहे जे कल्पे, ते वस्तु टालीने बीजी सर्व वस्तुनो नियम लीए.

हवे पच्चरकाण भंगना भयथी जे आगार मोकलां मूके छे, ते कहे छे.

एक अन्नछणाभोगेणं, बीजो सहसागारेणं. ए बेना अर्थ लखाइ गया छे.

त्रीजो (लेवालेवेणं के०) लेपालेप ते आवी रीतें के घृत प्रमुख जे विगयनो नियम साधुने होय तेवी घृतादिक विगइथी गृहस्थनो हाथ खरडायेलो होय, पछी तेने लूंछी नाख्यो होय, तेवा हाथथी अथवा खरडायेला चाटुवाने लुंछीने ते चाटुवाथी वहोरावे अथवा पीरसे, तो पच्चरकाण भंग न थाय.

चोथो (गिहछसंसछेणं के०) गृहस्थनुं जे वाटकी प्रमुख भाजन ते विगइ प्रमुखें खरडयुं होय, तेवा भाजनथी जे गहस्थ अन्न आपे, ते अन्न विगय प्रमुखें मिश्र होय, अने ते अन्न जमे, तो पच्चरकाण भांगे नही.

पांचमो (उक्खित्तविवेगेणं के०) गाढी विगइ जे गोल पक्कान्नादिक छे तेना कटका रोटली उपर नाखी करी पछी उपाडी परहा कस्या होय, तेवी रोटली प्रमुख लेतां पण पच्चरकाण भंग न थाय.

छट्ठो (पडुच्चमक्खिएणं के०) रोटला प्रमुखने लगारेक सुंहाला राखवाने अर्थे मोण दीधुं होय, अथवा लगारेक हाथ चोपडी कीधी होय, ते रेचवाली रोटली प्रमुख तथा पुडलादिक लेतां पच्चरकाण भंग न थाय.

सातमुं पारिठावणियागारेणं, आठमुं महत्तरागारेणं, नवमुं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं, ए त्रण आगारनो अर्थ, बीजा पच्चरकाणोथी जाणवो ॥ ४ ॥

॥ अथ एज चोथुं निविगइनुं एकासण सहित पच्चरकाण ॥

॥ सूरेउग्गए नमुक्कार सहियं पोरिसिं साढपोरिसिं पुरिमड्ढ पच्चरकाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं पछन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं निविगइ एकासणं पच्चरकाइ तिविहंपि आहारं अन्नछणा

नोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहबसंसठेणं उक्खित्त विवेगेणं पडुच्चमक्खिए पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अ छेण वा बहुलेवेण वा ससिछेण वा असिछेण वा वोसिरइ॥४॥

अर्थः—एमां कहेला आगारादिकोनो अर्थ सर्व आगलना पच्चरका णोमां लखाइ गयो छे. इहां निवीना पच्चरकाणमां जो पिंमविगइ अने इव्यविगइ ए बेहु विगइनुं पच्चरकाण करे, तो तेणें एमां कहेला नवे आगार कहेवा, अने जे एकली इव्यविगइ मात्रनो नियम करे तेणें उक्खि त्तविवेगेणं ए आगार मूकीने बाकीना आठ आगार कहेवा ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पांचमुं एकासणानुं पच्चरकाण ॥

सूरे उग्गए नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साढपोरिसिं पुरिमहं पच्चरकाइ ॥ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणानोगेणं सहसागारेणं पछन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तिआगारेणं एका सणं पचरकाइ,तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्न छणानोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं आउटण पसा रेणं गुरुअप्नुठाणेणं पारिठावणिआगारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेणवा अलेवेण वा अ छेण वा बहुलेवेण वा ससिछेण वा असिछेण वा वोसिरइ ॥५॥

अर्थः—सूरे उग्गए इत्यादिकनो अर्थ प्रथमना पच्चरकाणोमां लखाइ गयो छे, एटले नवकारसी, पोरिसि, सार्द्धपोरिसि तथा पुरिमार्द्ध पर्यंत ज्यां सुधी धारणा करी लीये त्यां सुधी तो अशनादिक चारे आहारना पच्चरकाण छे, तेना अन्नछणानोगेणं आदिक आगार जाणवा. उपरांत ज्यां एकवार (असण के०) नोजन करवुं. तेने एकासणुं कहीयें अथवा ज्यां एकज आस न छे, ते एकासण कहेवाय छे तेनुं (पच्चरकाइ के०) पच्चरकाण छे. एका

सणुं कस्या पछी तिविहंपि आहारं एटले अशन, खादिम अने स्वादिम, ए त्रणे आहारनुं पच्चरकाण करे, अने जम्या पछी एक पाणी मोकलुं राखे, तेथी असणं खाइमं साइमंनो पाठ कहियें. हवे एना आगार कहे छे. त्यां एक अन्नछणाभोगेणं अने बीजो सहसागारेणं, एना अर्थ लखाइ गया छे.

त्रीजो (सागारिआगारेणं के०) साधु जमवा वेळा पछी त्यां कोइ सागारिक जे गृहस्थ ते आव्यो, पछी ते चाल्यो जतो होय तो क्षण एक सबूर करे, वेशी रहे, अने जो तेने त्यां स्थिर रहेतो जाणे, अने गृहस्थनी नजर पडे तो साधु त्यांथी उठीने बीजे स्थानकें जइ आहार लीये. केम के गृहस्थनी देखतां जमे तो प्रवचनोपघातादिक महादोष सिद्धांतमां कह्या छे, ते लागे. ए साधु आश्री कह्युं, अने गृहस्थ आश्री तो गृहस्थ एकासणुं करवा वेळा पछी जेनी दृष्टि पडतां अन्न पचे नहीं, एवा कोइ पुरुषनी दृष्टि पडे, अथवा सर्प आवे, चोर आवे, वंदीवान आवी उभो रहे, अकस्मात् अग्नि लागे, घर पडवा मांडे, तथा अकस्मात् पाणीनी रेल आवे, इत्यादिक कारणें ते स्थानकथी उठीने बीजे स्थानकें जइ एकासणुं करतां पच्चरकाण भांगे नहीं.

चोथो (आउंटणपसारेणं के०) जमवा वेळा पछी हाथ पग जंघादिक अंगोपांग पसारतां तथा संकोचतां कांइ आसन चलायमान थाय तो पच्चरकाण भंग न थाय. पांचमो (गुरुअभुठ्ठाणेणं के०) पच्चरकाणें जमवा वेळां छतां गुरु जे आचार्य उपाध्याय तथा साधु आवे तेमनो विनय साचववाने अर्थें बे पगने छामें राखी उठवुं पडे, तो पच्चरकाण भंग न थाय.

छठो (पारिठ्ठावणियागारेणं के०) विधियें निर्दोषपणे ग्रहण करेलुं अने विधियें वेहेंची आप्युं जे अन्न तेने साधुयें विधियें भुक्त कर्यां थकां कांहिं उगर्युं एवुं पारिष्ठापनयोग्य जे अधिक अन्न ते स्निग्ध अन्नने परठवता जीव विराधनादि घणा दोष उपजे छे, एवुं जाणीने तेवुं अन्न तथा विगयादिकने गुरुनी आज्ञायें एकासणादिकथी मांडीने उपवास पर्यंत पच्चरकाणवालाने ते वधेला आहारने जमतां पच्चरकाण भंग न थाय, पण तिहां एटलो विशेष जे चउविहार उपवासमांहे पाणीनुं पारिठ्ठावणियागारेणं थाय, अने तिविहार उपवासना पच्चरकाणें अन्नादिकनुं पारिठ्ठावणियागारेणं थाय. ए आगार यतिने होय, पण श्रावकने न होय, तथापि आलावो त्रूटे माटे गृहस्थने एकज पाठ संलग्न कहेता दोष नथी. सातमो महत्तरा

गारेणं, अने आठमो सवसमाहिवत्तिआगारेणं एना अर्थ लखाइ गया ले.

हवे जम्यापठी अचेतपाणी पीवानुं मोकलुं ले माटे पाणस्सना आगार कहीयें ठैयें. (पाणस्स के०) पाणी, ते पाणी केहेवुं ? तो के (लेवेण वा के०) जे अन्नादिकें करी नाजनादिक खरडाय, ते लेपकृत आम्लाम्ल, तथा उसामण गलीने पीये. आदिशब्द थकी द्राक्षादिक-आम्लकादिक पानकादिक जाणवां. ते पीवाथकी पच्चरकाण नंग न थाय.

बीजो (अलेवेण वा के०) अलेपकृत पाणी ते सौवीर, कांजी, धोयण, आदिशब्दथकी गमूलजरवाणी प्रमुखने पीये तो पच्चरकाण न नांगे.

त्रीजो (अछेणवा के०) अछ ते उष्णजल तथा बीजां पण निर्मल ठका थ्यां पाणी, नीतखुं फलादिकनुं धोयण प्रमुख तेने पीए तो पच्चरकाण नंग न थाय.

चोथो (बहुलेवेण वा के०) बहुलेप एटले मोहोलुं चोखा प्रमुखनुं धोवण तेने गलीने पीए तो पच्चरकाण न नांगे.

पांचमो (ससित्थेण वा के०) सित्थसहित ते अन्नादिक दाणाना स्वाद विना धोवण तथा दाथरादिकनुं धोवण तेने गलीने पीए, तो पच्चरकाण न नांगे.

ठठो (असित्थेणवा के०) सित्थरहित कणक प्रमुखें हाथ खरड्यो होय तेनुं धोवण गली पीए, तो पच्चरकाण नांगे नहीं, ए ठ आगार पाणीना कह्या, ते टाली बीजा पाणीने (वोसिरइ के०) वोसिराववुं ॥ ५ ॥

॥ अथ ठठुं एकलठाणनुं पच्चरकाण ॥

सूरे उग्गए नमुक्कारसहियं पोरिसिं साढपोरिसिं पुरिमड्ढं पच्चरकाइ ॥ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नठणाभोगेणं सहसागारेणं पछन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तिआगारेणं एगलठाणं पच्चरकाइ ॥ तिविहंपि आहारं अन्नठणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं गुरुअप्पुठाणेणं पारिठावणिआगारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तिआगारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अछेण वा बहुलेवेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ ॥ इति ॥६॥

अर्थः—एकलगणानुं पच्चरकाण पण एकासणा प्रमाणेंज ठे, परंतु एमां सात आगार ठे, माटे एक आउंटणपसारेणं ए आगार न केहेवो ॥ ६ ॥

॥ अथ सातमुं आंबिलनुं पच्चरकाण ॥

सूरे-उग्गए नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साढपोरिसिं पुरिमढ्ढं पच्चरकाइ, चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नढणाजोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं आयंबिलं पच्चरकाइ तिविहंपि आहारं अन्नढणाजोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहढसंसठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिठावणिआगारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अढेण वा बहुलेवेण वा ससिढेण वा असिढेण वा वोसिरइ ॥ इति आयंबिल पच्चरकाण समाप्त ॥ ७ ॥

अर्थः— प्रथम नमुक्कारसहि पोरिसि साढपोरिसि पुरिमढ्ढ पर्यंत अशनादिक चार आहारना पच्चरकाण संबंधि अन्नढणाजोगेणंथी मांमीने सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पर्यंत आगारो कह्या ठे, तेनो अर्थ आगलना पच्चरकाणोमां लखाइ गयो ठे, हवे (आयंबिलं पच्चरकाइ के०) आंबिलनुं पच्चरकाण ठे, तेना आठ आगार ठे, तेमांथी एक अन्नढणाजोगेणं अने बीजो सहसागारेणं ए बे आगारना अर्थ आगल लखाइ गया ठे.

त्रीजो (लेवालेवेणं के०) जे विगय तथा शाकादिकने सस्नेहलें आंगुली तथा जाजनादिक खरडयुं होय, तेने लेप कहियें, पठी तेनेज घणी सारी रीतें लुंठी नाखीने जेमां विगयादिकना अवयव कांइ पण देखाय नहीं एवुं कर्युं होय तेने अलेप कहियें. एवां लेप अलेपवालां जाजन होय, अथवा हाथ लेपालेपवाला होय, एवा कांइ लेप अलेपवाला जाजनें तथा हाथें पीरसवायकी पच्चरकाण जंग न थाय. एने लेपालेप आगार कहियें.

चोथो (गिहढसंसठेणं के०) गृहस्थें पोताने अर्थें हाथ तथा चाटुआदिकने विगयें करी खरड्या होय, तेवा हाथे अथवा चाटुआदिकें अन्न आपे, ते अन्न जमतां थकां आंबिल जंग न थाय. पांचमो (उक्खित्तविवेगेणं

के०) गाढी विगय जे गोल पक्वान्नादिक छे तेने रोटली उपर मूकीने फरी परहिं करी होय, तेवी रोटली निवि आंबिलमां लेतां पच्चरकाण जंग न थाय.

छठो (पारिठावणिआगारेणं के०) परठवतो आहार लेतां एटले कोइ साधुयें अधिक वोहोर्युं होय, पछी ते तेने परठववानुं होय, ते परठवतां तेने घणीज अजयणा लागे, अने तेज विगय प्रमुखनुं पोताने पच्चरकाण होय, अथवा पोतें आयंबिल तप कर्युं होय, तेम छतां पण, नी आज्ञायें तेवा आहारने लेवा थकी पण पच्चरकाण जंग न थाय.

सातमो (महत्तरागारेणं के०) मोहोटी निर्जराने लाजे पच्चरकाण जांगे नही. आठमो (सवसमाहिवत्तिआगारेणं के०) सर्व प्रकारें शरीर असमाधिएं पच्चरकाण जांगे नहीं,वोसिरामि एनो अर्थ सुलज छे. तथा उष्ण पाणी वावरवा माटें पाणस्स एटले पाणीना लेप अलेपादिक छ आगार कह्या छे, तेनो अर्थ प्रथमना पच्चरकाणोमां लखाइ गयो छे ॥ ७ ॥

॥ अथ आठमुं चउविहार उपवासनुं पच्चरकाण ॥

सूरे उग्गए अजत्तठं पच्चरकाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणाजोगेणं सहसागारेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ८

अर्थः—सूर्यना उदयथी मांमीने (अजत्तठं के०) अजक्तार्थएटले जात पाणीना नियमने अर्थे. (चउविहंपिआहारं के०) चारे आहारनो पच्चरकाइ के०) नियम छें, ते चार आहारनां नाम कहे छे. एक अशन, बीजो पान त्रीजो खादिम, अने चोथो स्वादिम, हवे एना आगार कहे छे. एक अन्नछणाजोगेणं, बीजो सहसागारेणं, त्रीजो पारिठावणिआगारेणं, चोथो महत्तरागारेणं, अने पांचमो सवसमाहिवत्तिआगारेणं एनो अर्थ लखाइ गयो छे.

तथापि पारिठावणिआगारेणंनो विशेष एटलो छे के, पाणी अने आहार ए बे वानां कोइ परठवतो होय तो गुरुनी आज्ञायें आहार कीधो कल्पे, पण एकलो आहारज कोइ परठवतो होय तो ते आहार कीधो कल्पे नहीं, केम के? चउविहारमां पाणीनो नियम छे,अने पाणी विना मुख शुद्ध न थाय. माटे पाणी अने आहार ए बे वाना परठवतो होय. तो चउविहार उपवासमां लीधा कल्पे, अने तिविहार उपवासमां तो पाणी मोकलुं छे, माटे

एकलो आहार कोइ परठवतो होय तो पण गुरुनी आज्ञायें लीधो कल्पे ॥८॥

॥ अथ आठमुं तिविहार उपवासनुं पच्चरकाण ॥

सूरे उग्गए अन्नत्तठं पच्चरकाइ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं, साइमं अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं पारिठावणि आगारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं पाणहा नमुक्कारसहियं पोरिसिं साढपोरिसिं पच्चरकाइ॥ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणाभोगेणं सहसा गारेणं पछन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं, सवसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अछेण वा, बहुलेवेण वा, ससिछेण वा, असिछेण वा वोसिरइ॥८॥

अर्थः—(सूरेउग्गए के०) सूर्यना उदयथी आरंजीने (अन्नत्तठं के०) अनक्तार्थ एटले उपवासनुं (पच्चरकाइ के०) पच्चरकाण छे, ए त्रिविहारमां एक पाणीनो आहार मोकलो राखीने बाकीना (असणं के०) अशन अने (खाइमं के०) खादिम, तथा (साइमं के०) स्वादिम ए (तिविहंपि आहारं के०) त्रण आहार तेनो नियम छे. हवे एना आगार कहे छे.

एक अन्नछणाभोगेणं, बीजो सहसागरेणं, त्रीजो परिठावणिआगारेणं, चोथो महत्तरागारेणं, पांचमो सवसमाहिवत्तिआगारेणं. एना अर्थ लखाणा छे

ए पच्चरकाणमां नमुक्कारसी, पोरिसी साढपोरिसी पछी (पाणहार के०) पाणीनो आहार मोकलो छे,तेनो अवधि तथा आगार कहे छे. सूर्यना उदयथी प्रारंजीने नमुक्कारसहियं एटले नवकारसी पर्यंत तथा (पोरिसिं के०) प्रहर लगें (साढपोरिसिं के०) मोढ प्रहर लगें (पच्चरकाइ के०) पच्चरकाण छे. हवे पाणी न पीवानी वखत सुधीना आगार कहे छे. एक अन्नछणाजागेणं, बीजो सहसागारेणं, त्रीजो पछन्नकालेणं, चोथो दिसामोहेणं, पांचमो साहुवयणेणं, छठो महत्तरागारेणं, सातमो सवसमाहिवत्तिआगारेणं. ए साते आगारना अर्थ पाछलना पच्चरकाणोमां लखाणा छे.

हवे (पाणस्स के०) पाणी पीवाना छ आगार छे, ते कहे छे, (लेवेण वा के०) लेपजल ते खजूरनुं तथा आछण, बीजुं (अलेवेण वा के०) अ

लेपजल ते धोयण प्रमुख, त्रीजुं (अछेणवा के०) निर्मल उष्ण पाणी, चोथुं (बहुलेवेणवा के०) मोहलुं तांदूलनुं धोअण प्रमुख, पांचमुं (ससि छेण वा के०) सीथ सहित पीठनुं धोअण, छहुं (असिछेण वा के०) सीथ-रहित फांसुं जल, एटलां टाली बाकीनां पाणीने (वोसिरइ के०) वोसिरावबुं.

॥ एज आगमुं चउछ छठ नत्तादिकनुं पच्चरकाण आवी रीतें कहेवुं ॥

सूरे उग्गए चउछनत्तं अनत्तठं पच्चरकाइ ॥ सूरे उग्गए छठनत्तं अनत्तठं पच्चरकाइ ॥ सूरे उग्गए अठम नत्तं अनत्तठं पच्चरकाइ ॥ इत्यादि प्रकारें आगार सहित कहेवुं. एना अर्थ सुलन्न छे ॥ ८ ॥.

॥ अथ नवमुं रातें चउविहार करवो, तेनुं पच्चरकाण ॥

दिवसचरिमं पच्चरकाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ए॥

अर्थः-(दिवसचरिमं के०) दिवसना छेडाथी मांमीने फरी नवो सूर्य उगे त्यां सुधी (पच्चरकाइ के०) पच्चरकाण छे. (चउविहंपिआहारं के०) चउविहार ते चार प्रकारना आहारने पच्चरकुं छुं. शेष अर्थ सुलन्न छे ॥ ए ॥

॥ अथ दशमुं गंठसहिय मुठसहियादि अनिग्रहोनुं पच्चरकाण ॥

सूरे उग्गए गंठसहिअं मुठसहिअं पच्चरकाइ चउविहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणाभोगेणं सहसागरेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ चउदनियमधारनारने देसावगासिकादि अनिग्रहोनुं पच्चरकाण ॥

देसावगासिअं उवनोगं परिनोगं पच्चरकाइ अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति ॥

अर्थः-(देसावगासिअं के०) दिशिना अवकाशनुं व्रत अथवा बह्रा नियम आश्री तो (देस के०) थोडामां अवकाश आपे, तेने देशावकाशिक व्रत कहियें. एटले इहां जे एकली दिशिनुंज पच्चरकाण करे, तेवारें उपन्नोग परिन्नोगनो पाठ न कहियें तेने देसावगासिअं पच्चरकाइज कहियें. (उवनोग के०) एकवार नोगवीये एवा आहार तथा विलेपनादिक तेने उपनोग कहियें. अने (परिन्नोग के०) वारंवार नोगवियें एवी वस्तु जे आनरण वस्त्रादिक तेनुं प्रमाण करे, एटले जे चौद नियम संनारे, तेने ए उपनोग परिन्नोगनो पाठ कहियें, एना आगारोनो अर्थ सूलन छे ॥

॥ अथ साधुजीने चौद प्रकारना दाननी निमंत्रणा करवी, ते कहे छे ॥

पच्चरकाण कस्या पछी बे ढीचण अने मस्तक नूमिएं लगाडी, मावे हाथे मुखें उत्तरासण देइ जमणो हाथ गुरुने पगें लगाडी आवी रीतें कहे.

इछाकारि नगवन् पसाय करी फासुअं एसणिज्जे
णं असणं पाणं खाइमेणं साइमेणं वछ पडिग्गह कं
बल पायपुछणेणं पाडिहारिअ पीढ फलगसिज्जा सं
थारएणं उसह नेसज्जेणं नयवं अणुग्गहो कायवो ॥

अर्थः-इछाकारि नगवन्, पसाय करी प्राशुक एटले अचित्त (एसणिज्जेणं के०) ऐषणिक ते सुजतो एटले जे साधुने कल्पे, एवो आधाकर्मादिक दोषें रहित अशन, पाणी, (खाइमं के०) सुखडी, (साइमं के०) सूंठ, हलदर प्रमुख (वछ के०) वस्त्र ते चोलपटादिक, (पडिग्गह के०) पढगादिक पात्रां प्रमुख, (कंबल के०) कांबली, (पायपुछणेणं के०) बेसवानुं पोठणुं, (पाडिहारि के०) अणवोहोरी वस्तु जे गृहस्थनी थकां वावरीने पछी गृहस्थने पाछी अपाय छे, तेवी वस्तु (पीढ के०) बाजोठ, (फलग के०) पाटीउं, (सिज्जा के०) वसति, एटले रहेवानो उपाश्रय, (संथारएणं के०) पाट अथवा माल प्रमुख, वली (उसह के०) औषध जे, क्वाथ, चूर्ण, गोली प्रमुख एकज वस्तु होय ते (नेसज्जेणं के०) त्रिगडू त्रिफला प्रमुख ए पूर्वोक्त वस्तूयें करी (नयवं के०) हे नगवन्! गुरुजी! (अणुग्गहोकायवो के०) अनुग्रह करवो, एटले जे जोइयें ते वोहोरजो.

॥ हवे छ प्रकारें पच्चरकाण शुद्ध थाय छे, ते कहे छे ॥

फासिअं, पालिअं, सोहिअं, तीरिअं, किट्टिअं, आराहिअं, जं च न आराहिअं,तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥

अर्थः—पच्चरकाण विधें कर्युं, उचित वेलायें जे प्राप्त थयुं, तेने फरश्युं कहियें. पच्चरकाण वारं वार उपयोग देइने संजारवुं, तेने पालिअं कहियें. प्रथम गुरुने आहार पाणी देइ थाकतुं जोजन करवुं, तथा अतिचार न लगाडवो तेने शोजित कहियें. पच्चरकाण पूरा पछी पण थोडो अधिक काल थये पालवुं, निर्मल करवुं. तेने तीर्युं कहीयें. जोजन वेलाएं अमुक माहारे पच्चरकाण छे,एम संजारवुं, तेने कीर्त्युं कहियें. (आराहिअं के०) पच्चरकाण जे रीतें कीधुं, ते रीतें आराधवुं. ए छ सुधी जाणवी. (जंचनआराहिअं के०) जेमें पच्चरकाण न आराध्युं होय, अतिचार लगाड्या होय. (तस्समिछामिडुक्कडं के०)ते संबंधी माहारुं पाप मिथ्या थाउ. एवा पच्चरकाणोने विषेज विवेकी पुरुषें उद्यम करवो;केम के? शुद्ध धर्मनें प्रजावें जीव मोक्ष प्रमुखनां सुख पामे.

॥ अथ चउदनियमनी गाथा कहे छे ॥

॥ सचित्त दव्व विगई, वाणह तंबोल वछ कुसुमेसु ॥
वाहण सयण विलेवण,बंज्ज दिसि न्हाण जत्तेसु ॥१॥

अर्थः—पेहेलो (सचित्त के०) पाणी, फल, बीज, दातण, कण प्रमुख सचित्त चीजनुं प्रमाण करे. बीजो (दव्व के०) जे वस्तुनो जिन्न स्वाद ते इव्य कहीयें. तेनुं मान करे. त्रीजो (विगइ के०) घृत प्रमुख छ विगयमां जेटली खावानी मोकली राखवी होय, तेनुं मान करे, उपरांत निषेध करे. चोथो (वाणह के०) उपानह ते पगरखानुं मान करे. पांचमो (तंबोल के०) पान सोपारी प्रमुख सर्वने तंबोल कहीयें, तेनुं मान करे. छठो (वछ के०) वस्त्र जे पोताना शरीरे वापरवानां होय, तेनुं मान करे. सातमो (कुसुमेसु के०) फूलनुं मान करे. आठमो (वाहण के०) वाहन ते अश्व, पालखी, झोली,गाडां प्रमुख जे वाहन तेनुं मान करे. नवमो (सयण के०) शय्या तथा आसन प्रमुखनुं मान करे. दशमो (विलेवण के०) चंदन तेल प्रमुख विलेपन करवानी वस्तुनुं मान करे. अगीयारमो (बंज्ज के०)

ब्रह्मचर्य पालवाने मैथुननी मर्यादा करे. बारमो (दिसि के०) दिशिविदिशिनुं मान करे. तेरमो (न्हाण के०) स्नान कंकोडी प्रमुखें नावुं, तथा अंगो लीनुं मान करे. चौदमो (नत्तेसु के०) नात पाणीनुं मान करे. अहींयां बीजा पण नियम ले, ते प्रसंगें लखीयें बैयें. पन्नरमो पृथ्वीकाय आश्री माटी, मीठुं खडी प्रमुख पोताने निमित्तें वावरे, तो तेनुं प्रमाण करे. शोलमो अप्पकाय आश्री पाणी पीवामां अथवा न्हावा प्रमुखमां वापरवामां आवे, तेनुं प्रमाण करे. सत्तरमो तेउकाय आश्री पोताना शरीरना नोगोपनोगमां चूला, चाडी, सघडी, आंगीठी प्रमुखनुं रांध्युं, नीपज्युं तपाव्युं, शेक्युं तेनुं प्रमाण करे. अढारमो वायुकाय आश्री पंखा, हिंचोला, पडदा तथा लुगडादिकथी पवन करवानुं प्रमाण करे. उगणीशमो वनस्पतिकाय आश्री लीलां फल, फूल, शाक, दातण प्रमुख खावानुं तथा वावरवानुं प्रमाण करे. वीशमो त्रसकाय जे त्रास पामे एवा जीव ते कीडी, कीडा, विठी, गाय, मत्स्य, पक्षी, मनुष्य, देव नारकादिक मांहेला कोइ जीवने विना अपराधें संकल्प करी मारुं नही, तेनो नियम करे. एकवीशमो असि ते तरवार, नाला, तीर, बुरी, कोश, कोदाल, पावडा, घंटी प्रमुख जीव घात करनार वस्तुनो नियम करे. बावीशमो मसी ते शाइना खडीआ, कलम प्रमुख वापरवानुं प्रमाण करे. त्रेवीशमो कृषि ते जमीन खोदवादिक घर, हाट, क्षेत्र प्रमुख तलाव कूपादिकने खोदवा, तेनो तथा तेना शस्त्रनो नियम करे, ए चौद नियमादिक त्रेवीश बोल जे ले, ते जेवी रीतें पोताथी पलीशके, तेवी रीतें अवश्य पाले ॥ १५ ॥

हवे ए पच्चरकाणने प्रसंगें दश विगयमांहेला ब नक्ष्य विगय ले, ते प्रत्येकना पांच पांच निवियाता करतां त्रीश निवियाता थाय ले. ते कहे ले.

प्रथम दूध विगयना पांच निवियाता कहे ले. त्यां एक जे दूध घणुं होय, अने चोखा थोडा होय, तेने पेया कहे ले, बीजो खाटी बाश सहित जे दूध, अर्थात् दूधमां खटाश नाखी पचावीयें अथवा त्रण दिवसनी प्रसूत गायनुं दूध उकालीयें तेने डुक्ष्री कहे ले. त्रीजुं डाक्ष टोपरादिक नाखीने रांधेलुं जे दूध, तेने पयसाडी कहे ले. चोथुं चोखानो थोडो लोट नाखीने रांधेलुं जे दूध, तेने अवलेही कहे ले. पांचमो चोखा घणा अने दूध थोडुं, ए रीतें जे रांधेलुं होय, तेने खीर कहे ले. नेदांतरें वली एना पण नेद थाय ले.

हवे दहींनां पांच निवियाता कहे छे. एक दहींने घोळीने अथवा उका ळीने तेमां वडां घाले, तेने घोळवडां कहे छे. बीजुं दहीं घोळीने वस्त्रमांथी गाळीए तेने मथ्थुं अथवा छाण्युं दहीं कहे छे. त्रीजुं दहींने हाथथी मथन करी तेमां खांम अथवा शाकर नेळीयें तेने शिखरिणी अथवा शिखंम कहे छे. चोथुं दहीं अने रांधेला चोखा एकठा करीयें तेने करबो कहे छे. पांचमुं लूण नाखीने जे दहीं मथन करेलुं होय तेने सलवण कहे छे.

हवे घृतना पांच निवियाता कहे छे. एक औषधियें करी पकावेलुं घृत तेने पक्वघृत कहे छे. बीजुं घृतनी कीटी जे मेल थाय छे तेने घृतनी कीटी कहिये. त्रीजुं जे घृतमां कोइ औषधि पकावी होय ते उपरनी तरीनुं जे खंमादिक सहित घृत तेने पक्वौषधि तरित कहे छे. चोथुं पक्वान्न तरतां बळेलुं घृत तेने निर्भंजन कहे छे, ए त्रण घाण तळ्या पछीनुं रहेलुं घृत अथवा सीरादिक उपरनुं घृत जाणवुं. पांचमुं दहींनी तरीमां गहूंनो लोट नाखीने जे तावडे पकावीयें तेने विसंदण कहे छे. एना पण नेदांतर नेद घणा थाय छे.

हवे तेलना पांच निवियाता कहे छे. एक तिलकुटी ते घाणीमांहे तिल पीलेलानी साडी तेमांहे खंमादिक नाखे ते, बीजी तेलनी मली, त्रीजुं लाक्षादिक द्रव्यें करी पकावेलुं तेल, चोथी पाकेला औषधनी तरी. पांचमुं घाण पछवाडेनुं बळेलुं तेल. एना पण नेदांतरें नेद घणा थाय छे.

हवे गोळ विगयना पांच निवियाता कहे छे. एक अर्द्धो पकावेलो शेलडीनो रस, बीजो गोळवाणुं, गोळनी राब, गोळना पाणीमां लोट नाखे ते, त्रीजो शाकरनी जात, चोथो खांमनी जात सर्व जाणवी, पांचमो गोळनी पाती जाणवी. एना पण नेदांतरें नेद घणा थाय छे.

हवे कढाविगयना पांच निवियाता कहे छे. जो एक खाजां वडे कडाइ नराइ गइ होय तो तेथी बीजुं खाजुं निवियातुं थाय छे, पण तेमां मात्र बीजुं घृत नाखवुं न जोइयें, तेज घृत वडे पकावीयें, तेने प्रथम निवियातो कहीयें. बीजुं एकनी उपर एक नाखीयें एम त्रण घाण उपरांत तेज घृतमां जे चोथो पकावीयें, ते बीजो निवियातो जाणवो. त्रीजो गोळधाणी, गोळ पापडी प्रमुखनो निवियातो जाणवो. चोथो पाणी, गोळ, घृत, एकठां उकाळी पछी ते पाणीमां लोट नाखी रांधेली लापशी करीयें, ते चोथो निवियातो जाणवो. पांचमो निवियातें करी चोपडी काहाडेला तावडानी उपर पुडला

प्रमुख करे, ते पांचमो निवियातो जाणवो. एना पण नेदांतर घणा थाय बे.

॥ अथ पोसह उच्चार करवानो विधि प्रारंज ॥

-- प्रथम प्रजातनुं सामायिक करी रह्या पबी फरी प्रथम त्रण खमासमण आपी इच्छकार सुहराइ० कही पबी इच्छाकारेण संदिसह जगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमुं श्री एम कही, इरियावहियं० कहीने तस्सुत्तरी० कहेवी, पबी एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. पबी प्रगट लोगस्स कहेवो. पबी गमणागमण एटले मारगने विषे० कहेवुं पबी इच्छाकारेण संदिसह जगवन् ! पोसह सामायिक ठावा त्रण नवकार गणुं. एम कही त्रण नवकार गणवा. पबी सात लाख पृथ्वीकायनो पाठ कही जीवराशि खमाववी, पबी अढार पापस्थानक आलोववां; पबी गुरुस्थापना केहवी; पबी द्रव्य, क्षेत्र, काल, जाव, धारवा; पबी पोसह उच्चार करवा एक नवकारनो काउस्सग्ग करवो. पबी इच्छाकारेण संदिसह जगवन् ! पोसह उच्चार करावो जी. एम कही गुरु मुखें पोसह उच्चार कराववो. गुरुनो योग न होय तो देव गुरुनी साखें पोताने मुखें पोसह उच्चार करवो, तेनो पाठ लखी बैयें.

॥ अथ पोसहनुं पच्चरकाण ॥

करेमि जंते पोसहं सवउ ॥ आहारपोसहं सवउ ॥ सरीरसक्कारपोसहं सवउ ॥ बंजचेरपोसहं सवउ ॥ अवावार पोसहं सवउ ॥ चउविहे पोसहं ठाएमि ॥ जाव दिवसं, जाव अहोरत्तं, जावरत्तं पज्जुवासामि ॥ डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स जंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥

अर्थः–(जंते के०) हे जगवन् हे कल्याणकारक ! अगीआरमा पोषधव्रतने अथवा जे धर्मनी पोष नाम पुष्टि प्रत्यें धरें, तेने पौषध कहियें, ते (पोसहं के०) पौषध प्रत्यें (सवउ के०) सर्वथकी (करेमि के०) हुं करुं बुं. ते पौषध चार प्रकारें बे,प्रथम (आहारपोसहं के०) अशनादिक आहारनिषेध पोषध पहेलो नेद, ते जो पाणी वापस्याविना नज रही शका

य, तो त्रिविध आहारत्यागरूप तिविहार करीने पोसह करवुं; परंतु शुद्ध व्यवहारें तो (सव्वउ के०) सर्वथकी चारे आहारनो त्याग करवो, ते सर्व थकी आहारत्याग पोसह कहियें. ए प्रथम आहारत्याग पोसह कह्युं. हवे बीजुं (सरीरसक्कारपोसहं के०) शरीर संबंधि स्नान, उवटण. विलेपनादिक तथा वस्त्राभरणादिकें शोभानो नियम तथा नख, केश, रोमनुं समारवुं, तेल चोपडवुं, पीठीनुं करवुं इत्यादिनो सर्वथा त्याग करवो ते शरीरसत्कारनिषेध नामें ए बीजुं पोसह छे, ते (सव्वउ के०) सर्वथकी जाणवुं. त्रीजुं (बंभचेरपोसहं के०) ब्रह्मचर्यपोषध ते (सव्वउ के०) सर्वथकी जाणवुं, एटले सर्वथकी ब्रह्मचर्यनी पुष्टि करे, सर्व प्रकारें स्त्रीसेवन न करे. चोथुं (अव्वावारपोसहं के०) अव्यापारनी पुष्टिरूप ते (सव्वउ के०) सर्वथी जाणवुं. एटले कृषी, सेवा, वाणिज्य, पशुपालन, गृहकर्म प्रमुख जे व्यापार, तेनो सर्वथा निषेध करे, ए (चउविहेपोसहं के०) ए चार प्रकारना पोषधने विषे (ठामि के०) हुं तिष्ठुं, रहुं, अंगीकार करुं छुं, (जाव के०) ज्यांसुधी (अहोरत्तं के०) दिवस अने रात्रि मली आठ पहोर पोषध प्रत्यें अथवा (जावदिवसं के०) ज्यांसुधि दिवस प्रत्यें क्रमण छे त्यां सुधि चार पहोर पोषधव्रत प्रत्यें, अथवा (जावरत्तं के०) ज्यांसुधि रात्रि प्रत्यें क्रमण छे त्यांसुधि चार पहोर पोषधव्रत प्रत्यें (पज्जुवासामि के०) हुं पर्युपासुं, सेवुं, त्यांसुधि अने थोडोक दिवस होय, तेवारें रात्रिपोसह जो लीए तो "जावदिवसं रत्तं पज्जुवासामि" एवो पाठ कहे, ज्यांसुधि थोडो दिवस होय, त्यांथी लेइने आखी रात्रिसुधि पोसह निरतिचार पालुं, (दुविहंतिविहेणं के०) दुविधें त्रिविधें करी इत्यादिनो अर्थ सामायिक उच्चार करवाना पाठमां प्रथम लखाइ गयेलो छे त्यांथी जोइ लेवो ॥ १ ॥ इति ॥

ए रीतें पोसहनो उच्चार करीने, पछी सामायिक उच्चार करवा एक नवकारनो काउस्सग्ग करवो. ते काउसग्ग करी पारीने पछी सामायिक उच्चार करवो तेनो पाठ लखीयें छैयें.

॥ अथ सामायिक उच्चार करवानो पाठ ॥

करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चरकामि जाव पोसहं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करे

मि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ पछी वांदणा बे वार आपीयें.

पछी इच्छामि खमासमणपूर्वक इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देव वांदवा निमित्त चैत्यवंदन करुं जी. एम कही चैत्यवंदन कहेवुं. पछी चार स्तवन कहेवां. पछी उवसग्गहर० कहीने नमुत्थुणं० कहेवुं. पछी जेअइया तिछयरा० कही ते उपरांत एक बे, चार, काव्य कहेवां. ए रीतें देव वांदीने पछी संवर धारण करी भणवुं, गणवुं, स्तवन, सज्झाउ प्रमुख कहेवां नवकारवाली गणवी. इत्यादिक संवरनां कार्य करवां. वली मध्यान्ह समयें प्रथमनी पेरें देव वांदवा. फरी वली संध्यासमयें पण एजरीतें देव वांदवा. एम त्रण वार देववंदन करवुं.

अहीआं एटलो विशेष छे जे प्रभातें सामायिक करी रह्या पछी पोसह ठाववुं ते वखतें तथा वली सांजे पण सामायिक करवाथी आगल प्रथम पोसह ठाववुं ते वखतें तथा फरी रात्रियें पोसह कर्युं होय तो ते रात्री वीत्या केडे प्रभातें पोसह पारवानी वखतें ए त्रण वखत काजो परठववा निमित्तें वस्त्र पडिलेहण करवुं जोइयें, ते पडिलेहण करवानो विधि लखीयें छेयें.

॥ अथ पडिलेहणविधि प्रारंभ ॥

प्रथम इरियावहियं० कही तस्सुत्तरी० कहेवी. पछी एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी लोगस्स प्रगट कहेवो. पछी गमणागमण आलोववुं, पछी सर्व वस्त्रनुं पडिलेहण करवुं, एटले वस्त्र सर्व नजरमांथी जोइ काढवां तेमां काइ जीवजंतु होय ते कोरांखा परठववा. पछी पोताने स्थानकें जइ आसन पूजवुं. ए रीतें काजो परठववो ए काजो परठवतां पडिलेहण करतां जे दूषण लाग्युं होय, ते निमित्तें इरियावहियं पडिक्कमि, तस्सुत्तरी कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कही गमणागमण आलोववुं. पछी इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! काजा सिवाय कहुं जी. अहीआं एक सज्झाय कहेवी. पछी प्रतिमा आगलें प्रभातकालनिमित्तें चैत्यवंदन कही चार स्तवन कहेवां. पछी उवस्सग्गहरं० तथा नमुत्थुणं० कही पछी श्रुतवांदणा आपीयें, बेठां वखाण सांभलीयें. ए रीतें पाछले पहोरें पण पडिलेहण करवुं पछी देव वांदवा. पछी सांजे पाखी पडिक्कमणुं क

खवुं. तेवार पछी फरी रात्रीयें पण पोसह कस्यो होय तो राइसंथारा पोरिसि जणाववी, तेनो विधि लखियें छैयें.

॥ अथ पोरसिजणाववानो विधि ॥

॥ प्रथम इरियावहियं० ॥ पछी तस्सुत्तरी० ॥ कही एक लोगस्सनो काउसग्ग करी पछी प्रगट लोगस्स० ॥ कही गमणागमणं आलोववुं. पछी इच्छामि खमासमणपूर्वक इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ! राइसंथारो ठावा नमो अरिहंताणं० ॥ नो पाठ तथा करेमिजंते सामाइयंनो पाठ ए बेनो पूर्ण पाठ त्रण्य वार कही पछी इच्छाकारेण संदिसह जगवन् ! राइसंथारो करुं जी. एम कही राइसंथारो कहेवो, ते लखे छे.

॥ अथ राइसंथारानो पाठ ॥

चउकसाय पडिमल्लुल्लूरणु, डुज्जयमयणबाणमुसुमूरणु ॥ सरस पिअंगु वन्नु गयगामिउ, जयउ पासु जुवणत्तयसामिउ ॥१॥

अर्थः—(जुवणत्तयसामिउ के०) त्रण जुवनना स्वामी, (पासु के०) श्रीपार्श्वनाथ छे, ते (जयउ के०) जयवंता वर्तो, ते श्रीपार्श्वनाथ केहेवा छे ? तो के, (चउकसाय के०) क्रोधादिक चार कषायरूप जे (पडिमल्ल के०) प्रतिमल्ल एटले वैरी, तेना (उल्लूरणु के०) उच्छेदनार छे, एटले टालनार छे, वली केहेवा छे ? तो के (डुज्जय के०) डुर्जय एटले डुःखें जीत्यो जाय एवो (मयण के०) मदन एटले कंदर्प ते संबंधि जे (बाण के०) तीक्ष्ण बाण, तेना (मुसुमूरणु के०) जांजनार छे, एटले उन्मूलन करनार छे. वली केहेवा छे ? तो के (सरस के०) रसें करीने सहित एटले स्निग्ध, नीलो एवो (पिअंगु के०) प्रियंगु जे रायणनो वृक्ष, ते समान (वन्नु के०) शरीरनो वर्ण छे जेनो, वली केहेवा छे ? तो के (गयगामिउ के०) गजनी पेरें गमनना करनार छे, अर्थात् हस्तीनी जेवी जेनी गति छे ॥१॥

जसु तणु कंति कडप्प सिणिद्धउ, सोहइ फणिमणि किरणा लिद्धउ ॥ नं नव जलहर तडिल्लय लंछिउ, सो जिणु पासु पयछउ वंछिउ ॥ २ ॥

अर्थः—(सो के०) ते (जिणुपासु के०) श्रीपार्श्वजिन ते, (वंछिउ

के०) महारा वंछित प्रत्यें (पयच्छ्उ के०) आपो, हवे ते श्रीपार्श्वजिन केहेवा छे ? तो के (जसु के०) जेना (तणु के०) शरीरनी (कंति के०) कांति एटले द्युति तेनो (कडप्प के०) कलाप एटले समूह ते (मोहइ के०) शोभे छे. ते कांतिसमूह केहेवो छे ? तो के (सिणिद्धउ के०) स्निग्ध छें, एटले चीकाशसहित छे, वली ते कांतिसमूह केहेवो छे? तो के (फणि के०) नागेंद्रनी फण ते संबंधि जे (मणि के०) मणिरत्न तेना (किरण के०) कीरणोयें करी (आलिद्धउ के०) व्याप्त छे, एटले सहित छे, वली ते कांतिसमूह केवी रीतें अने केवो शोभे छे ? तो के (तडित् के०) विजली, तेनी (लय के०) लतायें करी (लंछिउ के०) लांछित एटले सहित एवो जे (नवजलहर के०) नवो मेघ ते (नं के०) जेम शोभे छे, तेम ते कांतिसमूह शोभे छे ॥ २ ॥ एम श्रीपार्श्वजिननी स्तवना करे ॥

आसिज्ज, आसिज्ज, आसिज्ज, निसिही, निसिही, निसिही णमो खमासमणाणं गोयमाईणं महामुणीणं ॥ अणुजाणह जिछिज्जा ॥ अणुजाणह परम गुरु, गुरु गुणरयणेहिं मंडिअ सरीरा ॥ बहुपडिपुन्ना पोरिसि, राइअ संथारए ठामि ॥३॥

अर्थः—अहींआं साधु तथा श्रावक, पडिक्कमणुं करीने पछी स्वाध्याय करे, एटले नणवुं, गणवुं करे, तदनंतर पोरिसि थये छते आचार्य समीपें आवे, तिहां खमासमण दइने कहे. इच्छाकारेण संदिसह जगवन् ! " बहु पडिपुण्णा पोरिसि, राइय संथारए ठामि" एनो अर्थ लखीयें छैयें. (जगवन् के०) हे जगवन् ! संपूर्ण ऐश्वर्यादिक गुणें युक्त ! (इच्छाकारेण के०) तमारी पोतानी इच्छायें करी मुजने (संदिसह के०) आदेश आपो. (बहुपडिपुण्णापोरिसि के०) घणी प्रतिपूर्ण एवी पोरिसि थइ माटे (राइय के०) रात्रि संबंधि (संथारए के०) संथारा प्रत्यें (ठामि के०) हुं ठाउं, तिष्ठुं? एटले विसराम करुं? एम कहे तेवारें गुरु आदेश आपे, पछी यतनायें करी संथारो करे. पछी मावो पग, संथारानी साथें राखीने साधु मुखवस्त्रिकानुं प्रतिलेखन करे, एटले मुहपत्ती पडिलेहे. अने श्रावक छेहेडाएंकरी पडिलेहण करे पछी त्रण वार निसिही जणे, (निसिही के०) पाप व्यापारनो निषेध करीने, (महामु

णीणं के०) महोटा मुनीश्वर एवा (गोयमाईणं के०) श्रीगौतमादिक (खमासमणाणं के०) क्षमाश्रमण जे छे, ते प्रत्यें (णमो के०) नमस्कार करे, पछी (जिट्ठिज्जा के०) हे ज्येष्ठार्या ! एटले हे वृद्धसाधुउ ! तमें मुजने (अणुजाणह के०) अनुज्ञा आज्ञा आपो, ए प्रकारें कहेतो थको संथारानी उपर रह्यो थको, आवी रीतें कहे, ते कहे छे. (गुरुगुणरयणेहिं के०) प्रतिरूपादिक आचार्यना गुरु एटले महोटा एवा जे गुण, ते रूप रत्नोयें करी (मंडिअसरीरा के०) मंडित छे,शोनित छे शरीर जेनां एवा (परमगुरु के०) उत्कृष्ट गुरुउ तेने संबोधन देइ, बोलावे के हे परमगुरु ! तमें मुजने (अणुजाणह के०) आज्ञा आपो. प्रतिपूर्ण एटले घणी एवी पोरिसि थइ, माटे रात्रिसंथारकनी उपर हुं तिष्ठुं ? एटले विश्राम करुं ? निद्रा मुकाउं ? अहींआं सुधि गद्यपाठ तथा एक गाथामां संथारानी आज्ञानुं स्वरूप कह्युं ॥ ३ ॥

हवे आगल बे गाथायें करी वली पण संथारानी आज्ञा प्रमुखनुं जे स्वरूप छे ते कहियें छैयें.

अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥
कुक्कुडिपाय पसारण, अंतरंत पमज्जए नूमिं ॥ ४ ॥
संकोइअ संमासा, उवट्टंते य कायपडिलेहा ॥
दव्वाई उवउगं, ऊसास निरुंनणा लोए ॥ ५ ॥

अर्थः—(संथारं के०) संथारानी हे नगवन् ! तमे मुजने (अणुजाणह के०) आज्ञा आपो. पछी गुरु आज्ञा आपे, तेवारें (बाहुवहाणेण के०) बाहूपधानेन एटले बाहुअने हाथने उपधाने करी अर्थात् उशीके करी (वामपासेण के०) मावे पासे सूवे,ते पण शी रीतें सूवे? तो के (कुक्कुडि के०) कुकडीनी पेरें आकाशने विषे (पायपसारण के०) पग पसारीने सूवे, जो ए रीतें (अंतरंत के०) असमर्थ थकां नही रहि शकाय. तो शुं करे? ते कहियें छैयें. (नूमिं के०) नूमि प्रत्यें (पमज्जए के०) प्रमार्जी,पूजीने तिहां पग स्थापे ॥४॥

ज्यारें पग संकोचवो होय, त्यारें (संमासा के०) साथल संधी प्रत्यें उत्तरासंगना छेहेडायें करी पूंजीने (संकोइअ के०) संकोचे, अने ज्यारें पासुं फेरववुं होय, त्यारें (काय के०) शरीर प्रत्यें (पडिलेहा के०) प्रतिले

खीने एटले शरीरने प्रमार्जी पूंजीने, (उवट्टंते के०) उद्वर्त्तयन्, एटले पासुं फेरवे, ए सूवानो प्रकार कह्यो. (च के०) वली जागवानो प्रकार कहियें बेयें, ज्यारें लघुशंकादिकने अर्थे उठे, तेवारें (दव्वाईउवउगं के०) द्रव्यादिकना उपयोग करे, एटले ते विचार करे, जे द्रव्यथकी हुं कोण बुं, साधु बुं, के गृहस्थ बुं ? अने खेत्र थकी एम विचारे के, हुं, उपर बुं, के नीचें बुं ? के कोइ अन्यत्र स्थानकें बुं ? कालथकी शुं विचारे तो के हमणां रात्रि बे, के दिवस बे ? जो रात्रि बे, तो केटली रात्रि बाकी हशे ? इत्यादि कालथी विचार करे, उपयोग आपे, अने भावथी तो आम विचारे के महारे लघु शंकादिकनी बाधा बे, किंवा नथी ? एवा चार प्रकारें उपयोग देतां, विचार करतां जो निद्रा न जाय, तो (ऊसासनिरुंभण के०) उब्बास, निश्वास प्रत्यें रुंधीने एटले नासिका दबावीने निद्रा दूर करे,ते निद्रा दूर थया पबी (आलोए के०) आलोक प्रत्यें जूए एटले बाहेर निकलवाना द्वार प्रत्यें देखे, त्यां जइ लघुनीतिआदिक करीने पबी धर्मध्यानमां प्रवर्ते ॥ ५ ॥

जइ मे हुज्ज पमाउ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ॥
आहारमुवहिदेहं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥ ६ ॥

अर्थः—हवे सुइ रहेवाथी प्रथम शुं करवुं ? ते कहियें बैयें. (इमाइरयणीए के०) एह रात्रिने विषे (जइ के०) जो (मे के०) महारे (इमस्स देहस्स के०) आ देहसंबंधि (पमाउ के०) प्रमाद एटले मरवुं, (हुज्ज के०) थाय तो (आहारं के०) अशनादिक चार प्रकारना आहार प्रत्यें, (उवहि के०) उपधि जे वस्त्र, पात्रादिक ते प्रत्यें, तथा (देहं के०) शरीर प्रत्यें अथवा (उवहिदेहं के०) शरीर संबंधि उपधि प्रत्यें, बीजा पण (सव्वं के०) सर्व प्रत्यें (तिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन, वचन अने कायायें करी (वोसिरिअं के०) हुं वोसिरावुं बुं, त्यागुं बुं ॥ ६ ॥

पाणाइवायमलियं, चोरिक्कं मेहुणं दविणमुब्बं ॥
कोहं माणं मायं, लोभं पिज्जं तहा दोसं ॥ ७ ॥
कलहं अप्नरकाणं, पेसुन्नं रइ अरइ समाउत्तं ॥
परपरिवायं माया, मोसं मिब्बत्तसल्लं च ॥ ८ ॥

अर्थः-प्रथम (पाणाइवाय के०) प्राणातिपात ते जीवहिंसा, बीजुं (अलियं के०) अलीक वचन एटले मृषावाद, त्रीजुं (चोरिक्कं के०) चोरि, एटले अदत्तादान, चोथुं (मेहुणं के०) मैथुन एटले स्त्री प्रमुखनो नोग, पांचमुं (दविणमुछं के०) पुजलद्रव्यने विषे मूर्छा, एटले परिग्रह, छठुं (कोहं के०) क्रोध, सातमुं (माणं के०) मान एटले अहंकार, आठमो (मायं के०) माया ते कपट, नवमुं (लोहं के०) लोन, दशमुं (पिज्जं के०) प्रेम ते राग, (तहा के०) तथा अगीआरमुं (दोसं के०) दोष ते द्वेष ॥ ७ ॥ बारमुं (कलहं के०) कलह, तेरमुं (अप्नक्खाणं के०) अन्याख्यान, एटले परने आल देवुं, चौदमुं (पेसुन्नं के०) पैशुन्य एटले चुगलि चाडी करवी, पंदरमुं (रइअरइ के०) पुजल पदार्थोने विषे रति तथा खुशी पण एमां ग्रहण करवी अने अरति ते शुजकार्यने विषे दिलगीरी, तेणें करीने (समाउत्तं के०) सहित शोलमुं (परपरिवायं के०) परनो परिवाद एटले निंदा, सत्तरमुं (मायामोसं के०) मायामृषा एटले कपट सहित जूठ बोलवुं, अढारमुं (मिछत्तसल्लं के०) मिथ्यात्वनुं शल्य. एटले श्री जिन मतथी विपरीतमतनी श्रद्धा, तेने मिथ्यात्वशल्य कहियें. अहीं चकार छे, ते समुच्चयार्थवाची छे. ए अढार पाप स्थानकनां नाम कह्यां ॥ ८ ॥

हवे आ गाथामां एनो त्याग कहियें छेयें.

वोसिरिसु इमाइं मु,क्ख मग्ग संसग्ग विग्घ नूआइं ॥
डुग्गइ निबंधणाइं, अठारस पावठाणाइं ॥ ए ॥

अर्थः-(इमाइं के०) ए प्रत्यक्ष, (अठारसपावठाणाइं के०) अढार पापस्थानक जे छे. ते प्रत्यें (वोसिरिसु के०) रे जीव ! तुं वोसिराव एटले त्याग कर. ते अढार पापस्थानक केहेवां छे ? तो के (मुक्खमग्ग के०) मोक्षमार्गने विषे (संसग्ग के०) संसर्ग करता एटले गमन करता एवा जीवोने (विग्घनूआइं के०) विघ्ननूत छे, एटले अंतरायना करनार छे. वली ते पापस्थानक केहेवां छे ? तो के (डुग्गइ के०) डुर्गति जे नरकनिगोदादिकनी गति तेना (निबंधणाइं के०) कारण छे ॥ ए ॥

एगो हं नत्थि मे कोई, नाहमन्नस्स कस्सई ॥
एवं अदीणमणसो, अप्पाणमणुसासई ॥ १० ॥

अर्थः–(अहं के०) हुं (एगो के०) एक बुं, (मे के०) मह्यरो (कोइ के०) कोइ (नत्थि के०) नथी, अने (अन्नस्सकस्सई के०) अन्य कोइनो (अहं के०) हुं (न के०) नथी, (एवं के०) एम (अदीणम णसा के०) अदीनमनथको एटले सावधानचित्त थयो थको (अप्पाणं के०) आत्मा प्रत्यें (अणुसासई के०) शीखामण आपे ॥१०॥

एगो मे सासउ अप्पा, नाण दंसण संजुउ ॥
सेसा मे बाहिरा नावा, सवे संजोगलरकणा ॥११॥

अर्थः–(नाणदंसण के०) ज्ञान दर्शनें करी (संजुउ के०) संयुक्त एटले सहित एवो (सासउ के०) शाश्वतो सदा, नित्य एवो (एगो के०) रागादिक परनावथी रहित एकज, (मे के०) मह्यरो (अप्पा के०) आत्मा बे, (सेसा के०) शेष थाकता रह्या जे (संजोगलरकणा के०) इव्य थकी तन, धन, कुटुंबादि संयोग मिलाप रूप अने नावथकी विषय कषायादिरूप संयोग मिलाप, रूप एवा (नावा के०) नाव जे बे ते (सवे के०) सर्वे (मे के०) मह्यरा स्वरूपथकी (बाहिरा के०) बाह्य बे, एटले न्यारा बे ॥११॥

संजोगमूला जीवेण, पत्ता डुरकपरंपरा ॥ तम्हा
संजोग संबंधं, सवं तिविहेण वोसिरियं ॥१२॥

अर्थः–तन, धन, कुटुंब ममत्वादि रूप (संजोग के०) संयोग एटले मिलाप, तेहीज (मूला के०) मूलकारण बे जेनुं एवी (डुरकपरंपरा के०) डुःखनी श्रेणी ते (जीवेण के०) जीवें (पत्ता के०) पामी. (तम्हा के०) ते कारण मांटे (संजोगसंबंधं के०) पूर्वोक्त जे संयोग संबंध बे, ते (सवं के०) सर्वे प्रत्यें मन, वचन अने काया ए (तिविहेण के०) त्रिविधे करी (वोसिरियं के०) हुं वोसिरावुं बुं, अथवा त्यागुं बुं, एम केहेवुं ॥ १२ ॥

अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥
जिणपन्नत्तं तत्तं, इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ १३ ॥

अर्थः–जावजीव सुधी (अरिहंतो के०) श्रीअरिहंत अने सिद्ध नगवंत, ते (मह के०) मह्यरा (देवो के०) देव बे. (जावज्जीवं के०) ज्यां सुधी जीवुं,

त्यां सुधी (सुसाहुणो के०) सुसाधु, जे जिनमतने विषे सावधान सम्यक् ज्ञान क्रियावान् एवा आचार्य, उपाध्याय अने मुनि, ते म्हारा (गुरुणो के०) गुरु छे, ज्यां सुधी जीवुं, त्यां सुधी (जिण के०) जिनेश्वर देवें (पन्नत्तं के०) प्ररूप्युं नांख्युं जे (तत्तं के०) दयामूल तथा विनयमूल तत्त्व, अथवा ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तपोरूप तत्त्व, ते म्हारो धर्म छे. (इय के०) ए प्रकारें (सम्मत्तं के०) सम्यक्त्व (मए के०) म्हारे जीवें (गहियं के०) ग्रह्युं, अंगीकार कीधुं ॥ १३ ॥

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहु मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ॥ १४ ॥ चत्तारिलोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥१५॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहु सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ १६॥

अर्थः—(चत्तारि के०) चार (मंगलं के०) मांगलिक छे. तेमां एक तो (अरिहंता के०) जेणें रागादिक अंतरंग वैरीने हण्या ते श्रीअरिहंत (मंगलं के०) मांगलिक छे, बीजा (सिद्धा के०) अष्ट कर्मोनो क्षय करीने जे सिद्धि पदने पाम्या छे, ते सिद्ध, (मंगलं ०) मांगलिक छे, त्रीजा (साहु के०) सम्यक्ज्ञान क्रियायें करी शिवसुखना साधक जे साधु, ते (मंगलं के०) मांगलिक छे, चोथो (केवलि के०) श्रीकेवलीभगवंतें (पण्णत्तो के०) प्ररूप्यो एवो श्रुतचारित्ररूप (धम्मो के०) धर्म, ते (मंगलं के०) मांगलिक छे ॥१४॥ (चत्तारि के०) चार (लोगुत्तमा के०) लोकमांहे उत्तम छे, एक (अरिहंता के०) श्री अरिहंत छे, ते (लोगुत्तमा के०) लोकमां उत्तम छे, बीजा (सिद्धा के०) सिद्ध छे ते (लोगुत्तमा के०) लोकमां उत्तम छे, त्रीजा (साहु के०) साधु छे, ते (लोगुत्तमा के०) लोकमां उत्तम छे, चोथो (केवली के०) श्रीकेवलियें (पण्णत्तो के०) प्ररूप्यों जे (धम्मो के०) धर्म, ते (लोगुत्तमो के०) लोकमां उत्तम छे ॥ १५ ॥ (चत्तारि के०)

चारना (सरणं के०) शरण प्रत्यें (पवज्जामि के०) हुं पडिवजुं बुं, अंगी कार करुं बुं. एक तो (अरिहंते सरणं के०) श्रीअरिहंत शरण प्रत्यें हुं (पवज्जामि के०) अंगीकार करुं बुं. बीजुं (सिद्धेसरणं के०) श्रीसिद्ध शरण प्रत्यें हुं (पवज्जामि के०) अंगीकार करुं बुं, त्रीजुं (साहु सरणं के०) साधुशरण प्रत्यें हुं (पवज्जामि के०) अंगीकार करुं बुं. चोथुं (केवलि के०) श्रीकेवलीयें (पसत्तं के०) प्ररूप्यो नाख्यो एवो जे (धम्मं के०) धर्म तेना (सरणं के०) शरण प्रत्यें हुं (पवज्जामि के०) अंगीकार करुं बुं ॥ १६ ॥ इति संथारापोरिसि अर्थ समाप्त ॥

॥ पढी नवसग्गहरं० ॥ नमोत्थुणं० ॥ कही, इच्छामि खमासमणपूर्वक इच्छाकारेण संदिसह नगवन् ! अर्थपोरिसी करुं जी, एम कही एक काव्य कही पढो इच्छामि खमासमणपूर्वक इच्छकारसुहराइ कही, इच्छाकारेण संदिसह नगवन् ! किं कायव्वं? सिज्झाय पाठनणियव्वं ? गणियव्वं नोपमाएयव्वं ॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ इति श्रीपोरिसिविधि समाप्त ॥

॥ पढी चार पहोरना चारे दिशियें एटले प्रत्येक पहोर आश्रयि अनुक्रमें पूर्वदिशिथी मांमीने बार बार लोगस्सना काउस्सग्ग करवा. प्रमाद न करवो, रात्री आखी धर्मध्यानमां काढवी. पढी प्रनातनुं पडिक्कमणुं करी सामायिक पारवाने ठेकाणे पोसह पारवा त्रण नवकार गणुं जी. एम कहि त्रण नवकार गणी इच्छाकारेण संदिसह नगवन् ! पोसह पारवा-गाथा नणुं जी. एम कही नीचें लख्या प्रमाणे गाथा कहियें ते लखें बे.

॥ अथ पोसह पारवानी गाथा ॥

सागरचंदो कामो, चंदवमिंसो सुदंसणो धन्नो ॥
जेसिं पोसह पडिमा, अखंमिआ जीवियंतेवि ॥१॥

अर्थः–(जीवियंतेवि के०) जीवितना अंत थाते थके पण एटले आयुनो विनाश थाते थके पण, (जेसिं के०) जेहनी (पोसहपडिमा के०) पौषधप्रतिमा, (अखंमिआ के०) अखंमित रही, संपूर्ण रही, ते श्रावक (धन्नो के०) धन्य बे, ते श्रावकोनां नाम कहे बे. (सागरचंदो के०) एक सागरचंद कुमार, बीजो (कामो के०) कामजी, त्रीजो (चंदवमिंसो

के०) चंडावतंस राजा, चोथो (सुदंसणो के०) सुदर्शन शेठ ॥ १ ॥

धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा आणंद कामदेवा य ॥
जेसिं पसंसइ भयवं, दढव्वयं तं महावीरो ॥ २ ॥

अर्थः–एक (सुलसा के०) सुलसा श्राविका, बीजा (आणंद के०) आनंद श्रावक (य के०) वली त्रीजा (कामदेवा के०) कामदेव श्रावक, ए त्रणे (धन्ना के०) धन्य छे, (सलाहणिज्जा के०) श्लाघनीय छे, एटले श्लाघा करवा योग्य छे. (जेसिं के०) जेहना (तं के०) ते प्रसिद्ध एवा पोसह संबंधि (दढव्वयं के०) दृढव्रत प्रत्यें (भयवं के०) भगवान् (महावीरो के०) श्रीमहावीर स्वामी, पोतें श्रीमुखें (पसंसइ के०) प्रशंसे छे, वखाण करे छे, माटे ते धन्य कृतपुण्य जाणवा ॥ २ ॥

पोसह सामाइय सं,ठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥
सो सफलो बोधव्वो, सेसो संसारफलहेउ ॥ ३ ॥

अर्थः–(पोसह के०) पूर्वोक्त पौषध तथा (सामाइय के०) सामायिक तेने विषे (संठियस्स के०) संस्थितस्य एटले रह्यो एवो जे (जीवस्स के०) जीवतेनो (जो के०) जे (कालो के०) काल (जाइ के०) जाय छे. (सो के०) ते काल (सफलो के०) सफल (बोधव्वो के०) जाणवो. अने जेकाल पोसहमां अथवा सामायिकमां जतो नथी, एवो (सेसो के०) शेषकाल जे छे ते (संसारफलहेउ के०) संसार संबंधि जे फल तेनो (हेउ के०) हेतु एटले कारणरूप जाणवो ॥ ३ ॥

एरीते ए त्रण गाथा कहीने पछी जंजंमणेणबद्धं, जंजं वायाइं भासियं पावं ॥ इत्यादिक सामायिक पारवानी जेटली गाथादिक छे ते सर्वे कहेवी, पण तिहां एटलो विशेष जे सामायिकव्रत विधें लीधुं, विधें कीधुं इत्यादिक पाठने स्थानके पोसहव्रत विधें लीधुं, विधें कीधुं इत्यादि पाठ कहेवो.

पोसह मांहे सचित्तनो संघट्टो भजेइ संघट्टो थाय तो इरियावहियं० तस्सुत्तरी कही एक लोगस्सनो काउसग्ग करी पारीने प्रगट लोगस्स कही गमणागमण आलोववुं, अने संघट्ट न थाय तो न आलोववुं. इति पोसह विधि समाप्त

हवे पाखी चउमासी अने सांवत्सरी पडिक्कमण पूर्ण थया पछी श्रावि काउ मली पखी खामणा कहे छे तेनो पाठ लखीयें छैयें.

॥ अथ पखीखामणा प्रारंभ ॥

॥ अरिहंतजीने खमावीयें रे, जेहना गुण छे बार ॥ खमो भवि खाम णां रे ॥ सिद्ध जीवने खमावियें रे, गुण आठेएं मनोहार ॥ खमो भवि० ॥ १ ॥ आचारजने खमावियें रे, जेहना गुण छत्रीश ॥ खमो भवि० ॥ उ पाध्यायने खमावीयें रे, जेहना गुण पचवीश ॥ खमो भवि० ॥ २ ॥ साधु सरव खमावियें रे, शोभे गुण सत्तावीश ॥ खमो भवि० ॥ श्रावक श्रावि कानें खमावीयें रे, जेहना गुण एकवीश ॥ खमो भवि० ॥ ३ ॥ आठम पां खी खमावीयें रे, चोमासुं त्रण वार ॥ खमो भवि० ॥ संवत्सरी शुद्ध खामी यें रे, खमावीयें वारं वार ॥ खमो भवि० ॥ ४ ॥ रूडो संघ मनावियें रे ॥ मनावियें वारं वार ॥ खमो भवि० ॥ मुक्तिसागर सूरि खमावीयें रे, अंचलगछ सिणगार ॥ खमो भवि० ॥ ५ ॥ चोमासि गुरुने खमावियें रे, वांचे सूत्र सिद्धांत ॥ खमो भवि० ॥ ६ ॥ इति खामणा ॥

हवे पोसहमां काजा पडिलेहण करवा पछी तथा पडिक्कमणमां पण जेम "धम्मोमंगलमुक्किठं तथा अरिहंता मंगलं मुज्झ" ए बे सज्झाउ कहे वा माटे आ पुस्तकमां दाखल करेली छे, तेम बीजी पण अनेक प्रकारनी सज्झाउ कहेवाय छे ते मांहेली केटलीएक सज्झायो आमां दाखल करीयें छैयें तेमां पण प्रथम भरहेसर बाहुबलिनी सज्झायमां तो सर्व व्रतमां शिरो मणि एवा ब्रह्मचर्य व्रतना धारक सत्तासतिउने वंदन कर्युं छे माटे ते अर्थ सहित छापीये छैयें. शेष सज्झाउ अर्थ विनाज मूल पाठें दाखल करीशुं.

॥ अथ भरहेसर बाहुबलिनी सज्झाय प्रारंभ ॥

भरहेसर बाहुबलि, अभय कुमारो अ ढंढणाकुमारो ॥
सिरिउ अणियाउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो य ॥ १ ॥

अर्थः—एक (भरहेसर के०) श्रीभरतेश्वर, प्रथम चक्रवर्त्ती श्रीऋषभदेव ना पुत्र, बीजा (बाहुबलि के०) बाहुबली ते पण श्रीऋषभदेवना पुत्र, भरतेश्वर करतां पण अधिक बलवंत जाणवा, त्रीजा (अभयकुमारो के०) अभयकुमार, ते श्रेणिकराजाना पुत्र, (च के०) वली चोथा (ढंढणकुमारो

के०) ढंढणकुमार, ते श्रीकृष्णजीना पुत्र, पांचमा (सिरिउ के०) श्रीक, ते श्रीथूलिजद्रजीना न्हाना जाइ, ठठा (अणियाउत्तो के०) अनिकापुत्र आचार्य, जे गंगा नदी उतरतां केवलज्ञान पाम्या, सातमा (अइमुत्तो के०) अतिमुक्त कुमार, जेणें ब वर्षनी अवस्थामां श्रीवीरपासेंथी दीक्षा लीधी, (च के०) वली आठमा (नागदत्तो के०) नागदत्त नामक श्रेष्ठीपुत्र, ते अदत्तादानना त्यागी जाणवा ॥ १ ॥

मेअज्ज थूलिजद्दो, वयररिसी नंदिसेण सीहगिरी ॥
कयवन्नो अ सुकोसल,पुंमरिउ केसि करकंमु ॥ २ ॥

अर्थः—नवमा (मेअज्ज के०) मेतार्यमुनि, जेने माथे सुवर्णकारें आलां चांबडां वींटयां, दशमा (थूलिजद्दो के०) श्रीथूलिजद्रमुनि, जेणें कोश्या वेश्याने घरे चोमासुं कीधुं, अने अखंम शील राख्युं, तथा वेश्याने श्राविका कीधी, अगीआरमा (वयररिसी के०) वज्रऋषि एटले वज्रस्वामी, बारमा (नंदिसेण के०) नंदिषेणजी, जेणें वेश्याने घरे रहीने बार वर्ष पर्यंत प्रतिदिवस दश दश जण प्रतिबोध्या, तेरमा (सीहगिरी के०) श्रीसिंहगिरिजी महाराज ते श्रीवज्रस्वामीना गुरु, चौदमा (कयवन्नो के०) कृतवर्णकुमार श्रेष्ठिपुत्र, (च के०) वली पंदरमा (सुकोसल के०) सुकोशलमुनि, जेमनुं शरीर वाघणीयें जक्षण कीधुं, शोलमा (पुंमरिउ के०) श्रीपुंमरिकजी, श्रीप्रथम तीर्थंकरना प्रथम गणधर, वली जे चैत्री पूनमना दिवसें पांच कोडी मुनिउनी संघातें सिद्धगिरिनी उपर सिद्धनगरीमां पहोता, सत्तरमा (केशी के०) केशीकुमार, ते परदेशी राजाना गुरु,अढारमा (करकंमु के०) करकंमु प्रत्येकबुद्ध मुनि,जे जर्जरीजूत वृषन प्रत्यें जोइने साधु थया॥२॥

हल्ल विहल्ल सुदंसण, साल महासाल सालिजद्दो
अ॥ जद्दो दसन्नजद्दो, पसन्नचंदो अ जसजद्दो॥३॥

अर्थः— उगणीशमा (हल्ल के०) हल्यकुमार, वीशमा (विहल्ल के०) विहल्यकुमार, ए बेहु पण श्रेणिकराजाना पुत्र जाणवा. एकवीशमा (सुदंसण के०) सुदर्शन शेठ, जेना शीलने प्रजावें शूलिमांथी सिंहासन थयुं, बावीशमा (साल के०) साल मुनि, त्रेवीशमा (महासाल के०) महासाल मु

नि ए बे श्रीगौतमस्वामीजीये प्रतिबोध्या, चोवीशमा (सालिजद्दोत्र के०) शालिजद्र प्रसिद्धजोगी, श्रेष्ठिपुत्र, पच्चीशमा (जद्दो के०) जद्रबाहु स्वामी, चतुर्दश पूर्वना जाण, छवीशमा (दसन्नजद्दो के०) दशार्णजद्र, ते रिद्धिगार वें, जे श्रीवीरने वांदवा आव्या, त्यां संयम लीधो, सत्तावीशमा (पसन्नचंदो अ के०) प्रसन्नचंद्र राजर्षि, जेणें रौद्रध्यानथी सातमी नरकनां दलीयां मेलव्यां तेने शुक्लध्यानथी विखेरीने केवलज्ञान प्रगट कीधुं, अठावीशमा (जसजद्दो के०) श्रीयशोजद्रसूरि, ते श्रीजद्रबाहुस्वामीना गुरु जाणवा ॥३॥

जंबुपहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ॥
धन्नो इलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी ॥ ४ ॥

अर्थः— उंगणत्रीशमा (जंबुपहु के०) जंबुप्रजुस्वामी, जे अष्टवधू अने नवाणुं क्रोड द्रव्य त्यागीने चरम केवली थया, त्रीशमा (वंकचूलो के०) वंकचूलराजकुमार, जे कर्मना वशथकी चोरना स्वामी थया, पठी साधुयें दीधेलां व्रत पालीने देवलोकें गया, एकत्रीशमा (गयसुकुमालो के०) गजसुकुमार, श्रीकृष्णजीना न्हाना जाई, सोमलनो करेलो अग्निनो उपसर्ग सहन करीने जे दीक्षाने दिवसेंज मोक्षें गया, बत्रीशमा (अवंतिसुकुमालो के०) अवंतिसुकुमार, जेनुं शीयालिणीयें शरीर जक्षण कीधुं, तो पण चारित्र धर्मथी न चल्या, जे नलिणी गुल्मविमानें पोहोता, तेत्रीशमा (धन्नो के०) धन्नो, ते शालिजद्रनो बनेवी, चोत्रीशमा (इलाइपुत्तो के०) एलाचीपुत्र, जे नाटक करतां थकां केवलज्ञान पाम्या, पांत्रीशमा (चिलाइपुत्तो के०) चिलातिपुत्र, जेनुं शरीर, कीडीयोएं चालणीप्राय कीधुं, तोपण उपशम, विवेक अने संवरना अर्थविचारथकी न चूक्या, जे अतिशय ज्ञान पामी स्वर्गगामी थया, (च के०) वली छत्रीशमा (बाहुमुणी के०) युगबाहु मुनी॥४॥

अज्जगिरि अज्जरक्खिअ, अज्जसुहत्थी उदायगो मण
गो ॥ कालयसूरी संबो, पज्जुन्नो मूलदेवो अ ॥ ५ ॥

अर्थः— साडत्रीशमा (अज्जगिरि के०) आर्यमहागिरिजी, श्रीथूलिजद्र स्वामिना शिष्य, आडत्रीशमा (अज्जरक्खिअ के०) आर्यरक्षित महाराजा, उंगणचालीशमा (अज्जसुहत्थी के०) आर्यसुहस्ती सूरि, थूलिजद्रजी जेना

गुरु हता, चालीशमा (उदायगो के०) उदायिराजा, ते श्रीनगवतीसूत्रे प्रसिद्ध छे, एकतालीशमा (मणगो के०) मनकपुत्र, जेने अर्थे श्रीदशवैकालिक सूत्र नीपन्युं, बेंतालीशमा (कालयसूरि के०) श्रीकालिकाचार्य श्रीपन्नवणासूत्रना कर्त्ता, निगोदस्वरूपना वक्ता, त्रेंतालीशमा (संबो के०) सांब कुमार, अंबवतीना पुत्र, चुम्मालीशमा (पज्जुन्नो के०) प्रद्युम्न कुमार, रुक्मिणीना पुत्र, पीस्तालीशमा (मूलदेवोअ के०) मूलदेवराजा, जेणें तपस्वी साधुने निर्दोष अडद दीधा ॥ ५ ॥

पन्नवो विन्हुकुमारो, अद्दकुमारो दढप्पहारी अ ॥
सिज्जंस कूरगडूअ, सिज्जंनव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥

अर्थः—छेंतालीशमा (पन्नवो के०) प्रनवस्वामीजी, जेने श्रीजंबुस्वामीयें प्रतिबोध्या, सुडतालीशमा (विन्हुमारो के०) विष्णुकुमार, जेणें श्रीसंघने कारणें लाख योजननुं रूप वकूर्व्युं. अडतालीशमा (अद्दकुमारो के०) आर्डकुमार, जे पूर्वनवें संयम विराधवाथकी अनार्यदेशमां उपन्या, अने अनयकुमारें मोकलेली जिनप्रतिमा देखीने जेने पूर्वनव सांनस्यो, साधु थया, उंगणपच्चाशमा (दढप्पहारी के०) दृढप्रहारी चोर, चार हत्याना करनार, मुनि थइने मोक्षें गया, (च के०) वली पच्चाशमा (सिद्यंस के०) श्रेयांसकुमार, जेणें श्रीरुषनदेवप्रत्यें इक्षुरसनुं दान दीधुं. एकावनमा (कूरगडुअके०) कूरगडु साधु, जेणें गुरुनुं कुत जे थूंक तेसहित खीचिडी खातां केवलज्ञान उपार्ज्युं. बावनमा (सिद्यंनव के०) सिद्यंनव आचार्य, जेणें पूर्वश्रुतथकी श्रीदशवैकालिक सूत्र उद्धर्युं, त्रेपनमा (मेहकुमारोअ के०) मेघकुमार श्रेणिकराजाना पुत्र,जेने श्रीवीरप्रनुजीयें हाथीनो पूर्वजो नव संनलावीने संयममां स्थिर कीधो ॥ ६ ॥

एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता ॥
जेसिं नामग्गहणे, पावपबंधा विलय जंति ॥ ७ ॥

अर्थः—(एमाइ के०) इत्यादिक बीजा पण खंधकुमार, खंदकमुनि, कपिलमुनि, हरिकेशी मुनि, संयतमुनि, दमदंतमुनीश्वर, दमसारमुनीश्वर प्रमुख (महासत्ता के०) महासत्त्वना धरनारा एटले महोटा पराक्रमी, के

टलाएक ते नवेंज मोक्षें गया, केटलाएक आगल मोक्षें जाशे, ते सर्वे मु
क्ष नणी (सुहं के०) शिवसुखप्रत्यें (दिंतु के०) द्यो, आपो. ते महा
सत्त्वा केहेवा छे ? तो के (गुणगणेहिं के०) ज्ञानादिक गुणोना गणे
करी एटले समूहें करीनें (संजुत्ता के०) संयुक्त छे. वली केहेवा छे ? तो
के (जेसिं के०) जेना (नामग्गहणे के०) नामग्रहण करवाथकी (पा
वपबंधा के०) पापना प्रबंध एटले समूह जे छे, ते (विलय के०) वि
नाश प्रत्यें (जंति के०) पामे छे, एवा छे ॥ ७ ॥

सुलसा चंदनबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती ॥
नमयासुंदरि सीया, नंदा नद्दा सुनद्दा य ॥ ८ ॥

अर्थः—एक (सुलसा के०) सुलसा श्री वीरस्वामीनी मुख्य श्राविका, बीजी (चंदनबाला के०) चंदनबालिका श्रीवीरस्वामीनी प्रथम साध्वी, त्रीजी (मणोरमा के०) मनोरमा सुदर्शनशेठनी नार्या, चोथी (मयण रेहा के०) मदनरेखा, नमिराजर्षिनी माता, पांचमी (दमयंती के०) दमयंती नलराजानी राणी, जेनुं मस्तक दीवानी पेरें प्रकाशकारि थातुं हतुं, छही (नमयासुंदरि के०) नर्मदासुंदरी, सातमी (सीया के०) सीता सती, आठमी (नंदा के०) नंदा ते अनयकुमारनी माता, तथा नवमी वज्रस्वामीनी माता पण नंदा जाणवी, दशमी (नद्दा के०) नद्रा शेठाणी, शालिनद्रनी माता, (च के०) वली अगीआरमी अवंतिसुकुमारनी माता पण नद्रा जाणवी, बारमी (सुनद्दा के०) सुनद्रा जेणें काचे तांतणे चांरणी बांधी, कूवामांथी जल काढी चंपानगरीनी पोल उघाडी, तथा तेरमी श्री कृष्णजीनी उरमान नगिनी, तेनुं नाम पण सुनद्राज जाणवुं ॥ ८ ॥

रायमई रिसिदत्ता, पउमावइ अंजणा सिरी देवी ॥
जिठ सुजिठ मिगावइ, पनावई चिल्लणा देवी ॥९॥

अर्थः—चौदमी (रायमई के०) राजिमती जेणे गिरिगुफामांहे संयम थकी पडता एवा रथनेमि प्रत्यें सुनाषित वचनें स्थिर कीधो, पंदरमी (रिसिदत्ता के०) ऋषिदत्ता सती, शोलमी (पउमावइ के०) पद्मावती करकंडुजीनी माता, सत्तरमी (अंजणा के०) अंजना सुंदरी, हनुमंत वीरनी माता,

अढारमी (सिरीदेवी के०) श्रीदेवी, अतिमुक्तकुमारनी माता, उंगणीशमी (जिठ के०) ज्येष्ठा, वीशमी (सुजिठ के०) सुज्येष्ठा, एकवीशमी (मिगा वई के०) मृगावती, बावीशमी (पजावई के०) प्रजावती, त्रेवीशमी (चिल्ल णादेवी के०) चेलणा राणी, ए पांचे चेडा राजानी पुत्रीयो जाणवी ॥९॥

बंजी सुंदरि रुप्पिणि, रेवइ कुंती सिवा जयंती य ॥
देवइ दोवइ धारणि, कलावई पुप्फचूला य ॥१०॥

अर्थः—चोवीशमी (बंजी के०) ब्राह्मी, जरतनी जगिनी, पच्चीशमी (सुंदरि के०) सुंदरी, ते बाहुबलनी जगिनी, छवीशमी (रुप्पिणि के०) रुक्मिणी, जेणें वज्रस्वामीनी पासें कुमारिका पणे दीक्षा लीधी, सत्तावी शमी (रेवइ के०) रेवती श्राविका, जेणें जगवानने कोलापाक वोहोराव्यो, अठावीशमी (कुंती के०) कुंती, पांमवोनी माता, उंगणत्रीशमी (सिवा के०) शिवा, ते चेडा राजानी पुत्री, त्रीशमी (जयंती य के०) जयंती, श्रीवीरस्वामीनी श्राविका, "जंते किं सवे जवा सिज्झंति?" इत्यादिक प्रश्न नी करवावाली, एकत्रीशमी (देवइ के०) देवकी, श्रीकृष्णजीनी माता, बत्रीशमी (दोवइ के०) डौपदी, पांमवजार्या, तेत्रीशमी (धारणि के०) धारणी, ते चंदनबालानी माता, चोत्रीशमी मेघकुमारनी माता पण धा रिणी नामें जाणवी. पांत्रीशमी जंबुकुमारनी माता पण धारिणी जाणवी. छत्रीशमी (कलावई के०) कलावती, शीलने प्रजावें जेना कापेला हाथ वली नवपल्लव थया. (च के०) वली साडत्रीशमी (पुप्फचूला के०) पुष्पचूलानामा साधवी, अनिकापुत्र आचार्यनी जक्तिना उल्लासथी जेणें केवलज्ञान पाम्युं, जेणे वर्षाद वरसते आहार आणी आप्यो ॥ १० ॥

पउमावई य गोरी, गंधारी लखमणा सुसीमा य ॥
जंबुवइ सच्चजामा, रुप्पिणि कन्हठमहिसीउ ॥११॥

अर्थः—आडत्रीशमी (पउमावइ के०) पद्मावती, उंगणचालीशमी (गोरी के०) गौरी, चालीशमी (गंधारी के०) गांधारी,एकतालीशमी (लखमणा के०) लक्ष्मणा,बेतालीशमी (सुसीमा के०) सुसीमा,(च के०) वली त्रेंतालीशमी(जं बुवइ के०) जांबुवती, चुमालीशमी (सच्चजामा के०) सत्यजामा, पीस्ताली

शमी (रुप्पिणि के०) रुक्मिणी, ए (कन्हह के०) श्रीकृष्णनी आठ, (महिसीउ के०) अग्रमहिषीउ बे,एटले पटराणीउ बे. अहिं चकार पादपूरणार्थे बे॥ ११॥

जरका य जरकदिन्ना, नूआ तह चेव नूअदिन्ना य ॥
सेणा वेणा रेणा, नयणीउ थूलिनदस्स ॥ १२ ॥

अर्थः—बेंतालीशमी (जरका के०) यक्षा, (च के०) वली सुडतालीशमी (जरकदिन्ना के०) यक्षदिन्ना, अडतालीशमी (नूआ के०) नूता, (तह के०) तथा (चेव के०) वली निश्चें, उगणपच्चाशमी (नूअदिन्ना के०) नूतदिन्ना, (च के०) वली पच्चाशमी (सेणा के०) सेना, एकावन्नमी (वेणा के०) वेणा, बावन्नमी (रेणा के०) रेणा, ए सात (नयणीउ के०) नगिनीउ, (थूलिनदस्स के०) श्रीस्थूलिनद्रजीनी जाणवी ॥ १२ ॥

- इच्चाइ महासइउ, जयंति अकलंकसीलकलिआउ ॥
अज्जवि वज्जइ जासिं, जसपडहो तिहुअणे सयले ॥१३॥

अर्थः—(इच्चाइ के०) इत्यादिक बीजी पण कमलावती, लीलावती, मानवती, मृगांकलेखा, चंडलेखा, मयणासुंदरी, कौशल्या प्रमुख (महासइउ के०) जे महोटी सतीयो ते सर्वे, (जयंति के०) जयवंती बे, एटले सर्व स्त्रीउमां प्रधान थाती हवी. केहवी थाती हवी ? तो के (अकलंक सीलकलिआउ के०) निर्मल शील गुणें करीने सहित होती हवी, वली (जासिं के०) जेनो (जसपडहो के०) जशनो ढोल, (तिहुअणेसयले के०) सकल त्रिन्नुवननेविषे (अज्जवि के०) आज पण (वज्जइ के०) वाजें बे ॥ १३ ॥ इति सत्ता सतीउनी सज्झाय अर्थसहित संपूर्ण ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय स्वाध्यायः ॥

॥ धण मिहुण सुर महब्बल, ललियंगो वयरजंघ मिहुणे य ॥ सोहम्म विमु अच्चुअ, चक्की सव्वठ उसन्ने अ ॥ १ ॥ धण सञ्चवाह घोसण, जइ गमणं अडविवास ठाणं च ॥ बहवो लीणे वासे, चिंताघयदाणमासितया ॥२॥ उत्तरकुरु सोहम्मे, महाविदेहे अ महब्बलो राया ॥ ईसाणे ललियंगो, महाविदेहे वयरजंघो ॥ ३ ॥ उत्तर कुरु सोहम्मे, विदेहितिगिच्छियस्स तत्र सुउ ॥ रायसुयसिद्धिमुच्चा, सञ्चाहसुयावयंसासे ॥ ४ ॥ विद्यसुयस्सय गेहे, कि

मिकुहो वम्मुयं यर्य दहुं ॥ बिंतिय तेविज्जासुद्दं, करेहि एयस्स तेगिष्ठं ॥५॥ ति
ह्वं तिगिष्ठिसुउं, कंबलगं चंदणं च वाणियउं ॥ दाउं अन्निनिरकंतो, तेणेव न
वेण अंतगडो ॥ ६ ॥ साहुं तिगिष्ठिकणं, सामन्नं देवलोग गमणं च ॥ पुंम
रिगिणिए चूया, तउ सुयावयरसेणस्स ॥ ७ ॥ पढमित्र. वयरनाहो, बाहु
सुबाहुअ पीढ महापीढे ॥ तेसिंपि या तिञ्चयरो, निरकंतो तेवि तञ्चेव ॥८॥
पढमो चउदसपुव्वी, सेसा इक्कारसंगवी चउरो ॥ बीउ वेयावच्चं, किइ कम्मंत
इअउ कासी ॥ ए ॥ नोगफलं बाहुबलं, पसंसणा जिठ इअर अचिअत्तं ॥
पढमो तिञ्चयरत्तं, वीसइ ठाणेहिं कासीय ॥ १० ॥ अरिहंत सिद्ध पवय
ण, गुरु थेर बहुसुए तवस्सेसु ॥ वञ्चल्लयाय एसिं, अनिरकनाणोवउंगेअ
॥११॥ दंसण विणए आव, स्सइं सीलवए नरवईयारो ॥ खण लव तवच्चि
आए, वेआवच्चे समाही य ॥ १२ ॥ अपुव्वनाणग्गहणे, सुयनत्ति पवयण
प्पन्नावणया ॥ एएहिं कारणेहिं, तिञ्चयरत्तं लहइ जीवो ॥१३॥ इति ॥२॥

॥ अथ तृतीय पारणक वृद्ध स्वाध्याय प्रारंभ ॥

॥ संवञ्चरेण निरका, लद्धा उसनेण लोगनाहेण ॥ सेसेहिं बीय दिव
से, लद्धाउ पढमनिरकाउ ॥ १ ॥ उसनस्स उ पारणए, इरकुरसो आसि
लोगनाहस्स ॥ सेसाणं परमन्नं, अमिअरस रसोवमं आसी ॥ २ ॥ घुटुं च
अहो दाणं, दिव्वाणि य आहयाणि तूराणि ॥ दिव्वाय सन्निवइया, वसुहारा
चेव वुठा य ॥ ३ ॥ गयपुर सिज्जंस इरकुरस,दाण वसुहार पीढ गुरुपूआ ॥
तिरकसिलाए गमणं, बाहुबलिनिवेयणं चेव ॥ ४ ॥ हञ्चिणपुरं अउज्झा,
सावञ्ची तहय चेव साकेयं ॥ विजयपुर बंनबलयं, पामलिसंमं पउमसंमं
॥ ५ ॥ सिंहपुरं रिठपुरं, सिद्धञ्चपुरं महापुरं चेव ॥ धन्नकड वद्धमाणं,
सोमणसं मंदिरं चेव ॥ ६ ॥ चक्कपुरं रायपुरं, मिहिलारायगिहिमेव बोधव्वं ॥
वीरपुरं बारवई, कोयगडं कुल्लगयगामो ॥ ७ ॥ एएसु पढम निरका, लद्धा
उ जिणवरेहिं सव्वेहिं ॥ दिन्नाउ जेहि पढमं, तेसिं नामाणि वुञ्चामि ॥ ८ ॥
सिज्जंस बंनदत्ते, सुरिंददत्ते य इंददत्ते य ॥ पउमे य सोमदेवे,महिंद तह सोम
दत्ते य ॥ए॥ पुस्से पुणव्वसू पुण, नंद सुनंदे जए य विजए य ॥ तत्तो य ध
म्मसीहे, सुमित्त तह वग्घसीहे य ॥ १० ॥ अपराजिय विस सेणे, वीस

इमे होइ वंजदत्ते य ॥ दिन्ने वरदिन्ने पुण, धन्ने बहुलेय बोधव्वे ॥ ११ ॥ एए कयंजलिउमा, जत्तीबहुमाण सुक्क लेसागा ॥ तक्काल पहठमणा, पडिलाजेसु जिणवरिंदे ॥ १२ ॥ सवेहिंपि जिणेहिं, जहियं लध्धाउ पढम निरकाउ ॥ तहियं वसुहाराउ, वुठाउ पुप्फवुठीउ ॥ १३ ॥ अध्दत्तेरस कोडी उक्कोसा तब हवेइ वसुहारा ॥ अध्दत्तेरसलरका, जहन्निआ होइ वसुहारा ॥१४॥ सव्वेसिंपि जिणाणं,जेहिं दिन्नाउ पढम निरकाउ ॥ तेपयणुपिज्जदोसा, दिव्ववरपरक्कमा जाया ॥१५॥ केइ तेणेव जवेण, निव्वुया सवकम्म विमुक्काय ॥ केइ तइय जवेण, सिझिस्संति जिणसगासे ॥१६॥ कह्नंसविट्ठीए, पूएमह दठू धम्मचक्कं तु ॥ विहरइ सहस्समेगं,ठउमत्थो जारहे वासे ॥१७॥ बहली अमंबइल्ला, जोयणगविसउ सुवन्न जूमीय ॥ आहिंमिया जगवया, उसजेण तवं चरंतेण ॥१८॥ बहलीजोयणगा प, ल्लगा य जे जगवया समणुसिध्दा ॥ अन्नेवि मिछिजाई, ते तइया जद्दगा जाया ॥ १९ ॥ तिब्बयराणं पढमो, उसजसिरि विहरिउ निरुवसग्गं ॥ अठावउ नगवरो,अग्गा जूमी जिणवरस्स ॥२०॥ ठउमत्थोपरियाउ, वाससहस्सं तउ पुरिमताले ॥ नग्गोहस्सय हिठा, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ २१ ॥ फग्गुणबहुलिक्कारसी, अह अठमेण जत्तेण ॥ उप्पन्नं मिअणंते,महव्वया पंच पन्नवए ॥२२॥ उप्पन्नं मिअणंते,नाणे जर मरण विप्पमुक्कस्स ॥ तो देवदाणविंदा,करंति महिमं जिणंदस्स ॥२३॥ इति ॥३॥

॥ अथ चतुर्थ पारणकलघु स्वाध्याय प्रारंज ॥

॥ सारस्सयमाइच्चा, वन्ही वरुणाय गद्दतोयाय ॥ तुसिया अव्वाबाहा, अग्गिच्चा चेव रिठाय ॥ १ ॥ एए देव निकाया, जवयं बोहंतु जिणवरं दिंतु ॥ सव जगजीवहिययं, जयवं तिब्बं पवत्तेहि ॥ २ ॥ संवछरेण होही, अजिनिरकमणं तु जिण वरिंदाणं ॥ तोअब संपयाणं, पवत्तए पुव्वसूरम्मि ॥ ३ ॥ एगा हिरन्नकोडी, अठेव अणूणगा सयसहस्सा ॥ सूरोदय माईयं, दिज्जइ जा पायरासीउ ॥ ४ ॥ सिंघाडग तिग चउक्क, चच्चर चउमुह महा पहप्पहेसु ॥ दारेसु पुरवराणं, रबामुहमज्झयारेसु ॥ ५ ॥ वरवरिया घोसिज्जइ, किमिछियं दिज्जए बहुविहियं ॥ सुर असुर देव दाणव, नरिंद महियाण निरकमणे ॥ ६ ॥ तिन्नेवय कोडिसया, अठासीयं च हवंति कोडीउ ॥ असिअं चसयसहस्सा, एयं संवछरे दिन्नं ॥७॥ इति चतुर्थ स्वाध्यायः ॥४॥

॥ अथ पंचम निर्युक्तिस्वाध्याय प्रारंन ॥

॥ ते वंदिऊण शिरसा, अबपुहत्तस्स तेहिं कहियस्स ॥ सुअनाणस्स न गवउ, निज्जुत्तिं कित्तइस्सामि ॥ १ ॥ आवस्सगस्स दसका, लिअस्स तह उ त्तरझमायारे ॥ सूयगडे निज्जुत्तिं, वुछामि तहा दसाणं च ॥ २ ॥ कप्प स्सय निज्जुत्तिं, ववहारस्सेव परमनिउणस्स ॥ सूरियपन्नत्तीए, वुछं इसि नासियाणं च ॥३॥ एएसिं निज्जुत्तिं, वुछामि अहं जिणोवएसेणं ॥ आह रण हेउकारण, पयनिवहमिणं समासेणं ॥ ४ ॥ सामाइअ निज्जुत्तिं वुछं उवएसियं गुरुजणेणं ॥ आयरियपरंपरएण आगयं आणुपुवीए ॥ ५ ॥ नि ज्जुत्ता जे अबा, जं बक्षा तेण होइ निज्जुत्ती ॥ तहविअ अंगावेइ, विनासिउं सुत्तपरिवाडी ॥ ६ ॥ तव नियमनाणरुरकं, आरूढो केवली अमियनाणी ॥ तो मुअइनाणवुट्ठिं, नविय जण विबोहणघाय ॥ ७ ॥ तं बुद्धिमएण पड एण, गणहरा गिन्हिउं निरवसेसं ॥ तिज्ञयर नासियाइं, गंथंति तउ पवय णघा ॥ ८ ॥ गित्तं च सुअं असुहं, गणण धारणा दाउं पुछिअं चेव ॥ ए एहिं कारणेहिं, जीयंति कयं गणहरेहिं ॥ ९ ॥ अबं नासइ अरहा, सुत्तं गबंति गणहरा निउणं ॥ सासणस्स हिअघाए, तउ सुत्तं पवत्तई ॥ १० ॥

॥ अथ षष्ठ निर्युक्तिस्वाध्याय प्रारंन ॥

॥ सामाइअ माईयं, सुअनाणं जावबिंदु साराउ ॥ तस्सवि सारो चरणं, सारो चरणस्स निवाणं ॥ १ ॥ सुअनाणंमिवि जीवो, वट्टंतो सो न पाउणइ मुरकं ॥ जो तव संजम मईए, जोए न चएइ वोढुं जे ॥ २ ॥ जहबे अल द्धनिघा, मउवि वाणियगो इछियं नूमिं ॥ वाएण विणा पोउ, न चएइ मह न्नवं तरिउं ॥३॥ तह नाण लद्ध निघा, मउ वि सिद्धि वसहिं न पाउणइ ॥ निउणो वि जीव पोउ, तव संजममारुअविहूणो ॥ ४ ॥ संसारसागराउ, उब्बुड्डो मा पुणो निबुड्डिघा ॥ चरणगुणविप्पहीणो, बुड्ड इ सुबहुंपि जा णंतो ॥ ५ ॥ सुबहुंपि सुअमहियं, किं काहि चरण विप्पहीणस्स ॥ अंध स्स जह पलित्ता, दीवसय सहस्स कोडीवि ॥६॥ अप्पंपि य सुय महियं, पगासगं होइ चरणजुत्तस्स ॥ इक्कोवि जह प्पईवो, सचरकुअस्स य पगासेइ ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ जहा खरो चंदणनारवाही, नारस्स नागी नहु चंदण स्स ॥ एवं खु नाणी चरणेण हीणो, नाणस्स नागी नहु सुग्गईए ॥ ८ ॥ हयं नाणं कियाहीणं, हया अन्नाणउ किया ॥ पासंतो पंगुलो दड्ढो, धाव

माणोवि अंधर्ज ॥ ए ॥ संयोगसिद्धीइ फलं वयंति, नहु एगचक्केण रहो प याइ ॥ अंधो अ पंगूअ वणे समिच्चा, तेसिं पउत्ता नयरं पविठ्ठा ॥ १० ॥ नाणं पगासगं सो, हर्ज तवोसंयमोयगुत्ति करो ॥ तिएहंपि समार्जगो, मुरको जिणसासणे नणिर्ज ॥ ११ ॥ इति षष्ठ निर्युक्तिस्वाध्यायः समाप्तः ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम निर्युक्तिस्वाध्याय प्रारंनः ॥

॥ पुणरविय समोसरणे, पुच्छइ जिणंद चक्किणो नरहे ॥ आपुछो अ द सारो, तिच्छगरो को इहं नरहे ॥ १ ॥ जिणचक्किदसाराणं, वन्नपमाणाइना म गोत्ताई ॥ आउपुरमाइ पियरो, परियायगयं च साहीय ॥ २ ॥ जा रि सया लोगगुरु, नरहे वासंमि केवली तुम्ने ॥ एरिसया कइ अन्ने, ताया हो हिंति तिच्छयरा ॥ ३ ॥ अह नणइ जिण वरिंदो, नरहे वासंमि जारिसो अ अहं ॥ एरिसया तेवीसं, अन्ने होहिंति तिच्छयरा ॥ ४ ॥ होही अजिर्ज सं नव, अनिणंदण सुमइ सुप्पन सुपासो ॥ ससि पुप्फदंतसीअल; सिज्जंसो वासुपुज्जो अ ॥ ५ ॥ विमलमणंतय धम्मो, संतिं कुंथु अरोअ मल्लीअ ॥ मु णिसुव्वय नमि नेमि, पासो तह वद्धमाणो य ॥६॥ अह नणइ नरवरिंदो, नरहे वासंमि जारिसो अ अहं ॥ एरिसया कइ अन्ने, ताया होहिंति रा याणो ॥ ७ ॥ अह नणइ जिणवरिंदो, जारीसो तं नरिंदसद्दूलो ॥ एरिस या इक्कारस, अन्ने होहिंति रायाणो ॥ ८ ॥ होही सगरो मघवं,सणंकुमारो य रायसद्दूलो ॥ संती कुंथू अ अरो, हवइ सुनूमो अ कोरव्वो ॥ ए ॥ नवमो अ महापउमो,हरिसेणो चेव रायसद्दूलो ॥ जयनामा नरवइ, बारसमो बंन दत्तोय ॥ १० ॥ होहिंति वासुदेवा, नव अन्ने नीलपीय कोसिज्जा ॥ हलमु सल चक्क जोही, सताल गरुडझया दोदो ॥ ११ ॥ तिवद्दु अ दिवद्दु अ, स यंनु पुरिसुत्तमे पुरिससीहे ॥ तह पुरिस पुंमरीए, दत्ते नारायणे कएहे ॥ ॥ १२ ॥ अयले विजए नद्दे, सुप्पने य सुदंसणे ॥ आणंदे नंदणे पउमे, रामे आवीय पच्छिमे ॥ १३ ॥ अस्सग्गीवे तारएय, मेरए महुकीडने नि सुंनेय ॥ बलि पहलाए रावणे, नवमो अ जरासिंधु ॥ १४ ॥ एए खलुप डिसत्तु, कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं ॥ सव्वेवि चक्कजोही, सव्वेवि हया सच केहिं ॥ १५ ॥ पउमान वासुपुज्जा, रत्ता ससि पुप्फदंत ससिगोरा ॥ सुव्व यनेमी काला, पासो मल्ली पियंगान्ना ॥ १६ ॥ वर कणग तविय गोरा,सो

लस तिढंकरा मुणेयवा ॥ एसो वन्नविन्नागो, चउवीसा ए जिणवराणं ॥ १७ ॥ इति सप्तम निर्युक्तिस्वाध्यायः ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम निर्युक्तिस्वाध्याय प्रारंन ॥

॥ उसन्नो पंचधणुस्सय,नवपासो सत्तरयणिउ वीरो ॥ सेसह पंच अठय, पन्ना दस पंच परिहीणा ॥ १ ॥ पंचेव अद्ध पंचम, चत्तारद्धुठ तहतिगं चेव ॥ अढ्ढाइज्जाउन्निय, दिवढ्ढमेगं धणुसयं च ॥ २ ॥ नउई असिई सित्त रि, सठी पन्नास होइ नायवा ॥ पणयाल चत्त पणतिस, तीस पण वीस वीसा य ॥ ३ ॥ पनरस दस धणूणिय, नव पासो सत्त रयणिउ वीरो ॥ नामा पवत्ता खलु, तिढयराणं मुणेयवा ॥ ४ ॥ मुणिसुवय अरहा, अ रिठनेमी गोयमसगुत्ता ॥ सेसा तिढयरा खलु, कासवगुत्ता मुणेयवा ॥५॥ इकाग नूमि उज्झा, सावढी विणिय कोसलपुरं च ॥ कोसंबी वाणार सि, चंदापुरि तहय काकंदी ॥ ६ ॥ नद्दिलपुर सिंहपुरं, चंपा कंपिल्ल उज्झ रयणपुरं ॥ तिन्नेव गयपुरंमि, मिहिला तह चेव रायगिहं ॥ ७ ॥ मिहिला सोरियनयरिं, वाणारसी तहय होइ कुंमपुरं ॥ उसन्नाईण जिणाणं, जम्म णनूमी जहासंखं ॥ ८ ॥ मरुदेवा विजया सेणा,सिद्धत्था सुमंगला सुसीमा य ॥ पुहवी लरकण रामा,नंदा विण्हू जया सामा ॥९॥ सुजसा सुवय अइ रा, सिरि देवी तहय पन्नावई उत्ता ॥ पउमावईय वप्पा, सिवा वामा य तिस ला य ॥१०॥ नान्नी अ जीअसत्तूअ,जिआरि संवरेइय ॥ मेहे धरे पइठेय, मह सेणेय खत्तिये ॥११॥ सुग्गीवे दढरहे विण्हू वसुपुद्य खत्ती ए ॥ कयवम्मा सीहसेणे, नाणूअ विस्ससेणेय ॥ १२ ॥ सूरे सुदंसणे कुंने, सुमित्त विजए समुद्दविजए अ ॥ रायाय अस्ससेणे, सिद्धढेवीय खत्तिए ॥ १३ ॥ सवे वि गया मुरकं, जाइ जरा मरण बंधण विमुक्का ॥ तिढयरा नगवंतो, सास य सुरकं निराबाहं ॥ १४ ॥ इति अष्टम निर्युक्ति स्वाध्याय ॥ ८ ॥

॥ अथ नवम आवश्यक निर्युक्तिस्वाध्याय प्रारंनः ॥

॥ जो य तवो अणुचिन्नो,वीरवरेणं महाणुनावेणं ॥ उउमढ कालिआए, अहक्कमं कित्तइस्सामि ॥ १ ॥ नवकिरचाउम्मासे, ढक्किरदोमासिएउवासी य ॥ बारसय मासियाइं, बावत्तरि अद्ध मासाइं ॥ २ ॥ इक्कं किरढम्मासं, दो किर तिमासिए उवासीय ॥ अढाइज्जाय डुवे, दोचेव दिवढ्ढ मासाइं ॥३॥

नद्दं च महानद्दं,पडिमं तत्तोअ सवउनद्दं ॥ दो चत्तारि दसेवय,दिवसे बासीय मणुवर्ह ॥ ४ ॥ घोरमनिग्गह जूअं, खमणं ठम्मासियं च कासीय ॥ पंचदि वसेहि ऊणं, अवहिउ वन्नयरीए ॥ ५ ॥ दसदोयकिर महप्पा, ठाइमुणी इगराइयं पडिमं ॥ अठम नत्तेण जुअं, इक्किक्क चरमराईअं ॥ ६ ॥ दोचे वय ठठसए, अनूणा तीसे उवासिउ नयवं ॥ न कयाइ निच्चनतं, चउत्त न तं च सेआसी ॥ ७ ॥ बारसवासे अहिए, ठठं नत्तं जहन्नयं आसी ॥ सवं च तवोकम्मं, अप्पाणय आसि वीरस्स ॥ ८ ॥ तिन्निसए दिवसाणं, अउ णापन्ने अ पारणा कालो ॥ उक्कुडुअनिसिज्जाणं, ठिय पडिमाणं सए बहुए ॥ ए ॥ पवज्जाए दिवसं, पढमं इत्तुंतु पक्किवित्ताणं ॥ संकलियंमिउसंते, जं लद्धं निसामेह ॥ १० ॥ बारस चेवय वासा, मासा ठच्चेव अद्धमासोअ ॥ वीरवंरस्स नगवउ, एसो ठउमत्तपरिआउ ॥ ११ ॥ एवं तवोगुणरउ, अ णुपुवेणं मुणी विहरमाणो ॥ घोरं परीसहचमुं, अहिआसित्ता महावीरो॥ ॥ १२ ॥ उप्पन्नंमि अणंते, नठंमि अ ठाउमत्थिए नाणे ॥ राईए संपत्तो, महसेणवणंमि उज्जाणे ॥ १३ ॥ अमर नर राय महिउ, पत्तो धम्मवर चक्कवट्टित्तं ॥ बीयंमि समोसरणे, पावाए मज्झिमाएउ ॥ १४ ॥ तत्त किर सोमिलज्जुति, माहणो तस्स दिरककालंमि ॥ पउरा जण जाणवया, समाग या जन्नवाडंमि ॥ १५ ॥ एगंते अविवित्ते, उत्तरपासंमि जन्न वाडस्स ॥ तो देव दाणविंदा, करंति महिमं जिणंदस्स ॥ १६ ॥ इति स्वाध्यायः ॥ ए ॥

॥ अथ दशम निर्युक्तिस्वाध्याय प्रारंन ॥

॥ आनिणिबोहियनाणं, सुअनाणं चेव उहिनाणं च ॥ तह मणपज्जव नाणं, केवलनाणं च पंचमयं ॥ १ ॥ उग्गह ईहावाउय, धारणाएव हुंति च त्तारि ॥ आनिणिबोहिय नाण, स्स नेय वत्थूसमासेणं ॥२॥ अत्थाणं उग्गह णंमि,उग्गहो तह वियालणे ईहा ॥ ववसायंमि अवाउ,धरणं पुण धारणा बिं ति ॥३॥ उग्गहइक्कं समयं, ईहावाया मुहुत्त मद्धं तु ॥ कालमसंखं संखं,च धारणा होइ नायवा ॥४॥ पुठं सुणेइ सद्दं, रूवं पुण पासई अपुठं तु ॥ गंधं रसं च फासं, च बद्धपुठं वियागारे ॥ ५ ॥ नासा समसेढीउ, सद्दं जं सुणइ मीसियं सुणइ ॥ वीसेढी पुण सद्दं, सुणेइ नियमापराघाए ॥ ६ ॥ गिह्णइय काइएणं, निसिरइतह वाइएण जोएणं ॥ एगंतरं च गिह्णइ, निसिरइ एगंत रं चेव ॥ ७ ॥ तिविहंमि सरीरंमि, जीवपएसा हवंति जीवस्स ॥ जेहिउ

गिएहइ गहणं, तो जासइ जासउ जासं ॥ ८ ॥ उरालिय वेउव्विय, आहारो गिएहइ मुअइ जासं ॥ सच्चं सच्चामोसं, मोसं च असच्चमोसं च ॥ ए ॥ कइ हिं समएहिं लोगो, जासाए निरंतरं तु होइ फुडो ॥ लोगस्सय कइ जागे, कइजागो होइ जासाए ॥ १० ॥ चउहिं समएहिं लोगो, जासाए निरंतरं तु होइ फुडो ॥ लोगस्सय चरमंते, चरमंतो होइ जासाए ॥ ११ ॥ ईहा अ पोहवी मंसा, मग्गणा य गवेसणा ॥ सन्नासइ मइपन्ना, सव्वं आजिणि बोहियं ॥ १२ ॥ इति दशम निर्युक्ति स्वाध्यायः संपूर्णः ॥ १० ॥

॥ अथ एकादशम निर्युक्तिस्वाध्याय प्रारंजः ॥

॥ वाराणसी नयरीए, अणगारे धम्म घोस धम्मजसे ॥ मासस्सय पारणए, गोलगंगाइ अणुकंपा ॥ १ ॥ करकंडुकलिंगेसु, पंचालेसु अडुम्मुहो ॥ नमिराया विदेहेसु, गंधारेसु अ नग्गई ॥ २ ॥ वसजेय इंदकेउं, वलए अं बेअ पुप्फिए बोहि ॥ करकंडु डुम्मुहस्सय, नमिस्स गंधाररणो अ ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ सेयं सुजायं सुविजत्ति सिंगं, जोपोसि आवसहं गुठमझे ॥ रूध्दिं अरूध्दिं समुपेहिआणं, कलिंगराया विसमिरकुधम्मं ॥ ४ ॥ गुठं गणस्स मझे, ढक्किअ सदेण जस्स जङ्गंति ॥ दित्ताविडुरिअ वसहा, सुतिरक सिंगा समुब्बावि ॥ ५ ॥ पोराणय गयदप्पो, गलंत नयणो चलंत वसजठो ॥ सो चेव इमो उसजो, पडुअपरिघट्टणं सहइ ॥ ६ ॥ जो इंदकेउं सुअलं किअं तं, दठं पडंतं पविलुप्पमाणं ॥ रूध्दिं अरूध्दिं समुपेहिआणं, पंचालराया विसमिरकुधम्मं ॥ ७ ॥ बहुआणंसद्दयं सुच्चा, एगस्सय असद्दयं ॥ वलया णजमिराया, निरकंतो मिहिलाहिवो ॥ ८ ॥ जो चूअरुरकं तु मणाजिरामं, समंजरी पल्लव पुप्फचित्तं ॥ रूध्दिं अरूध्दिं समुपेहिआणं, गंधारराया विसमिरकुधम्मं ॥ ए ॥ नयरंमि खिइपइठे, चउरो विपरुप्परं समुल्लावं ॥ अकहं सुतब्ब जाउ, जरको जत्तिइ चउवयणो ॥ १० ॥ जया रज्जं च रठं च, पुरं अंतेउरं तहा ॥ सव्वमेअं परिच्चज्ज, संचयं किंकरेसिमं ॥ ११ ॥ जया तेपेइए रज्जे, कया किच्चकरा बहु ॥ ते संकिच्चं परिच्चज्ज, अज्जकिच्चकरो जवं ॥ १२ ॥ जया सव्वं परिच्चज्ज, मुरकाय घडसि जवं ॥ परंगरहसी कीस, अत्तनिस्सेस कारए ॥ १३ ॥ मुरकमग्ग पवन्नेसु, साहुसु बंजयारिसु ॥ अहियब्बं निवारंतो, न दोसं वत्तुमर्हसि ॥ १४ ॥ रूसउ वा परोमा वा, विसं वा परिअत्तउ ॥ जासियव्वा हिया जासा, सपरकगुणकारया ॥ १५ ॥ पुप्फो

त्तराउ चवणं, पवज्जा होइ एग समएणं ॥ पत्तेय बुद्ध केवलि, सिद्धि गया एगसमएणं ॥ १६ ॥ इति एकादश निर्युक्तिस्वाध्यायः संपूर्णः ॥ ११ ॥

॥ अथ द्वादशम उत्तराध्ययन स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ असंखयं जीवियमापमायए, जरोविणीयस्सहि नच्चि ताणं ॥ एवं वियाणाहि जणे पमत्ते, कणहुंविहंसा अजया गहंति ॥ १ ॥ जे पावकम्मेहिं घणु मणुस्सा, समाययंति अमयं गहाय ॥ पहाय ते पासपयट्टीए नरे, वेराणुबद्धा नरयं उविंति ॥ २ ॥ तेणे जहा संधिमुहे गहीए, सकम्मुणा किच्चइ पावकारी ॥ एवं पिया पिच्च इहं च लोए, कडाणकम्माण न मुरक अच्चि ॥ ३ ॥ संसार मावन्नपरस्स अठा, साहारणं जं च करेइ कम्मं ॥ कम्मस्स ते तस्स उवेइ काले, न बंधवाबंधवयं उविंति ॥ ४ ॥ वित्तेण ताणं न लजे पमत्ते, ईमंमि लोए अडुवापरठा ॥ दीवप्पणठेव अणंतमोहे, नेयाउअं दठुम दठुमेव ॥ ५ ॥ सुत्तेसु आवीपडिबुद्धजीवी, न वीससे पिंमिय आसुपन्ने ॥ घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं, भारंमपरकी व चरे पमत्तो ॥ ६ ॥ चरे पयाइं परिसंकमाणो, जं किंचि फासं इहमन्नमाणो ॥ लाभंतरे जीविय बूहइत्ता, पच्चा परिन्नायमलावधंसि ॥ ७ ॥ ठंदं निरोहेण उवेइ मुरकं, आसे जहा सिरिकय वम्मधारी ॥ पुव्वाइं वासाइं चरे पमत्तो, तम्हा मुणी खिप्प मुवेइ मुरकं ॥ ८ ॥ सपुव्वमेवं न लहिज्ज पच्चा, एसोवमासासय वाइयाणं ॥ वीसीयई सीढिलियाउअम्मी, कालोरिणीए सरिरस्स भेए ॥ ए ॥ खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं, तम्हा समुठाय पहाय कामे ॥ समिच्च लोगं समया महेसि, अप्पाणरक्की विचरे पमत्तो ॥ १० ॥ मुंहू मुंहू मोहगुणेजयंतं, अणेगरूवा समणं चरंतं ॥ फासा फुसंती असमंजसं च, न तेसु भिरकु मणसा पउस्से ॥ ११ ॥ मंदाय फासा बहुलोहणिद्या, तहप्पगारे सुमणं न कुद्या ॥ रक्किद्य कोहं विणइद्य माणं, मायं न सेविद्य चइद्य लोहं ॥ १२ ॥ जे संखया तुच्छपरप्पवाई, तेपिद्यदोसाणुगया परज्जा ॥ एए अहं मुत्ति डुगंठमाणो, कंखेगुणे जाव सरीरभेउत्तिबेमि ॥ १३ ॥ इति द्वादश उत्तराध्ययनस्वाध्याय ॥१२॥

॥ अथ त्रयोदश स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ अजयं चरमाणोअ, पाणभूआइं हिंसइ ॥ बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुअं फलं ॥ १ ॥ अजयं चिठमाणीअ, पाणभूयाइं हिंसइ ॥ बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुअं फलं ॥ २ ॥ अजयं आसमाणोय, पाणभू

याइं हिंसइं ॥ बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुअं फलं ॥ ३ ॥ अजयं सय माणोअ, पाणनूयाइं हिंसइं ॥ बंधइं पावयं कम्मं, तं से होइ कडुअं फलं ॥ ४ ॥ अजयं नुंजमाणोअ, पाणनूआइं हिंसइ ॥ बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुअं फलं ॥ ५ ॥ अजयंनासमाणोअ, पाण नूयाइं हिंसइ ॥ बंध इ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुअं फलं ॥ ६ ॥ कहं चरे कहं चिठे, कह मासे कहं सए ॥ कहं नुजंतो नासंतो, पावं कम्मं न बंधइ ॥ ७ ॥ जयं चरे जयं चिठे, जयमासे जयं सए ॥ जयं नुंजंतो नासंतो, पावं कम्मं न बंधइ ॥ ८ ॥ सवनूअप्पनूअस्स, समं नूआइं पासइ ॥ पिहियासवस्स दंतस्स, पावं कम्मं न बंधइ ॥ ९ ॥ पढमं नाणं तउ दया, एवं चिठइ सवसं जए ॥ अन्नाणी से किं काई, किंवा नाहीअसे पावगं ॥ १० ॥ सुच्चा जाण इ कल्लाणं, सुच्चा जाणइ पावगं ॥ उनयं पि जाणई सुच्चा, जं सेयं तं समा यरे ॥ ११ ॥ इति त्रयोदश स्वाध्यायः संपूर्णः ॥ १३ ॥

॥ अथ बृहत् चैत्यवंदन प्रारंनः ॥

॥ केवलनाणि श्रीनिरवाणी, सागर महाजस विमल ते जाणी ॥ सर्वानु नूति श्रीधर गुण खाणी, दत्त दामोदर वंदो प्राणी ॥ १ ॥ सुतेज स्वामी मुनिसुव्रत जाणी, सुमतिने शिवगति पंचम नाणी ॥ अस्ताघ नेमीसर अ निल ते जाणी, जशोधर सेवो मनमांहि आणी ॥ २ ॥ कृतारथ जपतां न वि होए हाणी, धमीसर पाम्या शिवपुर राणी ॥ शुद्धमति शिवकर स्यंद न गाणी, संप्रतिना गुण गाए इंद्राणी ॥ ३ ॥ वाचक मूला कहे नगते ना णी, तवन नणो जिम थाउ नाणी ॥ ए चोवीशी नित नित गाणी, मुक्ति तणां सुख जिम ल्यो प्राणी ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आदें अजितज रे, संनव अनिनंदन नणुं ॥ श्रीसुमतिज रे, पद्मप्रन जीना गुण थुणुं ॥ श्रीसुपारस रे, चंद्रप्रन जिन जाणीयें ॥ सुविधि शीतल रे, श्रेयांस हरखे वखाणीयें ॥१॥ त्रुटक ॥ वखाणीयें श्रीवासुपूज्य, विमल अनंत धर्म शांति ए ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत, नमि नेम ध्याउं चित्त ए ॥ सूर धीरह पार्श्ववीरह, वर्त्तमान ए जिनवरा ॥ कर जोडी वाचक नणे मूला, स्वामी सेवक सुखकरा ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ पद्मनाभ सूरदेव, सुपार्श्व स्वयंप्रभ होई ॥ सर्वानुभूति देवसुत, उदय पेढालजज जोई ॥१॥ पोटिल सतकीरती, मुनिसुव्रत अमम निःकषाय ॥ निपुलायक निरमम, चित्रगुप्ति वंदो पाय ॥ २ ॥ समाधि सुसंवर, जशोधर विजय मल्ली देव ॥ अनंतवीरज नइकृत, तेहनी कीजें सेव ॥ ३ ॥ अनागत जिनवर, होशे तेहनां नाम ॥ नणे वाचक मूला, तेहने करुं प्रणाम ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ महाविदेह पंच मजार, प्रत्येकें जिन चार ॥ सीमंधर जुगमंधर, बाहु सुबाहु अ सुखकर ॥ १ ॥ सुजात स्वयंप्रभ स्वामी, उसनानन लेहुं नामी ॥ अनंतवीरज देव, सूरप्रभ करुंअ सेव ॥ २ ॥ विशाल वज्रंधर साहु, चंडानन चंडबाहु ॥ भुजंग ईश्वर गाउं, नेमी प्रभु चित्त ए लाउं ॥३॥ वीरसेन महानंड वंदू, देवजसा दीठे आनंदूं ॥ अजितवीरिय वंदन, शाश्वता रूषभा चंडानन ॥ ४ ॥ वर्द्धमान वारिषेण ईश, ए हुआ जिन चोवीश ॥ एवा बन्नुं ए जिनवर, वाचक मूला कहे सुखकर ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ हवे पायालें लोक मच, जिहां असुर कुमार ॥ लाख चोसठ जिनभुवन अछे, तिहां करुं जुहार ॥ १ ॥ नागकुमारमांहे कह्या, तिहां लाख चोराशी ॥ एता जिनहर तिहां नमुं, थाउं समकितवासी ॥ २ ॥ सोवन कुमार मच लाख, बहुतेर प्रासाद ॥ बनुं लाख वायु मच, सुणियें सुरनाद ॥३॥ दीपकुमार दिशाकुमार, वली उदधिकुमार ॥ विद्युत् स्तनित कुमार अने, वली अग्निकुमार ॥४॥ ए छए थानक जाणिएं, प्रत्येकें जिनहर ॥ बहुंतेर बहुंतेर लाख तिहां, नविअण जिनसुखकर ॥५॥ एवंकारे सवि मली, बहुंतेर तिहां लाख ॥ सात कोडी जिनहर नमुं, श्रीजिनवर नांख ॥ ६ ॥ लाख साठ निव्यासी कोडी, अने तेरसें कोडी ॥ जिन पडिमा श्रीजिन तणी, वंदूं बे कर जोडी ॥ ७ ॥ असंख्या व्यंतर जोइसी, असंख्या जिनहर ॥ असंख्य पडिमा जिन तणी, नमिय नहिं दुर्गति मर ॥ ८ ॥ वाचक मूला कहे देव, देउ सुमति सदा मुज ॥ जिनवचनें हुं लीन थइ, गाउं जिनजी तुज ॥९॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ सोहम ईशान सनतकुमार ए, माहिंद बंभ रे लांतक सार ए ॥ त्रुटक ॥

सार शुक्र अने सहसारह, आनत प्राणत आरणा ॥ अच्युत नवग्रैवेयक त्रिक तिहां, पंच अनुत्तर तारणा ॥ अनुक्रमें प्रासाद कहीयें, लाख सहस सत संखया ॥ बत्तीस अठावीस बारह, अठ चउ लख अखया ॥ १ ॥ पन्नास चालीस ब सहस जिन हरा, दो दो दोढज दोढज सतवरा ॥ त्रुटक ॥ वरा सतवर इग्यारोत्तर, सत्तोत्तरसो जाणीएं ॥ एकशो उपर पंच अनुत्तर, अनुक्रमें वखाणीएं ॥ सवे मली जिनहर जिनहर, लाख चोरासी साख ए ॥ सहस सत्ताणुं आगला तिहां, वीशने त्रण दाख ए ॥ २ ॥ चाल ॥ एकसो कोडी रे, बावन कोडीएं ॥ लाख चोराणुं रे, संख्या जोडीएं ॥ त्रुटक ॥ जोडिएं चोशठ सहस एकशो, चालीशें तिहां आगली ॥ जिनप्रासाद एकशो असिअ लेखे, वंदूं प्रतिमा ऊजली ॥ चैत्यसंख्या ऊर्ध्व लोकें, वीर वचन विख्यात ए ॥ वाचक मूला कहे जण जो, स्तवन ए परभात ए ॥ ३ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ वेयढ गिरि सितरि सो जिनहर,वृषधरना तिहां त्रीश जी ॥ कुरुडुमना दश जिनहर बोल्या, गजदंतें तिहां वीशजी ॥ १ ॥ असिअ ते जिनहर कुरुडुम परिधें, असिअ वखारे जाणुं जी ॥ मेरुतणा पंचासी जिनहर, इखुकारें चार वखाणुं जी ॥ २ ॥ मानुपोत्तर पर्वत तिहां चारज, नंदीसरमां वीशजी ॥ कुंमल रुचक तिहां चार चार जिनहर, ऋषभादिक तिहां ईश जी ॥ ३ ॥ पंच सया इग्यारें अधिका, जिनहर तीर्छे लोकें जी ॥ पडिमा एकसठ सहस चारसें,बोली सघले थोकें जी ॥ ४ ॥ अधो ऊर्ध्व ने तीर्छे लोकें, सवे मली कोडी आठें जी ॥ लाख छप्पन्नने सहस सत्ताणुं, पणसय चोत्रीश पाठें जी ॥ ५ ॥ जिन पडिमा पन्नरसें कोडी, बेंतालिश वली कोडी जी ॥ लाख पंचावन सहस पणविस, पणसय चालीश जोडी जी ॥ ६ ॥ एता तवन जणे जे जावें, प्रह उगमते सूरें जी ॥ वाचक मूला कहे गुण गातां, डुर्गति नासे दूरें जी ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ अठावय समेत शिखरगिरि ॥ साजनजिअ ॥ रेवत गिरि शेत्रुंज ॥ गजपद धम्म चक्क कहुं ॥ सा० ॥ वेजारगिरि उत्तंग ॥१॥ रहावते कुंजरावते सा० ॥ तिहुअणगिरि ग्वालेर ॥ काशीअवंती जाणीएं ॥ सा० ॥ नागोर जे

सलमेर ॥ २ ॥ सोरिपुर हत्थिणाउरे ॥ सा० ॥ अवलईरावण पास ॥ पीरो जपुरें चुअड जलो ॥ सा० ॥ फलविधि पूरे आश ॥ ३ ॥ विकानेर ने मेड ते ॥ सा० ॥ सीरोही आबू शृंग ॥ राणगपुरने सादडी ॥ सा० ॥ वरकाणे मनरंग ॥ ४ ॥ जीनमालने कोटडे ॥ सा० ॥ वाहडमेर मझार ॥ रायधण पुर रलिआमणुं ॥ सा० ॥ शांतिनाथ दयोइ जूहार ॥ ५ ॥ साचोर जालोर गडडें ॥ सा० ॥ गोडीपुरवर पास ॥ पाटण अमदावाद वली ॥ सा० ॥ संखेसर दीजें जास ॥ ६ ॥ अमीझरे नव पल्लवे ॥ सा० ॥ नवखंम थराडे गाम ॥ तारंगे बुरहानपुरें ॥ सा० ॥ वंदूं माणक शाम ॥ ७ ॥ खंजायतने तारापुरें ॥ सा० ॥ मातरने गंधार ॥ लोम्हण चिंतामणि वरुं ॥ सा० ॥ सूरत म्होइ जूहार ॥ ८ ॥ देवक पाटण देवगिरि ॥ सा० ॥ नवेनगर वंदी जोय ॥ दीवादिक सवि वंदरे ॥ सा० ॥ अंतरीक सिरि पुर होय ॥ ए ॥ वडनगरने मुंगरपुरें ॥ सा० ॥ ईमर मालव देश ॥ कल्याणक जिहां जिन तणुं ॥ सा० ॥ मन सूधे प्रणमेस ॥ १० ॥ गाम नगर पुर पाटणे ॥ सा० ॥ जिनमूरति जिहां होय ॥ वाचक मूला कहे मुझ ॥ सा० ॥ वंदतां शिवसुख होय ॥ ११ ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ थुणुंए जिनवर थुणुंए जिनवर अधो ऊर्ध्वने लोक तीर्छे जाणुं ए ॥ सासय असासय जैनपडिमा ते सवे वखाणुं ए ॥ गछविधिपक्ष पूज्य परगट श्री धर्ममूर्त्ति सूरिंद ए ॥ वाचक मूला कहे जणतां, झद्धिवृद्धि. आणंद ए ॥ १ ॥ इति श्री वृद्धचैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ चैत्यवंदन प्रारंजः ॥ स्रग्धरा वृत्तम् ॥

॥ सद्भक्त्या देवलोके रविशशिजवने व्यंतराणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥१॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे कुंमले हस्तिदंते, वखारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ॥ चित्रे शैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥ श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ वैजयंते विपुलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमु

कुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च धाटे विटपिघनतटे देवकूटे विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च जोटे ॥ श्रीम० ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनिनिषधे मेखले पिच्छले वा, नेपाले नाहले वा कुवलय तिलके सिंहले केरले वा ॥ माहाले कोशले वा विगलितसलिले जंगले वा तमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलं गे, गौडे चौडे मुरंडे वरतरद्रविडे उद्रियाणे च पौंड्रे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिं द्रे द्रविडकुवलये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंपायां चंद्रमुख्यां ग जपुरमथुरा पत्तने चोज्जयिन्यां, कौशांब्यां कोशलायां कनकपुरवरे देवगिर्यां च काश्यां ॥ नाशिक्ये राजगेहे दशपुरनगरे जद्दिले ताम्रलिप्यां ॥ श्रीम० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येंतरिक्षे गिरिशिखरह्रदे स्वर्णदीनीरतीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने जूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शा ल्मलौ जंबुवृक्षे, चौजान्ये चैत्यनंदे रतिकररुचके कौंमले मानुषांके ॥ इक्षु कारे जिनाद्रौ दधिमुखचगिरौ व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके जवंति त्रिजु वनवलये यानि चैत्यालयानि " ॥ ९ ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठंति प्रवीणाः, प्रोद्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं जक्तिजाजस्त्रिसंध्यं ॥ तेषां श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः प्र मुदितमनसां चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ अर्हतां स्तुति प्रारजः ॥

॥ श्री अरिहंत नमीजें, चतुरनर! श्री अरिहंत नमीजें ॥ ए आंकणी ॥ बारस गुणशोजित जगमोहित, सुर नर नमित कहीजें ॥ अतिशय चार प्र थम वली आठे, प्रातिहार जस लीजें ॥ च० ॥ श्री० ॥ १ ॥ चार सहज एकादश खायिक, उगणीश दैव्य ग्रहीजें ॥ उत्तर अतिशय चोत्रीश पांत्री श, वाणी समीप रहीजें ॥ च० ॥ श्री० ॥ २ ॥ तीर्थंकर पद जोगी सयो गी, गुण गाणे प्रणमीजें ॥ जावस्वरूप रमण अनिलाष्यो, तेहनी आण वहीजें ॥ च० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इत्यर्हतां स्तुतिः समाप्ता ॥

॥ अथ अतींद्रियस्वरूपसिद्धस्तुतिप्रारंजः ॥

॥ परमेष्ठी आराधि सुगुणिजन! परमेष्ठी आराधी ॥ शिव अविचल अरु जानत पदवी, अक्षय अव्याबाधी ॥ अपुनर्जवसिद्धि गति सुख पूरण,

गणसंपत्ति अबाधी ॥ सुगु० ॥ पर० ॥ १ ॥ दर्शन ज्ञान वीरिय सुख संपद, अनंत चतुष्ट निरुपाधि ॥ तस नावादि निक्षेप नजनथी, थाए स्वरूप समाधि ॥ सुगु० ॥ पर० ॥ २ ॥ इत्यतींद्रियस्वरूपस्तुतिः समाप्ता ॥

॥ अथ आचार्योपाध्यायाऽनगाराणां युगपत्स्तुति प्रारंनः ॥

॥ आचारिज पदसेवा, चहत मन आचारिज पदसेवा ॥ सुरपति सेवित त्रिपदी अन्यासें, शीश धरेवा सखेवा ॥ तीर्थंकर देवबंद विराजित, गणधर देशना देवा ॥ च० ॥ आ० ॥ १ ॥ अंग डुवादस चजदस पूरव, मूहूर्त्तमांहे करेवा ॥ उपगारी उवकाय मुनिने, अंग उपांग धरेवा ॥ च० ॥ आ० ॥ २ ॥ निजगुण अधिक उपासक चारो, सिद्धि अनीह कहेवा ॥ नाव स्वरूपचंद जिम उल्लसे, सिद्धिरमण सुख मेवा ॥ च० ॥ आ० ॥३॥ इत्याचार्योपाध्यायाऽनगाराणां युगपत्स्तुतयः संपूर्णाः ॥

॥ अथात्मगुणस्तवन प्रारंनः ॥

॥ आतमगुण अनिलाख्यो, अनुनवी आतमगुण अनिलाख्यो ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र तपोगुण, वीरज उपयोग दाख्यो ॥ पुज्ञल गंधादिकथी अलगो, श्री जिनराजें नाख्यो ॥ अनुनवी ॥ १ ॥ आ० ॥ तेहनुं लक्षण मूलचेतनता, पुज्ञल जड गुण आख्यो ॥ जिनमत शुद्ध स्वरूप उल्लासें, स्वगुणरमण रस चाख्यो ॥ अनुनवी ॥ २ ॥ आ० ॥ इत्यात्मगुणस्तवनं ॥

॥ अथ शांतिनाथ स्तवन प्रारंनः ॥

॥ शांति जिणंद सुखकारि, सकलजन ! शांति जिणंद सुखकारि ॥ स्वस्ति श्री ऋद्धि वृद्धि जयंकर, मंगलान्युदयविहारी ॥ स० ॥ शां० ॥ १ ॥ सुरपूजित गढ तीन मनोहर, प्रातिहारज सहचारि ॥ वृक्ष अशोक परम मुददाता, कुसुमवृष्टि वरधारी ॥ स० ॥ शां०॥२॥ दिव्यध्वनि चजविध वाजित्रसुर, योजनमान उदारी ॥ चिहुं दिशि चमर छत्र त्रिहुं शोनित, सिंहासनपदसारी ॥ स० ॥ शां० ॥ ३ ॥ नामंमल रवि कोटि विजंता, डुंडुनि ध्वनि बलिहारि ॥ ऐसी सनामें श्री जिनसेवा, स्वरूपचंद मन प्यारी ॥ स० ॥ शां० ॥ ४ ॥ इति शांतिनाथस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ चैत्यवंदन प्रारंनः ॥

॥ आज देव अरिहंत नमुं, समरुं तारुं नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रतिमा जिन तणी, त्यां त्यां करुं प्रणाम ॥ १ ॥ शत्रुंजे श्री आदिदेव, नेम नमुं गिरनार

॥ तारंगें श्रीअजितनाथ, आबू रिषज जूहार ॥ २ ॥ अष्टापद गिरिउपरें, जिन चोवीशे जोय ॥ मणियम मूरत मानशुं, जरतें जरावि सोय ॥ ३ ॥ समेत शिखर तीरथ वडूं, ज्यां वीशे जिनपाय ॥ वैजारकगिरि उपरें, वीर जिनेश्वरराय ॥ ४ ॥ मांमवगढनो राजियो, नामें देवसुपास ॥ रिषज कहे जिन समरतां, पहोंचे मननी आश ॥ ५ ॥ इति चैत्यवंदनं समाप्तम् ॥

॥ अथ चैत्यवंदन प्रारंजः ॥

॥ सुर किन्नरनागनरिंदनतं, प्रणमामि युगादिमजिनमजितं ॥ संजवमजि नंदनमथ सुमतिं, पद्मप्रजमुज्ज्वलधीरमतिं ॥ १ ॥ वंदे च सुपार्श्वजिनेंद्रम हं, चंद्रप्रजमष्टकुकर्मदहं ॥ सुविधिप्रजु शीतल जिनयुगलं, श्रेयांसमसंशयम तुलबलं ॥ २ ॥ प्रजुमर्चय नृपवसुपूज्यसुतं, जिनविमलमनंतमजिह्ननतं ॥ नम धर्ममधर्मनिवारिगुणं, श्रीशांतिमनुत्तरकांतिगुणं ॥ ३ ॥ कुंथू श्री अर मल्लीशजिनान्, मुनिसुव्रतनमिनेमिस्तमसि दिनान् ॥ श्रीपार्श्वजिनेंद्रमिजेंद्र समं, वंदे जिनवीरमजीरुतम् ॥ ४ ॥

॥ कलश ॥

॥ इति नागकिन्नरनरपुरंदर, वंदितक्रमपंकजा, निर्जितमहारिपुमोहमत्स र, मानमदमकरध्वजाः ॥ विलसंति सततं सकलमंगल केलिकाननसन्नि जाः,सर्वे जिना मे हृदयकमले राजहंस समप्रजाः ॥ ५ ॥ इति चैत्यवंदन संपूर्ण

॥ अथ श्रीसिद्धस्तुति प्रारंजः ॥ हरिगीत बंदनी चाल ॥

॥ जगत जूषण विगत दूषण प्रणव प्राणि निरूपकं ॥ ध्यानरूप अनू पउपमं, नमो सिद्ध निरंजनं ॥ १ ॥ गगन मंमल मुक्ति पद्मं, सर्व उर्ध्व निवासिनं ॥ ज्ञान ज्योति अनंत राजे, नमो सिद्ध निरंजनं ॥ २ ॥ अज्ञा न निद्रा विगत वेदन, दलित मोह निरायुकं ॥ नाम गोत्र न अंतराय, न मो सिद्धनिरंजनं ॥ ३ ॥ विकट क्रोधा मान योधा माया लोज विसर्ज नं ॥ राग द्वेष विमुद्रितांकुर, नमो सिद्ध निरंजनं ॥ ४ ॥ विमल केवल ज्ञा न लोचन, ध्यान सकल समीरितं ॥ योगिनामतिगम्य रूपं, नमो सिद्ध नि रंजनं ॥ ५ ॥ सुसमय समकित दृष्टि जिनकी, सोहि योग अयोगिकं ॥ योगिनामति गम्य रूपं, नमो सिद्ध निरंजनं ॥ ६ ॥ योग मुद्रा सम समु द्रा, पूरि पल्यंकासनं ॥ योगिनामति गम्य रूपं, नमो सिद्ध निरंजनं ॥ ७ ॥ चंद सूरज द्वीप मनकी ज्योतियें न उल्लंघितं ॥ ते ज्योतिथी कोइ अप

र ज्योति, नमो सिद्ध निरंजनं ॥ ८ ॥ सिद्ध तीर्थ अतीर्थ सिद्धा, नेद पंच दशाधिकं ॥ सर्व कर्म विमुक्त चेतन, नमो सिद्ध निरंजनं ॥ ९ ॥ एक मांही अनेक राजे, अनेकमांहे एकिकं ॥ एक अनेककी नाहिं संख्या, नमो सिद्ध निरंजनं ॥ १० ॥ अतुल सुखकी लहेरमें प्रभु, लीन रहे निरंतरं ॥ परब्रह्मज्ञान अनंत दर्शन, नमो सिद्ध निरंजनं ॥ ११ ॥ अजर अमर अलख अनंतं, निराकार निरंजनं ॥ धर्मध्यानथी सिद्ध दर्शन, नमो सिद्ध निरंजनं ॥ १२ ॥ इति श्री सिद्धस्तुतिः संपूर्णा ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥

॥ नव नव तुंमहिंज देव, सरण तोरां धरुं ॥ नवसायरथी तार, अरज आवी करुं ॥ १ ॥ प्रभुदरिशन सुखसंपदा, प्रभुदरिशन नवनिध ॥ प्रभुदरिशनथी पामीयें, सकल पदारथ सिद्ध ॥२॥ जगतस्वामी मोक्षगामी, आतमरामी सुख करो ॥ प्रभु अजर अमर अखंम निर्मल, मोहमिथ्या तम हरो ॥ ३ ॥ देवाधिदेवा चरणसेवा, नित्यमेवा आपीयें ॥ निजदास जाणी दया आणी, आप समोवड थापीयें ॥४॥ अनुनवरत्न चिंतामणि, अनुनवसिद्ध स्वरूप ॥ अनुनव मारग मोक्षनो, अनुनव केवलरूप ॥ ५ ॥ अनंत नाथ प्रगट परमेसर, अलिय विघ्न सवि दूर करे ॥ वाट घाट समरे जे साहेब, नय नंजन चकचूर करे ॥ ६ ॥ लीलालच्छी दास तुमारो, कोइ पूजे कोइ अरज करे ॥ प्रभु नजर करीने निरखो साहेब, तुम सेवक अरदास करे ॥ ७ ॥ आबू अष्टापद गिरनार, समेत शिखर सेत्रुंजो सार ॥ पंचेतीर्थ उत्तम ठाम, सिद्धिगया तेने करुं प्रणाम ॥ ८ ॥

॥ अथ जिनस्तुति काव्यं ॥

॥ अष्टापदें श्री आदिजिनवर, वीर पावापुरिवरं ॥ वासपूज्य चंपानयर सिद्धा, नेम रेवागिरिवरं ॥ १ ॥ समेत शिखरें वीश जिनवर, मोक्षे पहोता मुनिवरं ॥ चोवीश जिनवर नित्य वंदू, सयल संघें सुखकरं ॥२॥ इति॥ श्लोक ॥ अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टिः, दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च ॥ नामंमलं डुंडुनिरातपत्रं, सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणां ॥ १ ॥ सकलकर्म वारी मोक्षमार्गाधिकारी, त्रिभुवनउपकारी केवल ज्ञान धारी ॥ नविजन नित्य सेवो देव ए नक्तिनावें, इहजिन नजंतां, सर्व संपत्ति आवे ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ जिनपूजन दोहा ॥

॥ जीवडा जिनवर पूजियें, पूजानां फल जोय ॥ राजा नमे प्रजा नमे, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंनें बांध्युं जल रहे, जल विना कुंन न हो य ॥ ज्ञानें बांध्युं मन रहे, गुरु विना ज्ञान न होय ॥ २ ॥ गुरु दीवो गु रु देवता, गुरु विण घोर अंधार ॥ जे गुरुवाणी वेगला, ते रडवडिया संसा र ॥ ३ ॥ नावें नावना नावियें, नावें दीजें दान ॥ नावें जिनवर पूजियें, नावें केवल ज्ञान ॥ ४ ॥ प्रनुनामकी उंपधि, खरे मन शुं खाय ॥ रोग पीडा व्यापे नहिं, महादोष मिट जाय ॥ ५ ॥ प्रनुपूजनकुं हुं चल्यो, केशर चंदन घनसार ॥ नवे अंगें पूजा करी, नवसायर पार उतार ॥६॥ पांच कोडी ने फूलडे, पाम्या देश अढार ॥ कुमारपालराजा थयो, वर्त्यो जयजयकार ॥७॥

॥ अथ गौतमस्वामीनो रास प्रारंन ॥ प्रथम नाषा ॥

॥ वीर जिणेसर चरणकमल, कमला कयवासो ॥ पणमवि पन्नणिसुं सामिसाल, गोयम गुरु रासो ॥ मण तणुं वयण एकंत करवि, निसुणो नो नवियां ॥ जिम निवसे तुम्ह देह गेह, गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥ जंबू दीव सिरि नरहखित्त, खोणीतल मंमण ॥ मगधदेस सेणियनरेस, रिउद लबल खंमण ॥ धणवर गुब्बर गाम नाम, जिहां जणगुणसज्जा ॥ विप्पव से वसुनूइ तब्ब, जसु पुहवी नज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरि इंदनूइ, नूवल य पसिद्धो ॥ चउदह विद्याविविह रूव, नारीरस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर ॥ सात हाथ सुप्रमाण देह, रूपें रंनावर ॥ ३ ॥ नहण वयण करचरण जण वि, पंकज जल पाडिय ॥ तेजें तारा चंदसूर, आकास नमाडिय ॥ रूवें मयण अनंग करवि, मेल्यो निरधाडी य ॥ धीरमें मेरु गंनीर सिंधु, चंगमचयचाडीय ॥ ४ ॥ पेखवि निरूवम रू व जास, जण जंपे किंचिय ॥ एकाकी किल नीत इब्ब, गुण मेल्या संचि य ॥ अहवा निश्चें पुव्व जम्म, जिणवर इण अंचिअ ॥ रंना पउमा गवरी गंग, रतिहा विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नहिं बुध नहिं गुरु कवि न कोइ, जसु आगल रहिउ ॥ पंचसया गुणपात्र बात्र, हिंमे परिवरिउ ॥ करय निरंतर यज्ञ कर्म, मिथ्यामति मोहिय ॥ इण बल होसे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥६॥

॥ वस्तु बंद ॥

॥ जंबूदीवह जंबूदीवह नरह वासंमि, खोणीतल मंमण ॥ मगध देस

मेणीय नरेसर, वरगुब्बर गाम तिहां ॥ विप्प वसे वसुजूइ सुंदर, तसु नज्जा पुहवी सयल, गुण गण रूव निहाण ॥ ताण पुत्त विज्ञा निलउ, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ इति

॥ द्वितीय जाषा ॥

॥ चरम जिणेसर केवलनाणी, चउविह संघपइठा जाणी ॥ पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देवनिकायें जुत्तो ॥ ८ ॥ देवें समवसरण तिहां कीजें ॥ जिण दीठे मिथ्यामति खीजें ॥ त्रिजुवनगुरु सिंहासण बइठा, तत खिन मोह दिगंत पइठा ॥ ए ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा ॥ देवडुंडुहि आकाशें वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि विरचे तिहां देवा, चउशठ इंद्रज मागे सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूपें जिणवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उवसम रसजरजरी वरसंता, जोजन वाणि वखाण करंता ॥ जाणवि वद्धमाण जिण पाया ॥ सुरनर किन्नर आवे राया ॥ १२ ॥ कंतिसमूहें जलजलकंता, गयण विमाणे रण रणकंता ॥ पेखवि इंदजूइ मन चिंते, सुर आवे अम्ह जगन होवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंमक जिम ते वहता, समवसरण पहोता गहगहता ॥ तो अजिमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाणिउं बोले, सुर जाणंता इम कांइ मोले ॥ मू आगल कोइ जाण जणिजें, मेरुअवर किम उपमा दीजें ॥ १५ ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ वीरजिणवर वीरजिणवर नाणसंपन्न ॥ पावापुरिसुर महिय पत्तनाह संसार तारण ॥ तिहिं देवेहिं निम्मविय समवसरण बहु सुरक कारण ॥ जिणवर जग उज्जोय करे तेजें करि दिनकार ॥ सिंहासण सामिय ठविउ हुउ सुजयजयकार ॥ १६ ॥

॥ तृतीय जाषा ॥

॥ तो चढीउ घणमाण गजें, इंदजूई जूयदेव तो ॥ हुंकारो करी संचरिउ, कवण सुजिणवर देव तो ॥ जोजन जूमि समोसरण, पेखवी प्रथमारंज तो ॥ दहदिसि देखे विबुधवहू, आवंती सुररंज तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंम धज, कोसीसे नव घाट तो ॥ वयर विवर्जित जंतुगण, प्रातीहारज आठ तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर, इंद इंडाणीराय तो ॥ चित्त चमक्किय

चिंतवे ए, सेवंता प्रभुपाय तो ॥ १७ ॥ सहसकीरण सम वीर जिण, पेख
वी रूप विसाल तो ॥ एह असंजव संजव ए, साचो ए इंद्रजाल तो ॥ तो
बोलावे त्रिजग गुरु, इंदभूई नामेण तो ॥ श्रीमुख संशय सामि सवे, फेडे वे
द पएण तो ॥ १ए ॥ मान मेल्हि मद ठेलि करि, जगते नामे सीस तो ॥
पंचसयासुं व्रत लिउ ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि करे,
अगनिभूइ आवेइतो ॥ नाम लेइ आजाष करे, तं पुण प्रतिबोधेइ तो ॥२०॥
इणि अनुक्रमें गणहररयण, थाप्या वीर इग्यार तो ॥ तो उपदेशें भुव
नगुरु, संजमसुं व्रत बार तो ॥ बिहुं उपवासें पारणुं ए, आपणपें विहरंत
तो ॥ गोयम संजम जग सयल, जयजयकार करंत तो ॥ २१ ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ इंदभूई इंदभूई चढिय बहुमान ॥ हुंकारो करि कंपतो समवसरण पुह
तो तुरंतो ॥ इह संसा सामि सवे चरमनाह फेडे फुरंतो ॥ बोधबीज सज्झा
यमने गोयम जवह विरत्त ॥ दिरक लेइ सिरका सहिय, गणहर पय संपत्त ॥ २२॥

॥ चतुर्थ जाषा ॥

॥ आज हुउं सुविहाण, आज पचेलिमा पुस्य जरो ॥ दीठा गोयम सा
मि, जो निय नयणें अमिय जरो ॥ सिरिगोयम गणहार, पंचसया मुनि
परवरिय ॥ जूमिय करय विहार, जविया जन पडिबोह करे ॥ समवसर
ण मजार, जे जे संसा उपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनिपवरो
॥ २३ ॥ जिहां जिहां दीजे दिरक, तिहां तिहां केवल उपजे ए ॥ आप क
न्हे अण हुंत, गोयम दीजे दान इम ॥ गुरु उपर गुरुजत्ति, सामी गोयम
उपनिय ॥ इण छल केवल नाण, रागज राखे रंगजरें ॥ २४ ॥ जो अष्टा
पद शैल, वंदे चढि चउविस जिण ॥ आतम लब्धि वसेण, चरमसरीरी सो
इ मुनि ॥ इअ देसण निसुणेइ, गोयम गणहर संचलिउ ॥ तापस पन्नरसए
ण, तो मुनि दीठो आवतो ए ॥ २५ ॥ तवसोसिय निय अंग, अम्हसत्ति
नवि उपजे ए ॥ किम चढसे दृढकाय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरु
उ ए अजिमान, तापस जो मन चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढिउ वेग, आलंबवि
दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंम कलस धज वड सहि
य ॥ पेखवि परमाणंद, जिणहर जरहेसर महिअ ॥ निय निय काय
प्रमाण, चउदिसि संठिअ जिणहबिंब ॥ पणमवि मन उल्लास, गोयम

गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव तीर्यक जृंनक देव तिहां ॥ प्रतिबोधे पुंमरीक, कंमरीक अध्ययन नणी ॥ वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेई आपणे साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खंम घृत आणि, अमिअ वूठ अंगुठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणुं सवे ॥ पंचसया सुन नाव, उज्जल नरिउ खीरमीसें ॥ साचा गुरुसंजोग, कवल ते केवल रूप हुआ ॥ २ए ॥ पंचसया जिणनाह, समवसरण प्राकार त्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे जिणह पीयूष, गाजंती घण मेघ जिम ॥ जिण वाणी निसुणेइ, नाणी हूवा पंचसया ॥ ३० ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ इणे अनुक्रमें इणे अनुक्रमें नाण संपन्न ॥ पन्नरह सय परिवरिय हरिय डुरिय जिणनाह वंदें ॥ जाणवि जग गुरुवयण तिह नाण अप्पाण निंदे ॥ चरम जिणेसर इम नणे गोयम म करिस खेउ ॥ छेह जइ आपण सही होसुं तुल्ला बेउ ॥ ३१ ॥

॥ पंचम नाषा ॥

॥ सामिउ ए वीर जिणंद पूनिम चंद जिम उल्लसिअ ॥ विहरिउ ए नरहवासम्मि, वरिस बहुत्तर संवसिअ ॥ ठवतो ए कणय पउमेव, पायकमल संघें सहिअ ॥ आवीउ ए नयणानंद, नयरपावापुरि सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखीउ ए गोयम सामि, देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपण ए त्रिशला देवि, नंदन पहोतो परम पए ॥ वलतो ए देव आकास, पेखवी जाणिय जिण समे ए ॥ तो मुनि ए मन विखवाद, नाद नेद जिम उपनो ए ॥ ३३ ॥ कुण समो ए सामिय देखि, आप कन्हे हुं टालिउ ए ॥ जाणतो ए तिहुअण नाह, लोक विवहार न पालिउ ए ॥ अति नलुं ए कीधलुं सामि, जाणिउं केवल मागसे ए ॥ चिंतविउं ए बालक जेम, अहवा केडे लागसे ए ॥ ३४ ॥ हुं किम ए वीर जिणंद, नगतें नोलो नोलव्यो ए ॥ आपणो ए संचिउ नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥ साचो ए इह वीतराग, नेह न जेणे लालिउ ए ॥ तिण समे ए गोयम चित्त, राग वेरागें वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लट, रहेतो रागें साहिउ ए ॥ केवलु ए नाण उपन्न, गोयम सहेजें उमाहिउ ए ॥ त्रिजुवन ए जय जयकार, केवल महिमा सुर करे

ए ॥ गणधरु ए करय वखाण, जवियण जव इम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पंचास ॥ गिहिवासें संवसिय तीस वरिस संजम विजूसिय ॥ सिरिकेवल नाण पुण बार वरिस तिहुयण नमं सिय ॥ रायगिहि नयरी ठविअ बाणवइ वरिसाऊ ॥ सामी गोयम गुण निलो होसे सिवपुर गाउ ॥ ३७ ॥

॥ षष्ठ जाषा ॥

॥ जिम सहकारें कोयल टहुके, जिम कुसुम वनें परिमल बहके, जिम चंदन सुगंधनिधि ॥ जिम गंगाजल लहेरें लहके, जिम कणयाचल तेजें झ लके, तिम गोयम सौजाग्यनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे हं सा, जिम सुरवर सिरि कणयवतंसा, जिम महुयर राजीववनी ॥ जिम र यणायर रयणें विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुणके लिवनी ॥ ३९ ॥ पूनिम निशि जिम ससिहर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जग मोहे, पूरव दिशि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवर राजे, नरवइ घर जिम मयगल गाजे, तिम जिनशासनमुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम सुरतरुवर सोहे शाखा, जिम उत्तम मुख मधुरी जाखा, जिम वनके तकी महमहे ए ॥ जिम जूमिपति जुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, तिम गोयम लब्धिहिं गहगहे ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढीउं आज, सुरतरु सारे वंछित काज, कामकुंज सवि वस हुआ ए ॥ कामगवी पूरे मनकामिय, अष्ट महासिद्धि आवे धामीय, सामी गोयम अणुसरी ए ॥ ४२ ॥ पणवरकर पहेलो पजणीजें, मायाबीज श्रवण निसुणीजें, श्रीम ती शोजा संजवे ए ॥ देवहधुरि अरिहंत नमीजें, विनयपहु उवज्झाय थुणी जें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ पुरपुर वसतां कांइ करीजे, देश दे शांतर कांइ जमीजें, कवण काज आयास करो ॥ प्रह ऊठी गोयम सम रीजें, काज समग्रह (सुमंगल) ततखण सीजे, नवनिधि विलसे तास घरे ॥ ४४ ॥ चउदह सय बारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसें, " खंज नयर सिरि पास पसायें " कियुं कवित उपगार करो ॥ आदें मंग ल एह पजणीजें, परव महोछव पहिलो कीजें, रिद्धि वृद्धि कल्लाण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिणें उयरें धरिया, धन पिता जिण कुल अवतरि

या, धन सह गुरु जिणे दिकिया ए ॥ विनयवंत विद्या नंमार, जस गुण पुहवी न लन्ने पार, वड जिम शाखा विस्तरो ए ॥ ४६ ॥ गौतमस्वामी नो रास नणीजें, चउविह संघ रलियायत कीजें, सकल संघ आणंद करो ॥ कुंकुम चंदन ढडो देवरावो, माणक मोतीना चोक पूरावो, रयण सिं हासण बेसणो ए ॥ ४७ ॥ तिहां बेशी गुरुदेशना देशे, नविक जीवनां काज सरीसे, उदयवंत मुनि इम नणे ए ॥ गौतमस्वामी तणो ए रास, नणतां सुणतां लील विलास, सासय सुखनिधि संपजे ए ॥ एह रास जे नणें नणावे, वरमंगल लच्छि घर आवे, मनवंछित आशा फले ए ॥ ४८ ॥ इति श्रीगौतमस्वामिनो रास संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री प्रनातसमयें मंगलाचार ॥

॥ श्लोक ॥ मंगलं नगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्रनुः ॥ मंगलं स्थूल नद्राद्या, जैनो धर्मोऽस्तु मंगलं ॥ १ ॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वानीष्टार्थ दायिने ॥ सर्वलब्धिनिधानाय,गौतमस्वामिने नमः ॥२॥ अक्षीणमहानसी लब्धिः,केवलश्रीः करांबुजे ॥ नामलक्ष्मीर्मुखे वाणी,तमहं गौतमं स्तवे ॥३॥

॥ दोहरा ॥ एक जंबू जग जाणीयें, बीजा नेम कुमार ॥ त्रीजा वयर व खाणीयें, चोथा गौतम गणधार ॥१॥ अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणो नं मार ॥ ते गोयम गुरु समरियें, वांछित फल दातार ॥ २ ॥ पुंमरीक गोय म पमुह, गणहर गुण संपन्न ॥ प्रह उठी नित्य प्रणमियें, चउदहसें बाव न्न ॥ ३ ॥ बोरस किमरस किन्नरस, चोथा जसोनद्रसूरि ॥ त्रिणे कालें स मरतां, डुरिय पणासे दूरि ॥ ४ ॥ जे चारित्रें निर्मला, ते पंचायण सिंह ॥ विषय कषाय ने गंजिया, ते समरो निशदीह ॥ ५ ॥ गाम तणे पैसार णे, गोयम गुरु समरंत ॥ इछा नोजन घर कुशल, लछी लील करंत ॥ ६ ॥ इति मंगलाचार समाप्त ॥

॥ अथ श्रीगौतमाष्टक छंद प्रारंन ॥

॥ चोपाइ ॥ वीर जिणेसर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो निशदीश ॥ जो कीजें गौतमनुं ध्यान, तो घर विलसे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामें गिरिवर चढे, मन वंछित हेला संपजे ॥ गौतम नामें नावे रोग, गौतम ना में सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंकडा, जस नामें नावे ढूकडा ॥ नूत प्रेत नवि मंमे प्राण, ते गौतमनां करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामें

निर्मल काय, गौतम नामें वाधे आय ॥ गौतम जिनशासन शिणगार, गौतम नामें जय जय कार ॥४॥ शाल दाल सुरहां घृत गोल, मन वंछित कापड तंबोल ॥ घरे सुघरणी निर्मल चित्त, गौतम नामें पुत्र विनीत ॥५॥ गौतम उदयो अविचल जाण, गौतम नाम जपो जग जाण ॥ मोटां मंदिर मेरु समान, गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोडानी जोड, पहोचे वारु वंछित कोड ॥ महियल माने मोहोटा राय, जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम नरनी संगति मले ॥ गौतम नामें निर्मल ज्ञान, गौतम नामें वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे बहु ॥ कहे लावण्य समय कर जोड, गौतम तूठे संपत कोड ॥ ९ ॥ इति गौतमाष्टकछंद संपूर्ण ॥

शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ब्राह्मी चंदनबालिका भगवती राजीमती द्रौपदी, कौशल्या च मृगावती च सुलसा सीता सुभद्रा शिवा ॥ कुंती शीलवती नलस्य दयिता चूला प्रभावत्यपि, पद्मावत्यपि सुंदरी दिनमुखे कुर्वंतु वो मंगलं ॥ १ ॥ अहिमगुर्हिमगुर्धरणीसुतो, बुधबृहस्पतिदानवपूजिताः ॥ रविजराहुसकेतुनवग्रहा, विदधतां सततं मम संपदं ॥ २ ॥ श्लोक ॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीगौतमस्वामीनो लघुरास प्रारंभ ॥

॥ श्रीगौतम गुरु परभात धुरें, समरो भविकाजन ! चित खरे ॥ कर कमला कमला सुपरे, श्रीवीर जिनेश्वर शीश शिरे ॥ १ ॥ अष्टापद चढिया लब्धि बलें, जिन पडिमा वंदि अकल कलें ॥ तापस पन्नरसें तिन्न मले, प्रतिबोध्या वयणरसें निश्चले ॥ २ ॥ अक्षीण महानसीलब्धि घणी, पंचामृत परिगल अन्न मुणी ॥ करिय पारणुं वात बणी, केवल सिरि आपिय तास भणी ॥ ३ ॥ जस शिर गौतम हाथ दिये, सोय केवल पदवी ताम लिये ॥ वाणी सुधारस जेह पिये, उत्तम फल मुगति तरत लिये ॥ ४ ॥ प्रणव अक्षर पहिलो राजें, माया बीज मंत्र महिमा काजे ॥ श्रीकर गौतम गुरुगुण गाजे, जपतां जुगतें संकट भांजे ॥ ५ ॥ कामधेनु सुरतरु संगें, चिंतामणि चिंतित दे रंगे ॥ नामाक्षर गौतम चंगें, ध्याता होय दिन प्रत्यें सुख अंगें ॥ ६ ॥ इंद्रभूति जस नाम कह्यो, वसुभूति पिता तुम्हे चतुर

लहो ॥ पृथवी माता गुण संग्रहो, गौतम गुरु गोत्रीनी आण वहो ॥ ७ ॥ अरि करि हरि सवि वश थाए, वली रान वेलाउल शुनदाए ॥ रोग शोग आपद जाए, गौतम गुरुना जे गुण गाए ॥ ८ ॥ शाकण माकण दूर टले, वीलडियां प्रीतम आवी मले ॥ नूत प्रेत कबहीं न छले, गौतमनामें सवि आश फले ॥ ए ॥ श्रीगौतम नामें रूप कला, गज रथ वर पायक हय सुजला ॥ गाम गाम जस मान नलां, मृगनयणी गय गमणी महिला ॥ ॥ १० ॥ मृगमद चंदन वस्त्र धरे, सुत सोहग सुंदर सुजस वरे ॥ कंचन मणि मोतीय रयण नरे, गौतम नामें सब काज सरे ॥ ११ ॥ वचन विलास विद्या आवे, मन रुचतां नोजन सवि पावे ॥ दुःख दारिद्र कबहीं नावे, गौतम गुरु जस हियडे नावे ॥ १२ ॥ पाप सकल वेगें नासे, नित ध्यान धरो मन उल्लासें ॥ श्रीगौतम गुरु पूजो वासें, गणी विजयशेखर कहे-सुविलासें ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तोत्र ॥

॥ जय जगत तारण दुरकवारण सुरककारण जगधणी, परम नाव विलासि सहेजानंद सिद्ध महा गुणी ॥ जिन नाम जपीयें पाप खपीयें लहियें कमला अतिघणी, प्रनु अजर अमर निकलंक निरुपम आतमऋद्धि तणा धणी ॥ १ ॥ उत्पाद व्यय ध्रुव नाव नावित द्रव्य षट जगमां रह्या, ते सकल केवल ज्ञान दर्शन नावथी परगट लह्या ॥ नोग्य नोक्ता नाव तादारे आत्मनावें अति घणो, तुज ज्ञान ज्ञेयाकार प्रणमे पार लहे कुण तेह तणो ॥२॥ षट द्रव्यना पर्याय तुह्ना स्वपरज्ञेय जे तादृश, जे कह्या प्रतिपर्यवि इणिपरे कल्पनाष्य मांहे लह्या ॥ जे ज्ञेयाकारें ज्ञान प्रणमे एह पण तुज परिणती, नयपद्म नावें तास चर्चा कोण जाणे तनुमती ॥ ३ ॥ समयांतर वर ज्ञान दर्शन रमण जे प्रनु तुं करे, तेहथि चिद्आनंद संतति, सादिनंत स्थिति धरे ॥ अकलरूप कलि शके कोण तादृशुं त्रिनुवन धणी ॥ तिणे प्रथम अंगे अपदने पद निषेधे गणधर गणी ॥ ४ ॥ तुं नही अरूपी नही रूपी रूपारूपी पण नही, तुं नही वाच्य अवाच्य नावे वाच्यावाच्यें छे सही ॥ तादृश पद पुण्य सेवि विजय ते जगमां लहे, इम पास प्रनुनो सुजस रंगें, कवि हेमसिंधु कहे ॥ ५ ॥

अथ

॥ श्री स्वरूपचंदजी कृत चोवीशी प्रारंभ ॥

तत्र प्रथमं

॥ श्रीऋषभजिनस्तवनं ॥

॥ बेडले भार घणो छे राज, वातां केम करो छो ॥ ए देशी ॥ ऋषभ जिनेसर दरिशण दीजें, मुजपर करुणा कीजें ॥ सेवकनें मन वंछित देजें, अजर अमर पद दीजें ॥ वंछित पूरो रे साहेबजी सेवकनो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ तुज मुख दरिसण मुज मन हरख्यो, मुजनें प्रभुजी मलियो ॥ शिवसुख वंछा पूरण मानुं, अंगण सुरतरु फलियो ॥ वंछि० ॥ २ ॥ आदि पुरुष श्रीआदिजिनेसर, युगला धर्मनिवारी ॥ त्रिभुवन मांहे जिनजी सरिखो, नही कोइ उपगारी ॥ वंछि० ॥ ३ ॥ विनीता नगरी शोभे रूडी, कुलधर नाभि बिराजे ॥ राणी मरुदेवी कूखेंथी, जनम प्रभुजीनो छाजे ॥ वंछि० ॥ ४ ॥ यौवनवय समरथ गुण संपद, प्रथम राय कहाया ॥ दान संवत्सरी देइ जनने, संयम लीए सुख दाया ॥ वंछि० ॥ ५ ॥ लाख चोरासी पूरव आयु, पाली सधाव्या मुगतें, केवल कमला लील विलासी, स्वरूपचंद सुख युगतें ॥ वंछि० ॥ ६ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय श्रीअजितजिन स्तवनं ॥

॥ श्रीपंचासरो पासजी रे लाल ॥ ए देशी ॥ शुभभावें करी सेवियें रे लाल, बीजा अजित जिणंद ॥ भवि पूजो रे ॥ मंगलमाला जेहथी रे लाल, होवे अतिहि आणंद ॥ भवि पूजो रे ॥ वंदना माहरी जाणजो रे लाल ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अयोध्या नगरी भली रे लाल, जितशत्रु नृप तात ॥ भ० ॥ अजितजिनेसर जनमीया रे लाल, विजया राणी मात ॥भ० ॥ वंदना० ॥ २ ॥ इक्ष्वाग वंशे उपता रे लाल, देव सकल शिरदार ॥भ०॥ पूरवदिशि जेम उगीयो रे लाल, दिनकर तेज अपार ॥ भ० ॥ वंद० ॥ ॥ ३ ॥ देव दूजो नही एहवो रे लाल, समोवड इणे संसार ॥ भ० ॥ तसपद भक्ति भलीपरें रे लाल, भाव सहित चित्त धार ॥ भ० ॥ वंद० ॥४॥ लटभवथी भमरी हुवे रे लाल, भमरी भय संभार ॥ भ० ॥ मनसमरण महाराजनुं रे लाल, करतां लहे भवपार ॥ भ० ॥ वंद० ॥ ५ ॥ जिनजी

यें जेम जीतीया रे लाल, राग रोष रिपुसेन ॥ ज० ॥ जीतीयें तास सहा यथी रे लाल, लहीयें शिवसुख चेन ॥ ज० ॥ वंद० ॥ ६ ॥ एम जाणी जिनराजनी रे लाल, इव्य जाव जरपूर ॥ ज० ॥ पूजा परमातम तणी रे लाल, आपे सुख ससनूर ॥ ज० ॥ वंद० ॥ ७ ॥ निजपद दायक जिन तणी रे लाल, धारो अखंमित आण ॥ज०॥ स्वरूपचंद जावें करी रे लाल, एम पयंपे वाण ॥ ज० ॥ वंद० ॥ ८ ॥ इति ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय श्रीसंजवजिन स्तवनं ॥

॥ राजा जो मले ॥ ए देशी ॥ संजव सुखकर त्रीजा देव, जेहनी सुर नर सारे सेव ॥ जिन वंदीयें ॥ अंतरगत दर्शी जिन राय, जाणे जीवतणा अजिप्राय ॥ जि० ॥ १ ॥ शिवगति समरण कीजें नित्य, सेना सुत ध्या वो निजचित्त ॥ जि० ॥ अतिशय अर्जित वर्जित पाप, समता गुण टा ले जव ताप ॥ जि० ॥ २ ॥ जवजल तारण जुवन प्रदीप, नेहशुं रहीयें नित्य समीप ॥ जि० ॥ क्षमा विनय रुजुता संतोष, धारीने कीजें गुण पो ष ॥ जि० ॥ ३ ॥ तप संयम सत्य शौच विशेष, अकिंचन ब्रह्मचर्य अशे ष ॥ जि० ॥ पाली दशविध धर्मनो साथ, टाली कर्म तस्यो जवपाथ ॥ जि० ॥ ४ ॥ पुत्रजितारी पुत्र जवांत, पाम्या शिवरमणी सुख कांत ॥ जि० ॥ पुण्यपुराकृत नरजव लब्ध, स्वामी जजन करी करो शुद्ध ॥ जि० ॥ ५ ॥ धर्म अर्थ काम ए त्रण वर्ग, साधनथी लहीयें अपवर्ग ॥ जि० ॥ सौजाग्य चंद मुनींदसुशीश, स्वरूपचंद नमे जगदीश ॥ जि० ॥ ६ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ श्री अजिनंदनजिन स्तवनं ॥

॥ सिद्धचक्रपद वंदो ए देशी ॥ हिमवंत गिरि शिर पद्म इहथी, सुरतटि नी प्रगटी ले ॥ पूरव दिशि एक पावन करती, पूरण जल ऊमटी ले रे ॥ ज विका जिनमुख वाणी सुण जो, तमे त्रिपदीनो विस्तर गणजो रे ॥ ज० ॥ जि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सुरनदीयें दिशि त्रण उवेखी, अजिनंदनजिन देखी ॥ त्रिगडे मध्य सिंहासन पेखी, चिहुंदिशि सरखी लेखी रे ॥ ज० ॥ जि० ॥ २ ॥ कंचन तनु हिमगिरि मन आणो, मुख पद्मइह जाणो ॥ चिहुं मुखें तेह इह तटथी वाणी, गंगा प्रवाह वखाणो रे ॥ ज० ॥ जि० ॥ ॥ ३ ॥ पूर्वादि दिशि कीध पवित्रा, करवा वचन विलास ॥ नय गम जंग प्रमाण सकारण, हेतु आहरण उल्लास रे ॥ ज० ॥ जि० ॥ ४ ॥ चउग

ति वारण शिवसुख कारण, जाणी सुर नर तिरिया ॥ नाव कल्लोलमां स्नान रमणता, करता नवजल तरिया रे ॥ न० ॥ जि० ॥ ५ ॥ ते जिन वाणी अमीय समाणी, परमानंद नीसाणी ॥ सोनाग्यचंद्र वचनथी जाणी, स्वरूप चंदें मन आणी रे ॥ न० ॥ जि० ॥ ६ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम श्रीसुमतिजिन स्तवनं ॥

॥ मोहना मोति द्यो हमारो ॥ ए देशी ॥ अतुली बल अरिहंत नमीजें, मन तनु वचन विकार वमीजें ॥ श्रीजिनकेरी आण वहीजें, तो मनवंछित सहेजें लीजें ॥ सेवीयें नवि सुमति जिणंदा, टालीयें नवफंदा ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अशुनाश्रवनो संग न कीजें, समकित शुद्ध सुधारस पीजें ॥ अनय सुपत्त दान दोय दीजें, निजगुरुनी नली नगति वदीजें ॥ से० ॥ टा० ॥ २ ॥ सुमतिजिनेसर सुमति जो आपे, जिन दरिशनथी दुर्गति कापें ॥ नाम जपो अष्टोत्तर शत जापें, मोह तिमिर हरो तपरवि तापे ॥ से० ॥ टा० ॥ ३ ॥ त्रिकरण शुद्ध नवविध निर्दूषण, पहेरो शील सलील विनूषण ॥ संशयथी नित्य रहीयें लूखा, जब लगें नन्न अवगाहे पूरखा ॥ से० ॥ टा० ॥ ४ ॥ धर्मनो काम ते नावशुं कीजें, गुरु मुख वचन विनय करी लीजें ॥ नव समुद्र तरवो वांछीजें, जड चेतन बेहु निन्न लखीजें ॥ से० ॥ टा० ॥ ५ ॥ पंचमगति गामी प्रनु पाया, सवि कारज सीधां दिल नाया ॥ सोनाग्यचंद्र गुरु सुपसाया, स्वरूपचंदें जिनना गुण गाया ॥ से० ॥ ६ ॥

॥ अथ षष्ठ श्रीपद्मप्रनजिनस्तवनं ॥

॥ श्रीशीतलजिन नेटीयें ॥ ए देशी ॥ श्रीपद्मप्रनजिन राज जी, तनु रक्त कमलसम वान हो ॥ ज्ञान अनंत सुजाणता, दृग करुणा गेह समान हो ॥ श्रीपद्म० ॥ १ ॥ केवल दर्शने देखीने, कहे लोक अलोकनी वात हो ॥ समयांतर उपयोगथी, साकार अनाकार जात हो ॥ श्रीपद्म० ॥ २ ॥ नाविनूत नविष्यनी, नवि आगल कहे जगनाथ हो ॥ चउमुखें वाणी प्ररूपता, तारण कारण नव पाथ हो ॥ श्रीपद्म० ॥ ३ ॥ पुष्कर मेघ थकी नली, बोधि अंकुररोपण हार हो ॥ श्रद्धा नाषण रमणता, मूलकंद खंद निरधार हो ॥ श्रीपद्म० ॥ ४ ॥ सम संवेग निरवेदता, अनुकंपा अने आस्तिक्य हो ॥ शाखा चार अने नलो, ऊर्ध्व शाखा ते विडिम आधिक्य हो ॥ श्रीपद्म० ॥ ५ ॥ पत्र संपत्ति सुख रूपीया, सुर सुख वे तेहमां फूल

हो ॥ फल शिवसुख पामे नवि, जिहां अक्षय स्थिति अनुकूल हो ॥ श्री पद्म० ॥ ६ ॥ नाव मेंघ बहु गुण जाणीयें, जिनवाणी सकल मल शोध हो ॥ वाणी नवनिस्तारिणी, ते सुणी पाम्यो प्रतिबोध हो ॥ श्रीपद्म० ॥ ॥ ७ ॥ ते उपकारी त्रिलोकने, आपे अविचल सुखवास हो ॥ सौभाग्य चंद्र पसायथी, कहे स्वरूपचंद्र गुण नास हो ॥ श्रीपद्म० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ सप्तम श्रीसुपार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ दक्षिण दोहिलो हो राज ॥ ए देशी ॥ श्रीजिन सातमो राज, स्वामी सुपासजी राज, तेहनुं दरिसण हो लहीयें पूरण पुण्यथी ॥ प्रभु शुभ ध्यानी हो राज, समकित दानी हो राज, शोभा अधिकी हो कहीयें सुरनर अन्यथी ॥ १ ॥ जगतशिरोमणी राज, वास जिणंदनो राज, नमीयें तेहनें रे शुद्ध भावित भक्तिथी ॥ जिन प्रतिमाने हो राज, रूपविधाने हो राज, पूजो प्रणमो हो ध्यावो शुभखर युक्तिथी ॥ २ ॥ वंछितकाजें हो राज, स्वामी निवाजे हो राज, ते जिन आपे हो रूडी शिवपुर संपदा ॥ जस मुख दीठे हो राज, पातक नीठे हो राज, नामें नावे हो दारिद्र दोहगता कदा ॥ ३ ॥ बाह्य अभ्यंतर हो राज, शुभ गुण शोभता राज, सहस्सअठोत्तर हो आपे अनंत गुणाकरा ॥ दोष न दीसे हो राज, अढार अनेरा राज, निजगुण निर्मल हो भासे जेम निशाकरा ॥ ४ ॥ नयरी वणारसी हो राज, रयणे उल्लसी राज, तिहां प्रभु जन्म्या हो स्वामी नर सुर इंदना ॥ सौभाग्यचंद्रनो राज, सेवक बोले जी राज, स्वामी साची हो मानो स्वरूपनी वंदना ॥ ५ ॥ इति सुपार्श्वजिन स्तवनं ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम चंद्रप्रभजिन स्तवन ॥

॥ आछे लालनी देशी ॥ चंद्रप्रभ जिनराज, मनमोहन महाराज ॥ आछे लाल, अतिशयपति जिन आठमो जी ॥ सकल कुशलनी वेल, प्रततन मंगलकेल ॥ आ० ॥ वरपुष्कर जलधर समो जी ॥ १ ॥ डुरित तिमिर विध्वंस, निरमल गयणे हंस ॥ आ० ॥ ज्ञानावरण निवारवा जी ॥ सागर कोडाकोड, त्रीश वडिथति जोड ॥ आ० ॥ क्षय करी केवल धारवा जी ॥ २ ॥ सुरतरुवर उपमान, आपण मोक्ष निदान ॥ आ० ॥ नरसुर सुख अनुक्रमें लहि जी ॥ भवजल सायर तार, पोहोचावण परपार ॥ आ० ॥ मुक्ति गमन प्रवहण सही जी ॥ ३ ॥ सुखसंपत्ति गुण हेत, शशिलंछन त

नु श्वेत ॥ आ० ॥ चंद्रप्रजजिन जगपति जी ॥ मन तनु वचन एकत्व, करी ध्यार्ड निज तत्त्व ॥ आ० ॥ जिम पामो पंचम गति जी ॥ ४ ॥ ताप हरण जिमचंद, जिम तम हरण दिणंद ॥ आ० ॥ तिम जवहर जिन संजवे जी ॥ सौजाग्यचंद गुरु राय, पामी तास पसाय ॥ आ० ॥ स्वरूप चंद इम वीनवे जी ॥ ५ ॥ इति चंद्रप्रजजिन स्तवनम् ॥

॥ अथ नवम श्रीसुविधिजिन स्तवनं ॥

॥ हवे न जार्ड मही वेचवा रे लो ॥ ए देशी ॥ साहेब सुविधि जिणंदने रे लो, पूजो धरी मन खंत ॥ शुजजावथी रे,चालो जइयें जिन वांदवा रे लो ॥ उजम आणी अंगमां रे लो, आलस मूको दिगंत ॥ शु० ॥ १ ॥ ॥ चा० ॥ चरण पावन थाये चालतां रे लो, दरिसणे नयन पवित्र ॥ सु०॥ पंचाजिगमन संजारीने रे लो, निसिहि त्रिकरण विचित्र ॥शु०॥२॥ चा०॥ शिर नामी कर जोडीने रे लो, वंदन करो एकचित्त ॥ शु०॥ द्रव्य जाव तव साचवी रे लो, शुद्ध करो समकित्त ॥ शु०॥ ३ ॥ चा०॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी रे लो, तेहमां नही संदेह ॥ शु०॥ तेहनी जक्ति कस्या थकी रे लो, लहियें सुख अछेह ॥ शु० ॥ ४ ॥ चा० ॥ शोजनविधि सुविधि प्रजु रे लो, मकर लंछन महाराय ॥ शु० ॥ दीजें सौजाग्य पद सेवतां रे लो, आत्म स्वरूप पसाय ॥ शु० ॥ ५ ॥ चा० ॥ इति सुविधि जिनस्तवनं ॥ ८ ॥

॥ अथ दशम श्रीशीतलजिन स्तवनं ॥

॥ घोडी तो आइ थारा देशमां मारु जी ॥ ए देशी ॥ श्रीशीतलजिन सेवियें जविप्राणी, तार्थे बहुत सुख होय हो मनमान्यों, जिणंद मेरे एह हो सुखदानी ॥ ए आंकणी ॥ बार जांतिकी निर्ज्जरा ॥ जवि० ॥ करिके जवतोय हो ॥ मन० ॥ १ ॥ सादि अनंत जांगे रह्यो ॥ ज० ॥ ज्योतिमयी गत देह हो ॥ मन० ॥ केवलयुग सुख वीर्यनो ॥ ज० ॥ अनंतपणाथी अछेह हो ॥ म० ॥ २ ॥ जिनके वचन सबही सुने ॥ ज० ॥ खीरोदधिके तरंग हो ॥ म० ॥ ज्योंपणि घट जल लेइके ॥ ज० ॥ राखे निजघट संग हो ॥ म० ॥ ३ ॥ वरणावरणी जल जयो ॥ ज० ॥ तब न ग्रहे कोंज उर हो ॥ म० ॥ त्युं वाणी जिनमुख वदी ॥ ज० ॥ धारे सबमत चोर हो ॥ म० ॥ ४ ॥ आप आपना मत थापके ॥ ज० ॥ न्यारे न्यारे कहे जेद हो ॥ म० ॥ करनी न्यारी बतायके ॥ ज० ॥ नय षट न्यारे वेद

हो ॥ म० ॥ ५ ॥ सघरे इछत सिद्धिकों ॥ ज० ॥ जों नूले नगरको पंथ हो ॥ म० ॥ ताहिमें जीवदया बडी ॥ ज० ॥ जो बरनत निर्ग्रंथ हो ॥ म० ॥ ६ ॥ ताथें जिनपद पाइयें ॥ ज० ॥ दशम जिनेंद्रके नक्त हो ॥ म० ॥ सौनाग्यचंद दया नखे ॥ ज० ॥ स्वरूपचंद सुख युक्त हो ॥ म० ॥ ७ ॥

॥ अथ एकादश श्रीश्रेयांस जिन स्तवनं ॥

॥ हो हलधरजी हवे केम करवुं नेम पराक्रम महोटुं ॥ ए देशी ॥ हो जिनवरजी निजदरिसण देखाडी प्रीत सुधारीयें, तुम दरिशण वे नवनय हरणो, आठ कर्मजलधी तारण तरणो, संसारीने शिवसुख करणो ॥ हो जिन० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मुनिश्रावक धर्म दुविध नाख्यो, ते नव्यज नो आगल दाख्यो, तेणे तुज वचनें अमृत चाख्यो ॥ हो जिनवरजी, निजवाणी संनलावी समकित आपीयें ॥ २ ॥ जे हुंता पाप तणा कारी, ते तें ताख्या बहु नर नारी, तुज सम नही कोइ उपगारी ॥ हो जिनवरजी, निजकर अवलंबावी तारक तारियें ॥ ३ ॥ तुं अध्यातम सूरज उदयो, तव मोहादिक तम दूर गयो, नवि मनमां ज्ञान प्रकाश थयो हो जिनवरजी, मन उदयाचल बेसी मिथ्यात निवारीयें ॥ ४ ॥ तुज वदन कमल दरिसन प्यारो, तिहां मन मधुकर मोह्यो माहारो, क्षण एक तिहांथी न रहे न्यारो ॥ हो जिनवरजी, अवलोकन नित्य तेहनो मुजनें दीजीयें ॥ ५ ॥ धरणिंद सहस्स मुखशुं नाखे, ताहरा गुण नित्य नवला दाखे, तोहे पार न लहे गुणनो लाखे ॥ हो जिनवरजी,अनंत गुणात्मक तुं सोहे गुण ताहरा ॥ ६ ॥ सौनाग्यचंद गुरुनो शीश, कहे स्वरूपचंद अहो जगदीश, श्रेयांसपणु दीउ सुजगीश ॥ हो जिनवरजी,नाम श्रेयांस तुमारुं समरुं ध्यानमां ॥ ७ ॥

॥ अथ द्वादश श्रीवासुपूज्यजिनस्तवनम् ॥

॥ धोबीरी बेटी तीखारे नयणारो पाणी लागणो,मारुडो रह्यो रे लोनाय॥ ए देशी ॥ जिणंदराया सुगुण सुखाकर सुंदरू, केवलज्ञान नंमार ॥जिणं०॥ मोह अंधार निवारवा, समरथ तुं दिनकार ॥ जिणंद० ॥ १ ॥ जिणं० ॥ वासुपूज्य मुफ वालहो, दृढमन रह्यो रे लोनाय ॥ ए आंकणी ॥ जिणं०॥ धर्मधुरंधर धन्य तुं, नरतक्षेत्र मफार ॥ जिणं० ॥ बोधबीज वाव्ये वचनशुं, नविमन क्यारा उदार ॥ जिणं० ॥ २ ॥ जिणं० ॥ सुमति सहित सहु सम केती, पाले निजव्रत सार ॥ जिणं० ॥ संवर वाडी नली करे, रहे अप्रमत्त

आचार ॥ जिणं० ॥ ३ ॥ जिणं० ॥ आश्रव स्वापद वारता, धारता जिन वर आण ॥ जिणं० ॥ शील सुधारस सींचता, लहे चेतन गुणखाण ॥ जिणं ॥ ४ ॥ जिणं० ॥ पाम्यो ते दरिसण यदा, जाण्यो तदा शिवशर्म ॥ जिणं० ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, वाऱ्यो चित्तथी नर्म ॥ जिणं० ॥ ५ ॥ जिणं० ॥ अप्पडिवाइ दीजीयें, दरिशण दोलत दान ॥ जिणं० ॥ सौनाग्य चंद स्वरूपनें, वल्लन तुज गुणगान ॥ जिणं० ॥६॥ इति वासुपूज्यजिनस्तवनम् ॥

॥ अथ त्रयोदश श्रीविमलजिन स्तवनं ॥

॥ झुंबखडानी देशी ॥ विमल विमलगुण राजता, बाह्य अन्यंतर नेद ॥ जिणंद जुहारीयें ॥ सूची पुला दृष्टांतथी, मनवच काय निवेद ॥ जि० ॥ ॥ १ ॥ स्पष्ट बद्ध निधत्तते, निकाचित अतिशेष ॥ जि० ॥ आतमप्रदेश मांहे मल्या, मल ते कर्म प्रदेश ॥ जि० ॥२॥ असंख्य प्रदेशी चिन्मयी, चेतन गुण संनार ॥ जि० ॥ प्रदेशें प्रदेशें रमी रही, वर्गणा कर्म अपार ॥ ॥ ३ ॥ पंच रसायन नावना, नावित आतम तत्त्व ॥ जि० ॥ उपलता ढांकी कनकता, पामे उत्तम सत्व ॥ जि० ॥ ४ ॥ प्रथम नावना श्रुत तणी, बीजी तप तीय सत्व ॥ जि० ॥ तुरीय एकता नावना, पंचम नाव सुतत्व ॥ जि० ॥ ५ ॥ एम करी सर्व प्रदेशनें, विमल कस्या जिनराय ॥जि०॥ नाम यथार्थ विचारीनें, नमे स्वरूप नित्य पाय ॥ जि० ॥ ६ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ चतुर्दश श्रीअनंतजिन स्तवनं ॥

॥ हांरे लाल रामपुरा बाजारमां ॥ ए देशी ॥ हांरे लाल चतुरशिरोमणि चौदमो, जिनपति नाम अनंत मेरे लाल ॥ गुण अनंत प्रगट कस्यां, कस्यो विनावनो अंत ॥ मेरे लाल ॥ चतुर शिरोमणी चित्त धरो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ हांरे लाल चार अनंता जेहना, आतम गुण अनिराम ॥ मे० ॥ ज्ञान दर्शन सुख वीर्यता, कर्में रुंध्या गाम ॥ मे० ॥ च० ॥ २ ॥ हांरे लाल चतुर धरो निजचित्तमां, ए जिनवरनुं ध्यान ॥ मे० ॥ अरथी अरथनिवासनें, सेवे धरी बहु मान ॥ मे० ॥ च० ॥ ३ ॥ हांरे लाल ज्ञानावरणी क्षय करी ॥ लह्युं अनंतुं ज्ञान ॥ मे० ॥ दर्शनावरण निवारतां, दर्शन अनंत विधान ॥ मे० ॥ च० ॥ ४ ॥ हांरे लाल वेदनीय विगमें थयुं, सुख अनंत विस्तार ॥ मे० ॥ अंतराय उल्लंघतां, वीर्य अनंत उदार ॥ मे० ॥ च० ॥ ५ ॥ हांरे लाल इम अनंत निज नामनी, थिरता थापी देव

॥ मे० ॥ जिम तरस्यां सरवर नजे, तिम स्वरूप जिन सेव ॥ मे०॥च०॥६॥

॥ अथ पंचदश श्रीधर्मजिन स्तवनं ॥

॥ शेत्रुंजागिरिना वासी रे मुजरो मानजो रे ॥ ए देशी ॥

॥ धर्मजिणंदने ध्यावो ध्यानमां रे, जास वडाइ ढे केवल ज्ञानमां रे ॥ जिनजीयें नांख्या नीव अनेक, ते सांनलतां आवे हृदय विवेक, नक्तवत्सल प्रनु अमने नवजल तारसे रे ॥ १ ॥ धर्म कह्यो ढे रे वस्तु स्वनावनें रे, वस्तु प्रकाशे रे इव्य बनावनेंरे ॥ चरथिर अवगाहन परिवर्त्ति, पूरण गलण चेतन गुण कीर्त्ति, एहवा नावने धर्म वखाणीउ रे ॥ २ ॥ पांच अनेरा रे आतम इव्यथी रे, तेहनो ज्ञाता रे चेतन नव्यथी रे, तस परिचय करतां सत्त्व, पामे परमार्थिक निजतत्त्व ॥ तेहनो रे लान अपार सुखंकरु रे ॥३॥ जीव संसारी रे ते निज धर्मने रे,निजचिंतवतो रे लहे शिव शर्मने रे ॥ इव्यथी गुण पर्याय विशेष, तन्मय थातां कार्य अशेष, साधक साधे साधनें साध्यने रे ॥ ४ ॥ चेतना दोय साकारने परा रे, अनाकार अवगमदृग आगरा रे ॥ प्रत्यक्ष नासें लोक अलोक, नासे नवभ्रमणानो शोक, जिनजिने सेव्यां रे सवि सुख संपजे रे ॥ ५ ॥ एहवा अतिशय धर्मजिणंदना रे, ते अनुमोदे रे वृंद मुणिंदनां रे ॥ ते लहे सुख सौनाग्य सहेत, अनिनव चंइकला समवेत, आपो आतम शक्ति स्वरूपने रे ॥ ॥ ६ ॥ इति धर्मजिन स्तवनं ॥ १५ ॥

॥ अथ षोडश शांतिजिन स्तवन ॥

॥ गोरी बिन अवगुण किम ढोरी ॥ ए देशी ॥ सेवो नवि शांतिजिणंद सनेहा, शांतरस गेहा ॥ समामृत गेहा ॥ सेवो शांति जिणंद सनेहा ॥ ए आंकणी ॥ राग द्वेष नव पाप संतापित, त्रिविध तापहर मेहा ॥ माया लोन राग करी जानो, द्वेष क्रोध मद रेहा ॥ से० ॥ १ ॥ अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यानी, पच्चरकाण संजल ढेहा ॥ निज अन्योन्य सदृशथी चउसठ, संख्या वासित देहा ॥ से० ॥ २ ॥ नोकषाय नव हास्य अरति रति ॥ शोक जुगुप्स नय रेहा ॥ मन वच काय तपावत तायें ॥ कहियें ताप अढेहा ॥ से० ॥ ३ ॥ जैसे वनदव तरु गण बाले, त्यों अंतरगत एहा ॥ खम सम दम उपशम शीतलता, करि जल लहेरी लेहा ॥ से० ॥ ४ ॥ आ

तमराय राज्य अनि संच्यो, पूजित त्रिजुवन गेहा ॥ तुम सिर छत्रकी गह अमासिर, द्यो स्वरूप अनुपेहा ॥ से० ॥ ५ ॥ इति शांतिजिन स्तवन ॥

॥ अथ सप्तदश कुंथुजिन स्तवन ॥

॥ ऋषजजिनेसर प्रीतम माहरो रे ॥ ए देशी ॥ कुंथुनाथ सतरमा जिनपति जी, कुंथु तणा पण नाथ ॥ ते जिन जव्य सामग्रीवंतने जी, साचो शिवपुर साथ ॥ १ ॥ श्रीदेवीसुत गुण संजारीयें जी, मनकज कोश निवास ॥ मनमधुकर जिन पदकज कर्णिका जी, वासी लहो सुखवास ॥ श्रीदेवी० ॥ २ ॥ योग खेमंकर गुण छे नाथमां जी, कुंथु उपर पण एम ॥ अप्रापकने प्रापक योग छे जी, प्राप्तरक्षण गुणखेम ॥ श्रीदेवी० ॥ ३ ॥ लौकिक नाथ महिपतिने कह्यो जी, ते ए अरथ प्रमाण ॥ लोकोत्तर ज्ञानादिक गुण तणो जी, दायक रक्षक जाण ॥ श्रीदेवी० ॥ ४ ॥ ते गुणनो अनिलाषी आतमा जी, सेवे श्रीजगनाथ ॥ जिन जी तेहने मधु माधव परें जी, आपे अद्भुत आथ ॥ श्रीदेवी० ॥ ५ ॥ तिम हुं कुंथुजिनेंद उपासना जी, करी मागुं गुण दोय ॥ जवपरिहार सुगति संपादना जी, सत्य स्वरूप सुख होय ॥ श्रीदेवी० ॥ ६ ॥ इति कुंथुजिनस्तवनम् ॥ १७ ॥

॥ अथ अष्टादश श्रीअरजिन स्तवन ॥

॥ देउ देउ रें नणद हवीली ॥ ए देशी ॥ अरनाथ अरज अवधारो, निजजक्तना कार्य सुधारो रे ॥ मनमोहना महाराया ॥ संसार अपारावारे, जल घोलना न्याय विचारे रे ॥ जग सोहना जिन राया ॥ १ ॥ पुजल परावर्त्त आनंता, थया जवकल्लोल जमंतां रे ॥ मन० ॥ मनुज खेत्र कुल आर्य, गुरु श्रुत सद्दहणा सुकार्य रे ॥ जग० ॥ २ ॥ एवी सामग्रीने अजावें, जिनधर्म न लाधो सुजावें रे ॥ म० ॥ नियतें लघुकर्मा थइने, अनुक्रमें गुण गण लइने रे ॥ जग० ॥ ३ ॥ जिनधर्म कल्याणक देखी, त्यांथी कुगुरु कुदेव उवेखी रे ॥ मन० ॥ वली सुगुरु सुदेव उपासी, थयो सूधो जिनमत वासी रे ॥ जग० ॥ ४ ॥ इम व्यक्त मिथ्यात्वने वाम्यो, अव्यक्त निवारण कामो रे ॥ मन० ॥ षटखंम जे तार जिणंदा, जिस्या अंतरषटरिपुवृंदा रे ॥ जग० ॥ ५ ॥ निजतुल्य करण तुम शक्ति, तुमे मुज कामे करो व्यक्ति रे ॥ मन० ॥ गुरु सौजाग्यचंद पसाया, लही स्वरूपचंदें गुण गाया रे ॥ जग० ॥ ६ ॥ इति श्री अरजिन स्तवनं ॥ १८ ॥

॥ अथ एकोविंशतितम मल्लिजिन स्तवन ॥

॥ जीरे सफल दिवस थयो आजनो ॥ ए देशी ॥ जीरे महिमा मल्लि जिणंदनी, मानी माहरे मन्न ॥ मोह महीपति जीतिउ, वली तस पुत्र मदन्न ॥ १ ॥ नित नमीएं रे नीरागता, नमतां होए नवछेह ॥ दुःख दो हग दूरें टले ॥ एहमां नहिं संदेह ॥ जाणो निसंदेह ॥ नि० ॥ २ ॥ जीरे मल्लि जिणंदनी साहेबी, देखीनें रति प्रीति ॥ वचन कहे निज कंतने, प ति प्रेमदानी रीति ॥ नि० ॥ ३ ॥ जीरे नाथ कहो ए कुंण अछे, कहे ए जिनदेव, जिनते किम तुम वस नहिं ॥ कहे इम सत्यमेव ॥ नि० ॥ ४ ॥ जीरे नहिं प्रताप इहां माहरो ॥ तो वृथा पौरुष तुज्झ ॥ हरव्यो मोह मा हरो पिता ॥ तो स्यो आसरो मुज्झ ॥ नि० ॥ ५ ॥ जीरे ते सांभलि रति प्रीति वे, त्रीजो काम सबाण ॥ मलीने मल्लि जिणंदनी, शिर धारी छे आण ॥ नि० ॥ ६ ॥ जीरे तेमाटे तुम वीनवुं, वारो तेह अशेष ॥ द्यो सौभाग्य स्वरूपनें, सुख लब्धि विशेष ॥ नि० ॥ ७ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ विंशतितम श्रीमुनिसुव्रतजिन स्तवन ॥

॥ हांरे थाहारी बंगलारी खडकी खोलहो नणदीरा वीरा, बाहिर भी जे मारुडी एकली ॥ अहो थाहारी बंग० ॥ ए देशी ॥ हांरे थारो समोव सरण देखाडहो मुगतिरा हीरा, आगल भो सेवक सामुहो रे, थाहारे मुजरे ॥ हांरे थारो समवसरण देखाड हो ॥ मुगतिरा हीरा ॥ ए आंकणी ॥ हारे सुरसंवर्त्तक पवनेकरी रे लो, रजहरि करे शुभजल सित्रहो ॥ मुगतिरा हीरा ॥ कुसुमोत्कर जलथल जातिनां रे लो, पंचवर्णनां जानुप्रमित्त हो ॥ मुग० ॥ १ ॥ आगल० ॥ हांरे थाहारो सम० ॥ हांरे जिहां वृक्ष अ शोक विराजतो रे लो, तिहां दिव्यध्वनी सुरवाद हो ॥ मु० ॥ हांरे सिंहा सन बेग प्रभु तुमे रे लो, तव वाजत डुंदुभिनाद हो ॥ मु० ॥ २ ॥ हांरे चिहुं दिशि सित चामर वींजता रे लो, सुरसफल करे निज शक्ति हो ॥मु०॥ भामंमलसितद्युति शोभतो रे लो, त्रण छत्र धरि करे भक्ति हो ॥ मु० ॥ ॥ ३ ॥ हांरे प्रातिहार्य अतिशय परिवस्था रे लो, श्रीमुनिसुव्रतजिनराय हो ॥ मु० ॥ जितशत्रु अश्व भद्धारवा रे लो, आव्या भरुअछ सुर समुदाय हो ॥ मु० ॥ ४ ॥ हांरे राय यज्ञ करंतो वारीयो रे लो, तमे तार्यो हय ध री हेत हो ॥ मु० ॥ वाधिउं यश त्रिहुं लोकमां रे लो, थयो तीरथ एणे

संकेत हो ॥ मु० ॥ ५ ॥ हांरे तुमे एहवा उपगारी प्रभु रे लो, दीठे अविच लराज पसाय हो ॥ मु० ॥ तुम तूठे सवि सुख पामीयें रे लो, स्वरूपचंद्रो दय थाय हो ॥ मु० ॥ ६ ॥ आ० ॥ हांरे थाहारो० ॥ इति ॥ २० ॥

॥ अथ एकविंशतितम श्रीनमिनाथजिन स्तवनम् ॥

॥ शोलमा श्रीजिनराज उलग सुणो अम्हतणी ललना ॥ ए देशी ॥

॥ मदवारी नमिनाथ जिनेश्वर वंदीयें ललना, नव अनेकनां संचित पाप निकंदीयें ललना ॥ जीत्याने सरणे जीत लहीजें ए न्याय छे ललना, रिपु जीत्यानो ए पण एक उपाय छे ललना ॥ १ ॥ द्रव्य शत्रु जेणे गर्भ थका सहेजें दम्या ललना, मान मूकीने ते सघला आवी नम्या ललना ॥ नाम नमि इम सार्थक मनमां ध्याइये ललना, तो मनवंछित इहपरभव सुख पाइयें ललना ॥ २ ॥ जीवकर्मनो वैर अनादि निबद्ध छे ललना, किहां ए जीव किहां कर्म समर्थ सनद्ध छे ललना ॥ गोस्तनथी पय खाणथी कनकोपल परे ललना, मल्या आव्या पण तास विभाव अगनी हरे लल ना ॥ ३ ॥ तिम प्रभु समकित लाभथी पंडित वीर्यने ललना, धारी वारी प्रमाद धरी मन धैर्यने ललना ॥ जीती भाव विपक्ष स्वपक्ष विचारीने ल लना, सर्वघाति देशघाति अघाति निवारीने ललना ॥ ४ ॥ लाधो केवल युगल निधान सुभुक्तिनो ललना, जिनपद भोग संयोग मिलाप विमुक्तिनो ललना ॥ इम बहिरंतर शत्रु नमावी नमिजिनें ललना, दाख्यो रिपु जय भेद ते जाण्यो भविजने ललना ॥ ५ ॥ धर्म द्विविध इम संघ चतुर्विध सां भले ललना, भइ दर्शन केइ देश सर्वविरते भिले ललना ॥ जेम तुमें जी त्या रे तेम जीतावो माहरा ललना, कहे स्वरूप हवे चरण शरण छे ता हरा ललना ॥ ६ ॥ इति श्रीनमिजन स्तवन ॥ २१ ॥

॥ अथ द्वाविंशतितम श्रीनेमनाथजिन स्तवन ॥

॥ अपने पीयाजीकी बात रे हुं केहने पूछुं ॥ ए देशी ॥ नेमजिणंद नो ग्यान रे, जगमां जयकारी ॥ जगतजंतुनी रक्षा करवा, प्रभु अतिशय उपगारी रे ॥ वंदो नरनारी ॥ नेम० ॥ ए आंकणी ॥ जय समुद्रविजयांग भू, शिवादेवीना जाया ॥ शंखलंछन अंजन छबी, दश धनुष्यनी काया ॥ नेम० ॥ १ ॥ अभयदान स्वापद भणी, दीधुं वरसी जनने ॥ संयमि ब्रह्म चारी पणे, साध्युं निजमनने ॥ नेम० ॥ २ ॥ प्रतिपद पृथ्वी पावन करी,

सहसावने स्वामी ॥ मौनपणें चौपन दिने, केवलसिरि पामी ॥ नेम० ॥ ॥ ३ ॥ पूछे प्रभुने कृष्णजी, सुणो त्रिभुवन राया ॥ त्रिगुण तीर्थे रैवत पति, हरिवंश सवाया ॥ नेम० ॥ ४ ॥ उत्तम स्त्रीगुणे परिवरी, राजीमति कन्या, तुम चित्तमां किम नवीवसी, अति तन्वी धन्या ॥ नेम० ॥ ५ ॥ तव सुरपति कहे कृष्णने, जिनचित्त अनंगे ॥ ज्ञानगर्भ वैराग्यने, उत्तरंग ने रंगे ॥ नेम० ॥ ६ ॥ न मले प्रवेश अनंगने, कृशांगीनी शी वात ॥ ते सुणी राजीमति कहे, सुरनर विख्यात ॥ नेम० ॥ ७ ॥ चिदानंद चित्तमां तिहां, नही कोइनुं नाम ॥ चिदानंद संयुत प्रभु, धरुं मुज मन धाम ॥ नेम० ॥ ८ ॥ इम कही जिन दीक्षा ग्रही, करी संयम लीला ॥ रहनेमि प्रतिबोधीउ, सती परम सुशीला ॥ नेम० ॥ ए ॥ एम अनंतगुणराशिनो, परपार न आवे ॥ सौनाग्यचंद स्वरूपने, जिनधर्म शीखावे ॥ नेमि०॥१०॥

॥ अथ त्रयोविंशतितम पार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ सखि आज आषाढो उन्नह्यो सखि ऊरमर वरसें मेह ॥ ए देशी ॥ जीरे आज दिवस जले उगियो, जीरे आज थयो सुविहाण ॥ पास जिणेसर नेटीआ, थयो आनंद कुशल कल्याण हो ॥ साजन ॥ सुखदायक जाणी सदा, नवि पूजो पास जिणंद ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जीरे त्रिकरण शुद्धियें त्रिहुं समे, जीरे निसिही त्रण संजार ॥ त्रिहुं दिशि निरखण वरजीनें, दीजें खमासमण त्रण वार हो ॥ साजन० ॥ २ ॥ जीरे चैत्यवंदन चोवीसनो, जीरे स्वरपद वर्ण विस्तार ॥ अर्थ चिंतन त्रिहुं कालना, जिन नाथ निक्षेपा चार हो ॥ साजन० ॥ ३ ॥ जीरें श्रीजिन पद फरसें लहे, कलिमलीन ते पदकल्याण ॥ ते वलि अजर अमर हुवे, अपुनर्नव शुज निर्वाण हो ॥ साजन० ॥ ४ ॥ जीरे लोहनाव मूकी परो, जीरे पारश फरस पसाय ॥ थाए कल्याण कुधातुथी, तिम जिनपद मोक्ष उपाय हो ॥ साजन०॥५॥ जीरे उत्तम नारी नर घणा, जीरे मन धरी नक्ति उदार ॥ आराधी जिनपद नलो, थाए जिन करे जग उपगार हो ॥ साजन० ॥ ६ ॥ जीरे एहवुं मन निश्चल करी, जीरे निशिदिन प्रभुने ध्याय ॥ पामे सौनाग्यस्वरूपने, निवृत्तिकमलावर थाय हो ॥ साजन० ॥ ७ ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ अथ चोवीशमां श्रीवीरजिन स्तवन ॥

॥ राजुल पूछे रे सखीप्रत्यें, राजुल पूछे वात रे, सुणो सजनी अमारी

वात ॥ ए देशी ॥ हुं तुम पूछुं रे परमगुरु, हुं तुम पूछुं वाच रे ॥ कहो प्रश्ननो उत्तर साच, हुं एक मागुं रे परम गुरु ॥ हुं एक मागुं वाच रे, दीउ नाम तुमारानो साच ॥ ए आंकणी ॥ नाम तुमारो रे जगतगुरु, नाम तुमारो वीरजी रे ॥ तेह्नो अद्भुत नाव, मनशुं विचारी जोइयें तव, उपजे विविध बनाव रे ॥ १ ॥ सुणो सदगुरु माह्री वच्च रे ॥ हुं तुम० ॥ नवरस मांहे रे जगतगुरु, नवरस मांहे पांचमो रे ॥ रसनुं नाम ठे वीर ॥ ते वली त्रिविध वखाणीयें, तेनां नाम कह्यां त्रण धीर रे ॥ २ ॥ सुणो सद० ॥ हुं तुम० ॥ आजि दानमां रे जगतगुरु, आजि दान तिम धर्ममां रे, समरथ कहीयें वीर ॥ तन धन मन शंका नही, मनमोद रोमांच शरीर रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ हुं० ॥ ए लक्षण रस रे जगतगुरु, ए लक्षण रस वीरनां रे, ठे तुमने प्रत्यक्ष ॥ गुण ज्ञेनानी ते ठता, बहिरंतर लक्षण लक्ष रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ हुं० ॥ सत्व परीक्षक रे जगतगुरु, सत्वपरीक्षक सुर दम्यो रे, आजि वीर तुमे एम ॥ लोक उरण पूरण कस्यो, दान वीर संवत्सर प्रेम रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ हुं० ॥ करमने जीती रे जगतगुरु, कर्मने जीती केवली रे, वाख्यो नवनय नर्म ॥ सत्ताधर्म बतावीयो, एवो धर्म वीर शिवशर्म रे ॥ सु० ॥६॥ हुं० ॥ वीर त्रिविधगुण रे जगतगुरु, वीर त्रिविध गुण राजतां रे, सेवुं चरणयुग तुज्झ ॥ सौनाग्यचंद स्वरूप ते, दीउ वीरजी वीरता मुज्झ रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ हुं० ॥ इति सान्वयवीरजिनस्तवनम् ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥ ते तरीया रे नाइ ते तरीया ॥ ए देशी ॥

॥ इणे अवसर्प्पिणीयें जिनराया,सुरनर प्रणमित पाया जी ॥ सेवकजन मनवंछित दाया, निजपद करण पसाया जी ॥१॥ इणे० ॥ ए आंकणी ॥ मातपिता धन्य जिहां जिन जाया,धन्य कुल पुर जिहां आया जी ॥ ठप्पन्नदिशि कुमरी हुलराया, शची उरंग रमाया जी ॥ २ ॥ इणे०॥ चोशठ इंद्र तणे मननाया, अपछरगण गुण गाया जी ॥ लघुवय मेरुशिखर पधराया, तीर्थजलें न्हवराया जी ॥ ३ ॥ इणे० ॥ नुक्तनोग संयम मनलाया, निश्चल मन वच काया जी ॥ परम पुरुष गुण आतम ध्याया,केवलें सिद्ध सधाया जी ॥ ४ ॥इणे०॥ गुरुपसाय जिन आगम पाया, सूत्र अरथ वंचाया जी ॥ पांच कारण व्यवहार उपाया, जाणी जगत नमाया जी ॥ ५ ॥ इणे० ॥ धन गुरुजी जिनमार्ग दिखाया, राखी बाह्नी ठाया जी ॥ दुरित दोहग

डुख दूर गमाया, निजपद पाठ पढाया जी ॥ ६ ॥ इणे० ॥ तास पसायें मन उल्लसाया, ज्ञानदीप प्रगटाया जी ॥ उन्मारग तम डुरित नसाया, सुगतिमारग मन धाया जी ॥७॥ इणे० ॥ जिन चोवीश तणा गुण गाया, उपशम अमृत नाया जी ॥ गुरु सौनाग्यचंद सुपसाया, स्वरूपचंद सुखदाया जी ॥ ॥८॥ इणे० ॥ कलश ॥ इम रुषनजिन धुर वीरजिन लगें, चउवीसे तिरथंकरा ॥ तस नक्ति करतां ध्यान धरतां, त्रिविध मल नासे परा ॥ सुख संपदा घर सुथिर थाये, जगतजन यश अनुसरे ॥ सौनाग्यचंद सुगुरु प्रसादें, स्वरूपचंद इम उच्चरे ॥ ए ॥ इति स्वरूपचंद कृत चोवीशी संपूर्ण ॥

॥ अथ पंमितश्री नित्यलानजी कृत जूदी जूदी चोवीशी मांहेलां स्तवनो ॥

॥ तेमां प्रथम श्री रुषनजिन स्तवन ॥

॥ वृंदावनमां कान कुमरजी ए देशी॥ अथवा श्रीश्रेयांसजिन अंतरजामी ॥ ए देशी ॥ आदिजिनेसर वीनती अमारी, सांजल महारा स्वामी रे ॥ मरुदेवीना नंदन वाहला, अरज करुं शिरनामी रे ॥ आदि० ॥ १ ॥ नानिरायाकुल हंसलो रे, नयरी विनीतानो राजा रे ॥ वंशइक्ष्वागें शोनतो रे, सेवे सुरपति जाजा रे ॥ आदि० ॥ २ ॥ मूरतिरूप अनोपम देखी, नगतें बांध्या प्रेम रे ॥ आसंगा प्रनुजीशुं मांम्या, जलधर चातक जेम रे ॥ आदि० ॥ ३ ॥ प्रनुजीथी अलगा नवी रहीशुं, वंछित मागी लेशुं रे ॥ जनममरण नय दूर निवारी, शिवसुख ताली देशुं रे ॥ आदि० ॥ ४ ॥ प्रनुजी विना कोण लाम लडावे, नवना ताप शमावी रे ॥ सहेज सुंदर गुरु गुण प्रनुजिना, नित्यलान पंमित गावे रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितजिन स्तवन ॥

॥ पंदर तिथि पूरी थइ सुण काया रे, राम हृदयमां राख केहनी माया रे ॥ ए देशी ॥ अजितजिणेसर सेवियें ॥ सहि मोरी रे ॥ गिरूआ गरिब निवाज ॥ गाउं गुण गोरी रे ॥ तूठा समकित आपशे ॥सहि०॥ देशे मुगतिनुं राज ॥ गाउं० ॥ १ ॥ सरखासरखी साहेलडी ॥ स० ॥ लीधां निरमल नीर ॥ गाउं० ॥ केसर नरिय कचोलडी ॥ सहि० ॥ पहेरी नवरंगचीर ॥ गाउं० ॥ २ ॥ पूजा करे जिनजीतणी ॥ स० ॥ मनमां हरष न माय ॥ गा० ॥ नकेशुं नगवंतनी ॥ स० ॥ ललीलली प्रणमे पाय ॥ गा० ॥ ३ ॥ मूरती अतिरलीआमणी ॥ स० ॥ रूपें न लहुं पार ॥ गा० ॥ प्रेमधरीने साहेबा

॥ स० ॥ अमनें पार उतार ॥ गा० ॥ ४ ॥ गिरुआ सहेजे गुण करें ॥स०॥ देजो लील विलास ॥ गा० ॥ नित्यलाभ पंडित वीनवे ॥ स० ॥ पूरजो मनडानी आस ॥ गा० ॥ ५ ॥ इति अजितजिन स्तवन ॥

॥ अथ संभवजिन स्तवन ॥

॥ गोकलिउ रडियामणो ॥ ए देशी ॥ संभवनाथ सोहामणा रे, त्रिभुवन नायक देव ॥ भवियण सेव जो॥ इंद्रसरिखा जेहनी रे, सेव करे नित्यमेव ॥ भवि० ॥ १ ॥ सूरत सुंदर शोभती रे, माने महोटा भूप ॥ भवि० ॥ नयन कमल दलपांखडी रे, मोहनगारुं रूप ॥ भवि० ॥ २ ॥ मीठी वाणी जेहनी रे, बेठा दे उपदेश ॥ भवि० ॥ सांभलतां सुख ऊपजे रे, न रहे दुःख लव लेश ॥ भवि० ॥ ३ ॥ जिनदरिशणनो लालची रे, मुज मन विश्वावीश ॥ ॥ भवि० ॥ विंध्याचल जेम हाथीउ रे, संभारे निशदीश ॥ भवि० ॥ ४ ॥ महेर नजर धरी प्रेमशुं रे, देजो अविचलवास ॥ भवि०॥ नित्यलाभ पंडित वीनवे रे, सफल करो अरदास ॥ भवि० ॥ ५ ॥ इति संभवजिन स्तवन ॥

॥ अथ अभिनंदनजिन स्तवन ॥

॥ अंबा बिराजे छे ॥ ए देशी ॥ अभिनंदनजिन राजिया, गुण राजे छे ॥ महारा प्रभुनी त्रिजग मांहे ॥ ठकुराइ छाजे छे ॥ देव घणा मलि एकठा ॥ ॥गुण०॥ जिनने सेवे अधिक उछांहे ॥ठकु०॥१॥ समवसरण देवें रच्युं॥ गुण० ॥ तिहां बेठा श्रीभगवान ॥ ठ० ॥ बेठी बारह परषदा ॥ गुण०॥ दीए देशना योजन मांहे ॥ ठकु० ॥ २ ॥ क्रोध मान माया तजो॥ गुण०॥ तमे वर्जो विकथा चार ॥ ठकु० ॥ निंदा म करजो पारकी ॥ गुण० ॥ वली परहरजो परनार ॥ ठकु० ॥ ३ ॥ शील भलीपरें पालजो ॥ गुण० ॥ वली देजो अढलक दान ॥ ठकु० ॥ मुक्तितणां सुख पामशो ॥ गु० ॥ तमे लेशो देवविमान ॥ ठकु० ॥ ४ ॥ जीवदया दिलमां धरो ॥ गुण० ॥ जेथी लहियें सुंदर रूप ॥ ठकु० ॥ भक्ति करो भगवंतनी ॥ गुण० ॥ जेम तरियें भवजल कूप ॥ ठकु० ॥ ५ ॥ मानवभव सफलो थयो ॥ गुण० ॥ में कीधो प्रभु शुं प्रेम ॥ ठकु० ॥ नित्य लाभ पंडित वीनवे ॥ गुण० ॥ हुं तो पाम्या शिवसुख एम ॥ ठकु० ॥ ६ ॥ इति अभिनंदनजिन स्तवन ॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तवन ॥

॥ मुजने हरि वाहला ॥ ए देशी ॥ संगत सुमतिनी कीजीयें रे, वाधे ज

गजशवास रे ॥ उलंग करतां एहनी रे, सफल फले सहु आस ॥ १ ॥ जिनना गुण रूडा ॥ गुण रूडा रे सुगुण प्रधान,जिनना गुण रूडा ॥ मुने वाहला अमिय समान ॥ जिन० ॥ ए आंकणी ॥ नंदन सुमंगला मातनो रे, वदन पूनम चंद रे ॥ त्रिभुवन कीर्त्ति जेहनी रे, गावे चोशठ इंद ॥ जिन० ॥ २ ॥ रूप अनोपम सूरति निरखी रे, भक्ति करुं मन रंग रे ॥ पूर्वे पुण्य पसाउले में, लाधो प्रभुनो संग ॥ जिन० ॥ ३ ॥ महेर करी महाराजजी रे, वीनतडी अवधार रे ॥ सेवक जाणी आपणो रे, भवजल पार उतार ॥ जिन० ॥ ४ ॥ परभाते ऊठी करी रे, प्रेमें प्रणमुं पाया रे ॥ नित्यलाभ पंमित वीनवे रे, प्रभुशुं लागी माया ॥ जिन० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पद्मप्रभजिनस्तवन ॥

॥ हुंतो ने गोरी उतावली नंदलाल रे ॥ए देशी॥ पद्मप्रभ उलंगडी ॥ सुखदाय रे ॥ करशुं आणी नेहके ॥ मनहित थाय रे ॥ रूप अनंतगुण ताहरुं ॥सु० ॥ रक्तवरण प्रभुदेहके ॥ मन० ॥ १ ॥ वाणी प्रभुनी सांभली ॥ सु० ॥ हैयडुं सीतल थायके ॥ मन० ॥ परदर्शनना बोलडा ॥ सु० ॥ कहोने केम सोहायके ॥ मन० ॥ २ ॥ काच कथीरनें कोण ग्रहे ॥ सु० ॥ जेणें कीधां मोती व्यापारके ॥ मन० ॥ खडखावा मन कोण करे ॥ सु० ॥ जे पाम्या अमृतसारके ॥ मन० ॥ ३ ॥ जिनवरकेरी चाकरी ॥ सु० ॥ करवा जयजयकार के ॥मन०॥ अविचल थानक आपजो ॥ सु० ॥ इम कहुं हुं वारोवार के ॥ मन० ॥ ४ ॥ प्रेमनजर मुफ ऊपरे ॥ सु० ॥ तमे धरजो गरीब निवाजके ॥ मन० ॥ नित्यलाभ कहे प्रभु माहरा ॥ सु० ॥ तमे भक्तवत्सल महाराजके ॥ मन० ॥ ५ ॥ इति पद्मप्रभजिन स्तवन ॥

॥ अथ सुपार्श्वजिनस्तवन ॥

॥ रातडीआ रमीने रे किहांथकी आविआ रे ॥ ए देशी ॥ मुफ मन भमरो प्रभुगुण फूलडे रे, रमण करे दिनरात ॥ सुणजो स्वामि सुपास सोहामणा रे, कर जोडी कहुं वात ॥१॥ मनडुं ते चाहेरे प्रभु मलवा भणी रे, पण दीशे छे अंतराय ॥ जीव प्रमादी रे कर्म तणे वशे रे, तो किम मलवुं थाय ॥ म० ॥ २ ॥ लाख चोराशी जीवायोनिमां रे, भव अटवी गति चार ॥ कालअनादि अनंत भमतां थकां रे, किमहि न आवे पार ॥ म० ॥ ३ ॥ मारग बतावो रे साहेब माहरा रे, जिम आवुं तुम पाय ॥ लाज

वधारो रे सेवक जाणीने रे, द्यो दरिशण जिनराय ॥ म० ॥ ४ ॥ मूरति ताहरी रूपें रूअडी रे, अनुभव पददातार ॥ नित्यलाभ प्रभुशुं प्रेमें वीनवें रे, तुमथी लहुं सुखसार ॥ म० ॥ ५ ॥ इति सुपार्श्वजि० ॥

॥ अथ चंद्रप्रभ जिनस्तवन ॥

॥ गुजरी आवी अमारे देश,वारी वारी रेलो म्हारी गुजरी ॥ ए देशी ॥ चंद्रप्रभजीने रे वीनवुं ॥ तहारी चाकरीयें मन मोहे ॥ वारी जाउं लो रे ॥ म्हारा जिनजीनी ॥ सूरत मोहन वेलडी ॥ तहारुं रूप अनोपम सोहे ॥ वारी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ महियलमां जोतां थकां ॥ में दीठा देव अनेक ॥ वा० ॥ म० ॥ मुक्तितणां सुख आपवा ॥ प्रभु तुम समो नवी कोए ॥ वा० ॥ म० ॥ २ ॥ प्रभु समरथ जाणीने उलगे ॥ प्रभु लालविया सोवार ॥ वा० ॥ म० ॥ प्रभु प्रेम थयो तुम भक्तिशुं ॥ प्रभु करजो सेवकनी सार ॥ वा० ॥ म० ॥ ३ ॥ प्रभु ज्ञानदशा परगट थइ ॥ मने मलिउं प्रभुनो साथ ॥ वा० ॥ म० ॥ प्रभु सुखसंपती आवी मली ॥ मने तूठा श्रीजगनाथ ॥ वा० ॥ म० ॥ ४ ॥ प्रभु वली वली मागुं एटलुं ॥ मने देजो समकित खास ॥ वा० ॥ म० ॥ नित्यलाभ पंफित जिनतणा,गुण गाये अधिक उल्लास ॥ ५ ॥

॥ अथ सुबुद्धिजिन स्तवन ॥

॥ हवे न जाउं म्ही वेंचवा रे लो ॥ ए देशी ॥ सुरत सुविधि जिणंदनी रेलो, महीमावंत प्रधान ॥ म्हारा वाहालाजी रे ॥ तमने अमारी वंदना रेलो ॥ नयण पावन थया देखतां रेलो, गुण अनंत भगवान ॥ म्हारा० ॥ तमने० ॥ १ ॥ रामाराणीना नंदना रेलो, सांभल दीनानाथ ॥ म० ॥ तम० ॥ प्रेम धरी सेवा करुं रेलो, हवे न छोडुं तोरो साथ ॥ म० ॥ तम० ॥ २ ॥ सोना रूपाना फूलनी रेलो, आंगी बनावुं सार ॥ म० ॥ तम० ॥ नाच करुं प्रभु आगलें रेलो, मादलनो धमकार ॥ म० ॥ तम० ॥ ३ ॥ अमने शिवसुख आपजो रेलो, शुं कहुं वारोवार ॥ म० ॥ तम० ॥ आतम अनुभव ध्यानथी रेलो, लहियें वंछित सार ॥ म० ॥ तम० ॥ ४ ॥ मनना मनोरथ म्हारा रेलो, सफल थया सहु आज ॥ म० ॥ तम० ॥ नित्यलाभ प्रभुपद सेवतां रेलो, सीधां ते सघलां काज ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रेयांसजिनस्तवन ॥

॥ तुं क्यां गइथी आज, रमवा रजनी जी रे ॥ ए देशी ॥ श्रेयांस जि

नेसर देव, नयणें निरख्या रे, मुऊ पातिक नाठां हेव, मनमां हरख्या रे ॥ में कीधो प्रज्ञुनो संग, रूप निहाली रे ॥ हुं तो राखुं जिनशुं रंग, समकित अजूआली रे ॥ १ ॥ प्रज्ञुजी बे आतमराम, नवडुख टाली रे ॥ मुऊ पूरे वंबित काम, शिवसुख आली रे ॥ जेहने सेवे चोशठ इंद, बे कर जोडी रे ॥ मन पामे परमानंद, कर्मने त्रोडी रे ॥ २ ॥ मनें महेर करी महाराज, नय सहु नाठां रे ॥ मुऊ दूर गयां सवि आज, कर्मज माठां रे ॥ नहीं कोइ डुनियांमांहे, देवज एवो रे ॥ नित्यलान्न कहे उबाहें, नवियण सेवो रे ॥ ३ ॥ इति श्रेयांस जिनस्तवन ॥

॥ अथ वासुपूज्यजिनस्तवनं ॥

॥ नहीं जाउं रे यमुनानीर, इण इण वाटडीयें ॥ ए देशी ॥ श्रीवासुपूज्य जिनराज, मनना मोहनीया ॥ प्रज्ञु अमने खूब निवाज, जगना जीवनीया ॥ प्रज्ञु चंपानयरीना राय, मुऊ मनमां वसीया ॥ तोरा सेवे सुर नर पाय, मुख जोई हसिया ॥ १ ॥ मीठी मूर्त्ति अतिसुखकार, नामें रंग रलिया ॥ प्रज्ञु जीवन प्राण आधार, मनोरथ सवि फलिया ॥ प्रज्ञु जया देवीना नंद, पूरण गुणनरिया ॥ जे सेवे पद अरविंद, ते नवजल तरिया ॥ २ ॥ तमे कुंवरपणे महाराज, संयमश्री वरिया ॥ तमे तारण तरण जिहाज, अविचल पद धरिया ॥ तुम रूप देखी शिरताज, पातिक सहु खरियां ॥ तमे पावन कीधा आज, महारा सवि परिया ॥ ३ ॥ तमे नक्तवत्सल नगवान, करुणा रस नरिया ॥ मुऊ देजो अविचल थान, सेवक सुख करियां ॥ मुऊ आज नलें सुविहाण, नयणां मुऊ ठरीआं ॥ नित्यलान्न कहे परणाम, प्रज्ञुथी जय वरिया ॥ ४ ॥ इति वासु पूज्य जिनस्तवन ॥

॥ अथ विमलजिन स्तवन ॥

॥ सांनल सजनी ॥ ए देशी ॥ विमलजिनेसर साहेबा जी,अरज सुणो एक मोरी जी ॥ सुख संपत आवि मलीजी, करतां सेवा तोरी ॥ १ ॥ सांनल वीनती ॥ करमतणे बल चारेगतिमां, नम्यो अनंती वार जी ॥ ए संसार असारमां प्रज्ञु, तुमविण कोण आधार ॥ सांनल वीनती० ॥ २ ॥ नाग्य अमारुं जागीयुं जी, प्रज्ञुने पालव वलगा जी ॥ मुख देखी प्रज्ञुजी तणुनें, पातिक कीधां अलगा ॥ सांन० ॥ ३ ॥ बाहिरघटमां पंथ घणा बे, ते मुऊ दीलमां नावे जी ॥ साचो मारग तुं प्रज्ञुजी, अमने तुरत बतावे

॥ सांभ० ॥ ४ ॥ तुं जसरूपी तुं निकलंकी, अविचल लीलविलासी जी ॥ नित्यलाभ प्रभुशुं प्रेम धरंता, कुमति गइ सहु नासी ॥ सांभ० ॥ ५ ॥

॥ अथ अनंतजिनस्तवन ॥

॥ मनें अंबाजी ते वहाला जो ॥ ए देशी ॥ श्रीअनंतजिनेसर सोहतां जो, भवियणनां मनमोहंता जो ॥ अकल अरूपी अनंता जो, ज्ञान गुणे जयवंता जो ॥ १ ॥ चोशठइंद सेवा करे जो, समकेतनी शुधता धरे जो ॥ नयणे अमीरस सांचरी जो, दुखदोहग दूरें हरि जो ॥२॥ एहवा जिनवर मलिया जो, दाहाडा अमारा वलिया जो ॥ मन वंछित सहु फलियां जो, दोखी दुसमन टलिया जो ॥ ३ ॥ सुजसानंदन वाहाला जो, जीवदयाप्रतिपाला जो ॥ प्रभुना वयण रसाला जो, सेवक करो सुखाला जो ॥४॥ हुं बुं प्रभुनो रागी जो, भाग्यदशा मुज जागी जो ॥ वीनति करुं पय लागी जो, शिव सुख लेशुं मागी जो ॥ ५ ॥ नित्यलाभ कहे शिरनामि जो, अममां स्वी छे खामी जो ॥ ढील न करियें स्वामी जो, दीजे अविचल धामी जो ॥ ६ ॥

॥ अथ कुंथुजिनस्तवनं ॥

॥ मुखनें मरकडले ॥ ए देशी ॥ कुंथुनाथतणी बलिहारी जी ॥ जाउं जिन भामणे ॥ एम बोले अमरनी नारी जी ॥ जा० ॥ जिन पूजवां चालो जइयें जी ॥ जा० ॥ जेम आपणे पावन थइयें जी ॥ जा० ॥ १ ॥ प्रभुमूर्त्ति मोहनगारी जी ॥ जा० ॥ भवियणने बहु हितकारी जी ॥जा०॥ रूपें मोह्या सुर नर भूप जी ॥ जा० ॥ प्रभुनी ज्योति अनूप जी ॥ जा० ॥ २ ॥ प्रभु समवसरण मन मोहे जी ॥ जा० ॥ बार गुणो अशोक वृक्ष सोहे जी ॥ जा० ॥ फूलवृष्टि ढींचण समी छाजे जी ॥ जा० ॥ वाणी मधुर ध्वनि गाजे जी ॥ जा० ॥ ३ ॥ सुर चामर वींजे जोपें जी ॥ जा० ॥ मणिमय सिंहासण उपें जी ॥ जा० ॥ भामंमल तेजें राजे जी ॥ जा० ॥ देवडुंदुभि गगनें गाजे जी ॥ जा० ॥ ४ ॥ शिरछत्र अनोपम जाणुं जी ॥ जा० ॥ गुण अनंत प्रभुना वखाणुं जी ॥ जा० ॥ नित्यलाभ एणी परें बोले जी ॥ जा० ॥ नही कोइ जिनवरने तोलें जी ॥ जा० ॥ ५ ॥

॥ अथ नमिजिन स्तवनं ॥

॥ गरबो केणे रे कोराव्यो के, नंदजीना लाल रे ॥ ए देशी ॥ नमिनाथ जिणेसर वंदो के ॥ दिलमां आणी रे ॥ एतो विप्रा राणी नंदो के ॥ गुण

मणिखाणी रे ॥ एतो विजय नृपति कुलचंदो के ॥ दि० ॥ एहनें दीठे पर मानंदो के ॥ गु० ॥ १ ॥ एतो सोवन वर्ण सोहाया के ॥ दि० ॥ एणे मेली संसारनी माया के ॥ गु० ॥ एतो वीतराग नाम कहाया के ॥ दि० ॥ एतो मुक्ति मंदिरमां गवाया के ॥ गु०॥ २ ॥ हुंतो नक्ति करुं नले नावें के ॥ ॥ दि० ॥ जेम जन्म मरण नय नावे के ॥ गु० ॥ घरे मंगल माला आवे के ॥ दि० ॥ मुज मनडुं आनंद पावे के ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रनु मूर्त्ति मुजने प्यारी के ॥ दि० ॥ नवियणने मोहन गारी के ॥ गु० ॥ गुण गावे सुर नर नारी के ॥ दि०॥ प्रनु आपे संपत्ति सारी के ॥ गु०॥४॥ प्रनु तमे हुं सेवक तारो के ॥ दि० ॥ मुज आवागमण निवारो के ॥ गु०॥ मुज वीनतडी अव धारो के ॥ दि० ॥ नित्य लान ठे दास तुमारो के ॥ गु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ रायजी अमे तो हिंडुयाणी के, राजगराशीया रे लो ॥ ए देशी ॥ जिनजी गोडीमंमण पास के, वीनति सांनलो रे लो ॥ जिनजी अरज करुं सुविलास के, मूकी आमलो रे लो ॥ जिनजी तुम दर्शनने काज के, जीवडो टलवले रे लो ॥ जिनजी महेर करो महाराज के, आशा सवि फले रे लो ॥ १ ॥ जिनजी मननमरो ललचाय के, प्रनुनी उलगे रे लो ॥ जिनजी जेम तेम मेलो थाय के, ते करजो वगे रे लो ॥ जिनजी दूरथकां पण नेह के, साचो मानजो रे लो ॥ जिनजी तुमथी लहुं गुण गेह के, अमृत पानजो रे लो ॥ २ ॥ जिनजी प्रनुशुं बांध्यो प्रेम के, ते केम वीसरे रे लो ॥ जिनजी बीजे जावा नियम के, प्रनुथी दिल ठरे रे लो ॥ जिनजी जोतां ताहरुं रूप के, अनुनव सांनरे रे लो ॥ जिनजी ताहरी ज्योति अनूप के, चिंता दुःख हरे रे लो ॥३॥ जिनजी एतुं नोजन खाय के, मिठाइनी लालचें रे लो ॥ जिनजी आतमने हित थाय के, प्रनुना गुण रुचे रे लो ॥ जिनजी कर्म तणां बल जोर के, तेहथी तारियें रे लो ॥ जिनजी समकेतना जे चोर के, तेहने वारियें रे लो ॥ ४ ॥ जिनजी निज सेवक जाणीने, मुक्ति बतावीयें रे लो ॥ जिनजी करुणारस आणीने, मनमां लावीयें रे लो ॥ जिनजी वाचक सहेज सुंदरनो, सेवक इम कहे रे लो ॥ जिनजी पंमित श्रीनित्यलान के, प्रनुथी सुख लहे रे लो ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीविद्यासागरसूरिस्तवन ॥

॥ ढाल कडखानी ॥ वंदो वीरवर धीरधर सूरि विद्यासुगुरु, स्वच्छ विधि पक्ष गच्छपति गाजे ॥ अमल जलगंग सम धरन छत्रीश गुन, व्यक्तता प्रकट सुरगुरु दिवाजे ॥ वंदो० ॥ १ ॥ अमृतपाथोधिगुन भूरि सूरीसरू, पट्ट तस पूर्वकृत पुण्य आयो ॥ वाणि जस सुनत भवभर्म भागे निकट, विकट, यशवास भूयलोक छायो ॥ वंदो० ॥ २ ॥ द्व्यणुक समवायि घटपट्ट भावादि बहु, सप्त नय तत्व नव भेद जाणे ॥ लक्ष उपदेश सुपरिक्ष अनुमान युत, सरस वाखाण नव रस वखाणे ॥ वंदो० ॥ ३ ॥ प्रबल परताप प्रोद्योतमहिमंमले, सकल साधो शिरें अधिक राजे ॥ कुमति पाखंम सब दूर नासे निपट, देखि मार्त्तंम जिम घुअड भाजे ॥ वंदो० ॥ ४ ॥. शा करमसिंहकुलें त्रिदशपति सारिखो, मात कमला तणुं सुजस दीपे ॥ विबुधवर छत्रधर नमति जाके सदा, अनड भड कठिन कंदर्प्प ऋीपे ॥ वंदो० ॥ ॥ ५ ॥ भविक नर नारि अतिभाव भावें करी, वांदतां चित्त आमोद पावे ॥ कहत नितलाभ कर जोर गुरु नाम दे, रिद्धिनव निद्धि सब सिद्धि आवे ॥ वंदो० ॥ ६ ॥ इति श्रीविद्यासागरसूरिस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अथ कुंथुनाथस्तवन ॥

॥ केसर वरणो हो, काढ कसुंबो महारा लाल ॥ ए देशी ॥ कुंथु जिननी हो, सेवा मागुं महारा लाल ॥ विनय करीनें हो, पाये लागुं महारा लाल ॥ जगजीवन जिनजी हो, इण भव दीठा महारा लाल ॥ साकर दूधथी हो, लागे मीठा महारा लाल ॥ १ ॥ समोसरण बेठा हो, प्रभुजी दीपे महारा लाल ॥ शमतारसशुं हो, जगनें ऋींपे महारा लाल ॥ देवडुंडुभि रूडी हो, गगनें वाजे महारा लाल ॥ वली तिहां किण जाणुं हो,भामंमल छाजे महारा लाल ॥ २ ॥ चारे दिशि देवता हो, चामर ढाले महारा लाल ॥ भवना फेरा हो, प्रभुजी टाले महारा लाल ॥ जिनजीनुं दर्शन हो, मोहनगारुं महारा लाल ॥ पल एक दिलथी हो, हुं न विसारुं, महारा लाल ॥ ३ ॥ सेवक ऊपर हो, महेर धरीजें महारा लाल ॥ सुखडां दीजें हो, ताप हरीजे महारा लाल ॥ नित्यलाभ प्रणमी हो, एम पयंपे महारा लाल ॥ प्रभुजीने समरी हो, पातक कंपे महारा लाल ॥ ४ ॥

॥ अथ वासुपूज्य जिन स्तवन ॥

॥ शीतल जिनवर साहेबा रे ॥ ए देशी ॥ वासुपूज्य जिन साहेबा रे, सुण म्हारी अरदास ॥ तुम दरशनने देखवा रे, मुफ मनडुं धरे आस ॥ वा० ॥ १ ॥ मही्यलमांहे जोतां थकां रे,दीठा देव अनेक ॥ हरि हर ब्रह्मा सारखा रे, तुम सह नावे एक ॥ वा० ॥ २॥ तमे बो त्रिजुवनराजवी रे, तमे बो देवना देव ॥ लोकोत्तर गुणशुं जस्या रे,देव करे तुम सेव ॥ वा०॥ ॥ ३ ॥ जनमपुरी चंपा जली रे, वसुपूज्यकुल अवतंस ॥ जया देवी उयरें हंसलो रे, मूरत मोहनवंस ॥ वा० ॥ ४ ॥ सत्तर धनुष सोहामणी रे, रक्तोत्पल दल काय ॥ महिष लंबन चरणांबुजें रे, बहोंतेर लाख वरसनुं आय ॥ वा० ॥ ५ ॥ कुंवरपणे प्रजुजी तमे रे, दीक्षा लीधी सुजाण ॥ आठे कर्म खपावियां रे, पाम्या केवल नाण ॥ वा० ॥ ६ ॥ क्रोधादिक प्रजुमां नहीं रे, नहिं वली विकथा चार ॥ सातें जय दूरें कस्या रे, करतां परउप कार ॥ वा० ॥ ७ ॥ चउविह धर्म प्रकाशता रे, चोत्रीश अतिशय धार ॥ तीर्थंकर श्रीबारमा रे, जगगुरु जगआधार ॥ वा० ॥ ८ ॥ जवजवना फेरा टल्या रे, दीठा श्रीजिनराज ॥ वंबित दीजे साहेबा रे, तुं बो गरीब निवाज ॥ वा० ॥ ए ॥ कबदेशें गुणमणिनीलो रे, रूडुं गाम अंजार ॥ तिहां जिन वर प्रासाद बे रे, महिमावंत उदार ॥ वा० ॥ १० ॥ श्रावक सहु वसे जाविया रे, जिनधर्मी सुखकार ॥ जक्ति करे जगवंतनी रे,धरता हर्ष अपा र ॥ वा० ॥ ११ ॥ आंगी रची रलियामणी रे, फगमग ज्योति विशाल ॥ सारंग मादल वाजता रे, गावे गीत रसाल ॥ १२ ॥ पूजता जिनवर जावशुं रे, लहियें शिवसुख सार ॥ सत्तर बहोंतेर थापना रे, वदि तेर स गुरुवार ॥ वा० ॥ १३ ॥ अचल गबपति जाणियें रे, विद्यासागर सूरिराय ॥ वाचक सहज सुंदर तणो रे, नित्यलाज प्रजुगुण गाय ॥ वा० ॥ १४ ॥ इति श्रीवासुपूज्यस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीगिरनारजीनो वधावो प्रारंज ॥

॥ प्रथम रेवतगिरि पेखियो, जी हो उपन्यो अधिक आणंद ॥ वधावो म्हारे आवियो ॥ बीजे नेमीसर बहु गुणा, जी हो दीठो दोलतनो दिणंद ॥ वधा० ॥ १ ॥ त्रीजे वधावे प्रजु तूं स्तव्यो, जी हो अगर सुवास विहार ॥ वधा० ॥ केशर चंदन कुसुमने, जी हो पूजा सत्तर प्रकार ॥ वधा० ॥२॥

चोथे वधावे प्रनु चरणनो, जी हो धरीयें मन शुनध्यान ॥ वधा० ॥ चतुर दरिसण चारित्रनो, जी हो गुण गाउं गुरु गान ॥ वधा० ॥ ३ ॥ आसन युक्तो अनुसरी, जी हो जादव गुण लय लीन ॥ वधा० ॥ नावुं प्रनुगुण नावना, जी हो आतम शक्ति नवीन ॥ वधा० ॥ ४ ॥ इम सघलो अंतर टल्यों, जी हो अम तुम अतिशय एक ॥ वधा० ॥ ध्यायकने वली ध्येय नो, जी हो अधिको विवेक अनेक ॥ वधा० ॥ ५ ॥ नाग्य नलें मली न विजने, जी हो जोयो श्रीजिनराज ॥ वधा० ॥ संघवि सहित स्वरूपनुं, जी हो सफल थयुं सहु काज ॥ वधा० ॥ ६ ॥ इति गिरनारजीनो वधावो ॥

॥ अथ पार्श्वनाथना विवाह मांथी आरंनी ॥ वरघोडानी ढाल ॥

॥ जीरे वरघोडे वर संचस्या, जीरें बिहुं पासें चमर वींजाय ॥ सुंदर वर पासनें ॥ जीरे छत्र धरे सुरवर तदा, चमरेंद्र ते वींजणुं वाय ॥ सुंदर० ॥ १ ॥ जीरे सोवन साजे शोनता, हय गय रथ पायक कोड ॥ सुंद० ॥ जीरे देव देवी नरनारीयो, चाले हरखें होडाहोड ॥ सुंद० ॥ २ ॥ जीरे देव कुमर सम दीपता, चाले सांबेला सिरिकार ॥ सुंद० ॥ जीरे नव नव आमंबरें करी, जोतां उपजे हरख अपार ॥ सुंद० ॥ ३ ॥ जीरे केइ बेठा सुखपालमां, केइ राजवाहन चकमोल ॥ सुंद० ॥ जीरे हयवरे गयवरे रथ वरें, एम कुलसुत करतां कल्लोल ॥ सुंद० ॥ ४ ॥ जीरे सुरनर बहु साजन मल्या, करे वस्त्रानरणना ठाठ ॥ सुंद० ॥ जीरे मुख तंबोले पूरीया, सुणे बिरुदने बोले जे नाट ॥ सुंद० ॥ ५ ॥ जीरे अंतरदान्युं गुलाबन्युं, छांटे मांहोमांहे धरी नेह ॥ सुं० ॥ जीरे गजरा घाल्या फूलना, चूवा चंदने रंग चरचेय ॥ सुंद० ॥ ६ ॥ जीरे अबिर गुलाल उडावता, छांटे केशर मृगमद वारि ॥ सुंद० ॥ जीरे धूपघटी बहु महमहे, नाचे नाटक अमरीयुं सार ॥ सुंद० ॥ ७ ॥ जीरे अष्टमंगल आगल वहे, असिकुंत फलक ध्वज धार ॥ सुंद० ॥ जीरे वर्द्धमान पुरुषा वहे, हास्यकार चातुरतकार ॥ सुं० ॥ ८ ॥ जीरे सुर गंधर्व मली घणा, वाये सुर मांदल झफ वीण ॥ सुंद० ॥ जीरे मुरज झाझल धौंकारथी, वली गाय मधुर स्वरलीन ॥ सुंद० ॥ ९ ॥ जीरे ढोलने नोबतुं गडगडे, तेमां विच विच वाजे टकोर ॥ सुंद० ॥ जीरे ताल छंदना मानथी, पडे एम नगारानी ठोर ॥ सुंद० ॥ १० ॥ जीरे नुं गल नेरी नफेरीयुं, वीणा वांसली रसिक नीशान ॥ सुंद० ॥ जीरे चसच

सती सरणाइयुं,फरे चिहुंदिशि करती गान ॥सुंद०॥११॥ जीरे वामा राणी यें मोड बांधीयो, लइ लामण दीवो हाथ ॥ सुंद० ॥ जीरे इंड्राणी युत र थ चढे, तस कुलवंती नारीयुं साथ ॥ सुंद० ॥ १२ ॥ जीरे सरले सादें सोहेला, गाये ललट आणी अंग ॥ सुंद० ॥ एम जानडलीयुं पाछले, प हिरया नवला वेश सुरंग ॥ सुंद० ॥ १३ ॥ जीरे नगरनी नारीयुं वारीयें, गाजें गोखें अटारीयें धाय ॥ सुंद० ॥ जीरे वाजित्र नाद ते सांजली, अति तन मन व्याकुल थाय ॥ सुंद० ॥ १४ ॥ जीरे स्त्रीयोने वाहाला घणा, क लि काजलने सिंदूर ॥ सुंद० ॥ जीरे वलिय विशेषें वालहा, कांइ दूध जमा इ तूर ॥ सुंद० ॥ १५ ॥ जीरे वाजागाजा सांजली, आवे अर्द्ध तिलक करी एक ॥ सुंद० ॥ जीरे एकज आंख आंजी करी, जोवा चाले केइ अविवे क ॥ सुंद० ॥ १६ ॥ जीरे ढलता घृतना गाडुआ, मूकीने जोवा जाय ॥ सुंद० ॥ जीरे पीरसति बाल रमाडती, सखी बालक लेइ पलाय ॥ सुं द० ॥ १७ ॥ जीरे अवली कंचूकी पहेरती, केइ अर्द्ध स्नानथी बाल ॥ सुं द० ॥ जीरे चंदन पगमां चरचती, केइ अलतो लगावती जाल ॥ सुं द० ॥ १८ ॥ जीरे उढणुं अवलुं उढती, कटिमेखला घालती कंठ ॥ सुंद० ॥ जीरे हाथें जांजर घालती, पगे कंकण घाले उल्कंठ ॥ सुंद० ॥ १९ ॥ जी रे पुर वधु इम उत्सव जूए, मनमांहे आनंद न माय ॥ सुंद० ॥ जीरे मोती सोवन फूलडें, वधावती प्रनुगुण गाय ॥ सुंद० ॥ २० ॥ जीरे पुर जन थाट मली जूए, दोडीने चोक बजार ॥ सुंद० ॥ जीरे प्रनुजी आवी उना रह्या, फरता मंमप तोरण द्वार ॥ सुंद० ॥ २१ ॥ जीरे सालायें पा णि ठटामणी मागीयुं, त्यारें नूपण दीये नूप ॥ सुंद० ॥ जीरे इंड कहे रे वे हेवाणने, पोंखो प्रनुने हवे धरी चूप ॥ सुंद० ॥ २२ ॥ जीरे क्रगोने आ लसु शुं थया, अम आवे थइ घणी वार ॥ सुंद० ॥ जीरे आनंद रंग वधा मणा, सुणी आवे प्रसेनजित नार ॥ सुंद० ॥२३॥ इति वरघोडानीढाल॥

॥ ढाल नवमी पोखणानी ॥ वेवाण लावो सेर सोपारी रे,
आंगण आव्यो वर व्यापारी रे ॥ ए देशी ॥

॥ वेवाण उठ तुं वेली उंघ तजी,वर आवियो तोरण साज सजी ॥ सवा लाख नगारांनी धोंस पडी, पोंखवानी जाय ठे एह घडी ॥ १ ॥ कोइ जाण करों पीठाण करो, तमे पगलां आवी बार धरो ॥ अमने उनां घणी वार

थइ,वेवाणने खबर करोने जइ ॥२॥ वेवाण तुं लेजे लाव घणो,तारे बारणे अवसर विवाहतणो ॥ वेवाण हाथमां लेजे सोपारी, ताहारे आंगणे आव्यो अवतारी ॥ ३ ॥ वेवाण हाथमां लेजे कंकु पडो, आव्यो वामा राणीनुं लाडकडो ॥ वेवाण लेजे तुं अर्घ तणी थाली, ए वर वरसे ताहारी बाली ॥ ४ ॥ वेवाण लेजे तुं आरति अजुआली, तह्मारे आंगणे आवी छे दीवाली ॥ वेवाण तुं लेजे कंकुवटी, ताहारे आंगणे आव्यो छे नाणावटी ॥ ५ ॥ वेवाण लेजे तुं मोती थाल नरी, एहवो अवसर आवे न फरी फरी ॥ शुं पेठी जइ घरने खूणे, कंचन मणीथाल घणुं गूणे ॥ ६ ॥ आ अवसरें केम तुं थइ थांथी, तुज आंगणे त्रिभुवनपति क्यांथी ॥ देवने डुर्लन दरिशन जेहनुं, सहेजें मिलवुं थाय छे तेहनुं ॥ ७ ॥ सहु इंइ करे जेहनी सेवा, एहनुं दरिशन जेम मीठा मेवा ॥ उठ उठ तुं वेली आव वली, श्या काममां जइने हमणा नली ॥ ८ ॥ इंदे नंमार घणो नरीयो, मणी कंचनें करी जेवो दरीयो ॥ वली जोइयें ते मागी लेजे, तोरण धृइ तो सहुनें देजे ॥ ए ॥ वेवाइनी मांम रखें खोती, आडुं अवलुं शुं फिरे जोती ॥ इंइाणीयें नीर करी तारी, तेणे वात बनी आवी नारी ॥ ॥१०॥ नही तो जाणत दीकरी दीधी हती,शोना रहेशे इंइाणी वती ॥ तारे मंदिरें आव्यो त्रिजग धणी,कठ कठ तुं वेला थइ छे घणी ॥११॥ तव सांनली कहे मासी सासु,एम खोटी थाउं छो शुं फाशुं ॥ विवाहनां कारज छे बहोलां, पारके घरे दीशो छो पहोला ॥१२॥ एम मोटां बोल न बोलो बहु, पडे कारज त्यारे जणाय सहु ॥ परघरनी वातुं छे सोहेली, माथे पडे निरव हेवी दोहेली ॥ १३ ॥ ए हांसीतणी विधी में वरणी, हवे आवे प्रसेन जितनी घरणी ॥ इंइाणी सम शृंगार धरी, मणी मुगता फलनो थाल नरी ॥ ॥ १४ ॥ गजराजनी चालें चालती, श्रीफल शोनइयां लावती ॥ इंइाणीयो मंगल गावती, एम सासू प्रजु पद पावती ॥ १५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ नारंग सरनाजी चार उवारा, चार उवारे नरिया पाणी तो, नारंगसर रलियामणुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ सासु आवे प्रणमें प्रजु चरणे,मुखथी कहे कोण तुम गुण वरणे ॥ दीठा तेहवां जेहवां सांनल्या करणे तो ॥ आनरणें अंग दीपतुं ए ॥ १ ॥ पुण्य अमारा प्रगट्यां छे आज, तुम दरिसणथी सर्यां सहु काज ॥ जाणीयें पा

म्यां त्रिभुवन राज तो, जिहाज आव्युं अम्ह पुण्यनुं ए ॥ १ ॥ दिशिकुमरीयें मली हुलराव्या, सुरपतियें अभिषेक कराव्या ॥ जगजनना संताप हराव्या तो, आव्या अम घर आंगणे ए ॥३॥ एम कही दूधें चरण पखाले, तिलक कंकुनो करे वर जाले ॥ त्रिभुवनजन सहु प्रभुने निहाले तो, गाले पातिक आपणां ए ॥ ४ ॥ हरपती महोटे मोतीयें वधावे, आरती उतारीने अर्घ देखावें ॥ पोखणानां उपगरण मगावे तो, लावे प्रोहित वेगशुं ए ॥ ५ ॥ फूसर मूसल रवैयो त्राक, सरीया चार करी चलचाक ॥ नाले पोटली करी मन पाकतो, नाकसाही वर निरखीया ए ॥ ६ ॥ इंमि पिंमियें उवारणु धरती,अग्नी लवणनो संपुट करती ॥ वरने वामपदे अनुसरती तो, धरतीयें ते मूकती ए ॥ ७ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ वाजारे वाजे धर्मना जीरे ॥ ए देशी ॥

॥ जीरे इंद्र पूछे वेवाणने रे,जीरे शुं करी करणी तुमे एह,वरने केम पोंखीया ए ॥ जीरे अमे एहमां समज्या नही ए,जीरे कारण दाखो तुमे तेह ॥ वरने० ॥ १ ॥ जीरे पहेलुं तें फूसरुं आदर्युं ए, जीरे फूसरुं गामले होय ॥ फूसरे किम पोंखीया ए ॥ जीरे धान्य उपजे घणुं तेहथी रे, जीरे मंगल रूपी ते जोय ॥ फूसरे इम पोंखीया ए ॥ २ ॥ जीरे इंद्र पूछे वेवाणने रे, जीरे मूसलुं उखले होय ॥ मूसले किम पोंखीया ए ॥ जीरे मूसले तंडुल नीपजे ए, जीरे मंगल रूपी ते जोय ॥ मूसले इम पोंखीया ए ॥ ३ ॥ जीरे इंद्र पूछे रे वेवाणनें रे, जीरे रवैयो ते गोलीयें होय ॥ रवैयें केम पोंखीया ए ॥ जीरे रवैये दधीने वरोलीयें ए, जीरे मंगलरूपी ते जोय ॥ रवैये इम पोंखीया ए ॥ ४ ॥ जीरे इंद्र पूछे रे वेवाणने रे, जीरे त्राक ते रेंटीये होय ॥ त्राकें किम पोंखीया ए ॥ जीरे त्राकथी सूतर नीपजे ए,जीरे मंगलरूपी ते जोय ॥ त्राकें इम पोंखीया ए ॥५॥ जीरे इंद्र पूछे रे वेवाणने रे,जीरे सरीयो ते रुमाने होय ॥ सरीये केम पोंखीया ए ॥ जीरे सरीयाथी वस्तु सहु नीपजे ए, जीरे मंगलरूपी ते जोय ॥ सरीये इम पोंखीया ए ॥६॥ जीरे इंद्र पूछे रे वेवाणने रे,जीरे इंमि पिंमी शिवजीने होय ॥ इंमियें किम पोंखीया ए ॥ जीरे इंमि रक्षा ते रक्षा करे ए, जीरे मंगल रूपी ते होय ॥ इंमियें इम पोंखिया ए ॥७॥ जीरे पांच ए मंगल परवडा रे, जीरे आदरे सघला ए लोक ॥ वरने इम पोंखीया ए ॥ जीरे ते कारण अमे इहां कर्या ए, जीरे शुं

जाणे देवता लोक ॥ वरने० ॥ ८ ॥ जीरे सांजली इंइ नृप हरखीया रे, जीरे हरख्यो सकल परिवार ॥ उत्सव आज अतिघणो ए ॥ जीरे नूप तं बोल ढांटण समे रे, जीरे वरने नूषण दीए सार ॥ उत्सव० ॥ ए ॥ जीरे घाटडी कंठे आरोपिने रे, जीरे खांचिया प्रजुने उत्साहिं ॥ उत्सव० ॥ जीरे मातृका गोत्रज थापीया ए, जीरे लावीया रंगजर त्यांहि ॥ उत्सव० ॥१०॥

॥ दोहा ॥ मातृका गोत्रज आगले, पहेली कन्या गाय ॥
वाम पासे वरने तिहां, देवी साहामो पधराय ॥ १ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ अजब कियो रे मुनिराय, लघुवय योग लियो रे ॥ ए देशी ॥

॥ लग्नसमय प्रोहित हवे रे,मेले सामग्री सहुसाथ ॥ बनलो अजब बन्यो रे ॥ अजब बन्यो रे वरराय, मेरो अजब बन्यो रे ॥ ए आंकणी ॥ शमी पिंपल त्वक चंदने रे, लेपे वरवधू हाथ ॥ बन० ॥ १ ॥ जमणा कर वर वहूतणा रे, मेलवे देवी सकास ॥ बन० ॥ हस्त बंधन मंत्रें कर्युं रे, कुसुंबी सूत्रें तास ॥ बन० ॥ २ ॥ मधुपर्क प्राशन करे रे, वाडव बोले वेद ॥ ॥ बन० ॥ देशाचार विशेषथी रे, दीसे नवनव नेद ॥ बन० ॥ ३ ॥ तिहां ससरो वरने दीये रे, गाय युगलनुं दान ॥ बन० ॥ कन्याने नूषण दीये रे, इम कुलरीत प्रधान ॥ बन० ॥ ४ ॥ हवे वरपक्षी नर रचे रे, वेदी मंमप मांहि ॥ बन० ॥ चउ विदिशें चउ वंशथी रे, कनक कलश ठवे त्यांहि ॥ ॥ बन०॥ ५ ॥ रूप्य ताम्र मृद कलशथी रे, केइ रचे वेदिका सार ॥ बन०॥ सात सात कलशा ठवे रे, अथवा नव नव धार ॥ बन० ॥ ६ ॥ चार बारणे दीपतीं रे, गूंथे कुसुमनी माल ॥ बन० ॥ तोरण चिहुंदिशि बांधीया रे, चंद रुआ चोशाल ॥ बन० ॥ ७ ॥ फूमे माणक फूमणा रे, दीपे मोती दाम ॥ ॥ बन० ॥ सबल बिछाना सज कस्या रे, जाणीयें सुरपति धाम ॥ बन० ॥ ॥ ८ ॥ वास फूल अक्षतें करी रे, मंत्र नणे द्विज पास ॥ बन० ॥ चउवि दिशें उछालीने रे, चोरी प्रतिष्ठे तास ॥ बन०॥ ए ॥ अग्नीकूणे अग्नि ठवे रे, मंत्रेकरी आह्वान ॥ बन० ॥ फेर फार इहां विधि घणो रे, समय देश कु लमान ॥ बन० ॥ १० ॥ कर मेलावो इहां करे रे, देशाचार विशेष ॥बन०॥ मधुपरक कीधा विना रे, कर मेले कोइ देश ॥ बन० ॥ ११ ॥ खांफेखांफा मेलवे रे, वेडा नयन करंत ॥ बन० ॥ मणिगुंथण न्हावण कीया रे, अ ष्ट करम विरचंत ॥ ब० ॥१२॥ तिम पर्याण करम करे रे, धरे वरमाल प

त्र ॥ बन० ॥ ए आदे करणी घणी रे, नाखी ग्रंथें विचित्र ॥ बन० ॥ ॥ १३ ॥ पण इहां आचार दिनकरे रे, कह्यो प्रजापत्य विवाह ॥ बन० ॥ ते अनुक्रम लइ बांधीयुं रे, कांइ वली लौकिक राह ॥ बन० ॥ १४ ॥ ह वें नरनारी केडे चढी रे, मेलित हाथे आय ॥ बन० ॥ दक्षणद्वारें वर वहू रे, चोरीमां पश्चराय ॥ बन० ॥ १५ ॥ वेग पूरव सनमुखे रे, आस ने आवे नृदेव ॥ बन० ॥ मृगचरमासने बेसीने रे, समिधि अगनि करे सेव ॥ बन० ॥ १६ ॥ घृतमधु तिल यव होमीने रे, मंत्र जणे तिहां विप्र ॥ बन० ॥ अर्घ पाद्य बलि देइने रे, पूजे अगनी ते क्षिप्र ॥ बन० ॥ १७ ॥ व रवहू आगले बेशीने रे, तीर्थोदकें अनिषेक ॥ बन०॥ १८ ॥ दर्ने मंत्रनणी करे रे, वाडवनो ए विवेक ॥ बन० ॥ शांतिक पौष्टिक तिहां करे रे, पढी करे गोत्र प्रकाश ॥ बन० ॥ वरवहू अगनी पूजीने रे, लाज अंजली लीये खाश.॥ बन० ॥ १९ ॥वेद मंत्र जणीने गुरु रे, बोले मुखथी एम ॥ ब न० ॥ सुरनरनी साखें करी रे, जोड्यो संबंध ए नेम ॥ बन० ॥ २० ॥ एम कही ढहेडा गांठीया रे, मंगल वर्त्तवा काज ॥ बन० ॥ गुरु कहे करो प्रदक्षिणा रे, आनंदरंग समाज ॥ बन० ॥ २१ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ ढालीयानी देशी ॥

॥ पहेलुं ए मंगल वरतीयुं, जीरे गुंज्या गुंज्या गुहिर नीसाण ॥ आज उत्स व रंग वधामणा रे ॥ वाडवो वेद वली उचरे ॥ जीरे सुरवधू करे बहुमान ॥ ॥१॥ अग्नीने करे प्रदक्षिणा ॥ जीरे लाज वधु होमति जाय ॥ प्रथम मंगल एम वरतीयुं ॥ जीरे वरवधू आसने ठाय ॥२॥ बीजुं ए मंगल वरतीयुं ॥ गा जंता डुंडुनीनाद ॥ सुरवधु सोहेला गावती,जीरे वेदना थाय बहुवाद ॥३॥ अग्नीने करे प्रदक्षिणा ॥ जीरे लाज वधु होमती जाय ॥ बीजुं ए मंगल वरती युं ॥ जीरे वरवहु आसने ठाय ॥४॥ त्रीजुं ए मंगल वरतियुं ॥ जीरे वाजतां विविध वाजित्र ॥ वेद उच्चार होवे घणो ॥ जीरे नारीयो गाय विचित्र ॥५॥ अग्नीने करे प्रदक्षिणा ॥ जीरे लाज वधु होमति जाय ॥ त्रीजुंए मंगल वरती युं ॥ जीरे वरवधु आशने ठाय ॥६॥ जे सुतादान दे तेहनां ॥ जीरे हाथमां दे तव विप्र ॥ तिल यव कुश दरो पाणिने ॥ जीरे कहेवरावे मुख थकी विप्र ॥७॥ अमुक तिथि अमुक संवत्सरे ॥ जीरे दियुं कन्या तणुं दान ॥ इम कही दंपती हाथमां ॥ जीरे पाणी मुकावे गुरु मान ॥८॥ वर कहे प्रतिग्रह अमे कर्यो ॥

जीरे ॥ गुरु तदा देवे आशीष ॥ वर तणो हाथ उपर करे ॥ गज तुरंग देवे अ वनीश ॥ ए ॥ आगल वर पूठे सुंदरी ॥ जीरे लाज वधु होमे ताम ॥ अ गनी करे प्रदक्षिणा ॥ जीरे परण्या पास प्रनु वाम ॥ १० ॥ चोथुं ए मंगल वरतीयुं ॥ जीरे वाजें वाजित्रनां घोर ॥ मंगल चार ए वरतीयां ॥ जीरे नारी यो गाये बहु मोर ॥ ११ ॥ वरवधू आसन फेरिया ॥ जीरे वाम पासें वधु थाय ॥ मोहजोणो लोक तिहां सवि करे ॥ धण कण रयण निरमाय ॥ १२ ॥ वास दूर्वाक्षत कुश लइ ॥ जीरे मंत्रपवित्र करी तेह ॥ दंपतीने शिर थापी या ॥ जीरे द्विजवरे ताम धरी नेह ॥ १३ ॥ तिल यव कुश जल कर लइ ॥ जीरे वधुपिता दीये वर हाथ ॥ कहे मुफ सुता प्रतिग्रह करो ॥ जीरे प्रति ग्रही कहे जगनाथ ॥ १४ ॥ गज रथ घोडला आपीया ॥ जीरे आपीया देश नंमार ॥ मणि कनक रयण वली आपीया ॥ जीरे वर्त्यो जयजयकार ॥ १५ ॥ न्हाल अणी तीर्थोदकें ॥ जीरे मार्जन करे गुरु ताम ॥ सासु कंशार लावे तिहां ॥ जीरे मुदित मन रंगनर जाम ॥ १६ ॥ इति पोखणा समाप्त ॥ (ए श्रपार्श्वनाथना विवाहनी सर्व अढार ढालो छे. तेमांथी उपर छापेली आठमी ढालथी मांमीने तेरमी ढाल सुधी प्रतिष्ठामां गावानो संप्रदाय घणुं करीने छे, तेथी अमें इहां ए छज ढाल छापी छे.)

॥ अथ श्रीमहावीरजीनुं नीशालगरणुं प्रारंन ॥

॥ सखी त्रिनुवनजन आणंदा रें, माता त्रिशलादेवीना नंदा रे ॥ आ वंदू रे, वीरकुमर सोहामणा ए ॥ १ ॥ जिम जिम वीरकुमर हसे, सखो तिम तिम मनडुं उल्लसे ॥ उछरंगे रे, निशाल घरणुं मांमीयुं ए ॥ २ ॥ दुर्जनना मन दमता रे, सखी साजनीया मन गमता रे ॥ आ रमता रे, महावी रजी महोटा थया ए ॥ ३ ॥ धसमस करती धाइ रे, सखी बेहेनडी मंगल गाइ रे ॥ आवे रे, नरनारी उतावला ए ॥ ४ ॥ धसमस करती माडी रे, सखी कुंअर जाले साडी रे ॥ सुखडली रे, मागी लेतो मनरली ए ॥ ५ ॥ वी रजी पहेरो वांकडा, सखी कोटे सोवन सांकला ॥ सांकला, साव रतन हीरें जड्या ए ॥ ६ ॥ बांहे बाजुबंध निरमली, सखी हाथें सोवन मुइडी ॥ मुइडी रे जोतां पोहोचे मनरली ॥ ७ ॥ केडे कसमसफारा रे, तुमे बंधव मले जोआ रा रे ॥ चढावीश रे, गयवर ऊपर जगधणी ए ॥ ८ ॥ आरस मोती चंगा रे, सखी निर्मल रूप सुरंगा रे ॥ आ जाया रे, सरवेने सोहामणा ए ॥ ए ॥

आलोने उत्तम लेखण, सखी वीरकुमरजन देखण ॥ आ लेखण रे, आलोने रयणा तणी ए ॥ १० ॥ काजल मिस नरी आंखडी, सखी वीरकुमर दल पांखडी ॥ आ नमर रे, नमर ते रिष्ट रयण तणी ए ॥ ११ ॥ कांमे नरीआ खडीया रे, सखी माणक मोतीयें जडीया रे ॥ खडीया रे, बालक हाथ सोहामणा ए ॥ १२ ॥ माथे सोवन पाटडी, माता त्रिशला उढे घाटडी ॥ आ घाटडी, साव रतन हीरे जडी ए ॥१३॥ हाथें लामण दीवो रे, तमे महावीरजी घणुं जीवो रे ॥ आ आशीष रे, देबे सहीयर सहु मली ए ॥ ॥१४॥ काम काज सवि चिंतव्या, सखी गयवर खंधे जइ उव्या ॥ आ महावीर रे, सरस्वती नणवा संचर्या ए ॥ १५ ॥ नेर नूंगल बहु वाजे रे, सखी इंड्तणा दल गाजे रे ॥ आ महावीर रे, सरस्वती नणवा आवीया ए ॥ १६ ॥ आलोने आख्याणुं रे, सखी नरी नरी लावजो नाणुं रे ॥ आ नाणुं रे, सरवेने सोहामणुं ए ॥ १७ ॥ व्याकरण सूत्र तिहां नण्या, सखी इंड् तणा संशय टव्या ॥ आ महावीर रे, अध्यापक नणावीया ए ॥ ॥१८॥ इंड् उठीने उना थया, सखी बेकर जोडी आगल रह्या ॥ आ प्रदक्षिणा रे, देइने इंड् पाये नमी ए ॥ १९ ॥ वहेंचो धाणी दालीया, तमे ल्यो सघला नीशालिया ॥ आ निशालिया रे, वीरवर्द्धमानने वाल्हा ए ॥२०॥ नेर नुंगल घणी वाजें बे, सखी इंड् तणा दल गाजे बे ॥ महावीरजी रे, सरस्वती नणी घरे आवीया ए ॥ २१ ॥ घर घर हरख वधामणा, सखी फइयुं लीये बे नामणा ॥ महावीरजी रे, गोत्रज पाय लगाडीया ए ॥२२॥ त्रण नुवनना स्वामी रे, तमे अविचल पदवी पामी रे ॥ शिरनामी रे, श्रावक सघला पाय नम्या ए ॥ २३ ॥ इति निशाल गरणुं समाप्त ॥

॥ अथ पारवीनी चर्चा प्रारंन ॥

प्रथम श्रीसूयगडांग सूत्रनी वृत्तिमां लेप श्रावकनें अधिकारें उद्दिष्ठ शब्दे करी कल्याणक तिथी वखाणी बे, ते उपरथी नूलावो खाइने केटलाएक उद्दिष्ठ शब्दनो अर्थ कल्याणक तिथीज करे बे, पण ए तेमनी नूल बे.

जेमाटे घणी चूर्णिउ तथा नाष्यो अने वृत्तिउमां उद्दिष्ठ शब्दें अमावास्याज कहेली बे, तेज कही देखाडीये बैयें. प्रथम एज श्रीसूयगडांग सूत्रना अढारमा अध्ययननी चूर्णिमां अमावास्याने उद्दिष्ठ कहेली बे, तथा श्रीदशाश्रुतस्कंधना बठा अध्ययननी चूर्णिमां पण उद्दिष्ठानो अर्थ अमा

वास्या करेलो छे, तथा नगवतीना बीजा शतकना पांचमा उद्देशानी वृत्ति मां तुंगीया नगरीना श्रावकोने अधिकारे उद्दिष्ठा शब्दें अमावास्या छे. तथा श्रीगणांगना चोथा अध्ययननी वृत्तिमां पण उद्दिष्ठाशब्दें अमावास्या छे.

तथा वली नगवत्यंगे सुदर्शनशेठ, रूषनदत्त, शंखश्रावक, जयंतीश्रा विका, कार्त्तिकशेठ, सोमिल, उदाइ तथा समुद्रनी वेलना अधिकारें एटला स्थानके आलावुं संक्षेप्युं छे; परंतु वृत्तिकार श्रीअनयदेवसूरिने अनिप्रायें उद्दिष्ठा शब्दें अमावास्याज जाणवी.

तथा ज्ञातासूत्रमां सुबुद्धिमंत्रीश्वर, धनसार्थवाह, नंदमणिआर, अने सेलंगरायने अधिकारे पण उद्दिष्टा शब्दें अमावास्या कही छे.

तथा उपासकदशांगें आणंद प्रमुख श्रावकोने अधिकारें तथा अंतगड सूत्रें सुदर्शनशेठने अधिकारें तथा विपाक सूत्रे सुबाहु कुमरने अधिकारे एटले स्थानकें श्रीअनयदेवसूरिने अनिप्रायें उद्दिष्ठा शब्दें अमावास्या जाणवी.

तथा श्रीउववाइसूत्रें श्रावकने अधिकारे तथा राजप्रश्नीसूत्रें अनुक्रमें श्रीअनयदेवसूरि तथा मलयगिरि आचार्यें उद्दिष्ठाने अमावास्या फलावी छे.

तथा श्रीजीवानिगमें लवणसमुद्रनी वेलने हेतें ॥ चाउद्दसठमुद्दिठपुस्मिमा सिणीसु ॥ एज आलावुं छे. तिहां पण चौदश, आठम अमावास्या, अने पूनेम कही छे. एम चूर्णि तथा सूत्रें ठाम ठाम कहेलुं छे तेमज श्रीअनय देवजी महाराज तथा मलयगिरिजी महाराजना अनिप्रायें उद्दिष्ठा शब्दें अ मावास्या थाय छे,माटे एटली चूर्णिउं अने वृत्तिउंना पाठ ते एक ठाम माटे ठेलाय नही. तेमाटे लेप श्रावकना अधिकार उपर संदेह उपन्यो; पण ज्यां लगण घणां वचन लाने तिहां लगण अल्प वचन उपर पंथ चाले नही. माटे उद्दिष्टा शब्दें अमावास्याज ग्रहण करवी युक्त छे, परंतु क ल्याणिकतिथि कहेवी ए युक्त नथी.

एटले (चाउद्दसठमुद्दिठपुस्मिमासिणीसु के०) चौदश, आठम, अमावास्या अने पूनेम ए चारने पर्वनी बुद्धियें आराधवा, अने जे पंच पर्वी कहे, तेने स मीचीन पडतुं नथी. जेमाटे मूलपर्व उडापीने नवुं पर्व थापवुं ते ठीक नथी.

शास्त्रमां पण पंचपर्वी शब्द नथी. चतुःपर्वीज छे. यतः ॥ योगशास्त्रे चतुः पर्व्यांचतुर्थादि इत्यादि ॥ तथा दिनकृत्ये ठएहं तिहीणमन्नंमि का तिहीं अ बवासरे इत्यादि वृत्तिर्यथा अष्टमी चतुर्दशी पूर्णिमा अमावास्या इति ॥

तथा महानिशीथें जे युक्ति करी पंचपर्वी थापी छे, ते युक्ति मलती न थी. जेम के पक्षनो त्रीजो जागथाकते जीव आउखुं बांधे एवी महानिशीथमां युक्ति करी छे, पण ते सिद्धांतविरुद्ध देखाय छे. जे माटे श्रीप्रज्ञापनामां सियतिजागे, सियतिजाग तिजागे, सियतिजाग तिजाग तिजागे इत्यादि कह्युं. पण पंचपर्वीयें आउखानो बंध न कह्यो. तथा पंचपर्वी ए लौकिक जापा कहेशो तो तिहां पण मुख्य चतुःपर्वीज कही छे. यतः ॥ विष्णुपुराणे ॥ चतुर्दश्यष्टमी चैव,अमावास्या च पूर्णिमा ॥ पर्वाण्येतानि राजेंद्र, रविसंक्रांतिरेव च ॥ १ ॥ तैल स्त्री मांस संजोगी, पर्वस्वेतेषु वै पुमान् ॥ विण्मूत्रजोजनं नाम, नरकं याति वै मृतः ॥ २ ॥ तथा मनुस्मृतावपि ॥ अमावास्यामष्टमीं च, पूर्णिमां च चतुर्दशीम् ॥ ब्रह्मचारी जवेन्नित्य, मप्यृतौ स्नातको द्विजः ॥ १ ॥ इत्यादि जाणवो ॥

अने अपर्वने विषे पर्व संज्ञा तथा पर्वने विषे अपर्वसंज्ञा केहेवी ते निश्चें श्रीगणांगसूत्रे मिथ्यात्व कह्युं छे. एरीते चतुःपर्वी जाणवी.

हवे पाखी पडिक्कमणुं पुनीम तथा अमावास्यायें करवुं तेना पाठ लखीयें छैयें. तद्यथा पक्षांते पाखी करवी एम पाक्षिकचूर्णिमां कह्युं छे. यथा ॥ एवं प्रत्यहं विशुद्धा अपि प्राप्ते पक्षांते विशेषप्रतिक्रमणेन प्रतिक्रमितुमिछंति, इमाणं जत्तिमपुरिसाणं वंदणं करिंति इति ॥ एम पाक्षिकवृत्तिमां पण घणा स्थले कह्युं छे, अने ते पक्षांत शब्दें करी पंचदशी कहीयें. पण चतुर्दशी न कहेवाय. यतः ज्योतिष्करंमक प्रकीर्णक, सूरप्रज्ञप्ति तथा चंद्रप्रज्ञप्ति प्रमुख ग्रंथमां पाडिवय जे पडवो ते पक्षनुं धर एटले पक्षनो धरनार अने पनरसी ते पक्षनुं छेहेडुं जाणवुं,एम कह्युं छे. माटे पन्नरसी तथा पंचदशी शब्दें पूर्णिमा तथा अमावास्या जाणवी, पण चौदश जाणवी नही.

तथा पंजोसणाकल्पें श्रीवीरजगवान् मोक्ष गयाने अवसरें पन्नरसीनुं अग्निवेश्यदिननुं अने देवानंदा एवुं रात्रिनुं नाम कह्युं छे, ते पन्नरसी पक्खेण जा सा चरिमा रयणी इति वचनात् एटले एमां पण पक्षनो छहेलो दिवस अने रात्री ते पन्नरसी जाणवी.

तथा दशाश्रुतस्कंधनी चूर्णि प्रमुखमां पण पाखी अने चौदशीनो दिवस जूदो जूदो कह्यो छे ॥ तथाहि ॥ पक्खिय पोसहिएसु समाहिपत्ताणंतिसूत्रं एतच्चूर्णिर्यथा॥ पक्खियपखियमेव पक्खिय पोसहो पक्खिय पोसहो अठमी

चउदसीसुए पंचमदशायां इति ॥ तथा मासनो अंत एटले महिनानो अंतप ण पूर्णिमाज देखाय छे. तथाच निशीथचूर्णि वंशोदेशके ॥ इयाणिं चंदमासो तस्स निदरिसण इमं सावणबहुलपाडिवयाउ आरद्ध जाव सावणपुण्णिमा समत्ती एवी सेसा नवदयादउ वि मासा दछवा ॥

तथा "पडिक्कमे पक्खियं सव्वं" ए शब्दनी पंचदशियेंज सत्यनाषा थाय; पण चतुर्दशियें सत्यनाषा न थाय. जे विद्वान् विवेकी हशे ते रुडीरीतें विचारशे, अने पोतोनी मेलेज जाणी लेशे के, अमे निःकेवल हठग्राही बैयें.

तथा पाखी चूर्णिमां पण पोसह शब्दें चौदश कही, पण पक्ख शब्द उपर चौदश नथी लीधी. ए प्रमाणे पण पंचदशियेंज पाखी थइ.

तथा केचिदेवं व्याकुर्वन्ति एटले कोइक एम पण व्याख्या करे छे. निशीथ चूर्णिमां पाखी संबंधि कर्त्तव्य चतुर्दशियें देखाय छे. ए सर्व वचनविलास जाणवो; परंतु चौदशें पाखी नथी. वली श्रीव्यवहार चूर्णि तथा वृत्ति उपर पण चौदशें पांखी न थपाय एवीरीतें तेमां जूदा नाव छे, अने हालमां चौदशनी पाखी थापनारा जनो जूदा नाव देखाडे छे, एटले तिहां एम कह्युं छे, जे विद्या गुणवाने अर्थें कालि चौदशें पाखी कही छे,माटें डाह्या पुरुष हशे ते विचारशे, जे धोली चौदशी कां न कही माटें जो चौदशनी पाखी हत तो तिहां काली शब्द कहत नही, तेथी ए वचन उपर कोइ पण रीतें चौदशियें पाखी थपाय नही.

तथा केटलाएक कहे छे, जे आवश्यकचूर्णि प्रमुख ग्रंथोमां चौदशना दिवसें उपवास करवो कह्यो छे, तेमाटें चौदशना दिवसें पाखी जाणवी. तेनो उत्तर कहे छे॥अत्र व्याकरणं व्याक्रियते हे सौम्य व्याक्रियमाणेऽपि चतुर्दश्यां पाक्षिकं न समायास्यति ॥ कोइकरीतें चउदसे उपवास तथा पौषध रूप धर्मकर्त्तव्य तो अमे पण मानीयें बैयें; पण चौदशना दिवसें नियम पोसह पडिक्कमणुं कह्युं नथी. पंचदशियें एटले पूर्णिमायें तथा अमवास्यायें नियमित पोसह पडिक्कमणुं कह्युं छे. तेनी साक्षीना ग्रंथ पूर्वोक्त जाणवा. तेमां पूर्णिमा तथा अमावास्यायें सूत्र चूर्णि वृत्तिनां नाम लइने पाखीनुं घणुंज दृढीकरण करेलुं छे. चोमासानुं पडिक्कमणुं एक दिवसज देखाय छे.

तथा केटलाएक कहे छे के, पाखीनुं कर्त्तव्य ते उपवास प्रमुख छे, अने ते उपवास प्रमुख तो चौदश आठमें करवा, एम ग्रंथोमां देखाय छे,तेमाटें

चौदशेंज पाखी करवी. एवुं बोलनाराउने उत्तर कहीयें छैयें. जे हे देवाणु प्पिय एवी रीतें कहेतां तो तमने आठमना दिवसें पाखी करवी जोइयें. आठ मनादिवसे पण उपवास प्रमुख धर्म कर्त्तव्य करवुं कह्युंज छे. एम तो साहामो स्वाधि रूढशाखामोटन न्याय थाय छे. तथा जे पाखी अने चउमासी जूदी जूदी माने, तेने पण जूडुं जूडुं तप न थयुं. तेने तो वली तेरसनी पाखी करे तो जूडुं जूडुं तप थाय, माटें जे निपुण हशे ते निर्णय करशे.

तथा केटलाएक कहे छे के ॥ चतुर्दशीं चतुराः प्रवदन्ति ॥ जे समुद्रनी वेल अने सेलग यक्षने अधिकारें लौकिक मार्गें उद्दिष्ठा शब्दें अमावास्या एवो अर्थ फलाव्यो छे; पण धर्म कर्त्तव्यने अधिकारे उद्दिष्ठा शब्दें अमा वास्या फलावी नथी. माटे पाखी चौदशनी करवी.

हवे एने उत्तर आपी समाधान करीयें छैयें, जे श्रीठाणांग तथा जग वती प्रमुख सूत्रनी वृत्तिमां उद्दिष्ठा शब्दें अमावास्या फलावी छे. तेमज जो चौदशनी पाखी होय तो श्रीआवश्यक सिद्धांत मांहे पक्षसंधि पाखी शावास्ते कहेली छे, अने पक्षसंधिनो अर्थ नाममालामां पडवो अने पंच दशी एनो अंतरालकाल कह्यो छे. त्यां चौदशनुं नाम पण नथी. तथाच त द्ग्रंथः 'स पर्वसंधिः प्रतिपत्पंचदश्योर्यदंतरम्' तथा आचारांगसूत्रनी वृत्तिमां पण संधिशब्दें अंतपणुं कह्युं छे, तथा आवश्यक सूत्रनी गाथा॥ जह गेहं पइदिवसं, पि सोहियं तहवि पस्क संधीसु ॥ सोहिज्जइ सविसेसं, एवइ हयंपि नायव्वं ॥ १ ॥ अने सूत्रमां पर्व अने पक्ष एकज कहियें. ए नाव श्रीठाणांग सूत्रमां तइए पव्वे इत्यादि पाठमां छे.

इहां केटलाएक एम कहे छे के, संधि गमे तेवारें आवे तो शुं छे? तेने उत्तर कहियें छैयें. जे पडिक्कमवानी वेलायेंज पडिक्कमणुं थाय. जेम पर्यु पणा कल्पें. राइंदिअंतरा शब्दें यद्यपि मध्यरात्रि न आवे तोहि पण मध्य रात्री लेवी. तेमज पडिक्कमणुं पण वेंलायेज करवुं एम जाणवुं. पण कल्पना करवी नही. माटे संधि शब्दें पूनेम तथा अमावास्यानुं छेहडुं थाय पण चउदशनो तेमां गंध पण न आवे.

वली जो चउदश पाखीनो दिवस होय तो, "पस्को वइक्कंतो एवो पाठ केम कहेवाय? कारणके पक्ष पूरण पंचदशियें थाय, पण चउद्दशियें न थाय. केमके? पक्षनुं धर पडवाना दिवसथी मंडाय ते पूर्णिमायें छेहडुं आ

वे. ए नाव श्रीजंबूद्वीपपन्नत्तीए तथा सूरपन्नत्ती चंदपन्नत्ती सिद्धांतमां छे.

तथा जो पक्षनो अंत चउदशें थतो होय, तो श्रीपर्युषणा कल्पमां प क्षांत पूर्णिमा एवुं नही कहेत. तथाहि ॥ पमाणपक्खंतरायलेह इति सूत्रं चांद्रमासापेक्षया प्रमाणपक्षयोरंते पूर्णमास्यांतरागदा हर्षदायिन्यः कला यस्य तं संपूर्णकलमित्यर्थः ॥

तथा जगवती सूत्रमांहे श्रीमहावीरें कार्तिकवदि पडवाने दिवसें विहा र कीधो त्यांहीं पण विचारतां पूनमे पाखी थाय छे, पण चौदशे पाखी थातीनथी.

तथा प्रकरणे गण वृत्तौ पूनिमे पाखी कही छे. तद्यथा ॥ एवं च कारणे णं, कालगारिहिं चउत्थीए पज्जोसवणं पवत्तियं समत्तसंघेणयं अणुमति यं तवसेणपक्खियाणिवि चउद्दसिए आयरियाणि अन्नहा आगमुत्ताणि पुन्नि माए इति॥ए आलावो तपगछाचार्य श्रीकुलमंमनसूरिनो करेलो छे. तथा श्री विचारामृत संग्रहग्रंथमांहे पण एम कह्युं छे जे श्रीसिद्धांतोक्त पुनमनी पाखी छे, पण श्रीकालिकाचार्यें चोथना पंजोसण आण्या माटे चौदशनी करवी.

तथा श्रीकल्पसूत्रमां अढारदेशना राजायें पण अमावास्यायें पोसह लीधुं छे, माटे ते पाखी जाणवी. तथा आवश्यक चूर्णिमां ॥ सव्वेसु काल पव्वेसु, पसछो जिणमए तवोजोगो ॥ अठमि पन्नरसीसु य, नियमेण हवि इपोसहिउ ॥१॥ तथा उत्तराध्ययनना नवमा अध्ययनने विषे घोरा समं चइत्ताणं इत्यादि गाथा लघुवृत्ति तथा बृहद्वृत्तिमां कही छे. तेनो अर्थः– यथा सर्वेष्वपि तपोयोगप्रशस्तकालपर्वसु अष्टम्यां पंचदश्यां च नियतं पौषधं वसेत् ॥ २ ॥ एथी पोसह पण नियम सहित लेवुं ते पंचदशियें एटले अ मावास्याये तथा पुनिमे लेवुं. पण चौदशीनेविषे नियम शब्द नही जाणवो.

तथा नाममालामां पण पूनेम अने अमावास्यानां एकज नाम कह्यां छे.पक्षांतौ पंचदश्यौ यथा 'पंचदश्यौ यज्ञकालौ पक्षांतौ पर्वणी अपि' तथा लोकेपि पक्षांतः पूर्णिमायां यथा ॥ मा कांते पक्षस्यांते इत्यादि जाणवुं.

तथा केटलाएक कहे छे के,पाखी चूर्णि प्रमुखग्रंथमां, अठमी चउदसी सु उपवास करणं, एम कह्युं छे. एमना कहेवा प्रमाणे चौदशे पाखी थइ.

हवे एनो उत्तर कहे छे के, ए शब्दनो जावार्थ एम जाणवो. जे पूनेम त था अमावास्यायें पाखी पडिकमणुं करवुं, तेनो व्यवहार उपवासज होय छे. पण चौदशे पाखी पडिकमणुं करवुं बोल्युं नथी. तेमाटे गाम गाम

चौदशे उपवास करवो कह्यो. जो चौदशे पाखी पडिक्कमणुं होय तो निशी थचूर्णिना दशमा उद्देशमां शालिवाहन राजायें कालिकाचार्यने कह्युं के, चोथना दिवसें पंजोसण करतां महारी राणीने पडवाना दिवसें उपवासनुं पारणुं थाशे. ते केम कह्युं तेमज उपवासने अधिकारें ज्यां चाउद्दसीसु एवो शब्द छे, तिहां पण बहुवचन छे माटे पूर्णिमाज जाणवी.

तथा केटलाएक एम कहे छे के, जे पूनिम तथा अमावास्यायें पाखी माने तेने चतुःपर्वी न थाय तेने तो त्रण पर्वीज थाय, जेमाटे अमावास्या तथा पूर्णिमा ए बे थइने पाखीनुं पर्व एक थयुं, तथा बीजी आठम अने त्रीजी चौदश एम सर्व मली त्रण पर्व थयां. तेने उत्तर कहे छे के,अमावस्या अने पूर्णिमा ए बे पर्व जाणवां,पण एक पर्व न जाणवुं. जे माटे अंग उपांग प्रमुख सूत्र तथा वृत्तियें चौदश, आठम, अमावस्या तथा पूर्णिमा ए चारे पर्व कह्या छे. तेमज विष्णुपुराण प्रमुख लौकिक ग्रंथें पण एमज छे. ते माटेज पुनमनी तथा अमावस्यानी पाखी करे तेहने चार पर्व थाय, अने जे चौदशनी पाखी करे तेहने तोमात्र बे ज पर्व थाय.

अने श्रीसूयगडांगसूत्रनी वृत्तिमां आदि शब्द च शब्द अने अपि शब्दना जे भाव छे,तेनो जे विचार करशो,ते पूनम तथा अमावास्यानी पाखीने कदापि कालें नहींज उडापे, अने एमांहे पण चौदशनी पाखी कही नथी. मात्र पर्व आराध्य कह्या छे.

तथा केटलाएक एम कहे छे के, अढार राजायें एवुं कह्युं जे अमे अमावास्यायें पोसह रूप इव्योद्योत करीशुं. एवो निर्धार करीने ते राजाउयें इव्योद्योत कर्यो. एवीरीतना बोलनारा सर्व जूठाबोलो थाय छे. कारणके, सूत्रमां तथा वृत्तिमां पोसहने इव्योद्योत कह्यो नथी. इव्योद्योत जे कह्यो छे तेतो दीपक कर्या,ते जाणवो. केमके,आवश्यक प्रमुख सूत्रें पण इव्योद्योत ते चंइसूर्य प्रमुखना उद्योतने कह्यो छे,तेमाटे पोसहने इव्योद्योत न केहवो.

तथा केटलाएक कहेछे के, अढारदेशना राजायें अमावास्यायें पोसह थाप्युं छे. एम कहे छे, ते पण असंमजस वाग्विलास जाणवो, जेमाटे तिहां व्रत कर्यानो अर्थ छे, पण थाप्यानो अर्थ नथी. तेमाटे अढार राजाना पोसह उपर चौदशनी पाखी थापवी तेपण जीर्णरज्ज्वालंबनसमान जाणवुं. एटले जुनी सडेली त्रुटेली दोरीनुं अवलंबन लइने उचुं चडतां

दोरी त्रुटी जाय तो हेठे पडी दुःखी थाय, शरीरने बहु वागे, तेनी माफक जाणवुं. एवीरीतें ए अमावास्याना पोसह उपर पूनेम तथा अमावास्यानी पाखी स्पष्ट थपाय छे. जो चौदशे पाखी होत तो चौदशें पोसह कहेत.

तथा वली कोइ कहेशे के, कल्याणिक माटे पोसह कीधुं हशे, ते वात पण मलती नथी. कारणके, जेवारें पोसह करवा बेठा तेवारें कांइ श्रीवीरनुं निर्वाण कल्याणिक थयुं न हतुं. तथा अमावास्यायें जे आंलोयणा निषेधी छे, ते महोटा तप आश्रयी जाणवी, परंतु प्रतिक्रमण रूप आलोयण न जाणवी.

तथा घणी वृत्तिउमां चंद्रमासने अर्द्ध तथा मासने अर्द्ध पाखी कही छे. हवे इहां विचारवुं, जे मासनुं अर्द्ध पंचदशियें थाय ? के चौदशे थाय ? खरेखरुं विचारतां तो पंचदशियेंज मासनुं अर्द्ध थाय छे. अने कोइक एम कहे छे के चौदशथी बीजी चौदशें पन्नर दिवस थाय. पण ए वचन नूतेष्टा वेशि दृष्टिरागीनां जाणवां. एवां वचन बोलनारानी मतियें तो तेरसनी पण पाखी थाय. कारणके तेरसथी बीजी तेरसें पण पन्नर दिवस थाय छे. एम सर्वेतिथीयो जाणी लेवी. एम करतां थकां चंद्रमासार्द्धनी बांधणी नांगी जाय, त्रूटी पडे, माटें अनेक ग्रंथोमां ठामे ठामे मासार्द्धने पाखी कही छे, तेथी पूनेम तथा आवावास्यायेंज पाखी जाणवी. जे माह्या हशे ते एना नावनेद विचारशे.

तथा कोइक कहे छे के, दशाश्रुतस्कंध चूर्णिमां पक्खिय शब्दें चउदश वखाणी छे. ए बोलवुं पण असत्य छे, तिहां पक्खिय शब्दें चोखी पुनेम दृढ करी छे.

वली आवश्यक चूर्णिने अनिप्रायें पण पाखी, पूर्णिमा तथा आमावास्यानी देखाय छे. अलंविस्तरेण. वली पण जेम श्रीजिनाज्ञा होय, तेम प्रमाण छे. नात्रानिनिवेशोऽस्ति ॥ इति पाक्षिक विचारः ॥

अथ नाइपदशुक्लपंचमीप्रतिपादकनिर्णय.

प्रथम श्रीसमवायांगसूत्रना सितेरमां समवाय मध्ये सूत्रना प्रथम आलापकमां कह्युं छे के, समणे नगवं महावीरे वासाणं सवीसइराइमासे वइक्कंते सत्तरिएहिं राइंदिएहिं सेसेहिं वासावासं पद्योसवेइ ॥ इति ॥ एनी टीका ॥ समणेत्यादि ॥ वर्षाणां चतुर्मासप्रमाणस्य वर्षाकालस्य विंशतिदिवसाधिके मासे व्यतिक्रांते पञ्चाशद्दिनेष्वतीतेष्वित्यर्थः। सप्तत्यां च रात्रिंदिनेषु शेषेषु नाइपदशुक्लपंचम्यामित्यर्थः। वर्षास्वावासो वर्षावासः वर्षावस्थानं

पज्जोसवेइ इति परिवसति सर्वथा करोति । पंचाशत्सु प्राक्तनेषु दिवसेषु तथा विधवसत्यभावादिकारणे स्थानांतरमप्याश्रयति । अति भाद्रपदशुक्लपंचम्यां तु वृक्षमूलादावपि निवसतीति इति । तथा श्रीपक्षप्रतिपादकेयं गाथा॥श्रीपंचाशकेप्युक्तं आलोचनापंचाशके श्रीहरिभद्रसूरिभिःपक्खियगाहा दशमी ए गाथानी टीकामां श्रीअभयदेवचार्यें एवीरीते अर्थ कर्यो छे के, पक्षेऽर्धमासे भवं पाक्षिकं पर्व चतुर्दशी पंचदशी वा इति । तस्मात् परंपरया पंचदश्यां चतुर्दश्यां वा प्रवचनप्रोक्तं पाक्षिकमिति तदनुसारेण परंपरायातं पाक्षिकं प्रतिक्रमणं कर्तव्यमिति । केचित् वावदूकाः कथयंति । ननुं चतुर्दश्यां कर्तव्यं प्रतिक्रमणं पाक्षिकमिति ते चाविदितपरमार्थाः परंपरागतजिनवचनमनभिरोचमानाः स्वमतकदाग्रहग्रहेण गतमनस्काःसमुत्फुल्लगल्लस्थला आत्मानं श्रुतोक्तक्रियाकारिणं मन्यमाना भासंते, तान्प्रति ब्रूमः ॥

चतुर्दश्यामपूर्णपक्षः ॥ कथं ज्ञातं, सूर्यप्रज्ञप्तौचंद्रसंवत्सरे चैको मासस्त्रिंशद्दिनावधिः एकश्चैकोनत्रिंशद्दिनावधिः त्रिंशद्दिनमासे तु पंचदशदिनात्मकःपक्षः एकोनत्रिंशद्दिनमासे तु एकः पक्षः पंचदशदिनात्मकः द्वितीयपक्षश्चतुर्दशदिनात्मक इति ॥

एटले सूर्यपन्नत्तिमां अने चंदपन्नत्तिमां चंद्रसंवत्सर त्रणसें चोपन दिवनो कह्यो छे. तेमां छ महीना त्रीशा अने छ महीना उगणत्रीशा होय छे. ते उगणत्रीशा तथा त्रीशा महिनामां तिथिनी वधघटथी चौदशना दिवसें पण पूनेम तथा अमावास्या आवी जाय छे. ए हेतुथी पूर्णिमासी तथा अमावास्यामां आलोयणा कर्त्तव्य छे, परंतु ते आलोयणानी वखतें पुर्णिमासी अने अमावास्या होवी जोइयें. ए आलोचना माटे पंचाशक ग्रंथनी जे उपर गाथा लखी छे. तेनो अर्थ टीकाकार श्रीअभयदेव सूरिजियें आवीरीते कर्यो छे.

दशमीगाथा पक्खियगाहा०॥ एनो अर्थ पक्षेऽर्धमासे भवं पाक्षिकं पर्व चतुर्दशी पंचदशी वा एवीरीतें सांवत्सरीनुं प्रतिक्रमण पण पंचमी प्रवृत्तते थके कर्त्तव्य छे.

तथा दशाश्रुतस्कंधसूत्रे पंचदश्यां व्याजहार चूर्णिकारः पक्खियपोसहिएसु समाहिपत्ताणं इति सूत्रम् एतच्चूर्णिश्च पक्खियं पक्खियमेव इति ॥

तथा चतुर्थीना पंजोसण करवावाला श्रीकालिकाचार्यना संतानीयायें

ए कारणथी अपवाद उत्सर्गनी परंपरानी माफक दृष्टिरागने वशीभूतथ का श्रीनिशीथचूर्णिमां लख्युं बे.

ते निशीथचर्णिनो पाठ एवीरीतें बेः—एब्बउ आसाढे पुन्निमाए ठिया ड गलादीयं गेल्हंति पज्ञोसवणकप्पं च कहेंति पंच दिणा ततो सावणबहुलपं चमीए पज्ञोसवेंति सखित्ताभावें कारणे पणगेवढ्ढी सावणवुद्दसमीए पज्ञो सवेंति एवं पणरसीए एवं पणगवढ्ढी ताव कज्ञन्ति जाव सवीसतिमासो पुणो सोय सवीसति मासो भद्दवयसुद्दपंचम्येवेति अह णासाढसुद्द दसमीए वासाखेत्तं पविठ्ठा अहवा जब्ब आसाढमासकप्पो कउ तं वासप्पाउग्गं खे त्तं अन्नं च णब्बि वासपाउग्गं तहे तब्बे वणज्ञोसवेंति वासंवगाढं अणुवरयं आढत्तं तहे तब्बेव पज्ञोसवेंति एक्कारसीउ आढवेउ डगलादीयं गेल्हंति प ज्ञोसवणाकप्पं कहेंति ताहेआसाढपुन्निमाए पज्ञोसवेंति एस उस्सग्गे सेस काल पज्ञोसवेत्ताणं अपवादो अपवादेवि सवीसति राइमासातो परेण अ तिक्कमे उण वट्टति सविसतिराते मासे पुण जति वासखेत्तं ण लभ्भति ता रु रकहेठ्ठावि पज्ञोसवेयव्वं तं पुन्निमाए पंचमीए एवमादि पव्वेसु पज्ञोसवेयव्वं णो अपव्वेसु सीसो पुब्बति। इयाणि कहं चउब्बीए अपव्वे पज्ञोसविज्ञंति। आयरिउ भणति कारणिया चउब्बी अज्ञकालगयारिएण पवत्तिया। कहं भंते कारणं। कालगायरिउ विहरंतो उज्ञेणिं गतो तब्ब वासावासंतरठ्ठितो तब्ब णगरीए बलमित्तो राया तस्स कणिठ्ठो भाया भाणुमित्तो जुवराया तेसिं भगिणी भा णुसिरीणाम तस्स पुत्तो बलभाणू णाम सो पगइ भद्द विणिज्ञयाए साहु प ज्ञुवासति आयरियेहिं से धम्मो कहितो पडिबुद्धो पव्वावितो य। तेहिं य बल मित्तभाणुमित्तेहिं कालगज्ञो पज्ञोसविते णिव्विसिता कतो केति। आयरिया भणंति जहा बलमित्तभाणुमित्ता कालगरियाणं भगिणेज्ञो भवंति माउलेति काउमहं आयरिकरंति अणुठ्ठाणादियं तं पुरोहियस्स अप्पत्तियं भणति य एस सुद्दपासंडो वेयबिवाहिरो रन्नो अग्गतो पुणो उन्नावे तो आयरिएण णि प्पसिण वागरणो कत्तो ताहे सो पुरोहितो आयरियस्स पडुठ्ठो रायाणं अ णुलोमेहिं विप्परिणामेति एते रिसतो महाणुभावा एते जेण पहेणं गब्बं ति तेण पहेणं जदि रन्नो गब्बति एताणि पापा अक्कमति तो असिवं भवति ततो ताहे णिग्गता एवमाहियाण कारणेणं अन्नुतमेणणिगतो विहरंता प तिठ्ठाणं णगरं तेण पठ्ठित्ता पतिठ्ठाणे समणसंघस्स य अज्ञकालगेहिं संदि

ह जावहं आगछामि ताव तुम्हेहिं णो पज्जोसवियव्वं तछय सालवाहणो राया सावतो सोय कालगयं एतं सोउं णिग्गतो अभिमुहो समणसंघो य महया विभूतिए पविठो कालगयो पविठेहिय भणियं तद्दिवसं मम लोगाणुवत्तीए इंदो अणु जाए सवो होहित्ति साहु वेकहत्ति तेण पज्जोसवी ते सेस्स तो छठी ए पज्जोसवणा॰ कयउ आयरियेहिं भणियं ण वट्टत्ति पंचमी अतिक्कमेउं तोहे रस्रा भणियं॰तो अणागउ चउछीए पज्जोसविज्जत्ति आयरिएण भ णियं एवं भवउ तोहे चउछीए पज्जोसवियं एवं जुगप्पहाणेहिं चउछी का रणे पचवित्ता सवे वाणुमता सव्वसाहूणं रस्रो अंते पुरियाउ भणिता तुम्हे अमावसा ए उववासकाउ पडिवयाए सव्वखज्जविहीहि साधु उत्तर पारणा पडिलाभेत्ता पारेह पज्जोसवणाए अठमंति काउं पडिवयाए उत्तर पारणयं भवति संच सव्वलोगेण वि कयं ततो पभिति मरहठ विसए सवण पवउत्ति छणो पवसो इति निशीथ चूर्णौ॥

ए चूर्णिना आलावानो ए परमार्थ छे.जे श्री कालिकाचार्यजी विहार क रता थका उज्जणी नगरीयें आव्या तिहां बलमित्रराजा अने तेनो भाइ लघु भानुमित्र युवराजा हता अने तेमनी बहिन भानुश्री हती तेना पुत्रने कालिकाचार्यजीयें राजाना पूछया विनाज दीक्षा आपी दीधी, ते कारण माटे राजायें कालिकाचार्यजीने देश बाहिर काहाढी मूक्या.

तथा एज चूर्णिना एज आलावामां वली आरीते पण कह्युं छे के ए आचार्य राजा बलमित्र भानुमित्रना मामा हता ते बेहु जण आचार्यजी नो घणोज विनय विशेष करता हता, तेथी राजानो पुरोहित वारंवार रा जसभामां कहेतो हतो. जे ए पांखमी शूद्र वेद बाहिर नास्तिक छे. एम क रवाथी एकदिवसें आचार्यें ते पुरोहितने प्रश्न पूछी निरुत्तर कर्यो, जूठो पा ड्यो ते दिवसथी वली विशेष अप्रीतिथी राजानी आगल मीठे शब्दें करी ते पुराहितें एवुं कह्युं के, हे महंत आ नगरमां कालिकाचार्य फरे हरे छे, माटे एना चरणजो अहीं चालशे फरशे तो राजा प्रजाने उपद्रव थाशे.

एवीरीतें ए बे कारणोमांथी कोइपण कारणथी चोमासा मांहेज कालि काचार्य देश बाहेर थया. तिहांथी प्रतिष्ठान पुरने विषे आव्या तिहां तेमने महाराष्ट्र देशने विषे प्रतिष्ठान नगरना राजा शालिवाहन तथा श्रीसंघे मली म होटा महोत्सवसहित गाममां लइ आव्या. ते वखतें आचार्यें कह्युं के, भा

दरवाशुदि पंचमीना दिवसें पंजोसण थशे,तेवारें शालिवाहनराजायें कह्युं, के पांचमीना दिवसें तो अमारो इंद्र यात्रानो महोत्सव छे, माटे छठना दिवसें आप पंजोसण करो. ते सांजली कालिकाचार्यजी बोल्या के, पंचमीनुं तो मेरुनी चूलिकानी पेरें उल्लंघन थाय नही; तेवारें राजायें कह्युं जे पांचम ना पहेला दिवसे चोथनुं पंजोसण करो. तो थायके न थाय? कालिकाचार्यें कह्युं के, अपवादें चोथनुं पण करीशुं. जेमाटे अंतरावासे कप्पइ ए पाठथी पंचमीना पहेला दिवसें करवुं कल्पे.

तथा पहेला चूर्णिना आलावामां उत्सर्गे अपवादना पंचकडा देखा ड्या छे, ते विचार लखीयें छैयें. यथा "अंतरावासे कप्पइ" चतुर्थीदिवसे पंचमी प्रतिक्रमणवेलायां समागते सति प्रतिक्रमणं कर्त्तव्यम्। अंतरावासे वि कप्पइ अर्वागपि कल्पते ए कल्पसूत्रजीमां पाठ छे, ते चोथमां पंचमी आववाथी चोथनी संवत्सरी थाय छे.

तथा जे चूर्णिनो आलावो पहेलो लख्यो छे, ते चूर्णिपण कालिकाचार्य जीना संतानीयानीज बनावेली छे, परंतु श्रीदेवर्द्धिगणि खमासमणजीनी बनावेली नथी, माटे कालिकाचार्य प्रथम थइ गया छे, अने ए चूर्णि तो पाछलथी बनावेली छे, तेथी कालिकाचार्यनो संबंध पण तेमां छे.

तथा कालिकाचार्यनी जे कथा छे तेमां वली ए चूर्णिथी विरुद्ध लखेलुं छे, तेमां तो जानुमित्र अने बलमित्र ए बे जाइ जरुअच्चना राजा हता, तेमनी बहिन जानुश्री हती तेमना पुत्रने विना पूछ्यां दीक्षा दीधी. वली पुरोहितनी अप्रीतिथी आचार्य देश बाहर नीकल्या छे, एम लख्युं छे.

तथा श्रीकालिकाचार्यनी कथामां वली एवुं लख्युं छे, जे कालिकाचार्य नी पासे निगोदना स्वरूप संबंधि प्रश्न पूछवा माटे इंद्र महाराज आव्या छे. ए वात एमना संतानीयायें लखी दीधी छे. ते महामिथ्यात्व छे. कारणके, विक्रमादित्यराजाने एकशो पांत्रीश वर्ष थइगया पछी शालिवाहनराजा थया छे. तेणें पोतानो शक चलाव्यो छे, ते आज न्हानो छोकरो पण जाणे छे, अने श्रीवीरजगवानथी चारसें सीतेर वर्षें विक्रमादित्य थया छे, ते पछी शालिवाहनराजाना वखतमां चोथना पंजोसण करवावाला कालिकाचार्य थया छे, ते श्रीवीरजगवानथी छशेने पांच वर्ष पछी थया, अने श्रीपन्नवणासूत्रना कर्त्ता कालिकाचार्य जेमनुं बीजुं नाम श्यामाचार्य हतुं,

अने जेमने इंद्रमहाराजे आवी प्रश्न पूछ्या छे, ते आचार्य तो नगवानथी त्रणशेने पांत्रीशमे वर्षे थया छे. ते एमना संतानीयायें दृष्टिरागथी प्रगट मिथ्यात्व अंगीकार करीने चोथनी पुष्टी करवा माटे नगवानथी (६०५) वर्ष पछी शालिवाहनराजाना वखतमां जे चोथनी सावत्सरि करनार बीजा कालिकाचार्य थया छे, तेनेज इंद्रना प्रश्नना उत्तर आपनारा लखी दीधा छे. एवा खोटा लेख लखवानो कांइ मनमां नय आव्यो नथी.

तथा तिच्छोगालिपयन्नुं पण एमनाज संतानीयायें बनावेलुं छे; पण ते दसपयन्ना मांहेलुं पयन्नुं नथी, परंतु बीजा सिद्धांतोनी गाथाउ एकठी करी पयन्नुं रचेलुं छे, तेमां आ प्रमाणे एक गाथा लखी दीधी छे ते आंही लखीये छैये ॥ तेणकअ नवसएहिं, समइक्कंतेहिं वद्धमणाउ ॥ पज्जोसवण चउछी, कालगसूरिहिंतो ठविया ॥ १ ॥

तथा बीजा ग्रंथोमां पण एमना संतानीयायें आवी गाथाउ लखेली छे ते लखीये छैये ॥ चउसय तिपन्न वरिसे, कालिगगुरुणा सरस्सईगहिया ॥ चउसयसित्तरि वरिसे, वीराउ विक्कमो जाउ ॥ १ ॥ एरीते एमना संतानीआयोनां वचनो अजाणनी माफक लखेलां देखाय छे.

तथा वली लोकोने समजावे छे, जे सर्व श्रीसंघें मलीने चोथनी संवत्सरी करी छे.ते तो महाराष्ट्र देशना शालिवाहन राजाने आधीन जे संघ हतो ते संघे कबुल करी हशे. तथा श्रीकालिकाचार्यजीना संतानीआयें कालिकाचार्यने युगप्रधान मानीने तेणें कबूल करी हशे,पण नानुमित्रनी बेहनना दीकराने तेना पितानी रजा लीधा शिवाय स्वयमेव दीक्षा आपी देवाथी ते देश छोडवो पड्यो, तिहांथी महाराष्ट्रदेशें पुहविठाण पत्तनमां आववुं पडयुं, अने तिहां वली राजाना कहेवा उपरथी पांचमने बदले चोथनी संवत्सरी करवी पडी, कदापि जो चोथनी संवत्सरी नही करत तो राजा साथे अप्रीति थात तो वली नवी पीडा उपजे. ए सर्व युगप्रधानना अतिशय सूचक वात देखाती नथी. पण बीजे वर्षे ते आचार्य कालधर्म पाम्या, पछी तेना संतानीयायें तेमनी प्रवृत्तिनी परंपरा करी लीधी.

अथवा कालिकाचार्य पुहविठाण नगरमां घणो काल रह्या तेथी चोथनी परंपरा चालती थइ ते मात्र तेमना संतानीया तथा शालिवाहनराजाना राज्यमां वसनारायें चलावी; पण बीजा अन्य गछवाला श्रीसंघें तो

परंपरागत आवेली पांचमनी संवत्सरी करवी पडती मूकी नथी. कारण के, तेमने पांचम छोडीने चोथ चलाववानुं कोइ कारण न हतुं.

वली सर्वसंघे चोथनी संवत्सरी कबुल करी. तथा श्रीकालिकाचार्य युगप्रधान हता.एवुं जे तेना संतानीया कहे छे,तेपण मिथ्या छे.केमके कोइना पुत्रने तेमना मा बापनी आज्ञा विना मुंमी नाखे ए लक्षण युगप्रधानमां न होय; जेमाटे तोसलिपुत्र आचार्ये दशपुरनगरथी बीजी जगाये जइने माता पिताथी छुपीने वगर आज्ञाये श्रीआर्यरक्षितजीने दीक्षा आपी दीधी. "एसपढमासेहणिप्फडिया"ए पाठ आवश्यकनिर्युक्तिनी टीकामांश्रीहरिभद्रसूरिजीयें लखेलो छे. ए प्रथम शिष्यने बीजा गामे लईजइने मातापिताने पूछ्या विना दीक्षा दीधी,तेथी ते शिष्य निसफेटक कहेवाणा॥ इत्यादि अनेक वातो छे केटली लखीयें जेमाटे संवत्सरी अनादि कालथी पंचमीनी चाली आवे छे.

॥ अथ पाखी विषे श्रीचंदपन्नति सूत्रनी गाथा ॥

॥ छठी सहिया न अठमि,तेरस सहिया न पक्खिया होई ॥
॥ पडिवे सहिया न कयावि, इह भणियं जिणवरिंदो ॥ १ ॥

अर्थः—छठ सहित आठम तथा तेरस सहित पाखी ते अमावास्या अने पूनम होय नहीं. तथा पडवा सहित दिवस होय तो पाखी न करवी, उदयात पडवाना दिवसे पाखी न होय. एवां वचन श्रीजिनवरेंद्रे कह्यां छे॥ १ ॥

पन्नरसम्मी दिवसे, कायव्वं पक्खियं तु पाएणं ॥ चउद
सि सहिय कयावी,नहु तेरस सोलमे दिवसे ॥ २ ॥

अर्थः— पडवाना दिवसथी मांमीने यावत् पूरे पन्नरमे दिवसें पाखीनुं पडिक्कमणुं पडिक्कमवुं,अथवा कदाचित् पडवाथी चोद दिवस पडिक्कमणना दिवस युक्त लेवा; पण पडवाथी तेरमें दिवसें अथवा शोलमें दिवसें पाखीनुं पडिक्कमणुं न करवुं ॥ २ ॥

अठमितिहीण सहियं, कायवा अठमी य पाएण ॥
अहवा सत्तमम्मिय, नवम छठे न कायवा ॥ ३ ॥

अर्थः—आठमने दिवसें साधुने व्रत करवुं, अथवा पडिक्कमणुं करवुं पडि

क्रमणानी वखतें आठमनी तिथी लेवी आठमनी तिथी सहित आठमनुं पडिक्रमणुं करवुं अथवा तिथीनो वेध होय तो सातमने दिवसें पण आठम करवी, पण नवमी तथा ठने दिवसें तो निश्चेंथी आठम नज करवी ॥३॥

पक्खस्स अद्धम्मि, मासद्धाए य पक्खियं होइ ॥
सोलस दिवसे पक्खियं, न कायवं होइ कया वि ॥४॥

अर्थः—पक्षने अर्द्ध आठम तिथी करवी, महीनाना त्रीश दिवस तेनो अर्द्ध एटले पन्नर दिवसें पाखी करवी, पण शोलमे दिवसें पाखी न करवी, कदापि कोइ कारणे वेधाली तिथी आवे तोपण शोलमे दिवसें न करवी ४

पक्खिय पडिकमणाउ, सठिय पुहरंमि अठमी होइ॥
तद्धेव पच्चखाणं, करंतिपवेसु जिणवयणा ॥ ५ ॥

अर्थः—पाखी पडिक्कमणाथी मांमीने शाठ पहोरे अष्टमी होय, तेवारे पर्वसंबंधी पच्चरकाण करीयें. एवा श्रीजिनेश्वरनां वचन ठे ॥ ५ ॥

जहियाउ अठमिलग्ग, तहियाउ हुंति पक्खसंधीसु॥
सठिपुहरंमि नेया, करेंति तिहि पक्खिपडिकमणं ॥६॥

अर्थः— जेवारे आठमनुं पडिक्कमणुं करे, तेवारें आठम लागी जोइयें, तिहांथी पाखीनी संधि कहेवाय. तिहांथी लइने साठ पहोरे पाखीनुं पडिक्कमणुं करवुं कह्युं ठे ॥ ६ ॥

भद्दवए कत्तीए, मासे पोसे तह फग्गुणे य बोधवे ॥
वइसाहे आसाढइ, इमाइ तिहीय म पडंति ॥ ७ ॥

अर्थः— भाद्रवा तथा कार्त्तिक मास अने पोसमास तेमज फाल्गुन मास तेने विषे वली वईशाख तथा आशाढ मासने विषे ए ठ महीनाने विषे तिथी पडे नही, एटले घटे नही. एम (बोधवे के०) जाणवुं. ए सिद्धांतनुं मत ठे, पण आजने समये सिद्धांति टीपणा नथी, अने ज्योतिषीनां टीपणां ठे, तेनो वर्त्तारो कांइ शुद्ध गणाय नही, तेथी आ गाथामां जे महीनाउ कहेला ठे, तेनो निश्चय नथी. जे एज ठ मासमां तिथी घटे. एवुं चोकश कही शकाय नहा ॥ ७ ॥ इति चंदपन्नतीगाथा संपूर्ण ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री गोडीपार्श्वनाथजीनुं चोढालीयुं प्रारंभः ॥

॥ पासजिणंद प्रसिद्ध सिद्ध, गोडीपुरमंमण ॥ महिमामंदिर मोह मयण; मिथ्यात विहंमण ॥ एकल मल्ल अनेक रूप, अगणित गुण आगर ॥ त्रिभुवन बंधव धवलधिंग, करुणा रस सागर ॥ १ ॥ जिन तुम अजब सरूप सकल, कल अकल अगोचर ॥ न लहे अलहे उतपति थगित, थिति नटके जो चर ॥ वृद्ध वचन जीरण लिखित, अनुसारें जाणी ॥ थुणशुं स्वामी निरीहपणें, सुणजो भवि प्राणी ॥ २ ॥ विधिपक्ष गछ महेंद्र सूरि, गछेश निर्देशें ॥ शाखाचारज अभयसिंह, सूरि उपदेशें ॥ गोत्र मीठडीया उसवंश, पाटणपुरवासी ॥ शाह मेघो जेणें सात धात, जिण धर्मे वासी ॥ ॥ ३ ॥ चौद बत्रीशें फागणशुदि, बीजने भृगुवारें ॥ खेता नोडी तात मात, निज सुकृत सारे ॥ तेणें पइठो पास बिंब, लेहेवा नरभव फल ॥ चउविह संघ हजूर हरखें, खरची धन परिगल ॥ ४ ॥ भक्ति युक्ति अति थकित चित्त, नित्य निर्मल सारी ॥ पण पिसताले तुरक भयें, प्रतिमा भंमारी ॥ मलक महाबल हुसन खान, कीधो उतारो ॥ पांशठे तेणें गाम जोर, गुजराती वारो ॥ ५ ॥ तरल तुरंग किशोर सोर, करता हय हणता ॥ केइ एराकी उछलंत, खुरीयें भूंइ खणता ॥ बांधण त्यांहि घोडारमांहि, खीली खोसंतां ॥ प्रगट थया तिहां पास बिंब, सुख दायक संता ॥ ६ ॥ खिजमत गार नफर फजर, नजरें गुजरावे ॥ होइ खुशाल निहाल मलक, या कोण कहेलावे ॥ बान पडिल कोइ वणिक सुता, तसु हुरम भणे इम ॥ कीजें इसकूं दंमवत, सदा ताजिम दाजिम ॥ ७ ॥ यह मजबूत बहुत कौत, हे भूत हिंडुका ॥ धरियें इस शिर जाफरान, सिंदलका भूका ॥ इणी परें रहेतां तिणें गाम, वोहोल्या दिन केई ॥ सिंतेरे जे वात हुइ, सुणजो मन देई ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चूनडीनी देशीमां ॥

॥ इणे अवसरें पुर पारकरें, राणो खेंगार राजान रे ॥ तेहने दरबारें दीपतो, संघवी काजल परधान रें ॥ इणे० ॥ तस बन्हेवी निज कुलतिलो, देवाणंद शा छे दयाल रे ॥ मेघो खेता उत पाटणे, व्यापार करे धूताल रे ॥

इणे० ॥ २ ॥ सुपनंतर सुर कहे शाहने, ठे म्लेछ महोल जिनबिंब रे ॥ तस दाम सवासो देइने, लेजो म करजो विलंब रे ॥ इणे० ॥३॥ प्रतिमा लेइ आवे गुरु कन्हे,जोइ कहे श्रीमेरुतुंग रे ॥ तुम देशें ए अति अतिशयी, तीरथ थाशे उत्तंग रे ॥ इणे० ॥ ४ ॥ करियाणुं लइ पोहोंचे घरें, मूरति राखे रूमांहे रे ॥ पंथें कोइ न गणे पोठीआ, वाध्यो घणो मोह उच्छाहें रे ॥ इणे० ॥ ५ ॥ समजावे नामुं शेठने, जंपे देउ मुज रास रे ॥ मांको ए नामें महारे, प्रतिमा रहेशे अम पास रे ॥ इण० ॥ ६ ॥ मेघो कहे लेखो राखशुं, पण ते सबलो तिण गाम रे ॥ गाडुं नरी चाले थल दिशें, वासो वसे गोडी गाम रे ॥ इणे० ॥ ७ ॥ सुहणे सुर कहे गहुंली जिहां, मांको प्रासाद मंमाण रे ॥ नाणुं तिहां घणु श्रीफलतलें, मीठुं जल पाहाणानी खाण रे ॥ इणे० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ निडडी वेरण हुइ रही ॥ ए देशी ॥

॥ हांजी उदयपाल ठाकुर तिहां, जोरावर हो खेतशी नूंणोत के ॥ इहां रहो निरजय शाहजी, आदरशुं हो कहे देइ महोत के ॥ धन धन घोडी जग धणी, पोहवी पाले हो प्राजो जस पीठ के ॥ धन० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ आवे शिलाट देशांतरी, यक्ष प्रेर्यो हो करे प्रथम तैयार के ॥ नूमि करुं प्रजु बेसवा, रहे चिहुं दिशि हो लशकर हुशीयार के ॥ धन० ॥ ॥ २ ॥ पुरवती बंधावी पीठिका, वर दिवसें हो जाणी अहिनाण के ॥ सखर गंजारो शिखरशुं, मध्य मंमप हो सवि मोक्ष मंमाण के ॥ धन० ॥ ॥ ३ ॥ पबासणें बेठ पासजी, नरेउ करी हो पूजे नलें नाव के ॥ सजल मधुरजल लहकती, वरदायी हो बंधावी वाव्य के ॥ धन० ॥ ४ ॥ एहवे चउद चोराणुयें, आयुयोगें हो कर्यो मेघें काल के ॥ नाणेजो आणी घरें, काजलशा हो करे चैत्यनी चाल के ॥ धन० ॥ ५ ॥ रंग मंमप रचना बनी, अति ऊंचा हो थंन ठामोठाम के ॥ कोमें करावे कोरणी, वित्त वावरी हो थिर कीधुं ठे नाम के ॥ धन० ॥ ६ ॥ वली रे महाजनना सहायशुं, मेघना हो सुत चलवे काम के ॥ मुख्य मंमप शुन मांमणी, करी जिनहर हो ठेबंध अनिराम के ॥ धन० ॥ ७ ॥ चोवीशवट्टो पंचाणुए, तेणें थाप्यो हो आगल रही जेह के ॥ चोवीश गोत्रनी देहरी, महाजननी हो फरती ठे तेह के ॥ धन० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल ॥ त्रीजी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ इणी परें वर्त्ते बेहुने रे, मांहो मांहे विवाद ॥ गिरुउ घोडी ॥ घोडी गाजेजी जिणंद, तेजें दीपे जी दिणंद, जग महिमा अगम अपार ॥ गिरु० ॥ ए आंकणी ॥ पण सरखा राखे प्रभु रे, वधवा न द्ये विषवाद ॥ गिरु० ॥ १ ॥ बनेवी महोटो हशे रे, ए छे पूजक प्राय ॥ गिरु० ॥ मेघानां संतत हजी रे, तेणें गोठी कहेवाय ॥ गिरु० ॥ २ ॥ शिखर दंम वडी ध्वजा रे, चढतां करे रे कलेश ॥ गिरु० ॥ आज लगें छे एहने रे, इम बहु वचन विशेष ॥ गिरु० ॥ ३ ॥ अंगुली बांधी एकठी रे, पूजन लीजें कदाप ॥ गिरु० ॥ ठाकुर ले नही मुंभकुं रे, ए बिहुनुं अघाप ॥ गिरु० ॥ ४ ॥ उदयवंत अति ऊजला रे, विधिपक्ष श्रावक बेह ॥ गिरु० ॥ तेखदार दिल दोलती रे, प्रभुजीशुं पूरण नेह ॥ गिरु० ॥ ५ ॥ समकेतधारी जागतो रे, धिंग धवल धर धीर ॥ गिरु० ॥ साह्य करी आगल रह्यो रे, खमधर खेतलवीर ॥ गिरु० ॥ ६ ॥ अधिकुं उछुं जे कह्युं रे, ते खमजो महाराज ॥ गिरु० ॥ ठेकाणा बंध पण खरी रे, वात छे गरिब निवाज ॥ गिरु० ॥७॥ पहेलां तवन भण्यां घणां रे, तिहां जाजा संवाद ॥ गिरु० ॥ सज्जन साचो सदहजो रे, श्यो रे जूगमां सवाद ॥ गिरु० ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ राग धन्याश्री अथवा अशावरी ॥

॥ जयो जयो गोडीपास जिनेसर, भक्तवत्सल भगवान रे ॥ देवल बारने बीजी रे प्रतिमा, विषमा थलविच थान रे ॥ जयो० ॥ १ ॥ आयुधधारी नीले घोडे, आप थई असवार रे ॥ किहां रे बालक अवधूत भुयंगम, देखाडे दीदार रे ॥ जयो० ॥ २ ॥ आवे संघ अनेक विदेशी, निरुपम महिमा माट रे ॥ चोर चरडनुं कांही न चाले, विघ्न निवारे वाट रे ॥ जयो० ॥ ३ ॥ जंगल भूला रात्रें जात्रु, ततक्षण लेतां नाम रे ॥ दीवी रे धरी मार्ग देखाडे, मूके चिंतित गाम रे ॥ जयो० ॥ ४ ॥ दरिया विचमां वहाण भोलंता, समरंता दिये साद रे ॥ सयल असुर सुर नरवर सेवे, नवि लोपे मरजाद रे ॥ जयो० ॥ ५ ॥ विषहर वैरी व्याधि वैश्वानर, भय भांजे हरि भ्रांत रे ॥ प्रायें केहने अधिक न राखे, पंच दिवस उपरांत रे ॥ जयो० ॥ ६ ॥ आ भवें वंछित सकल होवे पण, कर्म निबिडबंध कोय रे ॥ ध्यान शुद्धें समकित निर्मलता, स्वर्ग मुगति फल होय रे ॥ जयो० ॥ ७ ॥

इव्य नाव विधि पूजो प्रणमो, नाम जपो नर नार रे ॥ स्तवन नणो मद मत्सर मूकी, उत्पति साची मन धार रे ॥ जयो० ॥ ८ ॥ कलश ॥ इम थुण्यो गोडीपास स्वामी, हुकुम पामी जेहनो ॥ दिशदिश पसरतो अरति हरतो, प्रगट परतो जेहनो ॥ श्री अमरसागर सूरिअंचल, गळपतिराउ पसाउलें ॥ पय नमी लखमीचंदवाचक, शिष्य लावण्य इम नणे ॥ ए ॥ इति श्रीगोडी पारसनाथजीनुं चोढालीयुं संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीगुरुपट्टावली प्रारंनः ॥

॥ विद्यमान शासनना अधिपति चोवीशमा तीर्थंकर श्रीवर्द्धमान स्वामी ते चोथा आराना त्रण वर्षने साडा आठ महीना शेष रह्या, तेवारें बहोंतेर वर्षायु पूर्ण करी निर्वाण पद पाम्या. बीजे दिवसें प्रनातें श्रीगोतमस्वामीनें केवलज्ञान उपन्युं. ते बार वर्ष केवलपर्यायें रह्या तेमणें पोताना गुरुनाइ श्रीसुधर्मस्वामी पांचमा गणधर हता तेमने पाटे थाप्यो. तेमाटे श्री वीरनगवानना प्रथम पट्टधर श्रीसुधर्मास्वामी थया तेमनी कथा कहे छे.

१ कोल्लागसन्निवेशे धर्मिलनामा ब्राह्मण तेनी नद्दिला नामें नार्याना पुत्र श्रीसुधर्म स्वामी चौद विद्याना जाण मनोहर कांतियुक्त हता. ते यौवन अवस्था पाम्या, तेवारे पाणिग्रहण करेली स्त्रीसाथें सांसारिक सुख नोगवता यज्ञकर्म कर्त्ता थका विचरे छे. सर्व लोकना गुरु कहावे, विद्यानो घणो गर्व धारण करे, जे जेहवो ते मरीने वली बीजे नवे पण तेहवोज थाय एटले जे मनुष्य ते मरीने मनुष्य थाय अने तिर्यंच मरी तिर्यंच थाय. एवो तेना मनमां संदेह छे. ते पच्चाश वर्षना थया तेवारे वीरप्रनुनें केवलज्ञान उपन्युं. तेमने सर्वज्ञ सांनलीने प्रनुपासें आव्या. प्रनुयें सर्व संदेह टाल्या तेवारें प्रनुना शिष्य थया. पांच महाव्रत आदर्यां. उप्पन्ने वा विगमे वा धुवे वा ए त्रिपदी प्रनुपासेंथी पामीने द्वादशांगीनी रचना करी. गणधर पदवी पाम्या, त्रीश वर्ष पर्यंत प्रनुनी सेवा करी बार वर्षपर्यंत श्री गोतमस्वामीनी सेवा करी बाणुमे वर्षे केवलज्ञान उपन्युं. आठ वर्ष पर्यंत केवलपर्याय पाली पोतानो आत्मा अजुआली जंबुस्वामीने पोताने पाटे थापी संपूर्ण एकशो वर्ष आयु पूर्ण करी मोक्ष पोहोता.

२ बीजा पट्टधर श्रीजंबुस्वामी थया तेनी लेशमात्र कथा कहे छे. राजगृही नगरीयें रुषननदत्तशेठनी धारणी नामें नार्या तेनी कूखने विषे पां

चमा देवलोकथी चवीने पुत्रपणें आवी ऊपना. जन्म्या पछी गुणनिष्पन्न जंबुकुमर नाम दीधुं शोल वर्षना थया तेवारे श्रीसुधर्मस्वामीने वांदवा गया. तिहां देशना सांभली धर्म रुच्यो. तेवारें समकेत अने शील व्रत अंगीकार कस्या पछी दीक्षा लेवा माटे पितापासे आज्ञा मागवा आव्या. परंतु पितायें तो उलटो घणो आग्रह करी तेने आठ कन्या परणावी; पछी पोताने घेर आवी रात्रियें स्त्रियोने प्रतिबोध करे छे. एवामां विंधराजराजानो पुत्र प्रभव एवे नामे छे. ते पिताथी रीशाइने चोरनो नायक थयो छे. ते चारशे नवाणु चोरोने साथें लइ जंबुस्वामीने घेर चोरी करवा आव्यो. ते सर्वे चोर जेटले गांठडीयो बांधीने धन लेवा सारुं धरतीयें नीचा नम्या. तेटले जंबुकुमरे कह्युं 'मां' एटलुं कहेतांज जंबुकुमरना शीलना महिमा थकी सर्वे चोर चित्रामनी पेरें थंभाइ गया. हलाय चलाय नही. जंबुस्वामीयें ते चोरोनें तथा आठ स्त्रीयोने प्रतिबोधी तेमज आठ कन्याना माता पिता अने पोताना माता पिता सर्वेने प्रतिबोधी नवाणुं कोडी कंचन त्यजीने पांचशे छवीश जण साथे श्रीसुधर्मस्वामी पासेथी दीक्षा लीधी अनुक्रमें केवलज्ञान पामी, पृथ्वीपीठने विषे विचरी अनेक भव्यजीवोने प्रतिबोधी धर्मने विषे स्थिर करी पोताने पाटें प्रभवस्वामीने थापी एंसी वर्षनुं आयु पाली मोक्ष पोहोता. ए श्रीजंबुस्वामीना निर्वाण पछी दश वाना विछेद गया तेनां नाम कहे छे. एक मनःपर्यवज्ञान, बीजुं परमावधिज्ञान, त्रीजी पुलाकलब्धि, चोथी आहारकलब्धि, पांचमी क्षपकश्रेणी, छठी उपशमश्रेणी, सातमो जिनकल्प, आठमी परिहारविशुद्धि तथा सूक्ष्म संपराय अने यथाख्यात ए त्रण चारित्र, नवमुं केवलज्ञान अने दशमुं सिद्धिगमन एटले मोक्षमार्ग ए दश वाना आ भरतक्षेत्रने विषे विछेद थया.

हवे त्रीजा पट्टधर श्रीप्रभवस्वामी थया, तेमणे एकदा समयें पोताना पदस्थापना योग्य शिष्यनो उपयोग दीधो, पण साधु समुदायमां तथा श्रावक समुदायमां तेवो कोइ न दीठो, परंतु परदर्शनमां राजग्रही नगरीयें यज्ञ करता एवा सय्यंभव भट्ट दीठा. श्रुत उपयोगें जाण्युं जे श्रीमहावीरना चोथा पट्टधर ए थाशे. तेवारें विहार करता प्रभवस्वामी राजगृही नगरीना परिसरे समोसस्या; पछी जिहां यज्ञमंडपें यज्ञ थाय छे, तिहां बे साधुने मोकल्या. तेमणे "अहो कष्टमहो कष्टं, तत्त्वं न ज्ञायते परं" एवां वच

न सिद्यंनव ब्राह्मणनें संनलाव्या तेवारे ते सिद्यंनवनट्ट पण धर्मार्थी थको साधुने पूठतो हवो. साधु पोताना गुरु श्रीप्रनवस्वामी पासे तेडी आव्या. तिहां गुरुने पूठ्युं. स्वामी तत्त्व कहो. गुरुयें कह्युं ब्राह्मणोने तमे बीवरावो तेवारें तत्व कहीशुं. ते सांनली सिद्यंनवें पोताना खड्ग करी ब्राह्मणोने बीवराव्या. तेवारें वृद्ध ब्राह्मणे यज्ञस्तंननी नीचेथी अंगुष्ठपर्व प्रमाणे श्रीशांतिनाथनी प्रतिमा काहाडी देखाडी. ते प्रनुनी मूर्त्तिना दर्शनथी प्रतिबोध पाम्या. शुद्ध धर्म जाणवामां आव्यो. तेवारे सगर्नास्त्रीने मूकीने श्रीप्रनवस्वामी पासें दीक्षा लीधी. थोडा दिवसमां सर्व शास्त्रना पारंगामी थया. प्रनवस्वामी सिद्यंनवने पाटे बेशाडी पोतें स्वर्गें गया.

हवे चोथा पट्टधर श्रीसिद्यंनव सूरि थया. एणें गर्नवती स्त्री घरमां मूकी हती. तेणें पाठलथी पुत्र प्रसव्यो तेनुं मनक एवुं नाम दीधुं. तेणें पण स्विद्यंनवसूरिनी पासें आवी दीक्षा ग्रहण करी. तेना अर्थें श्रीसिद्यंनवजीयें दशवैकालिकसूत्र रच्युं. ते ठमासमां नणीने मनकमुनि स्वर्गें गया. अनुक्रमें सिद्यंनवसूरि पण यशोनद्र सूरिने पोताने पाटे थापी पोतानुं आयु पूर्ण थये स्वर्गें गया.

पांचमा पट्टधर श्रीयशोनद्र सूरिजी थया ते विहार करता घणा नव्य जीवोने प्रतिबोधी श्री संनूतिविजयजीने पाटे स्थापी स्वर्गें गया.

ठठा पट्टधर श्रीसंनूतिविजय सूरिजी ते श्रीवीरनगवानना निर्वाणथी १४८ मे वर्षें नवमा नंदराजानी वारें थया. ते पण घणा प्राणीउने धर्म पमाडी श्रीनद्रबाहुस्वामीने पोतानो पाट आपी स्वर्गें गया.

सातमा पट्टधर श्रीनद्रबाहुस्वामीनी कथा कहे ठे. प्रतिष्ठानपुरने विषे वराहमिहिर अने नद्रबाहु एवे नामे बे नाइ ब्राह्मण रहेता हता. तेमणे श्रीसंनूतिविजयजी पासेथी धर्मश्रवण करी दीक्षा ग्रहण करी चौद पूर्व नण्या. गुरु नद्रबाहुस्वामीने योग्य जाणी आचार्यपद आपी स्वर्गें गया. तेथी वराहमिहिरने क्रोध चढयो. जे हुं महोटो ठतां मुजने गुरुयें पाट न आप्यो एम चिंतवी पाठो ब्राह्मणनो वेष लइ पूर्वनी अम्नायथी वाराहीसंहिता नामें ग्रंथ रचीने लोकोने निमित्त कही आजीविका चलाववा लाग्यो. लोकोने कहेवा लाग्यो. जे में वनमां सिंहलग्न मांमयुं हतुं ते लग्न ठेक्याविना घेर आवी नोजन कीधुं; पठी रात्रीयें शयन करती वेलायें सांनल्युं जे में लग्न

बेठ्युं नथी माटे लग्न मांडी आवुं एवुं विचारी तिहां जइ जोयुं तो लग्न उपर सिंह बेठो बे, तोपण तेनाथी अणबीहीतो थको तेनी नीचें हाथ घालीने लग्न बेकी नाख्युं. ते जोइने सिंहलग्ननो स्वामी श्रीसूर्यदेव महारी उपर प्रसन्न थइने पोताना विमानमां लइ जइने तेणें मने सातेग्रहनां मंमल देखाड्यां, तेणे करीने हुं ग्रहचार सर्व जाणुं बुं. एवीरीतें लोकोनी आगल कही तेणे पोतानो आमंबर चलाववा मांम्यो.

एकदा वराहमिहिरें राजा आगल सजामां कह्युं जे, आ कुंमालो हुं करुं बुं तेने विषे बावन्न पलनो मच्छ पडशे. ते वात तिहां सजामां बेशनारा श्रावकोयें आवी श्रीजद्रबाहु स्वामी आगल कही. जे शैवदर्शननुं बहुमान थाय बे, माटे कांइ विशेष होय तो कहो. तेवारें श्रीजद्रबाहुजीयें कह्युं के, ते मत्स्य मार्गमां अर्द्धो पल शुकाइ जाशे माटे साढा एकावन्न पलनो मत्स्य पडशे, अने वायुना योगें कुंमालाना किनारापर पडशे. एवुं गुरुना मुखथी सांजली ते वात श्रावकोयें जइ राजानी आगल कही, पडी जेरीतें श्रीजद्रबाहु गुरुयें कह्युं तेमज साडीएकावन पलनो मत्स्य कुंमालानी कोरे पड्यो, तेथी वराहमिहिरनी वात जूठी पडवाने लीधे लोकोमां हेलना थइ.

वली एकदा राजाने घेर पुत्र आव्यो. तेनो वराहमिहिरे एकशोने आठ वर्षना आयुनो वर्त्तारो करी आप्यो ते वली राजसजामां बेसनारा श्रावकोयें आवी जद्रबाहु आगल कह्युं के, राजाने पुत्र आव्यो. ते तमे केम जोवा आव्या नही. तेमने गुरुयें कह्युं के, जोवा शुं आवीयें ? ए बालक सातमे दिवसें बिल्लाडीथी मरण पामशे. ते वात राजानी आगल गइ तेवारें राजायें नगर मांहेली सर्व बिल्लाडीयोनें ढंढेरो पीटावी बाहेर कढावी मूकी, जे कोइ पण बिल्लाडी राखशे तेने राजा जीवथी मारी नाखशे एवी उदघोषणा करावी. पडी सातमे दिवसें धावमाता उंबरानी वचें बेशी बालकने धवरावे बे. एवामां जोगल पडी तेने बिल्लाडीनो आकार हतो. ते बालकने माथे पडवाथी बालक मरण पाम्यो, तेथी गुरुनी प्रशंसा थइ अने वराहमिहरनी निंदा थइ. तेवारें सरमने लीधे त्यांथी नासीने अज्ञान कष्ट तपकरी व्यंतर देवता थयो. ते श्रीसंघने मरकीना उपद्रव करवा लाग्यो. तेंवारें श्रीजद्रबाहुस्वामीयें श्रुत उपयोगें जाणी उपसर्ग निवारवाने अर्थें उवसग्गहर नामे श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनुं स्तोत्र करी श्रावकोने जणाव्युं, अने तेनो पाठ कर

वाथी सर्वेना उपसर्ग्ग निवारण थया. एवा अतिशयवंत श्रीनद्रबाहुगुरु थया. सर्व निर्युक्तियो एमणें करी छे. श्रीमहावीरथी (१७०) मे वर्षे श्रीथूलि नद्रजीने पाट आपी श्रीनद्रबाहुस्वामी स्वर्गे गया.

आठमा पट्टधर श्रीथूलिनद्रजी थया. तेनी कथा कहे छे. पाडली पुरने विषे नंद नामें राजा राज्य करे छे. तेनो शकमाल नामें मंत्री जाते नागर छे. तेनी लाछलदे नांमें नार्या छे. तेनो एक थूलिनद्र अने बीजो सरिउ ए वे नामे बे पुत्र छे,अने सात पुत्रीउ छे. थुलिनद्रजीयें बारवर्ष पर्यंत गणिका ने घेर रही शाढी बार कोडी सुवर्ण वावर्युं एकदा वररुची ब्राह्मणना प्र योगथी शकमाल मंत्री मरण पाम्या. तेवारें राजायें प्रधान पदवी आपवा माटे थुलिनद्रजीने गणिकाना घेरथी तेडाव्युं. थूलिनद्रें राजाने कह्युं अशो कवाडीमां जइ विचारी आवुं. पछी तिहां विचारतां पिताना मरणथी संसा र अनित्य जाण्यो. जे संसारमां कोइ कोइनो सगो नथी. सर्व जीव कर्मने वश छे, माटे कर्म टालवाने अर्थे जैननी दीक्षा ग्रहण करुं. एवुं विचारी लो च करी राजाने कही श्री संनूतिविजयजीनी पासे आवी दीक्षा लीधी, सि द्धांत नण्या, चोमाशुं आव्युं, तेवारें एक साधुने सिंहनी गुफायें चोमाशुं रहेवानी आज्ञा दीधी, बीजा साधुने सर्पना बिल उपर चोमाशुं रहेवानी आज्ञा दीधी, त्रीजा साधुने कूवाना नारवट उपरें चोमाशुं रहेवानी आ ज्ञा दीधी. तेवारें श्रीथूलिनद्रजीयें गुरुने खमासमण आपी कोश्या वेश्याने घेर रहेवा माटे आज्ञा मागीने कोश्याने घेर चोमाशुं करवा गया.

तिहां कोश्यायें हावनाव देखाडवा मांड्युं, तेने थूलिनद्रजीयें कह्युं के, महाराथी साढा त्रण हाथ अलगी रहीने जे तुझने चाला करवा होय ते सुखें करजे. पछी वर्षाकालमां मेघ गर्जारव थाय छे, वीजलीना जात्कार थायछे, मोर किंगारव करे छे,एवी रुतुमां चित्रशालिमां रह्या थका षटरस नोजन करता थका तेमां वली अत्यंत वल्लन अने रागनी धरनारी एवी वेश्यायें शोलसणगार सजीने नृत्य करवा मांड्युं, काम दीपाववाने कार णे सराग वचन प्रकाश्यां, अने नाटक पण एवुं कर्युं के, जेनी ध्वनी अने गायनना स्वर सांनलीने इंद्र चंद्र नागेंद्र पण चलायमान थइ जाय. तथा गुफा मांहे ध्यान धारण करी बेठेला एवा जे योगिंद्र पुरुषो तेनां धाम पण क्षणेकमां नागी जाय; परंतु श्रीथूलिनद्रस्वामी डग्या नही,चल्या नही. शीलव्र

तमां निश्चल रह्या. सेवट कोश्या वेश्याने प्रतिबोध पमाडी व्रतधारी श्राविका करी एकज मात्र राजा कोइ पुरुषने महारीपासें मोकले तो तेनी साथें संजोग करवो ते सिवाय अन्यपुरुष साथे विषय सेवन करवुं नही. एवो कोश्या वेश्यायें नियम लीधो. शुद्ध श्राविका थइ. थूलिजद्रजी पण चोमासुं वेश्याने घेर करी गुरुसमीपे आव्या तेवारें तेमने गुरुयें त्रणवार दुक्करकार कही ने सन्मान्या. ते जोइ बीजा त्रण शिष्य के जेने गुरुयें एकजवार दुक्करकार कही सन्मान्या हता तेमांथी एक सिंहगुफावासी साधु आमण डुमणो थयो हतो ते जेवारें बीजुं चोमासुं आव्युं, तेवारें सिंहगुफावासी साधुयें कोश्या वेश्याने घेर चोमासुं करवा गुरुनी पासेथी आज्ञा मागी गुरुयें नाकारो कह्यो तोपण ते कोश्याने घेर चोमासुं रहेवा गयो; पढी त्यां कोश्याने देखी विषय जाग्यो,चलचित्त थयुं. विषयसेववानी याचना करी तेवारें कोश्यायें रत्नकंबल माग्युं. साधुए चोमासामां पण नेपालदेशे जइ राजानी पासेथी रत्नकंबल याची लीधुं. ते रस्तामां भिल्ले लइ लीधुं फरी राजापासे जइ घणी कष्टे रत्नकंबल मागी जेम तेम करी वेश्याने आणी दीधुं. वेश्यायें तरत ज ते कंबल वडें पोताना पग लूंढीने खालमां नाखी दीधुं ते जोइ साधु बोल्या अरे आ में महादुःख वेठीने सवालाखनुं रत्नकंबल आण्युं, ते तें खालमां केम नाखी दीधुं ?

ते सांजली कोश्या बोली जो साधु में तो रत्नकंबल नाखी दीधुं, तेतो मात्र आ एकज जवमां स्वल्प साधन जेवुं हतुं; अने वली एने तो शुद्ध करवानी गरज पडे तो पण अग्नीमां नाखवाथी शुद्ध थइ शकशे पण तमे चारित्ररूप रत्नकंबल जे आजव अने परजव बेहुनुं साधन हतुं. तेने कचरामां नाखी दीधुं, ते वली शुद्ध निर्मल शीरीतें थाशे ? एवीवात सांजली साधु प्रतिबोध पाम्यो, गुरु पासें आवी मिछामिदुक्कड दीधुं, अने थूलिजद्रजीनी स्तवना करवा लाग्यो हवे पाढल वेश्या शील पालती थकी रहीढे.

हवे एकदा बारवर्षी दुष्कालनें ढेहेडे पाडलीपुर नगरने विषे साधुउ अगीआर अंगना जणेला रह्या पण कोइ द्वादशांगीना जाणकार न रह्या. एवुं श्रीसंघे जाणीने दृष्टीवाद जणाववाने अर्थे श्रीजद्रबाहु स्वामीने तेडवा माटे बे साधुने मोकल्या. तेमने श्रीजद्रबाहुस्वामीयें कह्युं. में प्राणायाम ध्यान मांम्युं ढे, तेमाटे महाराथी अवाशे नही. तेवारे बे साधु पाढा

फरी श्रीसंघनें ते वात निवेदन करी. श्रीसंघें फरीथी श्रीनद्रबाहुस्वामीने कहेवराव्युं के, जे श्रीसंघनी आज्ञा माने नही तेहने श्यो दंम देवो जोइयें. तेवारे गुरुयें कहेवराव्युं के तेने संघ बाहिर काहाढवो जोइयें. हुं श्रीसंघना तेडवाथी जरुर आवत पण ध्याननो नंग थवाथी आवी शक्यो नही. माटे श्रीसंघने योग्य ले के शिष्य, शिष्यणियोने इहां मोकलवा के जेथकी हुं तेमने नणावुं, पली श्रीसंघें पण श्रीथुलिनद्रजी आदे देइने पांचशे शिष्य नणवा मोकल्या, गुरुयें सर्वेने वाचना दीधी, परंतु एक श्रीथूलिनद्रजी विना बीजा सर्व साधुउनणवाथी उनग्या, अने पाला वल्या, परंतु श्रीथुलिनद्रजी बे वस्तुयें उणा दश पूर्व नण्या, तिहां जरकादिक सात साध्वीयो थूलिनद्रजीनी बेहेनो ले, ते गुरुने वांदवा आवी वांदीने पूलवा लागी. महाराज अमारा नाइ थूलिनद्रजी क्यां ले? गुरु बोल्या पर्वतनी गुफामां पूर्वनो पाठ गणे ले. तेवारें तेमनें वांदवानो नाव धरती थकी साते बेहेनो तिहां गइ. तेमने आवती देखी चमत्कार देखाडवा माटे श्रीथुलिनद्रजी सिंहनुं रूप धारण करी बेठा ते साध्वीउ सिंहने देखी बीक पामती तिहांथी पाली फरी आवीने गुरुने कहेवा लागी. जे गुफामांहे तो अमारो नाइ नथी. तिहांतो सिंह बेठो ले, एवी वात सांनली गुरुयें जाण्युं, जे एणें विद्यानुं बल प्रयुंज्युं देखाय ले. एम चिंतवी फरी साध्वीउने कह्युं जे तमारो नाइ तिहांज ले, माटे जाउ. तेवारें वली साध्वीउ तिहां गइ अने नाइने मूलगे रूपें देखी हर्षसहित वांदती हवी, अने कहेवा लागी के स्वामी! अमारी साथें सिरिया नाइयें दीक्षा लीधी हती तेने अमे पंजोसणना दिवसें उपवास कराव्यो ते काल करी देवगति पाम्यो, तेथी अमने महोटुं प्रायश्चित लाग्युं हशे. ते आप कही देखाडो तेवारे श्रीथूलिनद्रजी बोल्या ए कार्य करवाथी तमने कांइ दूषण लाग्युं नथी एवुं कह्युं, पण साध्वीयें मान्युं नही पली शासन देवता आराधवा निमित्तें चतुर्विध श्रीसंघे काउसग्ग कस्या. तेथी शासन देवता प्रसन्न थइने यक्षा साध्वीने सीमंधर स्वामी पासें लइ गया त्यां प्रश्नना उत्तर पूलया पली फरी शासनदेवतायें ते साध्वीने पाली आणी तिहां गुरुने नमीने सर्व स्वस्थानकें गई.

एकदा श्रीथूलिनद्रजीनो मित्र धनदेव नामे ब्राह्मण ले, तेना घरे घणा लोकोनी साथे वंदाववा गया. तिहां ब्राह्मणनी स्त्रीयें घणो सत्कार करी

बेसाड्या. गुरुये पुछ्युं धनदेव क्यां गया छे. तेनी स्त्रीयें कह्युं धन उपार्जवाने अर्थे परदेश गया छे. तेवारे थूलिनद्रजीयें ज्ञानबलें करी मनमांहे विचार्युं. जे निधान एना वडीलोनु उपार्जेलुं घरमां छे, तो शामाटे परदेश नटकवा गयो छे,पछी ते निधान ब्राह्मणीना जाणमां लाववाने अर्थे थूलिनद्रजीयें धर्मोपदेश देवामांड्यो,अने हाथनी निशानीयें करी धन देखाड्युं. ते स्त्री पण महाचतुर छे,माटे मनमां समजी गइ. थूलिनद्रजी तिहांथी सीधाव्या पछी ब्राह्मण पण परदेशथी फरी घेर आव्यो, तेने स्त्रीयें सर्व हकीगत कही, तेथी ब्राह्मणें थूलिनद्रजीयें देखाडेला स्थानके खोदी जोयुं. तिहांथी घणुं धन नीकलीआव्युं. तेना योगें ब्राह्मण सुखी थयो.

बीजे दिवसें श्रीथूलिनद्रजी, नद्रबाहु गुरुनी पासें वांचना लेवा गया. तिहां एक सिंहनी विकुवर्णा करी अने बीजुं धनदेवमित्रने धन देखाड्युं. एवा बे अपराध जाणीने गुरुयें कह्युं के तमे वांचना लेवाने अयोग्य छो. एम कही वांचना दीधी नही. तेवारें थूलिनद्रजीये श्रीसंघने विनंति करी के महाराथी चूक पडी माटे गुरु वांचना देता नथी श्रीसंघें घणो आग्रह करीने कह्युं के, स्वामी सुवर्णना पात्र विना दूध रहें नही,दूधतो सुवर्ण पात्रमांज रहे. माटे थूलिनद्र सरिखा शिष्यने आप वांचना आपो. एम श्रीसंघना आग्रहथी गुरुयें तेमने पाछला चार पूर्वनी वांचना सूत्रथी दीधी. पण तेना अर्थनी वांचना दीधी नही. जे कारणे पडतो काल छे माटे विद्या जीरवासे नही. पछी श्रीस्थूलिनद्रें ब्राह्मणने धन देखाड्युं, तेनुं प्रायश्चित लेवा माटे ब्राह्मणना सर्व कुटुंबने प्रतिबोध आपी दीक्षा दीधी. गुरुयें श्रीथूलिनद्रने पाट दीधो. श्रीथूलिनद्रजी त्रीश वर्ष गृहवासे रह्या. चोवीश वर्ष दीक्षा पाली अने पिस्तालीश वर्ष युगप्रधान पदवी नोगवी सर्व मली नवाणु वर्ष पांचमास अने पांच दिवसनुं आयु नोगवी स्वर्गे गया. एमनी पाछल चार पूर्वनुं ज्ञान, प्रथम संस्थान, प्रथम संघयण अने महाप्रणिधान ए चार वाना विछेद गया छेहेला केवली श्रीजंबुस्वामी बीजे पाटे थया,पछी प्रनवस्वामी, सिद्यंनवसूरि, यशोनद्रसूरि, संनूतिविजयजी, नद्रबाहुगुरु अने थूलिनद्रजी एछ पुरुष केवली नही पण केवली सरखा श्रुतकेवली थया. ए श्रीथूलिनद्रजी पोताने पाटे आर्यमहागिरिने थापी श्रीवीरथी बशेने पन्नरमें वर्षे स्वर्गे गया. इति अष्टम पट्टधर कथा ॥

ए हवे नवमा पट्टधर श्रीआर्यमहागिरिजी थया,ते यद्यपि ते काळें जिन कल्प विछेद गयो छे तथापि जिनकल्पिनी तुल्यता करवा माटे एकाकी विच रता हवा. अनेक प्रकारनां तप करी शुद्धक्रिया पाळी, श्रीआर्यसुहस्तिने पोताने पाटेंथापी श्रीवीरथी बशेने पीस्तालीशमे वर्षे देवलोके गया.

१० दशमा पट्टधर श्रीआर्यसुहस्तिसूरि थया जेणे संप्रतिराजाने प्रति बोध्यो तेनी कथा कहे छे. एकदा डुष्काळ पड्यो तेवारे धान्य मळे नही. लोको महा डुःखी थया, राजा सरखा पुरुषो पण रांकनी माफक अन्न ने माटें रखडवा लाग्या. तो पण श्रावको विशेषे साधुने दान आपता हता.

एकदा श्रीआर्यसुहस्तिसूरिना शिष्य श्रावकोने घरे वहोरवा गया. तिहां तेमने श्रावकें घणा मोदक वहोराव्या. ते कोइक निक्षाचरडुमकें दीठा, अ ने डुकाळने लीधे ते निक्षाचरने कोइ गृहस्थ निक्षा आपतो नथी, तेथी ते निक्षाचर साधु पासेथी निक्षा मागवा लाग्यो. साधुयें कह्युं अमारा गुरु पासे जाउ. तेवारे निक्षाचर गुरु पासे जइ मागवा लाग्यो, तेने ए उत्तम जीव रुडीगतिनो जनारो छे एवो जाणीने गुरुयें कह्युं के तमोने आहारनो खप होय तो दीक्षा ल्यो. तेणें अहार माटें दीक्षा पण लीधी, अने सारीपें ठे सरस आहार आरोग्यो. तेथी पेटमां पीडा थइ, तेवारें श्रावकोयें तेनी घणी चाकरी करवा मांमी, तेथी डुमकें विचार्युं जे आ साधुना वेषने धन्य छे. आ सर्वथी महोटो वेष छे. केम के! जे गृहस्थो गइकाले मने निक्षा प ण आपता न हता, ते गृहस्थ आजे महारी सेवा चाकरी करे छे. महा री पासे हाजराहजूर उना छे, माटें आ साधुनो वेष उत्तम छे, एम चारि त्रनी अनुमोदना करतो मरण पाम्यो. तिहांथी मरीने उज्जयणी नगरीने विषे श्रेणिकराजाना पाटे कोणिकराजा थया, तेवार पछी उदायीराजा थ या, पछी अनुक्रमें नव नंद राजा थया, पछी चंड्गुप्त राजा थयो, तेने पाटे बिंडुसार राजा तेना पाटे आशोक राजा तेना पाटे कुणालराजा थयो. ते ना पाटें ए डुमक जइने संप्रति नामा राजा थयो. जन्मतांज राजपाटें श्रे णिकथी सत्तरमे पाटे थपाणो ते संप्रतिराजा प्रजानो पालन करतो थको महा प्रतापि थयो अनुक्रमें त्रणखंम राज्यनो नोक्ता थयो.

एकदा श्रीआर्यसुहस्तिसूरि विहार करता उज्जयणी नगरीयें आव्या, ति हां श्रीसंघे रथयात्रानो महोत्सव मांम्यो छे. रथ उपर श्रीजिनबिंब थापी

तेनी आगल वाजित्र वाजते छत्र चामरादि महोटा आडंबरथी श्रीसंघ चाल्यो, तेमनी साथें श्रीआर्यसुहस्तिजीपण चाल्या जाय छे. तेमने गोखमां बेठेला संप्रतिराजायें दीठा. ते साधुनुं लिंग देखतां राजाने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं. तेवारें गोख थकी उतरी नीचे आवी श्रीआर्यसुहस्तिसूरिजीने चरणे नमी हाथ जोडी साहामो उन्नो रहीने पूछवा लाग्यो के महाराज! तमे मने उलखो छो? ते सांजली गुरुयें पण श्रुतोपयोगें सर्व स्वरूप जाणीने राजाने पाछलो नव कह्यो. तेथी राजा आश्चर्य पाम्यो, जैनधर्म उपर श्रद्धा थइ. तेवारे गुरु पासेथी सम्यक्त्वादिक व्रत आदर्यां. सवालाख जिनप्रासाद कराव्या, सवा कोडी जिनबिंब नराव्या, तेर हजार जूना देरासर समराव्या, पंचाणु हजार धातुनी प्रतिमा नरावी, सातशें दानशाला करावी, घणा नगवंतना चैत्यें करी पृथ्वी शोनायमान करी, लोकोने घणा करथी मुक्त कर्या, तथा केटलाएक सेवकोने साधुउना वेष पहेरावी अनार्यदेशमां मोकलीने तिहांना लोकोने धर्ममार्ग शीखव्यो. तथा साधुउने दान आपवानो सर्व व्यवहार शीखव्यो, एम करी ते देशोने विषे साधुउनो विहार कराव्यो. अनार्यदेशना राजाउने जैनधर्मी कर्या. तथा ते राजाउने दंम सलामी मूकी.

वली गामना ग्रहस्थो जे, वस्त्र वेचनार, पात्र वेचनार, दूध दही वेचनार, घृत वेचनार, सूखडी वेचनार इत्यादि सर्वेने कह्युं के, तमारा पासे कोइ पण साधु अन्न वस्त्र मागे तो ते शुद्धमान आपवुं, अने तेना पैसा अमारा नंमारमांथी लेवा. एवो महापुण्यात्मा ते संप्रति राजा थयो.

हवे श्रीआर्यसुहस्तिसूरिजीए पृथ्वीपीठनेविषे विहार करतां अयवंतीसुकुमारने प्रतिबोधी दीक्षा दीधी. बीजा पण घणा नव्यजीवोने प्रतिबोधी धर्मपमाड्यो सेवट पोताने पाटें सुस्थित अने सुप्रतिबद्ध ए बे आचार्योने थापी श्रीमहावीरथी बशेने एकाणु वर्षे स्वर्गे गया.

आगीआरमा पट्टधर सुस्थित तथा सुप्रतिबद्ध सूरि थया. तेमणे कोटीवार सूरिमंत्र जप्यो. तेथी कोटिकगछ एवुं नाम थयुं.

बारमे पाटे श्रीइंद्रदिन्नसूरि थया तेरमे पाटे श्रीआर्यदिन्नसूरि थया चौदमें पाटे श्रीसिंहगिरिसूरि थया. तेनी वारे कालिकाचार्य अपरनाम श्यामाचार्य श्रीपन्नवणा सूत्रना कर्त्ता थया.

हवे पन्नरमा पट्टधर श्रीवज्रस्वामी थया, तेनी कथा कहे छे. तुंब नामा गामने विषे धनगिरि नामे व्यवहारीयो रहे छे. तेनी स्त्री सुनंदा छे,ते समित सूरिनी बहिन थाय,तेनी कूखने विषे कोइक जीव तिर्यक्जृंनक देवतामांहे थी आवीने पुत्रपणे उपनो. एवामां तिहां सिंहगिरिसूरि आव्या. तेमने धन गिरियें आवीने वांद्या, पछी गुरुनी देशना सांजली प्रतिबोध पामी पोताना स्त्री सुनंदा उधानवाली हती तेने त्यजीने पोते सिंहगिरिजी पासेथी दीक्षा लइ. विहार कस्यो. नवमास पूर्ण थये सुनंदायें रुडें मुहूर्त्ते पुत्र प्रसव्यो.

ते बालकनो दसोट्टण करी पालणे पोढावी जे रीतें तेनो पिता चारित्र पाले छे, तेरीतें नाम लइने गीत गान करे, बालक सूतो सूतो पोतानी मातानी वाणी सांजली जातिस्मरण ज्ञान पाम्यो. तेथी पूर्वे तिर्यक्जृंनक देवताना नवमां श्रीअष्टापदनी उपर श्रीगौतमस्वामीनी वाणी सांजली हती ते नव सांजली आव्यो. तेणेकरी संसार विषम लाग्यो पण मनमां जाएयुं जे हुं महारी मातानो एकज पुत्र छुं, तेथी मने महारी माता चारित्र लेवा आपशे नही; पण महाराथी माताने दुःख उपजे, अनिष्ट थाय, तो मने चारित्र लेवा आपशे. एम विचारी घणुंज रडवा मांम्युं, राख्यो रहे नही, मातायें घणा उपाय कस्या पण कोइ रीते रडवुं मूके नही. एम छ मास लगण माता उद्वेग पामती रही.

एकदा तेना पिता धनगिरिजी पण पोताना गुरुनी साथें विहार करता थका तिहां आव्या. वहोरवा वेलाये गुरुनी आज्ञा मागी तेवारें गुरुयें कह्युं. हे धनगिरिजी आज तमोने सचित्त अथवा अचित्त वस्तुनी जे जिक्षा मले ते लइ आवजो. धनगिरिजी पण पाधरा सुनंदाने घेर गया तेवारें जर्त्तारने देखी बालकना संतापथी रीशेकरी कहेवा लागी. जे तमें पोते तो संतापथी छूटा; पण मुजने आ श्यो संताप लगाड्यो. तेने धनगिरिजीयें कह्युं के साहामुं तहारे तो रूडुं थयुं. जे पुत्रनो आधार छे, ते सांजली सुनंदा रीश करी बोली. जे ए आधार विनाज सरसे तमेज सुखेथी एने लइ जाउ. एम कही पुत्रने हाथमां लइ कहेवा लागी. जे आ तमारी थापण ल्यो, वहोरी जाउ. महारे तो तमाराथी सुख न थयुं. तो तमारा संतानथी सुख ते वली क्यांथी थाय ? ए बालक महाराथी सचवाय नही. ते सांजली धनगिरिजीयें पण गुरुनुं वचन संजाख्युं, पछी चार गोत्रीया तथा

पाडोसी अने चोवटीयानी शाखे करी पोताना बालक पुत्रनें कह्युं के तुज ने तहारी माता मुजप्रत्यें आपे छे माटे तुजने चारित्र लेवुं पडशे, तेथी तुजने गमेतो महारी साथें आव हुं तो तहारो आ नवसंबंधिज पिता छुं,माटे जो चारित्र पालीश तो सुखी थइश. एम कही जोली मांही तेमां बालक लीधो. छ महीनानो हतो तोपण रोतो रह्यो. श्रीगुरुपासे पोहोतो. गुरुयें जोली लीधी. तेने नारी वजनदार जाणीने गुरुयें कहुं, आ शुं वज्र छे के? एम कही मांहे जूवे तो बालक दीठो. तेनुं वज्र एवुं नाम गुरुयें दीधुं. पछी साध्वीयोने उपासरे श्राविकायें पारणुं बांध्युं तेमां ते बालकने सूवाडीने धवरावvुं प्रमुख कार्य करवा मांड्युं. शुश्रूषा करवा मांडी अनुक्रमें ते बालक महोटो थयो. तेवारें तेणें पारणामां पोढतां पोढतां साध्वीयोने नणतां सांनलीने इग्यार अंग मुखपाठें कर्या.

एकदा गुरुयें अन्यस्थानके विहार कर्यो. पाछलथी श्राविकाउ ते बालकने स्नानविलेपन नोजनादिकें पोषती हवी. एम करतां त्रण वर्षनो थयो, तेवारें श्राविकाउनी संघातें पहेर्यो उढयों देखी सुनंदायें चिंतव्युं. जे आ बालक कहेवो सोनागी देखाय छे. हुं अनागणी छुं. जे माटे महारो ए पुत्र हतो तेपण में नर्त्तारने आपी दीधो. पछी श्रावक तथा श्राविकाउने कह्युं के,आ महारोपुत्र मने आपो; पण श्रसंघे आप्यो नही, अने कह्युं के, गुरुने जइ कहो. तेवारें सुनंदा पोतानो पुत्र पाछो लेवा माटे राजद्वारे गइ तिहां गुरुने तेडाव्या अने धनगिरिजी साधु पण श्रीसंघसहित राजदरबारमां गया. तिहां सुनंदाये कह्युं, हुं महारो पुत्र पाछो लइश. धनगिरिजीयें कह्युं. ए अमने एणे वहोराव्यो छे, माटे साधुने आपेलुं पाछुं अपाय नही. ते वात सांनली राजा बोल्यो. ए माता अने ए पिता ए बेहुमांथी एकने न आपीयें, एवुं कही शकाय नही,माटे ए बालकने वच्चमां बेसाडीयें. पछी एक बाजुथी एनी माता साद करे अने बीजी बाजुथी एनो पिता साद करे तेमां जेनी पासें बालक जाय तेने ए आपवो. तेवारें सुनंदायें अनेक जातनी सूखडी, रमकडां, आनरण प्रमुख देखाडी बालकने साद कर्यो; पण तेनी पासे बालक आव्यो नही; अने पहेली तरफ धनगिरिजीयें उघो, मुहपत्ति, पडघो प्रमुख धर्मोपकरण देखाडीने बालकने साद कर्यो के तत्काल ते बालक उघो मुहपत्ति पडघो उपाडी लइ तेने मस्तकें चडावी नाचवा कूदवा लाग्यो. ते

जोइ सर्व संघ हर्ष पाम्यो, अने स्त्रीपण गानी रही गइ. बालकने धनगिरि जी लइ गया. केटलाक वर्ष पढी सुनंदायें पण वैराग्य पामी चारित्र लीधुं.

ज्यारें आठवर्षना वज्रस्वामी थया त्यारे गुरुयें दीक्षा दीधी. एकदा गुरु तथा सर्व साधु ठंमिलें गया ठे, पठवाडे एकलो वज्रनामक चेलो उपाश्रयमां रह्यो तेणे बारणा बंध करी यतीनी उपधि चारेबाजु मांमीने महोटें सादे इग्यार अंगनी वाचना देवा मांमी. एवामां गुरुपण ठंमिलथी आवी बारणे उना रह्या, अने सूत्रनी वाचना अर्थसहित देता देखीने जाण्युं जे, ए सूत्रधारी थयो ठे. पठी गुरु मांहे आव्या जाणी वज्रस्वामीयें पण वाचना समेटी लीधी.

रात्रीयें सर्वसाधुउने गुरुयें कह्युं के, प्रनाते अमे बीजे गामे जइशुं. तेमने शिष्ये कह्युं के, अमने वाचनानो व्याघात थशे, तेवारें गुरुयें कह्युं, तमोने वज्र वाचना देशे, शिष्यें प्रमाण कर्युं. प्रनाते गुरु चाल्या गया, पाठल समस्त साधुयोयें वज्रस्वामीने उंचा बेशाडी वाचना लेवा मांमी. ते एवी अस्खलित वाचना दीधी के, शिष्य सर्व विचारवा लाग्या. जे गुरु घणा दिवसे पाठा आवे तो अमे तरतज आरंनेलो श्रुतस्कंध आ वज्रस्वामी पासेंथी नणी पूरो करी लइशुं. जेमाटे एमनी वाचना देवानी पद्धति घणीज सारी ठे. केटलेक दिवसें गुरु पधार्या. तेवारें शिष्योने पूठ्युं के, तमारे वाचना रूडीरीतें चाली ठे? शिष्योयें कह्युं, हा स्वामी आपना पसायथी रूडीरीतें चाली.

एकदा प्रस्तावें गुरु साथें विहार करतां वाटे वर्षा आव्यो तेवारें श्रीवज्रस्वामी पूर्वनवनो मित्र तिर्यक्जृंनक देव हतो तेनुं देहरुं आव्युं तिहां रह्या. देवतायें तेने उलख्यो; पठी परीक्षा करवा सारु व्यवहारीनुं रूप करी वणात थइ श्रावकना वेषें आवी कोल्हापाक देवा मांम्यो. वज्रस्वामीयें विचार्युं जे हमणा कोल्हापाकनी रुतु काल नथी. कदाचित् होय तोपण आ खेत्रमां ते नीपजतुं नथी, वली ते श्रावकनी साहामुं जोयुं तो आंख मीचमीचाट करती नथी. तथा नूमीथी चार आंगुल उंचा पग मांमेला दीठा. तेवारें जाण्युं जे ए देवता ठे, माटे साधुने देवतानो आपेलो आहार कल्पे नही. एम जाणी न लीधो. देवतायें पूठ्युं कां नथी लेता? तेवारे वज्रस्वामीयें कह्युं, ए आहार असूफतो ठे माटे अमारे कल्पे नही. ते सांनली देवता प्रसन्न थइ पगे लागी वैक्रिय लब्धी आपी प्रशंसा करी पोताने स्थानकें गयो.

अन्यदा विहार करतां तेज देवतायें आवीने अटवीने विषे एक नवीन न

गर वसाव्युं. तेमां श्रावक रहेला छे. ते वज्रस्वामीने वहोरावबा माटे तेडवा आव्या. तेवारें वहोरवा गया; पण गेवर वहोरावतां उपयोगथी जाएयुं, जे ए तो देवता छे, तेथी वोहोर्युं नही. ते जोइ देवता संतुष्ट थयो. आकाश गामिनी विद्या आपीने स्वस्थानके गयो. वज्रस्वामी तिहांथी विहार करी कोइक गामे जइ रह्या. एवामां पाडलीपुरने विषे कोइक धनशेठ नामे व्यव हारीयो तेनी पुत्री रुक्मिणी शिवदर्शनी छे. तेणीयें सांध्वीयोनी पासेथी व ज्रस्वामीनी गुणरूप संपदा सांजलीने एनेज परणवानी प्रतिज्ञा करी छे. एवामां पाडलीपुरनी बाहिर श्रीवज्रस्वामी आवीने समोसर्या छे. ते सां जली धन व्यवहारीउ कोटी धनना गाडलां जरी कन्याने सार्थे लइ वज्र स्वामी पासें आवी कहेवा लाग्यो, जे आ धन ल्यो, अने आ महारी क न्या परणो. तेने वज्रस्वामीयें अमृतसमान धर्मनी देशना दीधी. प्रतिबोध आपी कन्याने साध्वीयो पासें दीक्षा देवरावी, अने व्यवहारीयाने शुद्ध श्रा वक कर्यो. तेथी ते गाममां श्रीजिनधर्मनो महिमा विस्तर्यो.

अन्यदा दुर्जिक्ष पडे थके श्रीवज्रस्वामीयें पाटलानी उपर सडशठ को ठा करी नवकारना अक्षर लख्या, तेना मध्यना कोठामां मंत्रने बलें करी श्रीसंघने बेसाड्यो. बाकीना कोठामां मात्र नवकारना अक्षर लख्या मंत्र बले करी श्रीसंघने थापी सोपारा पाटणे लइ गया. तिहांनो राजा बौद्ध धर्म पालनारो छे. ते जेवारें पंजोसणना दिवसो आव्या तेवारें अठाइना दिवसोमां जैनना चैत्योने विषे फूल कोइ माली आपे नही, एवो राजायें बंदोबस्त कर्यो. सर्व फूल पोतानी दरबारमां मगावी लीये; पण जैनने दे रासरे जावा न दीये. तेवारें श्रावकोयें श्रीवज्रस्वामीने विनंति करी. के हे महाराज पुष्प विना पूजा थइ शकती नथी. जैननी प्रजावना थती नथी. ते सांजली गुरु आकाशगामिनी विद्यायें करी महेश्वरी नगरीयें गया. तिहां एमना पितानो मित्र एक माली हतो. तेने कह्युं जे तुं फूल समा करी रा खजे, हुं पाछो वलतां लइ जइश. एम कही तिहांथी हिमवंत पर्वतें गया तिहां श्रीदेवीयें घणा फूल आपी लाख पाखडीनुं कमल दीधुं, तेमां बेशी हु ताशन यक्षना वन थकी माली पासेथी वीश लाख पुष्प लइने कमलमां थापी आकाशमार्गें आवता वचमां मित्र देवता मल्यो, तेणें नवुं विमान विकुर्व्युं. तेमां वज्रस्वामी बेठा, तेमना मुख आगल देवता नाटक करवा

लाग्यो. पंचशब्द वाजित्र वजावता महोत्सव सहित ते सोपारा नगरे आ व्या. नगरना लोक सर्व ऊंची नजर करी जोवा लाग्या. बौद्धदर्शनी सर्व च मत्कार पाम्या, जिनशासननी उन्नति थइ. पछी ज्यां श्रावक पूजा करता ह ता त्यां सर्व उतस्था, अने पुष्प आप्या, तेणेकरी श्रावकोयें पूजा करी, ए महिमा देखी राजा.पण जैनी थयो. बीजा पण ते नगरना रहेवासी घणा जन जैनदर्शनी थयाँ. एवा प्रभाविक श्रीवज्रस्वामी थया.

वली अन्यदा श्रीवज्रस्वामीने कफविकार जणाववा लाग्यो. तेवारें शि ष्यने कही श्रावकना घरथी शुंठनो कटको वहोरावी मगाव्यो आहार करी रह्या पछी मुखमां राखशुं एम विचारी ते कटको कानें खोंसीनें आहार क रवा बेठा. आहार करी रह्या पछी ते कटको मुखमां राखतां वीसरी गयो. चउविहार करी उठ्या पछी सांजनी पडिलेहण वेलायें मुहपत्ति पडिलेहतां ते कटको कान उपरथी नीचें पड्यो तेवारें विचार्युं जे दशपूर्वधरने शुंठनो कटको कानमां राखतां वीसरी गयो. तेथी पोतानुं आयु ढूकडुं आव्युं जाणी वज्रसेनाचार्यने पोताने पाटें बेसाडी पोतें अनशन करवानो विचार कस्यो, अने पोताना शिष्य वज्रसेनने कह्युं के जेवारें बार डुकाली पडशे तेवारें तुं सोपारापुर पाटणें जाजे, अने तिहां जिनदत्तश्रावक अने तेनी स्त्री ईश्वरी श्रा विकाने सपरिवार जीवाडवा अने प्रतिबोध आपवानो उद्यम करजे, तेवारे शि ष्यें पूछ्युं महाराज सुभिक्ष केवारें थशे. तेने गुरुयें कह्युं, तेना घरमां द्रव्य घणुं छे, पण नगरमां धान्य मलशे नही. तेथी लाखद्रव्यनी हांडी चूले चडा वी तेमां विष नेलीने शेठ, शेठाणी तथा तेना चारपुत्र मली छ ए जण जेवारें खावानो विचार करशे तेने बीजे दिवसे सुगाल थशे. हवे तिहां ते शेठ शेठाणीए हांडी चडावी छे, एवामां वज्रसेन पण गाममां ईश्वर श्राविकाने घेर वहोरवा गया तिहां लक्षमूल्यनी हांडली चूले चढावेली तेमां विष नेली आरो गीने अनशन करशुं एवी तयारी चाली छे. ते देखी साधु बोल्या अमारे गु रुयें कह्युं छे के, काले सुगाल थशे, माटे ए विषमिश्रित हांडलीनो आहार करशो नही. बाइयें कह्युं जो एम थाशे तो अमारा चार पुत्र तमने वहोरावी दइशुं. पछी प्रभातें धान्यथी भरेलां घणां वाहाण आव्यां. सुगाल थयो. वहाणमां धान्य हतुं, तेणे जगतनो उद्धार कस्यो, माटे ते धान्यनुं नाम पण युगंधरी पडी गयुं. पछी ते स्त्रीना एक नागेंद्र बीजो चंद्र, त्रीजो निवृत्ति, चोथो वि

द्याधर, ए चारपुत्र हता, तेमणें दीक्षा लीधी. ते चारे बहुश्रुत थया. आचार्यपद पाम्या. तेनी चार शाखा थइ. ते आज पर्यंत चाली आवे छे. एकेकी शाखायें एकवीश आचार्यपद होता हवा.

वज्रस्वामी रैवतपर्वतने विषे अनशन आदरी स्वर्गे गया, तिहांथी वज्री शाखा प्रवर्ती. इहांथी चोथुं संघयण, दशमुं पूर्व, चोथुं संस्थान, ए त्रण वाना विच्छेद गया. श्रीवज्रस्वामी आठ वर्ष गृहस्थावासें रह्या. चुमालीश वर्ष दीक्षा पाली साधु पणें रह्या, अने छत्रीश वर्ष युगप्रधान पदवी जोगवी सर्व मली अठ्याशी वर्ष त्रणमास अने सातदिवसनुं आयु जोगव्युं.

इहां जीव, अजीव अने नोजीव ए त्रण राशिना प्ररूपकनी उत्पत्ति कहे छे. श्रीवीरथी ५४४ वर्षे अंतरंजिका नगरमां श्रीगुप्ताचार्य आव्या, तेवा समयमां तिहां एक तापस घणी विद्याउने फोरवतो राज दरबारमां आवी राजाने कहेवा लाग्यो के, तमारा सहेरमां कोइ विद्यावान् होय तो, महारी साथे तेने वाद करावो. नहीकां जयपत्र लखी आपो. त्यारें राजायें गाममां ढंढेरो फेरव्यो. ते वखत उपासरानी पासें श्रीगुप्ताचार्यना शिष्य जड्गुप्त उजा हता, तेणें ते पडह छव्यो. राजाना सेवको तेमने राजा पासें तेडी गया. तिहां सर्व सजामां वादीयें वृश्चिक, सर्प, मूषक, मृग, वराह, काक, सीचाणो एवी सात विद्यानी विकुर्वणा करी, तेने साहामा साधुये पण ते सातना शत्रु जे मयूर, नकुल, बिल्लाडो, व्याघ्र, सिंह, घूवड, बाज एवी सात विद्या विकुर्वीने हराव्यां. तेवारें वादीयें पूछ्युं, संसारमां सुख अने दुःख, नीच अने उच्च, मुक्तिने संसार, पुण्य अने पाप, शुज अने अशुज, संपदाने आपदा, जीवित अने मरण, जीव अने अजीव; एम सर्व बे बे वस्तु छे, तेवारें तेनुं मत उछापवाने साधुयें कह्युं के, संसारमां त्रण त्रण वस्तु छे. श्लोक ॥ देवानां त्रितयं त्रयं हुतजुजां शक्तित्रयं त्रीश्वरास्त्रैलोक्यं त्रिपदी त्रिपूरुषमथ त्रिब्रह्म वर्णास्त्रयः ॥ त्रैगुण्यं पुरुषत्रयी त्रयमथातीतादिकालत्रयं संध्यानां त्रितयं वचस्त्रयमिहाचार्यास्त्रयः संस्मृताः ॥ १ ॥ एम जीव, अजीव अने नोजीव ए सर्व त्रण त्रण वस्तु छे, एवुं कही एक दोराने वट देइने सजामां नाख्यो, अने कह्युं के आ हाले छे ते नोजीव छे, एवुं मत स्थापन कर्युं तेवारें राजायें वादीना पाटा छोडावी हरावीने बाहर काहाड्यो, अने साधुने मान सहित गाजते, वाजते उपासरे पोहोचाड्यो. तिहां गुरुयें

कह्युं के, तमे जे नोजीवनी स्थापना करी ते उत्सूत्र नांख्यु, जेमाटें जैनमा र्गमां जीव ने अजीव ए बे राशीज कहेली छे, तेथी तमे जुतुं बोल्या तेनुं मिछामि डुक्कडं राजदरबारमां दइ आवो. शिष्यें कह्युं हे महाराज ! जे मुखथी पान चाव्या, तेज मुखथी लीहालो केम चवाय ? माटे हुं मिछामि डुक्कड देवा नही जाउं. पछी ते गुरु चेलायें छ महीना सुधी राजसनामां वाद कस्यो. गुरुयें कुत्रिकापण देवा सुधी पूछी निरुत्तर कस्यो, तोपण तेणें कदाग्रह मूक्यो नही, तेवारें गुरुयें तेनुं माथुं मुंमी राख चोपडी गछ बाहिर काहाढी मूक्यो. तेणें त्रैराशिक वैशेषिक मत प्रवर्त्ताव्युं. ए छठ्ठो निन्हव थयो. पण इहां श्रीवज्रस्वामी सुधी तो ते त्रैराशिक मत थापनारना गुरु गुप्ताचार्य तेना शिष्य तेमना शिष्य वली तेमना पण शिष्य संप्रदायना साधुउ थया जाणवा ॥ इति रोहगुप्त कथा संपूर्णा ॥

हवे, श्रीवीरथी ६११ वर्षे श्रीवज्रस्वामीना मामा आर्यसमिति सूरि थकी ब्रह्मद्वीपिका शाखा नीकली तेनो संबंध कहीये छैयें. आनीरदेशने विषे अचलपुर नगरनीपासे कन्ना अने बेन्ना ए बे नदीना मध्य विनागें ब्रह्मद्वीप छे, तिहां पांचशें तापस रहे छे, तेमनो गुरु पगमां लेप करी नदीना पाणी उपरथी सूका स्थलनी माफक चालतो आवे, पण पाणीमां बूडे नही. लोकोमां एवी प्रसिद्धी थइ जे ए तापस तपना महिमा थकी उतरी आवे छे. तिहां मिथ्यात्वीउ जैनश्रावकोने कहे के, जूउ अमारा गुरुनो कहेवो महिमा छे. इत्यादि बहु प्रशंसा करे. एकदा विहार करतां श्रीसमिति सूरि तिहां पधास्या. तेमनी आगल तापसनो सर्व संबंध श्रावकोयें कह्यो. गुरुयें कह्युं के, ए औषधीना लेपने बलें पाणी उपरथी चालें छे, पण तपनो महिमा नथी. पछी श्रावकोयें तेनुं कपट प्रगट करवा माटें तापसोने आदर सहित जमवा तेड्या. कुलपति पण परिवार सहित तिहां आव्यो. नोजन करवा आगाउ श्रावकोयें पग पखालवा मांग्यां पण ते तापस धोवा आपे नही तेने श्रावकें कह्युं के, अमारो मनोरथ छे, माटे तमारा पग धोया विना अमे जमशुंनही एम कही बलात्कारथी पग धोइने पछी सर्वने जमाड्या. तदनंतर नदी पर्यंत सर्व लोक वोलाववा आव्या, बीजा तापसो सर्व होडीमां बेसीने नदी उतरी गया, अने तेमनो गुरु नदी उतरता बूडवा लाग्यो तेमने लोकोये ताणी काहाढयो, गाममां हेलना थइ. आर्यसमिति आचार्य पण जिनशास

नोन्नति माटे तिहां आवी नदीने बोलावी कहेवा लाग्या के,हे बहिन! अ मे नदीने पहेलेपार जइशुं, माटे अमने मार्ग आप. ते सांभली नदीयें मार्ग दीधो, तेवारें गुरु सर्व श्रावक श्राविकासहित तापसने आश्रमें गया. तिहां धर्मोपदेश आपी प्रतिबोध पमाडी पांचशें तापसने दीक्षा दीधी त्यारें गुरु ना तपनो महिमा सर्वलोकोयें जाण्यो; पछी ते तापस्सनो परिवार थयो ते नाथी ब्रह्मद्वीपी शाखा कहेवाणी. एम जेजे शाखायो निकली छे. ते ते सर्व नो कोइ कोइ पण हेतु जाणवो. आंहि लखतां ग्रंथ वधे माटे नथी लख्युं.

हवे श्रीआर्यरक्षितजीनो अधिकार कहियें छैयें. दशपुरनगरने विषे सो मदेव नामें ब्राह्मण रहे छे. तेनी स्त्री सोमरुद्रा छे, ते जैनमतवाली छे ते ना एक महोटा आर्यरक्षित अने बीजा फल्गुरक्षित एवा बे पुत्र छे. तेमां आर्यरक्षितजी पाडलीपुर नगरें भणवा गया तिहां वेद पुराण भणी चौद वियाना जाण थइने पाछा घेर आव्या. राजा प्रमुख सर्वलोक सामैयुं लइ भट्टने हाथी उपर बेसाडी घणा आडंबरे तेडी लाव्या. लोकोयें घणुं द्रव्य भ टने पगे मूक्युं सर्व कुटुंब आवी मल्युं. सर्व खुशी थया; पण माता पिता खुशी थया नही तेथी मलवा आव्या नही माटे आर्यरक्षितजी पोते मा ताने पगे लागवा गया, पण माताने खुशीमां दीठा नही. तेवारे माताने कहेवा लाग्या. हे माताजी हुं परदेश जइ घणां शास्त्र भणी आव्यो. सर्व कुटुंब राजी थयुं; पण तमे केम खुशी थया नही. तेवारें मातायें कह्युं हे वत्स जेथकी नरकमां पडवुं थाय. एवां शास्त्र भणी आववाथी हुं शुं खुशी थाउं? पण जेथकी स्वर्ग अने मोक्षनां सुख सधाय एवो दृष्टिवाद भणी आवो तो हुं खुशी थाउं. ते सांभली पुत्रें विचार्युं जे दृष्टिवादनुं तो में क्यारे नाम पण सांभल्युं नथी. तेवारें हूं ते शुं भण्यो! अने ए दृष्टिवादनुं तो नाम पण सारुं लागे छे. पछी प्रभातें माताने पूछ्युं. जे दृष्टिवाद कोण भणा वशे? तेवारे मातायें कह्युं इक्षुवाटक गामने विषे तहारो मामो तोसलिपुत्रा चार्यछे,ते तुजने भणावशे,पछी आर्यरक्षितजी मातानी आज्ञा मागीने भणवा चाल्यो, ते वखत एक कणबी एमनो मित्र हतो ते सेलडीना साठा हाथमां भेट लइने एनेज मलवा माटे आवतो हतो. ते साहामो मल्यो तेवारें विचार्युं जे ए सेलडीने फल नथी माटे अपशुकन थया. एम चिंतवी पाछो फरी माता पासें

आव्यो तेवारे मातायें शेलडीना शांग गणी जोया तो साढा नव थया, ते जोइ पुत्रने कह्युं के हे पुत्र तुं साढा नव पूर्वनी विद्या जणीश.

फरी मातानी आज्ञा लइ चाल्यो ते तोसलीपुत्राचार्य पासें गयो तेमने वांदीने कह्युं. स्वामी! हुं दृष्टिवाद जणवाने अर्थे आव्यो बुं. तेवारें गुरुयें तेने दीक्षा दइने तिहांथी विहार कस्यो; पबी पोताने जे शास्त्र आवडतुं हतुं तेटलुं सर्व जणाव्युं, वली कह्युं के बाकी विद्या जणवाने माटे श्रीउज्जयणी नगरीयें श्रीवज्रस्वामी पासें जाउ; पण मार्गमां जइगुप्ताचार्ये अनशन कस्युं बे, तेने नीजामता जाजो वली तमे तिहां उज्जयणीमां जूदे उपासरे उतरजो, अने वज्रस्वामी पासे जणवा जाजो. पबी आर्यरक्षितजी उज्जयणीयें गया जूदे उपासरे उतारो करी तिहां उपधी मूकीने वज्रस्वामीने जइ वांद्या. तेवारें वज्रस्वामीयें चिंतव्युं. जे अमे आजे स्वप्नुं दीठुं बे, जे अमारा हाथथी खीर पडती ते कोइक नवो परगामथी आव्यो तेणे पीधी, तेथी जाणीयें बैयें जे आ कोइ नवीन परगामथी साधु आव्यो बे, ने जूदे उपासरे उतस्यो बे. तेमाटे खीरनुं पान करनारो ते एज दशपूर्व शास्त्रनो जणनारो देखाय बे. एवुं विचारी तेनुं रूप देखीने पूर्व जणाववा मांम्यां. जणवतां थकां जेवारें दशमुं पूर्व जणवा मांम्युं. ते वखते माता पितायें आर्यरक्षितने तेडवाने माटे लघुपुत्र फल्गुमित्रने मोकल्यो. तिहां आर्यरक्षितजीयें लघुजाइने प्रतिबोधीने दीक्षा आपी. हवे जणतां जणतां साढानव पूर्वसुधी आव्यो. तेवारें आर्यरक्षितजीयें गुरुने पूब्युं. महाराज हजी दशमुं पूर्व केटलुं थाकतुं बे. गुरुयें कह्युं, एक बिंडुमात्र तमे जण्या बो, अने समुड जेटलुं हजी जणवुं बे? ते सांजली जणवानो उत्साह जंग थयो, अने विचास्युं. जे दशमुं पूर्व घणुं महोटुं बे. ते शीरीते जणाशे? त्यारे गुरुयें पण उपयोग दीधो जे आगल सूत्रनो विब्रेद थवानो बे,तेथी जणाववुं मूकी दीधुं.

हवे फल्गुरक्षितने मातापिताने मलवा जवानो उत्साह थयो. तेथी दशपुरनगरें गयो. तेने राजायें महोटा महोत्सवें करी नगरमां प्रवेश कराव्यो. तिहां माता पिता बहिन तथा बीजा परिवारें दीक्षा लीधी,अने सोमदेव पितायें पुत्रने अनुरागें दीक्षातो लीधी; पण लाजतो थको धोतीयुं, जनोइ, बत्री, पगरखो अने कमंमलुं मूक्या नहीं, पाबलथी गुरुयें हलवे हलवे सर्व मूकाव्या.

एकदा समयने विषे आर्यरक्षितजीना पिता सोमदेव साधु ए बत्रीश मो

दक वहोरी लाव्या. तेवारें गुरुयें जाण्युं अमारे परंपरायें बत्रीश परिया पर्यंत शिष्यशाखा चालशे. पढी ते मोदक साधुउने वहेंची दीधा सोमदेव साधुयें फरी परमान्न वोहोरी पारणुं कीधुं. हवे आर्यरक्षितजीने चार शिष्य थया तेनां नाम कहे ढे. डुर्बलिका पुष्पमित्र, घृतपुष्पमित्र, वस्त्रपुष्पमित्र अने चोथो गोष्टामाहिल्ल तेमज पांचमा फल्गुरक्षित न्नाइ हता तेमां घृतपुष्प सर्व साधुने घृत वहोरी पूरे, वस्त्रपुष्प ते सर्वसाधुने वस्त्र पूरे एटले कोइ दोसी होय ते ढमहीना सूत्र काती महोटी मेहेनते पोताने शीत मटाडवा माटें एक कपडो बनावे तेपण ए साधु वहोरवा जाय तो मनमां एवुं विचारे जे आ साधुने आपी द्युं,एवी लब्धीना धारक हता. तथा डुर्बलिका पुष्पमित्र नवपूर्वी हता, अने गोष्ठामाहिल्लने पूर्व न्नणतां न्नणतां निन्हवनी बुद्धि उपनी ढे. ए वात विस्तारें महोटी पट्टावलीथी जाणजो. ए श्रीआर्यरक्षितप्रमुख सर्व देवलोके जनारा थया. ए सर्व थिविर श्रीवज्रस्वामीनी वारे प्रन्नाविक थया हता. इति ॥ १५ ॥

१६ हवे शोलमा पट्टधर श्रीवज्रसेनसूरि थया. तेमना चंड, नागेंड, विद्याधर अने निवृत्ति ए चार शिष्यथी चार कुल प्रवर्त्यां. तेमाहेलुं चंडकुल हमणा प्रवर्त्ते ढे. ए श्रीवज्रसेनसूरि एकशोने अठावीश वर्षनुं संपूर्ण आयु पाली श्रीमहावीरथी ६२० मे वर्षे स्वर्गे गया.

१७ सत्तरमा पट्टधर श्रीचंडसूरि थया. तेहथी चंडगढ एवुं नाम थयुं. श्रीवीरनो शक अथवा तेमना न्नाइ नंदीवर्द्धननो शक ४७० वर्ष सुधी चाल्यो; पढी राजा वीरविक्रमादित्य थया माटें तेनो शक चाल्यो ढे.

१८ अढारमा पट्टधर श्रीसामंतन्नडसूरि थया, ते पूर्वगत श्रुतना जाणकार हता. तेउ वृद्धदेवसूरिने पाटें बेसाडी पोतें स्वर्गे पोहोता.

१ए उंगणीशमा पट्टधर श्रीवृद्धदेवसूरि थया. ते महाक्रियावान हता. श्रीकोरंटक गामनेविषे तथा श्रीसाचोर गाममां नाहड मंत्रीश्वरें नीपजाव्यो जे जिनप्रासाद तेने विषें वीरप्रन्नुनी प्रतिष्ठा करी, ए आचार्यें अनेक न्नव्य जीवोने प्रतिबोधी धर्म पमाडीने स्वर्गे गमन कर्युं ढे.

२० वीशमे पाटे श्रीप्रद्योतनसूरि थया. २१ एकवीशमे पाटें श्रीमानदेवसूरि थया. एमने सूरिपदस्थापनाने अवसरें बे खंन्ना उपर साक्षात् सरस्वती अने महालक्ष्मी देखीने एवी विचारणा करी, जे आज पढी विद्या

अने धननो नाश थशे. ए आचार्य अतिशयवंत थया. श्रीवीरथी ६०५ मे वर्षे शंखराजानुं राज्य थयुं.

२२ बावीशमा पट्टधर श्रीमानतुंग सूरि थया. जेमने सांख्य दर्शनी राजायें एक उरडामां बीजो उरडो तेमां वली त्रीजो उरडो एवीरीतें अडतालीश उरडा करावी तेमां बहेला अडतालीशमा उरडामां जकडबंध बंधनें बांधीने बेसाड्या, अने अडतालीश उरडाने बंधकरी जूदा जूदा ताला दइने राजा यें कह्युं तमारुं जैनदर्शन साचुं होय तो एमांथी बीडीयो भांजी ताला भांजी बाहिर निकलीने राजसनामां आवो, तेवारें श्रीमानतुंगसूरियें श्रीरुषभदेवनी स्तुतिरूप अडतालीश काव्यनुं भक्तामर स्तोत्र रच्युं. एकेका काव्यें एकेकुं तालुं भांजतां अडतालीश काव्यें अडतालीश ताला भांजी ग यां. आचार्य बंधनमुक्त थइ बाहेर निकली राजसनामां आवी राजाने ध र्मलाभ दीधो. राजासहित सर्व सना विस्मय पामी. जैननो महिमा अ त्यंत वृद्धि पाम्यो. एवा महाप्रभाविक श्रीमानतुंगसूरि थया. एमणें भ क्तामर तथा नमिऊण आदिक स्तोत्रो कर्या छे.

२३ त्रेवीशमा पट्टधर श्रीवीरसूरि थया. तेमणें श्रीवीरभगवानथी ७७० मे वर्षे नागपुरनेविषे श्रीनमिनाथनी प्रतिमानी स्थापना करावी, वलि सा चोरमां श्रीवीरप्रभुनी प्रतिमां स्थापना करावी.

चोवीशमा पट्टधर श्रीजयदेवसूरि थया तथा पचीशमा पट्टधर श्रीदेवानं दसूरि थया. तेना पाटें छवीशमा पट्टधर ते श्रीविक्रमसूरि थया छे.

सत्तावीशमा पट्टधर श्रीनरसिंहसूरि थया. जेमणें पोतानी वाणीयें करी यक्षने मांसनो त्याग कराव्यो, पछी अठावीशमा पट्टधर श्रीसमुद्रसूरि थया.

उगणत्रीशमा पट्टधर श्रीमानदेवसूरि थया. जेमने प्रमाद तथा रोगना वश थकी सूरिमंत्र विसर्जन थइ गयो. पछी शरीरे निरोगी थया तेवारें श्री गिरनार पर्वत उपर जइ तपस्या करवा मांमी. तेना प्रभावथी अंबिका देवी प्रसन्न थयां. तेमणें श्रीसीमंधर स्वामी पासेथी सूरिमंत्र लइ आवीने आप्यो ॥ काव्यं ॥ विद्यासमुद्रहरिभद्रमुनींद्रमित्रं, सूरिर्बभूव पुनरेव हि मान देवः ॥ मांद्यं प्रयातमपि योऽनघसूरिमंत्रं, लेभेंऽबिकामुखगिरा तपसोज्जयंते ॥ १ ॥ श्रीमहावीरथी एक हजार वर्षे चौदपूर्व संबंधी ज्ञान विछेद गयुं.

ए श्रीमानदेवसूरिनी वारे श्रीहरिभद्रसूरि थया. श्रीवीरथी १०५५

मे वर्षे याकिनी महत्तराना धर्मपुत्र एवा ते श्रीहरिजद्रसूरि स्वर्गे गया. जेणे नंदसोर नगरमां श्रावक श्राविकाने चरवलो मुहपत्ति दीधी. वली चौदसें चुंमालीश प्रकरण रच्यां. अनेक सूत्र तथा ग्रंथोनी टीकाउ करी ॥ उक्तंच ॥ सावयजण मुहपत्ति, चरवलो समय संघ संजुत्तो ॥ हरिजद्दसूरि गुरुणा, दसपुरनयरम्मि ठावेइ ॥ १ ॥

त्रीशमा पट्टधर श्रीविबुधप्रज सूरि थया. एक त्रीशमा पट्टधर श्रीजया नंद सूरि थया. तथा बत्रीशमा पट्टधर श्रीरविप्रजसूरि थया. एमना वखत मां श्रीवीरप्रजुथी (११ए०) मे वर्षे श्रीउमास्वाति वाचक तत्त्वार्थ प्रमुख पांचशें प्रकरणना कर्त्ता थया.

तेत्रीशमा पट्टधर श्रीयशोदेवसूरि थया. इहां श्रीवीरथी (४७०) वर्षे विक्रमादित्य राजा थया अने विक्रमादित्यना संवत आठशें बीडोतेरे वन राज चावडे अणहिलपुर पाटण वसाव्युं, ए राजा जैनी हतो वली. बप्पज ट्टसूरि जेमणे ग्वालेरना आमराजाने प्रतिबोध दीधो, तेपण एज वखतमां थया छे. चोत्रीशमा पट्टधर श्रीविमलचंद्रसूरि थया.

पांत्रीशमा पट्टधर श्रीउद्योतनसूरि थया. ते अर्बुदाचलनी यात्रा करी ने टेलीगामनी सीमने विषे महोटा वडवृक्षनी छायायें विसामा निमित्ते बेठा, तिहां पोताना पाटना उदयनुं कारण जाणी शुजमुहूर्त्त जोइ पोताना चोरासी शिष्यने सूरिमंत्र आप्यो. तिहांथी चोरासी गछ प्रगट थया. श्रीमहा वीरथी (१४६४) वर्षे अने विक्रम संवत (एए४) मे वर्षे ते चोरासी शिष्य मां मुख्य सर्वदेवसूरि थाप्या. वडतलें पद थाप्युं तेमाटे वडगछ नाम थयुं.

छत्रीशमा पट्टधर श्रीसर्वदेवसूरि थया. सडत्रीशमा पट्टधर ते चोरासी शि ष्यमांहेला श्रीपद्मदेवसूरि थया. ते विहार करतां श्रीशंखेश्वरपार्श्वनाथजीनी यात्रा करवा आव्या. तिहां चोमासुं रह्या. तेमनी श्रावकोंयें विशेष प्रकारें पूजा प्रजावना कीधी. तिहां सांख्यदर्शनीउनी साथे वाद करीने सर्वने जीत्या. ते सर्वने पोताना शिष्य कस्या, तेमाटे तेमनुं बीजुं नाम सांख्यसूरि एवुं पड्युं, अने शंखेश्वर गामें ए वात बनी, तेथी शंखेश्वर गछनी स्थापना थई.

अडत्रीशमा पट्टधर श्रीउदयप्रजसूरि थया एमणें प्राग्वाट वणिकना दश गोत्रनी तथा श्रीमालिवाणीयाने प्रतिबोधी तेमने समकेत पमाडी तेना बाशठ गोत्रनी स्थापना करी. तथा उगणचालीशमा पट्टधर श्रीप्रजानंदसूरि थया.

ते विहार करता नाणक गाममांहें आव्या त्यांना श्रावकोयें महोटे आडंबरें महोत्सव सहित नगरीमां प्रवेश कराव्यो. घणुं नाणुं खरच्युं तेणे करी नाणकगच्छनी स्थापना थइ.

चालीशमा पट्टधर श्रीधर्मचंद्रसूरि थया. एकतालीशमा पट्टधर श्रीसुविनयचंद्रसूरि थया. बेतालीशमा पट्टधर श्रीगुणसमुद्रसूरि थया. तेंतालीशमा पट्टधर श्रीविजयप्रभसूरि थया. चुंमालीशमा पट्टधर श्रीनरचंद्रसूरि थया. पीस्तालीशमा पट्टधर श्रीवीरचंद्रसूरि थया, छेंतालीशमा पट्टधर श्रीजयसिंहसूरि थया.

सडतालीशमा पट्टधर श्रीआर्यरक्षितसूरि थया. ते महाक्रियाउद्धारक, संवेगधारक, निर्विषयी, निर्विकारी थया. एमनी वारे नाणकगच्छ नाम हतुं ते टाली विधिपक्षगच्छनी स्थापना थइ. तेनी लेशमात्र कथा कहियें छैयें.

ते समयमां घणा आचार्य तथा साधुउ विहार करवामां शिथिल थया छे. क्रियाहीन थका पोशालधारी थया कलिकालने योगे करी सम्यक्क्रिया टाली पोतानी स्वेच्छायें नवनवी वात अंगीकार करी विचरे छे.

ते अवसरें श्रीजयसिंहसूरि दंत्राणा गामें आव्या तिहां प्राग्वाटज्ञातीय द्रोण नामें व्यवहारियो रहे छे. तेनो गोदु एवे नामे पुत्र छे. ते संवत् ११३६ मां जन्म्यो, अने ११४६ मां दीक्षा लीधी, पछी सकलशास्त्र भणवा मांड्या ते जेवारे श्रीदशवैकालिक सूत्र भणता हता त्यारें तेमां॥ सीउदगं न सेविज्जा, सिलावुट्ठिहिमाणिय ॥ उसणोदगं तह फासुयं, पडिगाहिज्ज संजए ॥ १ ॥ ए गाथा भणीने पछी तेनो अर्थ विचारवा लाग्या ते आवीरीतें जे सीउदगं न सेविज्जा एटले शीतोदक जे सचित्तपाणी ते न सेववुं. सिलावुट्ठिहिमाणिय एटले वृष्टिहिमनी भणी ए हिम न सेववुं, अने उसणोदगंतहफासुयं एटले उष्णोदक. ते तातुंपाणी तेम फासुं पाणी ते संजए एटले साधुने पडिगाहिज्ज एटले लेवुं. एवो अर्थ विचारी सचित्त टाढा पाणीथी भरेला माटला बेहेडा प्रमुख उपासरामां देखीने भणवानुं पडतुं मूकी गुरुपासें आवी पूछवा लागा के, हे भगवन् आपणे शुं कहिये छैयें? अने शुं करीयें छैयें? एम कही पूर्वोक्त श्रीदशवैकालिकोक्त गाथा कही संभलावी. तेवारे गुरुयें कह्युं. हे वत्स सूत्रमां चोथा आरानी क्रिया कही छे ते आजना पांचमा दुखम आरामां पले नही, तेवारें शिष्ये पूछ्युं, हेस्वामी सूत्रमां जे प्रमाणे क्रिया कही छे ते प्रमाणेज क्रिया कोइ साधु पाले तो तेने लाभ छे के नथी? ते सांभली गुरुयें कह्युं ए

प्रमाणे जे पुरुष क्रिया पाले तेने धन्य छे. तेवारे शिष्यें पण गुरु पासेथी सर्वसिद्धांत वांची समस्तक्रिया करवानी खरेखरी रीत समजी लइ तद्दत्ति करीने शुद्धमार्ग आदर्यो. ते शुद्धक्रियावान् तथा बहुश्रुत जाणीने गुरुयें ते शिष्यने उपाध्याय पद आप्युं. अने श्रीविजयचंद्र एवुं नाम दीधुं. ते श्रीविजयचंद्र उपाध्यायें गुरु पासे आज्ञा मागी त्रण साधुने साथे लइने चारे जणे क्रिया उद्धार करवा माटे विहार कर्यो. पोते सर्व लोकोनें खरेखरुं सिद्धांत शैलीपूर्वक सत्य सत्य उपदेश करवा लाग्या. छठ अठमादिक तप करे, आहारना बेतालीश दोष टाली शुद्ध आहार लीये. एकदा क्यांय शुद्धाहार न मल्यो, अने विना आहारें त्रीश दिवस निकली गया तोपण शुद्धक्रियाथी चल्या नही. एकमास वीत्या पछी पण शुद्धाहार न मल्यो तेवारें पावागढें आवी श्रीवीरप्रभुना दर्शन करी देरासरनी बाहिर शुद्ध निर्जीव शिला देखी तेनी उपर सागारिक एटले आगार सहित अनशन कर्युं. ते आवीरीतें के सवारें पारणुं छे माटे जो शुद्ध आहार मले तो लेवो, अने कदापि शुद्धआहार न मले तो पछी जावज्जीव आहार न लेवो.

एवामां चक्रेश्वरी देवी अने पद्मावती देवीयें महाविदेहमां श्रीसीमंधर स्वामी पासेंथी वखाण सांभली रह्या पछी पूछ्युं के, हे स्वामी आजना समयमां भरतक्षेत्रने विषे शुद्धक्रियाधारी कोइ साधु हशे ? तेवारें भगवानें कह्युं जे विनयचंद्र उपाध्याय शुद्धाचारना पालनारा हालमां पावागढ उपर छे. एवुं प्रभुना मुखथी सांभली तत्काल चक्रेश्वरी देवी पावागढें आवी. ते समयमां भरतक्षेत्रने विषे पाछली बे प्रहर रात्री रही छे ते वखतें चक्रेश्वरीदेवीयें आवीने विजयचंद्र उपाध्यायने वांद्या. नमस्कार करी ज्ञान प्रयुंजी जोयुं अने हर्षित मने करी उपाध्यायना मुख आगल उभी रही तेमनी शुद्धक्रिया देखीने एवी रीतें कहेवा लागी के, जेवा सीमंधर स्वामीयें तमोने क्रियाधारी कह्या तेवाज में तमोने दीठा, माटे हे स्वामी ! तमे विधिपक्षगच्छ एवुं नाम थापीनें सर्व लोकने धर्मनो मार्ग विधिसहित प्रगट करी आपो,अने उत्सूत्रनी प्ररूपणा जे चाले छे, तेने मूलथी कापी नाखो. एवुं देवीनुं वचन हृदयमां धारण करीने उपाध्यायजी पावागढथी उतर्या, तिहां देवीयें उपदिष्ट कर्युं हतुं जे भालेज नगरे जाजो. तिहां तमोने शुद्धमान आहार मलशे. तेणेंकरी पारणुं करजो. ते देवीना वचनने अनुसारें

उपाध्यायजी पण नालेज नगरें गया. तिहां शुद्धमान आहार वहोरीने पा रणुं कर्युं, अने ते गामना रहेवासी यशोधन नणसालीने प्रतिबोध आप्यो. तिहां धर्मसंबंधि शुद्धमार्गनो उपदेश कर्यो. ते नव्यजीवोना हृदयमां वस्यो. तिहां यशोधन नणसालीयें नरतचक्रवर्त्तिनी युक्ति जेवुं नवुं देरासर करा व्युं. तेनो विधिसहित प्रतिष्ठानो महोत्सव थाय ठे तिहां लाखो गमे लोक जोवाने एकठा थया ठे. तेमां केटला एक तो हास्य करवा आव्या हता. जे आ वली नवीरीत सिद्धांतिक मतें चालनारनी निकली ठे, माटे एने कोइरीतें विघ्न करी प्रतिष्ठानो विधि थतो बंध करावीयें.

एवामां आकाशथी देववाणी थइ. जे अहो लोको! तमे विधिपक्षगञ्चनुं नाम अनुसरो, अने ए गञ्चना मार्गने अनुसरी क्रियाप्रमुखमां प्रवर्त्तो के जेम संसार समुद्र थकी तरीने पार पामो, एवी वाणी सांजली अंतराय करवा आवनारा जनोनां वदन श्याम थइ गयां. अने हजारो श्रावको ति हां विधिसहित शुद्धक्रियानुं आचरण करवा तत्पर थया. शुद्ध सिद्धांत मा र्ग आदरता हवा. ए विक्रम संवत् ११६७ मे वर्षे श्रीविधिपक्षगञ्च नाम थापन थइने एनो महिमा विस्तार पाम्यो.

वली देवीयें प्रथम पावागढनी उपर उपाध्यायजीने एवुं कह्युं हतुं. जे स्वामी तमें नालेज नगरे जाजो. तिहां यशोधन नणसालीयें देरासर करा व्युं ठे, तेना महोत्सव उपर श्रीसंघ आवशे तेना तंबूमां तमोने शुद्ध आ हार मलशे, ते लेजो तमाराथी श्रीजिनशासननो महोटो उदय थाशे,माटे अनशन करशो मां. ते देवीना कहेवा प्रमाणे प्रनाते तिहां संघ आव्यो ते मणें साधुने वहोरवा माटे विनंती करी तेडीने लइ गया. चक्रेश्वरीजी पो तें आहार वहोरावा आव्या सोनामोरोनो थाल नरीने देवीयें कह्युं आ वहोरो. साधुयें बे वार कह्युं आ अमोने लेवुं कल्पे नही, तेवारे त्रीजी वार थालमां श्रावको चोखा नरी लाव्या ते वहोर्या. तेवारे देवीयें वर दीधो के आ जथी विधिपक्षगञ्चना श्रावक जे जे गामे हसे ते ते गाममां एक, बे, त्रण अथ वा चार जणनी पासे प्राये सोनैया अवश्य हशे,एम कही देवी अदृश्य थइ.

पढी उपाध्यायें साधुउनी साथे मालवदेशे विहार कर्यो. सर्व मली एक वीशशें २१०० साधुउने दीक्षा दीधी. तथा अगीआरशें साध्वीउने दीक्षा आपी. ते वात गुरुयें सांजली तेवारें विजयचंद्र उपाध्यायजीने तेडावी ल

इ आचार्यपद आप्युं. ते सडतालीशमा पाटे श्रीआर्यरक्षित सूरि क्रिया उ द्धार कारक थया अने ए सूरिथी श्रीचक्रेश्वरी देवीनी प्रार्थनाथी विधिपक्ष गच्छ एवुं नाम थपायुं. ते आचार्यथी मांमीने जिहां लगण श्रीमेरुतुंग सूरि थया तिहां सुधी जेटला आचार्यना पाट थयेला छे ते सर्व आचार्योना वखाण सांजलवा माटे एक चक्रेश्वरी बीजी पद्मावती अने त्रीजी महाकाली ए त्रण देवीयो नित्य प्रत्यें आवती हती.

एकदा श्रीविजयचंद्र उपाध्याय बिणप नगरे गया. तिहां कोडी व्यवहारीयाने प्रतिबोध्यो. यतः ॥ तस्ससुयासमयसिरि, इगकोडिटंकमुल्ललंकारं ॥ परिहरिय गहियदिरका, पणविस सहियर परिवरिय ॥ १ ॥ असेविय तब जणा, गुरु वयणरसेण लीण पडिबुद्धा ॥ के सव्व देस विरइ, वेरंगवसेण पडिवन्ना ॥ २ ॥ अर्थः—ते कोटी व्यवहारियानी समयश्री नामें पुत्री हती. तेणे एक क्रोड सोनामोरनुं गरेणुं पहेखुं छे, तेनो त्याग करी पोतानी पच्चीश सखीयो सायें परवरी थकी गुरु पासेंथी दीक्षा लेती हवी, वली बीजा पण घणा मनुष्य गुरुना वचन रूप रसें करी लयलीन थया थका केटलाएक देशविरति पणुं अंगीकार करी वैराग्यवशें श्रावकपणुं पडिवजता हवा, अने केटलाएक सर्व विरतिपणुं अंगीकार करीने साधु थया.

हवे ते कोटी व्यवहारीयो महाऋद्धिवंत छे तेणे एक आवास कराव्यो तेना चोरासी बारणा कख्या तथा वली पांचशें घोडी वछेरा सहित जेसंग दे राजायें दीधी. वली ते घोडा घोडीने अर्थें अढार गाम मोहोर छाप करीने राजायें आप्या,अने ते व्यवहारीयाने राजायें पोतानो नंमारी करी थाप्यो.

हवे ते कोडी व्यवहारियायें पडिक्कमणुं करतां हेमाचार्यजीने छेहेडायें करी वांदणा देवा मांम्या. तेवारें कुमारपाल राजायें गुरुने पूछ्युं. ए श्रावक ! वस्त्राचलें केम वांदणा आपे छे ? तेमने श्रीहेमचंद्राचार्यें कह्युं के,ए जे प्रमाणे वांदणा आपे छे ते प्रमाणेज खरेखरो सिद्धांतनो मार्ग छे,तेवारे कुमारपालराजायें विधिपक्षगच्छ एवुं नाम सार्थकज छे एम कहीने प्रशंसा करी विधिपक्षगच्छ नाम राखवाने उत्सुक थइ अंचलगच्छ नाम थाप्युं छे.

हवे उपाध्याय थिराइगामे पहोता ते अवसरें कुंकणदेशे सोपारापुर पाटणे कोटिद्रव्यनो धणी दाहड नामे शेठ रहे छे,तेनी नेढी नामे नार्या छे, तेनो जेसिंहकुमार नामें पुत्र छे, ते संवत् ११७एमां जन्म्यो; पछी महोटो थ

यो तेवारें श्रीजंबुस्वामीनुं चरित्र सांभली वैराग्य पाम्यो. तदनंतर मावित्र नुं मन मनावी त्रंबावती नगरीयें गयो. त्यांथी अणहिलपुर पाटणे आव्यो. त्यां जेसिंघराजाने एक लाखद्रव्यनुं हार भेट आप्यो. राजाये तेमने पूछ्युं तमे इहां केम आव्या छो? तेणें कह्युं चारित्र लेवुं छे. तेवारें राजायें कह्युं तमे थिराद्रे जइने श्रीविजयचंद्र उपाध्यायजी पासें दीक्षा ल्यो. तेवारें जयसिंघकुमर थिराद्रे आव्या उपासरे गया पण ते वखत गुरु देवदर्शने गया हता. एटलामां जेसिंघकुमारें ठवणी उपरें पडेलुं पुस्तक देखीने एकवार वांच्युं एटले सातशें गाथा दशवैकालिकनी कंठे थइ गइ. एटलामां गुरुपण देवदर्शन करी आव्या तेमने वांदीने जेसिंघकुमरें पोताने चारित्र लेवानी वात कही तेमने गुरुयें संवत् ११९७मां दीक्षा दीधी.

जेसिंघकुमरें, दीक्षा लीधा पछी त्रणवर्षमां त्रण कोटी ग्रंथ भण्या, पछी महाउर.नगरें संवत् १२०२ ना वर्षे श्रीजयसिंघसूरियें श्रीविजयचंद्र उपाध्यायने आचार्यपदें थापी तेनुं आर्यरक्षित सूरि एवुं बीजुं नाम दीधुं ॥

ते आर्य रक्षितसूरिजी पृथ्वीपीठने विषे विचरता घणा साधु साध्वीने परिवारें विहार करता सर्वमली एकवीशसो साधुने दीक्षा दीधी, तथा इग्यारसोने त्रीश साध्वीयोने दीक्षा दीधी, बार साधुनें आचार्य पदे थाप्या, वीस साधुने उपाध्याय पदें थाप्या, सीतेर साधुनें पंडित पदे थाप्या, एकशोने त्रण समय श्रीआदिक साध्वीयोने श्रीमहत्तरा पदें थापनकरी व्यासी वडेरी साध्वी पवत्तणी थापी. सर्व मली ३५१७ साधु आदिकनो परिवार थयो. इत्यादि थापना करीने पछी बिंणप नगरें आव्या तिहां पोतांनो पाट जेसिंघ साधुने आपी तेमनुं जयसिंहसूरि नाम थापन करी पछी संवत् १२३६ मां श्रीआर्यरक्षित सूरिनुं निर्वाण थयुं. एमनुं सर्वमली एकशो वर्ष आयु हतुं, ते पूर्ण करी स्वर्गे गया.

हवे अडतालीशमा पट्टधर श्रीजयसिंहसूरि थया, ते पृथ्वीपीठने विषे विहार करे छे,ते वखत पाटणमां जेसिंघदेराजाने पाटे कुमारपाल राजा बेठा जेणे श्रीहेमाचार्यनी वारमां अढारदेशोमां जीवदया पलावी ते वात ग्रंथोमां प्रसिद्ध छे. ए वखतें अणहिलपुरपाटणमां अंचलगछनुं नाम गर्जारव करतुं हतुं. गाथा ॥ तप्पट्टि पउमहंसो, गणाहिवो सूरिराय जयसिंहो ॥ कछवि गाम भुगंतर, गछेसो परिकरेण जुउ ॥ १ ॥ अर्थः– हवे ते श्रीज

यसिंहसूरि कहेवा शोजनिक ठे, के जेम पद्मसरोवरें राजहंस शोजाने धरे ठे, तेम गणाधीशने विषे श्रीजयसिंहसूरि शोजाने धरता हवा. ते आचार्य पृथ्वीने विषे घणा साधुने परिवारें विहार करे "गामे इकराइयं, णगरे पंच राइयं" गामें एकरात्री नगरें पंचरात्री एवीरीते घणा जव्यजीवोने धर्मोप देश देइ धर्म पमाडी संसार समुड्थी तारता थका विचरे ठे.

एकदा कोइक डुमेतीयें श्रीजयसिंहसूरिने जीवथी ठार मारी नाखवाने माटे घणा माणस मोकल्या. ते तिहां आव्या. तेने चक्रेश्वरी देवीयें थंजावी राख्या सर्व मूर्ढागत थइ पड्या ते जोइ तेमना माता पिता जाइ प्रमुख सर्व सगा वाहाला आवीने गुरुना पग धोइ तेनुं पाणी ढांट्युं तेथी ते सचेत थया.

तेमज वली बीजा कोइ कुमतीयें पण गुरुने मारवाने माटे माणस मोकल्या तेपण आव्या के, ते सर्वेने अकस्मात् पेटपीडा उपनी. तेमने पण तेमज पग धोइ पाणी पीवराव्युं के पेटपीडा रही गइ. वली ए गुरुयें स र्वे सालवीनी ज्ञातिना लोको दिगम्बर हता, तेने प्रतिबोधीनें श्वेतांबर श्रा वक कीधा तेनी कथा कहे ठे.

एकदा कुमारपालराजा पितांबर पहेरीने श्रीपार्श्वनाथजीनी पूजा करे ठे, एवामां कोइक मुंगीपट्टणथी राजानो मित्र व्यापारी देरासरें दर्शन करवा आव्यो. ते राजाने पटोलुं पहेरेलो देखीने कहेवा लाग्यो. हे राजन्! ए पटोलुं पवित्र नथी, पण बीजायें पहेरी उतारेलुं ठे. राजायें पूछ्युं, तें केम जाण्युं? तेवारें परदेशी बोल्यो के, अमारा गाम मुंगीपट्टणनो राजा मदन ब्रम ठे, ते जेटलां चीर उतरे तेटला सर्व एकवार पोतानी सज्जायें पाथ रे, पठी ते धणीने आपे. तदनंतर व्यापारीउ लइने परदेशमां जइ वेंचे, ते माटे ए वस्त्र उतारेलुं ठे,तेथी पूजादिक पवित्र काममां ए पहेरवुं योग्य नथी. ते वात मनमां राखीने कुमारपाल राजायें पोताना सेवक मुंगीपट्टणगामे सा लवीने तेडवा माटे मोकल्या. तेणे मुगीपट्टणे जइ सालवीने पाटण आववा कह्युं. तेवारें सालवीयें कह्युं अमारा देव श्रीनेमिनाथ तथा आदीश्वर जग वान् अने गोतमस्वामी तथा अमारा गुरु ठत्रसेन जट्टारक प्रमुख सर्वेने ते डीने समस्त ज्ञातिला एकठा मलीने अमे आवीयें. ते वात कुमारपालना सेवकोयें कबूल करी. तेवारें सर्व सालवीने तेडी पीराण पाटणे आव्या.

कुमारपालने मल्या, राजा हर्षवंत थयो, सर्वेने रहेवा माटे जगा आपी. तेमनी वस्तीथी पाटणमां नवा सात पुरा वसाव्या.

हवे राजा पवित्र पटोलुं पहेरी पूजा करे, पण सालवी लोको दिगम्बर धर्मना पालनारा छे, ते देरासरमां रात्रें श्रीनेमिनाथनी पूजा करे ते राजा नें गमे नही. तेथी राजायें हेमाचार्यने कह्युं जे तमे आ सालवीना गुरु भट्टारकनी साथें वाद करीने एने हटावो. तो ए सालवीने श्वेतांबर करीयें. तेवारे हेमाचार्य बोल्या जे एनी पासें घट सरसती छे, माटे एने अंचल गच्छाचार्य श्रीजयसिंहसूरि जीतशे. बीजाथी न जीताय. तेवारें कुमारपाल राजा जयसिंहसूरि पासें आव्या, अने विनंति करी के महाराज तमे दिगम्बरोने जीतो, तेवारे गुरुयें कह्युं, महाराथी दरबारमां आवाय नहीं. माटे इहांज तेउने तेडावो, अने वाद करती वखतें तमो पण आवीने इहां बेशो. पछी राजायें दिगम्बरना भट्टारकने तेडाव्या. तिहां आवीने पडदो बंधावी कुंभ थापना करी घट सरस्वती कुंभमां थापी अने पोतें तेना मुख आगल बेठा. हवे सरस्वती वाद करे अने गुरु उत्तर आपे, एम नित्यप्रत्यें सवा पहोर पर्यंत वाद करे, पछी राजा पोताने स्थानकें जाय. एम वाद करतां छ दिवस थया सातमे दिवसें राजा कहेवा लाग्यो, हे स्वामी ! राज संबंधी कार्यनो विनाश थाय छे,तेमाटे तरत जीती ल्यो. तो रुडुं. तेवारें गुरुयें सातमे दिवसे शिष्यने शीखवी घट भांजी नखाव्यो,एटले एकज प्रश्नमां दिगम्बराचार्यने जीतीने पोतानो शिष्य कर्यो. सालवी सर्व श्वेतांबरी श्रावक कीधा, श्रीनेमिनाथ प्रमुखनी प्रतिमाने कणदोरो करावी श्वेतांबर प्रभु कर्या. ते श्रीनेमिनाथनी प्रतिमा पीराण पाटणमां त्रिसेरी पोलमध्ये छे, अने आदीश्वर भगवाननी मूर्त्ति श्रीराजनगरे इलमपुरमां छे. तथा पद्मावती देवीनी पण इलमपुरमां थापना थइ; पण ते हमणा जमालपुरमां छे, अने ते दिगम्बरी शाखाना यतीहमणा पण हर्षना संघाडाना कहेवाय छे. ते सर्व अचलगच्छमां जाणवा.

एवा अतिशयवान् श्रीजयसिंहसूरि थया. ते तिहांथी विहार करी फरी पण कालांतरे पीराण पाटणें आवी चोमासुं रह्या. तिहां हेमाचार्यें कुमारपालने प्रतिबोध्यो छे. तेथी कुमारपालराजाने कह्युं के, तमारा देशमां श्री जिनधर्मने विषे बे मार्ग ते श्या होय? जेमाटे केटलाएक साधु तो चोथ

नुं पंजोसण अने चौदशनी पाखी माने, अने केटलाएक साधु पंचमीनी संवत्सरी अने पूनेम तथा आमावास्यानी पाखी माने माटे जे चोथ चौदश नमाने तेने पाटणमांथी काढाडवा जोइयें. तेवारें राजायें पण तेमज सर्व उपासरे कहेवरावी मोकल्युं. तेवारें जे जे गछवाळा पांचमने पूनेम मानता हता, ते सर्व गछोना साधुउ चाली नीकल्या, पण जेणे चोथ चौदश मानी लीधी, ते पाटणमां रह्या, अने विधिपक्ष गछने उपासरें राजाना माणस कहेवा आव्या, तेवारें जयसिंहसूरि कोइक श्रावकने उपदेश देता हता, तेथी आचार्यें कह्युं के राजाने कहो, जे आ गाथानो अर्थ पूरो करीने जइयें के अधूरो मूकीने चाल्या जइयें. तेवारें राजायें कहेवराव्युं के, सुखेंथी अर्थ पूरो करी जाजो; पछी जयसिंहसूरि ते गाथानो अर्थ प्रतिदिवस नवो नवो करी कहे. एवामां हेमाचार्यें फरी कुमारपालने कहेवराव्युं के,कोइ गछना यती पांचमना माननारा रह्या छे,के नथी रह्या? तेवारे राजायें कह्युं बीजा तो सर्व जता रह्या,पण एक विधिपक्षगछना आचार्य यतीउसहित गाथानो अर्थ पूरो करवा सारु रह्या छे. श्रीहेमाचार्यें कह्युं ए आचार्यने त्रणकोटी ग्रंथ मुखपाठें छे, माटे ए गाथानो अर्थ बारवर्ष सुधी पण ते पूरो करशे नही. एवीरीतें इहां आचार्य चल्या नही, तेथी अचलगछ नाम थाप्युं.

एकदा श्रीजयसिंहसूरि विहार करतां माहवपुरें गया, तिहां धनकुमरने प्रतिबोधीने दीक्षा दीधी. ते धन साधु घणा शास्त्र जणीने सर्वसूत्रना पारंगामी थया,श्रीजयसिंह सूरि (११७९) मां जन्म्या. (११९३) मां दीक्षा लीधी. (१२३६) मां आचार्य पद मल्युं. (१२६८) मां निर्वाण पाम्या. सर्वमली ७९ वर्षायु जोगवी धर्मघोषसूरिने पाटे थापी स्वर्गे गया.

उगण पच्चाशमां पट्टधर श्रीधर्मघोष सूरि थया तेमनी कथा कहे छेः—माहवपुर नगरें श्रीचंद्रव्यवहारीउ रहे छे. तेनी राजलदे नामा जार्या तेनो पुत्र धनकुमर छे,ते संवत् (१२०८) मां जन्म्यो, अने तेणें (१२१६) मां दीक्षा लीधी, जेणे सेंजरीदेशना राजा जे दारुनो तथा आहेडानो व्यसनी हतो, तेने प्रतिबोधीने श्रीपार्श्वनाथनी प्रतिमाने पूजतो कीधो. ए आचार्यने संवत् (१२३४) मां सयंजरी नगरीमां आचार्यपद मल्युं.

ए आचार्यें कुमतियोना उन्माद तोड्या. एकशो अढार प्रश्नोत्तररूप एक ग्रंथ सिद्धांत रीतीयें रच्यो. तेमज शतपदी ग्रंथनी रचना करी, तथा बीजा

पण अनेक ग्रंथो तेमणें रचेला छे. जे माहेला घणु करी चारित्रानुवाद उपर घणा ग्रंथ छे. घणा लोकोने शुद्धोपदेश देइ धर्म पमाडचुं. गछवृद्धि करी. ए आचार्य (१२६८) मां निर्वाण पाम्या. सर्वायु ५९ वर्ष जोगवी स्वर्गे गया.

पच्चाशमा पट्टधर श्रीमहेंद्रसिंहसूरि थया, तेमनी कथा कहे छेः– सर एह वे नामे नगरमां देवप्रसाद नामें श्रेष्ठी रहे छे. तेनी खीरदेवी नामें जार्या छे. तेमना पुत्र महेंद्र संवत् (१२२८) मां जन्म्या. (१२३७) मां दीक्षा लीधी, (१२६३) मां आचार्यपद मल्युं, अने (१२६९) मां गछनायक पद मल्युं, ए गुरुनी वारे कोइ गामना श्रावकना मनमां जूदा जूदा चोरासी संदेह हता. तेनो निर्णय करवा गुरुने प्रश्न पूछवा आव्या ते वखत गुरु वखाण वाचवा बेठेला हता. तिहां जे श्रावकना मनमां संदेह हतो तेहिज वात वंचाती हती. तेथी ते वखाण सांजलतांज श्रावकना सर्व संदेह मटी गया. एवा अतिशयवाला गुरु हता. ते संवत् (१३०९) ना वर्षमां तथर वाडे निर्वाण पाम्या. सर्व मली (८२) वर्षनुं आयु जोगवी स्वर्गे पहोता.

एकावन्नमा पट्टधर श्रीसिंहप्रजसूरि थया. तेनी कथा कहे छेः– वीजापुर नगरीयें अरिसिंहश्रेष्ठी तेनी प्रीतिमतीजार्या तेमना पुत्र हता. ते संवत् (१२८३) मां जन्म्या. (१२९१) मां दीक्षा लीधी. जेणें चेलो छतांज गुरु साथें वाद करवा आवनाराउने बुद्धियें करी हराव्या. संवत् (१३०९) मां अचार्य पद अने गछनायकपद मल्युं. संवत् (१३१३) मां निर्वाण पाम्या. सर्व त्रीश वर्षायु जोगवी स्वर्गे गया.

बावन्नमां पट्टधर श्रीअजितसिंहसूरि थया, ते मोफगामे जिनदेवशेठनी जिनदेवी जार्याना पुत्र हता. ते संवत् (१२८३) मां जन्म्या. (१२९१) मां दीक्षा लीधी. संवत् (१३१४) मां श्रीअणहिलपुर पाटणे आचार्य पद मल्युं. जेणें सुवर्णनगरीनो स्वामी समरसिंहराजाने प्रतिबोधीने देशमांहे थती जीवहिंसाने बंध करावी. तिहांना सर्व लोक कुमार पालनो वारो संजारवा लाग्या. ए गुरुयें पन्नर आचार्यपदनी स्थापनानो महोत्सव एक लग्ने करावी आनंद नीपजाव्यो. संवत् (१३१६) मां जालोरगामे गछनायक पद मल्युं. संवत् (१३३९) मां निर्वाण पाम्या. सर्व छपन्नवर्षायु जोगवी स्वर्गे गया.

त्रेपन्नमा पट्टधर श्रीदेवेंद्रसिंहसूरि थया. ते पालणपुर नगरे श्रीमालिज्ञाते सांतूशेठनी संतोषश्री जार्याना पुत्र हता. संवत् १२९९ मां जन्म्या.

१३०६ मां थिराद्रगामे दीक्षा लीधी. १३२३ मां तिमिरपुरें आचार्यपद मल्युं. १३३ए मां गच्छनायकपद मल्युं. जेमना व्याख्याननी अद्भुत वाणी सांजलवा माटे अन्यगच्छांतरना उपाध्याय तथा पंमितोनी सजाउ व्याख्यानावसरे नित्यप्रत्यें जराती हती. ए आचार्य १३७१ मां अणहिलपुर पाटणे निर्वाण पाम्या. सर्व मली बहुंतेर वर्षायु जोगवी. स्वर्गे गया.

चोपन्नमा पट्टधर श्रीधर्मप्रजसूरि थया. ते जिन्नमाल नगरे लींबाशेठनी विजलदे नामा स्त्रीना पुत्र हता. ते संवत् १३३१ मां जन्म्या. १३४१ मां जालोर मध्ये दीक्षा लीधी. १३५ए मां आचार्य पद मल्युं. १३७१ मां अणहिल्लपुर पाटणे गच्छनायक पद मल्युं. एमनी वारें श्रीजुवनतुंग सूरि शाखाचार्य थया. ते जुनागढ गामे गया तिहां राउल श्रीखेंगारनी समक्ष तक्षनागने प्रत्यक्ष आणीने शोल गारुडीउना वाद जीत्या, अने जावज्जीवसूधी सर्पनें पकडवा तथा खेलाववानो धंधो न करवो एवा नियम गारुडीयोने लेवराव्या. वली पातसाहनी मंजूरीयातथी सवा लाख जाल गेडावी, पांचशे जाली बंध करावी, जाली जांजी नखावी, एवी महोटी शक्तिना धणी हता, तथा चोरासी ज्ञाति वाणीयानी अने चोरासी गच्छना यती मली सर्वे श्रीसंघनें देखतां श्रीआदिनाथजीनी प्रतिमा बोलावी चमत्कार देखाड्यो, अने श्रीआदिनाथजीनी मूर्त्तियें साक्षी पूरी. जे अचलगच्छनी समाचारी सर्व सिद्धांतने मलती तथा श्रीजिनवचनानुसारें सत्य छे. ते सांजली अन्य गच्छना यतीयो लज्जित थया. वली श्रीधर्मप्रजसूरिनुं अपर नाम श्री प्रज्ञातिलकसूरि हतो एमनी एवी लब्धि हती जे शोलमे पहोरे एक गामे एक टंक जात पाणी लेता हता,अने दिवस तथा रात्रिये निद्रा तो करताज नही. एवा अप्रमादी हता. ए वातनी राजानी सजामां प्रसिद्ध पणे वखाण थइ. तेथी जगतमां महोटी कीर्त्ति विस्तार पामी. ए आचार्य संवत् १३ए३ मां आसोटी ग्रामे निर्वाण पाम्या. सर्व त्रेशठवर्षायु जोगवी स्वर्गे गया.

पंचावन्नमा पट्टधर श्रीसिंहतिलक सूरि थया. जेमना दर्शन थकी सर्व प्रकारनां डुःख दूर थइ जाय एवा हता. ते मरुदेशे अश्वपुर नगरें आशाधर शेठनी चांपलदे जार्यानी कूखे संवत् १३४५मां जन्म्या. १३५२मां दीक्षा लीधी. १३७१मां आनंदपुरे आचार्यपद मल्युं. १३ए३मां गच्छनायकप

द श्रीपाटणमां मल्युं. संवत् १३९५ मां श्रीस्तंजतीर्थे निर्वाण पाम्या. सर्व मली पच्चास वर्षायु जोगवी स्वर्गे पहोता.

छपन्नमां पट्टधर श्रीमहेंद्रप्रजसूरि थया. ते वडगामने विषे आशा नामें शेठनी जीवणादे जार्याने कूखे संवत् १३६३ मां जन्म्या. १३७५ मां श्री वीजापुरें दीक्षा लीधी: १३९३मां अणहिल्लपुर पाटणें आचार्यपद पाम्या. १३९८ मां खंजातबंदरे गच्छनायक पद पाम्या. एकदा मरुस्थलें नाणी ग्रामें श्रावकोयें चोमासें राख्या, तिहां ज्यासीमे दिवसें विघ्न थयो, जाणीने धर्मनी वाहर करावी, एटले आश्विनशुदि आठमनी तिथीयें मध्यरात्रीने अवसरे गुरुमहाराज कायोत्सर्गमां छता तेमने कालदारुण सर्प्प मश्यो तेवारे मंत्र, तंत्र अने बीजी पण अनेक जंगलनी औषधीउं करवानो जम त्यागीने एकांते दृढमन राखी एकज श्रीपार्श्वनाथ जगवानकुं ध्यान कर्युं. तेमांज निश्चल रह्या. ते जेवारे दश प्रहर ध्यानमां गया तेवारें लहेर वाली, पण ध्यानने बलें ते सर्प्पे प्राण तज्यो. समग्र विषव्याप टाल्यो, आकाशें जयजयारव प्रवर्त्त्यो,समस्त लोक आनंद पाम्या,वली एमनी वारे शाखाचार्य श्रीअजयसिंहसूरि थया. तेना उपदेशथी पाटणनो रहेवासी मीठडिया गोत्रनो शा० खेतो नोडी तेणें संवत्१४३२मे वर्षे श्री पार्श्वनाथजीनी प्रतिमा जरावी. जे श्रीगोडीपार्श्वनाथजी हाल पण जयवंता वर्त्ते छे, एनो विशेष अधिकार एज पुस्तकमां श्रीगोडीपार्श्वनाथजीनुं चोढालियुं छे, तेमांथी जोइ लेवो. एवा श्रीमहेंद्रप्रजसूरि थया. यतः ॥ सव्वे वहंतु गव्वं, कुणंतु कुत्तं पढंतु पढमंजे ॥ पण तुह ममिंदसूरि, ससिजुवणंमि ण कोवि मुणी ॥१॥ ए आचार्य १४४४मा वर्षे निर्वाण पाम्या. सर्व एक्यासी वर्षायु जोगवीने स्वर्गे गया ॥

सत्तावन्नमा पट्टधर श्रीमेरुतुंगसूरि थया. ते आ कलिकालमां अद्भुत सौजाग्यवाला, विद्याना निधान, क्षांत्यादिक गुणेकरी प्रधान, मिथ्यात्वकंद कुदाल, परब्रह्मविशाल एवा अने प्राजाविक थया. ए नाणीग्रामे वोरा वइरसिंहनी स्त्री नाहूणदे नामें हती तेनी कूखें १४०३ ना वर्षमां जन्म्या. १४१८ मे वर्षे दीक्षा लीधी, १४२६ नी सालमां आचार्यपद पाम्या,अने १४४६ नी सालमां गच्छनायक पद पाम्या. एमणें श्री लोलाडग्रामें सर्पने उपसर्गे श्रीजीरिकापल्ली पार्श्वनाथनी स्तवना करीने सर्व विघ्न निवर्त्ताव्युं.

वली गुजराति पादसाह महंमद लोलाडा गाम उपरें महोटी फोज ल इ चडी आव्यो, तेने श्रीपार्श्वनाथना महिमाथकी पाछुं फेरव्युं. इत्यादि एमनुं माहात्म्य वढियार देशमां प्रसिद्ध छे. तेनी कथा कहे छे.

एकदा श्रीमेरुतुंग सूरि विहार करता संखेश्वर पासें लोलाडा गाममां चोमासुं रह्या हता. तिहां एक वखत लोलाडा कसबाना रहेवासी सर्व द साडे विवाह उपर गया हता. एवामां गुजराती पादसाह गामने खाली थयेलो जाणीने चढी आव्यों. तेवारे गामना लोके नासवा मांड्युं. श्राव कोयें आवीने श्रीमेरुतुंगसूरिने कह्युं के, हे स्वामी! तमारी पोथी पानानो नार अमने आपो. ते अमें उपाडीशुं, अने तमे पण अमारी साथें चालो. केम के, असुरलोकोनुं लस्कर आव्युं छे ते गाम नांजी नाखशे, अने पोथी पाना सर्व नस्म करी नाखशे, माटे आपणें इहांथी जता रहीयें. तेवारें गुरुयें कह्युं के चोमासुं उतर्या विना अमाराथी विहार थाय नही, ते सां नली श्रावको बोल्या जे आ शून्यगाममां तमाराथी केम रहेवाशे. तेवारें गुरुयें श्रावको पासेथी सवामण चोखा मगावी तेने मंत्रीने श्रावकोने आप्या, अने कह्युं के, तमे मंत्रें करी मंत्रित करेला आ चोखानी धारावडी गामने देइने पछी जेटला शत्रुना असवार होय तेटला फोजनी सामा छोडजो; पण पाछुं फरी जोशो मां. श्रावकोयें तेम कर्युं तिहां पछी जेटला अक्षत हता, तेटला असवार थइ पड्या, जेटला छोड्या तेटला सर्व बंधुकीया थया. पादसाह सैन्य देखी हेबत खाइ पाछो फरी चाल्यो गयो. गाम अनंग रही गयो, जे वारें कसबाती सर्व विवाह उपरथी पाछा आव्या तेवारे सर्व आवी श्रीमे रुतुंगसूरिने पगें पड्या. सर्व जनोयें मलीने त्रांबाना पत्र उपर लेख करी आप्यो. के ज्यांसुधी श्रीविधिपक्षगछनो यती आवे त्यांसुधी बीजा गछनो यती इहां रहे नही. ते आज दिवस सुधी एमज चाल्युं आवे छे.

हवे श्रीमेरुतुंगसूरियें वडनगरमां नागरवाणीयाना त्रणशो घर मिथ्यात्वी हता, तेमने श्रावक कीधा. तेनी कथा कहे छेः—एकदा प्रस्तावे श्रीमेरुतुंगसू रि विहार करता वीसलनगर, वडनगर आव्या. तिहां गामनी बाहिर तला व उपर आवी उतारो कर्यो. शिष्य आहार वहोरवा माटे गाममां गया; पण वडनगरमां तो नागर वाणीया सर्व मिथ्यात्वी वसे छे. तेणे साधुउने आहार आप्यो नही, अने निर्भ्रछना करी बाहेर काहाढी मूक्या. तेमणें

गुरुपासे आवी कह्युं के, स्वामी ! आ गाममां कोइ श्रावक नथी, माटे आ हार मलतो नथी. तेने गुरुयें कह्युं, रूडुं थयुं. आपणने तो तपवृद्धि थइ. एज मह्योटो लाभ थयो, एम जाणजो, थोडोसो वखत गया पढी माणसो मां मह्योटो पोकार थयो. हाहाकार वर्त्यो. तेवारें गुरुयें पोताना शिष्यो प्रत्यें कह्युं के, तमे जइने पूढी आवो. जे आ आटलो बधो कोलाहल शा नो थाय ढे. शिष्यो पण गुरुनुं वचन तहत्ति करी पाढा जइ खबर काहा डीने गुरुपासे आवी कहेवा लाग्या के, महाराज ! आ नगरनो शेठ को टिध्वज ढे, तेनो एकज पुत्र हतो ते सर्प्पना डंकथी मरण पाम्यो ढे. ते ने अग्निदाह देवा माटे घणा लोको पोकार करता जाय ढे. तेमने गुरुयें कह्युं तेमने पूढो के, कोइरीतें महारी पासे ते मृतकने तेडी आवो तो आ पणे कोइ उपाय करीयें. तेवारे शिष्योयें जइने तेना सगा संबंधीने कह्युं. जे एकवार आ मृतकने अमारा गुरुनी दृष्टी आगल लइ आवो पढी त मारे जेम करवुं होय तेम सुखें करजो. एवुं सांभली तेपण तरत आचा र्य पासें लइ आव्या तेमने गुरुयें कह्युं के ए जीवतो थाय तो अमने शुं आपशो ? नागरवाणीया बोल्या एने भारोभार सोनुं तथा तेटलुंज रूपुं तमोने तोली आपीशुं. गुरुयें कह्युं के, अमारे शोनानो तथा रूपानो ख प नथी. पण तमे जैनधर्म पालवानुं कबूल करो, अने अमारा श्रावक था उ तो एने जीवतो करीयें. ते सांभली सर्व त्रणशो घरना नागरोये मली आचार्यने लेख करी आप्या; पढी गुरुयें “ ॐ नमो देवदेवाय ” ए स्तोत्र श्रीजीरिकापल्लीपार्श्वनाथ स्तुति रूप बनाव्युं, तेना महात्म्यथी तिहां नव कुल नाग आवी उभा रह्या. तेमांथी जेणें ढोकराने डंक दीधो हतो तेने राख्यो. बीजा सर्वेनें शीख दीधी. पढी तेज डंक उपर ते सर्प्पने वलगाडी ने ढोकरानुं विष उतार्युं. तेथी ते जीवतो थयो. आलश मोडीने बेठो. ते जोइ सर्वे नागरोयें गुरुने पगे लागीने गलामां पहेरेली कंठीयो तोडी ना खी. सर्वे जैनधर्म अंगीकार करी श्रावक थया, अने महोटे महोत्सवें क री वाजते गाजते गुरुने गाममां तेडी आव्या. तिहां देरासर कराव्युं. उपा सरो कराव्यो ढे, अने त्यां यतीने राख्या ढे. ते आज पर्यंत वडनगरमां नागरवाणीयाना घर श्रावकना ढे. जे स्थानकें ढोकरानुं विष वमन कराव्युं ढे ते स्थानकें यद्यापि सुधी तृण पण उगता नथी.

पत्ति काढीने चोली. तेवारें व्याख्यान सांजलनारा संघें पूढ्युं. महाराज ए तमें शुं कह्युं ? तेने गुरुयें कह्युं श्रीसिद्धाचलने विषे श्रीकृषजदेवना प्रासादे चंड्वो बलतो हतो, ते उलवी नाख्यो. ते सांजली श्रावकोयें कागल लखी पालीताणाथी खबर मगावी तो सत्य वात थइ.

श्रीमेरुतुंगसूरि जेवारें रात्रें ध्यान करवा बेसता तेवारें चक्रेश्वरी, पद्मावती, अने महाकाली ए त्रण देवी साक्षात् एमनी पासें नित्य आवती हती. एकदा कोइएक श्रावक गुरुना ध्यानवेलायें रात्रीये गुरुपासे कोइ कार्यार्थे आव्यो. ते देवीयोने देखी मनमां संदेह आणी पाछो वल्यो. तेने गुरुयें साद करी बोलावी स्थिर कीधो. तेवारें कलियुग जाणीने गुरुयें ते दिवसथी देवीउनुं आवागमन बंध राख्युं. एवा महाप्रजाविक पुरुष श्रीमेरुतुंगसूरि थया.

कालिदास माघ इत्यादिकना बनावेला रघुवंश, माघ, किरात आदिक पंच काव्यनी पेठे एमणें जैनी पंचकाव्यना महामहोटा पांच ग्रंथ बनाव्या छे. एक नाजिवंशसंजव काव्य, बीजो यडुवंश संजवकाव्य, त्रीजो नेमिदूत काव्य, इत्यादिकाव्य, तथा नवीन व्याकरणनी पण रचना कीधी. तेमज सूरिमंत्रकल्पादिक बहु ग्रंथो नवीन कर्या छे. एवा महा उत्तम पुरुष हता. तथा एमनी वारें जयशेखर सूरि शाखाचार्य थया छे. तेमणें पण अनेक देशमां विहार करी घणा जव्यजीवोने प्रतिबोध्या छे. तथा बार हजार श्लोक प्रमाण उपदेशचिंतामणि ग्रंथ तेमज बीजो प्रबोधचिंतामणी, संबोधसित्तरी, आत्मावबोधकुलक इत्यादिक महोटा महोटा बार ग्रंथ नवीन कर्या छे. तेमज शेकडागमे लघु ग्रंथो कर्या छे.

वली तेमना शिष्य शाखाचार्य श्रीमाणिक्यसुंदरसूरि थया छे. तेमणें गुणवर्मचरित्र, सत्तरजेदीपूजानी कथा, पृथ्वीचंदचरित्र चतुःपर्वीकथा आदिक घणा ग्रंथोनी रचना करी छे. एवा पुरुषो एमना परिवाररूप हता. श्रीमेरुतुंगसूरि विक्रम संवत् १४७१ मां निर्वाण पाम्या. सर्व मली अडशठ वर्षायु जोगवी स्वर्गे गया.

अठावन्नमा पट्टधर श्रीजयकीर्त्तिसूरि थया. ते तिमिरपुर नगरमां जूपाल शेठनी जमरादे जार्यानी कूखेंथी संवत् १४३३ मां जन्म्या. १४४४ मां दीक्षा लीधी १४६७ मां श्रीखंबायत बंदरें सूरिपद मल्युं, अने १४७३ मां पाटण सेहेरे गछनायक पद पाम्या. ए आचार्यें, जोपण श्रीमेरुतुंग सू

रियें देवीनो आगम निषेध कर्यो हतो,तोपण ते देवीने आणवा माटे श्री सिद्धाचल तीर्थ उपर घणा वर्ष लगण आयंबिल तप कर्युं. देवी मध्यरात्रीयें प्रगट थइ कहेवा लागी कें, हुं तमारापासें आवीश, पण तमे मुजने उलखशो नही. एम कही देवी अदृश्य थइ. बीजे दिवसे प्रजातें श्रीखंजातथी संघ आव्यो, तेमां देवीयें श्राविकानुं रूप धारण करी सुवर्णमुद्रामिश्रित पवा वहोरावीने गुरुना मनोरथ पूर्ण कर्या. ए आचार्य संवत् १५०० मां निर्वाण पाम्या. सर्व मली ६७ वर्षायु जोगवी स्वर्गे गया.

उंगणशाठमा पट्टधर श्रीजयकेसरिसूरि थया. ते पांचालदेशे श्रीथाम नगरीमां देवसिंह नामा शेठनी लाखणदे स्त्रीनी कूखथी संवत् १४६१ मां जन्म्या. प्रथम मावित्रनुं आपेलुं नाम धनराज हतुं. संवत् १४७५ मां दीक्षा लीधी. १४९४ मां आचार्यपद पाम्या. एमणें नदीनी उपर वृक्षो चलावी गुजरातना बादसाहने चमत्कार देखाडी मुल्लाने हराव्यो. पादशाहें नवो उपासरो करावी दीधो. ते हजी पण अमदावादना जहवेरी वाडामां कायम थयो छे. संवत् १५०१ मां श्रीचांपानेरे गछनायक पद पाम्या. बादशाहने छमास पर्यंत ताव आवतो हतो. ते कोइ वैद्यथी सारो न थयो, पण एमणें मंत्रबलें करी छहेडाथी तापने बाहर काढ्यो. बादशाहें कह्युं. ए ताप क्यां छे. ते अमोने देखाडो तेवारें गुरुयें पोताना रजोहरणेंकरी शिलानी उपर खंखेर्युं. एटले शिला बली जस्म थइ गइ. तथा पोतानी छवणी शेष पासेथी पाछी लीधी. जिनशासननी उन्नति थइ. श्री संघनी इछा पूर्ण थइ. एवा महोटा महिमावंत ए आचार्य थया. संवत् १५४२ मां निर्वाण पाम्या. सर्वायु एक्यासी वर्षनुं जोगवीने स्वर्गे गया.

शाठमा पट्टधर श्रीसिद्धांतसागरसूरि थया. ते पाटण नगरें सोनी जावडनी पूरलदे जार्या तेना सोनपाल नामें पुत्र संवत् १५०६ नी सालमां जन्म्या. संवत् १५१२ मां दीक्षा लीधी. १५४१मां आचार्यपद पाम्या. १५४२मा वर्षमां गछनायक पदवी पाम्या. ए आचार्यनी वारे श्रीचक्रेश्वरी देवी तंडुल वोहोरावीने गया छे. ते दिवसथी पाछा आवता नथी. संवत् १५६० मां निर्वाण पाम्या. सर्वायु चोपन वर्षनुं जोगवी स्वर्गे गया.

एकशठमां पट्टधर श्रीजावसागरसूरि थया. ते मारवाड देशमां नरसाणी ग्रामे वोरा सांगानी सिंगारदे जार्याना पुत्र जावड नामें संवत् १५१०

मे वर्षे जन्म्या. १५२० मां श्रीखंजायतबंदरें जयकेसरिसूरिनें हाथें दीक्षा लीधी. १५६० मां श्रीमांमल ग्रामें आचार्यपद अने गछेशपद पण मल्युं. १५७३ मां निर्वाण पाम्या. सर्व मली तहोंतेर वर्षायु जोगवी स्वर्गे गया.

बाशठमा पट्टधर श्रीगुणनिधान सूरि थया. ते पाटण नगरे श्रीमालिज्ञाते मुगुटमणी नगराज नामें शेठनी लीलादे जार्याना.सोनपाल नामें पुत्र हता, ते संवत् १५४७ मां जन्म्या. १५५२ मां श्रीसिद्धांतसागरसूरिना हाथें दीक्षा लीधी. १५७४ मां श्रीस्तंजतीर्थें सूरिपद अने गछेशपद मल्युं. संवत् १६०२ मां निर्वाण थया. सर्व मली चोपन वर्षायु जोगवी स्वर्गेगया.

त्रेशठमा पट्टधर श्रीधर्ममूर्त्तिसूरि थया. ते त्रंबावती नगरीने विषे शा. हंसराज वणिकनी हांसलदे नामें स्त्री तेमना धर्मदास नामें पुत्र संवत् १५७५ मां जन्म्या, पन्नरसो नवाणुमां दीक्षा लीधी. संवत् १६०२ मां श्रीअमदावाद नगरें आचार्यपद पाम्या. अने महोत्सवसहित एज वर्षे मां गछनायक पद मल्युं. ए आचार्य सर्वथा नवविध परिग्रहना त्यागी थइ क्रिया उद्धार करता हवा. संवत् १६७० मां श्रीपाटणनगरे निर्वाण पाम्या. सर्व मली पच्चाशी वर्षायु जोगवी स्वर्गे गया.

चोशठमा पट्टधर श्रीकल्याणसागरसूरि थया. ते लोलाडा ग्रामे कोठारी नानिगनी जार्या नामिलदेना कोडण एवे नामें पुत्र संवत् १६३३ मां जन्म्या. तेमणें संवत् १६४२ मां धवलपुरे दीक्षा लीधी. १६४९ मां श्रीअमदावादें आचार्यपद पाम्या. १६७० मां श्रीपाटणे गछेशपद पाम्या, एमणें कछदेशना अधिपतिने प्रतिबोध आपी आहेडो मूकाव्यो. इत्यादिक एमनां अनेक साहसिक कृत्य वाचनारने आनंद उपजावे तेवां छे; परंतु ते महोटी पट्टावलीमां लखेलां छे. हालमां आ पुस्तकमां प्रथमावृत्ति होवाथी लघुपट्टावलीज दाखल करेली छे. तेथी एमां विशेष वात कोइ पण आचार्यनी दाखल करी नथी. सेकडा ग्रंथो विधिपक्ष गछमां नवीन बनावेला छे. तेमाना हालमां केटलाएक महारी पासे मोजुद छे. तथा अन्यत्र घणे स्थानके हशे; पण तेना कर्त्तानां नाम आ पट्टावलीमां कांइ दाखल करेलां नथी. ते सर्व बृहत्पट्टावली वाचीने जोइ लेवां.

वली ए गुरुना उपदेशथी श्रीनवानगरमां संवत् १६७६ मां लालण गोत्रें उसवाल ज्ञातें शा. वर्द्धमान पदमसीयें नवलाख महमुदी खरचीने

एक मह्होटो जिनप्रासाद कराव्यो. तेमां ए१ मह्होटां बिंब पधराव्यां, तथा ४४१ बीजां बिंब नराव्यां. तथा शा. वर्द्धमान पदमसीयें श्रीशत्रुंजयती र्थे उपर एक मह्होटो जिनालय कराव्यो, अने बीजा पण सात देरासरनी श्रीशत्रुंजये प्रतिष्ठा करावी.

वली संवत् १६७५ ना वैशाख शुदि अष्टमी रवीवारें नवानगरवासी उसवालज्ञाति, नागडागोत्री,अचलगच्छीय शा. राजसीयें ५५१ जिनबिंब न रावी एक मह्होटुं बावनजिनालुं चैत्य कराव्युं ले. तेमनी प्रतिष्ठावखते पण एज आचार्य हता. एक देरासर उपर नव लाख मह्मुद्दी खरची तथा एक वीश प्रासाद बीजा मह्होटा कराव्या. तेनी उपर चोरासी लाख कोरी खरची.

तथा ए आचार्य श्रीआगरामां चोमासुं रह्या हता. तिहां एमना उपदे शथी कोमपाल अने सोनपालें घणुं धन सातक्षेत्रे वावखुं. श्रीसमेत शिख रजीनो संघ काह्हाढयो, तिहां वीशे तीर्थंकरना पगला समरावी प्रतिष्ठा क रावी. संवत् १६७१ मां यात्रा करी संवत् १७१८ मां श्रीभुजनगरें निर्वा ण पाम्या. ए आचार्य मह्होटा अतिशयवान् थया ले. सर्व मली पच्याशी वर्षायु नोगवी स्वर्गे गया. एमना रचेला जूदा जूदा विचित्र प्रकारना य मकबंधादिक चारशें स्तोत्र तो मह्हारी पासे ले.

पांशठमां पट्टधर श्रीअमरसागर सूरि थया. ते मेवाडदेशें उदयपुर न गरें श्रीमालीज्ञाते चोधरी योधानी सोनानामें नार्याना अमरचंद्रनामें पुत्र संवत् १६ए४ मां जन्म्या. १७०५ मां दीक्षा लीधी. १७१५ मां श्रीखंबायत नगरें आचार्यपद पाम्या. ए गुरुनी पासें संवत् १७१६ ना वर्षे मह्हावदि चोथें श्रीदीवबंदरना रह्हेवासी प्राग्वाटज्ञातीय मंत्री जीवासुत मालजीयें पोतानी स्त्रीसहित चोथुं व्रत ग्रह्हण कखुं. संवत् १७१८ना वर्षमां श्रीकच्छ देशें नुजनगरें गच्छेश पद पाम्या. एमणें अनेक तीर्थोनी यात्राउ करी. चोरासी गच्छने हस्त मंमाव्या. अनेक देशोमां अनेक जिनचैत्योनी प्रति ष्ठायें बिराज्या हता. संवत् १७६२ मां श्रीधोलके निर्वाण पाम्या. सर्व मली अडशठ वर्षायु नोगवी स्वर्गे गया.

लाशठमां पट्टधर श्रीविद्यासागरसूरि थया. श्रीकच्छदेशें खीरसरा बंदरमां शा. कर्मसिंहनी नार्या कमलादे तेमना विद्याधर नामें पुत्र संवत् १७४७ना आशोवदि त्रीजें जन्म थयो. १७५६ ना फाल्गुन शुदि बीजे दीक्षा लीधी.

१७६२ना श्रावणशुक्ल दशमीयें श्रीधोलके आचार्यपदें थपाणा. तेनो महोत्सव वोरा अजयचंदें कर्यो. तथा श्रीसूरतबंदरना रेवासी शा.कपूरचंदसिंघायें चोराशी गछना यतीयोनें पछेडीउं उढाडी. अने श्रीसंघमां एकेक थाली शेर साकरनी प्रत्येक घर दीठ लाहणी करी. तथा श्रीअमदावादना रेवासी पारेख वर्द्धमान तथा बेन रुक्मीयें पण थाली तथा शाकरनी लाहाणी करी. तथा पारेख भगवानदासें महमुदीनी लाहणी करी. तेमज बीजा पण घणा श्रावकें खांम प्रमुखनी लाहणीउं करी. एमने श्रीमातरगाममां संवत्१७६२मां कार्त्तिक वदि चोथने बुधवारें भट्टारक पद मल्युं. तेनो शा.सभाचंदें उत्सव कर्यो. श्रावकोने पहेरामणी आपी, गुरुयें विशेषावश्यक सूत्रनी वांचना करी. ए महोटा अतिशयवान् थया. १७९७ना कार्त्तिक शुदि पांचमे निर्वाण पद पाम्या. सर्व मली पच्चाश वर्षायु भोगवी स्वर्गे गया.

सडशठमा पट्टधर श्रीउदयसागर सूरि थया. ते श्रीनवानगरमां शा.कल्याणजीनी भार्या जयवंतीबाइ तेमना पुत्र उदयचंद नामें हता. संवत्१७६३ मां जन्म्या. १७७७ मां दीक्षा लीधी. १७९७ मां आचार्यपद मल्युं. एज वर्षना मागशिर शुदि तेरसना दिवसें गछेशपद मल्युं. संवत् १८२६ ना आश्विनशुक्ल बीजें निर्वाण थया. सर्व मली त्रेशठ वर्षायु भोगवी श्रीसुरत बंदरमां देवलोकें गया.

अडशठमा पट्टधर श्रीकीर्त्तिसागर सूरि थया. ते श्रीकछदेशमध्यें गाम श्री देसलपुरे उसवंश ज्ञातीय साह मालसिंहनी भार्या आसबाइ तेमना पुत्र कुंअरजी संवत्१७९६मां जन्म्या. १८०४मां श्रीउदयसागर सूरीश्वरना श्रावकपणें शिष्य थया. १८०९मां श्रीमांम्डवीबंदरमध्ये दीक्षा लीधी. १८२३मां श्रीसुरतमां आचार्यपद मल्युं. तेनो शा.खुशालचंदें तथा भूखणदासें ठ हजार रूपक खरचीने महोत्सव कीधो. १८२६मां श्रीअंजारमध्ये गछेशपद मल्युं. १८४३ ना भादरवाशुदि छठना दिवसें निर्वाण पाम्या. सर्व मली ४८ वर्षायु भोगवी श्रीसुरत बंदरमां स्वर्गे गया.

उगण्योत्तेरमा पट्टधर श्रीपुण्यसागर सूरि थया. ते गुजरातमां गामश्रीवडोदराना पोरवाड ज्ञातीय शा. रामसीनी भार्या बाइ मीठी बाइ तेमना पुत्र पानाचंदजी थया. ते संवत् १८१७ मां जन्म्या. १८२४ मां श्रीकीर्त्तिसागर सूरिना श्रावकपणें शिष्य थया. १८३३ मां श्रीभुजपुरमां दीक्षा लीधी.

१८४३ मां श्रीसूरतमध्ये आचार्यपद तथा गछेशपद मल्युं. तेनो महोत्स व घणुं द्रव्य खरचीने शा. लालचंदें कीधो. संवत् १८७० ना कार्त्तिक शुदि १३ ना दिवसें श्रीपाटण मध्ये निर्वाण पाम्या. सर्व मली त्रेपन व र्षायु पूर्ण करी स्वर्गे गया. सितेरमा पट्टधर श्रीराजेंद्रसागर सूरि थया. एम नुं जन्म श्रीसूरतमां थयेलुं. १८९२ मे वर्षे मांम्हवीमां निर्वाण पाम्या.

एकोतेरमा पट्टधर श्रीमुक्तिसागर सूरि थया. ते श्रीमालवदेशें उज्जयणी नगरीना उसवालज्ञातीय शा. खीमचंदनी नार्या उमेदबाइ तेमना पुत्र मो तीचंदजी हता. संवत् १८५७ मां जन्म्या. १८६७ ना वैशाखशुदि त्रीजें दीक्षा लीधी. १८९२ ना वैशाखशुदि बारसें श्रीपाटणमध्ये आचार्यपद तथा गछेशपद मल्युं. तेनो महोत्सव शेठ नथु गोकलजीयें घणुं द्रव्य खर चीने कीधो. ए आचार्य पृथ्वीपीठें विचरता थका संवत् १८९३ मां श्रीपा लीताणप्रमां शेठ खीमचंदमोतीचंदें अंजनशिलाका करी तिहां बिंब ७०० नी प्रतिष्ठा करावी. तिहांथी विहार करी श्रीकछदेशमां आव्या. तिहां श्रीनलिनपुर नगरे शेठ. नरसिंहनाथा लघुज्ञातीय नागडा गोत्रीय हता, तेमणें जिनचैत्य कराव्यां. तेनी प्रतिष्ठा संवत् १८९७ ना माहाशुदि पंच मीने दिने श्रीचंद्रप्रभुजी मूलनायक थापी प्रतिष्ठा करावी. शेठ नरसिंहनाथा यें समस्त दशा तथा वीसा उसवालनी ज्ञातीमां घर दीठ एक थाली,एक शेर साकर तथा एक रूपकनी लाणी करी. बे मेडा करी बावनगामनो म हाजन जमाड्यो, तथा श्रीसिद्धाचलजीनी उपर देरासर कराव्या, धर्मशा ला करावी. तथा श्रीनलीयाने देरासरे रूपानां कमाड चडाव्यां. गामश्रीसु थरीमां श्रीघृतकल्लोल पार्श्वनाथजीना देरासरे रूपानां कमाड चडाव्यां, न लीयामध्ये दानशाला करी, हवे आचार्य तिहांथी विहार करता श्रीभुज पुरें आव्या. तिहां १८९७ना फाल्गुणशुदि३ना दिवसें शा. चापसी नीमसी वीशाउशवालें घणुं धन खरचीने नरावेला चिंतामणीजी पार्श्वनाथना बिंबनी प्रतिष्ठा कीधी. तिहांथी विहार करता श्रीराजनगरें आव्या. तिहांथी खंबायत नी पासें वटांदरा गामें आव्या. तिहां गोडीजीनी प्रतिष्ठा करी. तिहांथी क छदेशें जखौबंदरे आव्या. संवत् १९०५ ना महाशुदि पंचमीना दिवसें शा. जीवराजरतनसिंहे करावेला श्रीमहावीरस्वामीना चैत्यनी प्रतिष्ठा करी. शेठें त्रण लाख कोरी खरची पुस्तकोनो नंमार कराव्यो, सन्मुख गौतमस्वामी

बेसाड्या, कछदेशमांहेला यतीयोने पछेडीयो आपी देरासरपासे एक उपा सरो कराव्यो. तथा संवत् १९१०मां गाम श्रीनलिनपुरमां शेठ नारमल तेज सीयें नवीन जिनप्रासाद कराव्यो. तथा गामश्री सांधाणमां शेठ मामण तेज सीयें नवीन जिनप्रासाद कराव्यो. इत्यादि बीजा पण घणा चैत्योनी प्रतिष्ठा थइ. संवत् १९१४मां निर्वाण पाम्या. सर्वमली ५७ वर्षायु नोवी स्वर्गे गया.

बहोतेरमा पट्टधर श्रीरत्नसागरसूरि थया. ते श्रीकछदेशमां मोथारागाम निवासी शा. लाम्हण पचाणनी नार्या बाइ फूमाबाइ कूखे संवत् १८९२मे वर्षे जन्म्या. १९०५ मां दीक्षा लीधी. १९१४ मां आचार्यपद तथा गछे श पद मल्युं. एमना वखतमां लघु उशवंशीय शेठ नरसिंहनाथा अचलग छना श्रावक हता, तेमणें अनेक धर्मकार्य करी सात खेत्रमां पुष्कल इव्य खरच्युं, तथा एज ज्ञातिना शेठ केशवजी नायकें दशलाख रूपक खरचीनें श्रीपालिताणामां अंजनशिलाका करी, ठ हजार जिनबिंब नराव्यां. सर्व देशोना श्रावको तेडाव्या. तेमज एमना वखतमां कछी दशाउसवाल वाणीया ज्ञातिमां बीजा पण अनेक पुरुषोयें मुंबइमां आवी वास कस्यो हतो. ते सर्व महोटी ऋद्धिना धणी हता. तेमणें पण उजमणा साहामीवात्सल्या तथा कछना गामोगामे जिनचैत्यादि करावी पुष्कल इव्य खरच्युं. ए आचार्यना वखतमां श्रीअचलगछमां घणा श्रावको लक्ष्मीवान् थया. जेमणें अनेक शु नकार्यो करी श्रीजिनशासन दीपाव्युं. ए आचार्य संवत् १९२८ ना श्राव णशुदि बीजे गामश्री सुथरीमां सर्व मली ठत्रीशवर्षायु नोगवी निवार्ण पाम्या.

तहोंतेरमां पट्टधर श्रीविवेकसागरसूरिजी महाराज हालमां विद्यमान विचरे ठे. एमनी कथा हवे पठी लखाशे.

एरीतें ए लघुपट्टावली हालमां ठापी ठे. कारण के, आ पुस्तक घणुं म होटुं थवा आव्युं तेना योगें करी वृहत्पट्टावली आमां दाखल थइ शकी नथी. फरी प्रसंगानुसारें उक्त सर्व आचार्योना चरित्र सविस्तर ठापीशुं.

श्रीकल्याणसागरसूरिना वखतमां कछदेशमां नुजनगरने विषे प्रथम एम ना शिष्य आव्या ठे जेमणे राजाने प्रतिबोध दीधो ठे तेवार पठी नुजना रा जायें कल्हाणसागरसूरिने अन्य देशथी माणस मोकली तेडाव्या ठे. ते संबंधि चमत्कारिक कथाउ सर्व महोटी पट्टावलीमां ठे. इति गुरुपट्टावली समाप्त ॥

॥ अथ पाक्षिकनिर्णयविचारप्रारंभः ॥

अथ श्रीसिद्धांते पाक्षिकप्रतिक्रमणं पञ्चदश्यां चतुर्दश्यां वा कर्तव्यमिति संदेहापोहाय पाक्षिकप्रतिक्रमणविचारः किंचिल्लिख्यते । तद्यथा । अत्र सिद्धांतवादी प्राह । 'एवं प्रत्यहं प्रतिविशुद्धा अपि प्राप्ते पक्षान्ते विशेषप्रतिक्रमणेन प्रतिक्रमितुमिच्छन्ति । इमाणं उत्तमपुरिसाणं वंदणं करंति ।' इति पाक्षिकचूर्णिवचनात् पाक्षिकं पक्षान्ते एव कर्तव्यम् । स च पक्षान्तः पञ्चदश्यामेव नतु चतुर्दश्याम् । अतो विशेषप्रतिक्रमणमपि पंचदश्यामेव न चतुर्दश्याम् । तथाहि यदि चतुर्दश्यां प्रतिक्रमणं स्यात् । तदा पाक्षिक प्रतिक्रमणवेलायां 'पडिक्कमे चउद्दसियं सव्व' मिति वक्तुं युक्तम् । न तु 'पडिक्कमे पक्खियं सव्व' मिति, पक्षेण निर्वृत्तं पाक्षिकमिति तद्व्युत्पत्तेः । अत्र कश्चिदाभिनिवेशिकमिथ्यात्वग्रहग्रस्तः प्रत्यवतिष्ठते 'चतुर्दशीतश्चतुर्दश्यां पक्षस्य पूर्तेः 'पक्खियं सव्व' मित्येव युक्तम्' इति अत्र ब्रूमः । सिद्धान्ते प्रतिपदमादौ कृत्वा पक्षस्य गणनात् । पंचदश्यामेव पक्षस्य परिसमाप्तेः ।

यदुक्तं 'पडिवइ बिइय तईया चउत्थि तह पंचमी य छठी य ॥ सत्तमि अठमि नवमी, दशमी इक्कारसी चेव ॥ १ ॥ बारसि तेरसि चाउ, द्दसी य निठवणियाउ पन्नरसी ॥ किण्हम्मि य जुण्हम्मि य, एयाउ तिही मुणेयव्वा ॥२॥ पन्नरस अहोरत्ता, पक्खो पक्खा य दो भवे मासो ॥ दो मासा उउसन्ना, तन्निय रियवो अयणमेगं ॥ ३ ॥

तथा जंबूद्वीपप्रज्ञप्तौ । एगमेगस्सणं भंते पक्खस्स कति पक्खा पण्णत्ता । गोयमा दो पक्खा पण्णत्ता । तंजहा । बहुलपक्खो य सुक्किलपक्खो य । एगमेगस्सणं भंते पक्खस्स कति दिवसा पण्णत्ता । गोयमा पण्णरसे दिवसा पण्णत्ता । तं जहा । पडिवा दिवसे बिय जाव पण्णरसी दिवसे । एतेसिणं भंते पण्णरसहं दिवसाणं कति नामधेया पण्णत्ता । गोयमा पण्णरसे णामधिज्जा पण्णत्ता । तंजहा । पुव्वंगसिद्धे य मणो, रमेय तत्तो य मयहरे चेव ॥ जसभद्दे जसोहरे, सव्वकामसमिद्धे य ॥ १ ॥ इंदे मुद्धाभिसित्ते य, सोमणस धणंजए य बोधव्वे ॥ अत्थसिद्धे अभीजाए, अच्चसेणे य सयंजए चेव ॥ २ ॥ अग्गिवेसे उवसमे, दिवसाणं णामधिज्जाइं ॥

एए सिणं भंते पण्णरसिणं दिवसाणं कति तिही पण्णत्ता । गोयमा पण्णरसा तिही पण्णत्ता । तं जहा । णंदे भद्दे जए तुच्छे, पुण्ण पक्खस्स पंचमी । पुणरवि । णंदे भद्दे

जए तुब्भे पुस्स परकस्स दसमी।पुणरवि णंदे नद्दे जए तुब्भे पुस्स परकस्स पन्नरसी। एव मेते तिगुणा तिहि एवं सव्वेसिंदिवसाणंएगमेगरयणं। नंते परकस्स कति राई पस्सत्ताउ। गोयमा पस्सरस राई पस्सत्ताउ। तं जहा। पडिवाराई जाव पस्सरसी राई। पयासिणं नंते पस्सरसएहं राईणं कई णामधिज्जा पस्सत्ता। गोयमा प स्सरस णामधिज्जा पस्सत्ता। तं जहा। उत्तमा य सुणरकत्ता, एलावच्चा जसोहरा चेव॥ सोमणसा चेव तहा,सिरिसंनूया य बोधव्वा॥१॥ विजया य वेजयंती,ज यंति अपराजिया य इच्छा य॥ समाहारा चेव तहा, तेया य तहेव इत्ते य॥ देवा णंदा राई,रयणीणं णामधिज्जाउ॥ २ ॥ एयासिणं नंते पस्सरसएहं राईणं कई तिही पस्सत्ता। गोयमा पस्सरस पस्सत्ता। तं जहा। नगवती नगवती जसवतीत्यादि, एवं चंद्रप्रज्ञप्तिवृत्त्यादिष्वपि ज्ञेयम्। इत्यादिग्रंथे पंचदश्या मेव पक्षपूर्णताप्रतिपादनात्तत्रैव पाक्षिकप्रतिक्रमणं युक्तम्। प्रयोगश्च—पंच दश्यामेव पाक्षिकमेव प्रतिक्रमणं संपूर्णपक्षत्वात् यत्र न संपूर्णपक्षस्तत्र न पाक्षिकप्रतिक्रमणं यथा द्वादश्याम्। नायमनुष्णो वन्हिरित्यादिवत् प्रत्य विरुद्धः। अस्मदादिप्रत्यक्षस्य तथाविधप्रत्यक्षगोचरत्वात्। नायं नास्ति सर्वज्ञ इत्यादिवदनुमानविरुद्धो नायमागमविरुद्ध इत्युक्ते कश्चिदाह। अहो! आग मविरुद्धोऽयं पक्षः। यत आगमे चतुर्दश्यां पाक्षिकशब्दस्य प्ररूपणात्। यत आ ह श्रीव्यवहारवृत्तिकारः श्रीमलयगिरिसारः। तच्च पाक्षिकं कृष्णचतुर्दशीरूपं। नैवं सम्यक्परिज्ञावाज्ञानात्। तथाहि। न तत्र पाक्षिकप्रतिक्रमणाधिकारः किंतु विद्यासाधनविचार एव। तदेव कथयांचकार 'विद्याणं परिवाडी' इत्यादि, परंच चंद्रप्रज्ञप्त्यादिसिद्धांतेन चांद्रमासे विचार्यमाणे एवमायाति। चंद्रश्चारं चरन् यावता कालेन अनिजित अरन्योत्तराषाढानक्षत्रपर्यंतं गच्छति तत्काल प्रमाणो नाक्षत्रो मासः। यदिवा चंद्रस्य नक्षत्रमंमलपरिवर्तनतो निष्पन्न इति उपचारतोऽपि नक्षत्रं तथा चंदे या इति चंडे नवश्चांद्रो युगादौ श्रावणमासे बहु लपक्षप्रतिपदमारन्य यावत् पौर्णमासीपरिसमाप्तिस्तावत्कालप्रमाणो मास श्चांद्रो मासः। एकपौर्णमासीपरावर्तनतश्चांद्रो मास इति यावत्। अथवा चंद्र चारनिष्पन्नत्वाडुपचारतो मासोऽपि चंद्रः।अथवा दीर्घत्वमार्षत्वात्। सूर्यप्रज्ञ प्तावपि चंद्रमासप्ररूपणा इत्थमेव। इयता यो वदति इतः कुतोपि मासमंमनं तन्मतमपास्तं नवति। किंच पाक्षिकक्षमणकावसरे च त्रिःकृत्वः कल्याणो दंतप्रश्नेन पाक्षिकप्रतिक्रमणं पंचदश्यामेव सूचितं। तदेवाह। दिवसो पो

सहो परको वइक्कंतो अन्नो ने कल्लाणेणं इति । एतच्चूर्णिः पोसहो अठमी सु उववासकरणं। वृत्तिश्च। दिवसो दिनं किंविधः पौषधः । पूर्वरूपः। तथा प क्षार्धमासरूपो व्यतिक्रान्तोऽतिलंघितः । अन्यश्च पक्ष इति पर्व ने नव तां कल्याणेन शुन्नेन युक्त इति गम्यते । अथ कश्चिदुन्मत्तो वदति उपवासा दि पाक्षिककृत्यं चतुर्दश्यामेवोक्तं तद्बलेन पाक्षिकप्रतिक्रमणमपि चतुर्द श्यां युज्यते तन्निराकरणाय दशाश्रुतस्कंधसूत्रे पंचदशायां व्याजहार चूर्णि कारः । परिकय पोसहिएसु समाहिपत्ताणं इति सूत्रम्। चूर्णिश्च परिकयं प रिकयमेव परिकए पोसहो चउद्दसि अठमीसु वा समाहिपत्ताणं अत्र कोपि वचो वदति यत् परिकयशब्देन चतुर्दशी ज्ञेया। न, चतुर्दश्याः पार्थक्येन ग्रह णात् यदि परिकयशब्देन चतुर्दशी गृहीता समन्नविष्यत्। तदा पार्थक्येन च तुर्दशीग्रहणं नाकरिष्यत्, व्यर्थत्वात् । तस्मात् परिकयशब्देन पंचदश्येव त त्र पाक्षिके पौषधं उपवासश्चतुर्दश्यामष्टम्यां चेति। तथा व्यवहारदशमो देशके च। परिकयपोसहिएसु, कारायति तवसंजमं करोति विय ॥ निरकाय रिए य तहा, निज्जुंजंति परसयं वावि ॥ १ ॥ पाक्षिकेऽर्धमासिके पर्वणि पौषधिकेषु चाष्टम्यादिकेषु पर्वसु तपः कारयति, करोति वेति । तथाचावश्य कचूर्णौ । सव्वेसु कालपव्वसु, पसत्थो जिणमए तवोजोगो ॥ अठमि पन्नर सीसु, नियमेण हविज्ज पोसहिउ ॥ १ ॥ पुनस्तत्रैव सेणं चाउद्दसि अठ मि पुन्निमासिणीसु पडिपुन्नं पोसहं सम्मं अणुपालइ । तथा च पर्युषणा कल्पे। नवमल्लइ नव कच्छइ कासी कोसलग्ग अट्ठारसवि गणराइणो अ मावसाए परान्नोयं पोसहोववासो पठवयंसु इति । तथा दशाश्रुतसूत्रे सेणं चाउद्दसिठमुद्दिठपुन्निमासिणीसु पडिपुसं पोसहं अणुपालइत्ता नवइ । तथा च दशाश्रुतचूर्णौ चाउद्दसी अठमी उद्दिठा अमावासा पडिपुसं अहोराइ इति । तथा नगवत्यंगे तत्थणं तुंगियाए नयरीए बहवे समणोवासगा परि वसंति । इठा दित्ता जाव चउद्दसिठमुद्दिठपुसिमासिणीसु पडिपुसं पोसहं सम्मं पालेमाणा इति । तथा सूत्रकृतांगे चाउद्दसिठमीपुसिमासिणीसु प डिपुन्नं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणा विहरिसामो थूलगं पाणाइवायं पच्च रकाइस्सामो इति । एवमागमेष्वन्यत्रापि पंचदश्यामेव तपःप्रनृति पाक्षिक कृत्यस्योक्तत्वान्नागमविरोधः कोऽपि । तथालोचनापि पंचदश्यां न निषिद्धा। यदुक्तम् व्यवहारचूर्णौ। पडिक्कुठेलगदिवसे, वज्जिज्जा अठमिं च नवमिं च।

चउद्दिं बारसिं व डुन्हं पि परकाणं एतेन एवं वदंति । अमावास्यां नालोचना दीयते । तदपास्तम् । तथा कश्चिद्वक्ति । अमावास्यायामालोचना निषिद्धा। कथमगृहीतालोचनानां तावत्पाक्षिकं घटते । इति चेत्तर्हि चतुर्दश्याम प्यालोचना निषिद्धा। यडुक्तम् श्रीआवश्यके चाउद्दसिं पन्नरसिं च वज्जिज्जा अट्ठमिं च नवमिं च ॥ छट्ठिं चउत्थि च बारसिं च डुण्हंपि परकाणं। परं चेत्त दालोचनान्तरमपेक्ष्यं ज्ञविष्यति । यडुक्तं श्रीपर्युषणाकल्पे। पक्खिया आलो यणा पक्खे पक्खे ग्राह्या । तथा न पंचदश्यामादाय तत्रैव पाक्षिकप्रतिक्रम णं विधेयम् । नात्र कोपि दोषः। तथा सागरचंदो कमलामिलावि सामि सागासे धम्मं सोऊणं गहिय पाणुव्वयाणि सावगाणि संवुत्ताणि तउ सागर चंदो अट्ठमिचउद्दसीसु सुन्नघरे सुममाणेसु वा इगराइयं पडिमं गाइ । इ त्याद्यनेकालापके नानासिद्धान्तोक्तेरष्टम्यां चतुर्दश्यां चोपवासादि कृत्यमस्ति युक्तम् । यदि तत्पाक्षिककृत्यमिति कृत्वा चडुर्दश्यां पाक्षिकप्रतिक्रमणं स्था प्यते । तदाष्टम्यामपि पाक्षिकप्रतिक्रमणं कर्तव्यं स्यात् । प्रयोगश्चायम् । अष्टम्यामपि पाक्षिकप्रतिक्रमणं कर्तव्यं तत्रापि पाक्षिकक्रियायाः क्रिय माणत्वात् यत्र यत्र पाक्षिकक्रिया क्रियते तत्र तत्र पाक्षिकप्रतिक्रमणं कर्तव्यं यथा चतुर्दश्यां तथाष्टम्यां,यथाष्टम्यां न ज्ञवति तथा चतुर्दश्यामपि मा ज्ञवतु । किंच चतुर्दश्यां पाक्षिकप्रतिक्रमणमंगीकुर्वता चातुर्मासिकं प्रतिक्रमणमपि सूत्रोक्तां पूर्णिमां विहाय चतुर्दश्यामेव प्रतिक्रमणीयम् । यत श्चातुर्मासिकेऽष्टौ पक्षा ज्ञवंति। ते च त्वन्मते चतुर्दश्यामेव पूर्णतामगच्छन्। पाक्षिकस्य तत्रैव कार्यत्वात्। अथ चतुर्मासंसंबंधी पक्षे आरज्यते न तत्पाक्षिकं तत्संबंधी अन्य एवेति चेत्तर्हि कोऽयमर्धजरतीन्यायः। तथा च सति महान् सूत्रविरोधः। तत्रेदृगर्थस्यादर्शनात्। ननूक्तमेव तच्च कृष्णचतुर्दशीरूपमिति चे त्तर्हि सकलमपि पूर्वोक्तं दूषणकदंबकं त्वत्पश्चाल्लग्नं धावति। किंच चतुर्दश्यां पा क्षिकप्रतिक्रमणं कुर्वतां पूर्णमास्यां चातुर्मासिकमाचरतां चतुर्मासंसंबन्धि तपो बाध्यते स्थानानवाप्तेः। पाक्षिकचातुर्मासिकयोर्मध्ये दिनाज्ञावात्। ननु किमर्थं तद्दिनमीक्ष्यते । उच्यते। पाक्षिके चतुर्थस्य करणत्वात्। चातु र्मासिके षष्ठसंज्ञवात् । मध्यंदिनमंतरेण तच्च न घटते । तस्माद्युक्त्यापि पंचदश्यामेव युज्यते। तथा नैष्वपिकेषु प्रकरणेष्वपि पंचदश्यामेव पा क्षिकमुक्तम् । तथाहि यडुक्तम् गणांगग्रंथे एवं च कारणेणं अज्जकालिगेहिं

चउद्दीए पज्जोसवणं पवत्तियं समक्षसंघेण अणुमंतियं। तच्चासेसायरिएहिं। अन्नहा। आगमुत्ताणि पुन्निमाए। कथावल्ल्यादि ग्रंथेष्वपि इक्षमेव ज्ञेयम्। तथा कासु कासु कालिकाचार्यकथास्वपि एतान्यक्षराणीक्षमेव संतीति गम्यते। भवंतु प्रकरणानि युक्तयो वा, परं पंचदश्यां चतुर्दश्यां वागमोक्तप्रतिक्रमण स्थापकं यत्तदेव प्रमाणम्। यच्च सिद्धान्तमनुवदति नान्यत्। मिथ्यादिग्रं थवत्। एवमुक्तप्रकरणे पंचदश्यामेव पाक्षिकप्रतिक्रमणं न चतुर्दश्यां पाक्षिकप्रतिक्रमणमपूर्णपक्षत्वात्। यत्र यत्र असंपूर्णपक्षत्वं तत्र तत्र न पाक्षिकप्रतिक्रमणं यथा दशम्याम्। तथा एवमागमोक्तप्रकारेण पंचदश्यामेव पाक्षिकप्रतिक्रमणमिति सिद्धम्।

॥ अथ पूर्वोक्त पाक्षिकनिर्णयनो बालावबोध लखिये बैयें. ॥

केवलिभाषित सिद्धांतमां पाखी चौदशनी करवी कही बे, अथवा पंचदशीनी करवी कही बे, ए संशय दूर थवा माटे तेनो स्वरूप विचार लखियें बैयें.

तेमां प्रथम सिद्धांतवादीनुं एवुं कहेवुं बे केः–'एवं प्रत्यहं' इत्यादि पाक्षिक चूर्णिमांहेला वचनना प्रमाण उपरथी पाखीनुं प्रतिक्रमण पक्षांतने विषे करवुं. ते पक्षांत पंचदशीने विषेज पूर्णथाय बे,पण चतुर्दशीने विषे थतो नथी.

तथा जो चौदशीने दिवसें पाखीनुं प्रतिक्रमण कर्तव्य होय, तो ते प्रतिक्रमणना पाठमां 'पडिक्कमे चउद्दसियं सव्वं' एवो पाठ कहेवो योग्य बे. पण 'पडिक्कमे पक्खियं सव्वं' एवो पाठ केहवो, ए तदन विरुद्ध बे. कारण पक्षें करी जे नीपन्युं तेने पाक्षिक कहियें. एवो पक्खिय शब्दनो अर्थ बे. माटे चौदशने दिवसें पक्ष पूरो न बतां 'पक्खियं' एवो पाठ कहीने चौदशने दिवसें प्रतिक्रमण करनारने माथे 'अन्यतेऽक्रून्यत्करोति' एटले बोले बे एक ने करे बे अन्य एवो दोष आवी पडशे.

एवो सिद्धांत बतां मिथ्यात्वरूप पिशाच जेने वलग्युं बे, एवो कोइक कुग्रही हठवादी पुरुष बोल्यो के, चौदशथी मांमीने पक्ष गणियें तो ते बीजी चौदशने दिवसेंज पूरो थाय बे,माटे 'पडिक्कमे पक्खियं'ए पाठ युक्त बे, अने तमे जे कहो बो के, चौदशने विषे पक्ष पूरो थतो नथी,ते व्याजबी नथी.

ए उपर सिद्धांतवादी कहे बे के, तमे जे कहो बो के चौदशथी चौदश सूधी पक्ष पूरो थाय, परंतु ते वात सिद्धान्तविरुद्ध बे, कारण सिद्धांतमां केवल प्रतिपदाथी मांमीने पूर्णिमा अथवा अमावास्या सूधीज पक्ष गण

वानो कह्यो छे, ते सिद्धांतनां वचन लखियें छैयें. " पडिवइ बिइय " इत्यादि. एनो अर्थः–प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी अने पंचदशी (पूनेम अथवा अमावास्या) ए पन्नर तिथियो शुक्लपक्षनी तथा कृष्णपक्षनी छे. ए पन्नर तिथिएं करी एक पक्ष थाय छे, तेना शुक्लपक्ष अने कृष्णपक्ष एवा बे भेद छे. ए बन्ने पक्ष मलीने एक मास थाय छे, तेनां चैत्र, वैशाख इत्यादि नाम छे. ते बे मासें करी एक ऋतु थाय छे. तेवी त्रण ऋतूएं करी एक अयन थाय छे. तेना दक्षिणायन अने उत्तरायण एवा बे भेद छे. अने ते बे अयन मलीने एक वर्ष थाय छे.

तथा जंबूद्वीप प्रज्ञप्तिमां कह्युं छे के, ' एवमेगस्सणं ' इत्यादि. तेनो अर्थः–श्रीगौतमस्वामी पूछे छे. हे भगवन् ! एक महिनाना केटला पक्ष थाय छे? (गुरु कहे छे.) हे गौतम ! बे थाय छे. तेनां नाम कहे छे. एक कृष्णपक्ष अने बीजो शुक्लपक्ष. (शिष्य०) हे भगवन् ! एक पक्षनां केटला दिवस थाय छे ? भगवान् कहे छे हे गौतम ! पन्नर दिवस थाय छे. ते पडवाथी मांमीने पूनेम अथवा अमावास्या सूधी जाणवा. (शिष्य०) ए पन्नर दिवसोनां नाम कहो ? (गुरु०) हे गौतम ! एक पूर्वांगसिद्धि, बीजो मनोरम, त्रीजो मदहर, चोथो यशोभद्र, पांचमो यशोधर, छठो सर्वकामसिद्ध, सातमो इंद्र, आठमो शुद्धाभिषिक्त, नवमो सुमनस, दशमो धनंजय, अग्यारमो अर्थसिद्ध, बारमो अभिजात, तेरमो सर्वसेन, चौदमो स्वयंजय अने पन्नरमो अग्निवेश्य ए पन्नर दिवसोना क्रमें करी पन्नर नाम जाणवां. (शिष्य०) हे भगवन् ! ए पन्नर दिवसो मलीने केटली तिथियो थाय छे. (गुरु०) हे गौतम ! पन्नर तिथियो थाय छे; ते एवीः–पहेली नंदा, बीजी भद्रा, त्रीजी जया, चोथी तुच्छा, अने पांचमी पूर्णा, वली छठी नंदा, सातमी भद्रा, आठमी जया, नवमी तुच्छा अने दशमी पूर्णा, तथा अग्यारमी नंदा, बारमी भद्रा, तेरमी जया, चौदमी तुच्छा अने पन्नरमी पूर्णा ए पन्नर दिवसनी पन्नर तिथियो जाणवी. एमज पन्नर दिवसोनी एक एक रात्र पण जाणवी, (शिष्य०) हे भगवन् ! एक पक्षनी केटली रात्रियो थाय छे? (गुरु०) हे गौतम ! पन्नर रात्रियो थाय छे, ते पडवाथी मांमीने पंचदशी सूधी जाणवी. (शिष्य०) हे भगवन् ! ए पन्नर रात्रिनां नाम क

हो. (गुरु०) हे गौतम ! पेहली उत्तमा, बीजी सुनक्षत्रा, त्रीजी एलाव ञ्चा, चोथी यशोधरा, पांचमी सुमनसा, ठठी श्रीसंभूता, सातमी विजया, आठमी वैजयंती, नवमी जयंती, दशमी अपराजिता, अग्यारमी इछा, बा रमी समाहारा, तेरमी तेया, चौदमी इत्ता अने पन्नरमी देवानंदा ए पन्न र नाम पन्नर रात्रिनां क्रमेकरी जाणवां. (शिष्य०) हे भगवन् ! ए पन्नर रात्रीनी तिथियो केटली थाय छे ? (गुरु०) हे गौतम ! पन्नर तिथियो थाय छे. ते आ प्रमाणेः—उगवती, भगवती, जसवती इत्यादि जाणवी.

एमज चंद्रप्रज्ञप्ति आदिक ग्रंथोमां पण कह्युं छे. तिहांथी पण जाणी लेवुं. एम अनेक ग्रंथोमां पंचदशीने विषेज पक्ष पूरो थाय छे,एवीरीतें क ह्युं छे, माटे पाखीनुं प्रतिक्रमण पंचदशीने दिवसेंज करवुं युक्त छे. ते विषे एवुं अनुमान पण थाय छे. ते एवी रीतेंः—पंचदशीने दिवसेज पाखीनुं प्रतिक्रमण करवुं, कारण तेज दिवसें पक्ष पूरो थाय छे. जे दहाडे पक्ष पूरो थतो नथी, ते दहाडे पाक्षिक प्रतिक्रमण पण नथी, एवी व्याप्ति छे. जेम द्वादशीनें दिवसें पक्ष पूरो नही होवाथी पाक्षिक प्रतिक्रमण पण ते दिवसें नथी. ए अमारुं केहवुं, जेम कोइ कहे के अग्नी ठंडो छे, टाहाडो छे, तेनी पेठें प्रत्यक्ष प्रमाणथी विरुद्ध छे, एम पण कोइयें समजवुं नही. का रण, ए वात अमारा जेवा सर्व मनुष्योने प्रत्यक्ष रीते जणाय छे. तेमज ए अमारुं केहवुं,'नास्तिसर्वज्ञः' एटले सर्वज्ञ नथी' ए प्रमाणें कोइ कहेशे के अनु मानविरुद्ध छे, एम पण कोइएं समजवुं नही. कारण ए विषे अनुमान अमे उपरज कह्युं छे. तेमज ए कहेवुं आगम विरुद्ध पण नथी.

एवुं सांभलीने पूर्ववादी पूछे छे के, अहो ! तमे जे कहो छो के, पाक्षि क प्रतिक्रमण पंचदशीने विषे करवुं जोइयें, ए तमारुं केहवुं आगमविरु द्ध छे; कारण, आगममां चतुर्दशीने विषेज पाक्षिक करवुं एम प्ररूप्युं छे. जेम व्यवहारवृत्तिकार श्रीमलयगिरिसार कहे छेः—तच्चेति। एनो अर्थः—ते पा क्षिक चतुर्दशीरूपज जाणवुं. हवे एनुं उत्तर सिद्धांतवादी कहे छे के हे भव्य. एम नथी, तमे ते वृत्तिनो अर्थ सारी रीतें जाण्यो नथी. व्यवहारवृत्तिकारें जे ठेकाणें कृष्णचतुर्दशीरूप पाक्षिक कह्युं छे. ते ठेकाणें कांइ पाक्षिकप्रतिक्रमणनो अ धिकार नथी. तिहां तो विद्यासाधनसंबंधि विचार करवानो अधिकार छे. तेज कह्युं छे. " विद्याणं परिवाडी " इत्यादि ।

वळी चंद्रप्रज्ञप्ति आदि सिद्धांतना प्रमाण उपरथी चांद्रमासनो विचार करिये तो पण एम सिद्ध थाय छे. के चंद्र जे छे, ते राशिमंडळमांथी संचार करतो थको जेटले काळें करी अभिजित्‌थी मांडीने उत्तराषाढा नक्षत्र सूधी जाय छे. तेटला काळनें नाक्षत्रमास कहे छे. तेमज तेमास चंद्रनुं नक्षत्रमंडळमां जे भमवुं तेथी थाय छे माटे तेनेज चांद्रमास कहियें. चंद्रथी उत्पन्न थयो ते चांद्र समजवो. तेथी एम सिद्ध थयुं के,'युगादिने विषे श्रावण मासना कृष्णपक्षनी प्रतिपदाथी मांडीने पूनमनी समाप्ति थाय ते सूधीनो जे काळ, तेने चांद्रमास कहियें. एक पूनमनी समाप्ति थया पछी बीजी पूनमनी समाप्ति थाय, ते सूधी एक चांद्रमास थयो एम जाणवुं. अथवा चंद्रना चारथी उत्पन्न थयो माटे ते मासने पण चंद्रज कहियें. वळी चंद्र शब्दनुं ' चांद्र ' एवुं जे रूप थयुं छे, ते आर्ष छे, एम जाणवुं. सूर्यप्रज्ञप्तिने विषे पण एवीरीतेंज चांद्र शब्दनो अर्थ कर्यो छे. ए प्रमाण उपरथी हमणाजे केटलाक लोको कहे छे के,' पंचदशीने विषे मासनी पूर्णता जेम तेम आवे छे, ' तेमनुं केहवुं असत्य छेयुं एम सिद्ध थयुं.

वळी जेवारें पाक्षिक प्रतिक्रमण करियें, तेवारें त्रण वखत कल्याणप्रश्न (कुशळ प्रश्न) करवानी रीत छे, ते उपरथी पण पंचदशीने विषेज प्रतिक्रमण करवुं एम सिद्ध थाय छे. तेज कहियें छैयें. ' दिवसो पोसहो पक्खो वइक्कंतो अन्नो भे कल्लाणेणं ' इति । एनी चूर्णिः– ' पोसहो ' इत्यादि. एनी वृत्तिः–दिवसो एटले दिवस जे छे, ते केवो छे ? तो के पौषधः धर्मनी पुष्टि करनार छे. तेमज पाक्षिक एटले अर्द्धमास रूप वइक्कंतो एटले अतिक्रम्यो. ए पाक्षिक पर्व भे एटले आपना कल्लाणेणं एटले कल्याणें करी युक्त छे.

ए उपर कहेलुं सांभळीने कोइ उन्मत्त बोले छे, के उपवासादि जे पाक्षिक कृत्य ते चतुर्दशीने विषेज करवुं कह्युं छे. तेथीज पाक्षिक प्रतिक्रमण पण चतुर्दशीने विषे करवुं एज योग्य देखाय छे.

ए शंका निराकरण करवा माटे दशाश्रुत स्कंध सूत्रना पंचदशाध्ययनमां चूर्णिकारें कह्युं छे. ते लखियें छैयें. ' पक्खिय ' पोसहिएसु समाहिपत्ताणं ' इति सूत्रम् । एनी चूर्णिः–पक्खियं पक्खियमेवेत्यादि । ए उपर कोइ कहे छे, जे आ सूत्रमां ' पक्खिय ' शब्दें करी चउदश लेवी. ते उपर सिद्धांती कहे छे. के एम तमारे समजवुं नही,कारण एज वाक्यमां चतुर्दशीनुं पृथक्

ग्रहण कर्युं छे. जो ग्रंथकारें ' पक्खिय ' शब्दें करी चतुर्दशीज ग्रहण करी होत, तो वली व्यर्थ चतुर्दशीनुं जूडुं ग्रहण शामाटे कर्युं छे ? तस्मात् ' प क्खिय ' शब्दें पंचदशीज लेवी. तेमां पाक्षिकने विषे पौषध करवुं, अने च तुर्दशीने विषे तथा अष्टमीने विषे उपवास करवो.

तथा व्यवहार सूत्रना दशमा उद्देशामां पण कह्युं छे के, ' पक्खिय ' इ त्यादि । अर्द्धमासरूपं पाक्षिक पर्वने विषे पौषध करवुं तथा अष्टम्यादिक पर्वने विषे तप पोतें करवुं. तथा बीजा पासे करावबुं,

तथा आवश्यक चूर्णिमां पण कह्युं छे. सव्वेसु इत्यादि । सर्व काल पर्वने विषे तप करवुं ए जिनप्रणीत आम्नायने विषे प्रशस्त छे. माटे आठमने विषे तथा पंचदशीने विषे नियमें करी पोसहयुक्त होवुं जोइयें. वली ते मांज कह्युं छे के; सेणमिति । चौदशने विषे, आठमने विषे, तथा पूनम ने विषे, पूर्ण पोसह पालवुं.

तेमज पर्युषणाकल्पमां कह्युं छे के:— ' नवमछ्ठइ ' इत्यादि । तथा दशा श्रुत स्कंदमां पण ' सेणमित्यादि ' कह्युं छे. तेमज दशाश्रुत चूर्णिमां ' चा उद्दसी ' इत्यादि पाठ छे. तथा जगवती अंगमां पण ' तिछणं तुंगियाए ' इत्यादि पाठ छे. ए तथा बीजा पण घणा आगममां चतुर्दशीथी पंचदशी नुं (अमावास्या किंवा पूनम) जूडुं ग्रहण करीने पाक्षिक जे छे,ते पंचद शीने विषेज करवुं एम सिद्ध कर्युं छे. तथा तप वगेरे पाक्षिक कृत्य पण पंच दशीने विषे कह्युं छे,माटे कोइयें पण आगमविरोध छे एवी शंका करवी नही.

तथा आलोचना पण पंचदशीने विषे निषेधी नथी. व्यवहार चूर्णिमां कह्युं छे, जे ' पडिकुठे लग , इत्यादि । आ वचनें करी, कोइ कहे छे के, ' अमावास्याने विषे पोसह करवुं नही. ' तेनुं खंमन कर्युं.

वली कोइ पूछे छे के, अमावास्याने विषे आलोचना तो निषिद्ध छे, एम छतां आलोचना आप्या वगर पाक्षिक प्रतिक्रमण करवुं घटतुं नथी. ए उपर सिद्धांती कहे छे. एम केहशो तो चतुर्दशीने विषे पण आलोचना नो निषेधज छे. तो पछी तमारा मतें पण ते दहाडे आलोचना कर्या व गर प्रतिक्रमण केवी रीतें थशे ? चतुर्दशीने विषे आलोचनानो निषेध श्री आवश्यकमां कह्यो छे. चाउद्दसिमिति । एनो अर्थ चतुर्दशी, पंचदशी, अ ष्टमी, नवमी, षष्ठी, चतुर्थी, द्वादशी, एटली तिथियो बेहु पक्षनी वर्जवी.

उपर कह्या प्रमाणें बन्ने पक्षने विषे आलोचनानिषेधरूप दोष समान ज आव्यो. ते उपर हवे सिद्धांतवादी कहे छे. जो त्यां बीजी आलोचनानी जरूर होय तो पूर्वोक्त दोष आवे, पण तेम कांइ नथी. कारण पर्युषणाकल्पमां कह्युं छे के, पाक्षिक आलोचना जे छे, ते पक्ष पक्षने विषे ग्रहण करवी. तेम पंचदशीने विषेज बीजी आलोचना लइने पंचदशीने विषेज प्रतिक्रमण करवुं नही. तेमां कांइ दोष नथी.

तथा सागरचंद अने कमलामिला पण श्रीमहावीर पासेथी धर्मश्रवण करीने प्राणातिपातव्रत ग्रहण करता थका श्रावक थया, पछी सागरचंद्र आठमने विषे तथा चौदशने विषे शून्य घरमां रहीने एक रात्रनो काउस्सग्ग करतो हतो, इत्यादि अनेक आलापकें करी घणा सिद्धांतोमां आठमने विषे तथा चौदशने विषे उपवासादि कृत्य कह्युं छे. जो एम केहशो के, उपवासादि जे कृत्य तेपण पाक्षिक कृत्यज छे, ते चौदशने विषे करवुं कह्युं छे, तस्मात् पाक्षिक प्रतिक्रमण पण चौदशने विषेज करवुं. तो ते उपर अमे पूछियें छिये के, आठमने विषे पण उपवासादि पाक्षिक कृत्य करवुं कह्युं छे, माटे आठमने विषे पण पाखी करवी जोइयें. कारण ते विषे एवुं अनुमान थाय छेः—आठमने विषे पण पाक्षिक प्रतिक्रमण कर्तव्य छे. जेमाटे उपवासादि पाक्षिक क्रियातो ते दिवसें पण करियें छिये. माटे जे जे ठेकाणें पाक्षिक क्रिया कराय छे, ते ते ठेकाणे पाक्षिक प्रतिक्रमण करवुं, एवी व्याप्ति छे. जेम चौदशने विषे, तेमज आठमने विषे पण कहेलुं छे. अने आठमने विषे तो थतुं नथी. तो चौदशने विषे पण थाय नही.

वली, चौदशने दिवसें पाक्षिक प्रतिक्रमण करवुं, एम केहेनारने चातुर्मासिक प्रतिक्रमण पण सूत्रोक्तपूर्णिमा मूकीने चौदशने विषेज करवुं जोइयें. कारण आठ पखवाडियां पूरां थयाथी चातुर्मास पूरो थाय छे. एम सिद्धांतमां कह्युं छे. माटे चौदशने विषें पक्ष पूरो थयो एम माननारने आठ पखवाडियारूप चातुर्मास पण चौदशने दिवसेज पूरो थाय एम अवश्य कबूल करवुं जोइयें. एम थाय तो सूत्रनो, सिद्धांतनो महान् विरोध आवे छे.

ते उपर पूर्वपक्षकार कहे छे के, पक्षने विषे जे करवुं ते पाक्षिक कृत्य जाणवुं. तेथी ए चातुर्माससंबंधी जे कृत्य ते जूदुंज छे.

ए उपर सिद्धांतवादी कहे छे केः—हे वादिन् ! आ केवो तारो अर्थज

रती न्याय छे? जेम कोइ कहे के,फलाणो पुरुष अर्धो वृद्ध थयो,अने अर्धो तरुणावस्थामांज रह्यो. ए केहेवुं जेम सांजलतांज असत्य जासे छे,तेम तारुं केहेवुं एकदेशी छे. ते सिद्धांतविरुद्ध छे. तेथी सूत्रमां तथा अर्थमां महोटो विरोध आवे छे. कारण तेमां एवो अर्धागीकृत अर्थ क्यांय पण आवतो नथी.

हवें फरी पूर्वपक्षकार कहे छे. के, तमे मने अर्धजरतीन्यायनो दोष आपो छो, पण तमारा सिद्धांतमां एवीज रीतें कह्युं छे. जे काली चौदशने विषे पण प्रतिक्रमण करवुं.

ते उपर सिद्धांतवादी कहे छेः—एम तूं कहीश तो पूर्वोक्त सर्व दूषण तारी पछवाडे लागशे. तथा चतुर्दशीने विषे पाक्षिक प्रतिक्रमण करीने पूनमने विषे चातुर्मासिक प्रतिक्रमण करतां चातुर्मासिक तपनो पण जंग थाय छे. कारण तेने स्थान मलतुं नथी. पाक्षिक ने चातुर्मासिकनी वचमां 'मध्यदिवसनो अजाव छे. तमे जो केहेशो के, मध्यदिवसनी शी जरूर छे, तो ते उपर कहियें छैये के,पाक्षिकने विषे चतुर्थ एटले एक उपवास कर्तव्य छे? अने चातुर्मासिकने विषे छठ कर्तव्य छे. ते मध्यदिवस वगर घटतुं नथी. ते माटे पंचदशीने विषेज पाक्षिक करवुं ए युक्तिथी पण सिद्ध थाय छे.

तथा नैष्वपिकप्रकरणने विषे पण पंचदशीनी पाखी करवी, एमज कह्युं छे. गण प्रकरणमां पण कह्युं छे, ते एवीरीतेंः—

एवं च कारणेणं इत्यादि । एनो अर्थः—एवीरीतें कालिकाचार्यें कारणपरत्वें चतुर्थीने विषे पंजुसणनी प्रवृत्ति करी. ते समस्त संघें कबूल करी. तथा तेमज अर्वाचीन आचार्यों पण आचरवा लाग्या. पण आगमोक्त पाखी तो पूनमनीज छे, तथा सांवत्सरी पण पांचमनीज छे.

कथावलीप्रमुख ग्रंथमां पण एवीरीतेंज कह्युं छे, एम समजवुं. तेमज केटलीक कालिकाचार्यनी कथाउमां पण उपर कह्या प्रमाणेंज कह्युं छे, ते उपरथी एवुंज समजाय छे.

हवे पूर्ववादी कहे छे. प्रकरणग्रंथनां प्रमाणो तथा घणी युक्तियो जे तमें देखाडी ते रहो, पण सिद्धांतमां पाखी जे छे ते चौदशनी कही छे, के पूनमनी कही छे? सिद्धांतमांथी जे प्रमाण नीकले तेज सत्य छे. बीजुं मिथ्यात्वी लोकोना ग्रंथनी पेरें सत्य नथी.

ते उपर सिद्धांती कहे छे. अमें उपर जे आगमोक्त प्रमाणों देखाड्यां

छे, ते उपरथी स्पष्ट सिद्ध थाय छे, के पाखीनुं प्रतिक्रमण जे छे ते पंचदशीने विषेज करवुं, पण चौदशने दहाडें करवुं नही. कारण पंचदशीने विषेज संपूर्ण पक्ष होय छे. पण चतुर्दशीने विषें ते पूर्ण थतो नथी; अने संपूर्ण पक्ष नही होय त्यारें पाक्षिक प्रतिक्रमण करवुं घटतुं नथी. जेम दशमने दहाडे संपूर्ण पक्ष नही होवाथी पाक्षिक प्रतिक्रमण करवानुं कोइना मनमां आवतुं नथी. तेमज चतुर्दशीने विषें पण जाणवुं. एम आगमोक्त प्रमाणें करी पंचदशीने विषेंज पाक्षिक प्रतिक्रमण करवुं. एम सिद्ध थाय छे. इति पाक्षिकनिर्णयनो बालावबोध संपूर्ण ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ पाखी तथा संवत्सरी विषे सवैयो ॥

॥ सब पर्वको नूप पंजूसण पंचमी, वीर हुकुम है पूनिम पाखी ॥ उत्तरसंग क्रिया शुद्ध श्रावक, सिद्ध सुपर्व सिद्धांते नाखी ॥ ऐसी रीत सुरीत निधान कहे जस, स्वामी सुधर्म परंपर आखी ॥ जूउ विधिपक्ष सदा जग जानत, जाको सीमंधर स्वामी है साखी ॥ १ ॥

॥ अथ चोमासाथी संवत्सरी केटला दिवसें करवी तेनो विचार लखियें छियें ॥

१ नादरवाशुदि पंचमीयें संवत्सरीना दिवसें जे वार आवे, तेहिज वारें जो कार्त्तिक शुदि पूनमनो चोमासो आवे तो संवत्सरीना पडिक्कमणाथी सिंतेर दिवसें चोमासो थाय, अने जो एकवार उंछो थाय तो संवत्सरीथी उंगण्योतेर दिवसें चोमासो आवे, अने जो बे वार उंछा थाय तो अडशठ दिवसें चोमासो आवे.

२ आषाढ चोमासाना पडिक्कमणा थकी पच्चाश दिवसें संवत्सरीनुं पडिक्कमणुं थाय. जो एक वार उंछो आवे तो उंगणपच्चाश दिवसें संवत्सरीनुं पडिक्कमणुं थाय. परंतु आषाढ चोमासाना पडिक्कमणाथी अडतालीश दिवसें अथवा एकावन्न दिवसें संवत्सरी न थाय.

३ संवत्सरीना दिवसें, साधु, साध्वी, वृद्ध, बाल, ग्लान, इत्यादि सर्वेने चउविहारो उपवास करवो एम निशीथसूत्रें कह्युं छे, अने जो चार आहार मांहेलो एके आहार लीये तो तेने चउमासी प्रायश्चित्त आवे.

४ चोथ घणीज थोडी रही होय, अने उपरांत पांचम आवे तो ते पांचमनो दिवस संवत्सरीमां लेवो.

५ चोथ पच्चीश घडी उपरांत होय अने बीजे दिवसे संपूर्ण पांचम आ वती होय तो ते पूरी पांचम संवत्सरीमां लेवी, पण चोथ न लेवी.

६ चोथनी उपरांत पांचम होय, अने ते पांचम पण जो अमावास्या नी पाखीथी पांचमे दिवसें थाय तो ते पांचम सवत्सरीमां लेवी.

७ पांचम पूर्ण होय अने अमावास्यानी पाखीथी छठे दिवसें आवती होय तो ते पांचमनी संवत्सरी न करवी. छठे दिवसें वेधें संवत्सरी थाय, पण छठे वारे न थाय. अमावास्यानी पाखीथी पांचम चोथे दिवसें तथा पांचमे दिवसें करवी पण त्रीजे दिवसें अथवा छठे दिवसें संवत्सरी न करवी.

८ पाखीथी आठम सातमे दिवसे अथवा आठमे दिवसें करवी. पण नवमे दिवसें अथवा छठे दिवसें न करवी.

ए आठमथी पांखी छठे दिवसे अथवा सातमे दिवसें करवी, पण पां चमे दिवसे अथवा आठमे दिवसें पांखी न करवी.

१० दीवाली तथा होलीना दिवसें पाखी करवी, परंतु कोइक वेधाली तिथी आवे तो जूदी पण थाय.

११ टीपणामां तिथीउ घटे छे तेने लीधे वर्षमां पांच अथवा छ दि वस घटे, अने अधिक मास होय तो कदापि सात दिवस पण घटे, परंतु एक वर्षमां चार दिवस तथा आठ दिवस घटे नही.

१२ जे वर्षमां अधिकमासें बे श्रावण अथवा बे नादरवा आवे तो तें वर्षें चोमासाथी वीशे दिवसें संवत्सरी थाय. ते जेमके अधिकमास ले खामां नथी, अने चोमासो तो नगवानें श्रीचंदपन्नत्तिसूत्रमां चार महीना नोज कह्यो छे. माटे चार मासथी चोमासो वधे नही. ते कारणे पहेला श्रावण शुदि पूनमना दिवसें चोमासो करीयें, अने बीजा श्रावण शुदि पं चमीयें पंजोसण पर्व करीयें; अने बे नादरवा होय तो श्रावण शुदि पून मनो चोमासो करी पहेला नादरवा शुदि पंचमीनुं श्रीपर्व करीयें, ए वा त कल्पनिर्युक्तिनी शोलमी गाथायें कही छे. तथा निशीथचूर्णिमां छे, अने ते वर्षें संवत्सरीथी कार्त्तिकचोमासानी पाखी शो दिवसें आवे. एम समजवुं.

॥ अथ श्रावण अथवा नादरवो ए बे मांहेलो कोइपण अधिकमास आवे थके चोमासना पडिक्कमणथी वीस दिवसें पंजोसण करवुं ते आश्चर्यी शंका करनाराउने निःशंक थवा माटे सिद्धांतोना आलावा लखी देखाडीये छैयें.

१ श्रीकल्पसूत्रमांहे वासाणं सवीसए मासे ए आलावो चंद्संवत्सर आश्रयी कह्यो ळे, पण अनिवर्द्धित संवत्सर आश्रयी कह्यो नथी.

२ वळी श्रीकल्पसूत्रमांहे अंतरावासे कप्पइ. ए आलावानी वृत्तिमांहे पण अधिक मासें वीसा पंजोसण करवानो अधिकार ळे. ते माह्या पुरुषें जोवुं.

३ वळी श्रीकल्पसूत्रनी निर्युक्तिमांहे इछ्छ अणज्गिगह्यिं वीसइरायं सवीसइ मासो इत्यादि गाथायें अधिकमासें वीश दिवसें पंजोसण करवा,अने चंद्संवत्सरे वीशदिवससहित एक मासें करवा कह्या ळे.ते गीतार्थें विचारवुं.

४ वळी कल्पनिर्युक्तिमांहे॥ अनिवढ्ढियंमि वीसा, इयरेसु सवीसइमासे ॥ ए गाथानो अर्थ कहे ळे. अनिवर्द्धित संवत्सरें चोमासाना पडिक्कमणथी वीश दिवसें पंजोसण करवा, अने चंद् संवत्सरे एक मास सहित वीश दिवसें एटले पच्चाश दिवसें पंजोसण करवा कह्या ळे. ए प्रगट अक्षर ळे, ते गीतार्थें विचारवा; परंतु व्यर्थ हठग्राही न थावुं.

५ वळी श्रीकल्पसूत्रमांहे वासाणं सवीसपराए मासे. ए आलावो ळे, ते चंद् संवत्सर आश्री कह्यो ळे. पण अनिवर्द्धित संवत्सर आश्री कह्यो नथी. तेनी साख तेज कल्पनी चूर्णिमांहे ळे. ते लखीयें ळैयें. श्रमण ज्ञगवन् श्रीमहावीर चंद्संवत्सर अधिकृत उपदिशति तद्यथा ॥ जेणंज्ञुगादी सो वासाणं सवीसए राइए मासे इत्यादि पाठ ळे.

६ वळी तेहिज श्रीकल्पनी चूर्णिमांहे अधिक मास आवे वीसुं पंज्ञुसण करवुं कह्युं ळे. तेनो पाठ लखीयें ळैयें. तम्हा अनिवढ्ढिय वरिसे वीसइ राइए गहिनायं करिंति तिसु चंदसंवस्सरेसु सवीसए राइए मासे गिहिनायं करिंति पज्ञोसविंतिएणइ ए आलावामां अधिक मासे वीसुं पंज्ञुसण करवुं कह्युं ळे.

७ वळी श्रीकल्पसूत्रनी वृत्तिमांहे पण वीसा पंजोसण करवानो अधिकार ळे.

८ हवे श्रीपंजोसण वीत्या पछी वळी जेटले कालें कार्त्तिकमासनुं चोमासुं पूर्ण थाय, तेटला काल लगण चोमासी साधुयें रहेवुं तेनो पाठ सिद्धांत साखे लखीयें ळैयें ॥ श्रीकल्पसूत्रनी निर्युक्ति मांहे ॥ छ्उ अणज्गिगह्यिं गहिन्नायं कत्तिउ जाव ॥ ए गाथामां एम कह्युं ळे के आषाढी चोमासाना पडिक्कमणाथी वीसा पंजोसण अने श्रावण अथवा ज्ञाद्रपद मास अधिक न होय तो पच्चाशा पंजोसण करवा, अने पछी कार्त्तिकी पूर्णि

माना चोमासा लगे वीसे पंजोसणे शो दिवस थाय, अने पचाशे पंजो सणे सीतेर दिवस पर्यंत साधुने रहेवुं थाय ॥ इति ॥

वली तेहिज कल्पनिर्युक्तिमांहे कह्युं छे. के "इयसत्तति जहन्ना, असिई नउई दसुत्तर सयंच" इहां पण सित्तेर दिवस अनें सो दिवस पछी कार्त्तिक चोमासो कह्यो छेः माह्या पुरुष हशे ते विचारशे. ए रीतें अनेक ग्रंथोमां अधिक मासें वीसा पंजोसण करवा कह्या छे.

इहां कोइ एम कहेशे के, अमें ए अक्षर मानता नथी. तो तेहने पूछीयें. जे तमे जे वर्षे बे नादरवा महीना आवे छे, तेवारें पहेलाज नादरवा मांहे अप्रमाणे पंजोसण करीने पछी शो दिवसे कार्त्तिक चोमासो केम पडिक्कमो छो? अने वीसा पंजोसण करवानी वखतें नथी मानता! तो तमने दोष नथी लागतो? जे माटे केवली नगवान् तथा चौदपूर्वी अने दश पूर्वधरें जे मान्युं, नाष्युं, ते प्रमाण नहीं करशो, तो सूत्र उछाप्याना महोटा दोष लागे छे. ते केम विचारी जोता नथी?

॥ श्रीमदर्हत्क्रमकोकनदेन्यो नमः ॥

अथ

॥ श्रीविधिपक्षगछीय अनगारस्य प्रतिक्रमणसामाचारी लिख्यते ॥

तत्र प्रथमं दैवसिकप्रतिक्रमणविधिमाह ॥

प्रथम नवकार संपूर्ण कहीने पछी इछामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहिआए मछएण वंदामि ॥ इछाकार सुहराइ सुहदेवसि सुखतप शरीर निराबाध सुख संयम यात्रा निर्वहो छोजी.

इछाकारेण संदिस्सह नगवन् देवसियं पडिक्कमणं ठाउं? गुरु कहे ठाएह. तेवारे शिष्य कहे इछं. करेमि नंते सामाइयं सवं सावज्जजोगं पच्चक्खामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि, न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि. तस्स नंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इछामि ठामि काउस्सग्गं जो मए देवसिउ अइआरो कउ काइउ, वाइउ, माणसिउ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, डुज्झाउ, डुविचिंतिउ, अणायारो, अणछियवो, असमणपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ते, सुए, सा

माइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हं महव्वयाणं, छण्हं जीवनिकायाणं, सत्तण्हं पिंमेसणाणं, सत्तण्हं पाणेसणाणं, अठण्हं पवयण माऊणं, नवण्हं बंजचेरगुत्तीणं, दसविहे समणधम्मे सामणाणं जोगाणं जं खंमियं, जं विराहियं, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥

एम कही तस्सुत्तरी० तथा अन्नब उससिएणं० नो पाठ कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. पछी लोगस्स प्रगट कहेवो.

पछी इच्छामिखमासमण पूर्वक इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् देवसियपायच्छित्त मुहपत्ती पडिलेहुं,एम कहीने १ सुत्तछतत्तदिठी हृदयमां धरुं. २ समकेतमोहनी, ३ मिश्रमोहनी, ४ मिथ्यात्वमोहनी परिहरुं. ५ कामराग, ६ स्नेहराग. ७ दृष्टिराग परिहरुं ८ सुदेव,९ सुगुरु,१० सुधर्म आदरुं. ११ कुदेव, १२ कुगुरु, १३ कुधर्म परिहरुं. १४ ज्ञान, १५ दर्शन, १६ चारित्र, आदरुं. १७ ज्ञानविराधना, १८ दर्शन विराधना, १९ चारित्र विराधना परिहरुं, २० मनोगुप्ति, २१ वचनगुप्ति, २२ कायगुप्ति आदरुं. २३ मनोदंम, २४ वचनदंम, २५ कायदंम परिहरुं. २६ हास्य, २७ रति, २८ अरति परिहरुं. २९ सोग, ३० जय, ३१ डुगंछा परिहरुं. ३२ कृष्णलेश्या, ३३ नीललेश्या, ३४ कापोतलेश्या परिहरुं. ३५ ऋद्धिगारव, ३६ रसगारव, ३७ शातागारव परिहरुं. ३८ मायासल्ल, ३९ नियाणासल्ल, ४० मिछादंसणसल्ल परिहरुं. ४१ क्रोध, ४२ मान परिहरुं. ४३ माया, ४४ लोज परिहरुं. ४५ पृथ्वीकाय विराधना, ४६ अप्पकाय विराधना, ४७ तेउकाय विराधना, ४८ वाउकाय विराधना, ४९ वनस्पतिकाय विराधना, ५० त्रसकाय विराधना हुइ होय ते सवि हुं मनें वचनें कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥

पछी गुरुवांदणा देइयें. ते, इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निस्सीहिआए अणुजाणह इत्यादिक गुरुवंदननो समस्त पाठ कही श्रीगुरुने बे वार वांदणा आपीयें.

॥ अथ देवसियं आलोउंनो पाठ ॥

इछं ॥ सयणासणन्नपाणे,चेइयजइ सिज्जकाय उच्चारे ॥ समइ जावणगुत्ती, वि तहा चरणे य अइआरे ॥१॥ गोसमुहणंतकाए, आलोइअ देसिए य अइआरे ॥ सवे समाणइत्ता, हियए दोसे ठविज्जाहि ॥२॥ काउं हियए दोसे, जहकम्मं जावता न पारेइ॥ताव सुहमाणपाणू, धम्मं सुक्कं च ऊाइज्जा ॥३॥

मारगने विषे जातां आवतां पृथ्वीकाय, अप्पकाय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय, नील, फूल, माटी, पाणी, कणकपासियाल्लियादिक तणो संघट्ट हूउ होय, ते सवि हुं मनें वचनें कायायेंकरी मिच्छामिदुक्कडं॥

इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन श्रमणसूत्रं आदेशो जी. एम आदेश मागी णमो अरिहंताणंनो संपूर्ण पाठ कही करेमि जंते सामाइयंनो पाठ कही पछी चत्तारिमंगल कहेवा. ते लखीयें छैयें.

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं. चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो. चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंता सरणं पवज्जामि, सिद्धा सरणं पवज्जामि,साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥

पछी इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिउ० कही पछी इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाएथी मांमीने जिवीयाउ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं लगें कहेवुं.

पछी इच्छामि पडिक्कमिउं पगामसिज्जाए, निगामसिज्जाए, संथाराउअत्तणाए, परिअत्तणाए, आउंटणाए, पसारणाए, छप्पइआसंघट्टणाए, कूइए, कक्कराइए, छीए, जंजाइए, आमोसे, ससरक्कामोसे, आउलमाउलाए, सुअणवत्तिआए, इत्थिविप्परिआसिआए, दिठ्ठिविप्परिआसिआए, मणविप्परिआसिआए, पाणजोयणविप्परिआसिआए, जो मए देवसिउ अइआरो कउ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

पडिक्कमामि गोअरचरिआए, जिरकायरियाए, उग्घाडकवाडुग्घाडणाए, साणावच्छादारासंघट्टणाए, मंमिअपाहुडिआए, बलिपाहुडिआए, ठवणापाहुडिआए, संकिए, सहस्सागारिए, अन्नेसणाए, पाणेसणाए, पाणजोअणाए, बीअजोयणाए, हरियजोअणाए, पच्छाकम्मिआए, पुराकम्मिआए, अदिठ्ठहडाए, दगसंसठ्ठहडाए, रयसंसठ्ठहडाए, पारिसाडणिआए, पारिठ्ठावणिआए, उंहासणजिरकाए, जं उग्गमेणं उप्पायणेसणाए, अपरिसुद्धं पडिग्गहियं, परिजुत्तं वा जं न परिठ्ठवियं तस्स० पडिक्कमामि चाउक्कालं सिज्जायस्स अकरणआए, उजउकालं जंमोवगरणस्स अप्पडिलेहणाए, दुप्पडिलेहणाए, अप्पमज्जणाए, दुप्पमज्जणाए अइक्कमे, वइक्कमे, अइआरे, अणायारे, जो मए,अइआरो कउ, तस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥

पडिक्कमामि एगविहे असंजमे, पडिक्कमामि दोहिं बंधणेहिं, रागबंधणेणं, दोसबंधणेणं. पडिक्कमामि तिहिं दमेहिं, मणदंमेणं, वयदंमेणं, कायदंमेणं. पडिक्कमामि तिहिं गुत्तीहिं. मणगुत्तीए, वयगुत्तीए, कायगुत्तीए. पडिक्कमामि तिहिं सल्लेहिं. मायासल्लेणं, नियाणासल्लेणं, मिच्छादंसणसल्लेणं. पडिक्कमामि तिहिं गारवेहिं. इड्डिगारवेणं, रसगारवेणं, सायागारवेणं. पडिक्कमामि तिहिं विराहणाहिं. नाणविराहणाए, दंसणविराहणाए, चारित्तविराहणाए. पडिक्कमामि चउहिं कसाएहिं. कोहकसाएणं, माणकसाएणं, मायाकसाएणं, लोजकसाएणं. पडिक्कमामि चउहिं सन्नाहिं. आहारसन्नाए, जयसन्नाए, मेहुणसन्नाए, परिग्गहसन्नाए. पडिक्कमामि चउहिं विगहाहिं. इबीकहाए, जत्तकहाए, देसकहाए, रायकहाए. पडिक्कमामि चउहिं ज्काणेहिं. अट्टेणं ज्काणेणं, रुद्देणं ज्काणेणं, धम्मेणं ज्काणेणं, सुक्केणं ज्काणेणं. पडिक्कमामि पंचहिं किरियाहिं. काइयाए, अहिगरणियाए, पाउसियाए, पारितावणियाए, पाणाइवायकिरियाए. पडिक्कमामि पंचहिं कामगुणेहिं. सद्देणं, रूवेणं, रसेणं, गंधेणं, फासेणं. पडिक्कमामि पंचहिं महव्वएहिं. पाणाइवायाउ वेरमणं, मोसावायाउ वेरमणं, अदिन्नादाणाउ वेरमणं, मेहुणाउ वेरमणं, परिग्गहाउ वेरमणं. पडिक्कमामि पंचहिं समिइहिं. इरियासमिए, जासासमिए, एसणासमिए, आयाणजंममत्तनिरकेवणासमिए, उच्चारपासवणखेलसिंघाणजलपारिठावणियासमिए. पडिक्कमामि बहिं जीवनिकाएहिं. पुढविकाएणं, आउकाएणं, तेउकाएणं, वाउकाएणं, वणस्सइकाएणं, तसकाएणं. पडिक्कमामि बहिं लेसाहिं. किण्हलेसाए, नीललेसाए, काउलेसाए, तेउलेसाए, पउमलेसाए, सुक्कलेसाए. पडिक्कमामि सत्तहिं जयगणेहिं, अठहिं मयठाणेहिं, नवहिं बंजचेरगुत्तीहिं, दसविहे समणधम्मे, इक्कारसहिं उवासगपडिमाहिं, बारसहिं जिरकुपडिमाहिं, तेरसहिं किरियागणेहिं, चउदसहिं जूयगामेहिं, पन्नरसहिं परमाहम्मिएहिं, सोलसहिं गाहासोलसएहिं, सत्तरसविहे असंजमे, अठारसविहे अबंजे, एगुणवीसाए णायज्कयणेहिं, वीसाए असमाहिगणेहिं, एगवीसाए सबलेहिं, बावीसाए परीसहेहिं, तेवीसाए सुयगडज्कयणेहिं, चउवीसाए अरिहंतेहिं, पचवीसाए जावणाहिं, बवीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकालेहिं, सत्तावीसाए अणगारगुणेहिं, अठावीसाए आयारपकप्पेहिं, एगुणतीसाए पावसुय

प्पसंगेहिं, तीसाए मोहणीगणेहिं, इगतीसाए सिद्धाइ गुणेहिं. बत्तीसाए जोगसंगहेहिं, तित्तीसाए आसायणाए. अरिहंताणं आसायणाए, सिद्धाणं आसायणाए, आयरियाणं आसायणाए, उवज्झायाणं आसायणाए, साहूणं आसायणाए, साहूणीणं असायणाए, सावगाणं आसायणाए, सावियाणं आसायणाए, देवाणं आसायणाए, देवीणं आसायणाए, इहलोगस्स आसायणाए, परलोगस्स आसायणाए, केवलिपन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए, सदेवमणुआसुरस्स लोगस्स आसायणाए, सवपाणभूअजीवसत्ताणं आसायणाए, कालस्स आसायणाए, सुअस्स आसायणाए, सुयदेवयाणं आसायणाए, वायणायरियस्स आसायणाए, जं वाइद्धं, वुच्चामेलियं हीणक्खरं, अच्चक्खरं, पयहीणं, विणयहीणं, जोगहीणं, घोसहीणं, सुट्ठुदिन्नं, दुट्ठुपडिच्छियं, अकाले कउ सज्झाउ, काले न कउ सज्झाउ, असज्झाए सज्झायं, सज्झाए न सज्झायं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

नमो चउवीसाए तित्थयराणं उसभाइमहावीरपज्जवसाणाणं, इणमेव य निग्गंथं पावयणं, सच्चं, अणुत्तरं, केवलिअं पडिपुन्नं, नेयाउयं, संसुद्धं, सल्लगत्तणं, सिद्धिमग्गं, मुत्तिमग्गं, निज्जाणमग्गं, निव्वाणमग्गं, अवितहमविसंधिसव्वदुक्खप्पहीणमग्गं, इत्थंठियाजीवा सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परिनिव्वायंति, सव्वदुक्खाणमंतं करंति, तं धम्मं सद्दहामि, पत्तियामि, रोएमि, फासेमि, पालेमि, अणुपालेमि, तं धम्मं सद्दहंतो, पत्तिअंतो, रोयंतो, फासंतो, पालंतो, अणुपालंतो, तस्स धम्मस्स अब्भुट्ठिउमि आराहणाए, विरउमि विराहणाए, असंजमं परियाणामि, संजमं उवसंपज्जामि अबंभंपरियाणामि, बंभं उवसंपज्जामि, अकप्पं परियाणामि, कप्पं उवसंपज्जामि, अन्नाणं परियाणामि, नाणं उवसंपज्जामि, अकिरियं परियाणामि, किरियं उवसंपज्जामि, मिच्छत्तं परियाणामि, सम्मत्तं उवसंपज्जामि, अबोहिं परियाणामि, बोहिं उवसंपज्जामि, अमग्गं परियाणामि, मग्गं उवसंपज्जामि, जं संभरामि, जं च न संभरामि, जं पडिक्कमामि, जं च न पडिक्कमामि तस्स सव्वस्स, देवसिअस्स, अइयारस्स, पडिक्कमामि, समणोहं संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे अणिआणो दिट्ठिसंपन्नो मायामोसविवज्जिउ अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पणरससु कम्मभूमीसु ॥ जावंत केवि साहू, रयहरणगुच्छ पडिग्ग

हधारा ॥ १ ॥ पंचमहव्वयधारा, अठारस सहस्स सीलंगधारा ॥ अरकोहा यारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥ १ ॥ एवमहं आलोइय, णिंदिय गरहिय डुगंछियं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ २ ॥

इहां बे वार खामणा वांदणा देवा, पठी इच्छामिखमासमणो० इच्छाकारेण संदिसहभगवन् अप्रुठ्ठिउमि अप्भिंतर देवसियं खामेउं ॥

जं किंचि अपत्तियं परपत्तियं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्झवि णय परिहीणं, सुहुमं वा, बायरं वा, तुप्भे जाणह, अहं न याणामि, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ फरी वांदणा बे देवा. पठी आयरिय उवज्झायनो पाठ कहेवो. ते आ प्रमाणेः—

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे य ॥ जे मे कया कसाया, सव्वं तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवउ अंजलिं करे सीसे ॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावउ धम्मनिहियनियचित्तो ॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

पठी करेमि भंते सामाइयंनो पाठ कहेवो. पठी इच्छामि ठामि काउसग्गं जोमे० ॥ पठी तस्सुत्तरी० अन्नत्थ०॥ ए सर्वना पाठ कही बे लोगस्सनो काउसग्ग करवो. पठी प्रगट लोगस्स कही सव्वलोयनो पाठ कहिये ते लखिये छैयें.

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउसग्गं वंदण वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउसग्गं अन्नत्थ० ॥ ए पाठ कही एक लोगस्सनो काउसग्ग करवो. ते करीने पठी पुस्करवरदीवड्ढेनो पाठ कहेवो ते लखियें छैयें.

॥ अथ पुस्करवरदीवड्ढे लिख्यते ॥

॥ पुस्करवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ ॥ भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धं, सणस्स सुरगणनरिंदम

हिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाईजरा मरणसोगपणासणस्स, कल्लाणपुरकलविसालसुहावहस्स ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलप्न करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे जो प यउ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे, देवं नाग सुवन्न किन्नरगण, स्सप्भू य जावच्चिए ॥ लोगो जछ पइठिउ जगमिणं, तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वढउ सासउ विजयउ, धम्मुत्तरं वढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स जगवउ करेमि काउस्स ग्गं वंदणवत्तिआए०॥ कही एक लोगस्सनो काउसग्ग करवो. पछी सिद्धा णं बुद्धाणं कहेवुं. ते लखियें छैयें.

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोगग्गमुवगयाणं, न मो सया सवसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ॥ तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जि णवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ संसारसागराउ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ इति स्तुतिः संपूर्णा.

पछी इच्छामि खमासमण देइ इच्छा० ॥ जगवन् पडिक्कमणा मंगल मुह पत्ति पडिलेहुं? गुरु कहे पडिलेह. पछी इच्छं कही इच्छामि खमासमणो वं दिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह. मे मिउग्गहं निस्सिहि इत्या दि गुरु वंदनानो पाठ बे वार कही बे वार वांदणा देवा.

पछी नमो खमासमणाणं इच्छामो अणुसट्ठिं ॥ तिछयरजगवंते,अणुत्तरप रक्कमे अमियनाणी ॥ तिस्से सुगइगईए, सिद्धिपहपएसए वंदे ॥ १ ॥ वंदामि महाजागं, महामुणि महाजसं महावीरं ॥ अमरनररायमहियं, तिं छयरमिमस्स तिछस्स ॥ २ ॥ इक्कारस्सवि गणहरे, पवायए पवयणस्स वं दामि ॥ सवं गणहरवंसं, वायगवंसं पवयणं च ॥ ३ ॥

पछी इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् सच्चाय करुं. एम कही आदेश लइ ने जयइ जगजीवजोणी० ॥ ए सच्चाय कहेवी.

पछी इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् गुरुवंदना करुं. एम कही अढाइज्जे सु दीवसमुद्देसुनो पाठ जे आ पडिक्कमणाना पृष्ठ ७९ मां छाप्यो छे, ते संपू र्ण आठ गाथापर्यंत कहेवो. छेल्ली गाथानुं छेल्लुं पद श्रीविहिपरकगणाहिवंवंदे. आ पाठना बीजी गाथाना त्रीजा पदमां 'अरकयायार' ने स्थाने 'अरको

हायार ' एवो पाठ कहेवो. तथा ' आठमी गाथाना छेल्ला पदमां ' तप्पइ गुणमणिरूहाणं ने स्थानके ' विहिपरकगणाहिवंवंदे ' एवो पाठ कहेवो.
॥ एम गुरुवंदन करीने पछी अभिनव असेस डुरकरकयकम्मरकयनिमित्तं करेमि काउसग्गं अन्नब० नो पाठ कही पांच लोगस्सनो काउसग्ग करी एक लोगस्स प्रगट कहीने सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्म्माणां, जैनं जयतिशासनम् ॥ १ ॥ इति श्रीदेवसिकप्रतिक्रमणसूत्रानुक्रमः ॥

॥ अथ अनगारस्य रात्रिप्रतिक्रमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ प्रथम इरियावहि पछी तस्सुत्तरी कही एक लोगस्सनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कही पछी कुसुमिण डुसुमिण उह्मामणि निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नब० कही पांच लोगस्सनो काउसग्ग करी एक लोगस्स प्रगट कहवो. पछी गुरुवंदना कही सज्झाय करवी. पछी इच्छामिखमासमणो० इच्छकारसुहराइ० इच्छाकारेणसंदिस्सह जगवन राइपडिक्कमणुं ठाउं ? गुरु कहे ठाएह. पछी इच्छं करेमि जंते० ॥ पछी इच्छामि ठामि० पछी तस्सुत्तरी० कही एक लोगस्सनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कही पछी सव्व लोए अरिहंतचेइयाणं० कही वली एक लोगस्सनो काउसग्ग करी पछी पुरकरवरदी० कही एक लोगस्सनो काउसग्ग करवो. पछी सिद्धाणंबुद्धाणं० कही इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् राईमंगलमुहपत्तिपडिलेहुं. पछी राइवांदणा बे वार देवा पछी राइयं आलोउं० पछी इच्छं सयणासणन्नपाणे इत्यादि पाठ केहवो. पछी श्रमण सूत्रं वंदामि जिणे चउवीसंलगे केहवुं. पछी बेवार वांदणा देवा. पछी राइखामणा करवा पछी वली वांदणा बे वार देवा. पछी आयरियउवज्झाए० ॥ पछी करेमि जंते सामाइयं० पछी तस्सुत्तरी० कही एक लोगस्सनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कहीने पछी राइ प्रायश्चित मुहपत्ती पडिलेही बे वार वांदणा देइ पच्चरकाण करीयें. ॐ नमो जंबूद्वीपेद्वीपे, ये तीर्थकराश्च धातकीखंडे ॥ ये चापि पुष्करार्द्धे, तान् सर्वान् प्रांजलिर्वंदे ॥ १ ॥ इत्यादि सर्व पाठ आ पुस्तकना पृष्ठ ३६७ मध्ये छे, ते प्रमाणे कहेवो. तथा विद्यमान विधिपक्षगच्छाचार्यथी पाछला बे त्रण पाटने नमस्कार करी सूरे उग्गए नमोक्कारसहियं इत्यादि पाठ कही नमुक्कारसहियंनुं पच्चरकाण करवुं.

पछी इच्छामोअणुसर्हि तिछयरे जगवंते इत्यादि० कही इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् बहुवेल करुंजी ॥ इति अनगारस्स राइपडिक्कमणासूत्रं समाप्तं ॥

॥ अथ प्रभातिक पडिलेहणविधिः ॥ गाथा ॥

॥ मुहपत्ति रयहरणं,उवहिचोलपट्ट गुरुवगरणाइं ॥ वसही दंमग पछा,स ज्झाउ पभाइकिछाइं ॥ १ ॥ ए आठ वस्तु पडिलेहीने पछी इरियावहि० तस्सुत्तरी० कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कही पछी इछामि खमासमणो० देइ इछाकारेणसंदिस्सह भगवन् दंमग पर्यंत पडिले हण करतां जे कांई अविधि आशातना हुई होय ते सवि हुं मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥

पछी इछं इछामिखमासमणो० कही इछाकारेण संदिस्सह भगवन् वस ती पडिलेहुं. इछं इछामिखमासमणो० इछाकारेण संदिस्सह भगवन् वसती सुद्धि तहत्ति सिझाय करुं जी. एम कही आदेश लइ सिझाय कही प्र त्येकें वंदना करवी.

पछी इछाकारेण संदिस्सह भगवन् अर्थपोरिसी करुं जी. इहां अर्थ पो रिसी ते व्याख्यान वांचवुं. तेनो विधि आ प्रमाणेः—

॥ अथ व्याख्यान पोरिसीविधिः ॥ प्रथम इरियावहि० पछी तस्सुत्तरी० कही एक लोगस्सनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कहीयें.

इछं ॥ इछामिखमासमणो० इछाकारेणसंदिस्सह भगवन् पडिलेहण अणुजाणह इछं इछामि खमासमणो० इछाकारेण संदिस्सह भगवन् बहु प डिपुन्ना पोरिसी पडिलेहण करुं. एम कहीने शिष्य उनो रहे. पछी गुरुपण एहज विधियें पोरिसी भणीने मुहपत्ती पडिलेहे. पछी गुरु कहे. करेह तेवारें शिष्य कहे इछं तहत्ति कहीने पछी मुहपत्ति पडिलेहे. इति पोरिसीविधिः ॥

॥ अथ पश्चिम पोरसी प्रतिलेखना विधिमाह ॥

॥ गाथा ॥ मुह चोल वसहि गुछग, उवही उंघोय गुरूवगरणाइं ॥ दंम गपडिलेहाइ, पछिमप्पहरेणुक्कमसो ॥ १ ॥ एरीतें मुहपत्ति चोलपट्टादिक आठ वस्तुनी पडिलेहण करी इरियावहि प्रमुख पडिक्कमी सिझाय करवा माटे सिझाय पाठ करे इति पश्चिम पोरसी विधि ॥

अथ साधूनांपाक्षिकप्रतिक्रमणविधिर्लिख्यते ॥ प्रथम इरियावहि० पडि क्कमी तस्सुत्तरी कही एक लोगस्सनो काउसग्ग करी पछी दीर्घस्वरें लोगस्स के हवो. ते कहीने पछीखमासमण देइ मुहपत्ती पडिलेहवी. पछीस्वाध्याय करीयें.

पछी इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् प्रतिक्रमण ठाउं एम कही करेमि जंते सामाइयंथी मांमीने जाव वंदामि जिणे चउवीसं सुधी कहेवुं. छींक जय णा मांमला मांहे प्रवर्त्ते इहां पक्को जणियव्वो कहेवुं. पछी वांदणा देवा. पछी संबुद्धा खामेमि पक्कियं. खामेमि जं किंचि अपत्तियं परपत्तियं० इत्यादि कहेवुं.

पछी इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् पक्किउं आलोउं? गुरु कहे आलोए ह. पछी इच्छं पाखीपडिलेहण जणी कीधी. जं कांइ रही वीसरी होय ते सवि हुं मनवचनकायायें करी मिच्छामि छुक्कडं ॥

पक्कदिवसमांहे ज्ञानाचारें कालवेलायें अणोजे छते इरियावहि अण पडिक्कमी अणपडिलेही जूमिकायें सिद्धांत वांच्यो, जण्यो, गुण्यो होय, वि नय पाखें वांदणा, खमासमण अणदीधे सूत्र अर्थ विचार पूछ्यो होय, गुरु अने वडा उपरें बहुमान जक्ति साचवी न होय, योग वह्या पाखें का लिक उत्कालिक सिद्धांत वांच्यो, जण्यो, गुण्यो होय, योग वहतां योगत णी सामाचारी चूकी होय, जे गुरुपासें श्रुत जण्युं दीक्षा लीधी ते गुरु तणुं नाम उलव्युं होय, अक्षर कानो मात्र कूडो कह्यो, वीसार्यो होय, सिद्धांत तणो अर्थ अधिको उछो विपरीत करी वखाण्यो होय, पाटी पोथी कवली ठवणी नवकरवाली कागलें पग लगाड्यो होय, पढतां गुणतां अंतराय उपघात कीधो होय, अनेरुं ज्ञानाचार विषे पक्कदिवस मांहे जिको कोइ अ तिचार हूउ होय, ते सवि हुं मन वचन कायायें करी मिच्छामि छुक्कडं ॥ १ ॥

दर्शनाचारें जिनधर्मतणी शंका कीधी होय, कांक्षा अनेरा दर्शन विषे मन आशता आणी होय, विचिकित्सा पुण्यफल तणो मनमां संदेह धर्यो होय, मूढदृष्टिता सूक्ष्म गंजीर विशेष विचार सांजली मनमोह पाड्यो होय, पुण्यवंत तणी प्रशंसा सांजली मन इर्ष्या धरी होय, अवसरें गुण वंत तणी प्रशंसा कीधी न होय, धर्मतणे विषे आलस अवज्ञा करता देखी मन थिरीकरण कीधुं न होय, आपणपामांहे वात्सल्य धर्मानुराग चिंतव्यो न होय, प्रमाद विशेषतो कलह कंदल करी उन्माह कीधो होय, देवतणी दृष्टें जातपाणी वहोरी वावर्यां होय, निद्रा कीधी होय, देहरामां श्लेष्मा दिक वस्तु नाखी होय, नमस्कार करतां देवरहे संघट्ट हूउ होय, गुरुरहे आशातना कीधी होय, गुरुतणे आसणे बेसणे उपगरणे पग लगाड्यो

होय, वेयावच्च करतां पग, स्वास लाग्यो होय, वडातणुं वचन पाछुं वाल्युं होय, वडा ऊपरें मनअवज्ञा धरी होय, वडातणा आदेशपाखें आपणी इच्छायें नियम अभिग्रह लीधो होय, तपश्चरण विहारादिक कार्य कीधां होय, वडा तणुं आघुं पाछुं बोल्युं होय, जिनधर्मतणी आस्ता कीधी न होय,अनेरुं दर्शनाचारविषे पक्षदिवसमांहे० ॥ २ ॥

चारित्राचारे पुढविकाय अप्पकाय तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय, नील, फूल, अनंतकाय तणो संघट्ट परिताप उपद्रव हूउं होय, फूसणुं हूउं होय, वघारी वृष्टि हूई होय, संघट्ट हूउं होय, दगमट्टी विराधी होय, गार धूंअर तणी विराधना कीधी होय, उज्जेइ हूइ होय, मुखवस्त्रिका तणो अनुपयोग हूउं होय, कोरण उडते महावायुवाते गमनागमन कीधुं होय, हरीकाय बीयकाय तणी विराधना हूइ होय, बेंद्री, तेंद्री, चउरिंद्री, पंचिंद्री रहे परिताप उपद्रव हूउं होय; जघन्य मध्यम,उत्कृष्ट, अलीकवचन बोल्युं होय, समर्घ्य महर्घ्य वस्तु अणदीधी लीधी होय. मनसा वाचा कायायें करी स्वप्नांतर मांहि शीलभंग हूउं होय, अथवा प्रत्यक्ष चोथे व्रतें अतिचार हूउं होय, स्त्रीतणो संघट्ट हूउं होय, महात्माअयोग्य सुवर्णादिक वस्तु तणो परिग्रह कीधो होय, पक्ष उपहरो उपगरण तणुं ममत्व धर्युं होय, वडारहे खमासमण अणदीधे उपगरण लीधुं, वावर्युं होय, असूरी वेलायें इरियावही छते भातपाणी कीधुं होय, रात्रें चउविहार पच्चखाण कीधुं न होय, जाणतां अजाणतां असूझतुं भातपाणी वोहोरी वावर्युं होय, कारणहेतुपाखें आधाकर्मादिक दोषतणी सेवा हूइ होय,रजनीयें ढवुं थाप्युं होय, उसहतणी संनिधि कीधी होय, समितिगुपतिविषे अनुपयोग हूउं होय, अनेरु चारित्राचार विषे पक्षदिवसमांहे० ॥ ३ ॥

तपाचारें बारभेदतपमांहे कोइ भेद विराध्यो होय, चोमासी वरसी आलोयण तणुं तप वीसार्युं होय, पच्चखाण पारवुं वीसार्युं होय, बेसणुं हाल्युं होय, काप अणदीधे संदेशथी उठ्या होय; उपवास, आंबिल, नीवी, एकासणुं, पुरिमड्ढ पच्चखाण भांग्युं होय, उपासरा थकी एकशो हाथ उपरांत एकलां फेरो दीधो होय, अनेरुं तपाचारविषे पक्ष० ॥ ४ ॥

वीर्याचारें छती शक्तें काउसग्ग पच्चखाण वीसामण विनय वेयावच्च पढवा गुणवा विषे आलस कीधो होय, दिवसें लांबे पगें संथार्युं होय, रात्रें

सूत्रपोरिसी अर्थपोरिसी अधूरी रही होय, पडिक्कमणुं पडिलेहण निर तां कीधां होय, जोग वडीवार रह्यो होय, पक्ष उपहरो कषाय राख्यो होय, आपणपा मांहे असमंजस वचन बोल्यां होय, कठोर बोल बोली कलह कं दल कीधो होय, थंमिल पडिलेह्यां न होय, वसति प्रमार्जी न होय, गीत खेल वाडी नाटक इंद्रजाल वाद कंदल कूड समस्या.प्रहेली द्यूतक्रीडादिक विषे अनुराग धर्यो होय, उंघो मुहपत्ति संघट्यां होय, जातां आवतां आव स्सही निस्सही कही न होय, गृहस्थतणी कणवार कीधी होय, मर्म मो सा बोल्या होय, श्रीवीतराग देवें जे कार्य निषेध्यां ते कार्य कीधां होय, म हात्मायोग्य जे करणी कही, ते करणी कीधी न होय, आगमवचन सद्द हियां न होय, अथवा विपरीत प्ररूप्यां होय, एवं ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्याचार मांहे जं आलोइयं, जं च न आलोइयं तस्स सव्वस्स पक्खियस्स दुच्चिंतियस्स दुब्भासियस्स दुच्चिट्ठियस्स तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ५ ॥ इति पाक्षिक आलोचनाविधिः संपूर्णः ॥

पछी गुरु जे थापना गुरु, तेनी आगल पाखी खामणा वांदणां दीयें तिहां सूधी शिष्य उनो रहे;पछी गुरु कहे करेह तेवारें शिष्य कहे इछं पछी शिष्य गुरु सन्मुख आवी पाखी खामणा वांदणा आपे. पछी पुणरवि पक्खियं खामे मि पन्नरसण्हं दिवसाणं पन्नरसराईणं जं किंचि अपत्तियं परपत्तियं इत्यादि कें गुरुने खमावी पछी सर्व साधुउ प्रत्येकें मांहोमांहे खमावे ॥ इच्छाकारे ण संदिस्सह नगवन् पक्खिसुत्तं आघवं संदिस्सह इछं इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निस्सीहियाए मछएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह नगवन् पक्खिसुत्तं आघवा नणी वांदणां करुं एम कही वांदणा दइयें.

पछी आदेश मागी करेमि नंते०॥ कही पछी तस्सुत्तरी० ठामि काउसग्गं पर्यंत कहीने काउसग्ग करे. इहां अन्य साधु सर्व काउसग्ग करे, अने एक साधु नवकारपूर्वक पाखी सूत्र कहे.

ए ॐनमः ॥ तित्थंकरे य तित्थे, अतित्थसिद्धे य तित्थसिद्धे य ॥ सिद्धे य जिणे रिसी, महरिसिनाणं च वंदामि ॥ १ ॥ जे इमं गुणरयणसायर, मवि राहिऊण तिण्णसंसारे ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमवि आराहणानिमुहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुयं च धम्मो य ॥ खंती गुत्ती मु त्ती, अज्जवया मद्दवं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं, करंति परमरिसिदेसि

यमुहारं ॥ अहमवि उवठिउ तं, महव्वयउच्चारणं काउं ॥ ४ ॥ से किं तं महव्वयउच्चारणं ॥ महव्वयउच्चारणा पंचविहा पन्नत्ता, राईभोयणवेरमणछठा ॥ तंजहा ॥ सव्वाउ पाणाइवायाउ वेरमणं, सव्वाउ मुसावायाउ वेरमणं, सव्वाउ अदिन्नादाणाउ वेरमणं, सव्वाउ मेहुणाउ वेरमणं, सव्वाउ परिग्गहाउ वेरमणं, सव्वाउ राईभोयणाउ वेरमणं ॥

तत्थ खलु पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाउ वेरमणं ॥ सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चरकामि, से सुहुमं वा बायरं वा, तसं वा, थावरं वा, नेवसयं पाणे अइवाइज्जा, नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा. पाणे अइवायंतेवि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि, न कारवेमि करंतंपि अन्नं नसमणुजाणामि,तस्स भंते पडिक्कमामि,निंदामि, गरिहामि अप्पाणं, वोसिरामि.

से पाणाइवाए चउविहे पन्नत्ते ॥ तं जहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ,दव्वउणं पाणाइवाए छसु जीवनिकाएसु, खित्तउणं पाणाइवाए सव्वलोए, कालउणं पाणाइवाए दिया वा राउवा, भावउणं पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा,जंपिअ मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालरकणस्स सच्चाहिठियस्स, विणयमूलस्स, खंतिपहाणस्स अहिरण्णसुवण्णियस्स, उवसमप्पभवस्स, नवबंभचेरगुत्तस्स, अप्पयमाणस्स, भिरकावत्तियस्स, कुरिकसंबलस्स, निरग्गिसरणस्स, संपरकालियस्स, चत्तदोसस्स, गुणग्गहियस्स, निव्वियारस्स, निवित्तिलरकणस्स, पंचमहव्वयजुत्तस्स, असंनिहिसंचयस्स, अविसंवाइयस्स,संसारपारगामियस्स,निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स,पुव्विं अन्नाणयाए, असवणयाए, अबोहियाए, अणभिगमेणं, अभिगमेण वा, पमाएणं रागदोसपडिबध्याए, बालयाए,मोहयाए, मंदयाए, किड्डयाए, तिगारवगुरुयाए, चउकसाउवगएणं,पंचेंदियवसट्टेणं,पडिपुन्नं भारियाए,सायासुरकमणुपालयंतेणं,इहंवाभवे,अन्नेसु वा भवग्गहणेसु,पाणाइवाउकउ वा,काराविउ वा,कीरंतो वा पेरहिं समणुन्नाउ,तं निंदामि,गरिहामि,तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं,अईयं निंदामि,पडुप्पन्नं संवरेमि,अणागयं पच्चरकामि,सव्वं पाणाइवायं जावज्जीवाए अणिस्सिउहं नेव सयं पाणे अइवाइज्जा,नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा ॥तंजहा ॥ अरिहंतसरिकयं सिध्सरिकयं साहूसरिकयं देवसरिकयं अप्पसरिकयं एवं भवइ भिरकू वा, भि

खुणी वा, संजयविरयपडिहयपच्चरकायपावकम्मे दिया वा, राउ वा, एगउ वा परिसागउ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, एस खलु पाणाइवायस्स वेर मणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए, सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं नूआणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं, अडुरकणयाए, असोवणया ए, अजूरणयाए, अतिप्पणयाए, अपीमणयाए, अपरियावणीयाए, अणु दवणयाए, महछे, महागुणे, महाणुनावे, महापुरिसाणुचिन्ने, परमरिसि देसियपसछे, तं डुरकरकयाए, कम्मरकयाए, मुरकयाए, बोहिलानाए, संसारु त्तारणयाए, तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि. पढमे नंते महव्वए उवछिउमि सव्वाउ पाणाइवायाउ वेरमणं ॥ १ ॥

॥ अहावरे डुच्चे नंते महव्वए मुसावायाउ वेरमणं. सव्वं नंते मुसावायं पच्च रकामि, से कोहा वा, लोहा वा, नया वा, हासा वा, नेव सयं मुसं वंइज्जा, नेवन्ने हिं मुसं वायाविज्जा, मुसं वायंतेवि अन्ने न समणुजाणामि. जावज्जीवाए तिवि हं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंवि अन्नंनसमणु जाणामि. तस्स नंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि. से मु सावाए चउविहे पन्नत्ते, तंजहा दव्वउ, खित्तउ, कालउ, नावउ. दव्वउणं मुसावाए सव्वदव्वेसु. खित्तउणं मुसावाए लोए वा, अलोए वा. कालउणं मुसावाए दिया वा, राउ वा. नावउणं मुसावाए रागेण वा, दोसेण वा. जंपिय मए इमस्स ध म्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालरकणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरस्सुवन्नियस्स उवसमप्पनवस्स नवबंनचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स निरकावत्तियस्स कुरिकसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपरकालि यस्स चत्तदोसस्स गुणग्गहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तिलरकणस्स पंचम हव्वयजुत्तस्स, असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहियाए अणनिगमेणं अनिगमेण वा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मो हयाए मंदयाए किड्डुयाए तिगारवगुरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचिंदियवस ठेणं पडिपुन्नंनारियाए सायासुरकमणुपालयंतेणं इहं वा नवे अन्नेसु वा नवग्ग हणेसु मुसावाउ नासिउ वा नासाविउ वा नासिज्जंतो वा परेहिं समणुन्नाउ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईयं निंदामि पडु

प्पन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चरकामि. सवं मुसावायं जावज्जीवाए अणिस्सितहं नेव सयं मुसं वइज्जा,नेवन्नेहिं मुसं वायाविज्ञा,मुसं वायंते वि अन्ने न समणु जाणिज्जा. तंजहा अरिहंतसरिकयं,सिद्धसरिकयं,साहूसरिकयं,देवसरिकयं,अप्प सरिकयं एवं नवइ निरकू वा निरकुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चरकायपावकम्मे दिया वा,राउ वा,एगउ वा,परिसागउ वा,सुत्ते वा,जागरमाणे वा, एस खलु मु सावायस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सवेसिं पाणाणं सवेसिं नूयाणं सवेसिं जीवाणं सवेसिं सत्ताणं अडुरकणयाए असोवण याए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीमणयाए अपरियावणियाए,अणुद्दवण याए महत्थे महागुणे महाणुनावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्थे तं डुरकरकयाए कम्मरकयाए मुरकयाए बोहिलानाए संसारुत्तारणयाए तिकट्टु उव संपज्जित्ताणं विहरामि डुच्चे नंते महव्वए उवट्ठिउमि सव्वाउ मुसावायाउ वेरमणं

अहावरे तच्चे नंते महव्वए अदिन्नादाणाउ वेरमणं. सवं नंते अदिन्नादाणं पच्चरकामि. से गामे वा नगरे वा रन्ने वा अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा नेव सयं अदिन्नं गिण्हिज्ञा, नेवन्नेहिं अदिन्नं गि ण्हाविज्ञा, अदिन्नं गिण्हंते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न स मणुजाणामि तस्स नंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि.

से अदिन्नादाणे चउविहे पन्नत्ते ॥ तं जहा दव्वउ खित्तउ, कालउ नावउ दव्वउणं अदिन्नादाणे गहणिधारणिज्जेसु दव्वेसु, खित्तउणं अदिन्नादाणे गामे वा णगरे वा रन्ने वा,कालउणं अदिन्नादाणे दिया वा राउवा, नावउणं अ दिन्नादणे रागेण वा दोसेण वा. जंपिय मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्त स्स अहिंसालरकणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स, खंतिप्पहाणस्स, अहिरन्नसुवन्नियस्स, उवसमप्पनवस्स, नवबंनचेरगुत्तस्स, अप्पयमाणस्स, निरकावत्तियस्स कुक्किसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपरकालियस्स चत्तदोसस्स गुणग्गहियस्स निविियारस्स निवित्तिलरकणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स,असंनिहि संचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफ लस्स, पुविंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहियाए अणनिगमेणं अनिगमेण वा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डुयाए

तिगारवगुरुयाए चउक्कसायउवग्गहेणं पंचिंदियवसट्टेणं पडिपुन्नं नारियाए सायासुरकमणुपालयंतेणं इहं वा नवे अन्नेसु वा नवग्गहणेसु अदिन्नादाणं गहियं वा गाहावियं वा घिप्पंति वा परेहिं समणुन्नायं तं निंदामि, गरिहामि, तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि; पडुप्पन्नं संव रेमि अणागयं पच्चरकामि सव्वं अदिन्नादाणं जावज्जीवाए अणिस्सिउहं नेव सयं अदिन्नं गिह्हिज्जा, नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा, अदिन्नं गिण्हं तेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा. तंजहा अरिहंतसरिकयं सिद्धसरिकयं साहूस रिकयं देवसरिकयं अप्पसरिकयं एवं नवइ निरकू वा निरकुणी वा संजयविर यपडिहयपच्चरकायपावकम्मे वा दिया वा राउ वा एगउ वा परिसागउ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एस खलु अदिन्नादाणस्स वेरमणं. हिए सुहे ख मे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं नूयाणं सव्वे सिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अडुरकणयाए असोवणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीमणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महा गुणे महाणुनावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्थे तं डुरकरकयाए कम्मरकयाए मुरकयाए बोहिलानाए संसारुत्तारणाए तिकट्टु उवसंपज्जित्ता णं विहरामि तच्चे नंते महव्वए उवट्ठिउमि सव्वाउ अदिन्नादाणाउ वेरमणं ॥

अहावरे चउत्थे नंते महव्वए मेहुणाउ वेरमणं. सव्वं नंते मेहुणं पच्चरका मि. से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिरकजोणियं वा नेव सयं मेहुणं सेविज्जा, ने वन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा, मेहुणं सेवंते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंवि अन्नं न समणुजाणामि तस्स नंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि.

से मेहुणे चउविहे पन्नत्ते. तं जहा दव्वउ खित्तउ कालउ नावउ दव्वउ णं मेहुणे रूवेसु वा रूवसहगेसु वा खित्तउणं मेहुणे उढलोए वा अहोलो ए वा तिरियलोए वा कालउणं मेहुणे दिया वा राउ वा नावउणं मेहुणे रागेण वा दोसेण वा जंपिय मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसा लरकणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसुवन्निय स्स उवसमप्पनवस्स नवबंनचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स निरकावत्तियस्स कु रिकसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपरकालियस्स चत्तदोसस्स गुणग्गहियस्स नि व्वियारस्स निव्वित्तिलरकणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असन्निहिसंचयस्स अविसंवा

इयस्स संसारपारगामियस्स निवाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुविं अन्नाणया ए असवणयाए अबोहियाए अणभिगमेणं अभिगमेणं वा पमाएणं रागदोसप डिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुयाए चउक्कसा उवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नं भारियाए सायासुरकमणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु मेहुणं सेवियं वा सेवावियं वा सेविज्जंतं वा परेहिं समणुन्नाउ. तं निंदामि गरिहामि तिविहंतिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि, पडुप्पन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चरकामि. सवं मे हुणं जावज्जीवाए अणिस्सिउहं नेव सयं मेहुणं सेविज्जा, नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा, मेहुणं सेवंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा. तं जहा अरिहंतस रिकयं सिद्धसरिकयं साहूसरिकयं देवसरिकयं अप्पसरिकयं. एवं भवइ भिरकू वा भिरकुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चरकायपावकम्मे दिया वा राउ वा एगउ वा परिसागउ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एस रकलु मेहुणस्स वेर मणे हिए सुहे रवमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सवेसिं पाणाणं स वेसिं भूयाणं सवेसिं जीवाणं सवेसिं सत्ताणं अडुरकणयाए असोवणयाए अ जूरणयाए अतिप्पणयाए अपीमणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए म हत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्थे, तं डुरकरक याए कम्मरकयाए मुरकयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिकट्टु उवसंप ज्जत्ताणं विहरामि. चउत्थे भंते महव्वए उवछिउमि सवाउ मेहुणाउ वेरमणं ॥

अहावरे पंचमे भंते महव्वए परिग्गहाउ वेरमणं सवं भंते परिग्गहं पच्चरका मि. से अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा नेव सयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा, नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हाविज्जा, परिग्गहं परिगिण्हं तेवि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि, न कारवेमि, करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि. से परिग्गहे चउ विहे पन्नत्ते तं जहा दवउ, रिवत्तउ कालउ, भावउ. दवउणं परिग्गहे सचित्ता चित्तमीसेसु दवेसु, रिवत्तउणं परिग्गहे सवलोए कालउणं परिग्गहे दिया वा राउ वा. भावउणं परिग्गहे अप्पग्घे वा महग्घे वा रागेण वा दोसेण वा जंपिय मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालरकणस्स सच्चाहिठि यस्स विणयमूलस्स रवंतिपहाणस्स अहिरन्नसुवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स

नवबंनचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स निरकावत्तियस्स कुक्किसंबलस्स निरग्गि सरणस्स संपरकालियस्स चत्तदोसस्स गुणग्गहियस्स निव्वियारस्स निविति लरकणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसार पारगामियस्स निव्वाणगमणपव्ववसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असोव णयाए अबोहियाए अणनिगमेणं अनिगमेण वा पमाएणं रागदोसपडिबद्ध याए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुयाए चउक्कसाउव गएणं पंचिंदियवसट्टेणं पडिपुसंनारियाए सायासुरकमणुपालयंतेणं इहं वा नवे अन्नेसु वा नवग्गहणेसु परिग्गहो गहिउ वा गाहाविउ वा घिप्पंतो वा परेहिं समणुन्नाउ तं निंदामि, गरिहामि, तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि, पडुप्पन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चरकामि. सव्वं परि ग्गहं जावज्जीवाए अणिस्सिउहं नेव सयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा. नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हाविज्जा. परिग्गहं परिगिण्हंते वि अन्ने न समणुजाणामि. तं जहा अरिहंतसरिकयं सिद्धसरिकयं साहूसरिकयं देवसरिकयं अप्पसरिकयं. एवं नवइ निरकू वा निरकुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चरकायपावकम्मे दिया वा राउ वा एगउ वा परिसागउ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एस खलु परिग्गहस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं नूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अडुरकणयाए असोवणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुनावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसि देसियपसत्थे तं डुरकरकयाए कम्मरकयाए मुरकयाए बोहिलानाए संसारु त्तारणाए तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि. पंचमे नंते महव्वए उवट्ठिउमि सव्वाउ परिग्गहाउ वेरमणं ॥ ५ ॥

अहावरे छट्ठे नंतेमहव्वए राइनोयणाउ वेरमणं. सव्वं नंते राइनोयणं पच्च रकामि. से असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, नेव सयं राई नुं जिज्जा, नेवन्नेहिं राइ नुंजाविज्जा राइ नुंजंते वि अन्ने न समणुजाणामि. जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंवि अन्नं न समणु जाणामि तस्स नंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरि हामि अप्पाणं वोसिरामि.

से राइन्नोयणे चउव्विहे पन्नत्ते. तं जहा दव्वउ, खित्तउ, कालउ, नावउ. दव्वउणं राइन्नोयणे असणे वा पाणे वा खाइमे वा साइमे वा. खितउणं राइन्नोयणे समयखित्ते,कालउणं राइन्नोयणे दिया वा राउ वा.नावउणं राइन्नोयणे तित्ते वा कडुए वा कसायले वा अंबिले वा महुरे वा लवणे वा रागेण वा दोसेण वा जंपिय मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालरकणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसुवन्नियस्स उवसमप्पनवस्स नवबंनचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स निरकावत्तियस्स कुरिकसंबलस्स निरग्गिसरणस्स नवबंनचेरगुत्तस्स संपरकालियस्स चत्तदोसस्स गुणग्गहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तिलरकणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असन्निहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असोवणयाए, अबोहियाए,अणनिगमेणं, अनिगमेणवा, पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए, बालयाए मोहया ए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगिरुयाए चउकसाउवगएणं पंचिंदियवसट्टेणं पडिपुन्नं नारियाए सायासुरकमणुपालयंतेणं इयं वा नवे अन्नेसु वा नवग्गहणेसु राइन्नोयणं नुंजियं वा नुंजावियं वा नुंजंतं वा परेहिं समणुन्नायं. तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईयं निंदामि. पडिपुन्नं संवरेमि अणागयंपच्चरकामि सव्वं राइन्नोयणं जावज्जीवाए अणिस्सिउहं नेव सयं राइयं नुंजिज्जा, नेवन्नेहिं राइयं नुंजाविज्जा राइयं नुंजंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा. तंजहा अरिहंतसरिकयं, सिद्धसरिकयं, साहूसरिकयं, देवसरिकयं, अप्पसरिकयं, एवं नवइ निरकू वा निरकुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चरकायपावकम्मे दिया वा राउ वा एगउ वा परिसागउ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एस खलु राइन्नोयणस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं नूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं, अडुरकणयाए, असोवणयाए, अजूरणयाए, अतिप्पणयाए, अपीमणयाए, अपरियावणयाए, अणुद्दवणयाए, महत्थे, महागुणे महाणुनावे, महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिय पसत्थे तंडुरकरकयाए कम्मरकयाए मुरकयाए बोहिलानाए संसारुत्तारणाए तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि छट्ठे नंते वए उवहिउमि सव्वाउ राइन्नोयणाउ वेरमणं ॥ ६ ॥

इच्चेइयाइं पंचमहव्वयाइं राइभोयणवेरमणछठाइं अत्तहियठयाइं उवसंप ज्जित्ताणं विहरामि ॥ १ ॥ अप्पसत्था य जे जोगा, परिणामाय दारुणा ॥ पा णाइवायस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे ॥ १ ॥ तिव्वरागा य जा भासा, तिव्व दोसा तहेव य ॥ मुसावायस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे ॥२॥ उग्गहं सेयजा इत्ता, अविदिन्ने य उग्गहे ॥ अदिन्नादाणस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे ॥३॥ सद्दा रूवा रसा गंधा, फासाणं पवियारणा ॥ मेहुणस्स वेरमणे, एस वुत्ते अ इक्कमे ॥४॥ इच्छा मुच्छा य गेहीय, कंखा लोभे य दारुणे ॥ परिग्गहस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे ॥ ५ ॥ अइमत्ते य आहारे, सूरखित्तंमि संकिए ॥ राइभो यणस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे ॥६॥ दंसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिउ समणधम्मे ॥ पढमं वयमणुरक्खे, विरयामो पाणाइवायाउ ॥१॥ दंसणनाण चरित्ते, अविराहित्ता ठिउ समणधम्मे ॥ बीयं वयमणुरक्खे, विरयामो मु सावायाउ ॥ २ ॥ दंसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिउ समणधम्मे ॥ तइयं वयमणुरक्खे, विरयामो अदिन्नदाणाउ ॥३॥ दंसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिउ समणधम्मे ॥ चउत्थं वयमणुरक्खे, विरयामो मेहुणाउ ॥४॥ दंसणनाण चरित्ते, अविराहित्ता ठिउ समणधम्मे ॥ पंचमवयमणुरक्खे, विरयामो परि ग्गहाउ ॥५॥ दंसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिउ समणधम्मे ॥ छठं वयम णुरक्खे, विरयामो राइभोयणाउ ॥ ६ ॥ आलयविहारसमिउ, जुत्तो गुत्तो ठिउ समणधम्मे ॥ पढमं वयमणुरक्खे, विरयामो पाणाइवायाउ ॥७॥ आलयविहा रसमिउ, जुत्तो गुत्तो ठिउ समणधम्मे ॥ बीयं वयमणुरक्खे, विरयामो मुसावा याउ ॥८॥ आलयविहारसमिउ, जुत्तो गुत्तो ठिउ समणधम्मे ॥ तइयं वयमणु रक्खे, विरयामो अदिन्नदाणाउ ॥९॥ आलयविहारसमिउ, जुत्तो गुत्तो ठिउ सम णधम्मे ॥ चउत्थं वयमणुरक्खे, विरयामो मेहुणाउ ॥१०॥ आलयविहारसमिउ, जुत्तो गुत्तो ठिउ समणधम्मे ॥ पंचमवयमणुरक्खे, विरयामो परिग्गहाउ ॥११ आलयविहारसमिउ, जुत्तो गुत्तो ठिउ समणधम्मे ॥ छठं वयमणुरक्खे, विर यामो राइभोयणाउ ॥ १२ ॥ आलयविहारसमिउ, जुत्तो गुत्तो ठिउ समण धम्मे ॥ तिविहेण अप्पमत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ १३ ॥ सावज्जजोगमे गं, मिच्छत्तं एगमेव अन्नाणं ॥ परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ १ ॥ अणवज्जजोगमेगं, सम्मत्तं एगमेव सन्नाणं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि मह व्वए पंच ॥ २ ॥ दो चेव रागदोसे, दुन्निय झाणाइं अट्टरुद्दाइं ॥ परिवज्जंतो गु

त्तो, रस्कामि मह्व्वए पंच ॥ ३ ॥ डुविहं चरित्तधम्मं, डुन्निय ज्झाणा इंधम्म सुक्काइं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो, रस्कामि मह्व्वए पंच ॥ ४ ॥ किन्हा नीला काउ, तिन्निय लेसाउ अप्पसत्ताउं ॥ परिवज्जंतो गुत्तो,रस्कामि मह्व्वए पंच ॥५॥ ते उ पउमा सुक्का, तिन्नी लेसाउ सुप्पसत्ताउं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो, रस्कामि मह्व्वए पंच ॥६॥ मणसा मणसच्चविऊ,वायासच्चेण करणसच्चेण ॥ तिविहेण वि सच्च विऊ, रस्कामि मह्व्वए पंच ७ ॥ ॥ चत्तारि य डुहसद्या, चउरो सन्ना तहा कसाया य ॥ परिवज्जंतो गुत्तो, रस्कामि मह्व्वए पंच ॥ ७ ॥ चत्तारिय सुह सिद्या, चउविहं संवरसमाहिं च ॥ उवसंपन्नो जुत्तो, रस्कामि मह्व्वए पंच ॥ ॥ ए ॥ पंचेव य कामगुणे, पंचेव य निन्हवे महादोसे ॥ परिवज्जंतो गु त्तो, रस्कामि मह्व्वए पंच ॥ १० ॥ पंचिंदियसंवरणं, तहेव पंचविहमेव सज्जायं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो, रस्कामि मह्व्वए पंच ॥ ११ ॥ बज्जीवनिकाय वहं, बप्पिय नासाउ अप्पसत्ताउं ॥ परिवज्जंतो गुत्तो, रस्कामि मह्व्वए पंच ॥ १२ ॥ बविहमप्भिंतरियं, बप्नंपि बविहं तवोकम्मं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो, र स्कामि मह्व्वए पंच ॥ १३ ॥ सत्तजयठाणाइं, सत्तविहं चेव नाणविप्नंगं ॥ परिवज्जंतो गुत्तो, रस्कामि मह्व्वए पंच ॥ १४ ॥ पिंमेसण पाणेसण, उग्गह पडिमाउ सत्तसत्तकया (मह्प्नयणा) ॥ उवसंपन्नो जुत्तो, रस्कामि मह्व्वए पंच ॥१५॥ अठमयठाणाइं, अठकम्माइं तेसिं बंधं च ॥ परिवज्जंतो गुत्तो, रस्कामि मह्व्वए पंच ॥ १६ ॥ अठ प्पवयणमाया, दिठा अठविहनिठिय ठेहिं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो, रस्कामि मह्व्वए पंच ॥१७॥ नव पावनियाणाइं, संसारत्ताय नवविहा जीवा ॥ परिवज्जंतो गुत्तो, रस्कामि मह्व्वए पंच ॥१७॥ नवबंजचेरगुत्तिं, डुनवविहं बंजचेरपरिसुद्धं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो, रस्कामि मह्व्वए पंच ॥ १ए ॥ उवघायं च दसविहं, असंवरं तहय संकलेसं च ॥ परिवज्जंतो गुत्तो, रस्कामि मह्व्वए पंच ॥२०॥ दससच्च समाहिगणा, दस चेव दसाउ समणधम्मं च ॥ उवसंपन्नो जुत्तो,रस्कामि मह्व्वए पंच ॥२१॥ आसायणं च सव्वं, तिगुण इक्कारसं विवद्यंते ॥ परिवद्यंतो गुत्तो, रस्का मि मह्व्वए पंच ॥ २२ ॥ एवं तिदंमविरउ, तिगरणसुद्धो तिसल्लनिस्सल्लो ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, रस्कामि मह्व्वए पंच ॥ २३ ॥

इच्चेइयं पत्रमह्व्वयउच्चारणं काउं थिरत्तं सल्लुद्धरणं धिबलविवसाउ सा हणठो पावनिवारणं निकायणा त्नावविसोही पाडागाहरणं निजूहणाराह

णा गुणाणं संवरजोगो पसत्थजाणो वडत्तयाजुत्तयानाणे परमठो उत्तमठो एस खलु तित्थंकरेहिं रइरागदोसमहणेहिं देसिउं पवयणस्स सारो छज्जीवनिकायसंजमोवएसियं तिलुक्कसुक्कयं ठाणं अप्पुवगया नमोत्थु ते सिद्धबुद्धमुत्तनीरयनिस्संगमाणमूरणगुणरयणसीलसायरमणंतमप्पमेयमहइ महावीरवद्धमाणसामिस्स नमोत्थु ते अरहउं नमोत्थु ते नगवउं तिकट्टु एसा खलु महव्वयउच्चारणा कया इच्छामो सुत्तखित्तणं काउं नमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइयं छव्विहमावस्सयं नगवंतं तंजहा सामाइयं, चउवीसत्थउ, वंदणयं, पडिक्कमणं, काउसग्गो, पच्चरकाणं, सवेसिं पि एयंमि छव्विहमावस्सए नगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सनिज्जुत्तीए ससंगहणीए जे गुणा वा नावा वा अरिहंतेहिं नगवंतेहिं पन्नत्ता वा परूविया वा ते नावे सद्दहामो, पत्तियामो, रोएमो, फासेमो, पालेमो, अणुपालेमो. ते नावे सद्दहंतेहिं, पत्तियंतेहिं, रोयंतेहिं, फासंतेहिं, पालंतेहिं,अणुपालंतेहिं अंतो परकस्स जं वाइयं, पढियं, परियट्टियं, पुच्छियं, अणुपेहियं, अणुपालियं तं दुरकरकयाए, कम्मरकयाए, मोरकयाए, बोहिलानाए, संसारुत्तारणाए. तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि. अंतो परकस्स जं न वाइयं, न पढियं, न परियट्टियं, न पुच्छियं, नाणुपेहियं, नाणुपालियं, संते बले, संतेवीरिए, संतेपुरिसकारपरक्कमे. तस्स आलोएमो, पडिक्कमामो, निंदामो, गरिहामो, विउट्टेमो, विसोहेमो, अकरणयाए अप्पुठेमो,अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जामो. तस्स मिच्छामिदुक्कडं॥

॥ नमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइयं अंगबाहिरं उक्कालियं नगवंतं तंजहा दसवेयालियं, कप्पियाकप्पियं, चुल्लकप्पसुयं, महाकप्पसुयं, उववाइयं, राइपसेणियं, जीवानिगमो,पन्नवणा, महापन्नवणा नंदिअणुउगदाराइं, देविंदत्थउ, तंडुलवेयालियं, चंदाविज्जयं, पमायपमायं, पोरसिमंमलं, मंमलप्पवेसो गणिविज्जा,विज्जाचरणविणिछउ, आयविसोही,आयविनत्ती, ज्झाणविसोही, ज्झाणविनत्ती, नरयविसोही, नरयविनत्ती, मरणविसोही, मरणविनत्ती, संलेहणासुयं, वीयरायसुयं, विहारकप्पो, चरणविही, आउरपच्चरकाणं,महापच्चरकाणं सवेसिंपि एयंमि अंगबाहिरे उक्कालिए नगवंते ससुत्ते, सअत्थे,सग्गंथे, सनिज्जुत्तीए, ससंगहणीए, जे गुणा वा नावा वा अरिहंतेहिं नगवंतेहिं पन्नत्ता वा परूविया वा. ते नावे सद्दहामो, पत्तियामो, रोएमो,फासेमो,पालेमो, अणुपालेमो, ते नावे सद्दहंतेहिं, पत्तियंतेहिं, रोयंतेहिं. फासंतेहिं,

पालंतेहिं, अणुपालंतेहिं, अंतो पक्खस्स जं वाइयं, पढियं, परियट्टियं, पुछियं, अणुपेहियं, अणुपालियं तं डुक्खक्खयाए, कम्मक्खयाए, मोक्खयाए, बोहिला नाए, संसारुत्तारणयाए तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अंतो पक्खस्स जं न वाइयं, न पढियं, न परियट्टियं, न पुछियं, नाणुपेहियं, नाणुपालियं संते बले, संते वीरिए, संते पुरिसकारपरक्कमे, तस्स आलोएमो, पडिक्कमामो, निंदामो गरिहामो, विउट्टेमो, विसोहेमो, अकरणयाए अप्पुठेमो आहारिहं तवोकम्मं पायछित्तं पडिवजामो तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ २ ॥

नमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइयं अंगबाहिरं कालियं नगवंतं तंजहा उत्तरज्झयणाइं, दसाकप्पो, ववहारो, इसिनासियाइं, निसीहियं, महानिसीहियं, जंबूदीवपन्नत्ती, सूरपन्नत्ती, चंदपन्नत्ती, दीवसागरपन्नत्ती, खुड्डियाविमाणपविनत्ती, महल्लियाविमाणपविनत्ती, अंगचूलियाए, वंगचूलियाए, विवाहचूलियाए, अरुणोववाए, वरुणोववाए, गरुलोववाए, वेसमणोववाए, वेलंधरोववाए, देविंदोववाए, उठाणसुए, समुठाणसुए, नागपरियावलियाणं, निरयावलियाणं, कप्पियाणं, कप्पवडिंसयाणं, पुप्फयाणं, पुप्फचूलियाणं, वण्हियाणं, वण्हिदसाणं, आसीविसनावणाणं, दिठिविसनावणाणं, चारणसमणनावणाणं, महासमणनावणाणं, तेयग्गिनिसग्गाणं, सव्वेसिंपि एयंमि अंगबाहिरे कालिए नगवंते ससुत्ते, सअत्थे, सग्गंथे, सनिज्जुत्तीए, ससंगहणीए जे गुणा वा नावा वा अरिहंतेहिं नगवंतेहिं पन्नत्ता वा परूविया वा ते नावे सद्दहामो, पत्तियामो, रोएमो, फासेमो, पालेमो, अणुपालेमो, ते नावे सद्दहंतेहिं, पत्तियंतेहिं, रोयंतेहिं, फासंतेहिं, पालंतेहिं अणुपालंतेहिं, अंतो पक्खस्स जं वाइयं, पढियं, परियट्टियं, पुछियं, अणुपेहियं, अणुपालियं, तं डुक्खक्खयाए, कम्मक्खयाए मोक्खयाए, बोहिलानाए, संसारुत्तारणाए तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अंतो पक्खस्स जं न वाइयं, न पढियं, न परियट्टियं, न पुछियं, नाणुपेहियं, नाणुपालियं संते बले, संते वीरिए, संते पुरिसकारपरक्कमे. तस्स आलोएमो, पडिक्कमामो, निंदामो, गरिहामो, विउट्टेमो, विसोहेमो, अकरणयाए, अप्पुठेमो, अहारिहं तवोकम्मं पायछित्तं पडिवजामो तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ ३ ॥

नमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइयं डुवालसंगं गणिपिडगं नगवंतं. तंजहा आयारो, सूयगडो, ठाणं, समवाउ, विवाहपन्नत्ती, नायाध

म्मकहाउ, उवासगदसाउ, अंतगडदसाउ, अणुत्तरोववाइदसाउ, पण्हावाग रणं, विवागसुअं, दिठ्ठिवाउ सवेसिंपि एयंमि डुवालसंगे गणिपिडगे जगवंते ससुत्ते, सअत्थे, सग्गंथे, सनिज्जुत्तीए, ससंगहणीए जे गुणा वा जावा वा अरिहंतेहिं जगवंतेहिं पन्नत्ता वा, परूविया वा ते जावे सद्दहामो, पत्तिया मो, रोएमो, फासेमो, पालेमो, अणुपालेमो. ते जावे सद्दहंतेहि, पत्तियंते हिं, रोयंतेहिं, फासंतेहिं, पालंतेहिं, अणुपालंतेहिं; अंतो पखस्स जं वाइ यं, पढियं, परियट्टियं, पुच्छियं, अणुपेहियं अणुपालियं. तं डुखकयाए, क म्मखयाए, मोखयाए, बोहिलाजाए, संसारुत्तारणयाए तिकट्टु उवसंपज्जित्ता णं विहरामि. अंतो पखस्स जं न वाइयं, न पढियं, न परियट्टियं, न पुच्छि यं, नाणुपेहियं, नाणुपालियं. संते बले संते वीरिए संते पुरिसकारपरक्कमे. तस्स आलोएमो, पडिक्कमामो, निंदामो, गरिहामो, वेउट्टेमो, विसोहेमो अकरणयाए अप्पुठ्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जामो. तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ ४ ॥

णमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइयं डुवालसंगं गणिपिडगं जगवं तं. तंजहा सम्मं काएण फासंति, पालंति, पूरंति, तीरंति, किट्टंति, सम्मं आ णाए आराहंति, अहं च न आराहेमि, तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ ५ ॥

सुअदेवयाय जगवई, नाणावरणीयकम्मसंघायं ॥ तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुयसायरे जत्ती ॥ १ ॥ इति पाक्षिकसूत्रं समाप्तम् ॥

पछी श्रमणसूत्र कहेवुं. वंदामिजिणेचउवीसं पर्यंत कहीने पछी करेमि जंते सामाइयं० तथा तस्सुत्तरी दीर्घस्वरें कहेवी. पछी बारलोगस्सनो काउस ग्ग करवो. पछी मुखवस्त्रिका पडिलेहीने पाखी खामणा वांदणा देवा ॥ पछी पाखी खामणा इछामि खमासमणो पियं च मे जंजे हठाणं तुठाणं अप्पा यंकाणं अजग्गजोगाणं सुसीलाणं सुव्वयाणं सायरियउवज्जायाणं नाणेणं दंसणेणं चरित्तेणं तवसा अप्पाणं जावेमाणाणं बहुसुजेणं जे दिवसो पोस हो पखो वइक्कंतो अन्नो जे कल्लाणेणं. पज्जुवठिउतिकट्टु सिरसा मणसा म ठएण वंदामि. तुप्नेहि समं इति गुरुवचनं ॥ १ ॥ इछामि खमासमणो पुव्विं चेइयाइं वंदित्ता नमंसित्ता तुम्नन्हं पायमूले विहरमाणेणं जे केइ बहुदेसिया साहूणो दिठा समाणा वा विसमाणा वा गामाणुगामं दूइज्जमाणा वा रायणिया संपुछंति. उमरायणिया वंदंति. अज्जया वंदंति अज्जियाउ वंदंति.

सावया वंदंति सावयाउ वंदंति. अहंपि निस्सल्लो निक्कसाउ तिकट्टु सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि. अहमवि वंदामि चेइयाइं. इति गुरुवचनम् ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणो० उवट्ठिउंहं तुम्भण्हं संतिअं अहाकप्पं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुच्छणं वा अरकरं वा पयं वा गाहं वा सिलोगं वा सिलोगद्धं वा अठं वा हेउं वा पसिणं वा वागरणं वा तुम्भेहिं चिअत्तेणं दिण्हं मए अविणएणं पडिच्छिअं तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ आयरियसंतिअं इति गुरुवचनं ॥ ३ ॥

इच्छामिखमासमणो० अहमपुव्वाइं कयाइं च मे किइकम्माइं आयारमंतरे विणयमंतरे सेहिउ, सेहाविउ, संगहिउ, उवग्गहिउ, सारिउ, वारिउ, चोइउ, पडिचोइउ, चियत्ता मे पडिचोयणा. उवट्ठिउंहं तुम्भन्हं तवतेअसिरीए इमाउ चाउरंतसंसारकंताराउ साहट्टु निच्छरिस्सामि तिकट्टु सिरसा, मणसा, मत्थएण वंदामि ॥ निच्छारगपारगाहोह इति गुरुवचनं ॥४॥ पक्खियं सम्मत्तं ॥ अवसेसं देवसियं पडिक्कमामि ॥ इति पाक्षिकक्षमणकानि समाप्तानि॥

पछी बे वार देवसि खामणा वांदणा देवा. पछी देवसिउं खामेमि जंकिंचि अपत्तियं० ए पाठ कहीने वांदणा दई पछी आयरिय उवझाए० तस्सुत्तरी०॥ कही बे लोगस्सनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कही पछी सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं० कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. पछी पुस्करवरदी० कहीने एक लोगस्सनो काउसग्ग करवो. पछी सिद्धाणं बुद्धाणं० कही भुवन देवी निमित्तं करेमि काउसग्गं. पछी गुरु कहे जाव चंदेसु निम्मलयरा पर्यंत एकलोगस्स कहो. शिष्य कहे इच्छं तहत्ति. पछी एकलोगस्सनो काउसग्ग पारी नमोअरिहंताणं इत्यादि कही पछी भुवनदेवीनी स्तुति कहेवी. ते आ प्रमाणे

ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानां ॥ विदधातु भुवन देवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ १ ॥

पछी इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् पडिक्कमणा मंगलमुहपत्ती पडिलेहुं? गुरु कहे पडिलेह. पछी बे वार द्वादशावर्त्तसहित वांदणा देवा. पछी नमो खमासमणाणं इच्छामो० अणुसट्ठिं० कहीने पछी अजितशांतिस्तवन कहीयें. इति अनगारस्य पाक्षिकप्रतिक्रमणविधिः ॥

हवे चोमासाना प्रतिक्रमणनो पण एहज विधि जाणवो. पण एटलो विशेष जे पक्खियंने स्थानकें चोमासियं केहवुं, तथा बारलोगस्सने स्थानकें

वीशलोगस्सनो काउसग्ग करवो. अने नुवनदेवीनुं काउसग्ग कीधा पढी खित्तदेवीनिमित्तं करेमि काउसग्गं इत्यादि कही एक लोगस्सनो काउसग्ग करीयें. पढी खित्तदेवतानी स्तुति कहियें. ते लखियें डैयें.

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुनिः साध्यते क्रिया ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, नूयान्नः सुखदायिनी ॥ १ ॥ जेसिं खित्ते साहू, दंसणनाणेण चरण सहिएहिं ॥ साहंति मुरकमग्गं, सा देवी हरउ दुरियाइं ॥ २ ॥ इति चातुर्मासिक प्रतिक्रमणविधि समाप्त ॥

हवे संवत्सरीनो पण एहिज विधि जाणवो. पण एटलो विशेष जे चोमासीने स्थानकें संवत्सरियं कहेवुं, अने वीशलोगस्सना काउसग्गने स्थानकें चालीश लोगस्सनो काउसग्ग करवो. इति अनगारस्य सांवत्सरिक प्रतिक्रमणविधि समाप्त ॥ एरीतें विधिपक्षगच्छीय साधुना पांचे पडिक्कमणां जाणवां ॥ इति अनगारस्य दैवसिकादिकं प्रतिक्रमणं समाप्तं ॥

॥ अथ वस्तु अखूट थवा विषे देव गुरु नमस्कार मंत्रः ॥

"ॐनमो नगवं ॐ गोयमसामिस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अरकीणमाहाणसिस्स सयलसिद्धिसंपन्नस्स मम गृहे रुद्धिवृद्धि जयं कुरु कुरु मम मनोवांछितं कुरु कुरु नगवन् नास्करी ह्रीँ श्रीँ नमः स्वाहा" ए जप प्रनातें १०८ वार करवाथी गृहने विषे लक्ष्मीनी वृद्धि थाय. अष्टमहासिद्धि नवनिधि थाय. नंमार नरपूर थाय. ए मंत्रे करी सोपारी तथा चोखा १०८वार मंत्रीये, पढी ते सोपारी अने चोखा जे वस्तुमां मूकीयें ते वस्तु अखूट थाय. सर्व मनोरथ फले ॥ श्री रस्तु कल्याणमस्तु ॥

॥ अथ विद्या आवडवा विषे सरस्वतीनमस्कार ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ऐँ यौँ वदवदवाग्वादिनी नगवती सरस्वती ह्रीँ श्रीँनमः ए पाठ प्रनाते १०८वार गणवो तो विद्या आवडे ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ शीतलजिन स्तवन ॥

शीतल जिनवर सेवीयें, दशमो जिनवर राय मारा वाला ॥ ध्यान धरो मन एहनुं, जेम सुख अनंतां थाय मा० ॥ शी० ॥ १ ॥ समवसरण जिनराजतो, सोहे सोवनवान ॥ मा० ॥ रत्न कनक सिंहासन उपरें, बेठा श्रीनगवान

मा० ॥ शी० ॥२॥ चोत्रीश अतिशय सोहतो, गिरुउ गरिब निवाज मा०॥ जगमां यश बहु जेहनुं, सहु देवा सिरताज मा० ॥ शी०॥३॥ प्रजुजीने अंगें उपति, आंगी अतिही उदार मा० ॥ रंगमंमप रलीयामणो, तेज तणो नही पार मा० ॥ शी० ॥ ४ ॥ महके कुसुमना केवडा, दीपक ज्योति प्रकाश मा० ॥ केशर चंदन अतिघणा, परिमल वास सुवास मा० ॥ शी० ॥ ॥ ५ ॥ एकमना प्रजु आगलें, नरनारीनां वृंद मा० ॥ नाचे नागकुमारिका, अप्सरा मन आणंद मा० ॥ शी० ॥ ६ ॥ वाजे वाजित्र नवनवां, ताल कंसाल मृदंग मा० ॥ रणजण वीणा रणजणे, प्रगट्यो रंग सुरंग मा० शी० ॥७॥ करजोडी सेवक कहे, प्रजु तुं दीनदयाल मा० ॥ करुणावंत कृपाकरी, टालो डुःखजंजाल मा० ॥ शी० ॥ ८ ॥ तुं तारक प्रजु जगतणो, तुं जगजन आधार मा० ॥ सेवक जाणीने आपणो, आवागमण निवार मा० ॥ शी० ॥ ए ॥ अंचलगछ सोहामणो, मुदरा नगर मकार मा० ॥ दिन दिन दोलत दीपती, श्रीसंघने सुखकार मा० ॥ शी० ॥ १० ॥ संवत सत्तर एक्याशीयें, नाद्रवमास मकार मा० ॥ परवपजूसणने दिनें, स्तवन रच्युं श्रीकार मा० ॥ शी० ॥ ११ ॥ वाचक वृद्धिसागर व सुगुरु तणे सुपसाय मा० ॥ सहज सागर शुजनावयुं, एम प्रजुना गु गाय मा० ॥ ॥ शी० ॥ १२ ॥ इति शीतल जिनस्तवनम् ॥

इतिश्री विधिपक्ष गछीय श्रावकस्य देवसिकादिकं प्रतिक्रमणं समाप्तं ॥